सृष्टि की रचना का एटलस

हारून यहया

लेखक के बारे में

हारून यहया के नाम से लिखने वाले, अदनान ओक्तार का जन्म अंकारा में 1956 में हुआ था। अंकारा में अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने इस्तांबूल के मिमार सिनान विश्वविद्यालय में कला विषयों का और इस्तांबूल विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। 1980 के दशक से वे राजनीतिक, वैज्ञानिक, और आस्था से जुड़े विषयों पर कई किताबें प्रकाशित कर चुके हैं। हारून यहया क्रमिक–विकासवादियों के झूठ–फ़रेब, उनके गलत दावों, और डारविनवाद तथा फासिज़्म और कम्युनिज़्म (सामयवाद) जैसी खतरनाक विचारधाराओं के बीच के काले रिशतों का पर्दाफ़ाश करने वाली कई किताबों के लिए मशहूर हैं।

हारून यहया की कृतियों का 57 अलग–अलग भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, और इस संग्रह में कुल मिलाकर 45,000 पृष्ठ हैं जिनमें 30,000 चित्र और रेखांकन हैं।

पाठक से दो बातें

इस पुस्तक में एक विशेष अध्याय क्रमिक–विकास के सिद्धान्त के पतन के बारे में लिखा गया है, क्योंकि यह सिद्धान्त सभी अध्यात्म–विरोधी दर्शनों की बुनियाद है। चूंकि डारविनवाद सृष्टि की रचना के तथ्य और इस तरह, अल्लाह के अस्तित्व को ही ख़ारिज करता है, इसलिए पिछले 140 वर्षों के दौरान अनेक लोगों ने अपना मज़हब छोड़ दिया या संदेह में पड़ गए। इसलिए यह अति अनिवार्य है कि इस सिद्धांत के धोखे को हर एक के सामने उजागर किया जाए। हो सकता है कि कुछ पाठकों को हमारी सिर्फ़ एक किताब पढ़ने का मौक़ा मिले, इसलिए हम समझते हैं कि एक अध्याय में इस विषय के बारे में संक्षेप में लिख देना बेहतर होगा।

लेखक की सभी किताबें कुरान की आयतों की रोशनी में आस्था से जुड़े मुद्दों को समझाती हैं, और पाठकों को न्यौता देती हैं कि वे अल्लाह की शिक्षाओं को सीखें और उनके अनुसार ज़िंदगी बिताएं। अल्लाह की आयतों से जुड़े सभी विषयों को इस तरह समझाया गया है कि पढ़ने वाले के मन में कोई संदेह या सवालों की गुंजाइश न रह जाए। इन किताबों की सत्यता, सादगी और धारा प्रवाह से भरपूर शैली की वजह से हर उम्र का और किसी भी सामाजिक समूह में रहने वाला इंसान उन्हें आसानी से समझ सकता है। उनमें बातों को कहने के असरदार और आसान शैली की बदौलत, उन्हें एक ही बार में पूरा पढ़ा जा सकता है। जो लोग पुरज़ोर ढंग से अध्यात्म को खारिज करते हैं, वे भी इन किताबों में पेश की गई सच्चाइयों से प्रभावित होते हैं और वे इनमें कही गई बातों की सच्चाई से इंकार नहीं कर सकते।

इस किताब और लेखक की दूसरी किताबों को अलग–अलग पढ़ा जा सकता है, या कई लोग साथ बैठकर उन पर विचार–विमर्श कर सकते हैं। जो पाठक इन किताबों से फ़ायदा पाना चाहते हैं उनके लिए इस तरह का विचार–विमर्श बहुत उपयोगी होगा, क्योंकि वे अपनी सोच और अनुभवों को इस तरह एक–दूसरे के साथ बांट सकते हैं।

इसके अलावा, इन किताबों की छपाई और इन्हें पढ़ने में योगदान करना इस्लाम की बहुत बड़ी सेवा होगी, क्योंकि ये सिर्फ अल्लाह की खुशी पाने के लिए लिखी गई हैं। लेखक की सभी किताबें बेहद पुरज़ोर ढंग से क़ायल करने वाली हैं। इस वजह से, सच्चे मज़हब को लोगों तक पहुंचाने का एक सबसे कारगर तरीक़ा यह है कि उन्हें इन किताबों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

हमें उम्मीद है कि पाठक उनकी दूसरी किताबों के बारे में की गई टिप्पणियों को भी देखेंगे जो इस किताब के आख़िर में छपी हैं। मज़हब से जुड़े मुद्दों पर उन्होंने जितनी भारी मात्रा में स्रोत सामग्री दी है वह बहुत उपयोगी है, और उसे पढ़ने से खुशी मिलती है।

दूसरी किताबों से अलग हटकर, इन किताबों में आपको लेखक के निजी विचार, संदेहजनक स्रोतों पर आधारित व्याख्या, पवित्र चीज़ों के प्रति सम्मान और श्रद्धा न दिखाने वाली शैलियां नहीं मिलेंगी और न ही ऐसी निराशाजनक और पस्तहिम्मती से भरी दलीलें मिलेंगी जो मन में संदेह पैदा करती हैं और दिल को सही राह से भटकाती हैं।

GLOBAL PUBLISHING
Talatpasa Mah. Emirgazi Caddesi Ibrahim Elmas Is Merkezi A Blok Kat 4
Okmeydani - Istanbul / Turkey Phone: (+90 212) 222 00 88

www.harunyahya.com

हारून यहया
सृष्टि की रचना का एटलस

लेखक के बारे में

हारून यहया के नाम से लिखने वाले, अदनान ओक्तार का जन्म अंकारा में 1956 में हुआ था। अंकारा में अपनी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने इस्तांबूल के मिमार सिनान विश्वविद्यालय में कला विषयों का और इस्तांबूल विश्वविद्यालय में दर्शनशास्त्र का अध्ययन किया। 1980 के दशक से वे राजनीतिक, वैज्ञानिक, और आस्था से जुड़े विषयों पर कई किताबें प्रकाशित कर चुके हैं। हारून यहया क्रमिक–विकासवादियों के झूठ–फ़रेब, उनके गलत दावों, और डारविनवाद तथा फासिज़्म और कम्युनिज़्म (सामयवाद) जैसी खतरनाक विचारधाराओं के बीच के काले रिशतों का पर्दाफ़ाश करने वाली कई किताबों के लिए मशहूर हैं।

हारून यहया की कृतियों का 57 अलग–अलग भाषाओं में अनुवाद हो चुका है, और इस संग्रह में कुल मिलाकर 45,000 पृष्ठ हैं जिनमें 30,000 चित्र और रेखांकन हैं।

उनका लेखकीय नाम हारून (ऐरन) और यहया (जॉन) को मिलाकर बना है। यह उन दो सम्मानित पैगम्बरों की याद में रखा गया है जिन्होंने अपने लोगों में आस्था की कमी (के खिलाफ़ जद्दोजहद की। उनकी किताबों के कवर पर पैग़म्बर की मुहर प्रतीकात्मक है और उन किताबों में लिखी गई बातों से इसका संबंध होता है। यह कुरान (अंतिम धर्मग्रंथ) और आखिरी पैग़म्बर, हजरत मुहम्मद (उन पर अल्लाह की रहमत और सलामती हो) की निशानी है। कुरान और ख्सुन्नत (स.अ.ब.) पैग़म्बर की शिक्षाओं, के दिखाये रास्ते पर चलते हुए, लेखक ने अपना मक़सद यह बनाया है कि तमाम धर्मविरोधी विचारधाराओं की हर बुनियादी बात को ग़लत साबित करें और "आख़िरी बात" पेश करें ताकि धर्म के खिलाफ उठाई जाने वाली आपत्तियों का मुंह पूरी तरह बंद किया जा सके। वह आखिरी बात पेश करने के अपने इरादे की निशानी के तौर पर अंतिम पैग़म्बर की मुहर का इस्तेमाल करते हैं, जिन्होंने बुद्धिमानी और नैतिक पूर्णता का सबसे ऊंचा स्थान हासिल किया था।

हारून यहया की सभी कृतियों का एक ही लक्ष्य है :
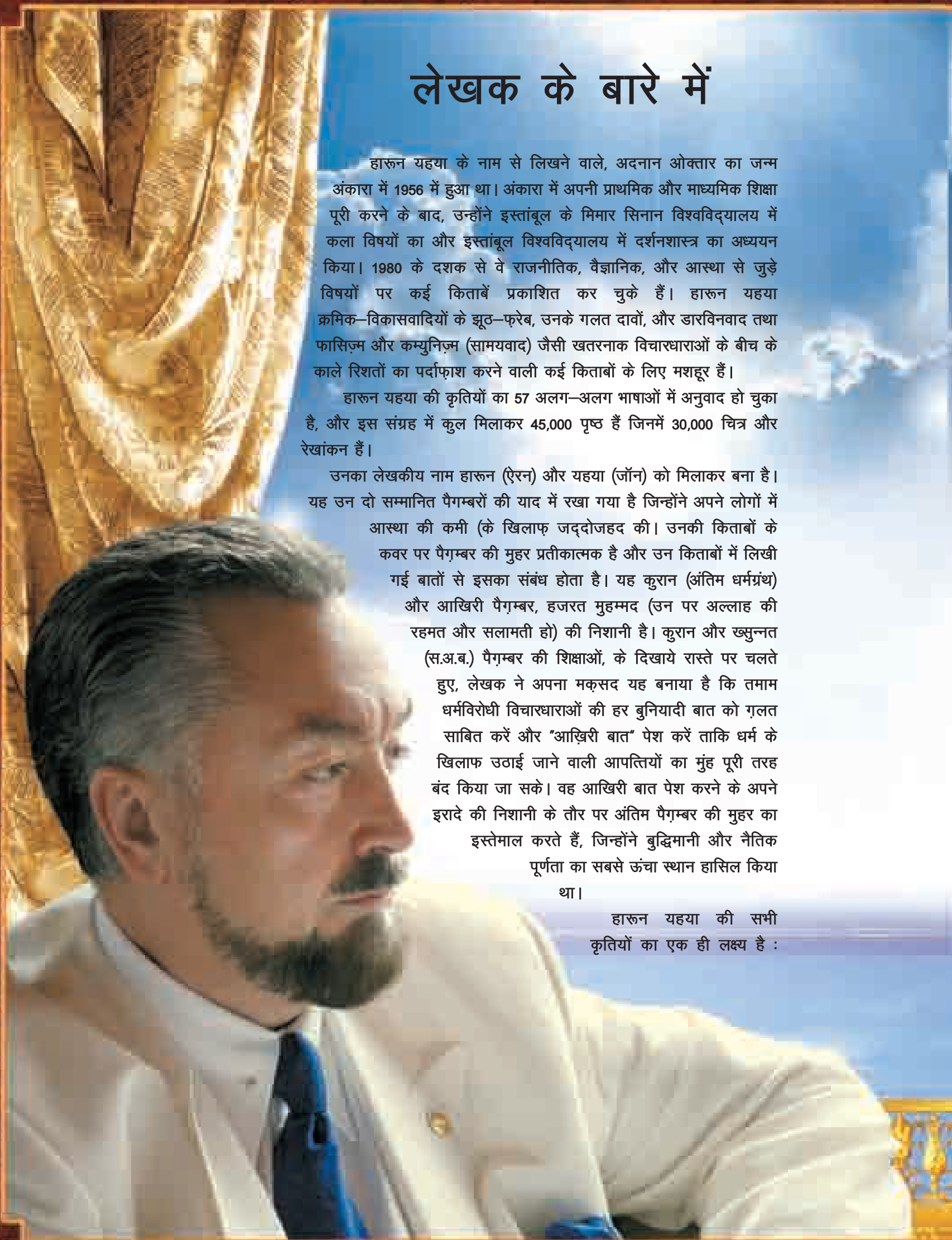
कुरान के संदेश को लोगों तक पहुंचाना, पाठकों को आस्था से जुड़े बुनियादी मुद्दों जैसे कि खुदा के अस्तित्व और एक होने तथा क़यामत के बारे में सोचने के लिए प्रोत्साहित करना और धर्मविरोधी व्यवस्थाओं की खोखली बुनियादों और विकृत विचारधाराओं का पर्दाफ़ाश करना।

हारून यहया के पाठक बहुत से देशों में फैले हुए हैं। भारत से लेकर अमेरिका तक, इंग्लैंड से इंडोनेशिया, पोलैंड से बोस्निया, स्पेन से ब्राजील, मलेशिया से इटली, फ़्रांस से बलगारिया और रूस तक। इनकी कुछ किताबें अंग्रेजी, फ़्रांसीसी, जर्मन, स्पेनी, इतालवी, पुर्तगाली, उर्दू, अरबी, अल्बानियाई, चीनी, स्वाहिली, हौसा, धिवेही (मॉरीशस में बोली जाने वाली भाषा), रूसी, सर्बो–क्रोएट (बोस्नियाई), पोलिश, मलय, उइगुर तुर्की, इंडोनेशियाई, बंगला, डेनिश और स्वीडिश भाषाओं में उपलब्ध हैं।

इन कृतियों की दुनिया भर में ज़बर्दस्त सराहना हुई है, और इन्होंने बहुत से लोगों की अल्लाह में आस्था बहाल करने और अपने मज़हब को ज़्यादा गहराई से समझने में मदद की है। उनकी निष्कपटता और किताबों में मिलने वाले ज्ञान तथा आसानी से समझ में आने वाली खास शैली, उनको पढ़ने वाले हर इंसान पर सीधा असर करती हैं। जो लोग इन किताबों पर गंभीरता से सोचेंगे, वे नास्तिकता या किसी दूसरी विकृत विचारधारा या भौतिकवादी दर्शन के हिमायती नहीं बने रह सकते, क्योंकि इन किताबों की खूबी यह है कि ये तुरन्त असर डालती हैं, सीधे नतीजे पेश करती हैं और इनकी बातों को गलत साबित नहीं किया जा सकता। इसके बावजूद अगर वे अपनी सोच पर कायम रहते हैं, तो यह महज एक भावुकता भरी हठधर्मता होगी, क्योंकि ये किताबें ऐसी विचारधाराओं की बुनियाद तमेनसजे,ंदक को ही खारिज कर देती है। हारून यहया द्वारा लिखी किताबों की बदौलत दुनिया की रचना से इंकार करने वाले आज के सभी आंदोलनों की विचारधाराओं को पराजित किया जा चुका है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यह कुरान में मौजूद ज्ञान और साफगोई का नतीजा है। लेखक की यह विनम्र इच्छा है कि खुदा तक पहुंचने की सही राह तलाशने में इंसानियत के लिए वह एक माध्यम बने। इन रचनाओं के प्रकाशन से कोई भौतिक लाभ हासिल करने की मंशा नहीं है।

जो लोग दूसरों को इन किताबों को पढ़ने, अपना दिलोदिमाग खोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं और उन्हें अल्लाह के समर्पित बंदे बनने की राह दिखाते हैं, वे एक बेशकीमती काम करते हैं।

साथ ही, उन दूसरी किताबों का प्रचार करना समय और ताकत की बर्बादी होगा जो लोगों के दिमाग में भ्रम पैदा करती हैं, उनकी सोच को उलझा देती हैं, और जिनका लोगों के दिलों से संदेह दूर करने में कोई मजबूत और सटीक असर नहीं होता, जैसा कि पिछले अनुभवों से साबित हो चुका है। जो किताबें लोगों को आस्था खोने से बचाने के पवित्र लक्ष्य के बजाय लेखक की साहित्यिक क्षमता को उजागर करने के लिए लिखी गई हैं, उनसे ऐसा जबर्दस्त असर होना नामुमकिन ही है। जिन लोगों को इस बात पर शक हो तो वे आसानी से यह देख सकते हैं कि हारून यहया की किताबों का सिर्फ़ एक मकसद है और वह है अनास्था को दूर करना तथा कुरान के नैतिक मूल्यों का प्रचार–प्रसार करना। ऐसा करने में वह कितने कामयाब होते हैं और उनका कितना असर होता है इसका सबूत पाठकों के यकीन में खुद–ब–खुद मिल जाता है।

एक बात को दिमाग़ में रखना चाहिए : क्रूरता, आपसी लड़ाइयों, और भारी तादाद में लोगों पर होने वाले तमाम अत्याचारों और परेशानियों की मुख्य वजह यह है कि विचारधारा के तौर पर अनास्था अब भी हावी है। अनास्था को वैचारिक पराजय देकर और दुनिया की रचना की अद्‌भुत सच्चाई तथा कुरान की नैतिकता को लोगों तक पहुंचा कर ही खत्म किया जा सकता है ताकि लोग कुरान में बताए गए मूल्यों के अनुसार जिंदगी बिता सकें। आज दुनिया के हालात को देखते हुए, जो दिनोदिन हिंसा, भ्रष्टाचार और आपसी लड़ाइयों के भंवर में डूबती जा रही है, यह पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि यह काम जल्द से जल्द और कारगर ढंग से किया जाना चाहिए अन्यथा बहुत देर हो जाएगी।

इस कोशिश में हारून यहया की किताबों ने एक बहुत बड़ी भूमिका निभायी है। इंशाअल्लाह, ये किताबें एक ऐसा माध्यम साबित होंगी जिनसे इक्कीसवीं सदी में लोग अमन, इंसाफ और खुशी हासिल करेंगे जिसका कुरान में वादा किया गया है।

सृष्टि की
रचना का
एटलस
हारून यहया

विषयवस्तु

इवोल्युशन (उत्क्रांति, क्रम विकास) की थीअरि की विफ़लता 594

भूमिका

करीब 150 वर्ष पहले, ब्रिटिश प्रकृतिवादी चार्ल्स डारविन ने अपनी यात्राओं के दौरान देखी गई विभिन्न चीजों के आधार पर एक सिद्धांत पेश किया, लेकिन उसे बाद में किसी अन्य वैज्ञानिक खोज द्वारा सही नहीं ठहराया जा सका है। सार रूप में, उसके क्रमिक–विकास के सिद्धांत में तरह–तरह के दृश्यलेख, मान्यताएं और अटकलबाजियां हैं जो महज़ डारविन की कल्पना की उपज है

उसने क्रमिक–विकास का जो दृश्य पेश किया है, उसके मुताबिक निर्जीव वस्तुएं संयोगवश एक साथ जुड़ीं जिससे पहली जीवित कोशिका का जन्म हुआ। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह दावा सच्चाई से कोसों दूर था, और एक ऐसा दावा था जिसे किसी वैज्ञानिक सबूत या खोज से साबित नहीं किया जा सकता था। इतना ही नहीं, उस काल्पनिक दशा के अनुसार, एक कोशिका वाला जीवन का यह रूप धीरे–धीरे – एक बार फिर संयोगवश – सूक्ष्म जीवों की पहली जीवित प्रजाति में परिवर्तित हो गया – दूसरे शब्दों में, यह क्रमिक–विकास का परिणाम था। क्रमिक–विकास के गलत सिद्धांत के अनुसार, धरती पर जीवन के सभी रूप, बैक्टीरिया से लेकर मनुष्य तक, इसी काल्पनिक प्रक्रिया के नतीजे के तौर पर सामने आये। बेशक, डारविन के दावे किसी वैज्ञानिक सबूत या खोज पर आधारित नहीं थे। लेकिन चूंकि उस वक्त मौजूद विज्ञान से सम्बन्धित ज्ञान और तकनीकी साधन बहुत ही प्रारम्भिक स्तर के थे, इसलिए उसकी बातें कितनी बेतुकी और सच्चाई से दूर थीं यह पूरी तरह उभर कर सामने नहीं आ पाया। ऐसे माहौल में डारविन ने जो तस्वीर पेश की उसे व्यापक दायरों में आम तौर पर स्वीकार कर लिया गया। डारविन के क्रमिक–विकास के सिद्धांत की बुनियाद भौतिकवाद था। इसलिए, भौतिकवादियों ने इस सिद्धांत को अपनाने में देर नहीं की। चूंकि भौतिकवादी दायरे सृष्टि की रचना की सच्चाई से ही इंकार करते थे, इसलिए उन्होंने क्रमिक–विकास के सिद्धांत को आंख मूंदकर पकड़ लिया, और यह भी घोषणा कर दी कि उनका अपना विश्व दृष्टिकोण का भी यही वैज्ञानिक आधार है। शोध और जांच–पड़ताल करके और प्रयोगशालाओं में कृत्रिम वातावरण बनाकर, उन्होंने ऐसे निष्कर्ष निकालने के प्रयत्न किये जो डारविन के सिद्धांत को सही साबित करें। लेकिन, उन्होंने जो भी शोध किया और जो भी नए निष्कर्ष निकाले, उनसे केवल ऐसे तथ्य ही सामने

चार्ल्स डारविन

डारविन जिस एक लेंस वाले माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी) का प्रयोग करते थे, इससे उस युग के सीमित और कम विकसित तकनीकी उपकरणों का पता चलता है।

क्रमिक–विकास के सिद्धान्त को गलत ठहराने वाली महत्त्वपूर्ण खोजों में से एक फॉसिल सम्बन्धी रिकॉर्ड हैं, जो यह उजागर करते हैं कि जीवित प्रजातियों की शारीरिक बनावट में करोड़ों वर्षों तक बदलाव नहीं आया। इन रिकॉर्ड में इस समय के एक जीवित कीड़े और उसके 5 करोड़ वर्ष पुराने फॉसिल का वर्णन किया गया है।

सैलेमेंडर जमीन और पानी में रहने वाला रेंगने वाले जीव का 12–5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल और आज का सैलेमैंडर।

आए जो क्रमिक–विकास को सही ठहराने के बजाय उसे गलत साबित करते थे। बीसवीं सदी की शुरुआत से विज्ञान और तकनीकी बहुत तेजी से आगे बढ़ी जिसने क्रमिक–विकास के सिद्धांत को ग़लत साबित कर दिया है। इस विषय से जुड़ी विज्ञान की सभी शाखाओं – जैसे माइक्रोबायोलॉजी (सूक्ष्म जैवविज्ञान), बायोमैथेमेटिक्स (जैवगणित), कोशिका जैवविज्ञान, जैव रसायनशास्त्र, आनुवांशिकी, शरीर रचना विज्ञान, शरीर विज्ञान, एंथ्रोपोलॉजी (मानव) और पैलिएंटोलॉजी – ने अनगिनत ऐसे सबूत पेश किए हैं जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत को पूरी तरह अविश्वसनीय साबित करते हैं। फॉसिल रिकार्ड (फॉसिलों का ब्यौरा) संभवतः वह सबसे महत्त्वपूर्ण सबूत है जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत के दावों को ध्वस्त करता है। फॉसिलों से यह पता चलता है कि धरती पर जीवन के रूप में थोड़ा भी बदलाव नहीं आया है और वह एक से दूसरे रूप में कभी विकसित हुए ही नहीं। फॉसिल रिकॉर्ड की जांच करने पर हम देख सकते हैं कि जीवित वस्तुएं आज भी बिल्कुल वैसी ही हैं जैसी कि करोड़ों वर्ष पहले थीं – दूसरे शब्दों में, वे कभी क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुईं। सबसे प्राचीन कालों में भी जीवन के रूप अपनी तमाम जटिल संरचनाओं साथ एकाएक उभरकर सामने आए – अपनी सभी पूर्ण और श्रेष्ठ खूबियों के साथ, ठीक वैसे ही जैसी की आज उनके स्वरूपों **(Counterparts)** में पाई जाती है।

यह एक ऐसी सच्चाई की ओर इशारा करता है जिस पर उंगली नहीं उठाई जा सकती : जीवित वस्तुएं किसी काल्पनिक क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से अस्तित्व में नहीं आईं। वे सभी जीवित प्राणी जो इस धरती पर आज तक मौजूद रहे हैं, उनकी रचना अल्लाह ने की है। सृष्टि की रचना की यह सच्चाई उन संकेतों से भी उजागर होती है जो दोषरहित जीवित प्राणी अपने पीछे छोड़ गए हैं।

यह किताब आपको न सिर्फ यह जानकारियां देगी कि फॉसिल क्या होते हैं और वे कैसे और कहां मिलते हैं, बल्कि करोड़ों वर्ष पुराने कई तरह के फॉसिलों के नमूनों की इसमें करीब से जांच भी की जाएगी, जो अब भी यह घोषणा करते हैं, ''हम कभी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अंग नहीं रहे।'' इस किताब में जिन फॉसिलों की चर्चा की गई है और जिनका चित्र खींचा गया है वे उन करोड़ों नमूनों के महज कुछ उदाहरण हैं जो सृष्टि की रचना की सच्चाई को सही साबित करते हैं। और ये चंद उदाहरण यह भी साबित करने के लिए काफी हैं कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत विज्ञान के इतिहास में एक बड़ी धोखाधड़ी और जालसाज़ी है।

फर्न की बनावट उसकी उत्पत्ति के समय से वही बनी हुई है। फर्न, जो कि लगभग 30 करोड़ वर्षों से एक समान हैं, क्रमिक–विकास के गलत साबित होने का एक उदाहरण हैं।

फॉसिल (जीवाश्म) क्या है?

फॉसिल (जीवाश्म) क्या है?

व्यापक परिभाषा के अनुसार, फॉसिल या जीवाश्म किसी ऐसे जीवित प्राणी के अवशेष होते हैं जो बहुत समय पहले रहता था और जो प्राकृतिक स्थितियों के तहत सुरक्षित रहने के कारण आज तक बचे हुए हैं। जो फॉसिल हमें मिलते हैं वे किसी जीव के हिस्से हैं, या ऐसी निशानियां हैं जो उस जीवित प्राणी के जिंदा रहते हुए छूटी थीं (इन्हें ट्रेस फॉसिल या फॉसिल चिह्न कहते हैं)। वे तब बनते हैं जब मृत जंतु या वनस्पतियां पूरी तरह सड़ने–गलने से पहले ही सुरक्षित हो जाती हैं और धीरे–धीरे धरती की परतदार चट्‌टानों का एक हिस्सा बन जाती हैं। फॉसिल बनने के लिए जरूरी है कि वह जंतु या वनस्पति काफ़ी तेज़ी से दफ़न हो जाए – आम तौर पर गादमिट्‌टी की परत से ढ़क जाने के कारण ऐसा होता था। इसके बाद आमतौर पर एक रासायनिक प्रक्रिया घटित होती थी, जिसके दौरान कोशिकाओं के समूह में मौजूद खनिज पदार्थों में होने वाले बदलावों के कारण वे सड़ने–गलने से सुरक्षित हो जाते थे।

फॉसिल प्रागैतिहासिक (अतिप्राचीन) जीवन के ब्यौरों का सबसे अहम सबूत हैं। दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में करोड़ों फॉसिल पाए गए हैं और उनके ज़रिए धरती पर जीवन के इतिहास और संरचना को जाना जा सकता है। करोड़ों फॉसिल यह बताते हैं कि प्रजातियां पूरी तरह बनी हुई और अपनी जटिल संरचनाओं के साथ यकायक उभर कर आईं, और उसके बाद से करोड़ों वर्षों के दौरान उनमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। यह इस बात का महत्त्वपूर्ण प्रमाण है कि जीवन का अस्तित्व सीधे शून्य में से पैदा किया गया है – दूसरे शब्दों में, इसकी रचना की गई। एक भी फॉसिल यह नहीं बताता है कि जीवित प्राणी धीरे–धीरे करके बने, दूसरे शब्दों में, कि उनका क्रमिक–विकास हुआ। क्रमिक–विकासवादी जिन फॉसिल नमूनों को ''बीच के फॉसिल'' बताते हैं, उनकी संख्या बहुत कम है, और वैज्ञानिक तौर पर यह साबित किया जा चुका है कि वे मानने लायक नहीं हैं। इसके साथ ही, बीच के फॉसिल के तौर पर पेश किए गए कुछ नमूनों का पर्दाफ़ाश हो चुका है और यह उजागर हुआ है कि वे नकली हैं। इससे पता चलता है कि डारविनवादी इस कदर बदहवास हैं कि वे हर तरह की धोखेबाजी करने पर उतारू हैं।

ळमदमतंससल विससवूपदह जीम कमंजी वि सपअपदह वतहंदपेउए पितेज जीम`वजि जपेनमे इमबवउम कमवितउमक `दक कमबंलण जीमद संजमतए`तिक चंतजे`नबी` इवदमे `दक जममजी `तम चतमेमतअमकण ठनतपंस`विनसक वबबनत पितसल तंचपकसल जव चतमअमदज कमवितउंजपवद वि जीम इवदमेण
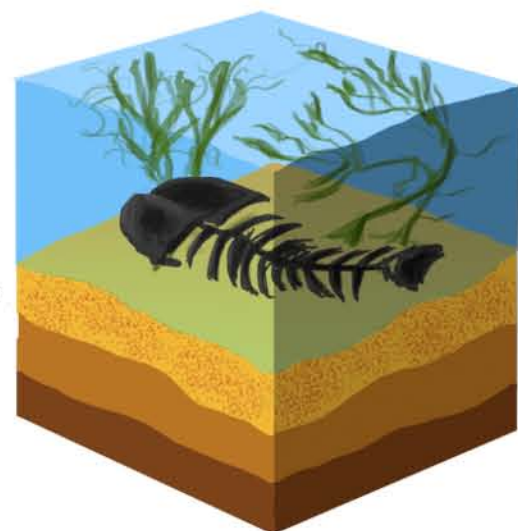
काफी समय बाद, हड्डियां तलछट की निचली परतों के नीचे दब जाती हैं और वहां, जीवित प्राणी की बची हुई निशानियां फॉसिल में तब्दील हो जाती हैं।

मोंटाना में मिला पैलियोसीन काल (65–5 से 55 करोड़ वर्ष पहले) के भोजवृक्ष का फॉसिल त्रिआयामी है।

ऊपरी भूमि के धीमे–धीमे नष्ट होने के साथ–साथ, वह चट्टानी परत ऊपर की ओर आने लगती है, जिसमें फॉसिल का निर्माण हुआ था।

मेंढक का 5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल
5 करोड़ वर्ष पहले जीवित इस मेंढक और आज के मेंढक में कोई फर्क नहीं है।

सतह की ओर आता फॉसिल या तो खुद ही नज़र आ जाता है या उसे जांच–पड़ताल के दौरान फॉसिल वैज्ञानिकों द्वारा खोजा जाता है।

3.8 से 2.3 करोड़ वर्ष पहले जीवित एक केकड़े का फॉसिल

49 से 44.3 करोड़ वर्ष पुरानी स्टारफिश से पता चलता है कि स्टारफिश में कई हजार लाख वर्षों से बदलाव नहीं आया है और उनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ।

पिछले करीब 150 वर्षों से दुनिया भर में खुदाई में मिले फॉसिलों ने साबित किया है कि मछलियां हमेशा मछलियां रही हैं, कीड़े हमेशा कीड़े रहे हैं, पक्षी हमेशा पक्षी रहे हैं और रेंगने वाले जीव हमेशा रेंगने वाले जीव ही रहे हैं। एक भी फॉसिल ने इस ओर इशारा नहीं किया है कि जीवित प्रजातियों के बीच कोई परिवर्तन हुआ है – यानी, मछली से पानी और जमीन दोनों पर रहने वाले जीव या रेंगने वाले जीवों से उड़ने वाले जीव बन गये हैं। संक्षेप में, फॉसिल रिकॉर्ड में क्रमिक–विकासवादियों के सिद्धांत के इस बुनियादी दावे को मिट्टी में मिला दिया है कि लंबे–लंबे समय के दौरान हुए बदलावों के द्वारा एक से दूसरी प्रजातियों का विकास हुआ।

पिछले करीब 150 वर्षों से दुनिया भर में खुदाई में मिले फॉसिलों ने साबित किया है कि मछलियां हमेशा मछलियां रही हैं, कीड़े हमेशा कीड़े रहे हैं, पक्षी हमेशा पक्षी रहे हैं और रेंगने वाले जीव हमेशा रेंगने वाले जीव ही रहे हैं। एक भी फॉसिल ने इस ओर इशारा नहीं किया है कि जीवित प्रजातियों के बीच कोई परिवर्तन हुआ है – यानी, मछली से पानी और जमीन दोनों पर रहने वाले जीव या रेंगने वाले जीवों से उड़ने वाले जीव बन गये हैं। संक्षेप में, फॉसिल रिकॉर्ड में क्रमिक–विकासवादियों के सिद्धांत के इस बुनियादी दावे को मिट्टी में मिला दिया है कि लंबे–लंबे समय के दौरान हुए बदलावों के द्वारा एक से दूसरी प्रजातियों का विकास हुआ।

फॉसिल जीवन के रूपों के बारे में जो जानकारी देने के अलावा
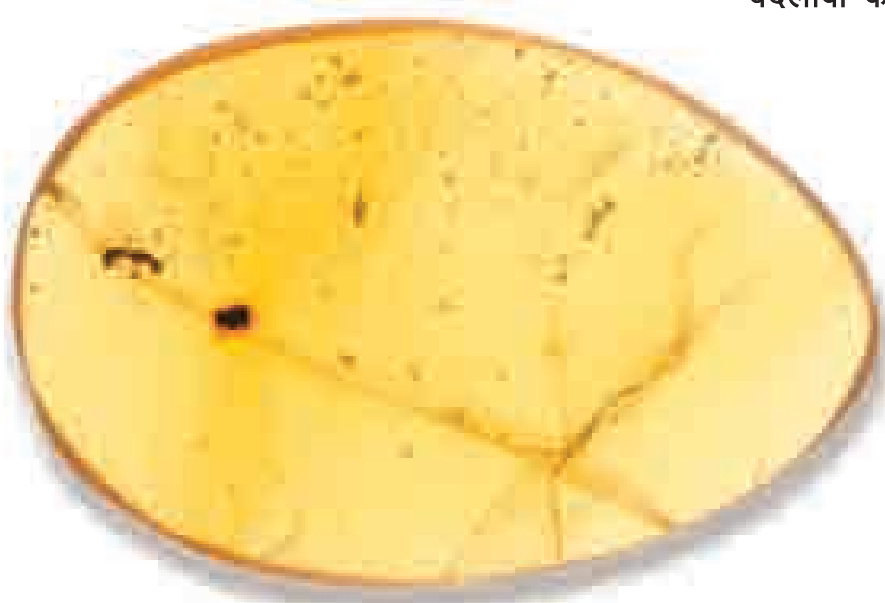
पंख वाली चींटी जो 2 से 1.5 करोड़ वर्ष पहले जीवित थी रेजिन (लीसा) के कठोर होने के चलते अंबर में फंसे फॉसिल, क्रमिक–विकास के सिद्धान्त को खारिज करते हैं।

25 करोड़ और 7 करोड़ वर्ष पहले जीवित समुद्री केकड़ा आज मिलने वाले समुद्री केकड़ों के समान हैं। लाखों वर्षों से न बदलने वाले समुद्री केकड़े दर्शाते हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

संक्रमणकालीन रूप का कोई अस्तित्व नहीं है
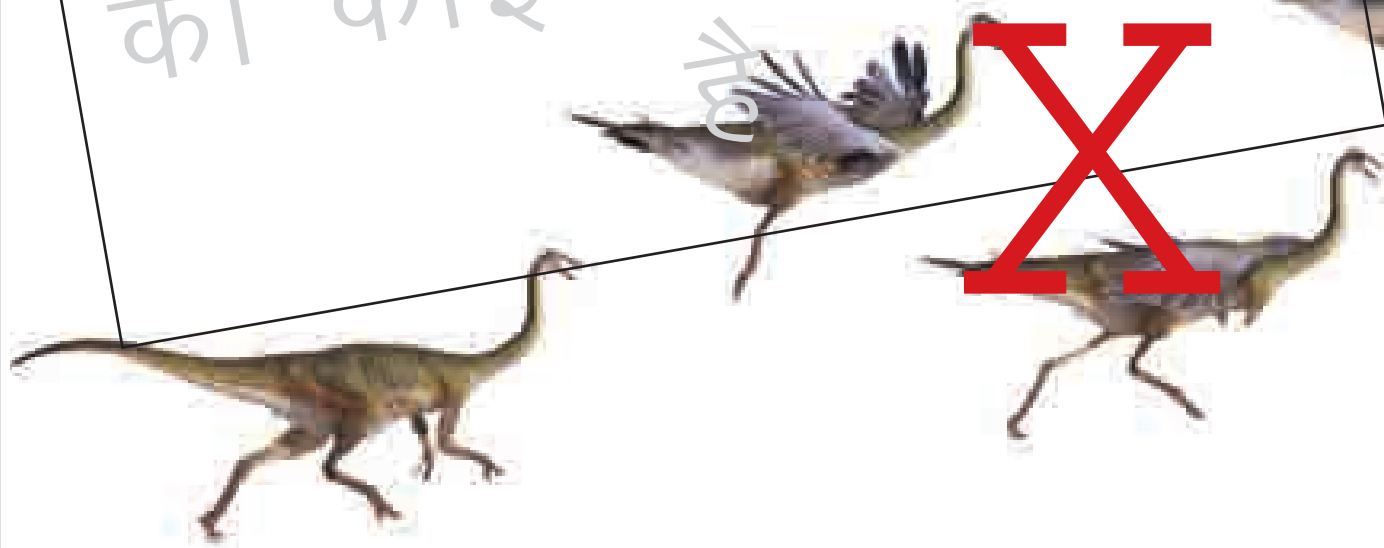
फॉसिल की खोजों से पता चलता है कि इन चित्रों में मौजूद काल्पनिक प्राणियों का अस्तित्व कभी नहीं रहा। जीवित प्राणी अपनी समूची विशेषताओं के साथ फॉसिलों के रिकॉर्ड में अचानक प्रकट हुए और उनकी पूरी जिंदगी में इन प्राणियों में किसी प्रकार का बदलाव नहीं हुआ।
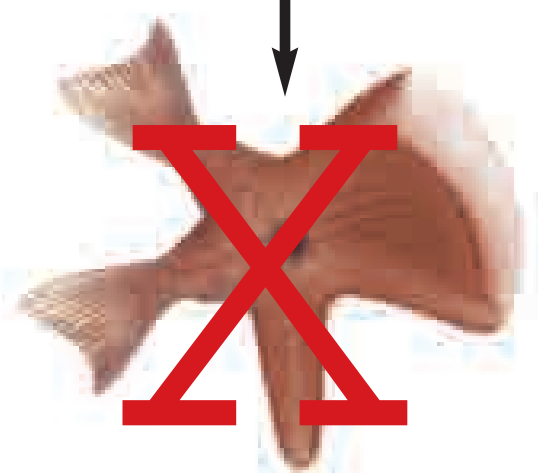
डारविनवादी दावा करते हैं कि जीवित प्राणी मामूली बदलावों से गुजरते हुए लाखों वर्षों में एक प्रजाति से दूसरी प्रजाति में विकसित हो जाते हैं। इस दावे के अनुसार, जिसे वैज्ञानिक खोजों के द्वारा खारिज कर दिया गया है, मछली जल और थल दोनों पर रहने वाले जानवर में रूपांतरित हो गई, और रेंगने वाले जीव पक्षियों में रूपांतरित हो गए। इस कथित रूपांतरण प्रक्रिया, जिसके बारे में कहा जाता है कि यह लाखों वर्षों तक जारी रही, के असंख्य प्रमाण फॉसिल संबंधी रिकार्ड में होने चाहिए। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, पिछले सौ वर्षों में अपने सघन शोधों के दौरान शोधकर्ताओं को आधी–मछली–आधी छिपकली, आधी मकड़ी आधी मक्खी या आधी छिपकली आधी चिड़िया जैसे कई बेढब जीवित प्राणी मिलने चाहिए थे। हालांकि, पृथ्वी की लगभग सभी परतें खोदी जा चुकी हैं, लेकिन ऐसा एक भी फॉसिल नहीं मिला जिसे डारविनवादी अपने तथाकथित संक्रमण के प्रमाण के रूप में प्रयोग कर सकें।

दूसरी तरफ, ऐसे असंख्य फॉसिल यह दर्शाते हैं कि मकड़ियां हमेशा ही मकड़ियां थीं, मक्खियां हमेशा ही मक्खियां थीं, मछली हमेशा मछली थी, मगरमच्छ हमेशा मगरमच्छ थे, खरगोश हमेशा खरगोश ही थे और पक्षी हमेशा पक्षी थे। कई हजार लाख फॉसिल साफ तौर पर यह दर्शाते हैं कि जीवित प्राणी कभी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से नहीं गुजरे, बल्कि उनकी रचना की गई थी।

इस धरती के इतिहास के बारे में भी महत्त्वपूर्ण जानकारियां देते हैं, जैसे कि महाद्वीपीय प्लेटों (परतों) के खिसकने से किस तरह पृथ्वी की सतह बदली है और पिछले युगों के दौरान जलवायु में किस तरह के बदलाव हुए हैं।

प्राचीन यूनानी काल से ही शोधकर्ताओं की दिलचस्पी फॉसिलों में रही है, लेकिन विज्ञान की एक अलग शाखा के रूप में उनका अध्ययन 17 वीं सदी के बीच में ही शुरू हुआ। शोधकर्ता रॉबर्ट हुक (माइक्रोग्राफिया, 1665 और डिस्कोर्स ऑन अर्थक्वेक्स, 1668 के लेखक) तथा नील्स स्टेन्सन (जो निकालोई स्टेनो के नाम से ज्यादा मशहूर हैं) की किताबें छपने के बाद इसकी शुरुआत हुई। जिस समय हुक और स्टेनो अपनी जांच–पड़ताल कर रहे थे, उस समय ज्यादातर विचारक यह नहीं मानते थे कि फॉसिल वास्तव में बहुत पहले मौजूद रहे जीवित प्राणियों के अवशेष हैं। फॉसिल वास्तव में जीवित प्राणियों के अवशेष हैं या नहीं यह बहस इसलिए चलती रही क्योंकि वैज्ञानिक भूवैज्ञानिक आंकड़ों के रूप में यह बता पाने में नाकाम थे कि फॉसिल उन जगहों पर कैसे पाए गए। फॉसिल अक्सर पहाड़ी इलाकों में पाए जाते थे, हालांकि उस समय, यह बता पाना नामुमकिन था, कि उदाहरण के लिए, समुद्र की सतह से इतनी ऊंचाई तक चट्टानों की परतों में किसी मछली का फॉसिल कैसे बन गया। जैसा कि इससे पहले लियोनार्दो दा विंची ने सुझाया था, उसी तरह स्टेनो का कहना था कि समय गुज़रने पर समुद्र की सतह जरूर नीचे चली गई होगी। दूसरी ओर, हुक का कहना था कि धरती के भीतर गर्मी बढ़ गई और समुद्री चट्टानों में आए भूकंपों के कारण पहाड़ बने हैं।

ऑस्ट्रेलिया स्थित एडिआकरा फॉरमेशन पर काम करता फॉसिल शोधकर्ता

हुक और स्टेनो ने यह बताया कि फॉसिल वास्तव में बहुत पहले जिंदा रहे जीवित प्राणियों के अवशेष हैं, और इसके बाद 18वीं तथा 19वीं सदियों के दौरान भूविज्ञान का विकास हुआ, तथा सुव्यवस्थित ढंग से फॉसिलों को इकट्ठा करना और उन पर शोध करने का काम विज्ञान की एक शाखा का रूप लेने लगा। स्टेनो ने जो सिद्धांत तय किए थे उनके अनुसार फॉसिलों को अलग–अलग वर्गों में बांटा गया और उनकी व्याख्या की गई। 18वीं सदी के बाद से खदानों के विकास और रेलवे का निर्माण तेज होने के कारण इस बात की ओर ब्यौरेवार जांच–पड़ताल सम्भव हुई कि जमीन की सतह के नीचे क्या है।

पृथ्वी की सैटेलाइट इमेज

आधुनिक भूविज्ञान ने यह बताया कि पृथ्वी की ऊपरी सतह बहुत बड़े–बड़े हिस्सों से मिलकर बनी है जिन्हें ''प्लेट'' कहते हैं। पृथ्वी की सतह के आर–पार इनके खिसकने के कारण महाद्वीप एक से दूसरी जगह चले गए और महासागर बने। प्लेटों के खिसकने की गति जितनी अधिक रही, पृथ्वी के भूगोल में उतना ही अधिक बदलाव आया। पर्वतमालाएं बहुत विशाल प्लेटों के बीच टकराव का नतीजा थीं। बहुत लंबे समय के दौरान पृथ्वी के भूगोल में हुए बदलाव और ऊपर की ओर लगे धक्कों ने यह भी सुझाया है कि आज जो परतें पहाड़ों का हिस्सा हैं वे कभी पानी के नीचे थीं।

आधुनिक भूविज्ञान ने यह बताया कि पृथ्वी की ऊपरी सतह बहुत बड़े–बड़े हिस्सों से मिलकर बनी है जिन्हें ''प्लेट'' कहते हैं। पृथ्वी की सतह के आर–पार इनके खिसकने के कारण महाद्वीप एक से दूसरी जगह चले गए और महासागर बने। प्लेटों के खिसकने की गति जितनी अधिक रही, पृथ्वी के भूगोल में उतना ही अधिक बदलाव आया। पर्वतमालाएं बहुत विशाल प्लेटों के बीच टकराव का नतीजा थीं। बहुत लंबे समय के दौरान पृथ्वी के भूगोल में हुए बदलाव और ऊपर की ओर लगे धक्कों ने यह भी सुझाया है कि आज जो परतें पहाड़ों का हिस्सा हैं वे कभी पानी के नीचे थीं।

इस तरह से, चट्टानी परतों में देखे गए फॉसिल पृथ्वी के इतिहास के अलग–अलग दौरों के बारे में जानकारी हासिल करने का एक प्रमुख साधन बन कर उभरे। भूविज्ञान से मिली जानकारी ने यह बताया कि मरने के बाद तलछट की परतों में सुरक्षित रह
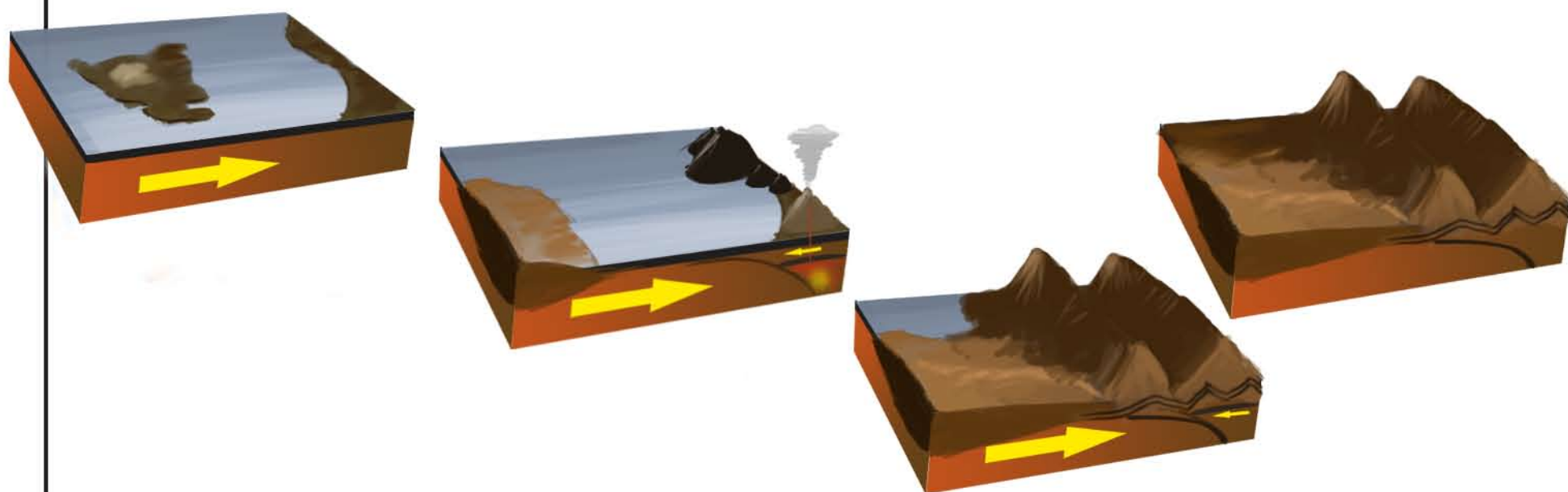
भूगर्भीय शोध दर्शाते हैं कि पृथ्वी की परतें सरकती हैं और विशाल टेक्टॉनिक प्लेटों की गति और टकराहट के चलते पर्वतों का निर्माण हुआ। ऊपर बने चित्र में, हिमालय के ऐतिहासिक निर्माण का वर्णन है। लगभग 14.5 करोड़ वर्ष पहले जब भारतीय क्षेत्र ने यूरोएशिया की तरफ सरकना शुरू किया, तो समुद्रतल यूरोएशिया के नीचे खिसक गया। भारत के यूरोएशिया के साथ मिलने के कारण समुद्र तल की परतें दोनों महाद्वीपों के बीच फंस गईं और इसके चलते, ऊपर की तरफ खिसक गईं, जिसके परिणामस्वरूप आज के हिमालय बने।

गए जीवित प्राणियों के अवशेष – दूसरे शब्दों में, फॉसिल – बहुत लंबे समय के दौरान चट्टानी परतों में ऊपर आ गए। जिन चट्टानों में फॉसिल मिले हैं उनमें से कुछ करोड़ों वर्ष पुरानी हैं।

इन अध्ययनों के दौरान यह देखा गया कि खास प्रजातियों के फॉसिल कुछ विशिष्ट प्रकार की चट्टानों और ख़ास तरह की परतों में ही पाए जाते हैं। यह देखा गया कि एक के बाद एक मौजूद चट्टानों की परतों में खास तरह के फॉसिलों के समूह मौजूद थे, जिन्हें उस ख़ास परत का ''हस्ताक्षर'' माना जा सकता है। ये ''हस्ताक्षर फॉसिल'' समय, दौर और इलाके के मुताबिक, अलग–अलग हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक ही भूवैज्ञानिक दौर की फॉसिल वाली एक ही परत में दो अलग–अलग पर्यावरणीय स्थितियां और अलग–अलग किस्म के तलछट – एक प्राचीन झील की तलहटी और एक मूंगे की चट्टान – पाई जा सकती हैं। दूसरी ओर, एक–दूसरे से कई किलोमीटर दूर दो अलग–अलग किस्म की चट्टानी परतों में एक ही फॉसिल ''हस्ताक्षर'' मिल सकते हैं। इन निशानियों से मिली जानकारी के जरिए, वैज्ञानिकों ने वह भूवैज्ञानिक समय तालिका तैयार की जिसका हम

तस्वीर में ट्रिलोबाइट, जो कि ऑर्डोविशियन काल (49 से 44.3 करोड़ वर्ष पहले) में जीवित थे, और गैस्ट्रोपॉड जो सिलूरियन काल में (44.3 से 41.7 करोड़ वर्ष पूर्व), को दर्शाया गया है। इन फॉसिलों से हम अंदाजा लगा सकते हैं, वे चट्टानें, जिनकी हम चर्चा कर रहे हैं, लगभग 44.8 से 44.2 वर्ष पुरानी हैं।

चट्टानों के बनने की तिथि तय करने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले फॉसिलों को इंडेक्सिंग फॉसिल कहा जाता है। इनमें से ज्यादातर प्रजातियां वे हैं तो केवल किसी खास काल में जीवित थीं, जो चारों ओर फैली हुई थीं और आसानी से पहचानी जा सकती थीं।

फॉसिल का बनना

अंबर में जमा हुआ 5.4 से 2.8 वर्ष पुराना ततैया
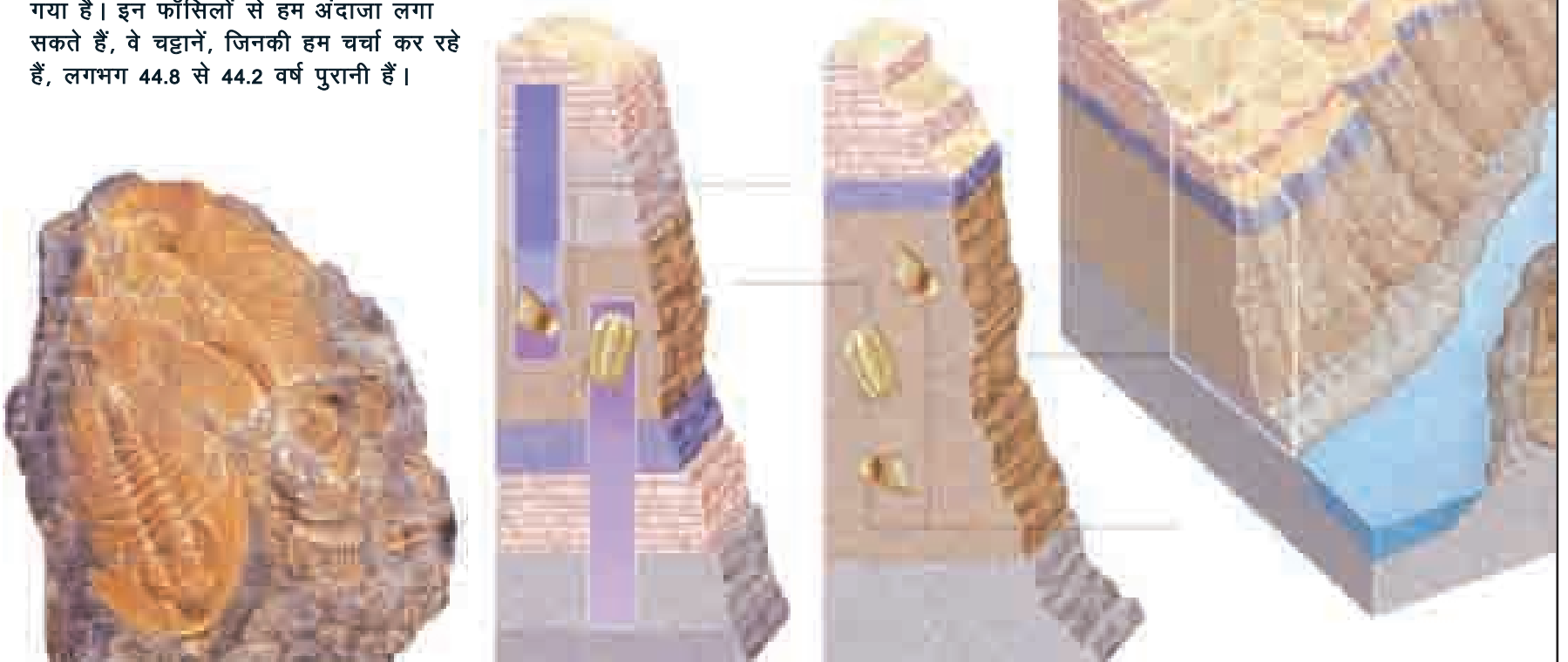
किसी जीवित प्राणी के मरने के बाद बचे रह गए उस जंतु के शरीर के सख्त हिस्सों, जैसे हड्डियों, दांतों, खोल या नाखूनों के सुरक्षित रह जाने से फॉसिल बनते हैं। आमतौर पर सोचा जाता है कि फॉसिल किसी पेड़–पौधे या जानवर के हिस्से पत्थर की तरह जम जाने से ही बनते हैं। लेकिन, फॉसिल सिर्फ पत्थर की तरह जम जाने से ही नहीं बनते। कुछ फॉसिल आज तक बचे हुए हैं जबकि उनकी संरचना में कोई भी खराबी या सड़न–गलन नहीं हुई है, जैसे कि बर्फ के भीतर जम गए मैमथ (अति प्राचीन काल का विशालकाय हाथी) और अंबर के भीतर सुरक्षित रह गए छोटे–छोटे रेंगने वाले जीव या बिना रीढ़ वाले जीव।

जब कोई जीवित प्राणी मरता है तो उसकी मांसपेशियों और अंगों की कोशिकाओं के समूह बैक्टीरिया और पर्यावरण की स्थितियों के असर से जल्दी ही सड़ने–गलने लगते हैं। (कुछ हालात में, जैसे कि शून्य से नीचे के तापमान में या रेगिस्तानों की सूखी गर्मी में, सड़न–गलन नहीं होती।) जीव के अधिक कठोर हिस्से, जैसे हड्डियों या दांतों, वो हिस्से होते हैं जिनमें खनिज पदार्थ होते हैं और ज़्यादा लंबे समय तक बचे रह सकते हैं। वे कई तरह की भौतिक और रासायनिक प्रक्रियाओं से गुजरते हैं। और इन प्रक्रियाओं के कारण फॉसिल बनते हैं। इसलिए, फॉसिल बनने वाले ज्यादातर हिस्से रीढ़ वाले जीवों की हड्डियां और दांत, ब्राकियोपोड (भुजपाद) और मोलस्क (नर्म खोल वाले जीव) के खोल, पपड़ीदार शरीर वाले कुछ जीवों और ट्रिलोबाइटों के बाहरी कंकाल, मूंगे जैसे जीवों और स्पंज (जल शोषक) की सामान्य रूपरेखा, और पौधों के लकड़ी वाले हिस्से ही हैं।

किसी जीव के आस–पास का वातावरण और पर्यावरणीय स्थितियां भी फॉसिल बनने में बड़ी भूमिका निभाती हैं। किसी जीव के आस–पास के वातावरण के आधार पर यह बताया जा सकता है कि उसका फॉसिल बनेगा या नहीं। उदाहरण के लिए फॉसिलों के बनने में पानी के नीचे का वातावरण सूखी जमीन के मुकाबले ज्यादा सहायक होती हैं।

फॉसिल बनने की अधिक प्रचलित, व्यापक प्रक्रिया को परमिनरलाइज़ेशन या खनिजीकरण कहते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान शरीर जिस मिट्टी में दबा होता है वहां तरल रूप में मौजूद खनिज उस जीव का स्थान ले लेते हैं। खनिजीकरण की प्रक्रिया के दौरान, निम्नलिखित स्थितियां आती हैं :

1) सबसे पहले, यह आवश्यक है कि मिट्टी, कीचड़ या रेत में ढ़के होने से मरे हुए जीव का शरीर तत्काल हवा के संपर्क में आने से बच जाए। इसके बाद के महीनों के दौरान, दफ्न हुए अवशेषों के ऊपर तलछट की नई परतें जमती चली जाती हैं। ये परतें लगातार मोटी होती हुई ढ़ाल का काम करती हैं और जीव के शरीर को बाहरी कारकों और घिसने–टूटने से बचाती हैं। पिछली परतों के ऊपर बहुत–सी नई परतें बन जाती हैं और कुछ सौ वर्षों में ही जीव के अवशेष जमीन की सतह या समुद्र या झील की तलहटी से कई मीटर नीचे दब चुके होते हैं। और समय बीतने के साथ, जीव की हड्डियों, खोल, शल्क या कार्टिलेज (श्रेततन्तु) जैसी संरचनाएं धीरे–धीरे रासायनिक तौर पर टूटने लगती हैं। भूमिगत जल इन संरचनाओं में घुसने लगता है और इस पानी में घुले हुए खनिज पदार्थ – कैल्साइट, पायराइट, सिलिका और लोहा जैसे खनिज जिन पर क्षरण और रासायनिक टूटन का कम असर होता है – धीरे–धीरे उत्तकों में मौजूद रसायनों की जगह ले लेते हैं। इस तरह करोड़ों वर्ष के दौरान, ये खनिज जीव के शरीर के उत्तकों को हटाकर उसकी हूबहू पत्थर की प्रतिलिपि बना देते हैं। आखिरकार, फॉसिल मूल जीव के बाहरी रूप और आकार जैसा ही बन जाता है, लेकिन अब वह पत्थर में तब्दील हो चुका होता है।
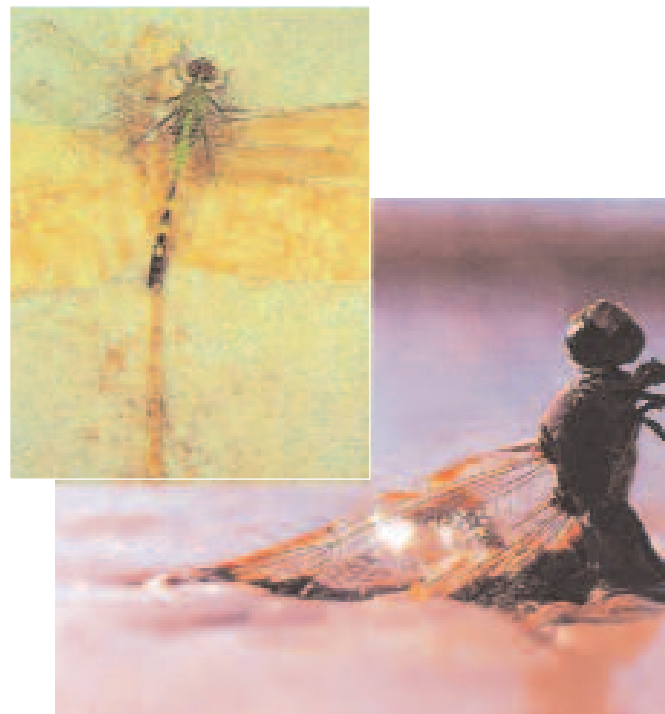
कीचड़ में फंसी यह ड्रेगनफ्लाई एक दिन फॉसिल में तब्दील हो सकती है और इस प्रमाण के तौर पर भावी पीढ़ियों तक पहुंच सकती है कि क्रमिक–विकास कभी नहीं हुआ।
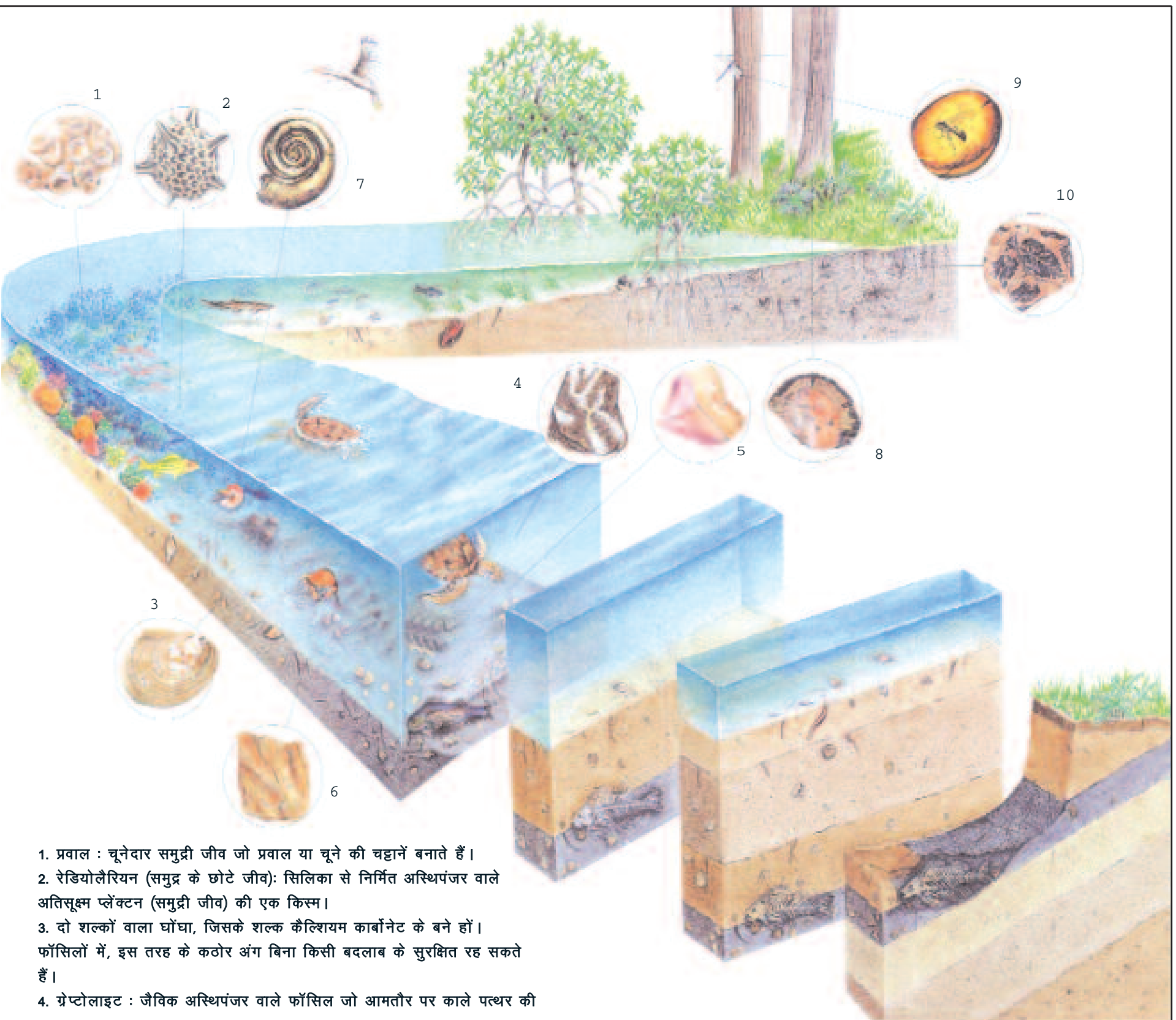
1. प्रवाल : चूनेदार समुद्री जीव जो प्रवाल या चूने की चट्टानें बनाते हैं।
2. रेडियोलैरियन (समुद्र के छोटे जीव): सिलिका से निर्मित अस्थिपंजर वाले अतिसूक्ष्म प्लेंक्टन (समुद्री जीव) की एक किस्म।
3. दो शल्कों वाला घोंघा, जिसके शल्क कैल्शियम कार्बोनेट के बने हों। फॉसिलों में, इस तरह के कठोर अंग बिना किसी बदलाव के सुरक्षित रह सकते हैं।
4. ग्रेप्टोलाइट : जैविक अस्थिपंजर वाले फॉसिल जो आमतौर पर काले पत्थर की चट्टान पर पहचान छोड़ देते हैं। ये प्राणी समूहों में रहा करते थे।
5. शार्क के दांत : हड्डियां और दांत मुख्यतः फॉस्फोरस से बने होते हैं, इसी वजह से कई नर्म–रेशों वाले अंगों की तुलना में इनकी प्रतिरोधी क्षमता अधिक होती है।
6. सूक्ष्म मात्राओं वाले फॉसिल : जो परतों पर देखी गई सूक्ष्म मात्राओं में बनते हैं।
7. अमोनाइट : एक नमूना जिसके शल्क लौह पाइराइट में तब्दील होकर फॉसिल बन चुके थे।
8. जमा हुआ पेड़ : धीमे–धीमे, पेड़ की लकड़ी वाले हिस्से सिलिका में तब्दील हो जाते हैं और फॉसिल बन जाते हैं।
9. अंबर : छोटे जीव रेजिन में सुरक्षित रह जाते हैं।
10. कार्बन में तब्दील हो चुकी पत्तियां : कार्बन के रेशों में रूपांतिरत हो चुके पौधे।

5 करोड़ वर्ष पहले जीवित मछली का यह फॉसिल इस बात का प्रमाण है कि मछली हमेशा से ही मछली थी।

खनिजीकरण के दौरान कई तरह की स्थितियां सामने आ सकती हैं :

1. अगर कंकाल तरल पदार्थ से पूरी तरह भर गया है और टूटन बाद में होती है, तो आंतरिक ढांचे का फॉसिल बन जाता है।

2. अगर कंकाल के मूल खनिज को पूरी तरह हटाकर उसकी जगह कोई दूसरा खनिज ले लेता है, तो खोल की एक पूरी प्रतिलिपि उभर आती है।

3. अगर दबाव के कारण कंकाल का हूबहू ढांचा या "सांचा" बन जाता है, तो कंकाल की बाहरी सतह के अवशेश बचे रह सकते हैं।

दूसरी ओर, वनस्पतियों के फॉसिलों में बैक्टीरिया के कारण होने वाला कार्बनीकरण काम करता है। कार्बनीकरण की प्रक्रिया के दौरान, कार्बन और हाइड्रोजन, ऑक्सीजन और नाइट्रोजन का स्थान ले लेते हैं। कार्बनीकरण दबाव और तापमान में होने वाले बदलावों या विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं के जरिए बैक्टीरिया द्वारा उत्तकों के टूटने से होता है, जिससे प्रोटीन और सेल्यूलोस की संरचना में इस ढंग से रासायनिक बदलाव हो जाते हैं कि सिर्फ कार्बन के उत्तक बचे रहते हैं। अन्य जैव सामग्रियां जैसे कि कार्बन डाइआक्साइड, मीथेन, हाइड्रोजन सल्फेट और पानी की वाष्प गायब हो जाती हैं। इस प्रक्रिया से ही कोयले की वे प्राकृतिक चट्टानें अस्तित्व में आईं जो 35.4 से 29 करोड़ वर्ष पहले कार्बनीफेरस युग में मौजूद रहे दलदलों से बनी है।

कभी–कभी फॉसिल तब बनते हैं जब जीव कैल्शियम से भरपूर पानी में डूब जाते हैं और उन पर ट्रैवरटाइन जैसे खनिजों की परत चढ़ जाती है। जैसे–जैसे जीव सड़ता–गलता है, वह खनिज की परत में अपनी निशानियां छोड़ता जाता है।

अंबर में 2 से 1.5 करोड़ वर्ष से सुरक्षित एक मिज (एक प्रकार का कीड़ा)

कभी–कभी आसानी से नष्ट हो जाने वाले जीव भी असाधारण परिस्थितियों में फॉसिल में तब्दील हो सकते हैं। चित्र में जुरासिक काल (20.6 से 14.4 करोड़ वर्ष पहले) की एक स्टारफिश नजर आ रही है। इस फॉसिल और आज के समय की स्टारफिश में किसी भी प्रकार का अंतर नहीं है।
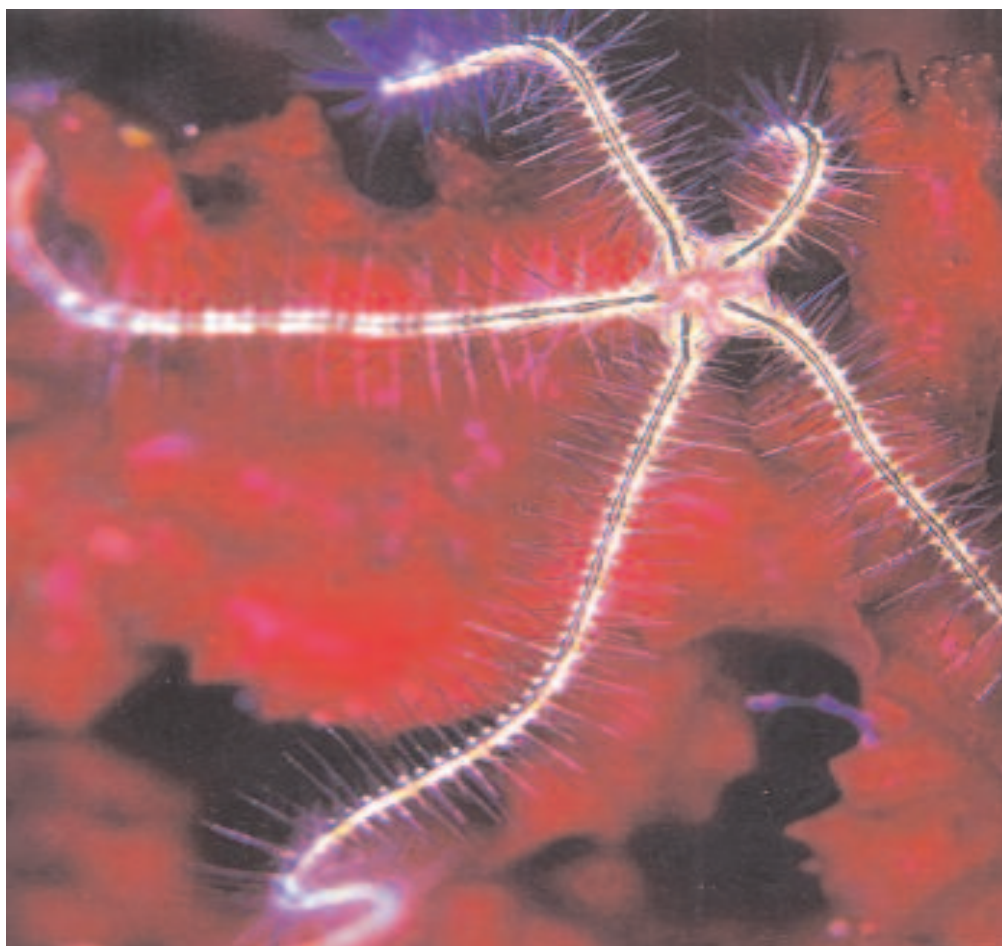
ट्रायसिक काल (25 से 20.3 करोड़ वर्ष पहले) की इस मछली की त्वचा और शल्क अपनी समूची विशेषताओं के साथ फॉसिल में तब्दील हो गए। यह उदाहरण बताता है कि उस मछली का शल्क ढांचा 25 करोड़ वर्ष पहले भी वही था।

किसी जीवित प्राणी के नर्म हिस्सों, जैसे कि त्वचा के बाल, पंख या त्वचा, का फॉसिल बनना बहुत कम ही दिखाई पड़ता है। पूर्वकैमब्रियन काल

(4.6 अरब से 54.3 करोड़ वर्ष पहले) के कुछ नर्म उत्तकों वाले जीवन के रूपों के अवशेष काफी अच्छी तरह सुरक्षित बचे हैं। ऐसे भी नर्म उत्तकों के अवशेष हैं जिनसे कैमब्रियन काल (54.3 से 49 करोड़ वर्ष पहले) के जीवों की आंतरिक संरचनाओं की जांच की जा सकती है और साथ ही आज तक जीवित प्राणियों के अवशेषों के सख्त उत्तकों को भी जांचा जा सकता है। अंबर में सुरक्षित जंतुओं के फर और बालों के अवशेषों के फॉसिल और 15 करोड़ वर्ष पुराने फॉसिल ऐसे अन्य उदाहरण हैं जिनकी ब्यौरेवार जांच–पड़ताल की जा सकती है। साइबेरिया की बर्फीली चट्टानों में दबे मैमथ या बाल्टिक जंगलों में अंबर में फंसे कीड़े और रेंगने वाले जीव भी नर्म रेशे वाली अपनी संरचनाओं के साथ ही फॉसिल बन गए हैं।

जिस तरह का जीव सुरक्षित रखा गया है, उसके मुताबिक फॉसिलों के आकार में काफी अंतर हो सकता है। फॉसिल बने सूक्ष्म जीवों से लेकर झुंडों या समूहों में साथ–साथ रहने वाले जानवरों के विशाल फॉसिल तक, काफी अलग–अलग तरह के फॉसिल प्राप्त किए गए हैं। ऐसे विशाल फॉसिलों का एक बेहद अद्भुत उदाहरण इटली में स्पंज की चट्टानें हैं। एक बहुत बड़ी पहाड़ी जैसी दिखने वाली ये चट्टानें 14.5 करोड़ वर्ष पुराने चूनापत्थर के स्पंजों से बनी हैं जो प्राचीन टेथीस सागर की तलहटी में विकसित हुईं, और बाद में टेक्टानिक प्लेटों के खिसकने के कारण उभरकर ऊपर आ गईं। इनमें ट्रायसिक काल (24.8 से 20.6 करोड़ वर्ष पूर्व) के दौरान स्पंज की चट्टानों में रहने वाले जीव रूपों के नमूने मिलते हैं। कनाडा में बर्गेस शेल और चीन में चेंगजियांग सबसे बड़े फॉसिल क्षेत्र हैं जिनमें कैमब्रियन काल के हजारों फॉसिल मौजूद हैं। डोमिनिकन रिपब्लिक में और बाल्टिक सागर के पश्चिमी तटों के पास मिलने वाली अंबर की परतें कीड़ों के फॉसिलों के दूसरे बड़े स्रोत हैं। अमेरिका के व्योमिंग राज्य में ग्रीन रिवर फॉसिल क्षेत्र, मध्य अमेरिका में व्हाइट रिवर फॉसिल क्षेत्र, जर्मनी में आइख्सटैट क्षेत्र और लेबनान में हजूला फॉसिल क्षेत्र इस तरह के अन्य उदाहरण हैं।

पृथ्वी का महानतम स्पंज प्रवाल (समुद्री चट्टान)

14.5 करोड़ पुराना यह प्रवाल टेथीस महासागर तल पर मिली सूक्ष्म मात्राओं से निर्मित है। आज के समय के स्पंज प्रवाल और इस स्पंज प्रवाल में कोई फर्क नहीं है। ये स्पंज प्रवाल स्पष्ट करते हैं कि ये क्रमिक–विकास की किसी प्रक्रिया से नहीं गुजरे हैं।

फॉसिलों का अध्ययन कितने अलग–अलग समूहों में किया जाता है?

जीवित प्रजातियों की ही तरह, फॉसिलों का अध्ययन भी अलग–अलग हिस्सों में बांटकर किया जाता है जिन्हें ''जगत'' (किंगडम) कहा जाता है। 19वीं सदी में फॉसिलों को दो बुनियादी वर्गों में रखा गया था : वनस्पतियां या जीव–जंतु। बाद में हुए शोध और खोजों के कारण यह आवश्यक हो गया कि दूसरे मुख्य फॉसिल समूह भी बनाए जाएं, जिनमें कवक (फफूंद) और बैक्टीरिया जैसे जीव रूपों के समूह भी शामिल थे। 1963 में तैयार किए गए फॉसिलों के वर्गीकरण के तहत, फॉसिलों का अध्ययन पांच अलग–अलग जगतों के रूप में किया जाने लगा :

1. एनीमेलिया – जंतु जगत के फॉसिल, जिनमें सबसे पुराने ज्ञात नमूने 60 करोड़ वर्ष पुराने हैं।
2. प्लांटाय – वनस्पति जगत के फॉसिल, जिनमें सबसे पुराने ज्ञात नमूने 50 वर्ष करोड़ पुराने हैं।
3. मोनेरा – बिना नाभिक वाले बैक्टीरिया के फॉसिल, जिनके सबसे पुराने ज्ञात नमूने 3.9 अरब वर्ष पुराने हैं।
4. प्रोटोक्टिस्टा – एक कोशिकीय वाले जीवों के फॉसिल। सबसे पुराने ज्ञात नमूने 1.7 अरब वर्ष पुराने हैं।
5. फंजाई (कवक) – अनेक कोशिका वाले जीवों के फॉसिल, जिनमें सबसे पुराने ज्ञात नमूने 55 करोड़ वर्ष पुराने हैं।

भूवैज्ञानिक काल और जीवाश्म विज्ञान

पृथ्वी की ऊपरी सतह के बारे में पहली बुनियादी जानकारियां 18वीं सदी के बाद के दौर और 19वीं सदी के शुरू के दौर में, रेलवे और सुरंगों के निर्माण के दौरान मिलनी शुरू हुईं। एक ब्रिटिश सुरंग निर्माता, विलियम स्मिथ ने देखा कि उत्तरी सागर के तट के पास वैसी ही चट्टानें हैं जो कि निर्माण कार्य के दौरान समरसेट में मिली थीं जो जुरासिक काल (20.6 से 14.4 करोड़ वर्ष पहले) की थीं। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे

विलियम स्मिथ द्वारा एकत्रित कुछ फॉसिलों के नमूने।

ब्रिटिश भूविज्ञान की शुरुआत करने वाले विलियम स्मिथ द्वारा बनाए गए शुरुआती नक्शों ने आधुनिक भूविज्ञान के विकास में काफी योगदान दिया है।

तक से इकट्ठा किए गए चट्टानों और फॉसिलों के नमूनों के साथ, स्मिथ ने इंग्लैण्ड का पहला भूवैज्ञानिक सतह का नक्शा तैयार किया। इसके अलावा, अपने पास मौजूद चट्टानों के नमूनों के आधार पर उसने कुछ इलाकों के लिए भूमिगत भूवैज्ञानिक नक्शे भी बनाए, जिनसे आधुनिक भूविज्ञान को आगे बढ़ाने में और पृथ्वी की भूवैज्ञानिक समय तालिका तय करने में काफी मदद मिली। उसके नक्शों में शामिल जानकारी की बदौलत, सतह के ठीक नीचे की परत की प्रकृति और उनमें मौजूद वस्तुओं (लोहा, कोयला आदि) के बारे में पता चला, भले ही वे चट्टानें जंगलों और वनस्पतियों से ढ़की हुई थीं।

उसके द्वारा इकट्ठी की गई तमाम जानकारी को हासिल करने में फॉसिलों ने अहम भूमिका निभाई। पूर्वकैमब्रियन काल से क्वाटरनरी काल तक की भूवैज्ञानिक समय तालिका फॉसिल क्षेत्रों से मिले आंकड़ों का इस्तेमाल करके बनाई गई, और इसका इस्तेमाल आज भी किया जा रहा है। चट्टानी संरचनाओं की जांच–पड़ताल की बदौलत, यह पता लगाया जा सका कि पृथ्वी अलग–अलग कालों में किन चरणों से गुजरी है, और चट्टानों के भीतर मौजूद फॉसिलों ने उन जीवों के बारे में जानकारी दी जो अलग–अलग कालों में मौजूद रहे थे। इन दोनों को साथ मिलाने से एक कालक्रम बनाया जा सका, जिसके मुताबिक पृथ्वी का इतिहास दो महायुगों में बंटा है, और ये दोनों महायुग युगों में तथा युग कालों में बंटे हैं।

प्राकृतिक इतिहास को और आसानी से समझ में आने लायक बनाने के लिए भूविज्ञानियों और पुरावनस्पतिशास्त्रियों (फॉसिलों का अध्ययन करने वाले वैज्ञानिक) ने पृथ्वी के इतिहास को भूवैज्ञानिक कालों में विभाजित कर दिया। इन कालों का निर्धारण करते समय चट्टानों का निर्माण, उनकी उम्र और उनमें मौजूद फॉसिल महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।प्द वतकमत जव उंम दंजनतंस पिेजवतल उवतम बवउचतमीमदेपइसमए हमवसवहपेजे दक चंसमवदजवसवहपेजे कपअपकमक जीम पिेजवतल व जीम म्ंतजी पदजव हमवसवहपबंस चमतपवकेण् पिसम कमजमतउपदपदह जीमेम चमतपवकेए जीम वितउंजपवद व तवबोए जीमपत हमे दक जीम विेपसे जीमल बवदजंपद चसंल द पउचवतजंदज तवसमण

1. पूर्वकैमब्रियन महायुग (4.6 अरब से 54.3 करोड़ वर्ष पहले)

पूर्वकैमब्रियन को पृथ्वी के इतिहास का सबसे पुराना और सबसे लंबा दौर माना जाता है और इसे विभिन्न महायुगों और युगों में बांटा जाता है। 4.6 से 3.8 अरब वर्ष पूर्व के समय को हेडियन महायुग कहा जाता है। उस समय पृथ्वी की ऊपरी सतह अभी बन ही रही थी। आर्कियन महायुग 3.8 से 2.5 अरब वर्ष पहले था, जिसके बाद 2.5 अरब से 54.3 करोड़ वर्ष के बीच प्रोटेरोज़ोइक महायुग था। फॉसिल रिकॉर्ड में, इन दौरों के एक कोशिका और अनेक कोशिका वाले जीवों के कई तरह के सूक्ष्म अवशेष मिलते हैं।

2. फेनेरोज़ोइक महायुग (54.3 करोड़ वर्ष पहले से अब तक)

फेनेरोज़ोइक का मतलब होता है ''दिखने वाला या ज्ञात जीवन''। फेनेरोज़ोइक महायुग का तीन अलग–अलग युगों के तहत अध्ययन किया जाता है : पैलियोज़ोइक, मेसोज़ोइक और सेनोज़ोइक।

2(क). पैलियोज़ोइक युग (54.3 से 25.1 करोड़ वर्ष पहले)

यह युग, जो करीब 30 करोड़ वर्ष तक चला, फेनेरोज़ोइक महायुग का पहला और सबसे लंबा हिस्सा है।

पूरे पैलियोज़ोइक युग के दौरान, जलवायु आम तौर पर नम और सम (न ज्यादा गर्म न ज्यादा ठंडी) रही, हालांकि समय–समय पर हिम युग आते रहे।

पैलियोज़ोइक युग का अध्ययन छः अलग–अलग कालों में किया जाता है, कैमब्रियन, ओर्दोविशियन, सिलूरियन, डेवोनियन, कार्बनीफेरस और परमियन :

ग्रीनलैंड में प्रीकैंब्रियन काल (4.6 अरब से 54.3 करोड़ वर्ष पहले)
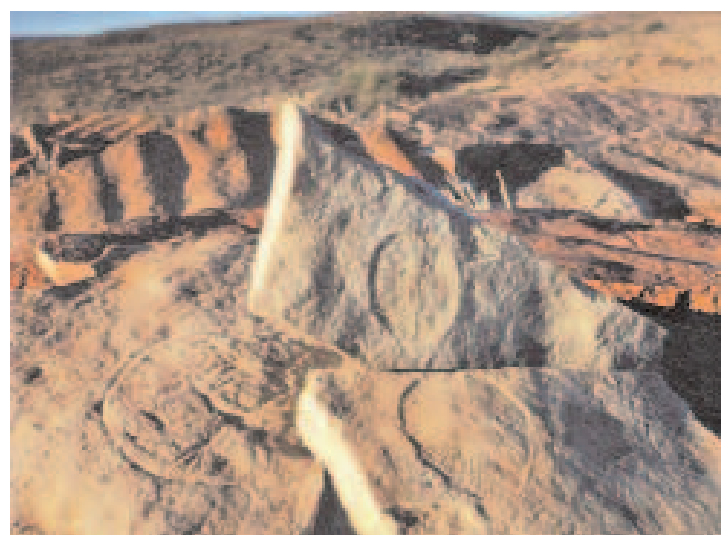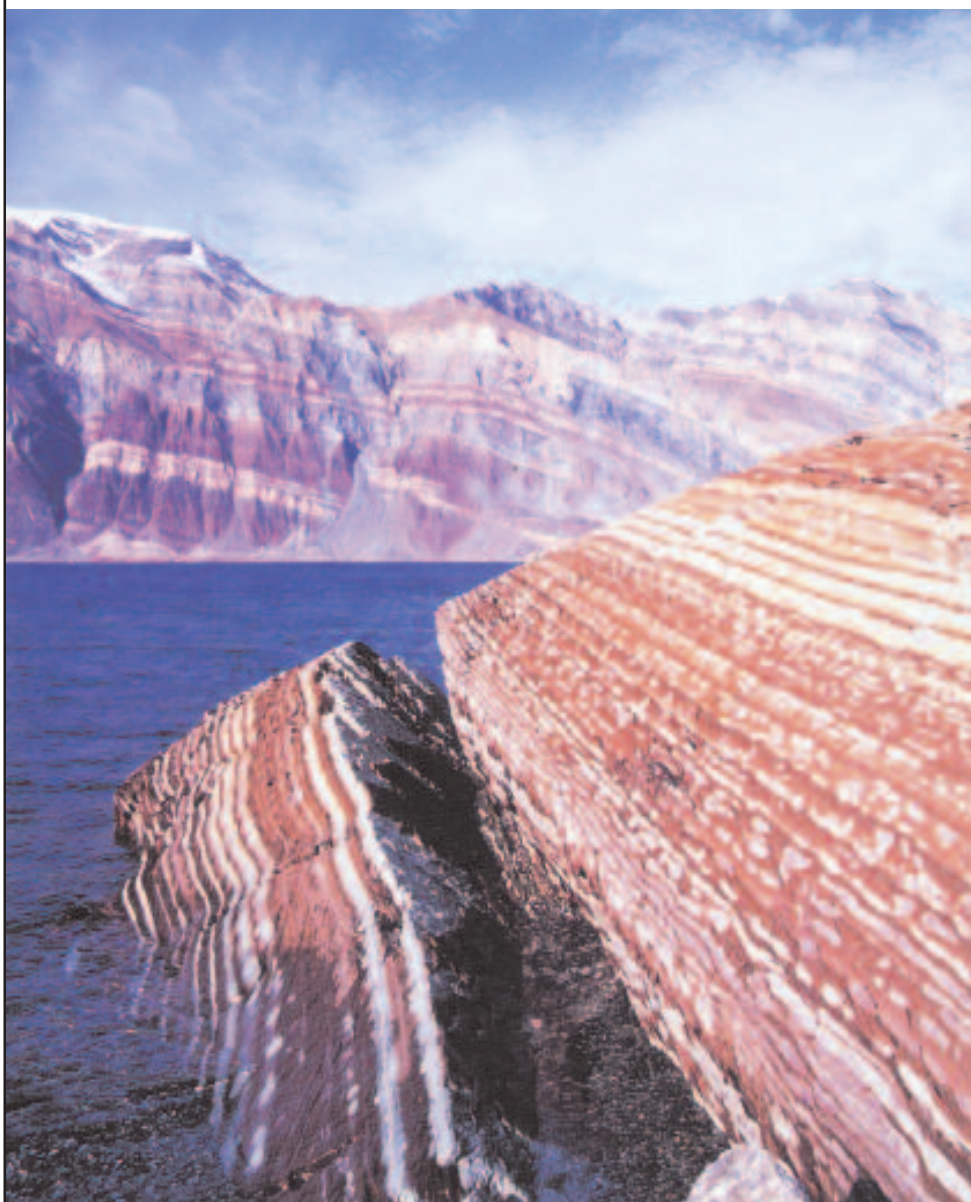
ऑस्ट्रेलिया के एडिआक्रा में प्रीकेंब्रियन युग की चट्टानें भी हैं। यहां चित्रित 57 करोड़ से लेकर 54.3 करोड़ वर्ष पुराने जेलीफिश के फॉसिल भी एडिआक्रा में मिलते हैं। कई हजार लाख वर्ष पहले के इन फॉसिल रिकॉर्ड 'क्रमिक–विकास की प्रक्रिया' के दावे को खारिज करते हैं। क्रमिक–विकासवादियों के अवैज्ञानिक दावों के अनुसारः

1. फॉसिल रिकॉर्डों को ढेरों संक्रमणकालीन रूपों को प्रस्तुत करना चाहिए।
2. इन अभिलेखों में धीमा और आहिस्ता–आहिस्ता संक्रमण होना चाहिए, और सामान्य से जटिल विकास दिखना चाहिए।
3. पहली काल्पनिक कोशिका के विकसित होने पर, नये जीव की उत्पत्ति होनी चाहिए।

साथ ही, इन प्रजातियों की सूक्ष्म मात्रा फॉसिलों में भी नजर आनी चाहिए। हालांकि, फॉसिल रिकॉर्डों ने कभी क्रमिक–विकासवादियों के दावों की पुष्टि नहीं की। फॉसिलों ने कुछ निश्चित तथ्य उजागर किए हैं : अपनी विशेष संरचनाओं के साथ, जीवित प्राणियों में भिन्न और अलग पहचान में आने योग्य खूबियां हैं। ये खूबियां समय के साथ धीमे–धीमे प्राप्त नहीं की गई, और न ही आज के प्राणियों के समूहों में क्रमिक–विकास संबंध की कोई निशानी है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रमाणों में से एक इस तथ्य से उजागर होता है कि खुदा ने समूची विशेषताओं के साथ सभी जीवित प्राणियों की त्रुटिहीन रचना की।

कैमब्रियन काल (54.3–49.0 करोड़ वर्ष पहले)

यह काल वह भौगोलिक अवधि है जिसमें वे सभी बुनियादी जीव समूह (या फाइला) जो आज भी जीवित हैं, और वे भी जो आगे चलकर लुप्त हो गए, यकायक अस्तित्व में आए। (जीवों के वर्गीकरण में जगत (किंगडम) के बाद प्रवर्ग (फाइलम) सबसे बड़ा वर्ग है। प्रवर्ग का निर्णय जीवों के अंगों और उत्तकों, उनके शारीरिक ताने–बाने और आंतरिक ढांचे के आधार पर किया जाता है। आज मौजूद प्रवर्गों की संख्या 35 आंकी गई है, लेकिन कैंब्रियन काल के दौरान करीब 50 प्रवर्ग मौजूद थे।)

इतने यकायक ढंग से और इतने प्रकार की प्रजातियां उभरकर आईं कि वैज्ञानिकों ने उसे ''कैमब्रियन विस्फोट'' का नाम दिया है। क्रमिक–विकासवादी फॉसिल वैज्ञानिक स्टीफन जे गाउल्ड ने इस परिघटना को ''जीवन के इतिहास में सबसे अद्भुत और ऐसी घटना बताया है जो वैज्ञानिकों के लिए पहेली है'', जबकि क्रमिक–विकासवादी जंतु वैज्ञानिक टॉमस एस. रे लिखते हैं कि अनेक कोशिकाओं वाले जीवन का प्रकट होना इतनी महत्त्वपूर्ण घटना है कि उसकी तुलना जीवन के आरंभ होने से की जा सकती है।

कैंब्रियन काल के जंतुओं का चित्र।

जब हम कैमब्रियन विस्फोट के बारे में फॉसिल विज्ञान से मिली जानकारी पर विचार करते हैं, तो यह साफतौर पर अल्लाह की रचना की पुष्टि करता है और क्रमिक–विकास के सिद्धांत को निरस्त करता है। कैमब्रियन से पहले के पूर्वकैमब्रियन समय में मुख्य रूप से एक कोशिका वाले जीव रहते थे, और अनेक कोशिका वाले जीवन के कुछ ही रूप मौजूद थे। इन जीवों में भी कुछ ही विशेषताएं थीं और उनमें आंखों या पैरों जैसी जटिल संरचनाएं नहीं थीं। इसलिए, कैमब्रियन काल के जीवन के रूपों में क्रमिक–विकास से हुए काल्पनिक बदलाव को सही साबित करने वाले कोई सबूत मौजूद नहीं हैं, और ऐसा एक भी फॉसिल नहीं है जिसके बारे में दावा किया जा सकता हो कि वह उनके पहले से रहे जीवों का पता देता है। इस बंजर पर्यावरण में, जहां एक कोशिका वाले जीव रहते थे, अचानक अद्भुत रूप से तरह–तरह के जीव प्रकट हो गए जिनमें बेहद जटिल विशेषताएं थीं। इतना ही नहीं, इस विस्फोट के जरिए जीवन के ऐसे रूप उभरकर आए जो बड़ी स्पष्ट ढ़ांचागत खूबियों के चलते एक–दूसरे से अलग–अलग थे। फॉसिलों से पता चलता है कि पूर्वकैमब्रियन और कैमब्रियन युग में रहने वाले जीवों के बीच सम्बन्धता और

जटिलता दोनों के नजरिए से काफी अंतर है। ये अंतर इतने चौंकाने वाले हैं कि क्रमिक–विकासवादी, जिनके लिए जीवित समूहों के बीच निरंतरता को साबित करना जरूरी है, इन प्रवर्गों के बीच किसी तरह के पारिवारिक रिश्ते बता पाना, या केवल सैद्धांतिक तौर पर उनके बीच कोई जुड़ाव कायम कर पाने में नाकाम रहे हैं।

कैमब्रियन काल यह दिखाता है कि एकदम शुरुआत में ही, बेहद जटिल संरचनाओं वाले जीवन के बहुत अलग–अलग रूप यकायक उभरकर आए – और सच तो यह है कि सृष्टि की रचना का सिद्धांत भी ठीक यही बताता है। जीवित प्राणियों में जो संपूर्ण संरचनाएं पैदा हुई हैं उनकी रचना अल्लाह ने की है। फॉसिल रिकॉर्ड में, ये संपूर्ण संरचनाएं दोषरहित रूप में दिखाई पड़ती हैं जिनमें कोई कमी, अधूरेपन या नाकाम अंगों वाली अवस्थाएं दिखाई नहीं पड़तीं जिनके बारे में क्रमिक–विकास का संयोग पर आधारित सिद्धांत बताता है।

ओर्दोविशियन काल (49.0 से 44.3 करोड़ वर्ष पहले)

इस काल में बड़ी संख्या में बिना रीढ़ की हड्डी वाले समुद्री जीव रहते थे। फॉसिल रिकॉर्ड से ओर्दोविशियन काल के दौरान समुद्री जीवों के बहुत से परिवारों का पता चला है। जमीन पर मिलने वाली वनस्पतियों के भी फॉसिल हैं जो उसी काल के हैं। ओर्दोविशियन काल के दौरान, हिमयुगों के कारण पूरी दुनिया की जलवायु में हुए बदलावों के परिणामस्वरूप बहुत सी प्रजातियां खत्म हो गईं। इन हालात को "ओर्दोविशियन काल का अंत" कहा जाता है।

ओर्दोविशियन काल के दौरान मौजूद रहे जीवों के कुछ रूप आज भी पाए जाते हैं। इनमें से एक है हॉर्सशू क्रैब (घोड़े की नाल जैसा केकड़ा)। 45 करोड़ साल पुराने हॉर्सशू क्रैब के फॉसिल से पता चलता है कि करीब आधा अरब साल पहले भी, इन प्राणियों का रूपरंग और जटिल अंग आदि बिल्कुल आज जैसे ही थे। सबसे पुराने और सबसे आदर्श पानी के मकड़े का फॉसिल भी ओर्दोविशियन काल (42.5 करोड़ वर्ष पूर्व) का है और यह इस बात का एक और महत्त्वपूर्ण सबूत है कि जीवित प्राणियों में लंबे युगों तक कोई बदलाव नहीं आया है। एक ऐसे काल में जब – डारविनवादी परिदृश्य के अनुसार – जीवित प्राणियों को क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से गुजरना चाहिए था, इन अवशेषों से पता चलता है कि किसी भी तरह का क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

न्यूफाउंडलैंड की ये चट्टाने कैंब्रियन काल से लेकर ऑडोविशियन काल तक के संक्रमण को दर्शाती हैं।

आज जीवित केंकड़ों और 45 वर्ष पुराने इस हॉर्सशू केकड़े में बिल्कुल अंतर नहीं है।
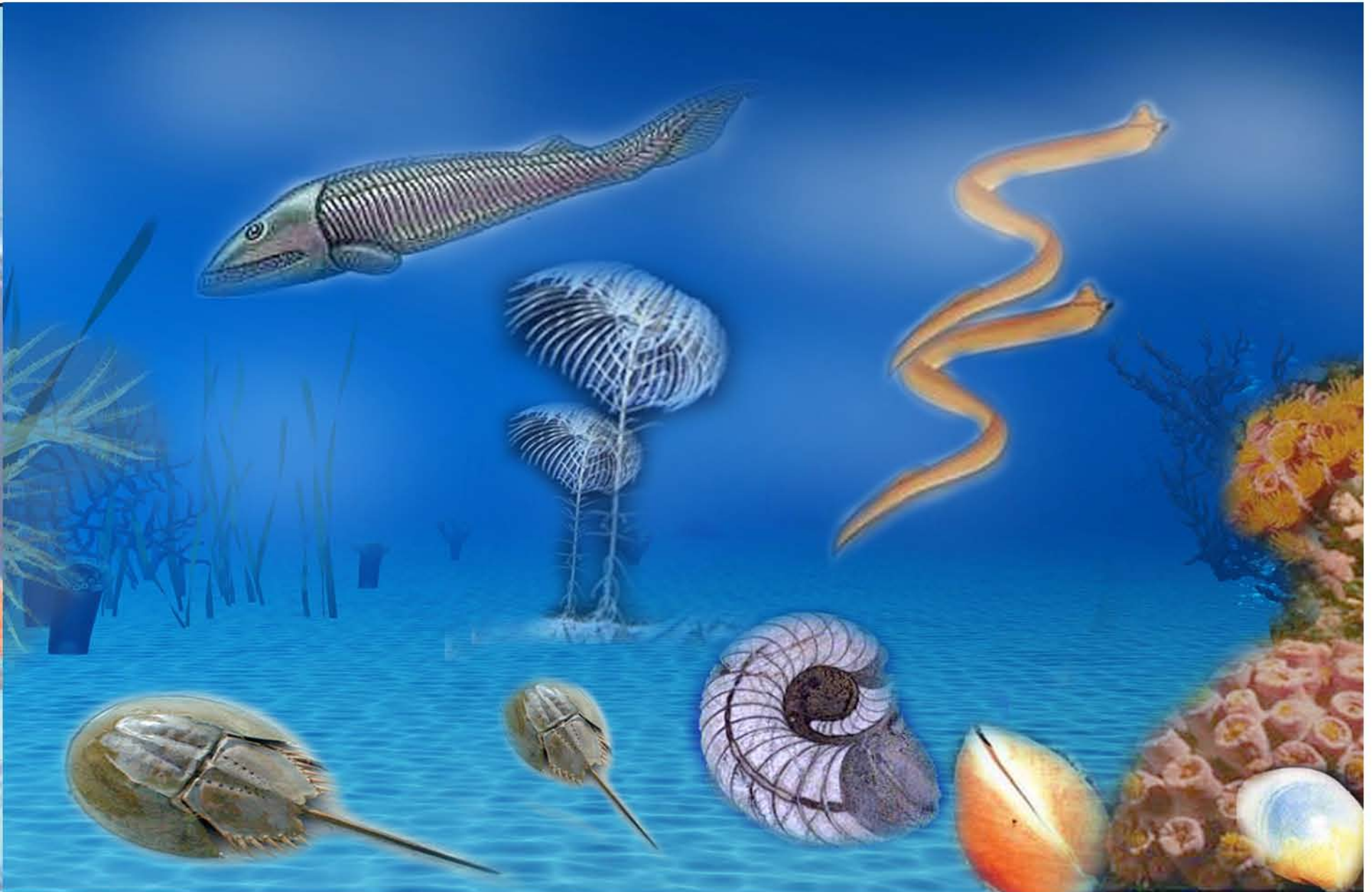
ऑर्डोविशियन काल के जंतुओं का चित्र

सिलूरियन काल (44.3 से 41.7 करोड़ वर्ष पहले)

जैसे–जैसे तापमान फिर से बढ़ा, ग्लेशियर पिघले और कुछ महाद्वीप पानी में डूब गए। इस काल के बहुत से जमीनी पौधों के फॉसिलों के साथ ही सी लिली (समुद्री कुमुदिनी) जैसे एकिनोडर्म (कड़े छिलकों वाले) समुद्री बिच्छू जैसे आर्थ्रोपॉड (संधिपाद), और बिना जबड़े वाली मछलियों और बख्तरबंद मछलियों की विभिन्न प्रजातियों के साथ मकड़ी की अनेक प्रजातियों के फॉसिल मिलते हैं।

डेवोनियन काल (41.7 से 35.4 करोड़ वर्ष पहले)

अनगिनत मछलियों के फॉसिल इसी काल के हैं। डेवोनियन काल के दौरान, एक प्रकार से ''बड़े पैमाने पर गायब होने'' की घटना हुई और कुछ प्रजातियां खत्म हो गईं। बड़े पैमाने पर इस तरह प्रजातियों के गायब होने से मूंगे की चट्टानों पर असर पड़ा और स्ट्रोमेटोपोरॉयड (एक तरह के चट्टान बनाने वाले मूंगे) पूरी तरह गायब हो गए।

लेकिन डेवोनियन काल के दौरान रहने वाली हजारों मछलियों के फॉसिल और आज जीवित मछलियों की बहुत सारी प्रजातियों में कोई अंतर नहीं है। यह भी इस बात का महत्त्वपूर्ण प्रमाण है कि लाखों वर्ष के दौरान जीवित प्राणियों में कोई बदलाव नहीं हुआ है, और उनका धीरे–धीरे क्रमिक विकास होने का सवाल ही नहीं उठता।

सिल्यूरिन काल का क्रिनॉइड

कार्बनीफेरस काल (35.4 से 29.0 करोड़ वर्ष पहले)

इस काल को कोयले का युग भी कहा जाता है और इसे अलग–अलग कालों में बांटा जाता है – लोअर कार्बनीफेरस या मिसीसिपियन तथा अपर कार्बनीफेरस या पेनसिल्वेनियन काल। महाद्वीपों के बीच टकराव के कारण जमीन का उठना और गिरना, और ध्रुवीय प्रदेशों की बर्फ के कारण समुद्र का स्तर बढ़ना और घटना ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाएं थीं जिनसे इस काल में दुनिया की शक्ल बनी। समुद्री और जमीनी जीवों के बहुत से फॉसिल कार्बनीफेरस काल के हैं। स्लिवेफन्थ जिसे बहुत से डारविनवादी कई वर्षों तक कथित रूप से मध्यवर्ती रूप के तौर पर पेश करते रहे, आज भी जीवित है, और उनके दावे को गलत साबित करती है। करोड़ों वर्षों के दौरान इसमें कोई बदलाव नहीं आया है और यह किसी ''क्रमिक–विकास'' से परिवर्तित नहीं हुई है। डारविनवादी यह दावा करते हैं कि सिलकेन्थ वह ''लुप्त कड़ी'' है जो क्रमिक–विकास को सही साबित करती है, जबकि इसके उलट, वास्तव में यह एक ''जीते–जागते फॉसिल'' का नमूना है जो कि क्रमिक–विकास को पूरी तरह झुठलाती है। सिलकेन्थ क्रमिक–विकासवादियों की अनगिनत अटकलों का विषय बना रहा, लेकिन एक जिंदा फॉसिल के तौर पर इसके सामने आने से वह भारी असमंजस में पड़ गये।

सेलाकैंथ का 41 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल
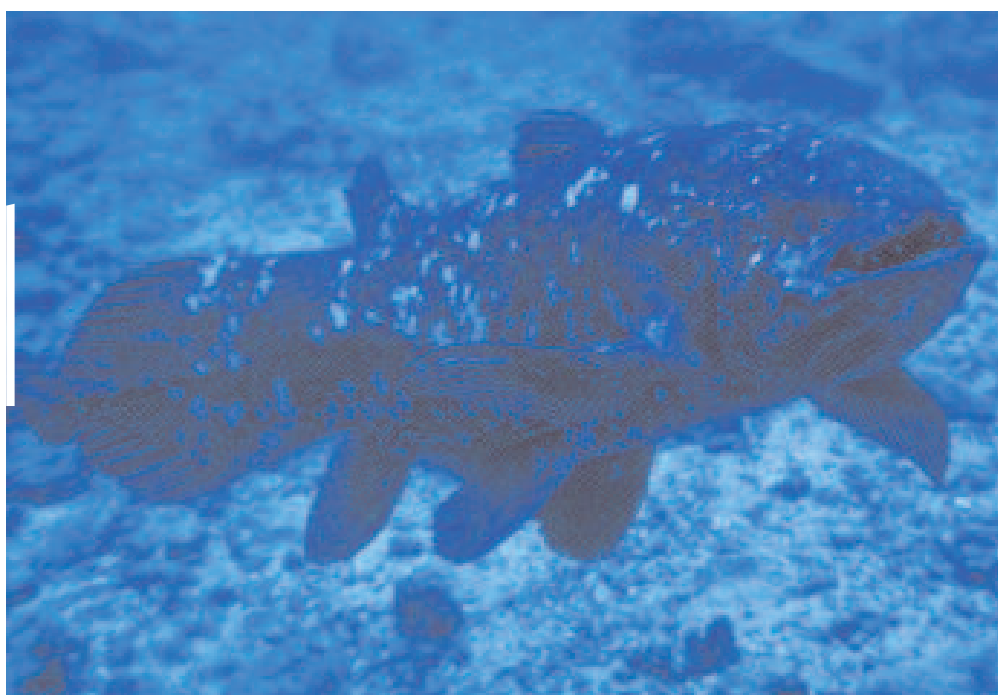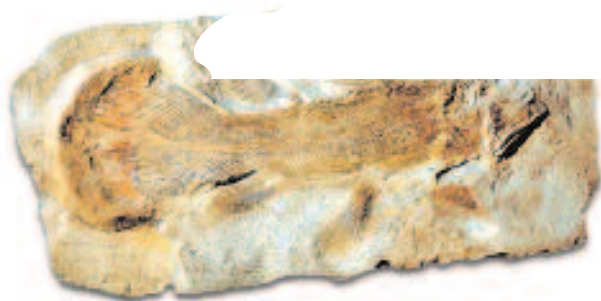
आज के समय का सेलाकैंथ

मकड़ी का 35.5 से लेकर 29.5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल

परमियन काल (29.0 से 24.8 करोड़ वर्ष पहले)

परमियन काल के अंत में बड़े पैमाने पर प्रजातियों के गायब होने की एक और घटना हुई जिसके साथ ही पेलियोज़ोइक युग पूरी तरह खत्म हो गया। फॉसिल रिकॉर्ड से पता चलता है कि भारी पैमाने पर इस तरह प्रजातियों के गायब होने के दौरान 90–95 प्रतिशत जीवित प्रजातियां खत्म हो गईं। फिर भी, परमियन काल के कुछ जीव आज तक जिंदा बचे रहे हैं। परमियन काल के कुछ फॉसिल जैसे ड्रैगनफ्लाई और मकड़ियां यह साबित करती हैं कि गुजरे समय में क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

2 (ख). मेसेज़ोइक युग (24.8 से 6.5 करोड़ वर्ष पहले)

मेसेज़ोइक युग तीन अलग–अलग कालों में बंटा है : ट्रायसिक, जुरासिक और क्रेटेशियस। इसी काल के दौरान डायनोसोर रहते थे और फिर खत्म हो गए।

ट्रायसिक काल (24.8 से 20.6 करोड़ वर्ष पहले))

मेसेज़ोइक युग की शुरुआत ट्रायसिक काल से हुई। पूरी दुनिया में मिले बड़ी संख्या में ट्रायसिक फॉसिलों में समुद्री और जमीनी दोनों तरह के अनेक किस्म के जीव हैं। जैसा कि सभी अन्य कालों में हुआ है, इस किस्म में एक भी बीच का फॉसिल नहीं है जिसकी क्रमिक–विकासवादी उम्मीद करते हैं।

जीम च्मजतपपिमक थ्वतमेज पद ।तप्रवदंकृव विैपसप्रमकए वचंसप्रमक सवहेकृपे वदम व जीम उवेज ंिवने`जतनबजनतमे व जीम चसंदजे तिवउ जीम ज्तपेंपब च्मतपवकण जीपे वितमेजए बवदेपेजपदह व जतममे दवू ादवूद` जीम बैपसमंद ंतंनबंतपं पे मअपकमदबम जींज चसंदजे िंअम दवज मअवसअमकण जीमेम जतममेए ूीपबी सपअमक 248 जव 206 उपससपवद लमंते ंहवए ंतम दव कपमिितमदज तिवउ वदमे सपअपदह जवकंलण

ट्रायसिक काल के फॉसिलों का अध्ययन करते वैज्ञानिक

जुरासिक काल (20.6 से 14.4 करोड़ वर्ष पहले)

मेसेज़ोइक के इस हिस्से में बड़ी संख्या में और तरह–तरह के डायनोसोर पैदा हुए। जुरासिक काल के अंत तक अमोनाइट, सी स्पंज (समुद्री जल शोषक), ऑयस्टर (सीप) और मसेल (सीप) की कुछ प्रजातियां खत्म हो चुकी थीं।

लेकिन अनेक जीव जुरासिक काल से अब तक बचे हुए हैं – दूसरे शब्दों में, वे किसी तरह के क्रमिक–विकास से परिवर्तित नहीं हुए। फॉसिल रिकॉर्ड ऐसे प्राणियों के उदाहरणों से भरे हैं। उदाहरण के लिए मगरमच्छ के सबसे पुराना ज्ञात फॉसिल करीब 20 करोड़ साल पुराना है। तुआतारा छिपकलियों के 20 करोड़ से भी ज्यादा साल पुराने फॉसिलों के उदाहरण मिलते हैं। जुरासिक काल के अनेक झींगा मछलियों के फॉसिलों में बिल्कुल वैसे ही संपूर्ण प्रणालियां और जटिल संरचनाएं मिलती हैं जैसी उनमें आज पाई जाती हैं।

20 करोड़ वर्ष पुरानी टुआटरा छिपकली और आज जीवित टुआटरा छिपकली।

20.6 से लेकर 14.4 लाख वर्ष पुराने समुद्री केकड़े का फॉसिल। यह आज के समय में जीवित समुद्री केकड़े से बिल्कुल भी अलग नहीं है।

ड्रेगनफ्लाई का 15 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल। यह हमारे समय की ड्रेगनफ्लाई जैसा ही है।

क्रेटेशियस काल (14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष पहले)

मेसेज़ोइक युग के इस अंतिम काल को उस दौर के तौर पर जाना जाता है जब डायनोसोर और उनके साथ बड़ी संख्या में जमीनी रेंगने वाले जीव और वनस्पतियों की प्रजातियां खत्म हो गईं।

दूसरी ओर, पानी में रहने वाले जीवों की बहुत–सी प्रजातियां जैसे तारा मछली, केकड़ों, मछलियों की कुछ प्रजातियां, पानी में रहने वाले बिच्छू, मकड़ियां, ड्रैगनफ्लाई, कछुए और मगरमच्छ आदि आज तक पाई जाती हैं। 13.5 करोड़ वर्ष पुरानी तारा मछली, 14 करोड़ वर्ष पुराने हॉर्सशू केकड़े, और 12.5 करोड़ वर्ष पुराने जिंकगो पेड़ के एक पत्ते के फॉसिल इस बात के महज कुछ सबूत हैं। करोड़ों साल के फासले के बावजूद, जीवन के इन रूपों में अब भी वही जटिल प्रणालियां मौजूद हैं, जो प्राकृतिक इतिहास के बारे में डारविनवादियों के दावों को पूरी तरह गलत साबित कर देते हैं।

14₹6 से 6.5 करोड़ वर्ष पुरानी मछली, और फ्रांस में मिला चमगादड़ का फॉसिल।

2 (ग) सेनोज़ोइक युग (6.5 करोड़ वर्ष पहले से आज तक)

सेनोज़ोइक युग, जिसमें हम आज भी जी रहे हैं, की शुरुआत क्रेटेशियस काल के अंत से हुई। अभी हाल तक भूवैज्ञानिक और फॉसिल वैज्ञानिक सेनोज़ोइक युग को असमान लंबाइयों के दो कालों में बांटते थे : टर्शियरी और क्वाटर्नरी । टर्शियरी काल 6.5 करोड़ वर्ष पहले से लेकर 18 लाख वर्ष पहले तक चला, और क्वाटर्नरी में आखिरी 18 लाख वर्ष आते हैं। लेकिन हाल में सेनोज़ोइक युग को तीन अलग–अलग कालों में बांटा गया है। इस नई व्यवस्था के तहत इसके तीन हिस्से हैं पैलियोजीन, नियोजीन और क्वाटर्नरी।

सेनोज़ोइक युग के फॉसिल रिकॉर्ड में बड़ी संख्या में ऐसे नमूने हैं जो अन्य समयों की ही तरह, यह बताते हैं कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत सच नहीं है – जो यह कहता है कि सभी जीव–जंतुओं का विकास संयोगवश एक ही साझा पूर्वज से हुआ।

इन सभी भूवैज्ञानिक कालों से मिले फॉसिलों के नमूनों की एक खासियत यह है कि इन प्रजातियों में कभी कोई बदलाव नहीं आया। इसे दूसरे ढंग से कहें तो, जब कोई प्रजाति फॉसिल रिकॉर्ड में पहली बार सामने आती है, तब से लेकर करोड़ों वर्षों तक, यानी अपने खत्म हो जाने तक या फिर आज तक बचे रहने पर उसकी संरचना वही बनी रहती है – यानी उसमें कोई बदलाव नहीं आता। यह इस बात का स्पष्ट सबूत है कि जीव–जंतु कभी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे।.

प्रजातियों के फॉसिल का इतिहास निश्चित और स्पष्ट रूप से क्रमिक–विकास के सिद्धांत को नकारता है। सर्वशक्तिमान अल्लाह ही है, जो अपनी अद्भुत शक्ति और असीमित ज्ञान से एक–दूसरे से बिल्कुल भिन्न जीवित प्रजातियों को शून्य से पैदा करता है और दुनिया को जीवन के अनुरूप बनाता है।

5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराने मगरमच्छ का यह फॉसिल जर्मनी में मिला था।

फॉसिल सबसे ज्यादा कहां पाए जाते हैं?

फॉसिल सबसे ज्यादा कहां पाए जाते हैं?

फॉसिल पृथ्वी पर लगभग हर जगह व्यापक रूप से फैले हुए हैं। कोई भी फॉसिल ऐसा नहीं है जो केवल किसी खास तरह की चट्टानों में पाया जाता हो बल्कि वह बड़ी संख्या में दूसरी चट्टानों में भी पाया जाता है। भूवैज्ञानिकों ने चट्टानों की किस्मों को तीन मुख्य समूहों में बांटा है :

1. इग्नियस (आग्नेय)
2. सेडिमेंटरी (तलछटी)
3. मेटामॉर्फिक (परिवर्तित)

दुनिया की सबसे पुरानी चट्टानें ग्रीनलैंड में हैं, जो 3.9 अरब वर्ष से लेकर 3.8 अरब वर्ष पुरानी हैं।

आग्नेय वर्ग में ग्रेनाइट या बैसौल्ट (गहरे हरे या कत्थई रंग की चट्टान) किस्म की चट्टानें आती हैं जो धरती की गहराई में मौजूद या पिघले हुए लावे के रूप में ज्वालामुखियों से निकले मैग्मा के ठंडा होने से बनी हैं। तलछटी चट्टानें तब बनती हैं जब रेत, गाद, मिट्टी, छोटे कण या तत्व पानी में बहकर एक के ऊपर एक जमते जाते हैं। परिवर्तित चट्टानें ऐसी आग्नेय या तलछटी चट्टानें हैं जिनकी संरचना धरती की गहराई में उच्च तापमान और दबाव के कारण बदल गई है।

चट्टानों की उम्र का निर्धारण रेडियोएक्टिव खनिजों के नष्ट होने पर किए गए शोधों से हुआ है।

आमतौर पर आग्नेय चट्टानों की दरारों में कुछ ही फॉसिल मिलते हैं। ऐसी चट्टानों में मिले चंद एक नमूने ऐसे फॉसिल होते हैं जो किसी पेड़–पौधे या जानवर के पिघले लावे में फंस जाने के कारण बने हैं। बहुत कम ही फॉसिल उस गर्मी और दबाव के बाद भी बचे रह पाते हैं जो तलछटी परतों को परिवर्तित चट्टान में बदल देते हैं। लगभग सभी फॉसिल तलछटी चट्टानों की दरारों में या उनकी परतों के बीच मिलते हैं।

लगभग सभी तलछटी चट्टानें हवा या पानी के द्वारा लाए हुए पदार्थों से या दूसरी चट्टानों के टूटने–घिसने से बनी हैं। इनके कुछ रूप जैसे कि कोयला, पेड़–पौधों या जानवरों के अवशेषों से बने हैं। बहुत छोटे कणों या दानों से बनी तलछटी चट्टानों को क्लास्टिक का नाम दिया गया है। बलुआ पत्थर और शिस्ट (बारीक परतदार पत्थर जैसे अभ्रक) ऐसी चट्टानों के उदाहरण हैं। अगर लाए हुए पदार्थ टूटते या घुलते हैं, तो रासायनिक घुलन या वाष्पीकरण के कारण "जैविक" तलछटी चट्टानें बन जाती हैं। ऐसी चट्टानों के उदाहरण हैं चूना पत्थर और डोलोमाइट। आम तौर पर तलछटी चट्टानों की दरारों में क्लास्टिक और जैविक चट्टानें मिली–जुली होती हैं। फॉसिल आम तौर पर कैल्शियम कार्बोनेट से बनने वाली चट्टानों यानी शेल (स्लेट जैसा पत्थर), शिस्ट, बलुआ पत्थर और चूनापत्थर में पाए जाते हैं।

फॉसिल कैसे ढूंढ़ें और निकाले जाते हैं?

फॉसिल इकट्ठा करने वाले औजार भूवैज्ञानिकों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले औजारों जैसे सीधे–सादे होते हैं : हथौड़े, कन्नी, विभिन्न प्रकार के काटने के औजार, परकार, ब्रश और छन्नियां। कभी–कभी फॉसिल सतह पर उभर आते हैं जब उनके आस–पास की नर्म चट्टान की परत घिसकर निकल जाती है। ऐसी स्थिति में फॉसिलों को ब्रश से साफ करना ही काफी होता है। लेकिन फॉसिलों को इकट्ठा करना आमतौर पर इतना आसान नहीं होता। वे जिन चट्टानों के भीतर छुपे होते हैं वे आम तौर पर बहुत कठोर होती हैं, और किसी फॉसिल को चट्टानी गर्भाशय की जकड़ से निकालने में कई घंटे भी लग सकते हैं। सबसे पहले, यह तय करना जरूरी होता है कि चट्टान को किस जगह से तोड़ा जाना चाहिए। चट्टान की परतों की सहायता से दरारों

की पहचान कर ली जाती है। हर किस्म की चट्टान को अलग–अलग तरीके से तोड़ा जाता है। उदाहरण के लिए, शिस्ट पत्थरों में ऐसी परतें होती हैं जिनकी मदद से इन्हें तोड़ने की रेखाएं बनाई जा सकती हैं। दूसरी ओर खड़िया मिट्टी में ऐसी परतें नहीं मिलतीं। साथ ही, अगर भीतर मौजूद फॉसिल को नुकसान पहुंचने से बचाना है तो रंग में बदलाव या संरचना में अंतर जैसे संकेतों का भी ध्यान रखना जरूरी होता है।

जब फॉसिल को चट्टान से निकाल लिया जाता है, उसके बाद वह कई अलग–अलग प्रक्रियाओं से गुजरता है। जांच के लिए प्रयोगशाला ले जाए जाते समय इसकी हिफाजत करना और इसे मजबूत बनाना जरूरी होता है। इसका एक तरीका यह होता है कि चिपकाने वाले रासायनिक पदार्थों से फॉसिल को स्थिर कर दिया जाए। बहुत बड़े फॉसिलों के लिए प्लास्टर ऑफ पेरिस का इस्तेमाल किया जाता है। लाने ले जाने के दौरान फॉसिल के जिन हिस्सों के टूटने का खतरा होता है उन्हें गीले अखबार में लपेटकर प्लास्टर में डुबोया जाता है।.

फॉसिल एकत्रित करने का एक महत्वपूर्ण चरण है, परती चट्टानों और पत्थरों को एकत्रित करना और उन पत्थरों या चट्टानों का सावधानीपूर्वक तोड़ना जिनमें फॉसिल होने की संभावना हो।

इसके बाद फॉसिल को साफ करना जरूरी होता है ताकि इसकी सभी बारीकियां साफ–साफ दिखाई दें। अगर फॉसिल अपने आस–पास की चट्टान के मुकाबले ज्यादा सख्त है, तो सफाई का काम काफी आसान हो जाता है लेकिन अगर फॉसिल का ढांचा मुलायम है, तो रासायनिक पदार्थों का इस्तेमाल जरूरी होता है। सबसे ज्यादा इस्तेमाल होने वाले तरीकों में से एक यह है कि मैट्रिक्स (यानी चारों ओर का पत्थर) को तेजाब से साफ कर हटा दिया जाए। इससे फॉसिल की सभी बारीकियां उभारी जा सकती हैं। कुछ हालात में – खासकर जब फॉसिल बहुत नाजुक हो और उसकी संरचना अपने आस–पास की चट्टान जैसी ही हो – तो पत्थर से निकालने से पहले फॉसिल के ढांचे का पता लगाने के लिए एक्सरे और कंप्यूटर स्कैनिंग जैसे उपकरणों को प्रयोग में लाया जाता है।.

एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हुए कभी–कभी फॉसिलों को प्लास्टरिंग के जरिए सुरक्षित किया जाता है। इस तस्वीर में दिखाया गया है कि एक फॉसिल में तब्दील हो चुकी हड्डी को प्लास्टर में किस तरह लपेटा गया है।

तेजाब से फॉसिल की सफाईफॉसिलों की सफाई का तरीका तेज़ाब का प्रयोग है। यह फॉसिल को नुकसान पहुंचाए बिना उसके चारों तरफ के चूने की चट्टान को साफ करने का एक कारगर तरीका है।

1. फॉसिल के चारों तरफ की चूने की चट्टान को तब तक के लिए उचित तेजाब में डुबो दिया जाता है, जब तक फॉसिल का एक छोटा हिस्सा नजर नहीं आ जाता।
2. फॉसिल के उभरे हुए हिस्से को धोया जाता है और तेज़ाब से प्रतिक्रिया न करने वाले पदार्थ से ढक दिया जाता है।
3. फॉसिल को एक बार फिर तेजाब में डुबोया जाता है, और ये क्रियाएं कुछ बार दोहराई जाती हैं।
4. सुरक्षा प्रदान करने वाला पदार्थ फॉसिल के खुले हिस्से पर लगाया जाता है, ताकि उसे किसी तरह के नुकसान से बचाया जा सकता है।
5. अंततः फॉसिल को उसके चारों ओर की चट्टान से पूरी तरह अलग कर लिया जाता है। फॉसिल पर लगे तेज़ाब और उससे फॉसिल को सुरक्षा प्रदान करने वाले पदार्थ को साफ करने के लिए उसे अच्छी तरह धोया जाता है।
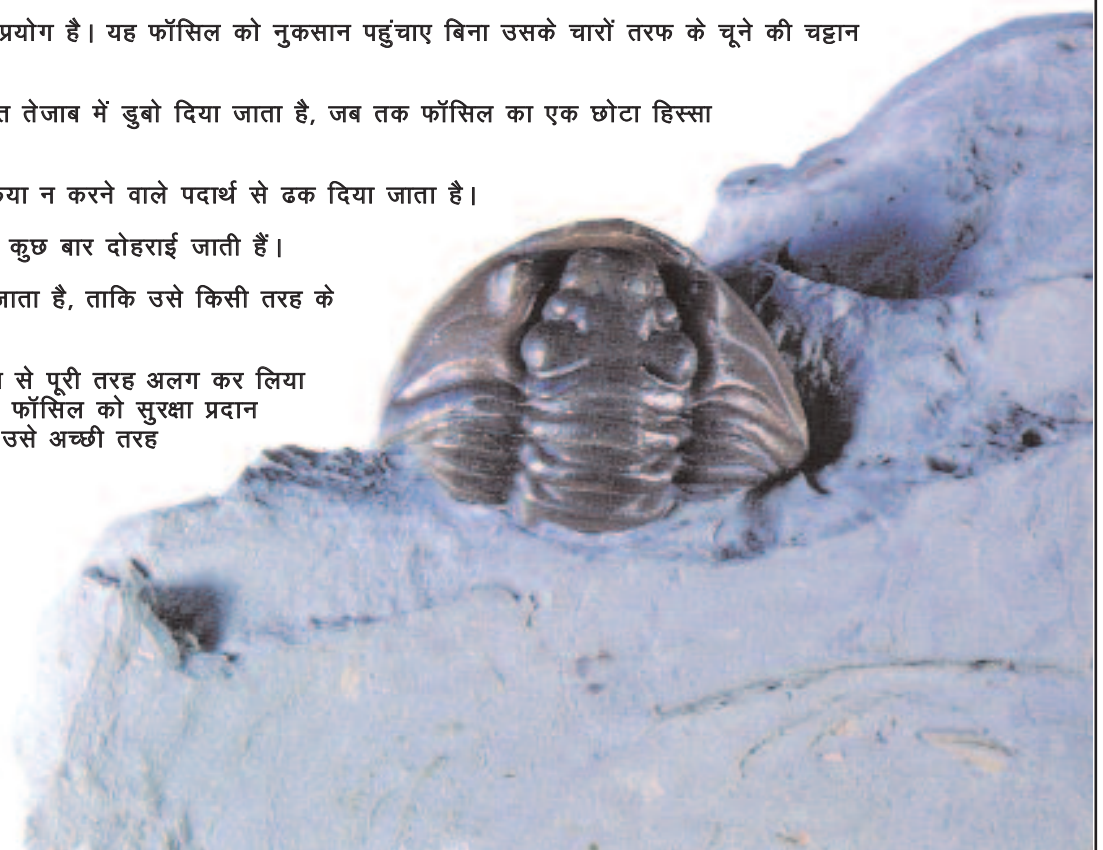
फॉसिलों से जीवित प्राणियों के बारे में जिस सच्चाई का पता चलता है वह है : सृष्टि की रचना

आज तक जो फॉसिल मिले हैं उनकी दो बहुत महत्त्वपूर्ण विशेषताएं हैं, जो दोनों ही क्रमिक–विकास के सिद्धांत के विपरीत हैं :

1. गतिहीनता : पृथ्वी पर अपने अस्तित्व के दौरान प्रजातियों में कोई बदलाव नहीं दिखाई देता। जब वे पहली बार फॉसिल रिकॉर्ड में दिखाई देती हैं, तब से लेकर उनके गायब होने तक उनकी संरचना एक जैसी रहती है। आकार और आकृति में बदलाव आम तौर पर थोड़ा–बहुत ही होता है और यह किसी खास दिशा में नहीं होता।

2. अचानक प्रकट होना : कोई भी प्रजाति अपने कथित पूर्वजों से धीरे–धीरे अलग होकर नहीं उभरी है; यह अचानक और ''पूरी तरह बनी हुई'' ही प्रकट हुई है।

इन दो मुद्दों का महत्त्व यह है कि जीव–जंतुओं की रचना हुई है। वे क्रमिक–विकास की किसी प्रक्रिया से और बीच की किसी भी अवस्था से होकर नहीं गुजरे। उनकी जो विशेषताएं हैं वे उन्होंने आगे चलकर हासिल नहीं की जा सकीं, बल्कि उनकी रचना के समय से ही ये उनमें उपस्थित थीं। स्वयं डारविन जानते थे कि फॉसिल रिकॉर्ड उनके क्रमिक–विकास के सिद्धांत का खण्डन करते हैं, लेकिन डारविनवादी हमेशा ही इसे मानने से हिचकिचाते रहे हैं। अपनी किताब 'दि ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़' (प्रजातियों का उदय) के अध्याय ''सिद्धांत की कठिनाइयां'' में डारविन ने इस बात को माना है कि फॉसिल रिकॉर्ड को क्रमिक–विकास के सिद्धांत के नजरिए से समझाया नहीं जा सकता :

''अगर प्रजातियां अतिसूक्ष्म स्तरों से गुजरते हुए दूसरी प्रजातियों से विकसित नहीं हुई हैं, तो हमें हर जगह अनगिनत बीच के रूप क्यों नहीं दिखाई देते? समस्त प्रकृति अव्यवस्थित क्यों नहीं है बल्कि प्रजातियां सुनिश्चित रूपों में क्यों है जैसा कि हम उन्हें देखते हैं? जबकि इस सिद्धांत के मुताबिक असंख्य बीच के रूप मौजूद होने चाहिए थे, तो हम उन्हें धरती की ऊपरी सतह में असंख्य मात्रा में छिपा हुआ क्यों नहीं पाते? हर भूवैज्ञानिक संरचना और हर परत ऐसी बीच की कड़ियों से भरी हुई क्यों नहीं है? भूविज्ञान निश्चित तौर पर सूक्ष्मता से बढ़ती हुई बीच की कड़ियों की कोई जंजीर उजागर नहीं करता और शायद यही सबसे स्पष्ट और गंभीर आपत्ति है जो मेरे सिद्धांत के खिलाफ उठाई जा सकती है।'' (चार्ल्स डारविन, दि ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयार्क, 1998, पृष्ठ 140, 141, 227)

चार्ल्स डारविन

बीच के रूपों के फॉसिल न मिलने के मद्‌देनजर डारविन ने जो दलील पेश की थी – यानी ''अभी बीच के कोई रूप नहीं हैं, लेकिन आगे चलकर खोज में वे मिल सकते हैं'' – वह आज लागू नहीं होती। वर्तमान आंकड़े दर्शाते हैं कि फॉसिल रिकॉर्ड भारी मात्रा में उपलब्ध हैं। दुनिया भर के विभिन्न क्षेत्रों से हासिल किए गए करोड़ों फॉसिलों के नमूने जिसमें करीब 2,50,000 अलग–अलग प्रजातियों का वर्णन किया गया है उनमें से बहुत सारी फॉसिल आज पाये जाने वाली लगभग 1.5 अरब प्रजातियों से असाधारण समानता रखती है। इतने अधिक फॉसिल रिकॉर्ड के बावजूद बीच का कोई रूप नहीं मिला, तो

5.4 करोड़ से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पहले की मधुमक्खी का फॉसिल

यहां चित्रित घोंघ का सबसे पुराने ज्ञात फॉसिल का नमूना जुरासिक काल (20.6 से लेकर 14.4 करोड़ वर्ष पहले) से संबंधित है। जिस जीवित प्राणी वर्ग से यह प्रजातियां संबंधित हैं उसके उदाहरण नमूने कैंब्रियन काल (54.3 से लेकर 49 करोड़ वर्ष पहले) से मौजूद हैं। घोंघो में कई हजार लाख वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है, जो कि क्रमिक–विकास के गलत होने को ही उजागर करता है।
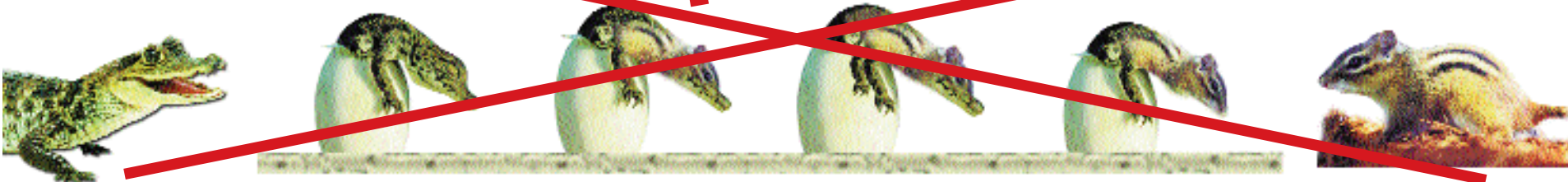
फॉसिल संबंधी रिकार्ड के सभी जीव–जंतु समूचे और अपने बेहतरीन रूप में नजर आते हैं। उदाहरण के लिए, मगरमच्छों और गिलहरियों के अस्तित्व से पहले मगरमच्छ के किसी हिस्से, और गिलहरियों या अन्य किसी जीव–जंतु के किसी अन्य हिस्से से मिलते–जुलते किसी अजीबो–गरीब फॉसिल का अस्तित्व नहीं है। गिलहरियां हमेशा ही गिलहरियां रही हैं, और मगरमच्छ हमेशा मगरमच्छ बने रहे। ये सभी तथ्य उजागर करते हैं कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत का यह दावा केवल कल्पना की उपज है कि, ''जीवित प्राणी कई लाख वर्षों के समय में धीरे–धीरे विकसित हुए हैं।'

अब यह नामुमकिन है कि नई खुदाइयों में बीच के रूप सामने आ जाएंगे।

फॉसिल रिकॉर्ड किसी भी "बीच के रूप" का ऐसा एक भी उदाहरण पेश नहीं करते जिसे क्रमिक–विकासवादी सबूत के तौर पर इस्तेमाल कर सकते हों, लेकिन वे ऐसे लाखों नमूने स्वयं ही पेश करते हैं जो क्रमिक–विकास को गलत साबित करते हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण हैं "जीवित फॉसिल" जिनके जिंदा नमूने आज भी मौजूद हैं। फॉसिल रिकॉर्ड से देखा जा सकता है कि वे अलग–अलग भूवैज्ञानिक कालों में जीवित रहे हैं, और सृष्टि की रचना के प्रमाण हैं, क्योंकि करोड़ों वर्ष पहले के जीव–जंतुओं और आज के नमूनों के बीच कोई अंतर नहीं है। ऐसे हालात में डारविनवादियों से कुछ कहते नहीं बनता।

क्रमिक–विकासवादी नाइल्स एल्ड्रेज यह मानते हैं कि जीवित फॉसिलों के विषय में वह कोई स्पष्टीकरण नहीं दे सकते। यह उन अनगिनत रहस्यों में से एक है जिनकी गुत्थी सुलझाने में क्रमिक–विकास का सिद्धांत नाकाम है :

पेड़–पौधों की ऐसी कई प्रजातियां हैं जिनकी संरचना में ट्रायसिक काल (24.8 से लेकर 20 करोड़ वर्ष पहले) से अब तक कोई बदलाव नहीं आया है। इनमें से एक है जिंगको वृक्ष। चित्र में दिखाया गया फॉसिल जुरासिक कला (20 करोड़ से लेकर 14.4 करोड़ वर्ष पहले) से संबंधित है।

आज भी जीवित जिंगको वृक्ष की एक शाखा

''ऐसा लगता है कि जीवित जीव और सुदूर भूवैज्ञानिक अतीत में फॉसिल बन चुके इसके पूर्वजों के बीच किसी भी हिस्से में लगभग कोई बदलाव नहीं आया है जिसकी हम तुलना कर सकें। जीवित फॉसिल क्रमिक–विकासवादी सिद्धांत की स्थिरता के चरम रूप का प्रतीक हैं। हम जीवन के चरम रूप की गुत्थी को पूरी तरह सुलझा नहीं पाए हैं। हम जीवित फॉसिलों की गुत्थी को पूरी तरह सुलझा नहीं पाए हैं।''
(http://www. nwcreation.net/fossilsliving.html)

नाइल्स एल्ड्रेज जिस ''रहस्य'' को खोलने की कोशिश करते हैं वह दरअसल पूरी तरह जाहिर सच्चाई है। जिंदा फॉसिल यह साबित करते हैं कि प्रजातियां क्रमिक–विकास से होकर नहीं गुजरीं, बल्कि उनकी रचना की गई। लेकिन, डारविनवादी अपनी विचारधारा सम्बन्धित लगाव के कारण इस सच्चाई की अनदेखी करते हैं और 150 साल पुराने सिद्धांत को जीवित रखने पर अडिग रहना चाहते हैं।

लेकिन अब डारविन के समय की अपेक्षा सच्चाइयों का पता ज्यादा साफ तौर पर लगाया जा सकता है। सच्चाई को समझने और मानने वाले लोगों की संख्या बढ़ रही है जबकि जो लोग परियों की कहानियों में यकीन करते हैं और उन पर सवाल नहीं उठाते उनकी संख्या कम हो रही है। अब सच्चाई को छुपाया और दरकिनार नहीं किया जा सकता, जैसा कि डारविन के जमाने में होता था। आनुवांशिकी (जेनेटिक्स), सूक्ष्म जीवविज्ञान, फॉसिल विज्ञान, भूविज्ञान और विज्ञान की अन्य सभी शाखाएं लगातार एक ऐसी सच्चाई को उजागर कर रही है जिसे डारविन और डारविनवाद के समर्थक कभी नहीं चाहते थे और शायद उन्होंने कभी इसकी आशा भी नहीं की थी– यानी सृष्टि की रचना की सच्चाई।

डारविनवादी जो अतार्किक और अवैज्ञानिक दावे करते हैं, जनता को धोखा देने के लिए धोखाधड़ियां करते हैं और लोगों को भ्रम में डालने के लिए वे जिस तरह का प्रचार करते हैं उससे उनकी बदहवासी का ही पता चलता है। आने वाली नस्लें यह जानकर चकित रह जाएंगी कि किस तरह लोग कभी डारविन की मनगढ़ंत कहानी पर यकीन करते थे। सभी वैज्ञानिक खोजें इस तथ्य को स्पष्ट करती हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं, और अल्लाह ने इस सृष्टि और सभी जीव–जंतुओं की रचना की।

खुदा की एक पहचान स्वर्ग और धरती एवं उन सभी जीव–जंतुओं की रचना है, जिन्हें उसने स्वर्ग और धरती पर भेजा। और उसके पास जब चाहे तब उन सभी को एक साथ नष्ट करने की शक्ति है। (सूरत ऐश–शुरा, 29)

(अल्लाह ही) मालिक है धरती और आसमान का और उनके बीच की हर चीज का अगर तुम यकीन रखने वालों में से हो तो। उसके सिवा और कोई पूज्य नहीं–वह जीवन देता है और मृत्यु भी–तुम्हारा और तुम्हारे पूर्वजों का खुदा जो पहले गुजर गए फिर भी वो शंका में पड़े रहते हैं। (सूरतः अद–दुखान, 7–9)
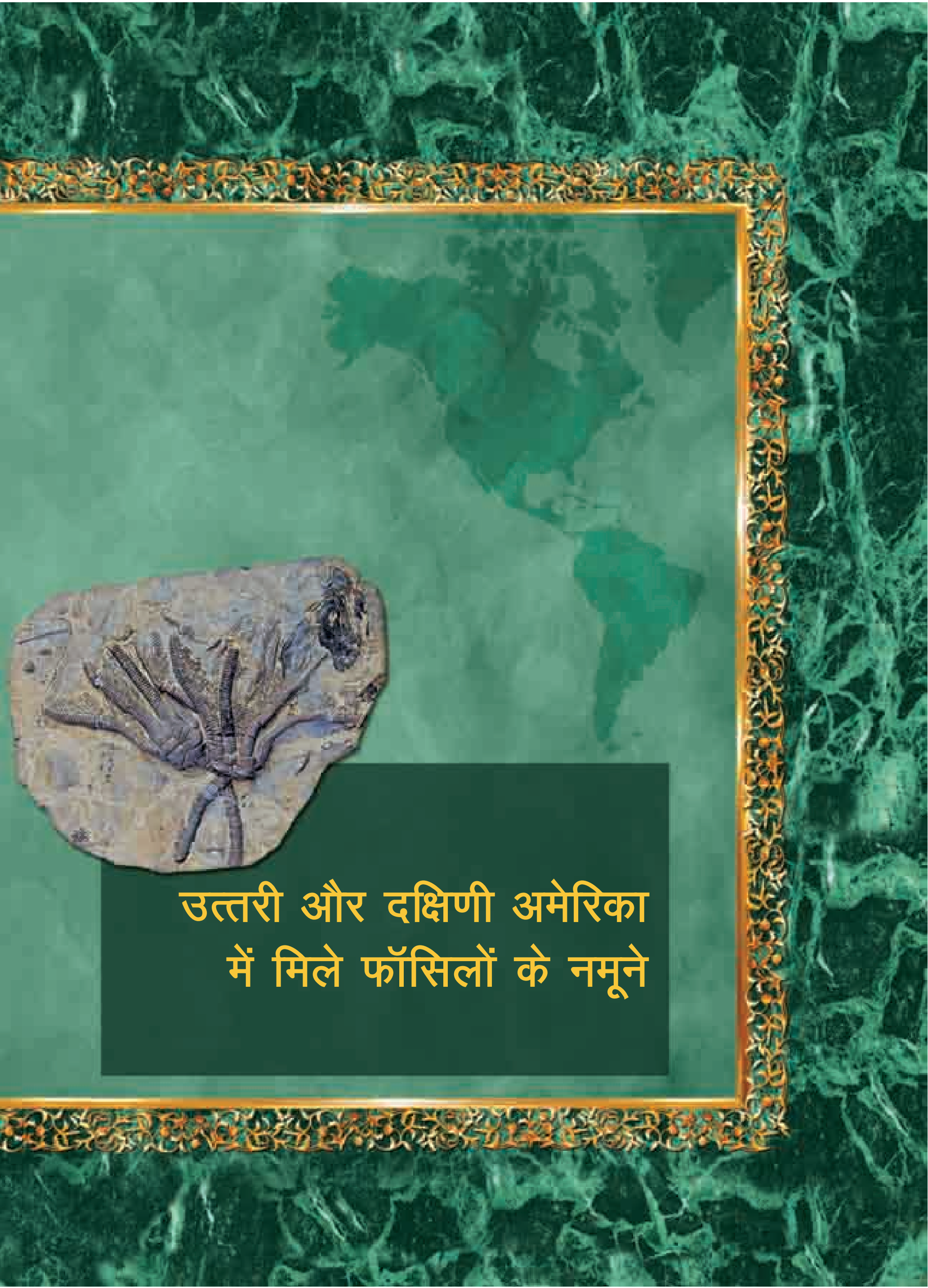
उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका
में मिले फॉसिलों के नमूने

संयुक्त राज्य अमेरिका (यूएसए) में मिले फॉसिलों के नमून

इयोसीन काल (5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले) के जमाने से चले आ रहे, ग्रीन नदी फॉसिल क्षेत्र संयुक्त राज्य अमेरिका में फॉसिलों के सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक हैं। इस इलाके में सबसे पहले जिस खुदाई का पता चलता है वह 1850 के दशक में हुई थी। 1856 में पुरातत्व वैज्ञानिक डॉ. जॉन इवान्स ने वैज्ञानिक दुनिया के सामने मछलियों के उन फॉसिलों से अवगत कराया जो उन्होंने उस इलाके में इकट्ठा किए थे, और इस तरह ग्रीन रिवर फार्मेशन (ग्रीन नदी संरचना) ने वैज्ञानिक साहित्य में प्रवेश किया। ग्रीन नदी दरअसल कोलोरैडो नदी की एक सहायक नदी है। ग्रीन नदी संरचना एक पहाड़ी झील का जल संग्रहण क्षेत्र है जो तीन राज्यों में फैला हुआ है। इसका एक हिस्सा उत्तर–पश्चिमी कोलोरैडो में यूइंटा पहाड़ों के पूरब में है, और एक ज्यादा चौड़ा हिस्सा दक्षिण–पश्चिम व्योमिंग में है।

ग्रीन नदी की चट्टानों का ढांचा अलग–अलग परतों से मिलकर बना है, और जैसे–जैसे हम गहराई में जाते हैं इनकी सामग्री बदलती जाती है। इनमें बिखरे फॉसिल भी अलग–अलग हैं। अब तक ग्रीन नदी में हुई खुदाइयों में करीब 60 अलग–अलग रीढ़ वाले समूहों के फॉसिल और अनगिनत बिना रीढ़ वाले जीवों के फॉसिल मिल चुके हैं।

ओहायो एक ऐसा राज्य है जिसके फॉसिल क्षेत्र काफी प्रसिद्ध हैं। भूवैज्ञानिक शोध से पता चला है कि करीब 51 करोड़ वर्ष पहले ओहायो इक्वाडोर के दक्षिण में था। जब महाद्वीप खिसके और उत्तरी अमेरिका अपनी वर्तमान स्थिति की ओर चला आया, तो ओहायो कई बार पानी के नीचे डूब गया। इससे समझा जा सकता है कि पैलियोज़ोइक काल (54.3 से 25.1 करोड़ वर्ष पहले) के फॉसिल बड़ी संख्या में ओहायो में कैसे अस्तित्व में आए।

यूटा वह दूसरा क्षेत्र है जहां भारी मात्रा में फॉसिल पाए जाते हैं। बिना रीढ़ वाले जीवों से लेकर विभिन्न प्रकार के समुद्री और रेंगने वाले तथा स्तनपायी जीवों के फॉसिल यूटा में पाए गए हैं। यूइंटा पहाड़ों में हाल में पाए गए सूक्ष्म फॉसिलों से पता चला है कि यूटा में ऐसे भी फॉसिल क्षेत्र हैं जो कैम्ब्रियन काल के समय के हैं।

ग्रीन नदी, व्योमिंग से मिला मछली का फॉसिल
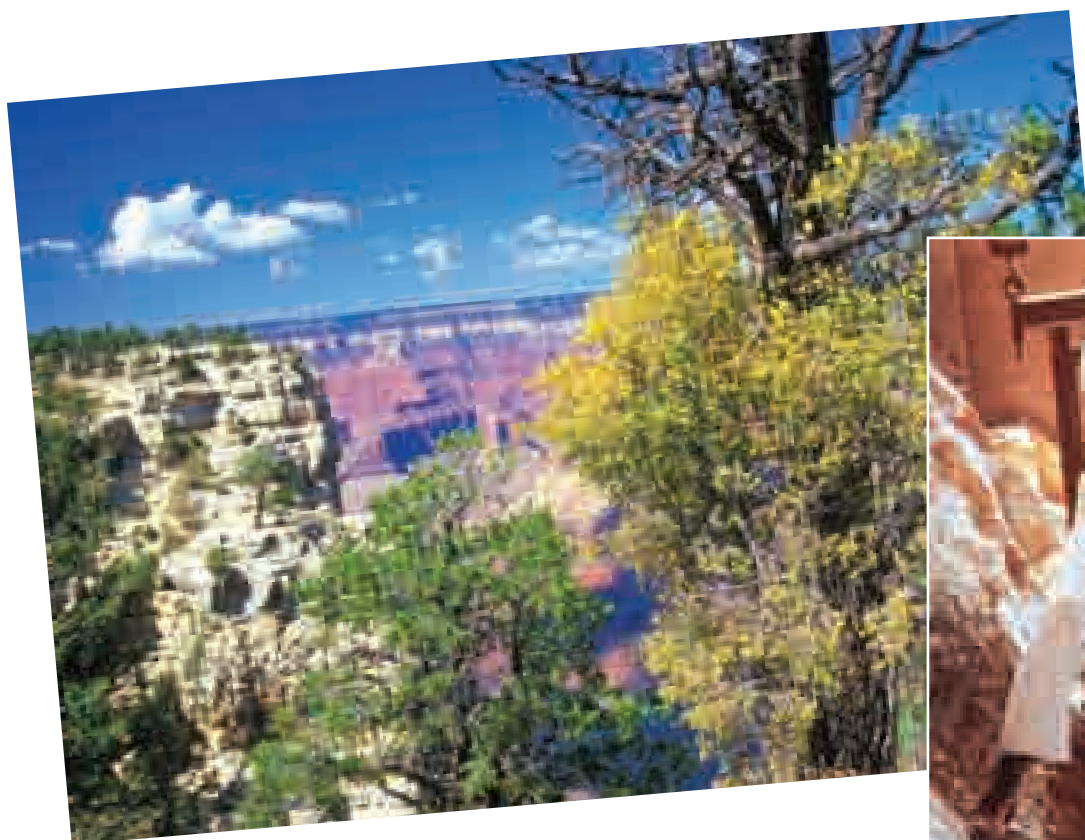
बायें, कैबाब चूने के पत्थर औसतन 25 करोड़ वर्ष पुराने हैं और उन्हीं से कैबाब और कोकोनिनो पठारों का निर्माण हुआ है। इन परतों में मूंगा, घोंघा, समुद्री लिली, कृमियों और मछली के दांतों के फॉसिल मिल सकते हैं।

नीचे, फॉसिल को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

दुनिया के दूसरे इलाकों में मिलने वाले फॉसिलों की ही तरह, ये सब भी यही दर्शाते हैं कि आज के जमाने की ट्राउट मछली, स्केट मछली, ड्रैगनफ्लाई, मक्खियों, मकड़ों, केकड़ों और कछुओं तथा करोड़ों वर्ष पहले रहने वाले ऐसे ही जीव–जंतुओं के बीच कोई अंतर नहीं है। इन करोड़ों वर्षों के दौरान जीवित प्राणियों में कोई बदलाव नहीं आया है – दूसरे शब्दों में, वे क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे हैं। फॉसिल रिकॉर्ड क्रमिक–विकास को झुठलाते हैं और एक बार फिर सृष्टि की रचना की सच्चाई को सही साबित करते हैं।

व्योमिंग में फॉसिल संबंधी शोध का क्षेत्र

गारफिश

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : लंबाई 39 सेंटीमीटर (154.3 इंच); मैट्रिक्स : 29 सेंटीमीटर (11 इंच) गुणा 40 सेंटीमीटर (15 इंच)

स्थान : लिंकन काउंटी, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

गारफिश के हजारों फॉसिल जो इकट्ठा किए गए हैं वे इस बात के सबूत हैं कि आज भी जीवित यह मछली करोड़ों वर्षों में बिल्कुल नहीं बदली है। यहां 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले की जिस गारफिश की तस्वीर दी गई है, वह आज भी हमारे समुद्रों में पाई जाने वाली गारफिश मछली से बिल्कुल भी अलग नहीं है। इस अद्विितिय समानता का डारविनवादियों के पास कोई जवाब नहीं है और इससे एक बार फिर रचना की सच्चाई साबित होती है।
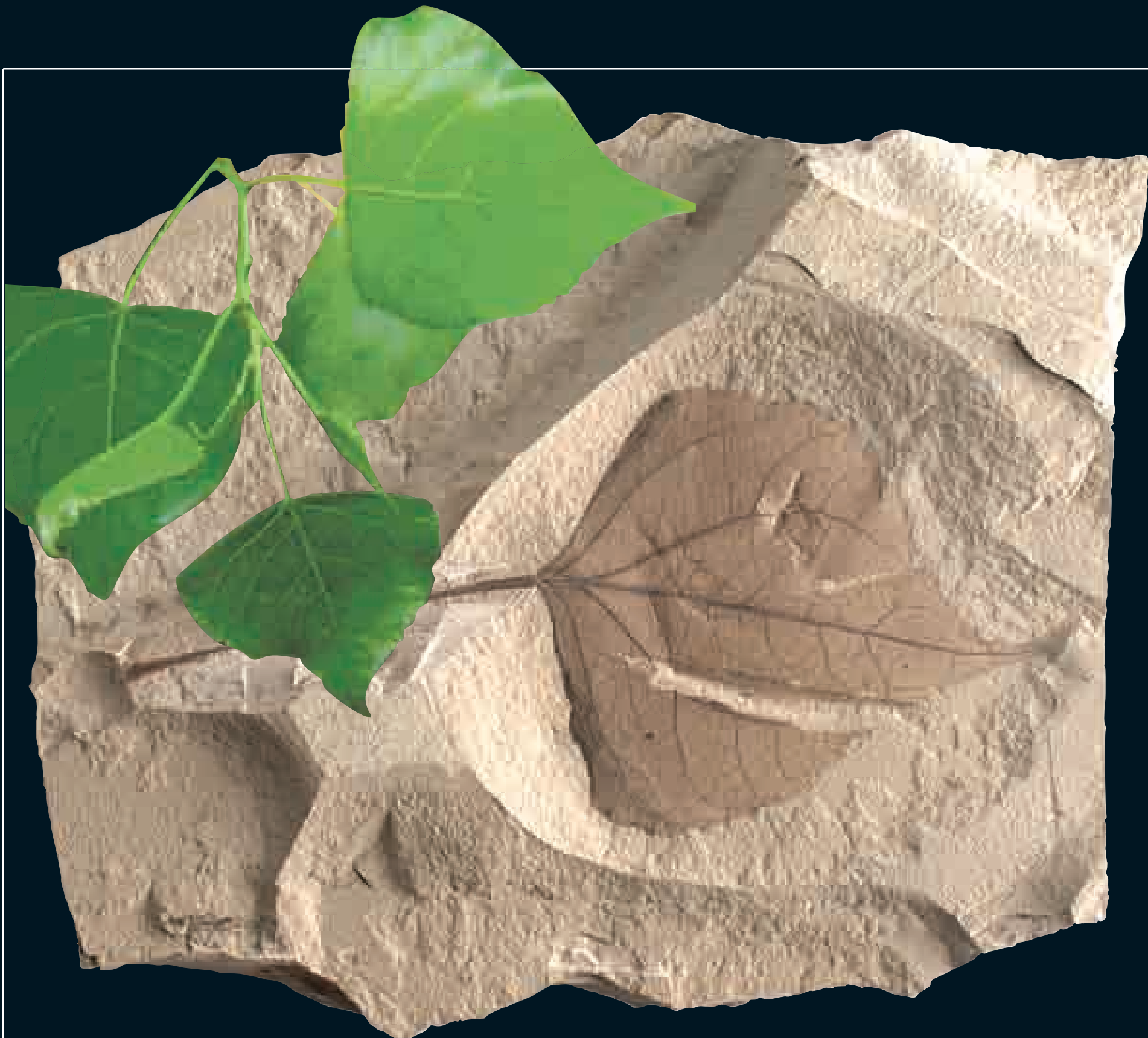
पॉपलर का पत्ता

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

काल : इयोसीन

स्थान : ग्रीन नदी संरचना, कोलोरैडो, यूएसए

डारविनवादी ''संयोग'' की धारणा का उपयोग करके इस सवाल का जवाब देने की कोशिश करते हैं कि पेड़–पौधे कैसे पैदा हुए। वे दावा करते हैं कि लंबे समय के दौरान और संयोगवश, विभिन्न पेड़–पौधों की प्रजातियों का अंतहीन सिलसिला एक कोशिका वाले एक ही मूल पौधे से पैदा हुआ – जो खुद संयोगवश पैदा हो गया था।

उनका यह भी कहना है कि हर प्रजाति की अपनी विशिष्टता जैसे उसकी गंध, संरचना और रंग भी इसी तरह संयोग का परिणाम हैं। क्रमिक–विकासवादी किसी समुद्री खर–पतवार के स्ट्राबेरी (झरबेरी), या पॉपलर का वृक्ष या गुलाब की झाड़ी में तब्दील हो जाने को यह कहकर समझाने की कोशिश करते हैं कि ये अलग–अलग विकास सिर्फ संयोग से पैदा हुई परिस्थितियों का नतीजा थे। लेकिन इस कपोलकल्पना का कोई वैज्ञानिक प्रमाण नहीं है।

दूसरी ओर, क्रमिक–विकासवादियों के दावों को धूल में मिलाने के लिए अनगिनत वैज्ञानिक आंकड़े और खोजें मौजूद हैं। फॉसिल रिकॉर्ड में इस बात के अनगिनत उदाहरण हैं, जो दिखाते हैं कि हजारों जीवित प्रजातियां करोड़ों साल से बची हुई हैं और उनमें कोई बदलाव नहीं आया है। यहां 5 करोड़ वर्ष पुराने पॉपलर के पत्ते के जिस फॉसिल की तस्वीर दी गई है उसका उदाहरण साफ तौर पर यह कहता है कि जीवित प्राणियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि उनकी रचना की गई।

स्टंग रे (डंक मारने वाली मछली)

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुरानी

आकार : 8 सेंटीमीटर (3.2 इंच) गुणा 3.8 सेंटीमीटर (1.5 इंच); मैट्रिक्स : 12.7 सेंटीमीटर (5 इंच) गुणा 10 सेंटीमीटर (4 इंच)

स्थान : लिंकन काउंटी, व्योमिंग

काल : इयोसीन

स्टिंगरे नर्म हड्डी वाली मछली है। खतरा होने पर यह अपनी पूंछ पर बने डंक से अपना बचाव करती है। उसकी आंखें उसके चपटे शरीर के ऊपर होती हैं और उसका मुंह नीचे की ओर होता है। शार्क मछली की तरह, वह अपनी सूंघने की शक्ति और विद्युत इंद्रियों का इस्तेमाल करके अपने भोजन का पता लगाती हैं। वे आम तौर पर समुद्र की तलहटी में छुपी हुई रहती हैं, बस उनकी आंखें और पूंछ दिखाई देती है।

यहां जिस फॉसिल की तस्वीर दी गई है वह इस बात का सबूत है कि इस मछली का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। 5 करोड़ वर्ष पहले रहने वाली स्टिंग रे आज भी जीवित स्टिंग रे से कतई अलग नहीं थीं। करोड़ों साल बीत जाने पर भी स्टिंग रे मछलियों की संरचना में कोई बदलाव नहीं आया है। अगर वास्तव में क्रमिक–विकास हुआ होता, तो स्टिंग रे विभिन्न परिवर्तन होते और वह ऐसे अनेक फॉसिल छोड़ गई होती जो इन क्रमिक अवस्थाओं का पता देते। लेकिन जिस भी फॉसिल का अब तक पता चला है वह यही बताता है कि आज की स्टिंग रे और अतीतकाल में रहने वाली स्टिंग रे एक जैसी ही हैं। यह सब क्रमिक–विकासवादियों के दावे को झुठलाते हैं।

हेरिंग मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 9.3 सेंटीमीटर (3.7 इंच)

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

''जीवित फॉसिल'' यह साबित करते हैं कि प्रजातियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है, बल्कि उनकी रचना की गई है। प्रजातियों ने अपने शरीर की वर्तमान संरचना संयोगवश हासिल नहीं की है, जैसा क्रमिक–विकासवादी दावा करते हैं। उन सबको सर्वशक्तिमान अल्लाह ने दोषरहित रचा है और वे जिस रूप में रची गई थी उसी रूप में लगातार जीवित रही हैं।

यहां तस्वीर में दिखाया गया हेरिंग मछली का फॉसिल भी यही साबित करता है। हेरिंग मछलियां करोड़ों साल तक वैसी ही रही है और उनका रूप–रंग और संरचना वैसी ही बनी हुई है जैसी इन्हें प्रारंभ में बनाया गया था। सभी अन्य फॉसिलों की तरह, इस हेरिंग मछली से भी पता चलता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत झूठ पर टिका है।
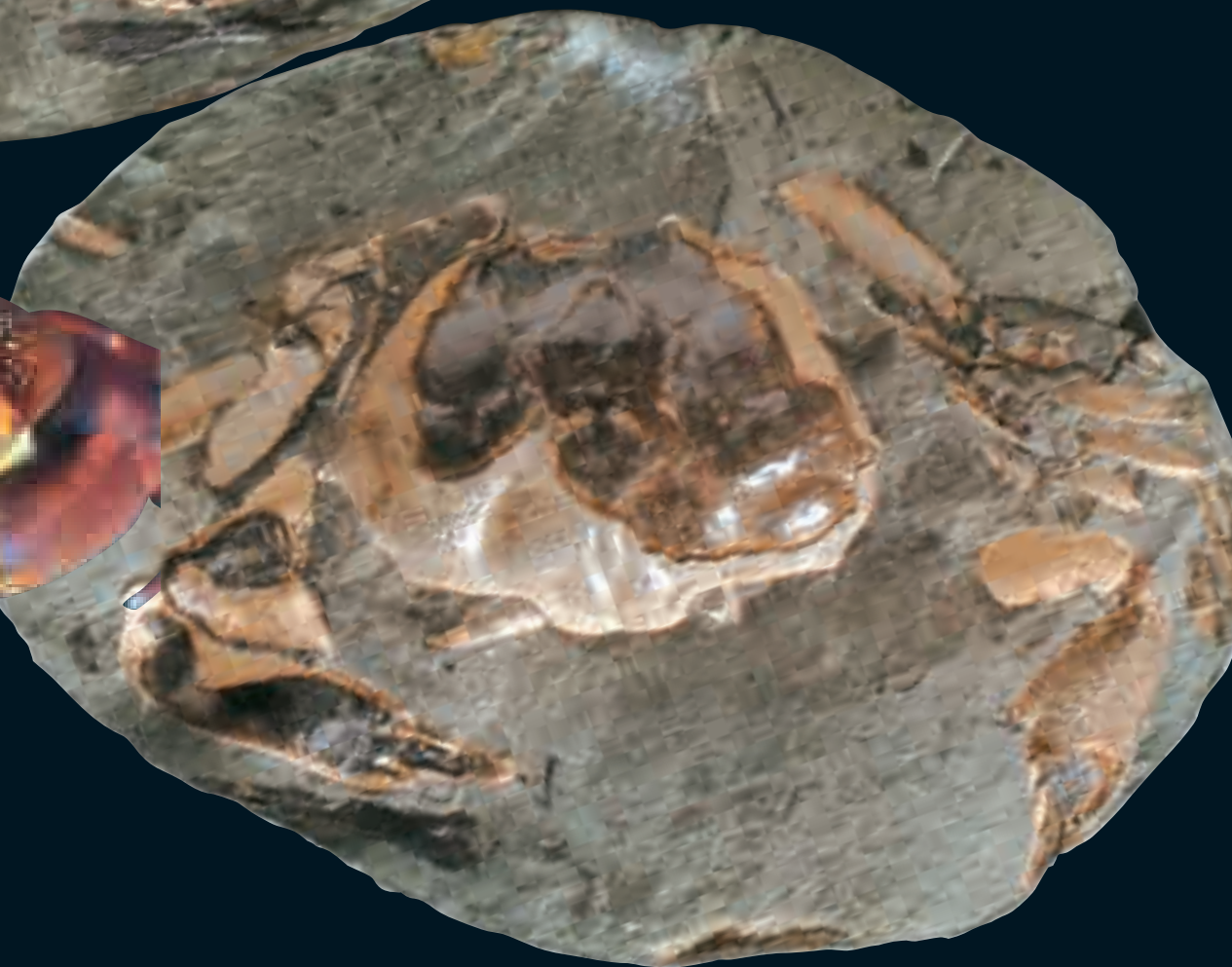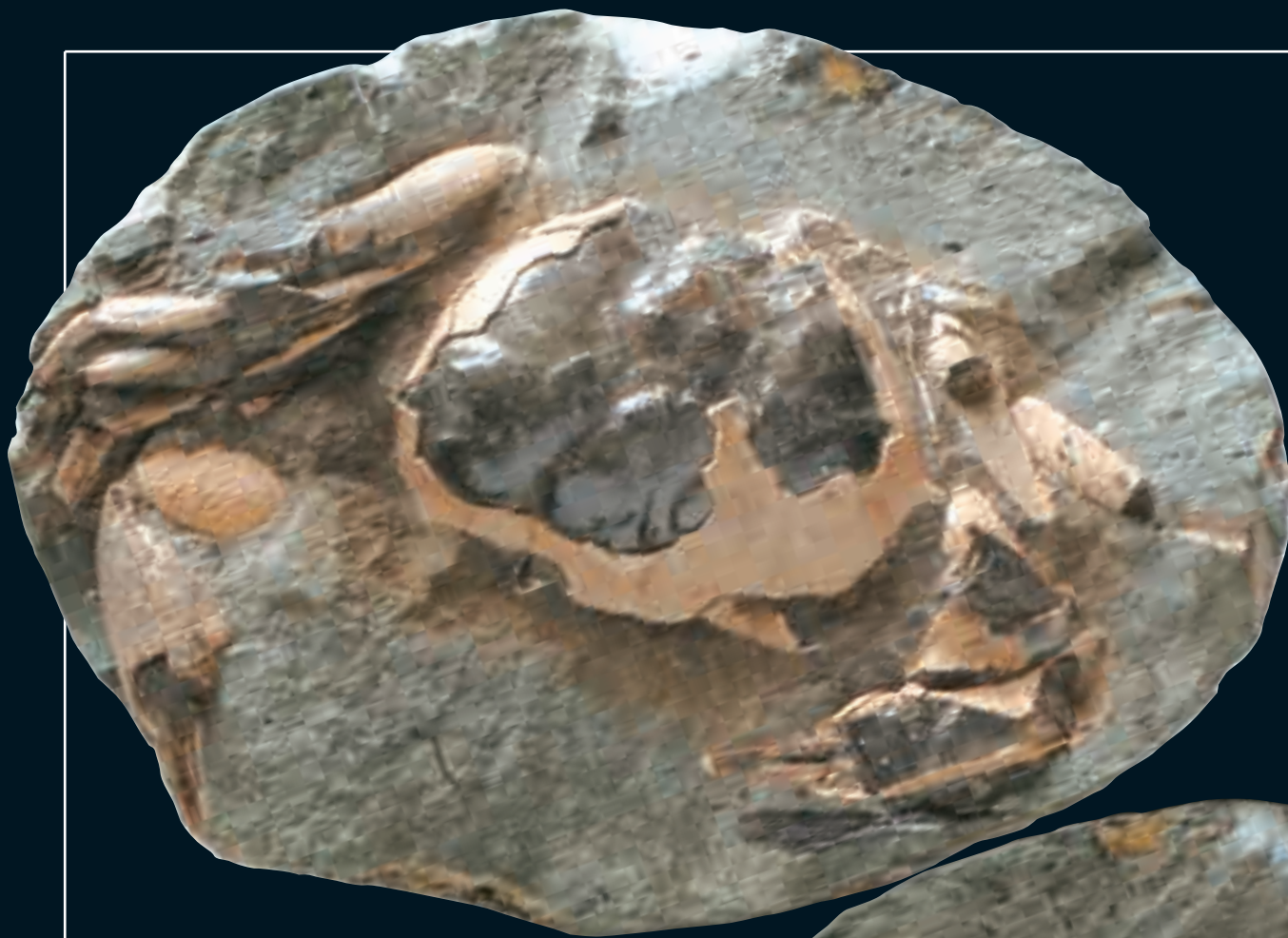
केकड़ा

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : ओरेगॉन

काल : इयोसीन

फॉसिल रिकॉर्ड में पाई जाने वाली एक अद्भुत विशेषता यह है कि तमाम भूवैज्ञानिक कालों के दौरान जीवित प्राणियों में कोई बदलाव नहीं आया है। दूसरे शब्दों में, करोड़ों जीव–जंतु ठीक वैसे ही बने रहे हैं जैसे वे फॉसिल रिकॉर्ड में आरंभ में उभरे थे। यह इस बात का सबूत है कि तब भी और आज भी, जीवित प्राणियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है।

5 करोड़ वर्ष से अपरिवर्तित और आज भी मौजूद केकड़े भी इन सबूतों में से एक हैं। आज भी जीवित केकड़े और करोड़ों वर्ष पहले के केकड़े एक जैसे हैं।

पर्च मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 30.4 सेंटीमीटर (12 इंच)

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

पर्च ताजे पानी की एक मछली है जो अलग–अलग जलवायु और पानी के तापमान के मुताबिक खुद को ढाल सकती है।

डारविनवादियों का यह दावा कि जीवित प्रजातियां क्रमिक बदलावों के जरिए एक से दूसरे रूप में विकसित हुईं, पर्च मछलियों के फॉसिल से भी झूठा साबित हो जाता है। आज की जीवित पर्च मछलियों की संरचना वैसी ही है जैसी 5 करोड़ वर्ष पहले की पर्च मछलियों की थी।

सुमैक का पत्ता

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 25 मिलीमीटर (0.9 इंच)

स्थान : यूइंटा काउंटी, यूटा

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

सभी अन्य जीवित प्राणियों की ही तरह, वनस्पतियों की प्रजातियां भी अपनी जटिल संरचनाओं के साथ पूरी तरह बनी हुई प्रकट हुई हैं। यानी, उन्हें उनकी तमाम खूबियों के साथ रचा गया। भूवैज्ञानिक परतों में मिले लाखों पेड़–पौधों के फॉसिल इस बात का प्रमाण हैं कि क्रमिक–विकासवादी ऐसे कोई फॉसिल नहीं पेश कर सकते जो आधे चीड़, आधे विलो (बेदमजनूं), आधी काई, आधे ऑर्किड (एक तरह के फूलों की झाड़ी), या आधे कार्नेशन (सुगंधित फूलों का पौधा) के फूल हों। दूसरी ओर, लाखों की तादाद में फॉसिल यह दिखाते हैं कि विलो के वृक्ष हमेशा ही विलो रहे हैं, चीड़ हमेशा से चीड़ रहे हैं, देवदार हमेशा से देवदार रहे हैं और प्लेन के वृक्ष हमेशा प्लेन के वृक्ष ही रहे हैं। इनमें से हरेक फॉसिल, जो करोड़ों साल पुराना है, क्रमिक–विकास को झूठा साबित करता है।

ट्राउट–पर्च मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 10.6 सेंटीमीटर (4.2 इंच)

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

ट्राउट–पर्च मछलियां आमतौर पर झीलों में रहती हैं। अगर कोई जानवर अपनी उन सभी दोषरहित विशेषताओं के साथ आज भी जीवित है जो उसमें करोड़ों साल पहले थीं, और उसमें कोई बदलाव नहीं आया है, तो यह डारविन द्वारा पेश किए गए "क्रमिक–विकास" के मॉडल को असत्य साबित करने वाला ठोस प्रमाण है। आज धरती पर ऐसे चंद एक नहीं बल्कि लाखों उदाहरण मौजूद हैं जो इस बात को सही साबित करते हैं। यहां दर्शाया ट्राउट–पर्च मछली का फॉसिल इस प्रमाण की मात्र एक कड़ी है।

दो हेरिंग मछलियां

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 34.2 सेंटीमीटर (13.5 इंच) गुणा 43 सेंटीमीटर (17 इंच)

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

सभी अन्य प्राणियों की तरह, हेरिंग मछलियों में भी लाखों वर्षों में कोई परिवर्तन नहीं आया है। 5.4 करोड़ वर्ष पहले पाई जाने वाली और आज की हेरिंग मछलियां बिल्कुल एक जैसी हैं। यह क्रमिक–विकासवादियों के इस दावे को झुठलाता है कि जीवित प्रजातियां धीरे–धीरे एक से दूसरे रूप में विकसित हुईं।

यहां दो हेरिंग मछलियों की तस्वीर दी गई है जो एक साथ पत्थर में जम गई थीं। अपने तमाम ब्यौरों सहित फॉसिल बन गई यह मछलियां दिखाती हैं कि जीव–जंतु किसी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे हैं, बल्कि उनकी रचना की गई।

ट्रिलोबाइट

उम्र : 38 करोड़ वर्ष

आकार : 60 मिलीमीटर (2.3 इंच)

स्थान : सिल्वेनिया, लुकास काउंटी, ओहायो

संरचना : सिलिका शेल संरचना

काल : डेवोनियन

ट्रिलोबाइट कैमब्रियन काल में रहने वाले सबसे महत्वपूर्ण समुद्री जीवों में से एक हैं, जिन्होंने दुनिया के विभिन्न हिस्सों में अपनी निशानियां छोड़ी हैं। ट्रिलोबाइट की एक अद्‌भुत खूबी उनकी आंख की अनेक लेंस रूपी संरचना है जिसमें अनगिनत इकाइयां होती हैं और हरेक एक लेंस होता है। कीड़ों की भाटकोणीय "मधुमक्खी के छत्ते" जैसी आंखों की ही तरह, इनमें से हरेक इकाई एक अलग और स्वतंत्र लेंस के तौर पर काम करती है। हरेक अलग–अलग तस्वीर देखती है और मस्तिष्क में ये सारी तस्वीरें मिलकर एक पूरी तस्वीर बन जाती है।

शोध से पता चलता है कि कुछ ट्रिलोबाइटों की आंखों में तीन हजार से ज्यादा लेंस होते हैं, यानी इस कवचदार जीव को एक साथ तीन हजार से ज्यादा तस्वीरें भेजी जाती हैं। संक्षेप में, 53 करोड़ साल पहले पाए जाने वाले एक समुद्री जीव में एक बेहद जटिल मस्तिष्क और आंखें थीं – ऐसी दोषरहित संरचनाएं क्रमिक–विकास से नहीं पैदा हो सकती थीं।

हेरिंग मछलियां

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 31 सेंटीमीटर (12.5 इंच)

स्थान : केमेरर, व्योमिंग
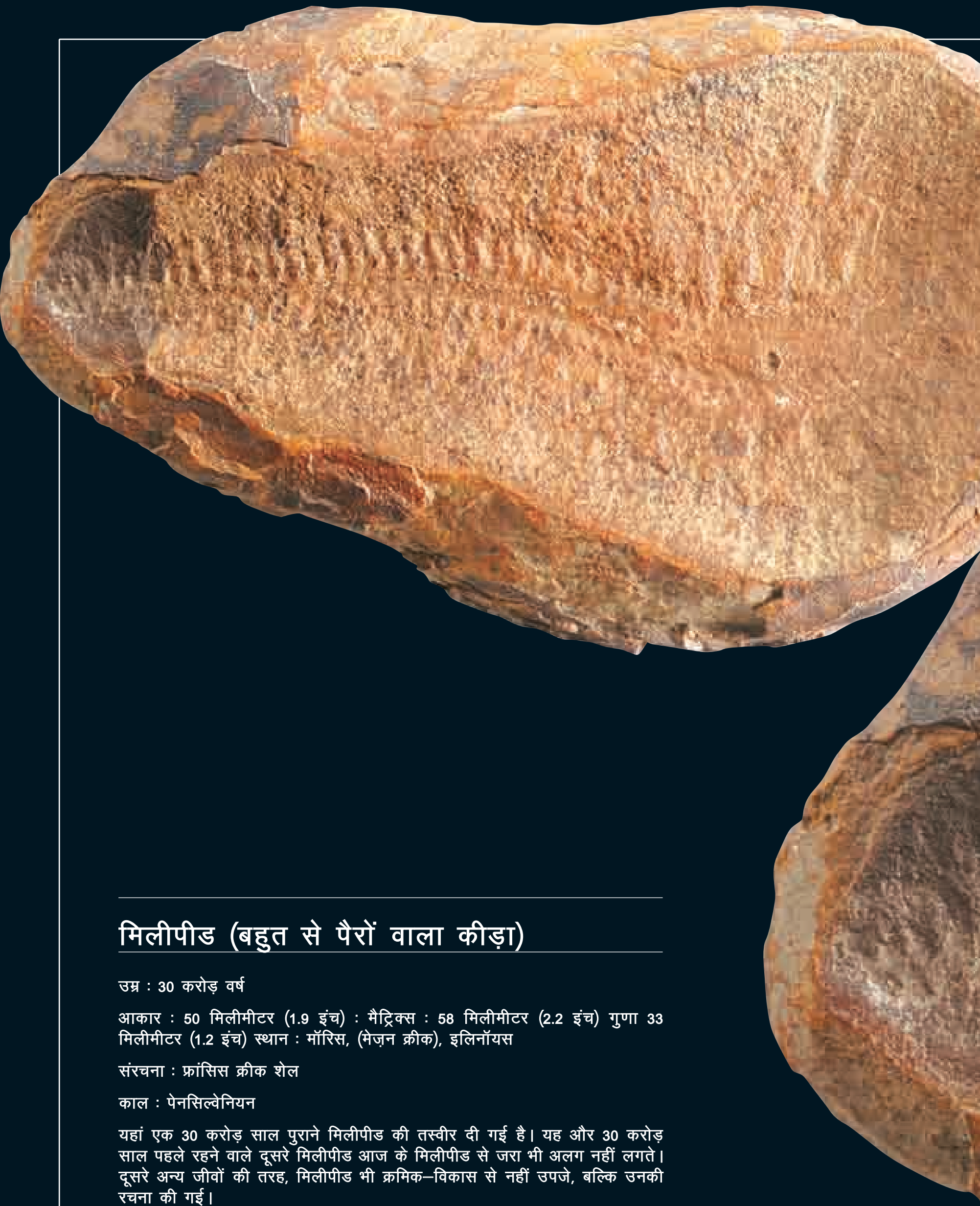
संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

यहां दर्शाई गई हेरिंग मछलियां शायद अचानक दब जाने के कारण एक साथ मर गई थीं। फॉसिल बन चुकी उनकी पूंछों और परों में नुकसान का कोई निशान दिखाई नहीं देता। अच्छी तरह सुरक्षित उनकी आंखों के कोटर और हड्डियों का ढांचा एक बार फिर यही दिखाते हैं कि उनके भूवैज्ञानिक समय में कभी भी क्रमिक–विकास नहीं हुआ।

मिलीपीड (बहुत से पैरों वाला कीड़ा)

उम्र : 30 करोड़ वर्ष

आकार : 50 मिलीमीटर (1.9 इंच) : मैट्रिक्स : 58 मिलीमीटर (2.2 इंच) गुणा 33 मिलीमीटर (1.2 इंच) स्थान : मॉरिस, (मेज़न क्रीक), इलिनॉयस

संरचना : फ्रांसिस क्रीक शेल

काल : पेनसिल्वेनियन

यहां एक 30 करोड़ साल पुराने मिलीपीड की तस्वीर दी गई है। यह और 30 करोड़ साल पहले रहने वाले दूसरे मिलीपीड आज के मिलीपीड से जरा भी अलग नहीं लगते। दूसरे अन्य जीवों की तरह, मिलीपीड भी क्रमिक–विकास से नहीं उपजे, बल्कि उनकी रचना की गई।
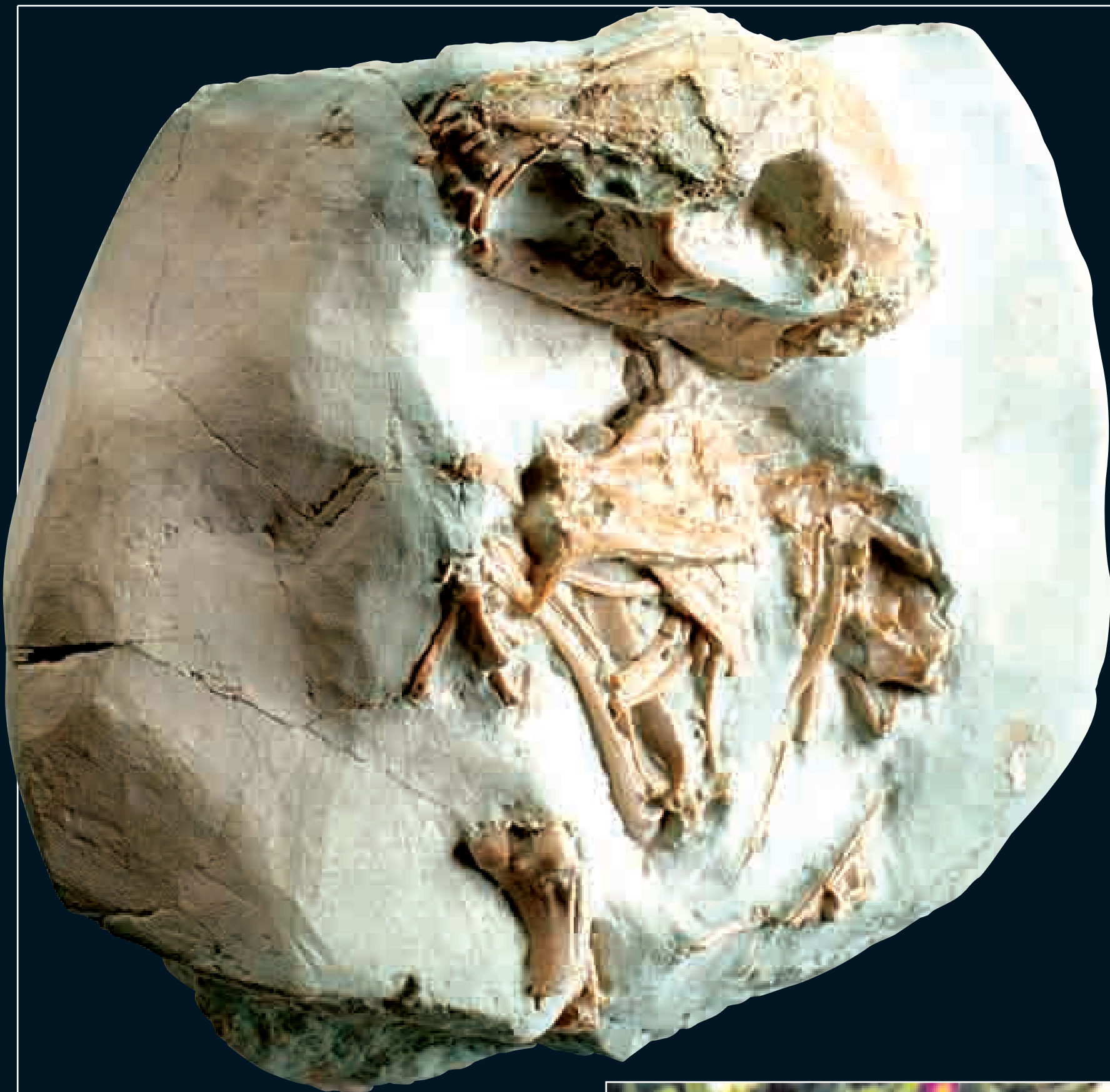
खरगोश का बच्चा

उम्र : 3 करोड़ वर्ष

स्थान : लुस्क, व्योमिंग

संरचना : व्हाइट नदी संरचना

काल : ओलिगोसीन

3 करोड़ साल पुराने जीवश्म जो आज के जीवित जानवरों जैसे ही हैं, क्रमिक–विकास के सिद्धांत को झूठा साबित करते हैं। फॉसिलों की खोज ने यह दिखाया है कि खरगोश हमेशा से खरगोश ही रहे हैं।
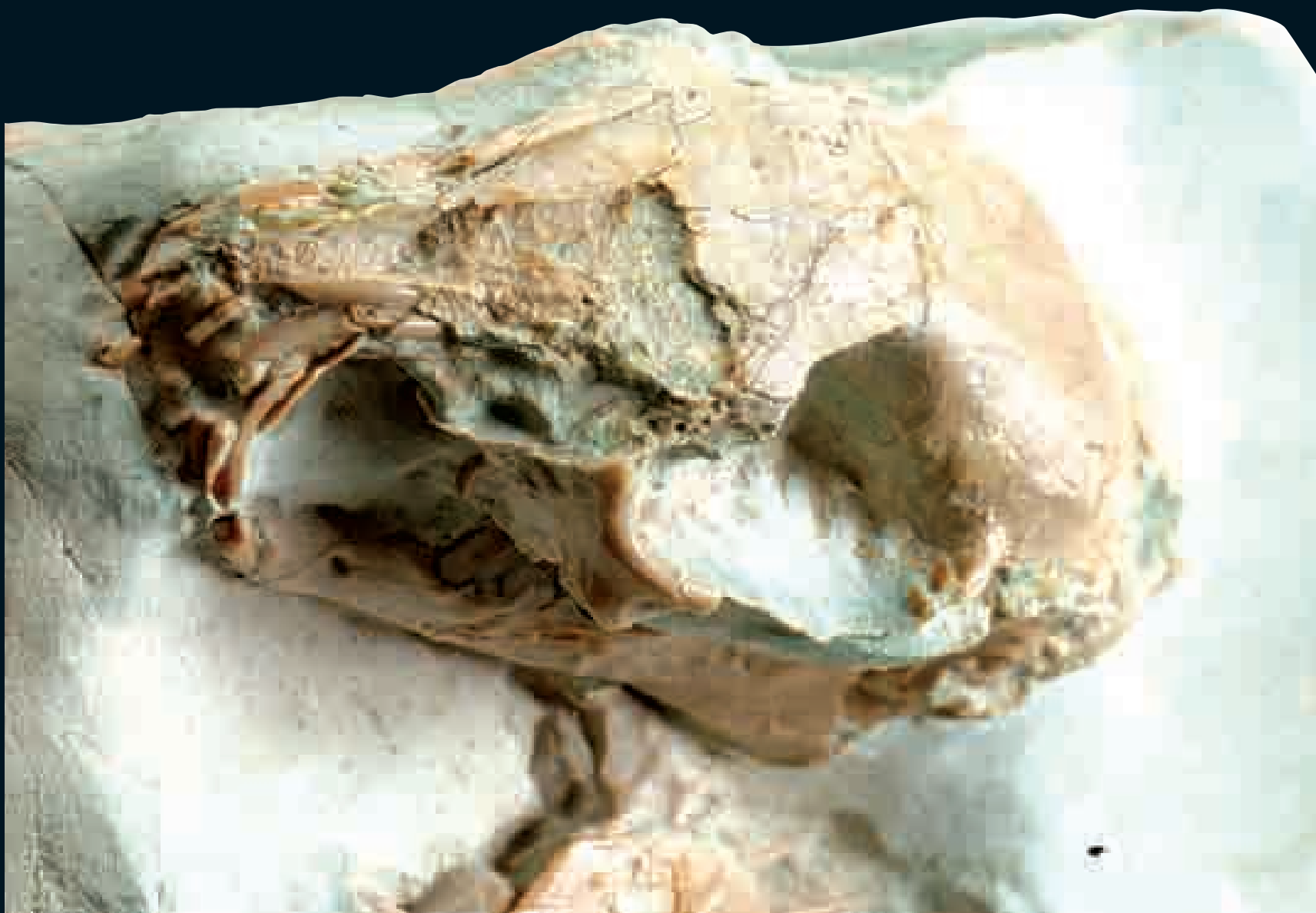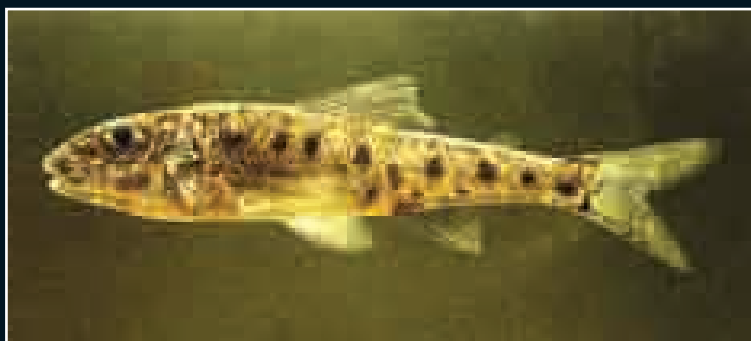
ट्राउट–पर्च मछली

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : 65 मिलीमीटर (2.5 इंच) लंबाई : मैट्रिक्स : 90 मिलीमीटर (3.5 इंच) गुणा 45 मिलीमीटर (1.7 इंच)

स्थान : फॉसिल लेक, केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

ट्राउट–पर्च मछलियां कई प्रकार की होती हैं। लगभग सभी फॉसिल रिकॉर्ड में मिलती हैं, जो यह बताते हैं कि करोड़ों साल से वे एक जैसी ही हैं और उनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ है।

समुद्री अर्चिन

उम्र : 29.5 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 110 मिलीमीटर गुणा 163 मिलीमीटर (4.3 इंच गुणा 6.4 इंच)

स्थान : ब्राउन काउंटी, टेक्सास

संरचना : विनशेल संरचना

काल : कार्बनीफेरस

पेंसिलवेनिया के समुद्री अर्चिन ऐसे कांटेदार त्वचा वाले जीव हैं जो आज दुनिया के सभी समुद्रों में पाए जाते हैं। करीब 30 करोड़ साल पहले के समुद्री अर्चिन के फॉसिल यह दिखाते हैं कि अपनी जटिल संरचनाओं सहित बिना रीढ़ वाले ये जीव करोड़ों साल से मौजूद हैं। इस पूरे दौर में उनकी संरचना में कोई बदलाव नहीं आया है, और वे किसी भी बीच की अवस्थाओं से नहीं गुजरे हैं।

इन फॉसिलों के सामने आने पर डारविनवादी बदहवास हो जाते हैं, क्योंकि इनसे साबित हो जाता है कि क्रमिक–विकास की प्रक्रिया कभी हुई ही नहीं थी।

साइकामोर के पत्त

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : पत्ते का आकार बाएं कोने से लेकर तने के सिरे तक 15 सेंटीमीटर (6 इंच) गुणा 15 सेंटीमीटर (6 इंच) है : मैट्रिक्स : 20.3 सेंटीमीटर (8 इंच) गुणा 22. 8 सेंटीमीटर (9 इंच)

स्थान : डगलस पास–रैनजेली, कोलोरैडो

काल : इयोसीन

जमीन पर जीवित पेड़–पौधों के फॉसिल इतिहास और उनके रचनात्मक लक्षण की पड़ताल करने पर हमें ऐसे तथ्यों का पता चलता है जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत के दावों से मेल नहीं खातीं। जीव विज्ञान की लगभग सभी किताबों में दिखाए गए पौधों के फॉसिलों के ऐसे कोई ब्यौरे नहीं हैं जो तथाकथित क्रमिक–विकास की प्रक्रिया की पुष्टि करते हों। आज की ज्यादातर प्रजातियों ने फॉसिल रिकॉर्ड में काफी संतोषजनक निशानियां छोड़ी हैं और इनमें से किसी में कोई ऐसी विशेषता नहीं दिखाई देती जो एक प्रजाति से दूसरी में बदलाव को सही ठहराती हों। ये सभी अलग–अलग प्रजातियां है जिन्हें उनके मूल रूप में स्पष्ट खूबियों के साथ रचा गया, और उन्होंने परिवर्तन की ऐसी कोई निशानियां नहीं छोड़ी हैं जिसका दावा किया जाता है। जैसा कि क्रमिक–विकासवादी फॉसिल वैज्ञानिक ई.सी. ओल्सन स्वीकार करते हैं कि ज्यादातर वनस्पति समूह एकाएक उभर आए और उनके कोई पूर्वज नहीं मिलते। (ई. सी. ओल्सन, दि इवोल्यूशन ऑफ लाइफ, न्यूयॉर्क : दि न्यू अमेरिकन लाइब्रेरी, 1965, पृ. 9)।तस्वीर में दिखाया गया 5 करोड़ साल पुराना साइकामोर की पत्ती का फॉसिल भी इसी सच्चाई को सही ठहराता है।

सैंड फिश

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : लिंकन काउंटी, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

तस्वीर में दिखाई गई सैंड फिश 5.4 से 3.7 करोड़ साल पुरानी है और इस दौरान उसमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। आज समुद्रों में रहने वाली सैंड फिश जैसा ही यह फॉसिल क्रमिक–विकास के सिद्धांत को गलत साबित करता है।
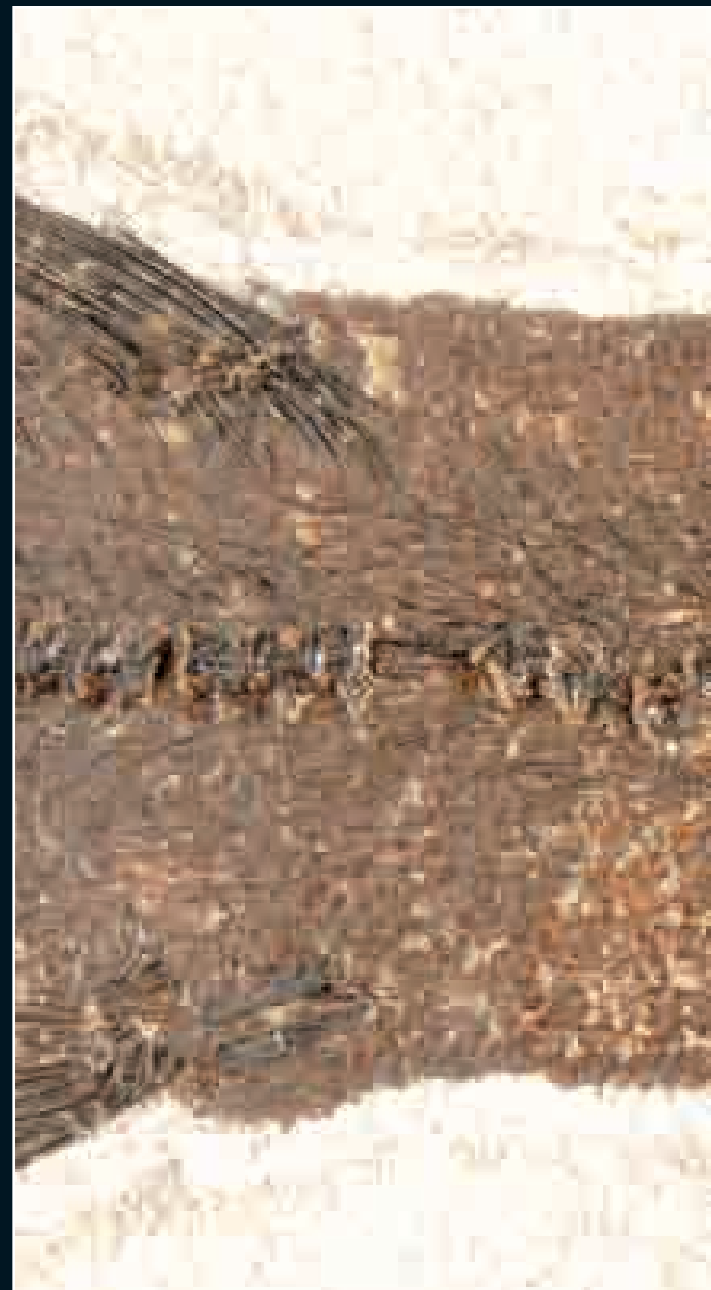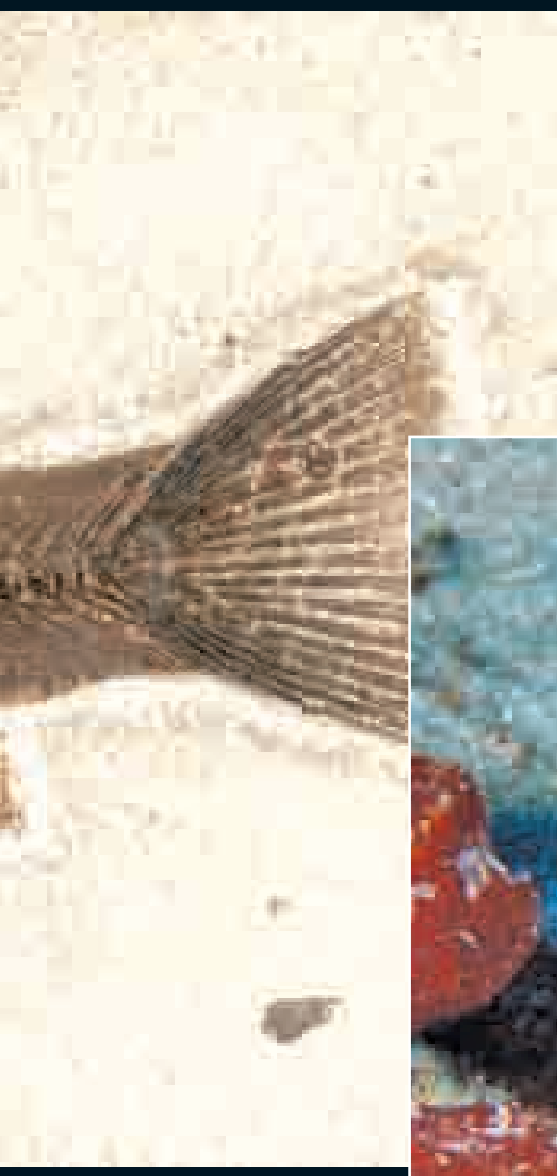
हेरिंग मछलियां

उम्र : 5.5 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 35 सेंटीमीटर (13.7 इंच) गुणा 23 सेंटीमीटर (9 इंच)

स्थान : व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

जीवित फॉसिल युगों पहले रहने वाले अपने जैसे जीवों से बिल्कुल अलग नहीं हैं, और इस बात का प्रमाण देती हैं कि करोड़ों वर्षों के दौरान प्रजातियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। तस्वीर में दिखाई 5.5 करोड़ साल पुरानी हेरिंग मछलियां इन्हीं जीवित फॉसिलों में से कुछ हैं।

जिंकगो की पत्ती

उम्र : 6.5 से 5.4 करोड़ वर्ष

आकार : 12 सेंटीमीटर (4.8 इंच)

स्थान : आल्मोंट, उत्तरी डकोटा

संरचना : सेंटीनेल बुटे संरचना

काल : पैलियोसीन

फॉसिलों के ब्यौरो में दर्ज पौधों की विशेषताएं आज जीवित पौधों जैसी ही हैं। यह इस बात को दर्शाता है कि अन्य जीवों की तरह उनकी रचना की गई थी।

तस्वीर में दिखाई गई जिंकगो की पत्ती 6.5 करोड़ वर्ष पुरानी है, जो यह साबित करती है कि जिंकगो के पेड़ों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। पत्ती की सामान्य रेखाएं और शिराओं जैसी उसकी बनावट फॉसिल बन चुकी हैं। 12 सेंटीमीटर (4.8 इंच) के आकार वाला यह फॉसिल दर्शाता है कि जिंकगो के पेड़ करोड़ों वर्षों से ऐसे ही हैं। आज जीवित जिंकगो और अतीत में उगने वाले जिंकगो में कोई अंतर नहीं है।
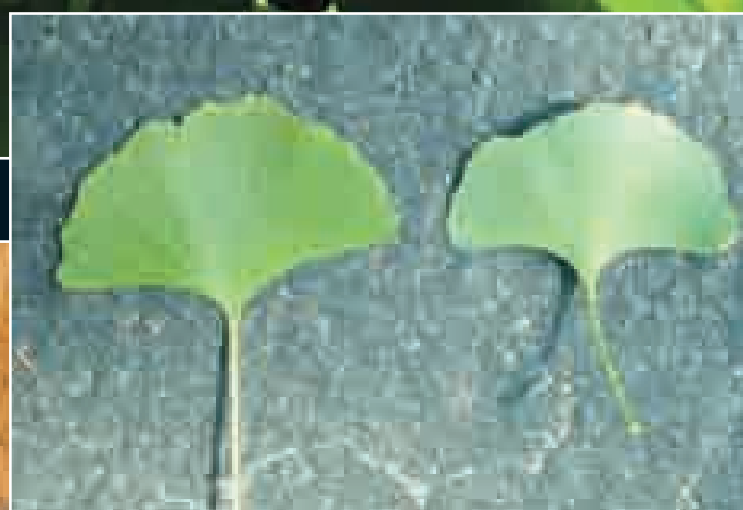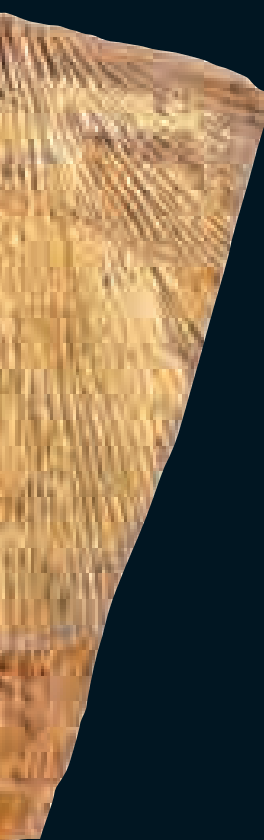
हेरिंग मछली

उम्र : 5.5 करोड़ वर्ष

आकार : 12 सेंटीमीटर (4.8 इंच)

स्थान : व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

हालांकि डारविनवादी इसे स्वीकार नहीं करते, लेकिन फॉसिल रिकॉर्ड द्वारा दर्शाई गई सच्चाइयां स्वयं प्रमाण हैं। दुनियाभर से इकट्ठा किए गए फॉसिल यह दिखाते हैं कि प्राणियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि उनकी रचना की गई। यहां दिखाई गई हेरिंग मछली इस सच्चाई का एक उदाहरण है जो करोड़ों साल से बिल्कुल नहीं बदली है। इससे एक बार फिर साबित होता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक धोखा है।

सनफिश

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 17.2 सेंटीमीटर (6.8 इंच)

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

आज के समुद्रों में सनफिश की बहुत सी प्रजातियां हैं। तस्वीर में दिख रहा फॉसिल बताता है कि सनफिश का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। करोड़ों वर्ष से उनकी शरीर रचना एक जैसी है। करीब 5.5 करोड़ वर्ष पहले रहने वाली सनफिश की शक्ल और ढांचा आज रहने वाली इन मछलियों जैसा ही है।
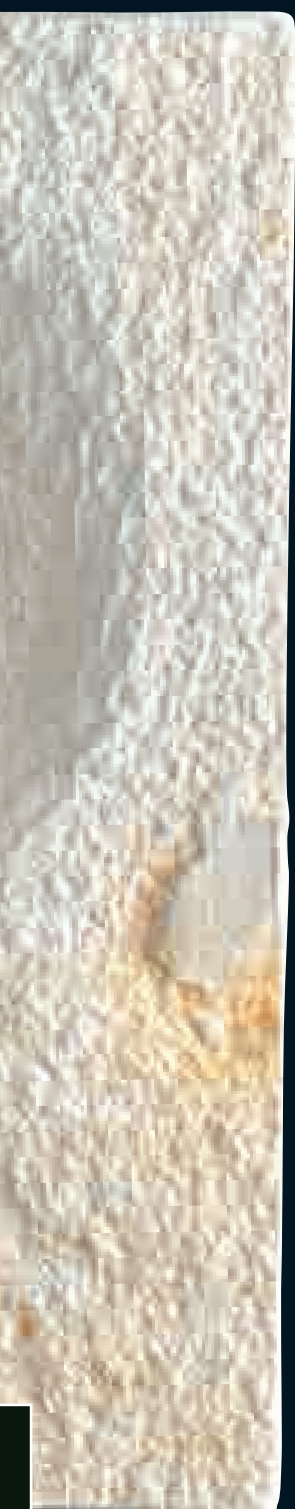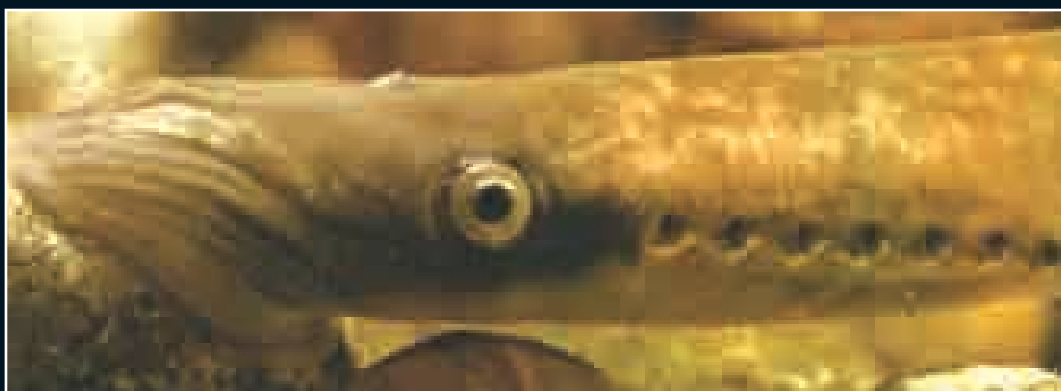
लैंप्रे

उम्र : 30 करोड़ वर्ष

आकार : 73 मिलीमीटर (2.8 इंच) गुणा 48 मिलीमीटर (1.8 इंच) के ग्रन्थिय जोड़े, 43 मिलीमीटर (1.6 इंच) चौड़ा

स्थान : पिट 11, फ्रांसिस क्रीक शेल, ब्रेडवुड, इलिनॉयस

काल : पेनसिल्वेनियन

ब्रेडवुड की कोयला खदानों में फॉसिलों की भरमार है। तस्वीर में दिखाई गई लैंप्रे मछली ऐसी प्रजाति है जिसके जबड़े की हड्डी नहीं होती है। हालांकि, आमतौर पर वे छिछले पानी में रहती हैं लेकिन कुछ प्रजातियां महासागरों में लंबी यात्राएं करती हैं।

यह फॉसिल एक सबूत है कि लगभग 30 करोड़ वर्ष तक लैंप्रे मछलियों में कोई बदलाव नहीं हुआ है। इतना समय बीतने के बावजूद, लैंप्रे हमेशा एक जैसी ही रही हैं। करोड़ों साल पहले रहने वाली और आज की लैंप्रे मछली में कोई अंतर नहीं है।

ट्राउट–पर्च

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : 9.4 सेंटीमीटर (3.7 इंच); मैट्रिक्स : 17.5 सेंटीमीटर (6.8 इंच) गुणा 12.3 सेंटीमीटर (4.8 इंच)

स्थान : फॉसिल लेक, केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

क्रमिक–विकासवादी दावा करते हैं कि मछलियों का विकास पिकाइया जैसे बिना रीढ़ के जीवों से हुआ और यह पानी और जमीन दोनों पर रहने वाले जीव और आज की मछलियां एक तथाकथित पूर्वज मछली से विकसित हुईं। रेंगने वाले जीवों का विकास जल–थल दोनों पर रहने वाले जीवों से हुआ, चिड़ियां और स्तनपायी जीव रेंगने वाले जीवों से विकसित हुए और आखिरकार, मनुष्य और आज के वानर एक ही साझा पूर्वज से विकसित हुए। लेकिन इस दावे को साबित करने के लिए उन्हें उन बीच की "गायब कड़ियों" के फॉसिलों को दिखाना चाहिए। लेकिन जैसा पहले कहा जा चुका है कि इन काल्पनिक जीवों की कोई निशानी नहीं है।

दूसरी ओर, दसियों करोड़ फॉसिल यह दिखाते हैं कि तथाकथित क्रमिक–विकास की प्रक्रिया कभी हुई ही नहीं। ये फॉसिल यह साबित करते हैं कि मछलियां हमेशा मछलियां रही हैं, चिड़ियां हमेशा चिड़ियां रही हैं, रेंगने वाले जीव हमेशा रेंगने वाले जीव रहे हैं, स्तनपायी हमेशा स्तनपायी रहे हैं और मनुष्य हमेशा मनुष्य रहे हैं। तस्वीर में दिखायागया 5 करोड़ साल पुराना ट्राउट–पर्च का फॉसिल भी यह दिखाता है कि प्राणियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है, बल्कि उनकी रचना की गई।
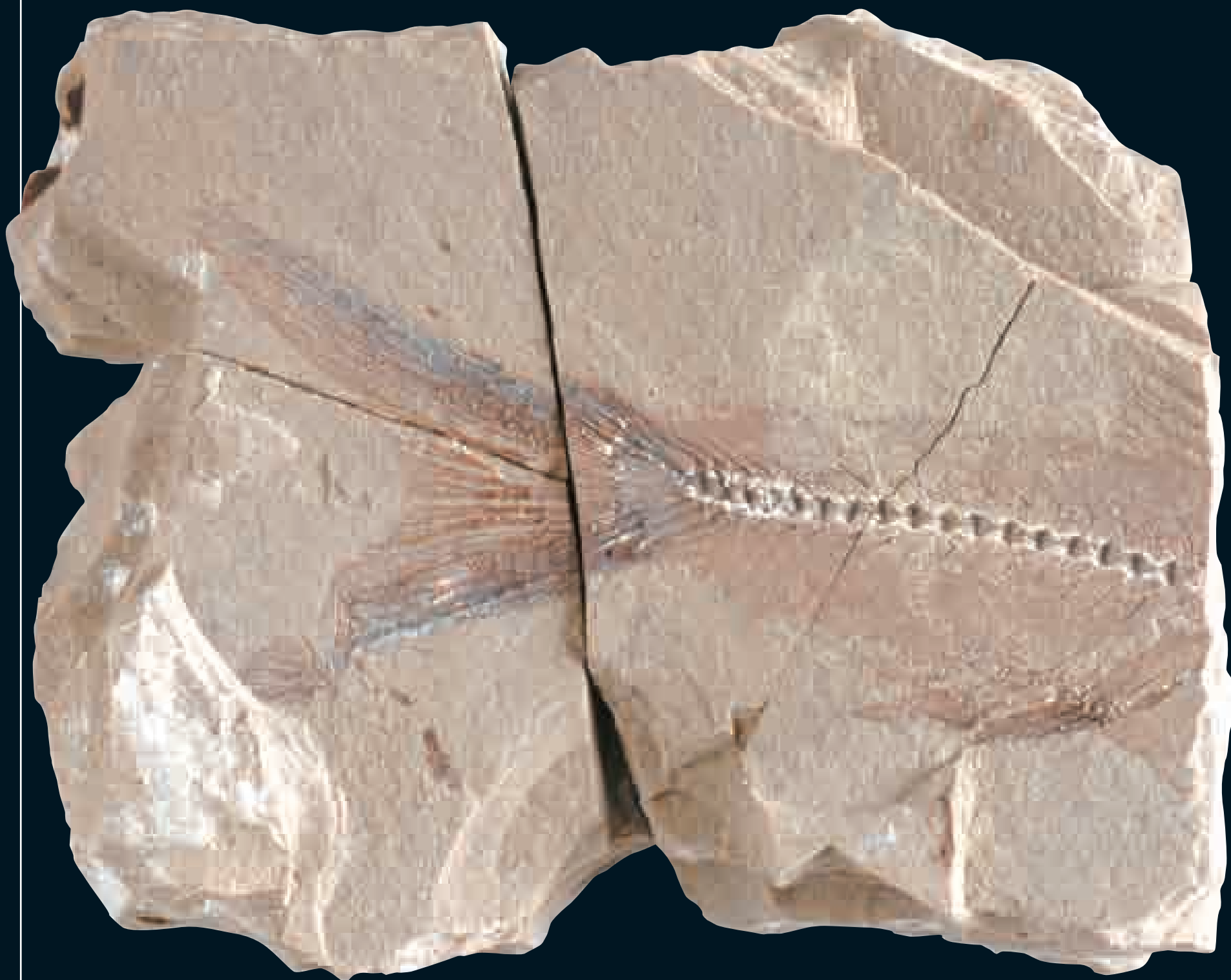
ट्राउट मछली की पूंछ

उम्र : 1.5 करोड़ वर्ष

स्थान : स्टीवर्ट स्प्रिंग फ्लोरा, स्टीवर्ट वैली, निवेडा

काल : मियोसीन

कुछ फॉसिलों में किसी प्राणी के शरीर के महज कुछ हिस्से ही सुरक्षित हैं। तस्वीर में 1.5 करोड़ पुरानी ट्राउट मछली की पूंछ देखी जा सकती है। जैसा कि साफ दिख रहा है, 5 करोड़ साल पुरानी, 1.5 करोड़ साल पुरानी और आज जीवित ट्राउट मछली की पूंछ में कोई फर्क नहीं है।

पॉपलर

उम्र : 1.5 करोड़ वर्ष

स्थान : स्टीवर्ट स्प्रिंग फ्लोरा, स्टीवर्ट वैली, निवेडा

काल : मियोसीन

सेलीकेसिया परिवार के पॉपलर के पेड़ करोड़ों वर्षों से ज्यों के त्यों हैं। उनकी जैविक और ढांचागत विशेषताओं तथा आज की विशेषताओं में कोई अंतर नहीं है। करीब 1.5 करोड़ वर्ष पुरानी पॉपलर की पत्ती का यह फॉसिल इसे साबित करता है।

क्रेन मक्खी

काल : सेनोज़ोइक युग, इयोसीन काल

उम्र : 4.8 से 3.7 करोड़

स्थान : यूएसए
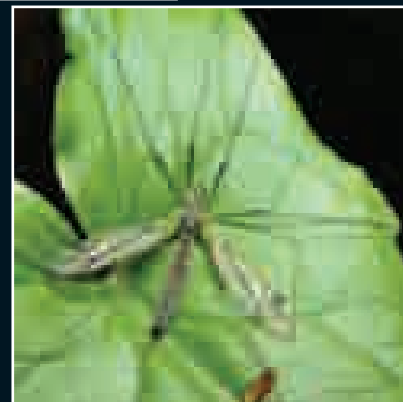
सभी अन्य प्रजातियों की ही तरह क्रेनफ्लाई के पूरे अस्तित्व के दौरान देखी गई गतिहीनता इस बात का सबूत है कि क्रमिक–विकासवादी दावे झूठे हैं। क्रमिक–विकास का सिद्धांत 19वीं सदी की वैज्ञानिक रूप से आदिम स्थितियों में पेश किया गया था जिसे महज अज्ञानता के कारण इसे स्वीकार किया गया, पर यह 20वीं और 21वीं सदी के विज्ञान की रोशनी में ढह गया।

स्प्रूस

उम्र : 1.5 करोड़ वर्ष

स्थान : स्टीवर्ट स्प्रिंग फ्लोरा, स्टीवर्ट वैली, निवेडा

काल : मियोसीन

"स्प्रूस" पेड़ों की उन 35 अलग–अलग प्रजातियों को दिया गया सामान्य नाम है जो साल भर हरे रहते हैं। फॉसिल रिकॉर्ड दर्शाते हैं कि वे करोड़ों साल से ऐसे ही हैं और उनमें कोई क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। तस्वीर में दिख रहा स्प्रूस के बीज का फॉसिल 1.5 करोड़ वर्ष पुराना है। इससे भी यह साबित होता है कि करोड़ों साल बीत जाने पर भी स्प्रूस वैसे ही बने हुए हैं। आज के स्प्रूस वृक्षों और 1.5 करोड़ वर्ष पहले के स्प्रूस में कोई अंतर नहीं है।
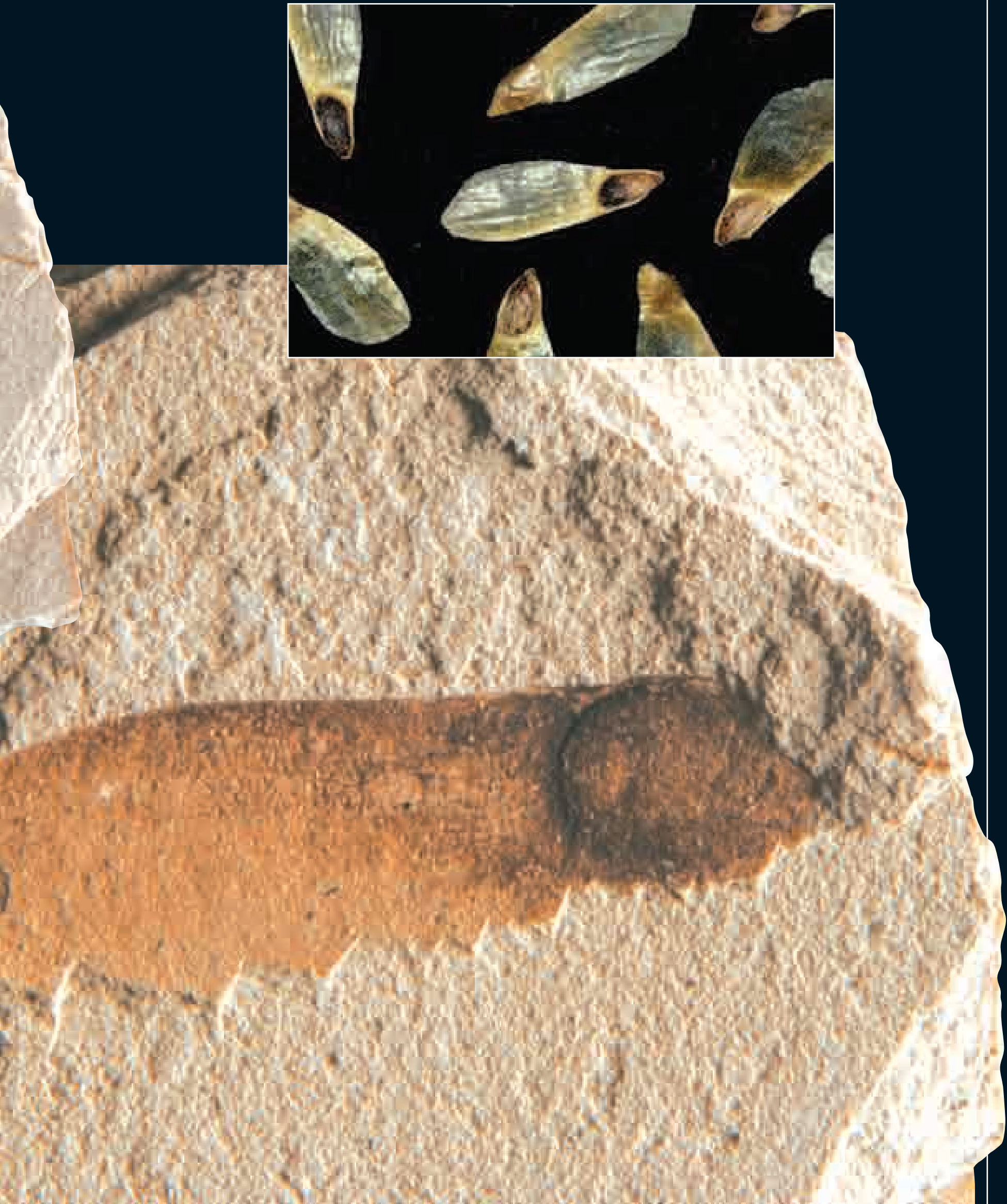
लालटेन मछली

उम्र : 2.3 से 0.5 करोड़ वर्ष

आकार : 3.8 सेंटीमीटर (1.5 इंच)

स्थान : कैलीफोर्निया, यूएसए

संरचना : पुएंटे संरचना

काल : मियोसीन

लालटेन मछलियां महासागरों की गहराई में रहने वाली छोटी–छोटी मछलियां होती हैं जो अपने शरीर के भीतर, आमतौर पर अपने पेट में, रोशनी पैदा करती हैं। चूंकि वे गहरे और अंधेरे पानी में रहती हैं, इसलिए वे अपनी रोशनी का इस्तेमाल अपने आसपास की जगह को रोशन करने और अपने दुश्मनों को डराने के लिए करती हैं। इन मछलियों के शरीर में करोड़ों वर्षों पहले भी बेहद विकसित और जटिल संरचनाएं मौजूद थीं जो उनके शरीर में रोशनी पैदा कर सकती थीं, यह कैसे संभव हुआ इसे क्रमिक–विकासवादी नहीं समझा पाते।

पोंडरोसा चीड़

उम्र : 1.5 करोड़ वर्ष

स्थान : स्टीवर्ट स्प्रिंग फ्लोरा, स्टीवर्ट वैली, निवेडा

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : मियोसीन

तस्वीर में दिखाई गई चीड़ की पत्ती 1.5 करोड़ वर्ष पुरानी है। 1.5 करोड़ वर्ष पहले और आज की चीड़ की पत्तियां बिल्कुल एक जैसी होती हैं। यह तथ्य की यह पत्रियां करोड़ों वर्ष बीत जाने के बाद भी वे ज्यों की त्यों हैं एक बार फिर साबित करती हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

पर्च मछलीपर्च मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : फॉसिल लेक, केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

क्रमिक–विकासवादियों के दावों के मुताबिक, मछलियों के पूर्वज बिना रीढ़ वाले जीव थे। लेकिन क्रमिक–विकासवादी इस सवाल का जवाब नहीं दे पाते कि इन पूर्वजों में जिनमें मेरुरज्जा तो थी मगर हड्डियां नहीं थीं, रीढ़ की हड्डी कैसे विकसित हुई। ऐसा इसलिए है क्योंकि इन प्राणियों में ऐसे भारी बदलाव आने चाहिए थे कि जिससे उनके शरीर के चारों ओर का कड़ा खोल गायब हो जाए, जबकि भीतर एक कंकाल विकसित हो जाए। ऐसी परिवर्तन के लिए जरूरी था कि दो जीवों के बीच की कई कड़ियां मौजूद हों। लेकिन क्रमिक–विकासवादी ऐसा एक भी फॉसिल नहीं दिखा पाते जो रीढ़ वाले और बिना रीढ़ वाले जीवों के बीच की कड़ी हो।

दूसरी ओर, लाखों फॉसिल यह दिखाते हैं कि मछलियां हमेशा मछलियां ही रही हैं

5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुरानी पर्च मछली का यह फॉसिल उन्हीं में से एक है।
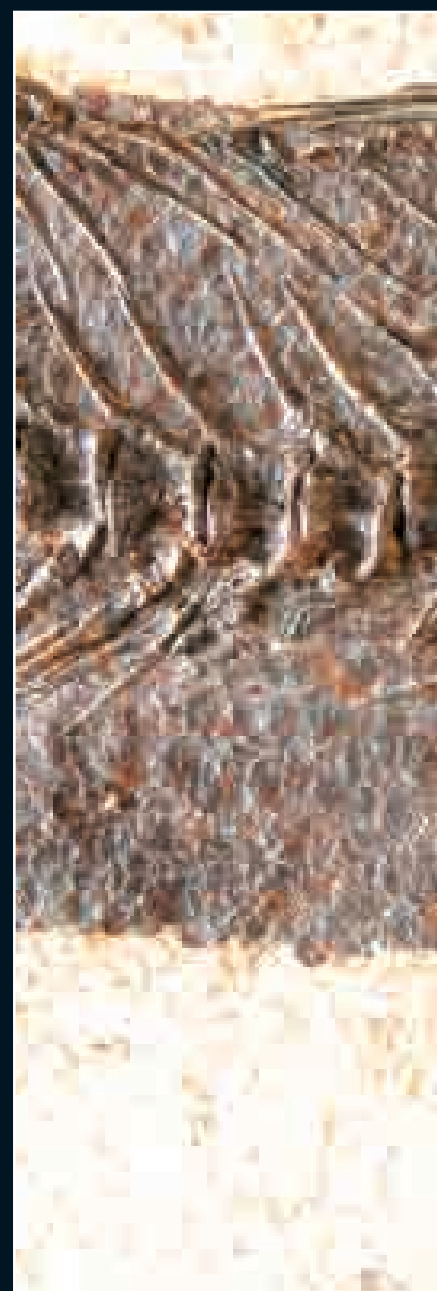
हेरिंग मछली

उम्र : 5.5 करोड़ वर्ष

आकार : 21 सेंटीमीटर (8.25 इंच)

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : पैलियोसीन

हेरिंग मछलियां मुख्यतः उत्तरी अटलांटिक और बाल्टिक सागर में हल्के तापमान वाले और छिछले पानी में रहती हैं। हेरिंग मछलियों की लगभग 200 प्रजातियां हैं जो लगभग एक जैसी हैं। लगभग सभी का रंग चांदी जैसा होता है और उनकी पीठ पर एक पंख होता है।

तस्वीर में हेरिंग मछली का फॉसिल 21 सेंटीमीटर (8.2 इंच) का है। यह ग्रीन नदी से करीब 2200 मीटर (7217 फीट) की गहराई से निकाला गया है। फॉसिल के सभी ब्यौरों के समान हेरिंग मछली का यह फॉसिल भी बताता है कि प्राणियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। क्रमिक–विकासवादी फॉसिल रिकॉर्ड सामने आने पर बदहवास हो उठते हैं, और हर नई खोज उनकी बदहवासी को बढ़ा देती है।
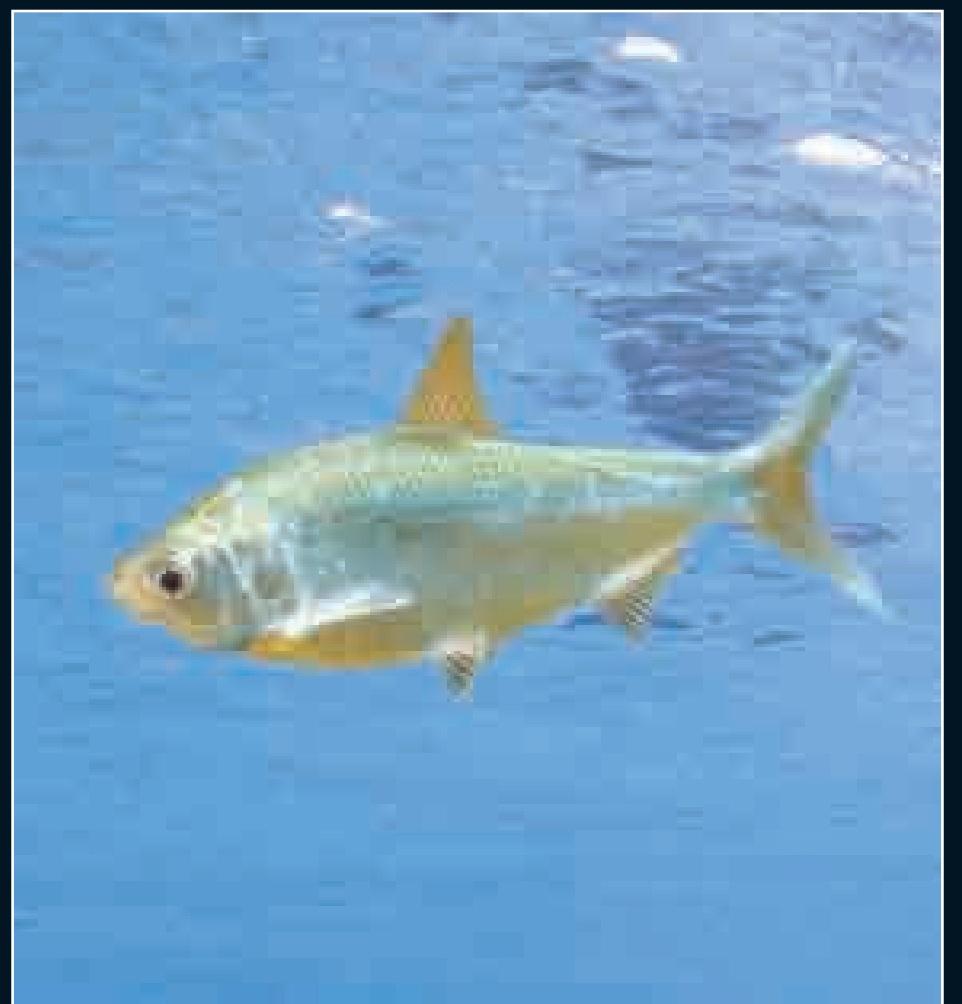
विलो (बेदमजनूं या सरपत)

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : यूइंटा काउंटी, यूटा

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

फॉसिल रिकॉर्ड बताते हैं कि सभी प्राणियों की ही तरह पेड़–पौधों में भी करोड़ों वर्षों के दौरान कोई बदलाव नहीं आया है। आज के पेड़–पौधों में वही प्रणालियां और तंत्र हैं जो करोड़ों साल पहले थे। सरपत के पत्ते का यह फॉसिल इस बात का सबूत है कि विलो के पेड़ 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष से ज्यों के त्यों हैं।

दुनियाभर से निकाले गए लाखों फॉसिल क्रमिक–विकास के सिद्धांत को झुठलाते हैं और यह दर्शाते हैं कि पेड़–पौधों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ बल्कि उनकी रचना की गई।
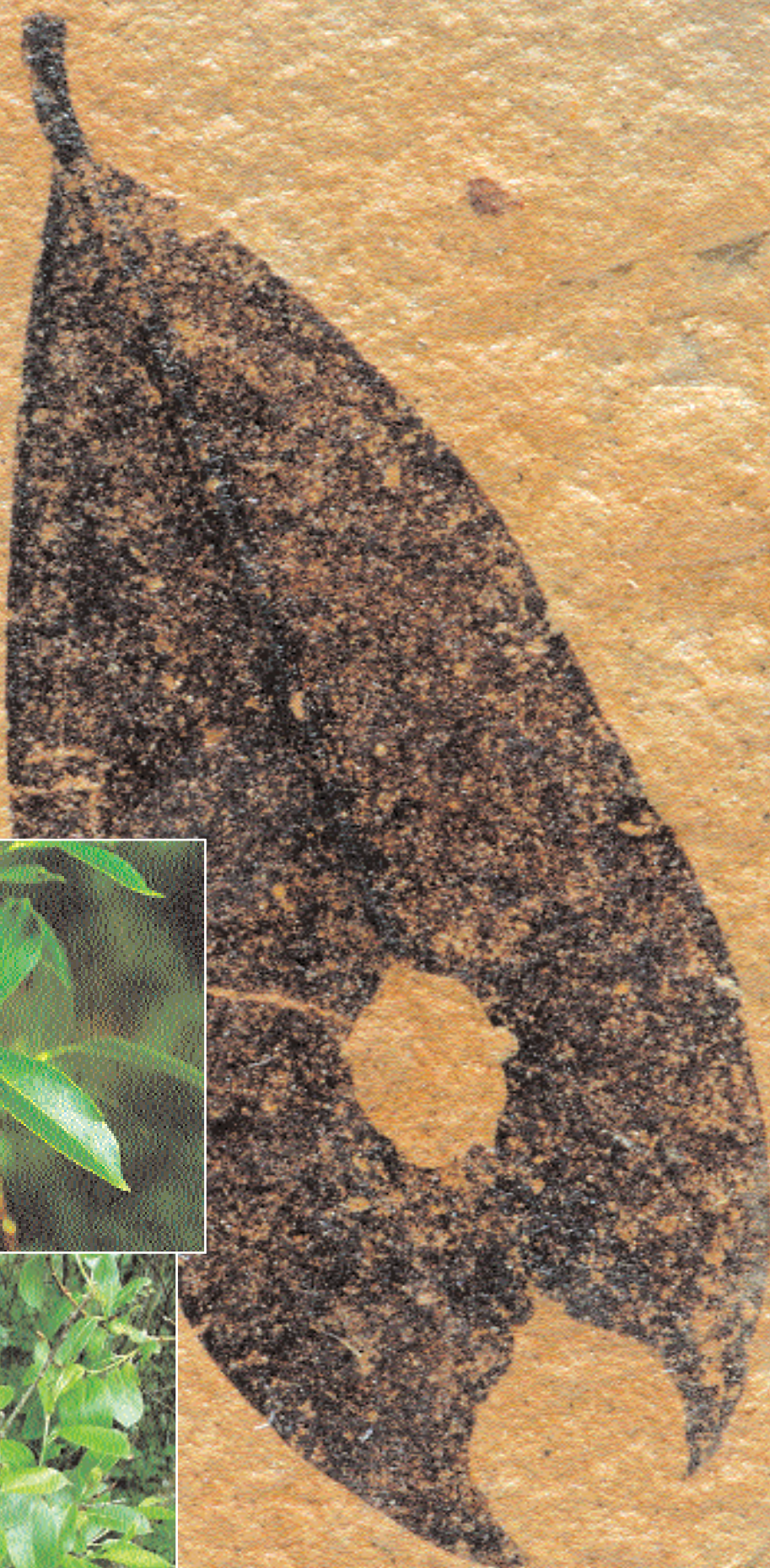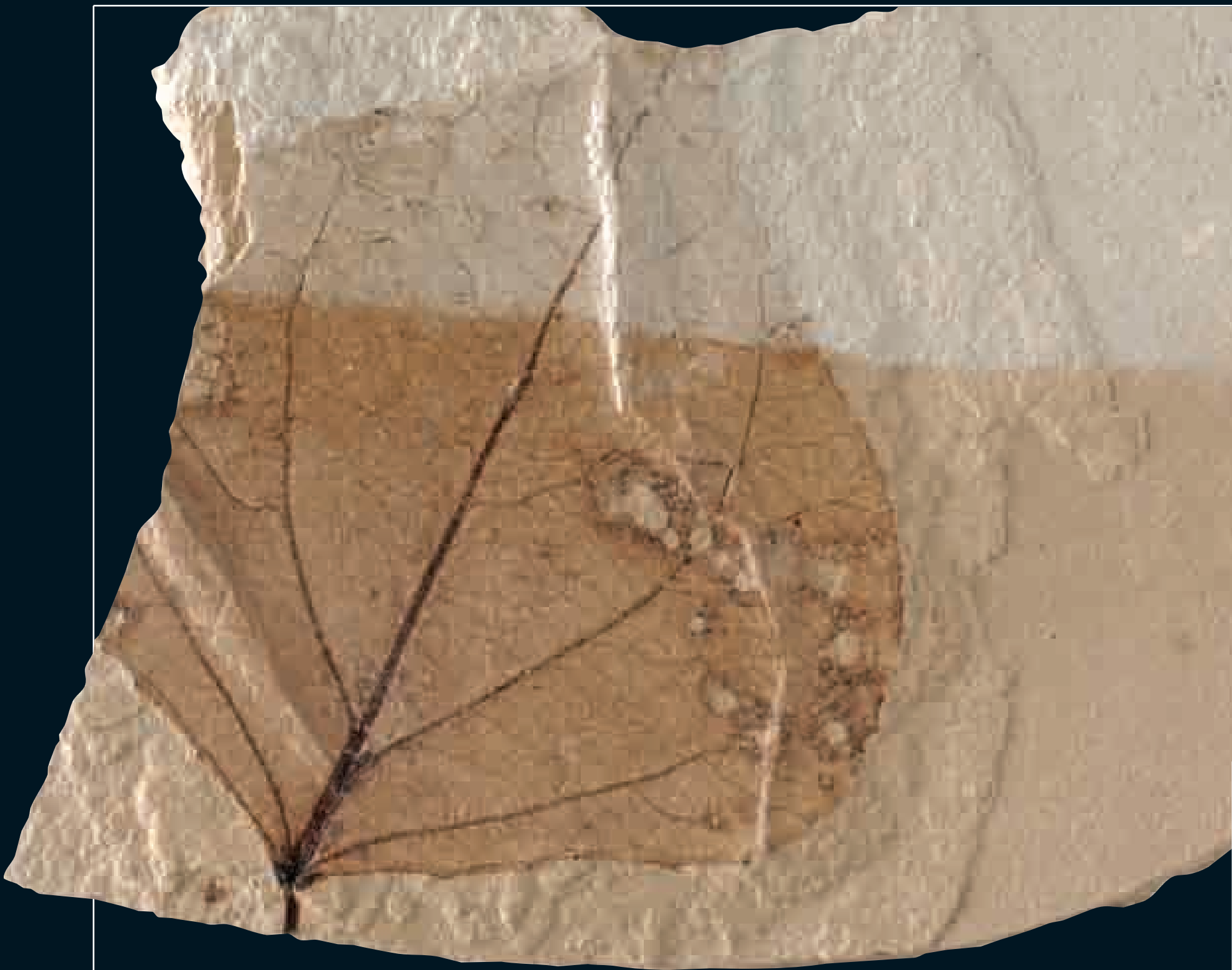
पॉपलर की पत्ती

काल : सेनेज़ोइक युग, इयोसीन इपोच

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : यूएसए
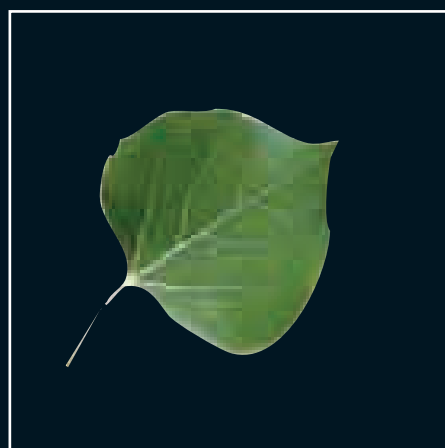
फॉसिल का यह नमूना, जो इस बात का सबूत है कि पॉपलर हमेशा से पॉपलर ही रहे हैं, करीब 5 करोड़ वर्ष पुराना है। पूरे 5 करोड़ वर्ष तक बिना किसी परिवर्तन के जीवित पॉपलर के पेड़ यह दिखाते हैं कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत केवल एक धोखा है और क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं। अपने समस्त जीव–जंतुओं के साथ यह कायनात सर्वशक्तिमान खुदा की बनाई हुई है।

बलूत (ओक) का पत्ता

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

स्थान : ग्रीन नदी संरचना, व्योमिंग

आकार : 30 मिलीमीटर (1.18 इंच) ऊंचाई : मैट्रिक्स : 60 मिलीमीटर (2.3 इंच) गुणा 60 मिलीमीटर (2.3 इंच), 1. 5 मिलीमीटर (0.59 इंच) मोटाई

काल : इयोसीन

फॉसिल रिकॉर्ड से पता चलता है कि पेड़–पौधे कभी किसी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से नहीं गुजरे और उनके कोई काल्पनिक पूर्वज नहीं हैं। मछलियां हमेशा मछलियां रही हैं, चिड़ियां हमेशा चिड़ियां रही हैं, मकड़ियां हमेशा मकड़ियां रही हैं, चीड़ और स्प्रूस हमेशा चीड़ और स्प्रूस रहे हैं और गुलाब हमेशा गुलाब रहे हैं। और इन सभी जीवों की ही तरह बलूत भी हमेशा बलूत ही रहे हैं, जैसा कि बलूत के पत्ते के फॉसिल की इस तस्वीर से यह पूर्ण रूप से स्थापित है।

ततैया

काल : सेनेज़ोइक युग, इयोसीन काल

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : यूएसए

करीब 5 करोड़ वर्ष पहले रहने वाले ततैया और आज जीवित ततैया में कोई फर्क नहीं है। अगर करोड़ों वर्ष बीत जाने पर भी किसी जानवर के शरीर में कोई फर्क नहीं आता तो क्रमिक–विकास की बात करना व्यर्थ है। फॉसिल रिकॉर्ड साफ बताते हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।
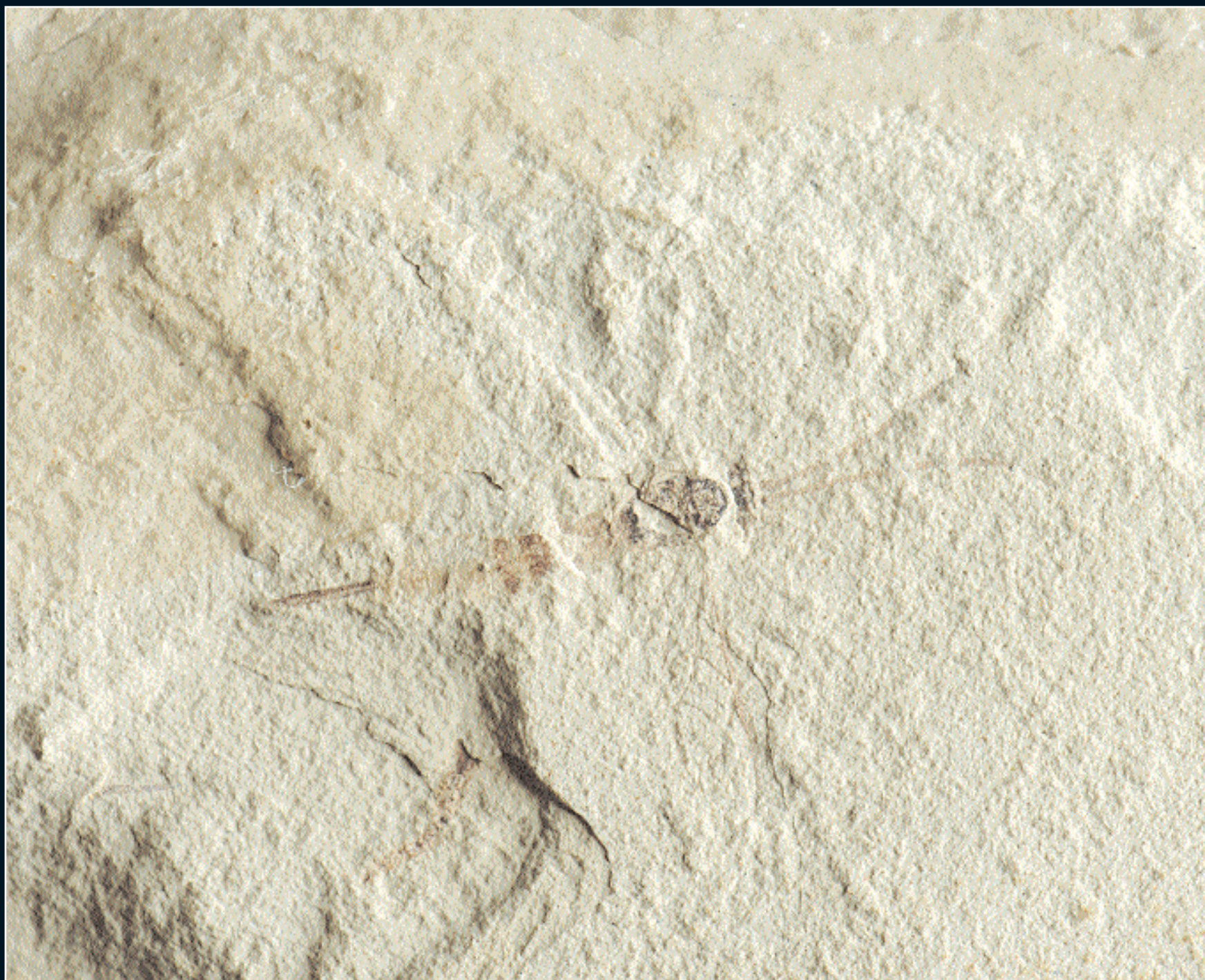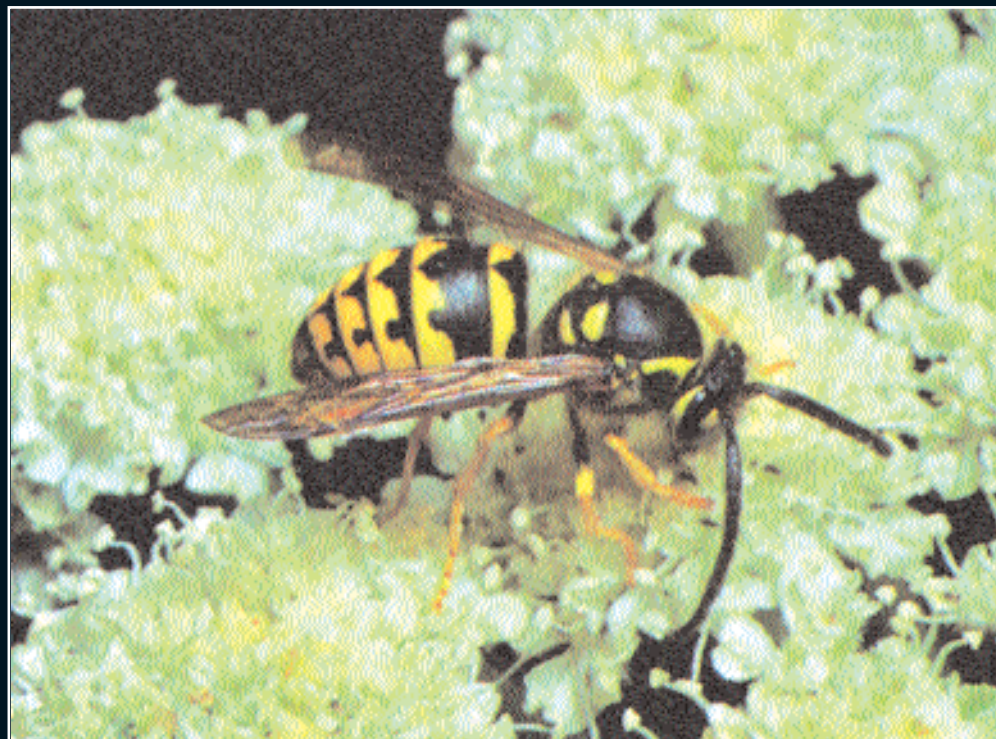
अंगूर का पत्ता

उम्र : 3.8 से 2.3 करोड़ वर्ष

आकार : 6.6 सेंटीमीटर (2.6 इंच), डंठल सहित

स्थान : बीवरहेड काउंटी, मोंटाना

संरचना : मडी क्रीक संरचना

काल : ओलिगोसीन

3.8 से 2.3 करोड़ वर्ष पुराने अंगूर के पत्ते का फॉसिल भी यही साबित करता है कि पेड़–पौधों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि उनकी रचना की गई। करोड़ों साल पहले के वाइटिस अंगूर के पत्तों और आज के अंगूर के पत्तों में कोई भी फर्क नहीं है।
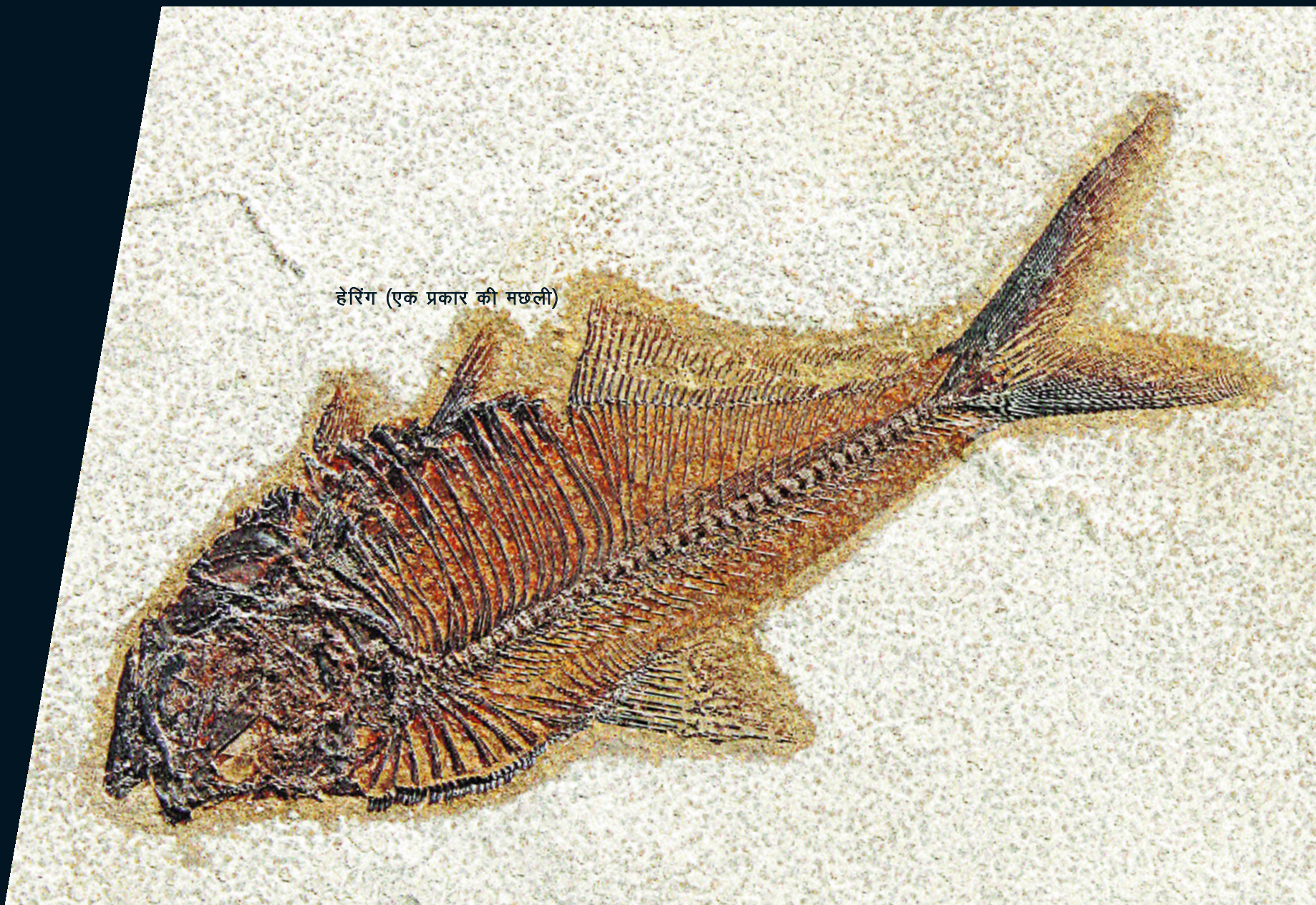
हेरिंग (एक प्रकार की मछली)

सनफिश

हेरिंग (एक प्रकार की मछली)

हेरिंग और सनफिश मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : फॉसिल लेक, केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

हेरिंग और सनफिश मछलियों के नमूने भी यही दिखाते हैं कि प्राणियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। एक ही प्लेट पर मिले करीब 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराने ये फॉसिल बताते हैं कि आज जीवित हेरिंग और सनफिश मछलियां गुज़रे जमाने की इन मछलियों से कतई अलग नहीं हैं।

सनफिश
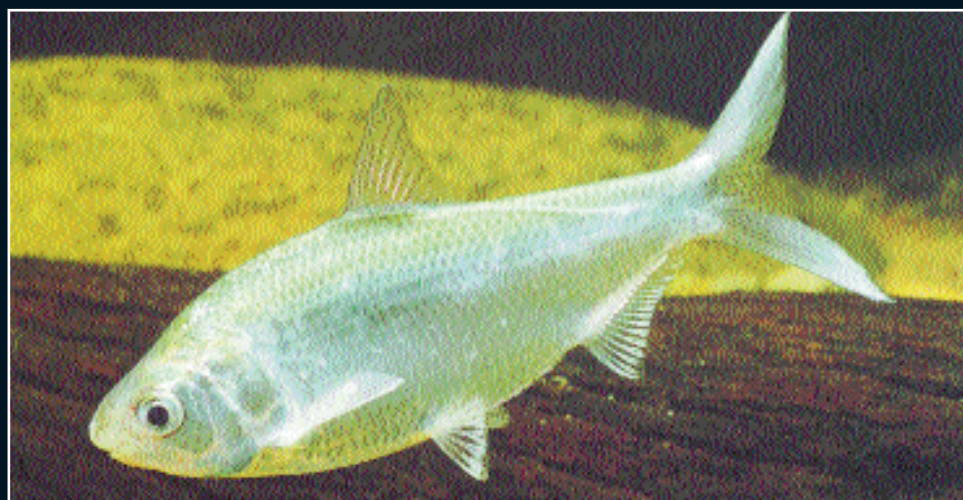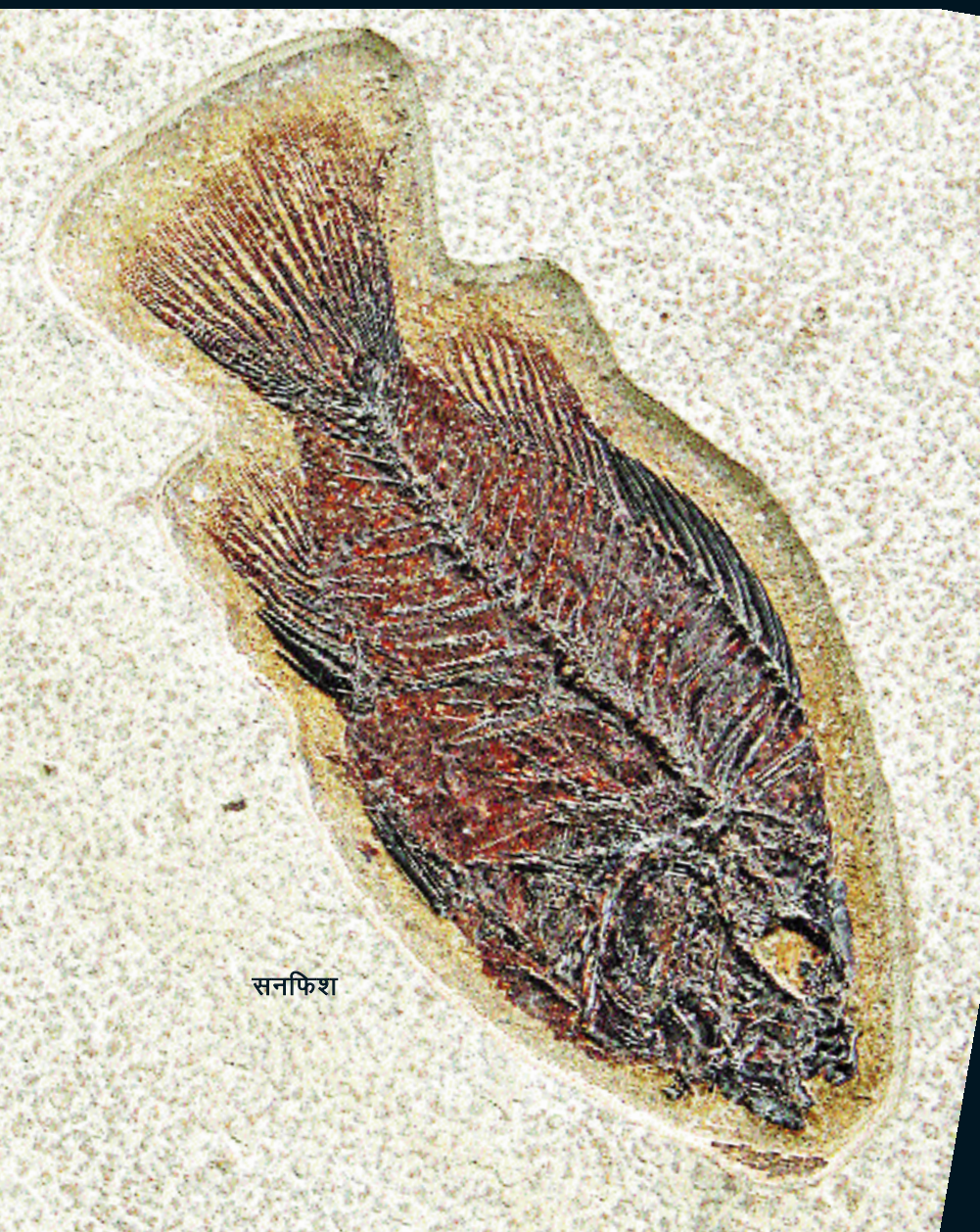
सुमैक का पत्ता

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : पत्ता : 7 सेंटीमीटर (2.8 इंच) गुणा 1.2 सेंटीमीटर (0.5 इंच); मैट्रिक्स : 24.2 सेंटीमीटर (9.5 इंच) गुणा 14 सेंटीमीटर (5.5 इंच)

स्थान : डगलस पास, कोलोरैडो

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराना सुमैक के इस पत्ते की संरचना आज के सुमैक पत्तों से अलग नहीं है। करोड़ों वर्ष में सुमैक में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

उत्तरी अमेरिकी भालू की खोपड़ी

उम्र : 50,000 वर्ष

आकार : 26.6 सेंटीमीटर (10.5 इंच)

स्थान : मिशिगन

काल : प्लीस्टोसीन

भालू और कुत्ते के शरीर की चंद एक समानताओं की ओर इशारा करते हुए क्रमिक–विकासवादी दावा करते हैं कि दोनों का विकास एक ही पूर्वज से हुआ। दूसरी ओर, फॉसिल रिकॉर्ड इस बात की गवाही देते हैं कि ऐसा नहीं है। आधा भालू/आधा कुत्ता जैसा कोई भी फॉसिल अब तक नहीं मिला है, हालांकि हजारों फॉसिल यह दिखाते हैं कि भालू हमेशा भालू थे और कुत्ते हमेशा कुत्ते थे। तस्वीर में दिख रहा भालू की खोपड़ी का फॉसिल इस बात का प्रमाण हैं कि भालू किसी क्रमिक–विकास से परिवर्तित नहीं हुए।

पर्च मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

यह 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुरानी पर्च मछली आज की मछलियों से कतई अलग नहीं है। इससे यह साफ तौर पर उजागर होता है कि पर्च मछलियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है, जैसा कि क्रमिक–विकासवादी दावा करते हैं, बल्कि उनकी रचना की गई।

सनफिश और हेरिंग मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

पिछले 150 वर्षों से डारविनवादी दुनिया के कोने–कोने में ऐसे फॉसिलों की तलाश कर रहे हैं, जो मछली के तथाकथित क्रमिक–विकास का प्रमाण दे सकें। लेकिन अब तक इन्हें मिला हर फॉसिल यही बताता है कि मछलियों का कोई क्रमिक–विकास नहीं हुआ है बल्कि उनकी रचना गई है। आज तक क्रमिक–विकासवादियों को न तो ऐसा कोई जीवित प्राणी मिला है जिसे मछली का तथाकथित पूर्वज बताया जा सके, न ही बीच की उन अवस्थाओं का कोई फॉसिल उनके हाथ लगा है जिनसे होकर मछलियां गुजरी हैं, जैसा कि वे बताते हैं। दूसरी ओर, लाखों फॉसिल दिखाते हैं कि अति प्राचीन काल से ही मछलियां हमेशा मछलियां रही हैं। इनमें से एक 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराना सनफिश का फॉसिल है, जिसे यहां दिखाया गया है। सृष्टि की रचना साबित करने वाले इन फॉसिलों के सामने आने पर क्रमिक–विकासवादी आशाहीन हो जाते हैं।

हिकरी का पत्ता

उम्र : 6.5 से 5.4 करोड़ वर्ष

आकार : 7.6 सेंटीमीटर (3 इंच)

स्थान : उत्तरी डकोटा, यूएसए

काल : पैलियोसीन

करीब 6.5 से 5.4 करोड़ वर्ष पुराना उत्तरी अमेरिका के हिकरी का यह पत्ता इस बात का सबूत है कि ये पेड़ किसी अन्य पौधे से विकसित नहीं हुए। करोड़ों साल पहले जीवित हिकोरी और आज पाए जाने वाले हिकोरी के पेड़ बिल्कुल एक समान हैं।

हेरिंग मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

करीब 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले की हेरिंग मछलियां आज जीवित हेरिंग मछलियों से बिल्कुल अलग नहीं हैं। यह तथ्य क्रमिक–विकासवादियों के दावे को झुठलाता है और एक बार फिर इस सच्चाई को साबित करता है कि जीव–जंतुओं की रचना अल्लाह ने की है।
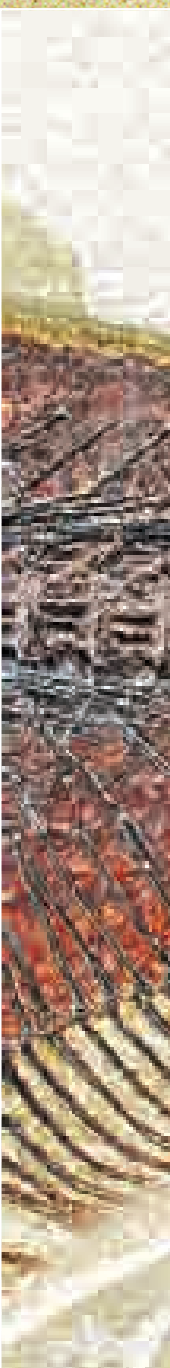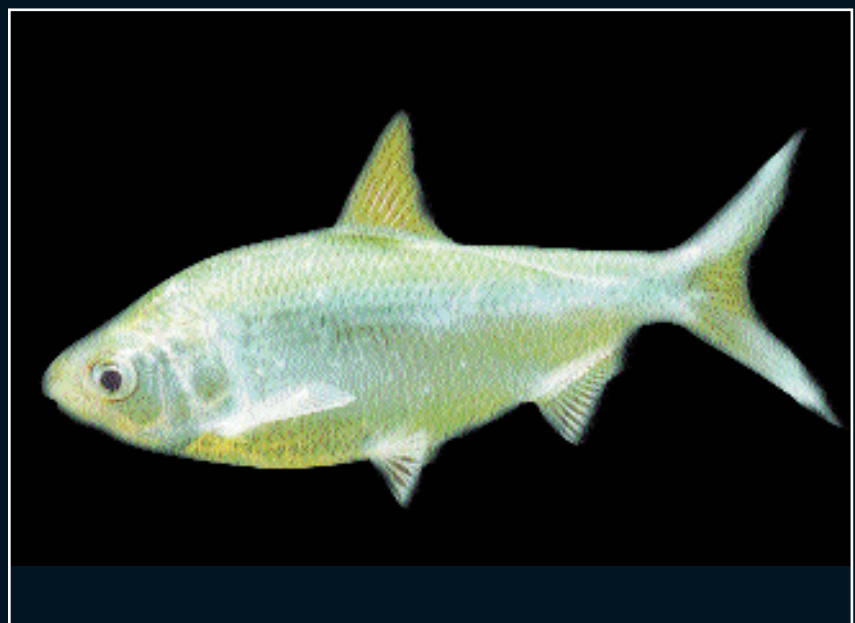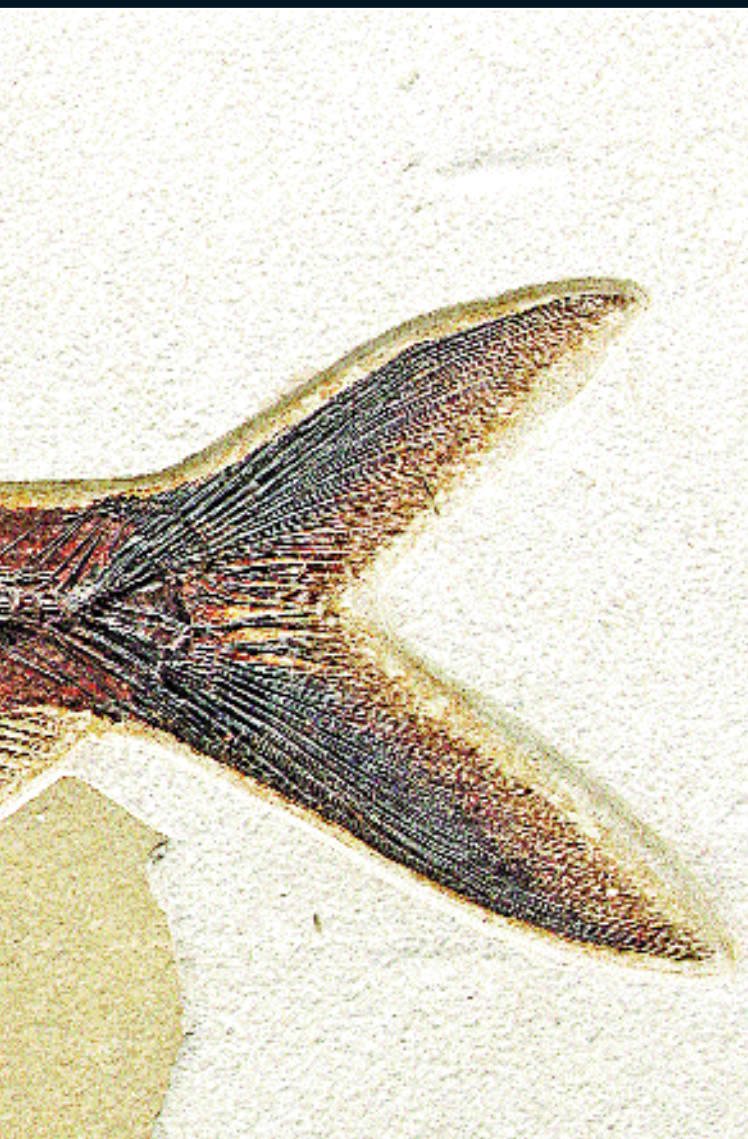
अंजीर का पत्ता

उम्र : 6.5 से 5.4 करोड़ वर्ष

आकार : 5.7 सेंटीमीटर (2.3 इंच)

स्थान : उत्तरी डकोटा

काल : पैलियोसीन

अंजीर का पौधा, जिसकी 800 से अधिक प्रजातियां हैं, निर्धारित वर्ग में आता है। करोड़ों वर्षों से अंजीर के पत्तों या उनके फलों में कोई बदलाव नहीं आया है। यह इस बात का महत्त्वपूर्ण प्रमाण है कि अंजीर का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है, जैसा कि 6.5 से 5.4 करोड़ वर्ष पुराने अंजीर के पत्ते के इस फॉसिल से पता चलता है।

हेरिंग मछलियां

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

क्रमिक–विकास का सिद्धांत प्रजातियों के प्राकृतिक इतिहास के बारे में लिखी गई एक काल्पनिक कहानी है जिसे वैज्ञानिक खोजों ने पूरी तरह से गलत साबित कर दिया है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत को ध्वस्त करने वाली एक बेहद महत्त्वपूर्ण खोज फॉसिल हैं। करोड़ों वर्षों से ज्यों की त्यों चली आ रही हेरिंग मछलियां बताती हैं कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत धोखा है।

वाटर बीटल (पानी में रहने वाला भृंग या भंवरा जैसा कीड़ा)

उम्र : 18 लाख से 11,000 वर्ष

स्थान : एल.ए. ब्रिआ कोलतार पिट्स, लॉस एंजेल्स, कैलीफोर्निया

काल : प्लीस्टोसीन

यह कीड़ा जो आज के ऐसे कीड़ों से अलग नहीं है, इस बात का सबूत है कि सभी जीव–जंतुओं की रचना की गई है।
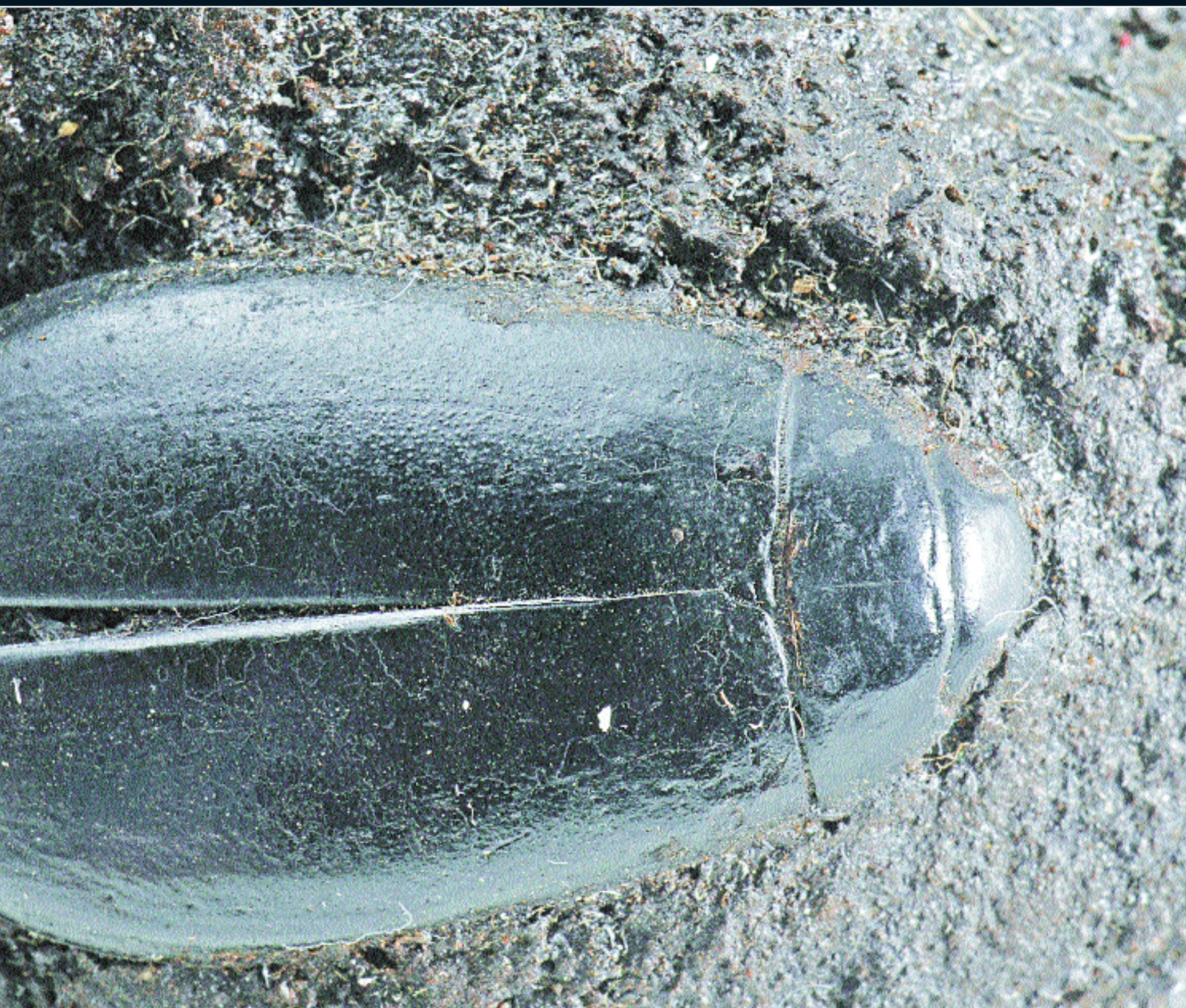
हॉर्स चेस्टनट का पत्ता

उम्र : 6.5 से 5.4 करोड़ वर्ष

आकार : 12.7 सेंटीमीटर (5 इंच)

स्थान : उत्तरी डकोटा

काल : पैलियोसीन

करीब 6.5 से 5.4 करोड़ वर्ष पहले जीवित हॉर्स चेस्टनट का पत्ता आज के हॉर्स चेस्टनट के पत्तों से बिल्कुल अलग नहीं है। यह उन सभी प्रमाणों में से एक है जो बताते हैं कि पेड़–पौधों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है।

फर्न

उम्र : 36 से 28.6 करोड़ वर्ष

आकार : सबसे बड़ा : 10.2 सेंटीमीटर (4 इंच); मैट्रिक्स : 33 सेंटीमीटर (13 इंच) गुणा 15.2 सेंटीमीटर (6 इंच)

स्थान : सेंट क्लेर, पेनिसिल्वेनिया

काल : कार्बोनिफेरस

आज के फर्न की सभी विशेषताएं लाखों वर्ष पहले के फर्न में भी थीं। फॉसिल संबंधी ब्यौरे इस तथ्य को उजागर करते हैं। तस्वीर में दिखाया गया 36 करोड़ से लेकर 28.6 करोड़ पुराना फर्न आज के फर्न के समान है।
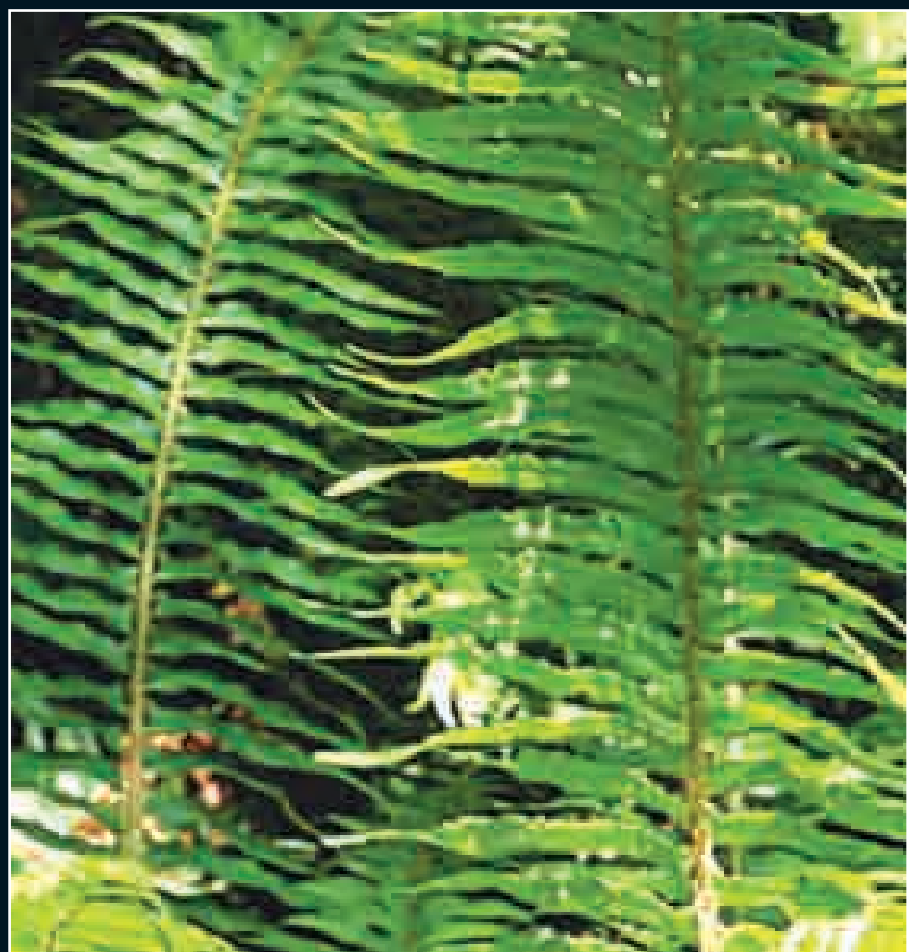
हेरिंग मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

अब तक मिले लाखों फॉसिलों में, आधी हेरिंग/आधी स्वोर्डफिश, आधी शार्क/आधी सैमन जैसा एक भी "बीच का रूप" नहीं मिला है। फॉसिल बताते हैं कि हेरिंग हमेशा हेरिंग रही हैं, सैमन हमेशा सैमन रही हैं और शार्क हमेशा शार्क रही हैं। पिछले 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष के दौरान बिल्कुल न बदलने वाली हेरिंग मछलियां भी इसे सही ठहराती हैं।
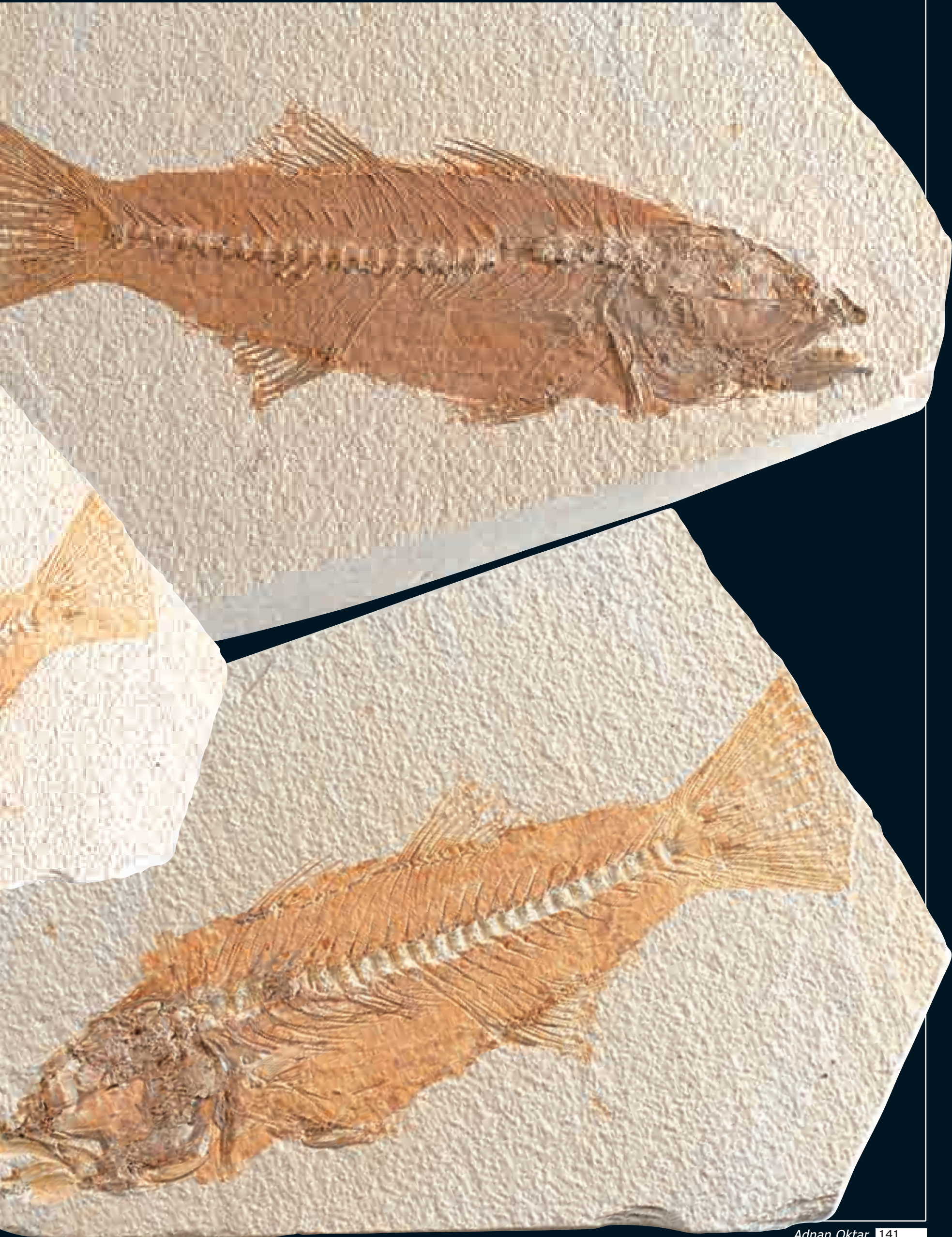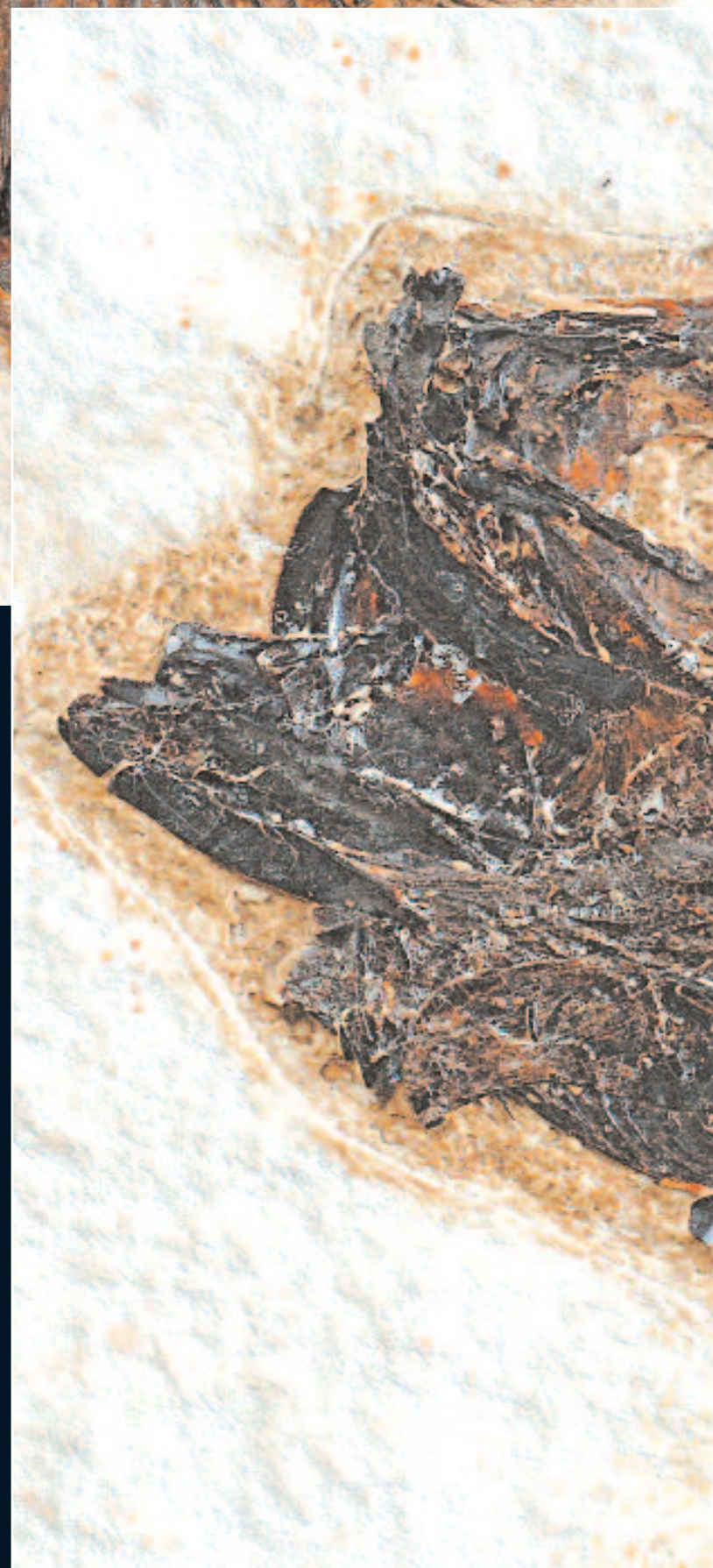
हेरिंग मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 23 सेंटीमीटर (9 इंच)

स्थान : व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

वर्तमान भू–वैज्ञानिक आंकड़े बताते हैं कि फॉसिल रिकॉर्ड की मात्रा आज असाधारण रूप से समृद्ध हैं। लेकिन प्रचुर मात्रा में मौजूद ये फॉसिल क्रमिक–विकासवादियों को उनके दावे सही ठहराने में कोई मदद नहीं करते। फॉसिलों का समूचा ब्यौरा सृष्टि की रचना की सच्चाई को साबित करता है और क्रमिक–विकास को झूठा साबित करता है। तस्वीर में दिखाई गई हेरिंग मछली एक ऐसा सबूत है जो क्रमिक–विकास को गलत बताता है।
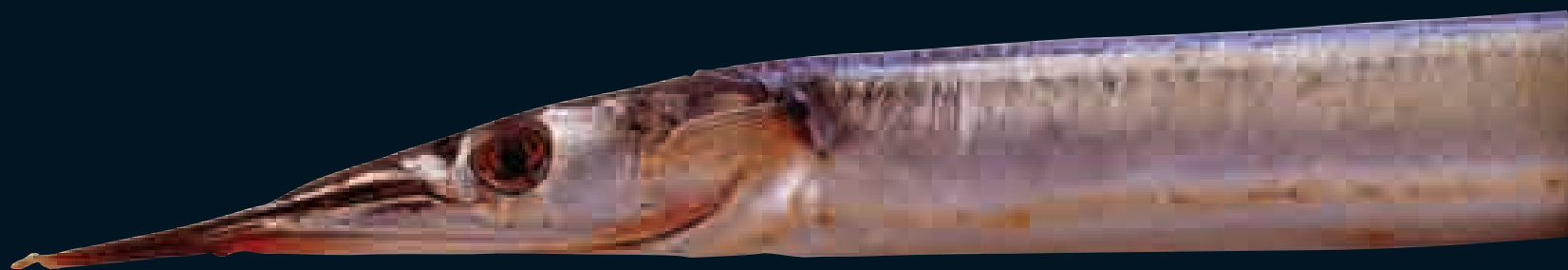
पाइपफिश

उम्र : 2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष

आकार : 11.4 सेंटीमीटर (4.5 इंच)

स्थान : सांता येनेज़ वैली, कैलीफोर्निया

संरचना : वैक्यूरो संरचना

काल : मियोसीन

पाइपफिश एक छोटा रीढ़ वाला जीव है जो उसी उपवर्ग (सिंगाथोइडेइ) में आता है जिसमें समुद्री घोड़े आते हैं। करीब 2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष पुराना पाइपफिश का यह फॉसिल आज की पाइपफिश जैसा ही है। यह डारविनवादियों को गलत साबित करता है, जो दावा करते हैं कि जीव–जंतुओं का क्रमिक–विकास हुआ।

झींगुर के साथ हैकबेरी का पत्ता

काल : सेनोज़ोइक युग, इयोसीन इपोच

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : यूएसए

इस तस्वीर में एक झींगुर है जो हैकबेरी के पत्ते के साथ ही फॉसिल बन गया है। यह फॉसिल, जो बताता है कि करीब 5 करोड़ वर्ष पहले के झींगुर और हैकबेरियां आज जैसे ही थे, क्रमिक–विकासवादियों की बोलती बंद कर देता है। क्रमिक–विकासवादियों की अटकलें और प्रचार वैज्ञानिक खोजों के सामने कोई मायने नहीं रखते। विज्ञान यह सच्चाई प्रकट करता है कि क्रमिक–विकास एक बड़ा झूठ है और सृष्टि की रचना एक जगजाहिर सच्चाई है।
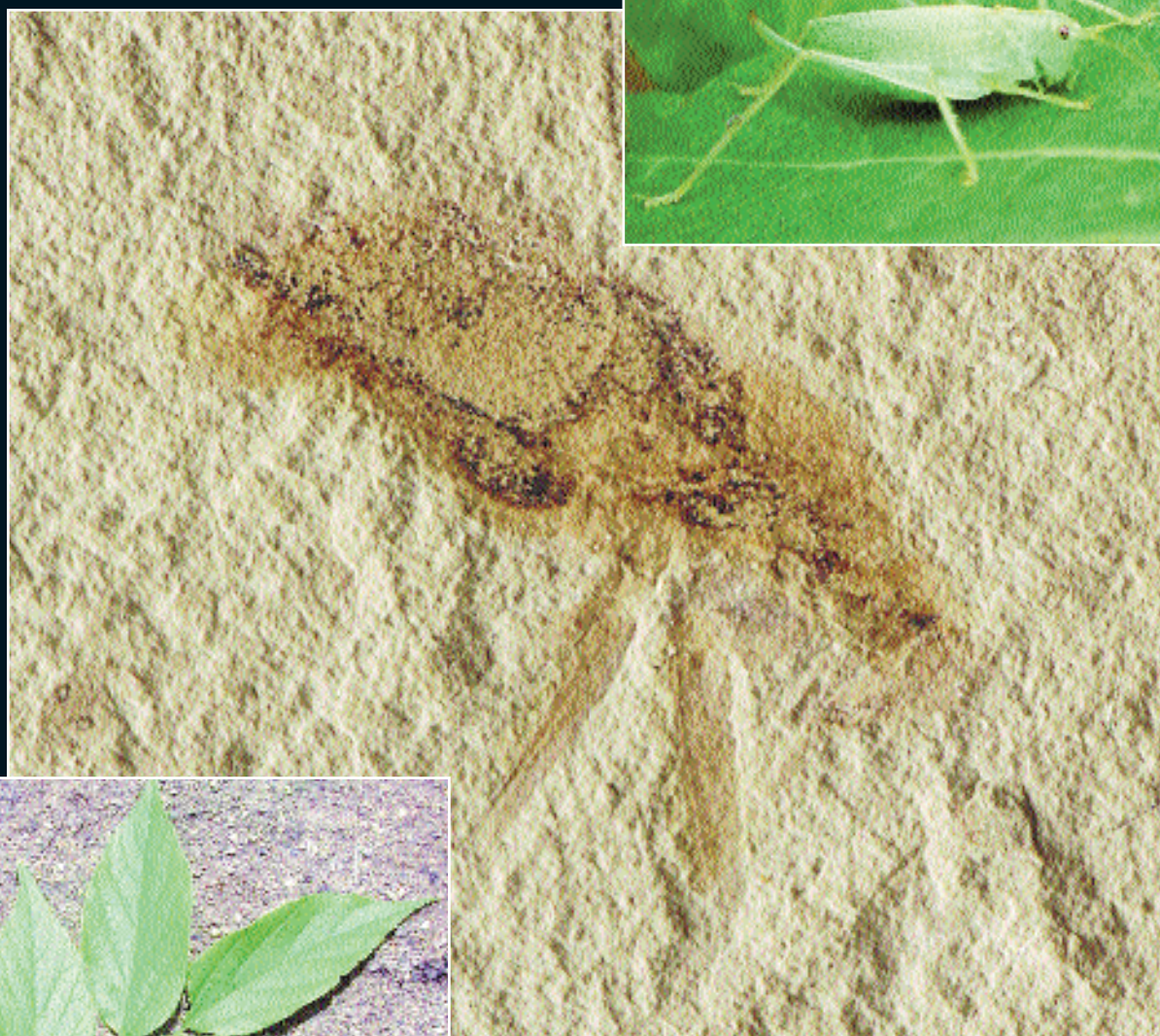
गैंडे की खोपड़ी

उम्र : 3.3 करोड़ वर्ष

आकार : 38.1 सेंटीमीटर (15 इंच) गुणा 25.4 सेंटीमीटर (10 इंच) गुणा 5.08 सेंटीमीटर (2 इंच)

स्थान : कनवर्स काउंटी, व्योमिंग

काल : ओलिगोसीन

फॉसिल की यह तस्वीर गवाह है कि करीब 3.3 करोड़ वर्ष पहले और आज के गैंडे में कोई फर्क नहीं है। करोड़ों वर्षों तक प्राणियों की शारीरिक रचना में कोई बदलाव न आना यह उजागर करता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक बड़ा धोखा है।
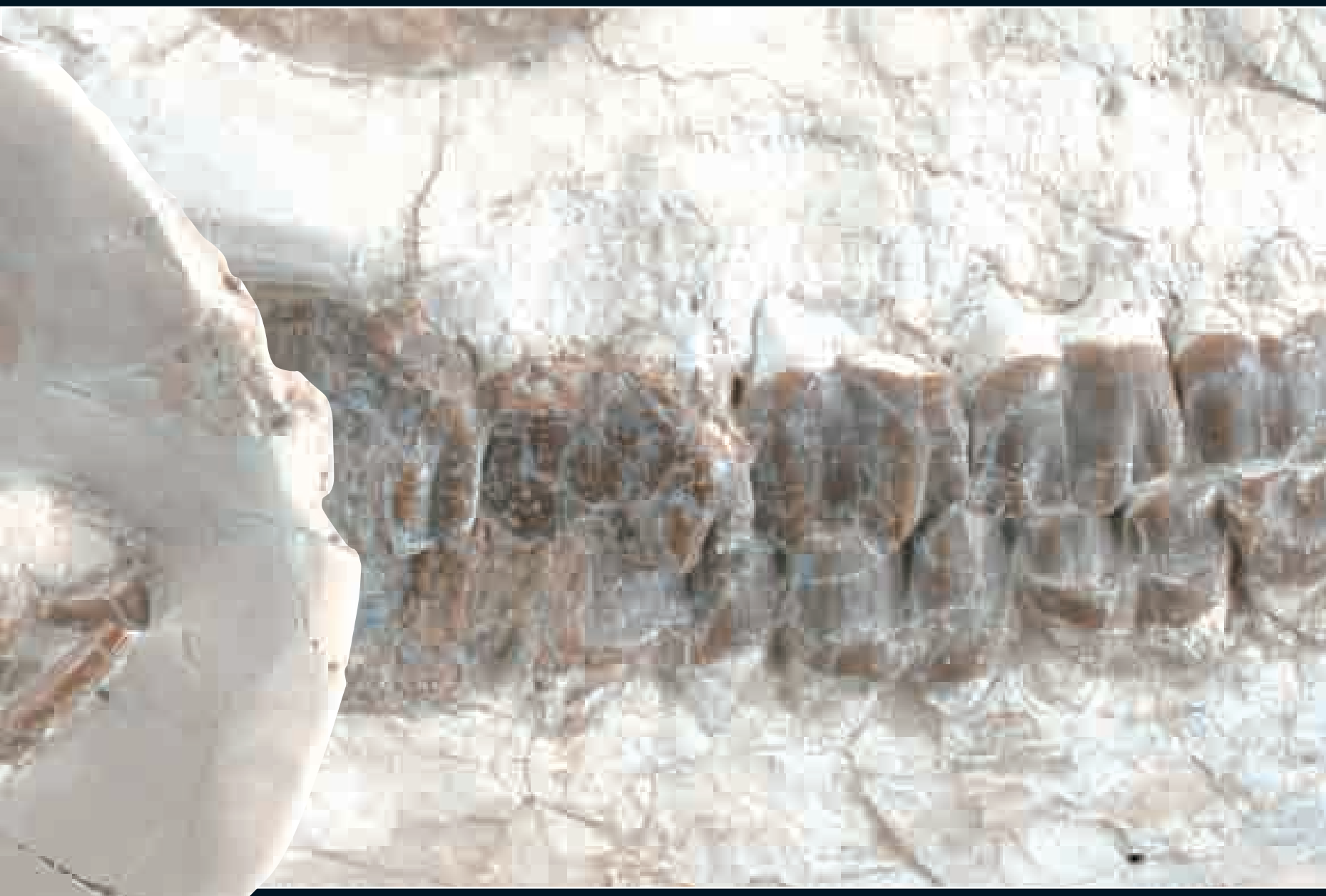
खरगोश

उम्र : 3.3 करोड़ वर्ष

आकार : खोपड़ी 6.3 सेंटीमीटर (2.5 इंच); मैट्रिक्स : 22.8 सेंटीमीटर (9 इंच) गुणा 17.7 सेंटीमीटर (7 इंच) गुणा 10.1 सेंटीमीटर (4 इंच)

स्थान : कनवर्स काउंटी, व्योमिंग

काल : ओलिगोसीन

फॉसिल रिकॉर्ड में ऐसी कोई प्रजातियों के उदाहरण नहीं मिलते जिनका पहले के रूपों से धीरे–धीरे क्रमिक–विकास हुआ। उदाहरण के लिए, लाखों फॉसिलों में ऐसा एक भी नहीं है जिसमें आधा मगरमच्छ/आधा खरगोश या आधा सांप/आधा खरगोश की खूबियां हों। दूसरी ओर, हजारों फॉसिल यह दिखाते हैं कि खरगोश हमेशा खरगोश ही रहे हैं। फॉसिलों से यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि प्रजातियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ : अल्लाह ने उनकी रचना की।

सनफिश

सनफिश और हेरिंग मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

"जीवित फॉसिल" जो यह दिखाते हैं कि प्रजातियों की संरचना करोड़ों वर्षों से बिल्कुल नहीं बदली है, क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर एक करारी चोट करते हैं। जैसा कि हमें ज्ञात है क्रमिक–विकास का सिद्धांत कहता है कि केवल वही जीव जीवित रह पाते हैं जो बदलते वातावरण के अनुसार स्वयं को ढ़ाल लेते हैं, और इस प्रक्रिया में वे बिल्कुल अलग प्रजातियों में विकसित हो जाते हैं। दूसरी ओर, जीवित फॉसिल ये दिखाते हैं कि लंबे समय के दौरान भी जीवित प्राणी बदलती स्थितियों के अनुसार क्रमिक–विकास से नहीं गुजरते हैं – अतः क्रमिक–विकासवादियों का यह दावा बेबुनियाद है।

हेरिंग

विलो (बेदमजनूं या सरपत)

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : पत्ती : 100 मिलीमीटर (4 इंच) गुणा 10 मिलीमीटर (0.4 इंच); मैट्रिक्स : 62 मिलीमीटर (2.4 इंच) गुणा 130 मिलीमीटर (5 इंच)

स्थान : यूइंटा काउंटी, उटाह

संरचना : ग्रीन नदी शेल

काल : इयोसीन

करोड़ों वर्षों से बिना किसी बदलाव के मौजूद पौधों की प्रजातियां क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर एक करारी चोट हैं। 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराना विलो के पत्ते का यह फॉसिल इतना लंबा समय गुजर जाने पर भी बदला नहीं है। आज के विलो के पत्ते 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले के इन पत्तों जैसे ही हैं।

लॉरेल का पत्ताAF

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : पत्ती : 30 मिलीमीटर (1.2 इंच) गुणा 66 मिलीमीटर (3 इंच); मैट्रिक्स : 90 मिलीमीटर (3.5 इंच) गुणा 69 मिलीमीटर (2.7 इंच)

स्थान : यूइंटा काउंटी, उटाह

संरचना : ग्रीन नदी शेल

काल : इयोसीन

लॉरेसिए परिवार (मूल : एशिया) की पत्तियों और फलों से तेल निकाला जाता है, जबकि उनकी पत्तियों का उपयोग मसालों के तौर पर भी हो सकता है।

यहां दर्शाया गया लॉरेल की पत्ती के फॉसिल का चित्र, सभी अन्य पौधों की तरह यही साबित करता है कि लॉरेल किसी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे। 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले के लॉरेल में भी वही विशेषताएं थीं जो आज के लॉरेल में पाई जाती हैं।

हेरिंग और पर्च मछली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : केमेरर, व्योमिंग

संरचना : ग्रीन नदी संरचना

काल : इयोसीन

करीब 5.4 और 3.7 करोड़ वर्ष पुराना यह फॉसिल दर्शाता है कि हेरिंग और पर्च मछलियां में करोड़ों वर्षों में भी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। आज की हेरिंग और पर्च मछलियों और करोड़ों वर्ष पहले की इन मछलियों में कोई अंतर नहीं है।
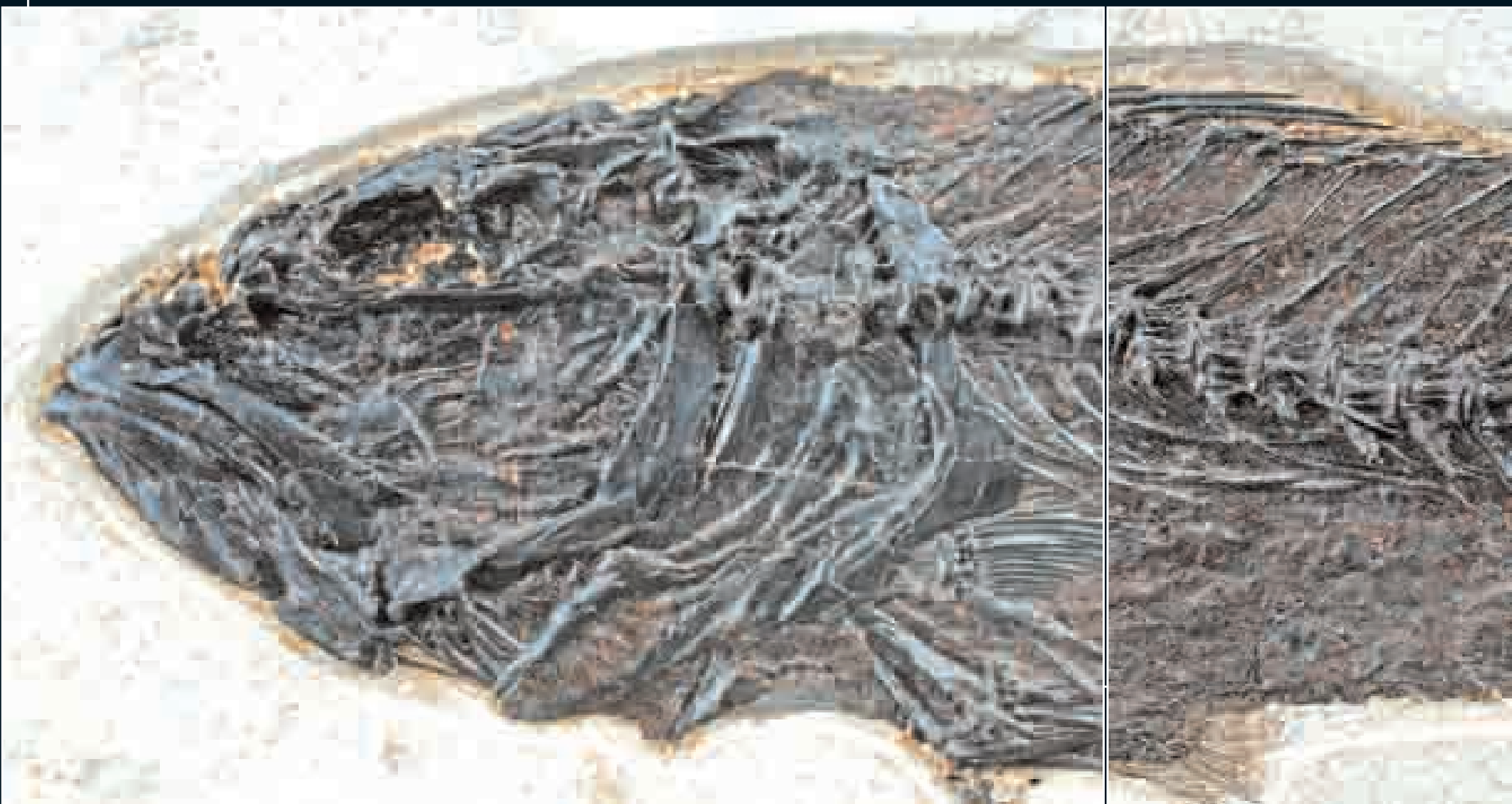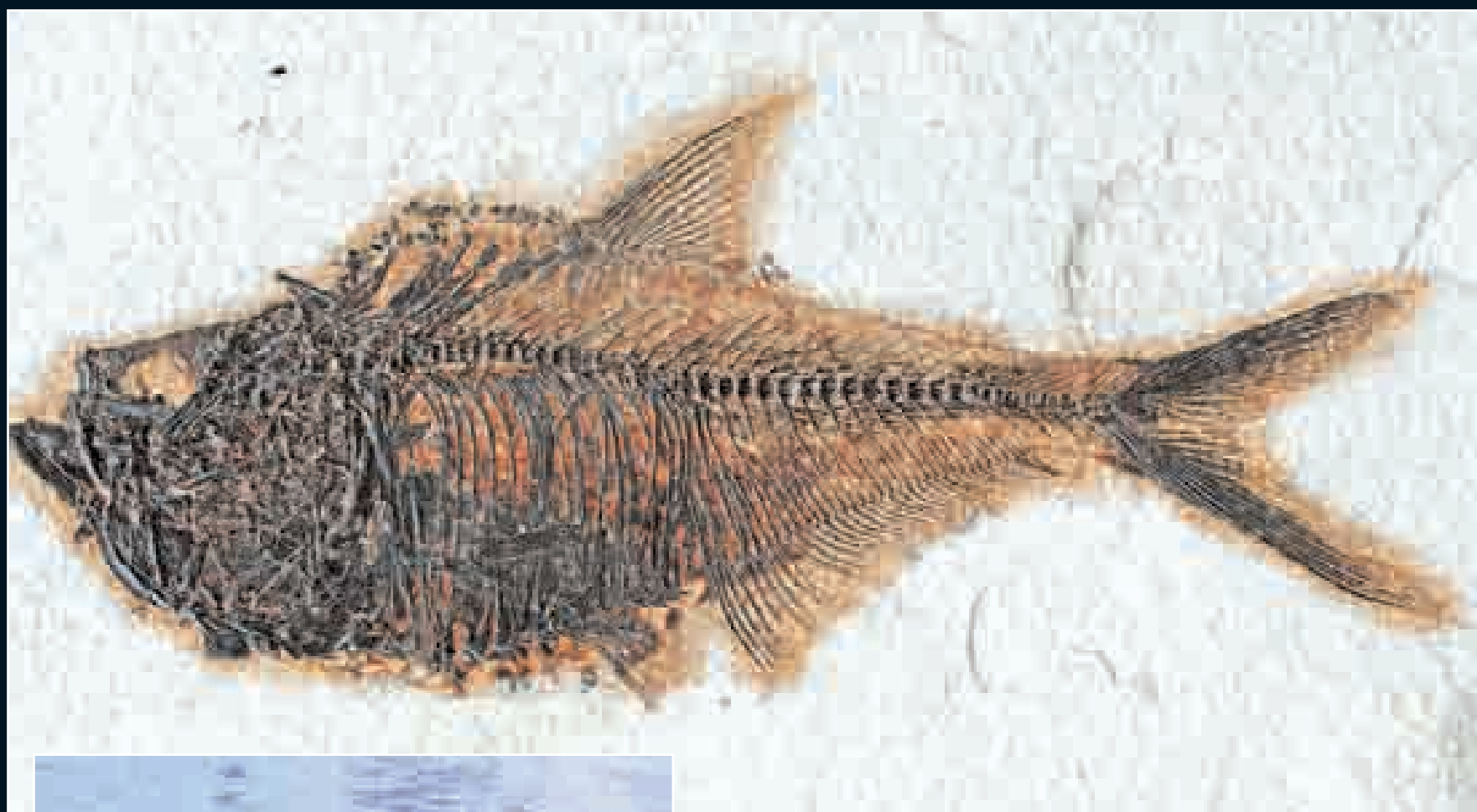
भोजवृक्ष
हेरिंग

खरगोश

उम्र : 3.8 से 2.3 करोड़ वर्ष

संरचना : ब्रूल संरचना

स्थान : व्हाइट नदी ग्रुप, कनवर्स काउंटी, व्योमिंग

काल : ओलिगोसीन

करीब 3.8 और 2.3 करोड़ वर्ष पहले जीवित यह खरगोश और आज के खरगोशों में कोई फर्क नहीं है। करोड़ों वर्षों के दौरान खरगोशों में कोई बदलाव नहीं आया है, इससे साबित होता है कि खरगोश का क्रमिक–विकास नहीं हुआ बल्कि उनकी रचना की गई।
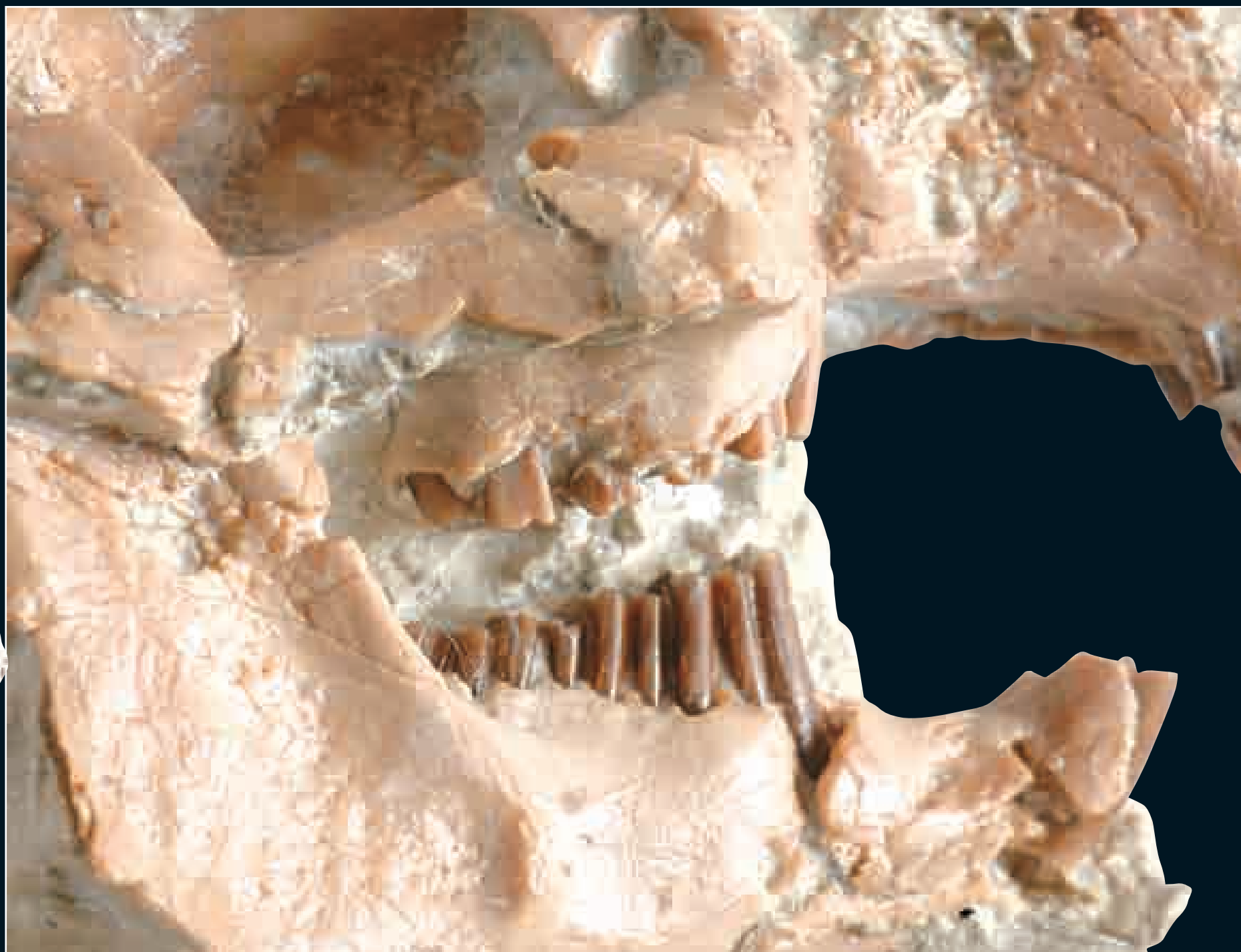
हिरन की खोपड़ी

उम्र : 3.8 से 2.3 करोड़ वर्ष

संरचना : ब्रूल संरचना

स्थान : व्हाइट नदी ग्रुप, सू काउंटी, नेब्रास्का

काल : ओलिगोसीन

करीब 3.8 से 2.3 करोड़ वर्ष पुरानी हिरन की खोपड़ी आज के हिरनों जैसी ही है, इससे ज्ञात होता है कि करोड़ों वर्षों के दौरान इन स्तनपायी जीवों में कोई बदलाव नहीं आया है। अर्थात् उनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ है।
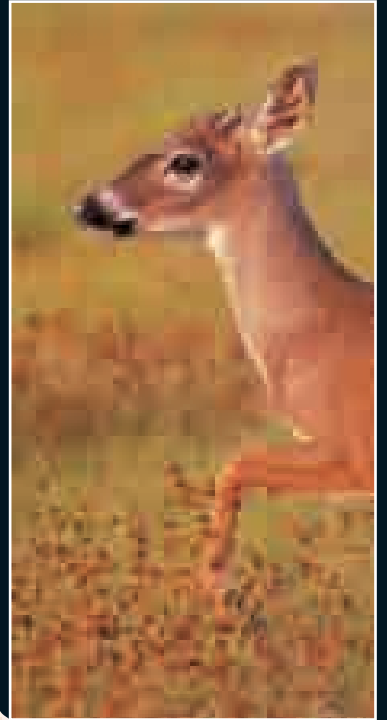
कछुआ

काल : सेनेज़ोइक युग, इयोसीन काल

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

स्थान : यूएसए

विज्ञान की अन्य शाखाओं की तरह फॉसिल विज्ञान ने भी ऐसी अनगिनत खोजें और जानकारियां दी हैं जो बताती हैं कि डारवीन की भविष्यवाणियां कितनी अवैज्ञानिक हैं। इनमें से एक खोज यहां दिखाया गया 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराना कछुए का फॉसिल है, जो क्रमिक–विकासवादियों को गलत साबित करते हुए यह सबूत देता है कि करोड़ों साल में भी कछुए बिल्कुल नहीं बदले हैं।

बाइवाल्व

उम्र : 1.3 से 1.25 करोड़ वर्ष

आकार : 10 सेंटीमीटर (4 इंच)

संरचना : कैलवर्ट संरचना

स्थान : कैलवर्ट काउंटी, मेरीलैंड

काल : मिडल मियोसीन

बाइवाल्व मस्ल और सीपियों की तरह दो खोल वाले मोलस्क जीव होते हैं। करोड़ों साल पहले और आज के बाइवाल्व बिल्कुल एक जैसे हैं – यह स्थिति डारविनवादियों द्वारा सुझाए गए क्रमिक–विकास को झूठा साबित करती है।

कछुआ

उम्र : 3.8 से 2.3 करोड़ वर्ष

आकार : 13 सेंटीमीटर (5 इंच) गुणा 10 सेंटीमीटर (4 इंच) चौड़ा गुणा 4.5 सेंटीमीटर (1.75 इंच) मोटा

संरचना : ब्रूल संरचना

स्थान : सिऑक्स काउंटी, नेब्रास्का

काल : ओलीगोसीन

क्रमिक–विकासवादी मानते हैं कि फॉसिल रिकॉर्ड में ऐसी एक भी खोज नहीं है जो यह दिखाए कि कछुए कभी क्रमिक–विकास से गुजरे हैं। अपनी किताब 'वर्टिब्रेट पैलिएंटोलॉजी एंड इवोल्यूशन' में रॉबर्ट कैरोल कहते हैं कि सबसे पहले के कछुए जर्मनी में ट्रायसिक संरचनाओं में पाए गए हैं और इन्हें अपने कठोर खोलों के कारण दूसरी प्रजातियों से अलग साफ पहचाना जा सकता है, जो कि आज पाए जाने वाले नमूनों से काफी मिलते–जुलते हैं। वे आगे कहते हैं कि इनसे पहले के या और भी आदिम कछुओं की कोई निशानी नहीं मिली है, हालांकि कछुए का फॉसिल बड़ी आसानी से बन जाता है और अगर उनके बहुत छोटे हिस्से भी मिलें तो भी उन्हें आसानी से पहचाना जा सकता है। (रॉबर्ट कैरोल, वर्टिब्रेट पैलिएंटोलॉजी एंड इवोल्यूशन, पृ. 207)

घोंघा और सीप

उम्र : 41 से 36 करोड़ वर्ष

आकार : 3.8 सेंटीमीटर (1.5 इंच)

संरचना : जेफरसन लाइमस्टोन

स्थान : क्लार्क काउंटी, इंडियाना

काल : डेवोनियन

कम से कम 36 करोड़ वर्ष से ज्यों की त्यों मौजूद सीपियां क्रमिक–विकासवादियों के लिए चुनौती हैं जिनका कहना है कि प्रजातियां धीरे–धीरे एक से दूसरे रूप में विकसित हुईं। मोलस्क जीवों के ये फॉसिल दिखाते हैं कि उनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ बल्कि उनकी रचना की गई।

समुद्री अर्चिन

काल : पैलिओज़ोइक युग, कारबोनिफेरस काल

उम्र : 30.6 से 29.9 करोड़ वर्ष

स्थान : यूएसए

यहां दिखाया गया समुद्री अर्चिन उन अनगिनत सबूतों में से एक है जो कांटेदार त्वचा वाले जीवों (इकिनोडर्म) की पैदाइश के बारे में क्रमिक–विकासवादियों के दावे को नकारते हैं। अगर क्रमिक–विकासवादियों के दावे सही हैं, तो 30.6 से 20.9 करोड़ वर्ष पहले के समुद्री अर्चिन के नमूने आज के नमूनों से काफी अलग होने चाहिए थे। लेकिन, जैसा कि यह फॉसिल दिखाता है, जीवित नमूनों और करोड़ों वर्ष पहले के नमूनों में कोई फर्क नहीं है।

.

तारा मछली

उम्र : 36 से 32.5 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स 6.2 सेंटीमीटर (2.4 इंच) गुणा 6.2 सेंटीमीटर (2.4 इंच)

संरचना : एडवर्ड्सविले संरचना

स्थान : क्रॉफोर्ड्सविले, इंडियाना

काल : मिसीसिपियन

आज की तारा मछली में करोड़ों वर्ष पहले की तारा मछली जैसे ही गुण हैं। यह फॉसिल दर्शाता है कि तारा मछली 36 से 32.5 करोड़ वर्ष तक बिल्कुल नहीं बदली है और यह क्रमिक–विकासवादियों के दावे को गलत साबित करते हुए बताता है कि जीव–जंतु उन्हीं खूबियों के साथ रचे गए थे जो उनमें आज भी मौजूद हैं।
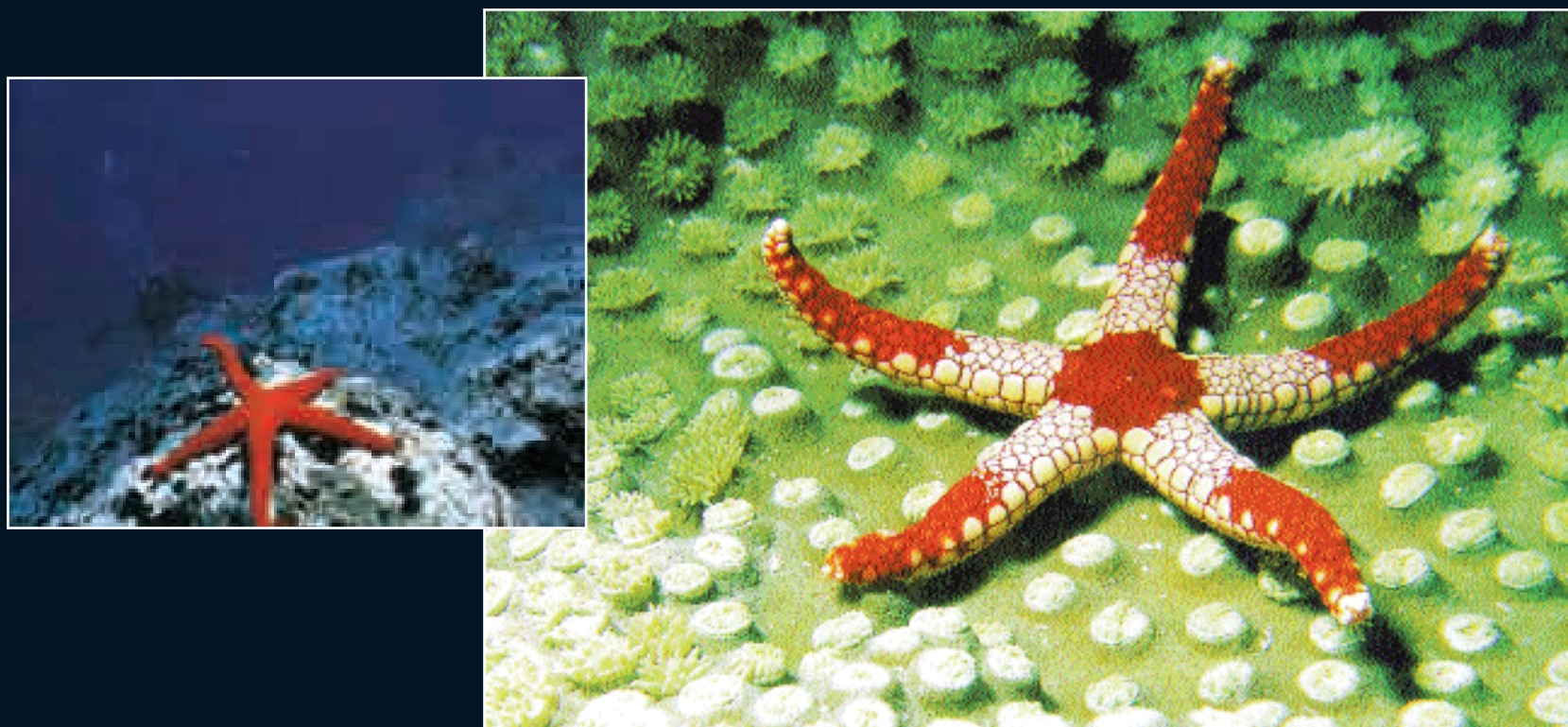
कनाडा में मिले फॉसिलों के नमूने

कनाडा में दुनिया की कुछ सबसे पुरानी भू–वैज्ञानिक संरचनाएं पाई जाती हैं। इसकी चट्टानी संरचनाओं का एक बड़ा हिस्सा पूर्वकैमब्रियन काल (4.6 अरब वर्ष से 54.3 करोड़ वर्ष पहले) का है और इस देश में फॉसिल क्षेत्रों की भरमार है। इस इलाके के सबसे महत्त्वपूर्ण फॉसिल क्षेत्रों में से एक है विश्व प्रसिद्ध बर्गेस शेल संरचना। बर्गेस शेल के फॉसिल क्षेत्र को हमारे समय की सबसे महत्त्वपूर्ण फॉसिल वैज्ञानिक खोजों में से एक माना जाता है। शोध से पता चला है कि जिन तलछटों से फॉसिल मिले हैं, जब उनकी परतें बन रही थीं तो यह क्षेत्र भूमध्य रेखा के निकट था। उस समय बर्गेस शेल क्षेत्र उत्तरी अमेरिकी महाद्वीप के निचले सिरे पर स्थित था।

वहां मिले पहले फॉसिलों में बहुत से बिना रीढ़ वाले जीवों के नमूने थे, जिन्हें फॉसिल वैज्ञानिक चार्ल्स डूलिटिल वॉल्कॉट ने 20वीं सदी के शुरुआती वर्षों में खोजा था। दरअसल, बर्गेस शेल एक ऐसा क्षेत्र है जिसे यहां मिलने वाले बिना रीढ़ के जीवों के फॉसिलों के कारण जाना जाता है। 50 करोड़ वर्ष से भी ज्यादा पुराने इन नमूनों की बदौलत, कैमब्रियन काल में रहने वाली करीब 140 प्रजातियों की पहचान की गई है। इन फॉसिलों की विशेषता यह है कि वे कई अलग–अलग प्रवर्गों के हैं और ऐसा लगता है कि वे यकायक उभर आए थे, और पिछली परतों में उनके कोई पूर्वज नहीं मिलते। क्रमिक–विकासवादी स्रोत मानते हैं कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत के नजरिए से इन फॉसिलों को समझा पाना नामुमकिन है। कनाडा में एक और प्रमुख फॉसिल क्षेत्र मिगुआशा पार्क है। फॉसिल नमूनों की भरमार वाला यह क्षेत्र गास्पे प्रायद्वीप पर स्थित है। इस क्षेत्र में फॉसिलों की खोज सबसे पहले 19वीं सदी के मध्य में हुई थी। क्षेत्र की चट्टानी संरचनाएं 37.5 से लेकर 35 करोड़ वर्ष पुरानी हैं। शोध से पता चलता है

बर्गेस शेल में फॉसिल संबंधी शोध

कि करीब 37 करोड़ वर्ष पहले गास्पे का तट एक कटिबंधीय खाड़ी थी।

मिगुआशा के फॉसिल अनेक प्रकार हैं। इनमें सूक्ष्म जीवों से लेकर रीढ़ वाले जीव और बिना रीढ़ वाले जीवों से लेकर पेड़–पौधे तक शामिल हैं। मिगुआशा से मिले कुछ पेड़–पौधों और मछलियों के फॉसिल अपनी तरह के सबसे पुराने नमूने हैं। उदाहरण के लिए, स्पर्मास्पोसिटा नाम के पौधे के बारे में माना जाता है कि वह धरती पर सबसे पुराना फूल वाला पौधा है। पूर्ण रूप से निर्मित और दोषहीन संरचनाओं के साथ ये नमूने दर्शाते हैं कि जीवित प्राणी एक ऐसे समय में काफी जटिल रूप में निर्मित हो चुके थे जब क्रमिक–विकासवादियों के मुताबिक जीवन बड़ी आदिम स्थिति में होना चाहिए था।

थ्वेपस तमेमंतबीमे पद जीम च्तवअपदबम वि ।सइमतजं

बर्गेस शेल

मूनआई मछली

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : 8.3 सेंटीमीटर (3.25 इंच) गुणा 3.2 सेंटीमीटर (1.25 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

मूनआई मछली मध्यम आकार की एक उत्तरी अमेरिकी मछली है जो आमतौर पर बड़ी झीलों और नदियों में रहती हैं। अन्य प्राणियों की तरह, मछलियों की यह प्रजाति अपने शारीरिक ढांचे में किसी बदलाव के बिना करोड़ों वर्षों से कायम है। 5 करोड़ वर्ष पुरानी मूनआई मछली आज तक जीवित अपने वंशजों जैसी ही है, इस तथ्य को क्रमिक–विकासवादी समझाने में नाकाम हैं।
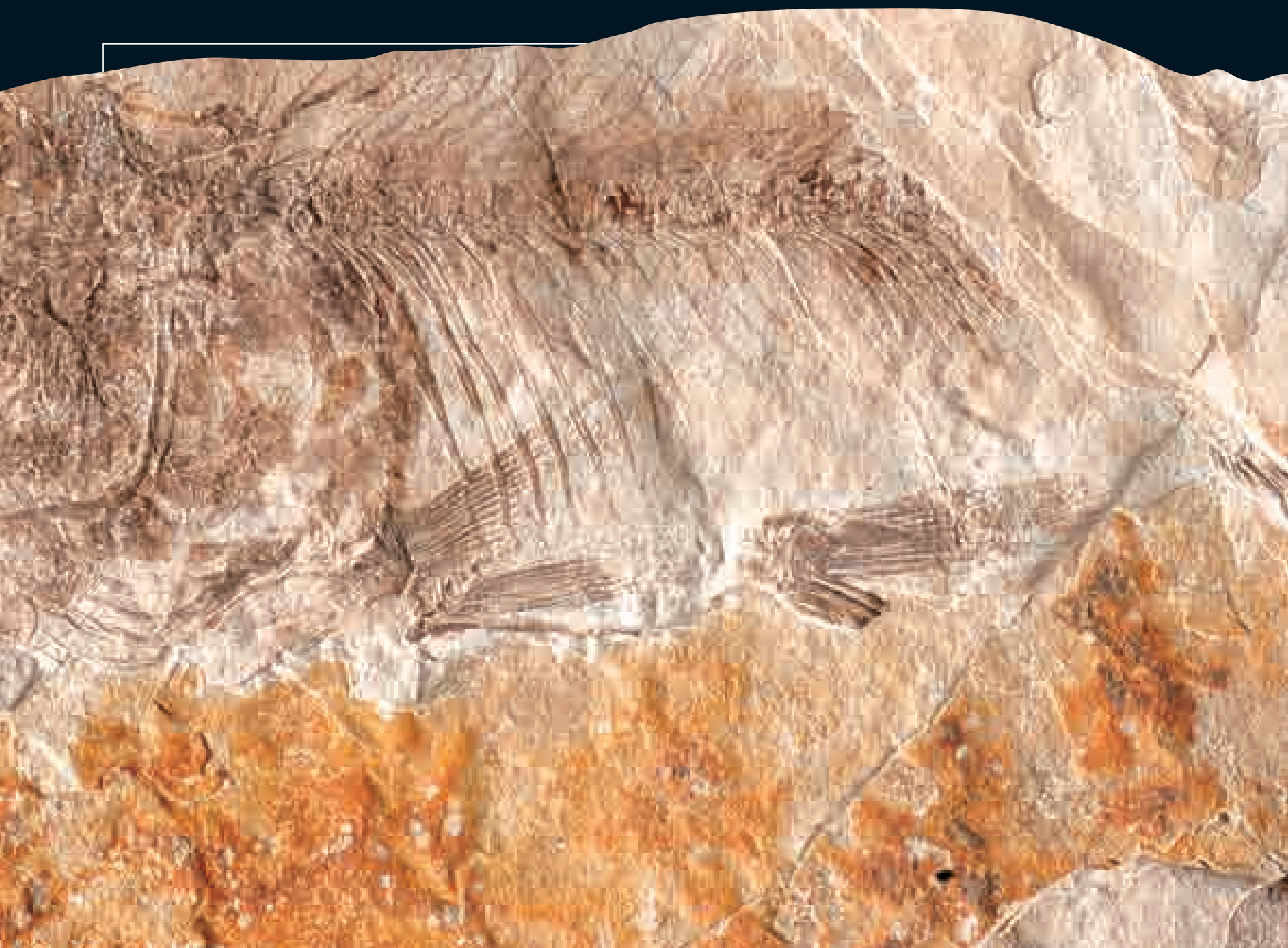
सिक्वाए की टहनी

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : 7 सेंटीमीटर (2.75 इंच) गुणा 10 सेंटीमीटर (4 इंच)

स्थान : कैम्लूप्स, ब्रिटिश कोलंबिया

काल : इयोसीन

सिक्वाए पेड़ों को अब धरती के सबसे बड़े पेड़ माना जाता है और ये बहुत लंबे समय तक जीते हैं। ऐसे ज्यादातर पेड़ उत्तरी अमेरिका में उगते हैं। इनमें से कुछ 1,000 साल पुराने और 150 मीटर (492 फीट) ऊंचे हैं। फॉसिल दिखाते हैं कि सिक्वाए पेड़ करोड़ों वर्षों से ऐसे ही हैं : यानी वे क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से नहीं गुजरे हैं। यहां दिखाया गया 5 करोड़ वर्ष पुराना सिक्वाए की टहनी का फॉसिल आज भी जीवित इन पेड़ों जैसा ही है।
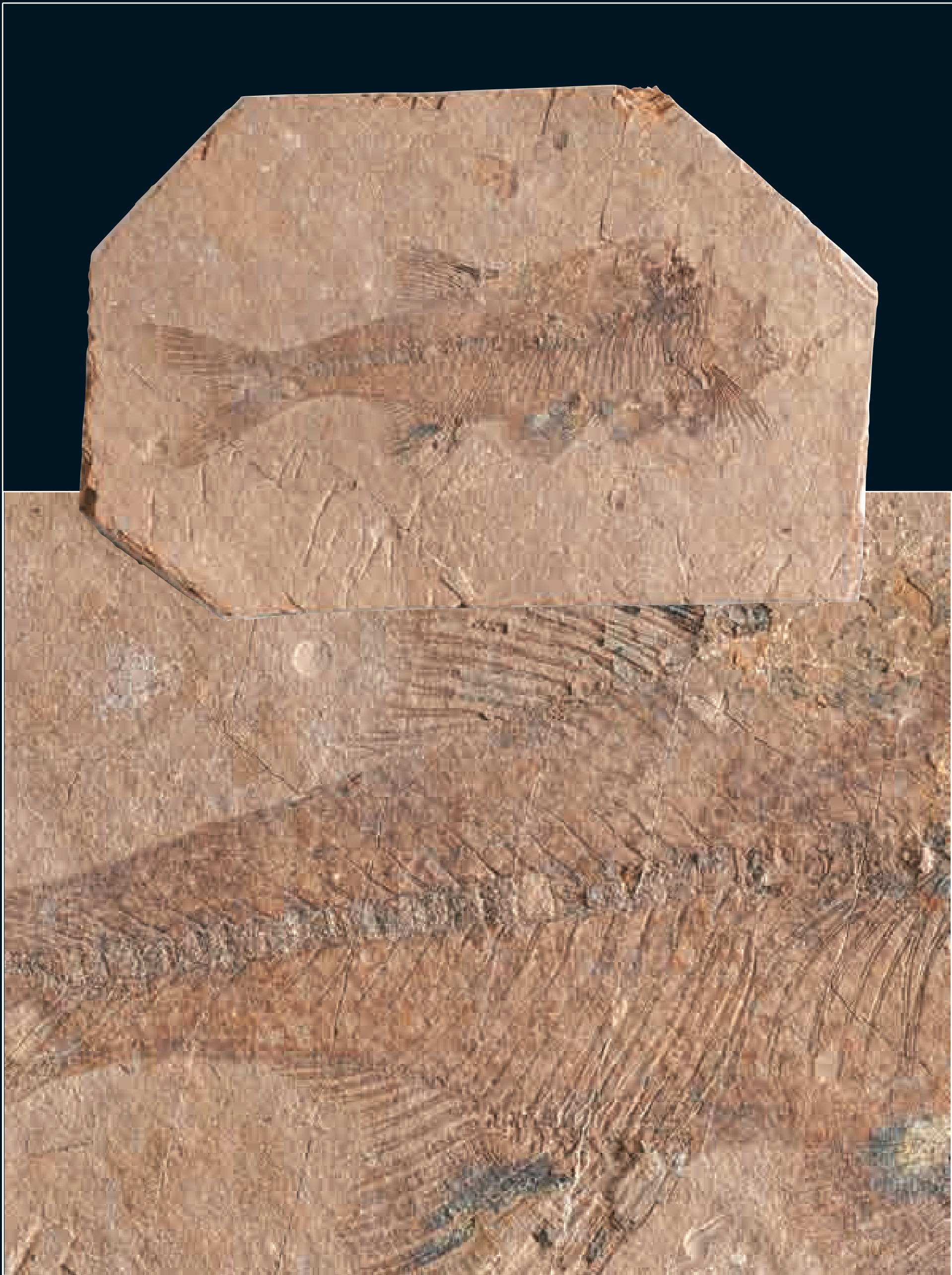
मूनआई मछली

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : 10 सेंटीमीटर (4 इंच) गुणा 1.5 सेंटीमीटर (0.6 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

कनाडा के फॉसिल क्षेत्रों से मूनआई मछली के बहुत से फॉसिल मिले हैं। ये सभी फॉसिल दर्शाते हैं कि मूनआई मछली करोड़ों वर्षों से ऐसी ही है। करोड़ों वर्षों की यह स्थिरता – शारीरिक संरचना में कोई बदलाव नहीं आना – इस बात का अहम सबूत है कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।
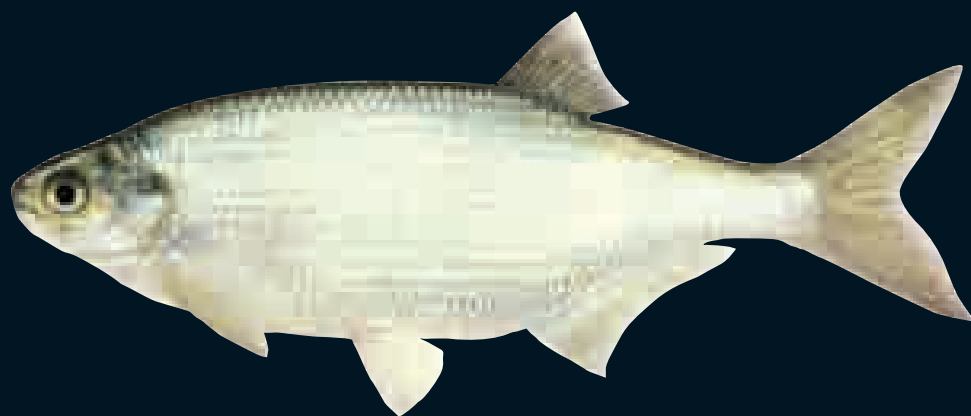
अपने प्रतिरूप के साथ यह फॉसिल 5 करोड़ वर्ष पुराना है।
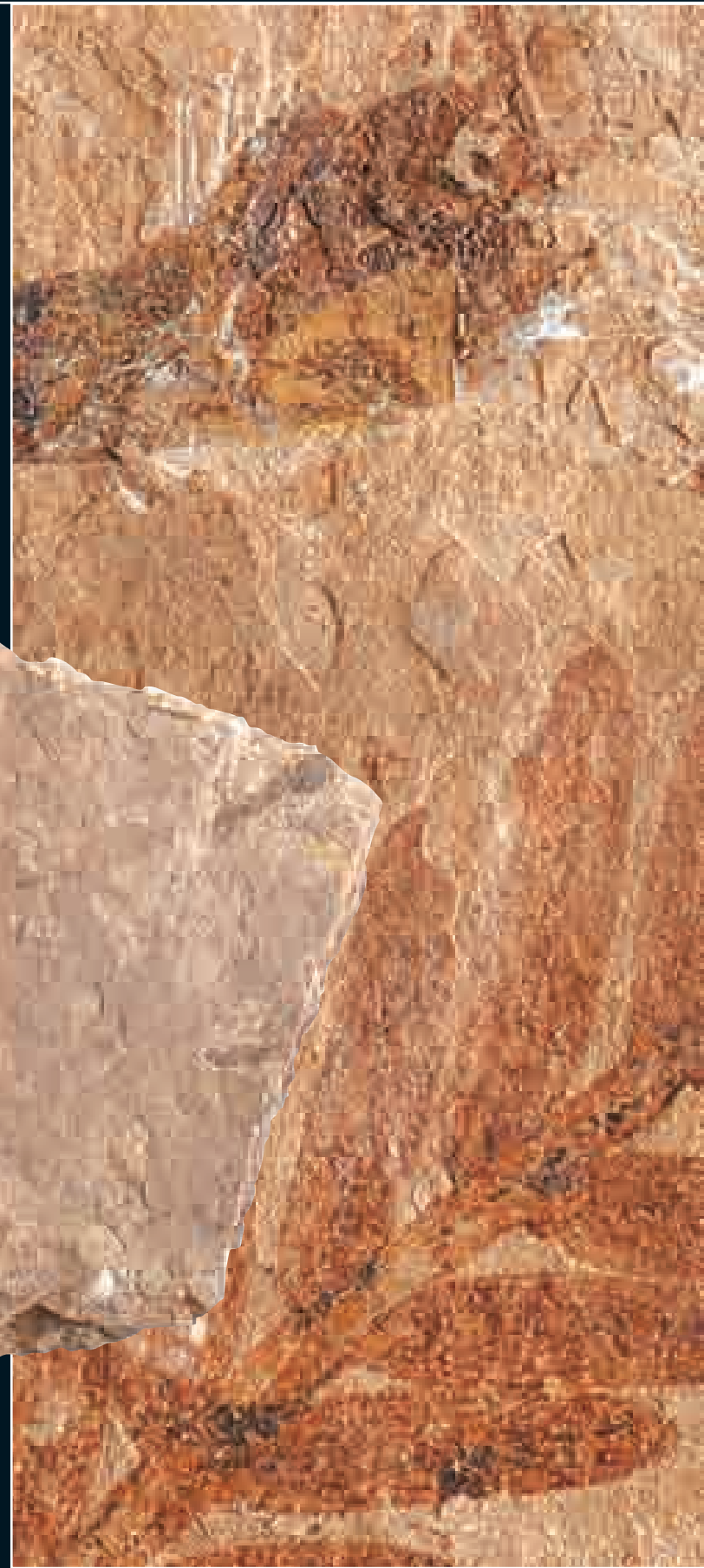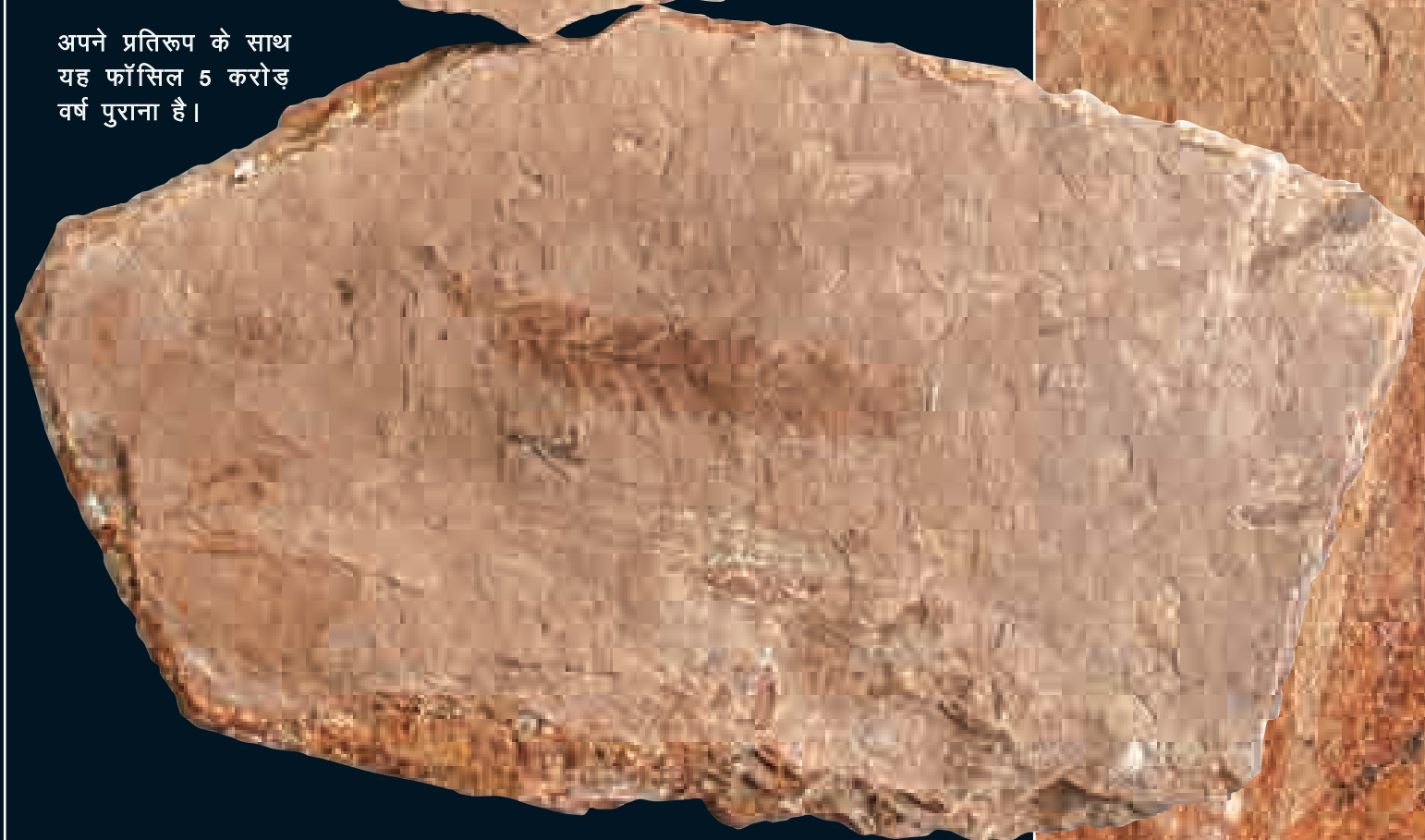
मार्च मक्खी के साथ सिक्वाए की टहनी

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : 10 सेंटीमीटर (4 इंच) गुणा 12.7 सेंटीमीटर (5 इंच)

स्थान : कैम्लूप्स, ब्रिटिश कोलंबिया

काल : इयोसीन

मार्च मक्खियां टेबेनिडा परिवार में आती हैं और मुख्यतः पौधों का पराग खाकर जीवित रहती हैं। फॉसिल रिकॉर्ड दिखाते हैं कि मक्खियों की सभी प्रजातियां एक साथ अस्तित्व में आईं और अपनी शारीरिक बनावट में किसी बदलाव के बिना करोड़ों वर्षों से जीवित हैं। इससे यह तथ्य साबित होता है कि अन्य सभी जीवों की तरह, मक्खियों का भी क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। क्रमिक–विकासवादी मानते हैं कि मक्खियों की पैदाइश को क्रमिक–विकास के सिद्धांत के नजरिए से नहीं समझाया जा सकता।

जंतु वैज्ञानिक पियेर–पॉल ग्रासे इस बात की ओर इशारा करते हुए लिखते हैं : "कीटों की पैदाइश के बारे में हम बिल्कुल अंधेरे में हैं।" (इवोल्यूशन ऑफ लिविंग ऑर्गेनिज्म्स, न्यूयॉर्क एकेडमिक प्रेस, 1977, पृ. 30) फॉसिल रिकॉर्ड दिखाते हैं कि मक्खियां और अन्य सभी कीड़ों की पैदाइश अल्लाह की रचना का परिणाम है।

लंगफिश

उम्र : 35 करोड़ वर्ष

आकार : 18.5 सेंटीमीटर (7.3 इंच)

स्थान : मिगुआशा, गास्पे

काल : अपर डेवोनियन

आज की लंगफिश मुख्य रूप से अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका में पाई जाती हैं। जब पानी का स्तर गिरता है और नदी सूख जाती है तो यह मछलियां कीचड़ में धंस कर जिंदा रहती हैं। लंगफिश का सबसे पुराना फॉसिल डेवोनियन काल (41.7 से 35.4 करोड़ वर्ष पहले) का है। तस्वीर में दिखाया गया फॉसिल भी इसी काल का है। आज की लंगफिश और 35 करोड़ वर्ष पहले पाई जाने वाली इस मछली में कोई फर्क नहीं है। ये मछलियां करोड़ों वर्षों के दौरान बिल्कुल नहीं बदली हैं और इस बात का प्रमाण देती हैं कि प्राणियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ बल्कि उनकी रचना की गई।

सिक्वाए की डंठल और हॉर्नबीम का पत्ता

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 7 सेंटीमीटर (2.75 इंच) गुणा 1.5 सेंटीमीटर (0.6 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

पौधों की बनावट इतनी जटिल होती है कि यह मुमकिन नहीं है कि वे महज इत्तेफाक से पैदा हो गए और एक से दूसरे में विकसित होते गए है, जैसा कि क्रमिक–विकासवादी दावा करते हैं। फॉसिल रिकॉर्ड दिखाते हैं कि पौधों के विभिन्न वर्ग एक साथ पैदा हुए और उन्हें जोड़ने वाली क्रमिक–विकास की कोई प्रक्रिया नहीं दिखाई देती। यहां दर्शाए गए सिक्वाए और हॉर्नबीम की पत्तियों के फॉसिल यह बताते हैं कि क्रमिक–विकास कोई मान्य सिद्धांत नहीं है। और आज जीवित पौधों तथा 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले के इन पौधों में कोई फर्क नहीं है।

हॉर्नबीम

सिक्वाए

5.4 से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पुराना यह फॉसिल दो भागों से बना है; ऋणात्मक और धनात्मक।

सिक्वाए की टहनी पर डंठल के साथ बीजों की फली

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : पत्ती, 7 सेंटीमीटर (2.7 इंच) गुणा 10.7 सेंटीमीटर (4.3 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

आज उगने वाले सिक्वाए के पेड़ों और करोड़ों साल पहले के इन पेड़ों के बीच कोई फर्क नहीं है। यह साबित करता है कि जानवरों की तरह पेड़ भी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे

भोजवृक्ष (बर्च)

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 20.2 सेंटीमीटर (8 इंच) गुणा 23 सेंटीमीटर (9.3 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

भोजवृक्ष बेतुला वंश का है और उत्तरी जलवायु में उगता है। यहां दिखाया गया फॉसिल 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले के एक पेड़ का है। यह पत्ता आज के पेड़ों के पत्तों जैसा ही है। यह साबित करता है कि अन्य जीवों की तरह, भोज के वृक्षों का भी क्रमिक–विकास नहीं हुआ।
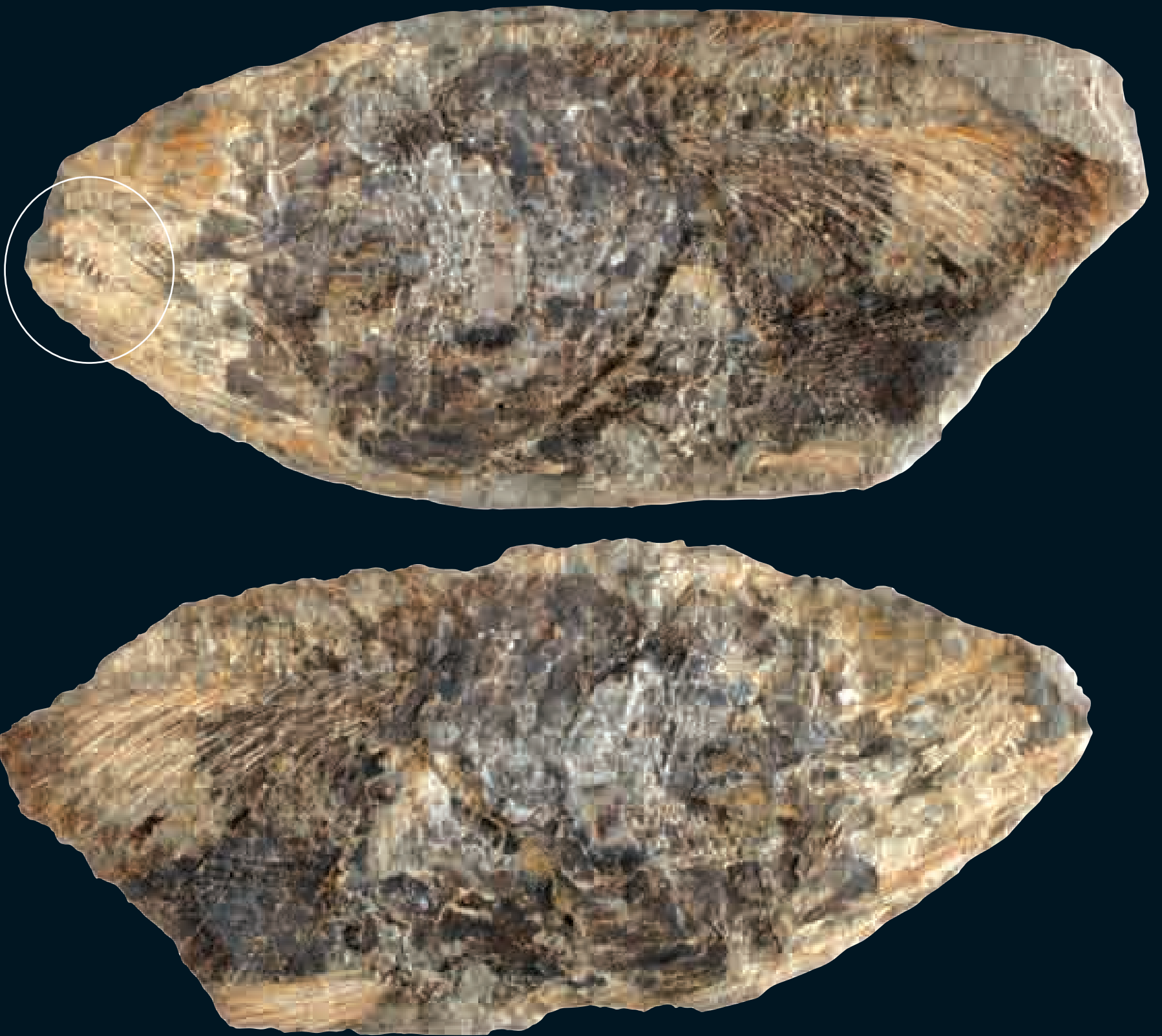
सामन मछली का सिर

उम्र : 1.8 करोड़ से 11,000 वर्ष

आकार : 15.2 सेंटीमीटर (6 इंच) गुणा 8.6 सेंटीमीटर (3.4 इंच)

स्थान : कैमलूप्स नदी, ब्रिटिश कोलंबिया

काल : प्लीस्टोसीन

सामन मछली के फॉसिल कई भूवैज्ञानिक स्तरों पर पाए गए हैं और सभी आज जीवित सामन मछली जैसे ही हैं। हर मिलने वाला फॉसिल डारविनवादियों को झुठलाता है और यह साबित करता है कि अन्य प्रजातियों की तरह सामन मछली बिल्कुल नहीं बदली है।

सिक्वाए

जिंगको
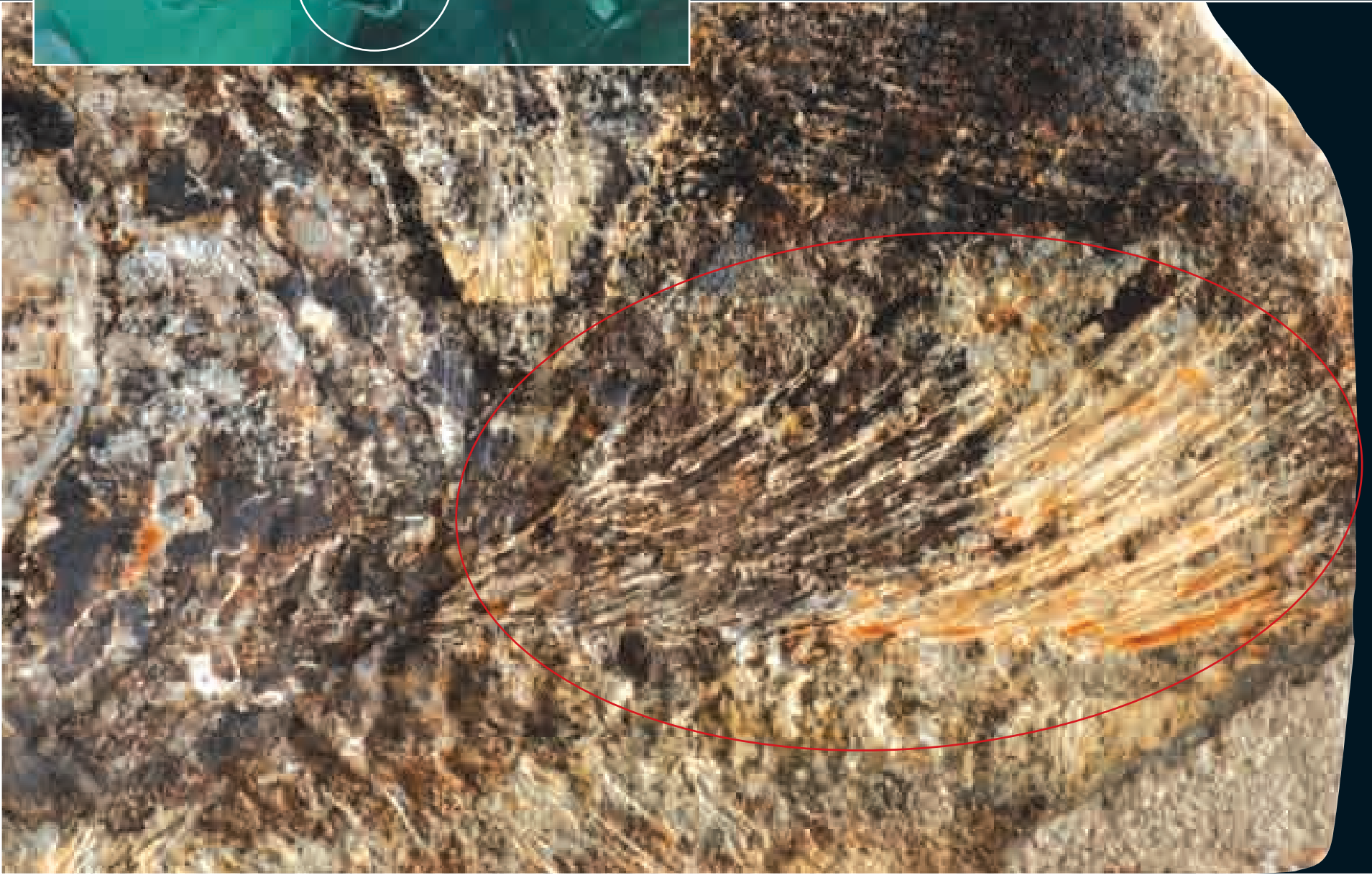
जिंकगो की पत्ती और सिक्वाए की डंठल

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : जिंकगो की पत्ती, 5 सेंटीमीटर (2 इंच), 5.8 सेंटीमीटर (2.3 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

जिंकगो का पेड़ एक जीता–जागता फॉसिल है जो स्वयं अपने जिंकगोफाइटा वर्ग में आता है। इसके सबसे पुराने ज्ञात उदाहरण 27 करोड़ वर्ष पुराने हैं। यहां दिखाया गया जिंकगो की पत्ती का फॉसिल 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराना है। ये पेड़ करोड़ों वर्षों से ज्यों के त्यों हैं – और क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए एक चुनौती बने हुए हैं।

जिंकगो की पत्ती

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : पत्ती : 5 सेंटीमीटर (2 इंच) गुणा 5.8 सेंटीमीटर (2.3 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

फॉसिलों की खोज पौधों की प्रजातियों के क्रमिक–विकास के सभी दावों को साफ तौर पर गलत साबित करती है। जिंकगो एक खोज 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराने जिंकगो की पत्ती का फॉसिल है। करोड़ों साल पहले उगने वाले जिंगको के पेड़ आज उगने वाले इन पेड़ों जैसे ही हैं।
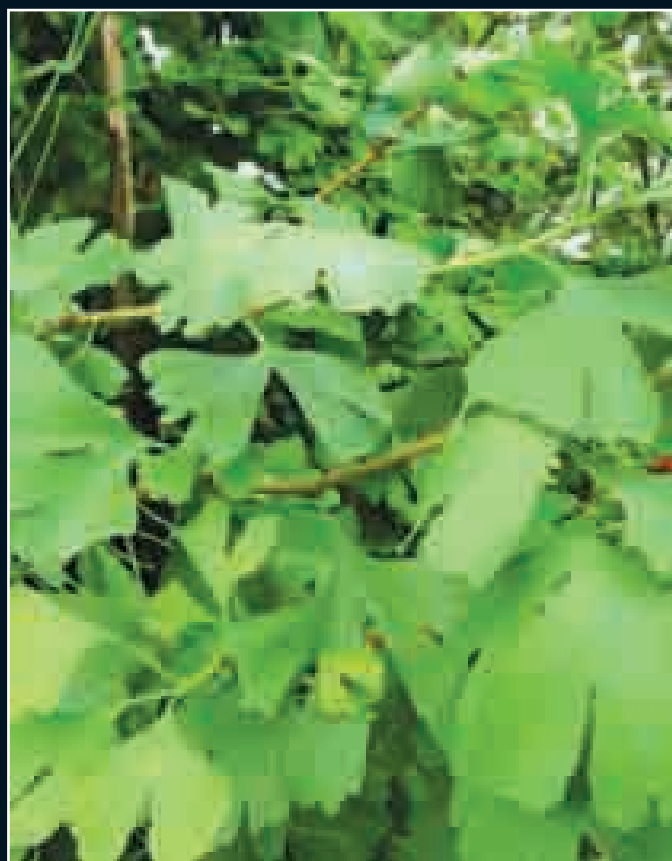
एल्म की पत्ती

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 11 सेंटीमीटर (4.3 इंच) गुणा 5.8 सेंटीमीटर (2.3 इंच)

स्थान : कैमलूप्स, ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

एल्म के पेड़ शीतल जलवायु में उगते हैं। यह आमतौर पर उत्तरी अमेरिका, यूरोप और एशिया में पाए जाते हैं। एल्म की पत्ती का 5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल पौधों के क्रमिक–विकास के दावों का स्पष्ट रूप से खण्डन करता है।

जिंकगो बिलोबा की पत्ती

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 3 सेंटीमीटर (1.2 इंच) गुणा 2.5 सेंटीमीटर (1 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

ऐसा कोई फॉसिल नहीं है जो पौधों के क्रमिक–विकास के दावों को सही ठहरा सकता है। इसके उलट, लाखों फॉसिल इन दावों को खारिज करते हैं। इनमें से एक 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराना जिंकगो की पत्ती का फॉसिल है जिसे यहां तस्वीर में दिखाया गया है। जिंगको के पेड़ करोड़ों वर्षों में भी नहीं बदले हैं, इससे ज्ञात होता है कि क्रमिक–विकास एक भारी धोखाधड़ी है।

ऐल्डर की पत्ती

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 3 सेंटीमीटर (1.2 इंच) गुणा 7 सेंटीमीटर (2.8 इंच)

स्थान : कैमलूप्स ब्रिटिश कोलंबिया

काल : इयोसीन

आज उगने वाले ऐल्डर पेड़ों और 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पहले उगने वाले इन पेड़ों के बीच कोई फर्क नहीं है। उस समय के ऐल्डर में वही प्रणालियां थीं जो आज के पेड़ों में होती हैं। यह इस बात का सबूत है कि धरती पर कभी क्रमिक–विकास हुआ ही नहीं।

हॉर्नबीम और एल्म की पत्तियां

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 31 सेंटीमीटर (12.2 इंच) गुणा 18 सेंटीमीटर (7 इंच)

स्थान : ब्रिटिश कोलंबिया

संरचना : कैश क्रीक संरचना

काल : इयोसीन

फॉसिल रिकॉर्ड दिखाते हैं कि पौधों की तमाम प्रजातियों में अपने अस्तित्व के प्रारंभ से आज तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ हैं। अगर किसी जीव में करोड़ों वर्षों तक एक सी विशेषताएं बनी रहती हैं, तो यह स्पष्ट है कि इसका क्रमिक–विकास नहीं हुआ बल्कि इसकी रचना की गई। इस सत्य का एक प्रमाण यहां दिखाए गए 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराने हॉर्नबीम और एल्म की पत्तियों के फॉसिल हैं।

पॉपलर वृक्ष

हॉर्नबीम

डॉनरेड वुड फ्रोंड और शंकु

उम्र : 5.2 से 4.36 करोड़ वर्ष

आकार : शंकु : 15 मिलीमीटर (0.6 इंच), डंठल : 11 सेंटीमीटर (4.3 इंच) और पत्तों का गुच्छा 27 मिलीमीटर (1 इंच) : मैट्रिक्स : 145 मिलीमीटर (5.7 इंच) गुणा 11 सेंटीमीटर (4.3 इंच)

स्थान : ट्रेंक्विल शेल, कैश क्रीक, ब्रिटिश कोलंबिया

काल : लोअर मिडल इयोसीन

रेडवुड पेड़ का यह 5.2 से 4.36 करोड़ वर्ष पुराना शंकु इस बात का सबूत है कि पौधे क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से नहीं गुजरे। करोड़ों साल पहले उगने वाले रेडवुड के पेड़ आज उगने वाले इन पेड़ों जैसे ही हैं। इससे पता चलता है कि जीवित प्रजातियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ।

लॉब्सटर (बड़ा झींगा)

उम्र : 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष

स्थान : दक्षिण सास्कतचेवान नदी घाटी

संरचना : बियर पॉ (भालू का पंजा) संरचना

काल : क्रिटेशियस

पिछले 150 वर्षों में इकट्ठा किए गए फॉसिल साबित करते हैं कि प्रजातियां न तो कभी बदली हैं और न ही एक से दूसरे रूप में विकसित हुई हैं। झींगा मछली के 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष पुराने इस फॉसिल से भी इसी सत्य की पुष्टि होती है, जो आज जीवित ऐसी झींगा मछलियों से बिल्कुल अलग नहीं है।

डोमिनिकन रिपब्लिक में मिले फॉसिलों के नमूने

अंबर ऐसे स्थानों में से एक हैं जहां फॉसिल बनते हैं। अंबर में सुरक्षित फॉसिल पेड़ों द्वारा उत्पन्न लार का परिणाम हैं, जिसमें जीवित प्राणी फंस जाते हैं और उसी समय सुरक्षित हो जाते हैं। लार पानी में नहीं घुलता और हवा के संपर्क में आते ही कठोर हो जाता है। इसके बाद, बहुलिकरण की प्रक्रिया (एकलक अणु रासायनिक प्रक्रिया का हिस्सा बन कर त्री–आयामी कड़ियों का निर्माण करते हैं) शुरू होती है, और लाखों वर्षों तक लार के कठोर होने की प्रक्रिया जारी रहती है। इसलिए रेज़िन में फंसे जीव–जंतु लाखों वर्षों पहले की अपनी मूल स्थिति में बिना किसी परिवर्तन के बचे रहते हैं।

दुनियाभर में अंबर के 100 से ज्यादा ज्ञात क्षेत्र हैं। सबसे पुराने अंबर लेबनान के पर्वतों से प्राप्त हुए हैं, जो कि क्रीटैशियस काल (13 करोड़ से लेकर 12 करोड़ वर्ष पहले) के हैं। हालिया अध्ययन में मेसोज़ॉइक काल से संबंधित नए अंबर क्षेत्रों का पता चला है। इनमें 8 करोड़ से लेकर 7.5 करोड़ वर्ष पुराने के जॉर्डन के अंबर, लगभग 8 करोड़ वर्ष पुराने न्यू जर्सी के अंबर, 8 करोड़ से लेकर 7.5 करोड़ वर्ष पुराने सीडार लेक के अंबर, 7 करोड़ वर्ष पुराने फ्रांस के अंबर, और 10 करोड़ वर्ष पुराने पायरेनिअन अंबर शामिल हैं। कई अन्य अंबर क्षेत्रों से प्राप्त ज्यादातर फॉसिल इयोसीन–मिओसीन काल (5.5 करोड़ से लेकर 50 लाख वर्ष पहले) से संबंधित हैं।
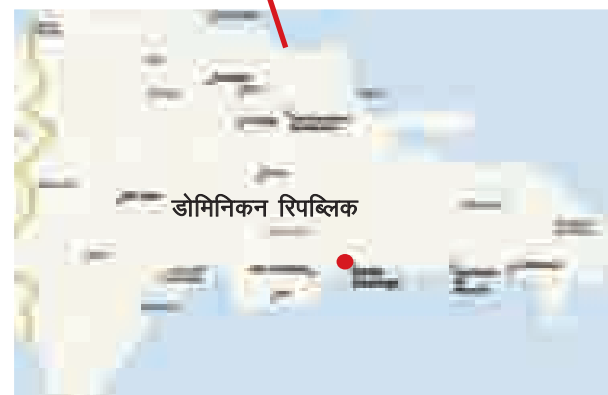
पूरी दुनिया में अंबर के 100 से ज्यादा क्षेत्र हैं। उनमें से एक नार्वे में है, जहां बाल्टिक अंबर पाया जाता है।

डोमिनिकन रिपब्लिक से मिले अधिकतर अंबर फॉसिल भी इयोसीन–मिओसीन काल से संबंधित हैं। डोमिनिकन रिपब्लिक में अंबर के दो मुख्य क्षेत्र हैं। एक है सैंटिआगो शहर के उत्तर–पूर्व में स्थित पर्वतीय क्षेत्र; दूसरा है सैंटो डॉमिंगो शहर के उत्तर–पूर्व में एल वैले कस्बे के नज़दीक स्थित खदानें। डोमिनिकन अंबर, हायमेनेइआ प्रजाति के पेड़ों के लार से बने हैं। फॉसिल में तब्दील होकर इसमें जम चुकी प्रजातियों की प्रचुरता इसकी महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है। डोमिनिकन अंबर में दसियों हजार कीड़ों के अतिरिक्त छोटे मेढ़क, छिपकलियां और बिच्छू भी फॉसिल में तब्दील हो चुके हैं।

डोमिनिकन रिपब्लिक में अंबर के कुछ क्षेत्र

अन्य फॉसिलों की तरह डोमिनिकन रिपब्लिक से मिले अंबर फॉसिल एक बेहद महत्त्वपूर्ण तथ्य को प्रकट करते हैं : लाखों वर्षों के दौरान जीवित प्राणी किसी बदलाव से नहीं गुज़रे हैं, दूसरे शब्दों में कहा जाए, वे क्रमिक–विकास से नहीं गुज़रे। संक्षिप्त में, सभी जीवित प्राणियों ने दुनिया में पहली बार प्रकट होने के समय से ही अपनी विशेषताओं को ज्यों का त्यों बनाए रखा है और उसी रूप में जीवित रहे हैं। अंबर में सुरक्षित जीवित प्राणी आज के समय में जीवित नमूनों के समरूप हैं। यह क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर एक घातक प्रहार करता है और एक बार फिर रचना के तथ्य को प्रदर्शित करता है।

वयस्क प्लांटहॉपर

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

चित्र में प्रदर्शित 2.5 करोड़ वर्ष पुराना प्लांटहॉपर आज के समय में जीवित प्लांटहॉपर का समरूप है। ये कीड़े जो कि लाखों वर्ष बीतने के बावजूद नहीं बदले हैं, क्रमिक–विकास के सिद्धांत को खारिज करते हैं।

जंपिंग स्पाइडर (कूदने वाली मकड़ी)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 16 मिलीमीटर (0.6 इंच) गुणा 10 मिलीमीटर (0.3 इंच)

स्थान : सैंटियागो के पास के पहाड़, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

अंबर के इस टुकड़े में साल्टीसिडे परिवार की जंपिंग स्पाइडर सुरक्षित है। इन मकड़ियों का यह नाम अपने शिकार को पकड़ने के लिए कूदने के तरीके के कारण पड़ा है। यह अपनी लंबाई से 50 गुणा की दूरी पर कूद सकती हैं। सिर के सामने की ओर चार आंखों के अतिरिक्त, इन आंखों के अत्यंत निकट त्रुटिहीन संरचना वाली इनकी चार आंखें और हैं, जिनका प्रयोग ये शिकार को पहचानने के लिए करती हैं।

उनके आज के समय में जीवित प्रतिरूपों की तरह ही लाखों वर्ष पहले जीवित जंपिंग स्पाइडर की बनावट भी त्रुटिहीन थी और लाखों वर्ष बीतने के बावजूद भी उस शारीरिक बनावट में कोई अंतर नहीं आया है। यहां चित्रित 2.5 करोड़ वर्ष पुराना अंबर इसका प्रमाण है।

हॉर्सशू क्रैब बीटल

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 11 मिलीमीटर (0.4 इंच) गुणा 9 मिलीमीटर (0.3 इंच)

स्थान : सैंटियागो के पास के पहाड़, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

हॉर्सशू क्रैब बीटल सामान्यतः चींटियों की बांबी के निकट रहते हैं। 2.5 करोड़ वर्ष पुराना यह फॉसिल यह साबित करता है कि ये कीड़े कभी भी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे। वर्षों पहले जीवित इस बीटल और आज के समय में जीवित इसके प्रतिरूपों में कोई फर्क नहीं है।

सिलिऑनिड वास्प (एक प्रकार का ततैया)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 17 मिलीमीटर (0.6 इंच) गुणा 10 मिलीमीटर (0.3 इंच)

स्थान : सैंटियागो के पास के पहाड़, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

सिलिऑनिड वास्प आमतौर पर पेड़ से गिर चुकी पत्तियों के नीचे रहते हैं। ये ततैये कीड़ों की कई प्रजातियों, मुख्य रूप से उनके अंडों, पर परजीवी की तरह निर्भर रहते हैं। यह सिलिऑनिड ततैया, उड़ते समय फॉसिल में तब्दील हो गया था, और आज के समय में जीवित नमूनों से अलग नहीं है।

अन्य जंतुओं की तरह, अंबर में सुरक्षित 2.5 करोड़ वर्ष पुराना यह सिलिऑनिड ततैया दर्शाता है कि ये कीड़े विकसित नहीं हुए।
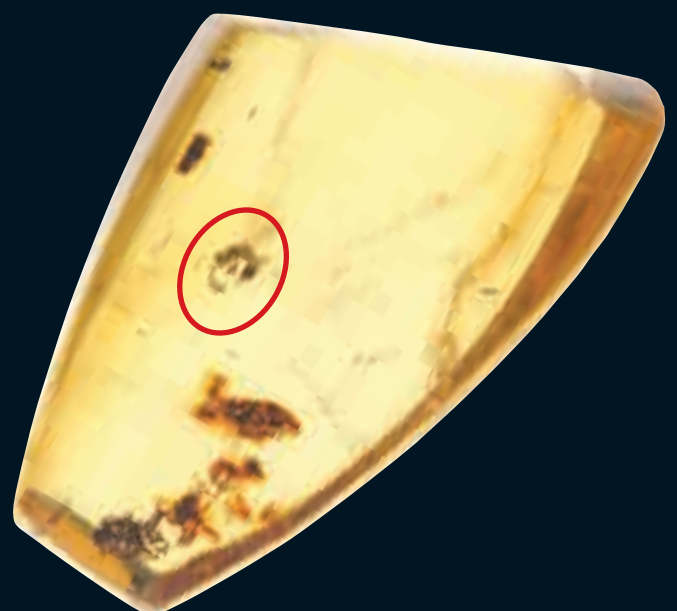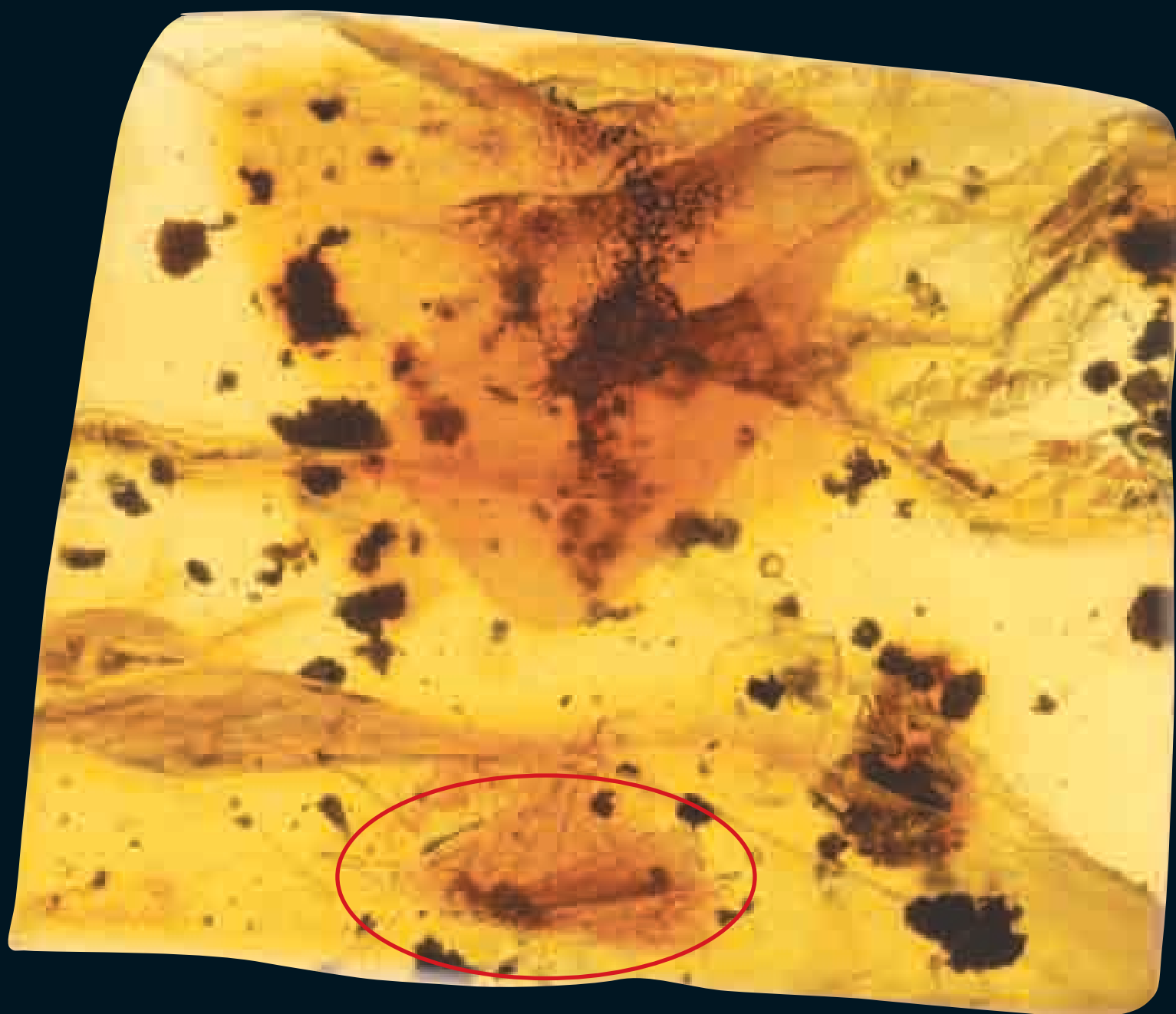
एसेसिन बग (चूसने वाला एक घातक कीड़ा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 18 मिलीमीटर (0.7 इंच) लंबा, 14 मिलीमीटर (0.5 इंच) चौड़ा

स्थान : सैंटियागो के पास के पहाड़, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इस अंबर में एसेसिन बग का दुलर्भ नमूना सुरक्षित है। यह कीड़ा जिस तरह से भोजन करता है उसे बाह्य पाचन के नाम से जाना जाता है। ये एक ऐसा स्राव छोड़ते हैं जिससे इनके शिकार के ऊत्तक तरल हो जाते हैं, जिसके बाद ये इस घोल को पी जाते हैं। यह जहर बहुत तेजी से काम करता है और कुछ ही सेकंड में शिकार को शक्तिहीन बना देता है। कुछ एसेसिन बग सक्रिय तौर पर अपने शिकार की तलाश करते हैं, जबकि दूसरे घात लगाकर उसका इंतजार करते हैं। इस नमूने के पंखों के रंग अच्छी तरह सुरक्षित बचे हुए हैं।

आज के समय में जीवित एसेसिन बग में वही विशेषताएं हैं, जो आज से 2.5 करोड़ वर्ष पहले जीवित इन कीड़ों में थीं। यहां चित्रित फॉसिल इस बात का प्रमाण है कि एसेसिन बग उन्हीं विशेषताओं के साथ लाखों वर्षों से बचे हुए हैं, और कभी परिवर्तित नहीं हुए।
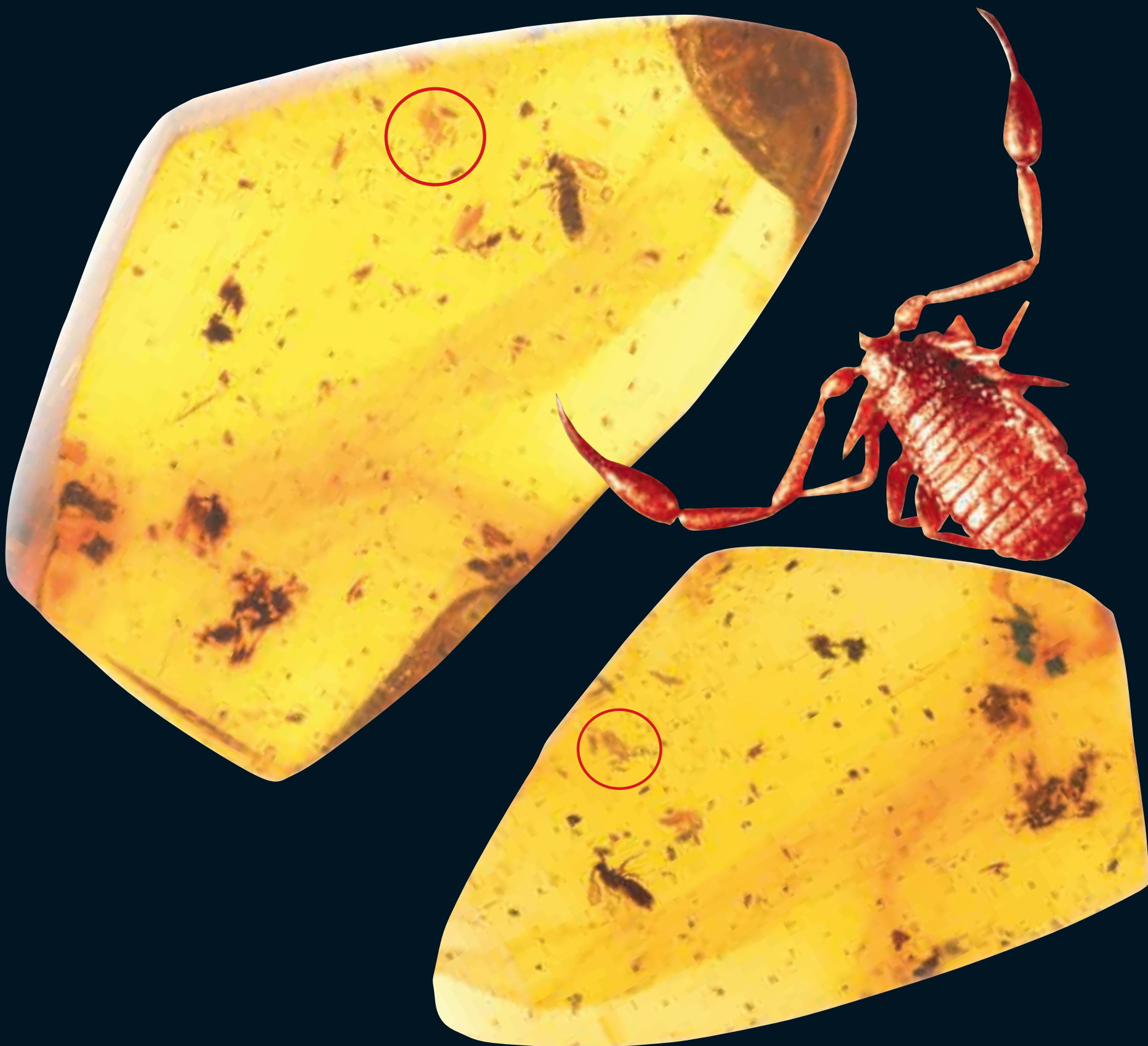
स्यूडोस्कॉर्पियन (देखने में बिना पूंछ के बिच्छू जैसे विषरहित, रीढ़हीन, संधिपाद जीव)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 17 मिलीमीटर (0.6 इंच) लंबा, 11 मिलीमीटर (0.4 इंच) चौड़ा

स्थान : सैंटियागो के पास के पहाड़, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

स्यूडोस्कॉर्पियन वास्तव में बिच्छु जैसे दिखने वाले अष्टपाद जीव हैं, लेकिन इनकी बिच्छु जैसी लंबी पूंछ और डंक नहीं होते, वे शिकार को पकड़ने के लिए अपने नाखुनों का प्रयोग करते हैं। स्यूडोस्कॉर्पियन को गिरी हुई पत्तियों, मिट्टी और चट्टानों के नीचे ढूंढ़ा जा सकता है। स्यूडोस्कॉपिर्यन की लगभग 2,000 भिन्न प्रजातियां हैं।

2.5 करोड़ वर्ष पूर्व विचरण करने वाले स्यूडोस्कॉर्पियन और आज जीवित उनके प्रतिरूपों में कोई अंतर नहीं है। शारीरिक बनावट में कोई भी अंतर न होना यह साबित करता है कि ये अष्टपाद जीव विकसित नहीं हुए थे।

पंख वाली चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

पंख वाली चींटी के 5 से 8 मिलीमीटर (1.9 से लेकर 3.1 इंच)लंबे पंख होते हैं। ये अपनी बांबी भोजन और पानी के स्रोत के नजदीक बनाती हैं। इन चींटियों में लाखों वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है।

2.5 करोड़ वर्ष पुराने अंबर में सुरक्षित चींटी का यह फॉसिल बताता है कि ये कीड़े लाखों वर्षों से एक समान रहे हैं, अन्य शब्दों में, ये क्रमिक–विकास से नहीं गुज़रे।

फायर बीटल, मिलीपीड (सैकड़ों पैरा वाला कीड़ा), और एक मकड़ी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 15 मिलीमीटर (0.5 इंच) गुणा 13 मिलीमीटर (0.5 इंच)

स्थान : सैंटियागो के पास के पहाड़, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

यह कीड़ा पायरोक्रोइडे परिवार से संबंधित है और आमतौर पर इसे फायर बीटल या अग्निशिखाओं के रंग वाले बीटल के रूप में जाना जाता है। इस नमूने में इनके नोंक वाले एंटीना आसानी से देखे जा सकते हैं। अंबर के इस टुकड़े में कनखजूरे और एक मकड़ी के फॉसिल भी हैं।

फायर बीटल, कनखजूरे और मकड़ियां लाखों वर्षों से अपरिवर्तित रहे हैं, जिससे यह पता चलता है कि जीवित प्राणी अन्य चरणों से विकसित नहीं हुए, बल्कि उन्हें, उनकी तमाम विशेषताओं के साथ एक बार में बनाया गया था।
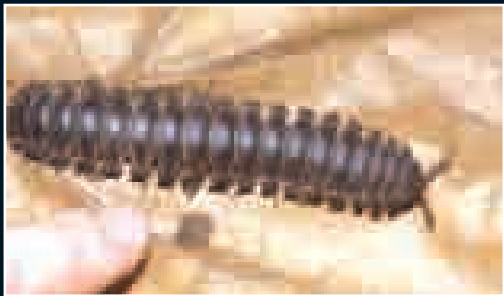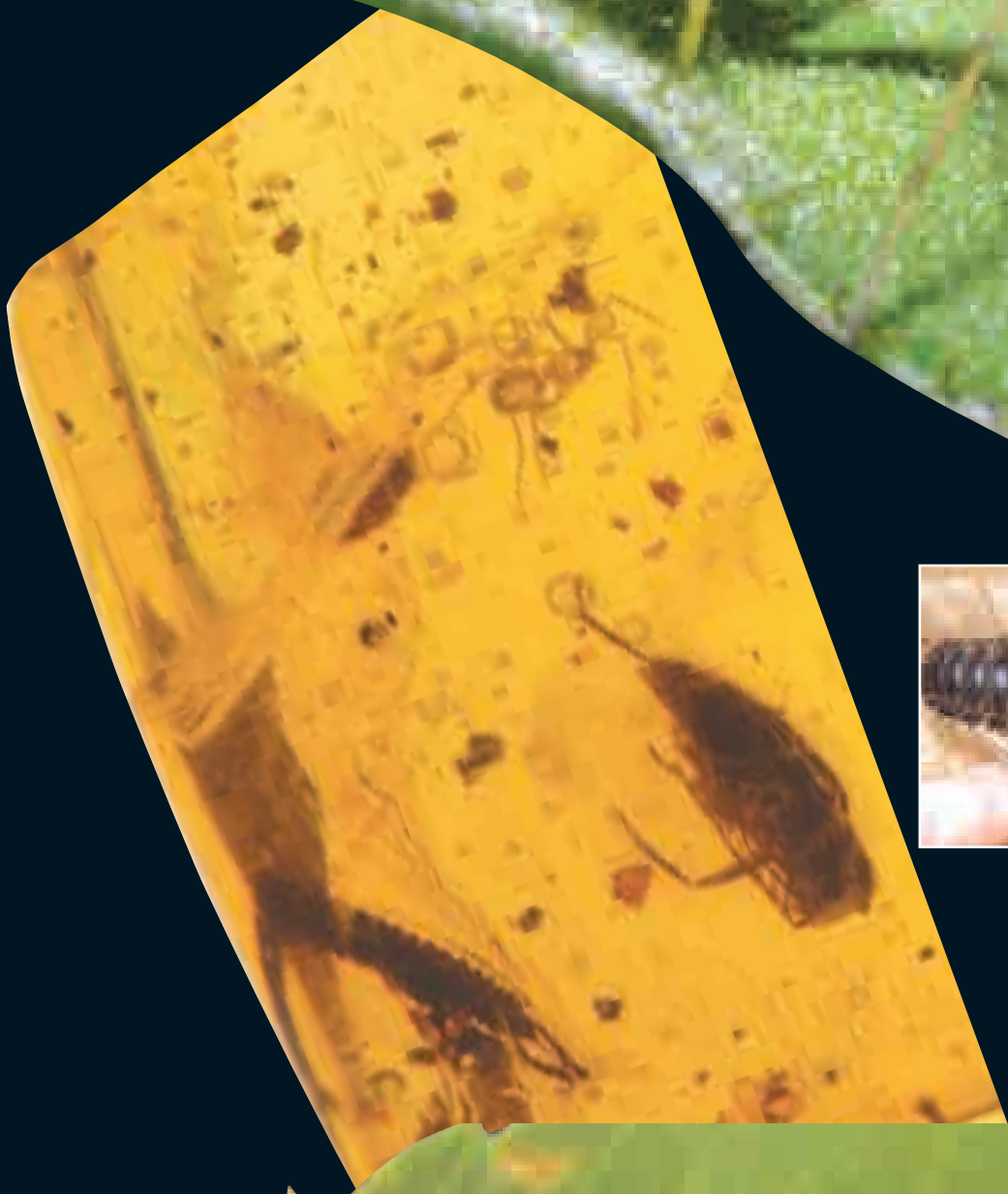
छोटा परजीवी ततैया और हंपबैक्ड फ्लाई (कूबड़दार मक्खी)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

परजीवी ततैये और कूबड़दार मक्खी का 2.5 करोड़ वर्ष पुराना यह फॉसिल इस बात का सबूत है कि अन्य जीवों की तरह ये प्रजातियां भी विकसित नहीं हुईं। ये कीड़े लाखों वर्षों से एक समान हैं और इनमें कोई परिवर्तन नहीं आया है।

पैरासिटिक वास्प (परजीवी ततैया)

दो डंकविहीन मधुमक्खियां और एक प्लांटहॉपर

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

अंबर में सुरक्षित दो डंकविहीन मधुमक्खियों के ये फॉसिल आज जीवित इनके प्रतिरूपों के समान हैं।

गॉल नैट (पेड़ों को नुकसान पहुंचाने वाला भुनगा)

पंखों वाली चींटी
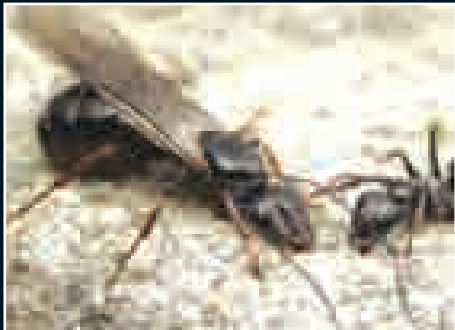
पंख वाली पांच चींटियां, गॉल नैट (पेड़ों को नुकसान पहुंचाने वाला भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष से बिना किसी परिवर्तन के जीवित पंख वाली चींटियां और गॉल नैट, क्रमिक–विकास के सिद्धांत के दावों को ध्वस्त करते हैं।

मकड़ी और मकड़ी का जाला

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

जीवन के अन्य रूपों की तरह मकड़ियों अपनी शारीरिक बनावट में बिना किसी बदलाव के कई सौ लाख वर्षों से जीवित हैं। अंबर में सुरक्षित यह मकड़ी और मकड़ी का जाला 2.5 करोड़ वर्ष पुराना है। आज के समय में जीवित नमूनों के समान ये फॉसिल हमें बताते हैं कि उनकी रचना की गई थी और वे विकसित नहीं हुए थे।

बार्कलाउस (पेड़ की छाल पर रहने वाला कीड़ा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

हमारे पास कीड़ों की हजारों प्रजातियों से जुड़े फॉसिलों के असंख्य नमूने हैं सभी फॉसिल दर्शाते हैं कि जब ये कीड़े पहली बार अस्तित्व में आए थे, तब भी उनमें वही विशेषताएं रही हैं और यह कि वे विकसित नहीं हुए। इन फॉसिलों में से एक 2.5 करोड़ वर्ष पुराना अंबर का यह टुकड़ा है जो यह दर्शाता है कि बार्कलूस लाखों वर्षों से एक समान रहे हैं।

बार्कबीटल (पेड़ की छाल पर रहने वाला बीटल)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष पहले जीवित बार्कबीटल आज जीवित बार्कबीटल के समरूप थे। ये कीड़े, जो लाखों वर्षों से अपरिवर्तित हैं, इसका एक उदाहरण हैं कि जीवित प्राणी विकसित नहीं हुए थे बल्कि उन्हें बनाया गया था।
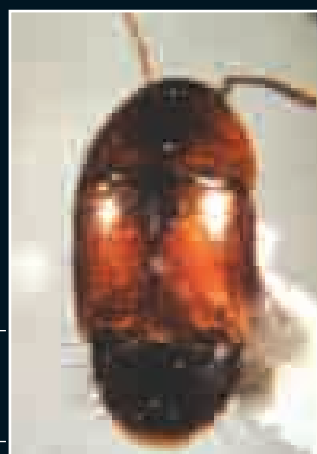
हॉर्सशू क्रैब बीटल

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

सभी फॉसिल डारविनवादियों को खारिज करते हैं, जो कि यह दावा करते हैं कि जीवित प्राणी धीरे–धीरे एक–दूसरे से विकसित हुए। लेकिन फॉसिल दर्शाते हैं कि जीवित प्राणी अपनी संपूर्ण और त्रुटिरहित संरचनाओं के साथ अचानक प्रकट हुए, और जब तक वे जीवित रहे उनमें कोई बदलाव नहीं आया। डारविनवादी, ईश्वर द्वारा रचना किए जाने के इस स्पष्ट प्रमाण की व्याख्या कभी नहीं कर सकते।

अंबर में फॉसिल बन चुका यह हॉर्सशू क्रैब बीटल उन नमूनों में से एक है, जिनका जवाब क्रमिक–विकासवादियों के पास नहीं है। 2.5 करोड़ वर्ष पुराना यह हॉर्सशू क्रैब बीटल क्रमिक–विकास को अस्वीकार करता है।

पंख वाली चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इस अंबर में पंख वाली एक चींटी का फॉसिल है। आज जीवित पंख वाली चींटियों और लाखों वर्ष पहले जीवित पंख वाली चींटियों में कोई अंतर नहीं है – यह इस बात का प्रमाण है कि पंख वाली चींटियां विकसित नहीं हुईं।
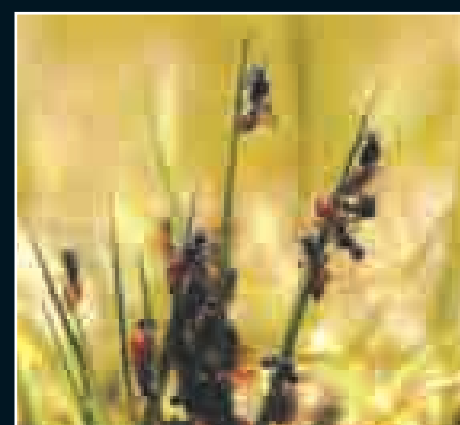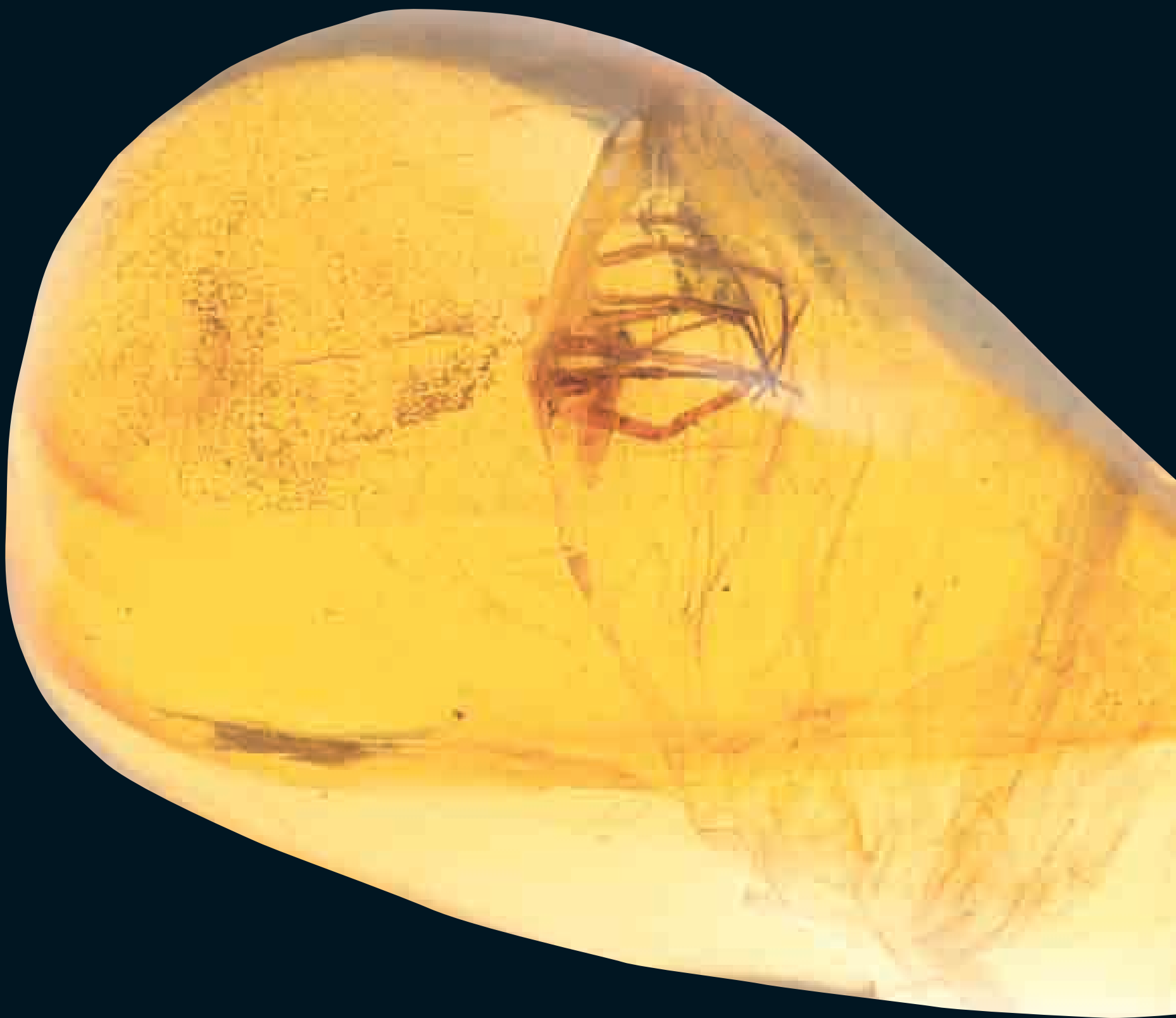
मकड़ी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

आज के समय में जीवित मकड़ी में वे सभी विशेषताएं हैं जो लाखों वर्ष पहले जीवित मकड़ियों में थी। अंबर में सुरक्षित 2.5 करोड़ वर्ष पुरानी मकड़ी का फॉसिल इसके अनेक प्रमाणों में से एक है।
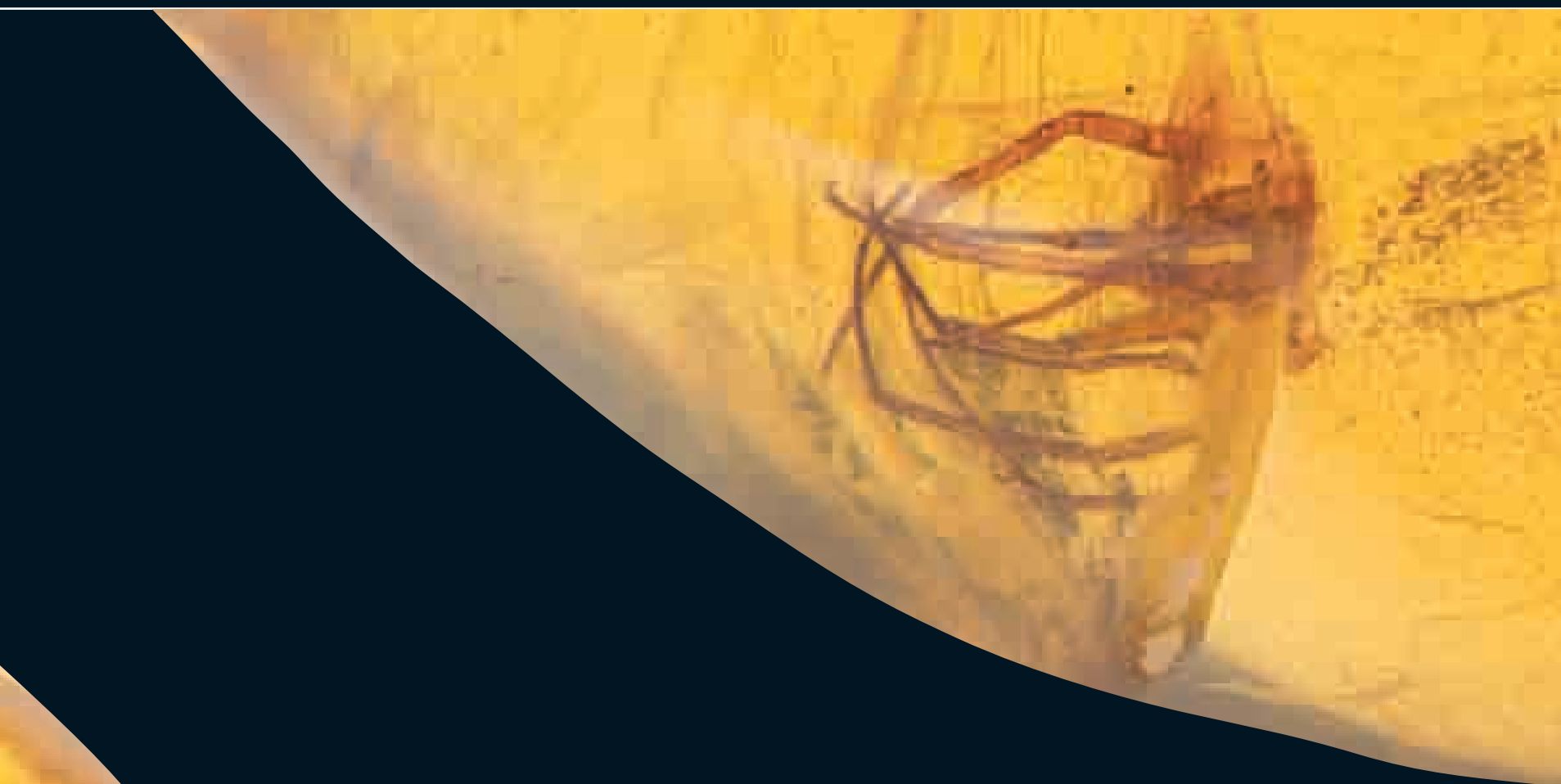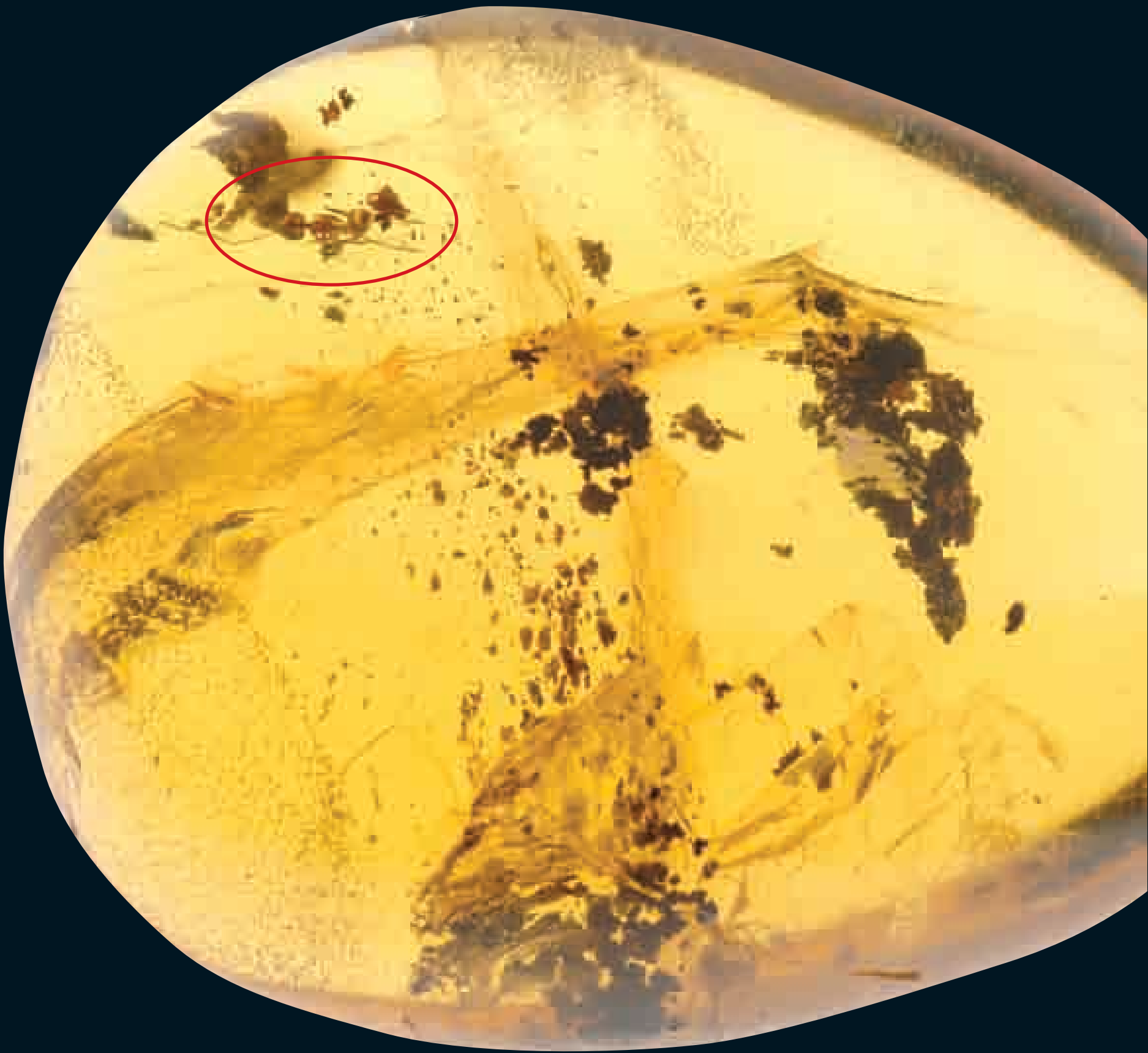
मजदूर चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

चींटियां धरती पर पाए जाने वाली असंख्य प्रजातियों में से एक हैं। फॉसिल रिकॉर्डों से पता चलता है कि लाखों वर्षों से चींटियां एक समान हैं और उनमें कभी कोई बदलाव नहीं हुआ – अन्य शब्दों में, वे कभी विकसित नहीं हुईं। यहां चित्रित 2.5 करोड़ वर्ष पुरानी मजदूर चींटी का फॉसिल इस तथ्य की पुष्टि करता है।

मजदूर चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष पहले जीवित रही मजदूर चींटियों और आज के समय में जीवित मजदूर चींटियों में कोई अंतर नहीं है। लाखों वर्ष बीतने के बावजूद एक समान रहीं मजदूर चींटियां इसकी सबूत हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

फंगस नैट (फफूंद में पाया जाने वाला गहरे रंग के पंख वाला भुनगा)
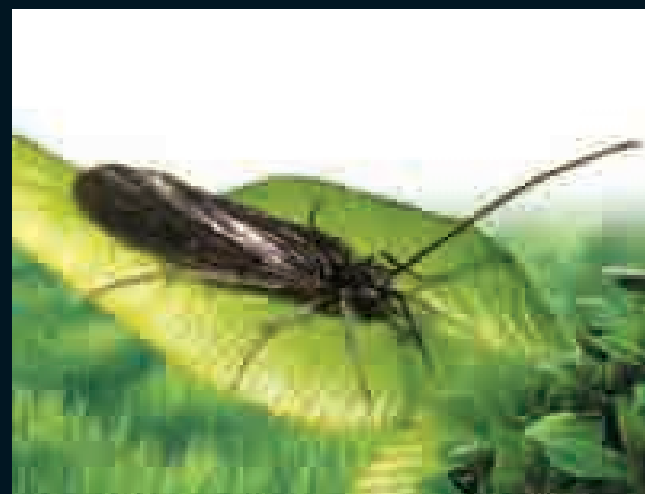
कैडिसफ्लाई, गहरे रंग के पंख वाले तीन फंगस नैट

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

यहां अंबर में सुरक्षित कैडिस फ्लाई और फंगस नैट चित्रित हैं। ये जीवित प्राणी लाखों वर्षों से आज भी जीवित हैं और उनकी संरचना में लेश मात्र भी परिवर्तन भी नहीं हुआ है। यह तथ्य कि ये कीड़े कभी नहीं बदले इस बात की ओर संकेत करता है कि वे कभी विकसित नहीं हुए।

पंख वाली दीमक

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

यहां चित्रित 2.5 करोड़ वर्ष पुराने अंबर में पंख वाली दीमक का फॉसिल है। इन जंतुओं में लाखों वर्षों से समान त्रुटिहीन तंत्र है, और उनकी संरचनाओं में मामूली–सा परिवर्तन भी नहीं आया है।
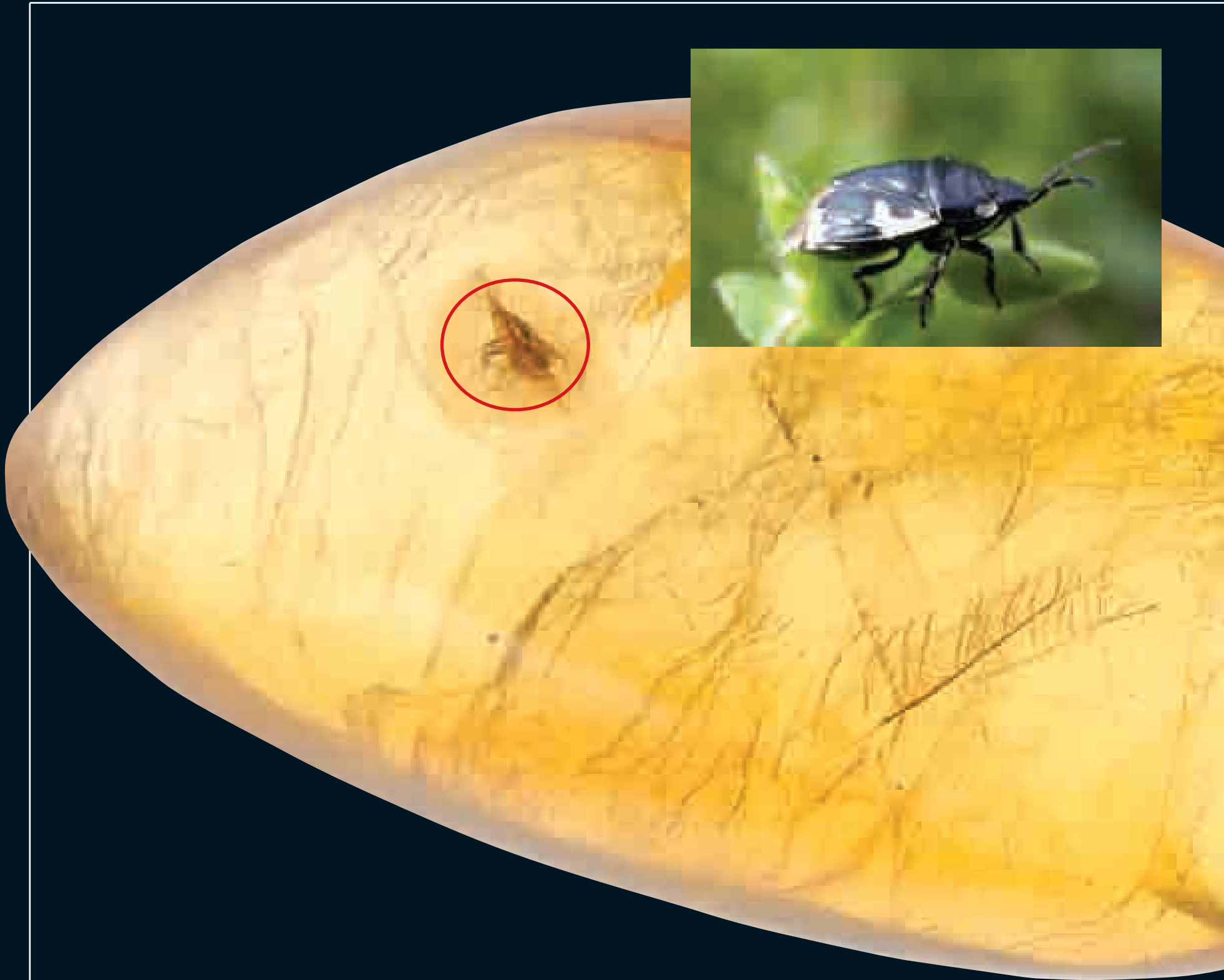
ट्रू बग्स (खटमल जैसे कीड़े)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

हेमिपेट्रा वर्ग के कीड़े, जिनकी 48,000 से ज्यादा प्रजातियां हैं, फॉसिल रिकॉर्ड में अचानक प्रकट हुए और लाखों वर्षों से बिना किसी परिवर्तन के जीवित रहे। कीड़ों की अन्य प्रजातियों की तरह, ये कीड़े क्रमिक–विकास को खारिज करते हैं।

मकड़ी और मकड़ी का जाला

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इस अंबर में फॉसिल बन चुकी मकड़ी और उसके जाले को देखा जा सकता है। 2.5 करोड़ वर्ष पुरानी मकड़ी और जाला आज जीवित मकड़ियों और जालों जैसे ही हैं, जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत को पूरी तरह खारिज करते हैं।

दो पंखदार चींटियां

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

पंख वाली चींटियां, जो कि 2.5 करोड़ वर्ष से एक समान रही हैं, उन फॉसिल नमूनों में शामिल हैं जो यह बताते हैं कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत अमान्य है। क्रमिक–विकासवादियों के पास उन जीवित प्राणियों के बारे स्पष्टीकरण देने का कोई वैज्ञानिक तरीका नहीं है जो लाखों वर्षों से परिवर्तित नहीं हुए हैं।

बीटल, पर वाली दीमक

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

कीड़ों की यह प्रजातियों, जिनमें लाखों वर्षों से कोई बदलाव नहीं हुआ है, क्रमिक–विकास के सिद्धांत के सामने एक गतिरोध उत्पन्न करती हैं। फॉसिल रिकॉर्ड में हमेशा एक सी विशेषताओं के साथ नजर आने वाली प्रजातियां उन प्रमाणों में शामिल हैं, जो यह बताते हैं कि जीवित प्राणी कभी क्रमिक–विकास से नहीं गुज़रे। यहां चित्रित अंबर में फंसे बीटल और पर वाली दीमक 2.5 करोड़ वर्ष पुराने हैं, और ये आज जीवित इनके प्रतिरूपों से बिल्कुल भिन्न नहीं हैं।
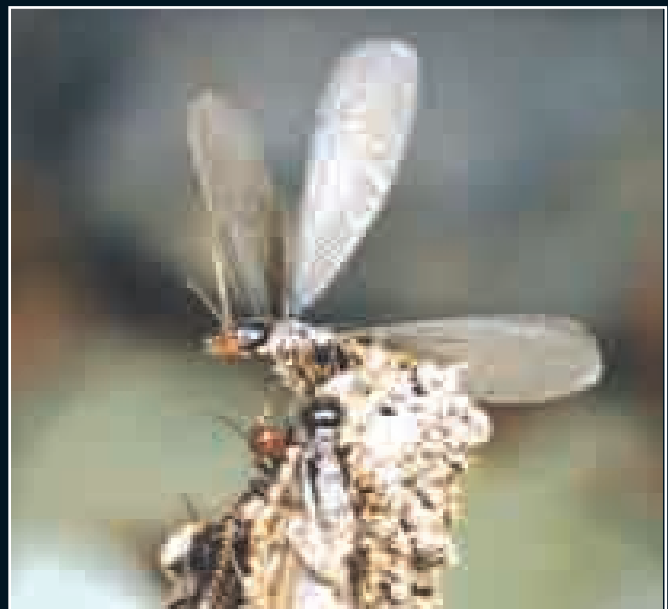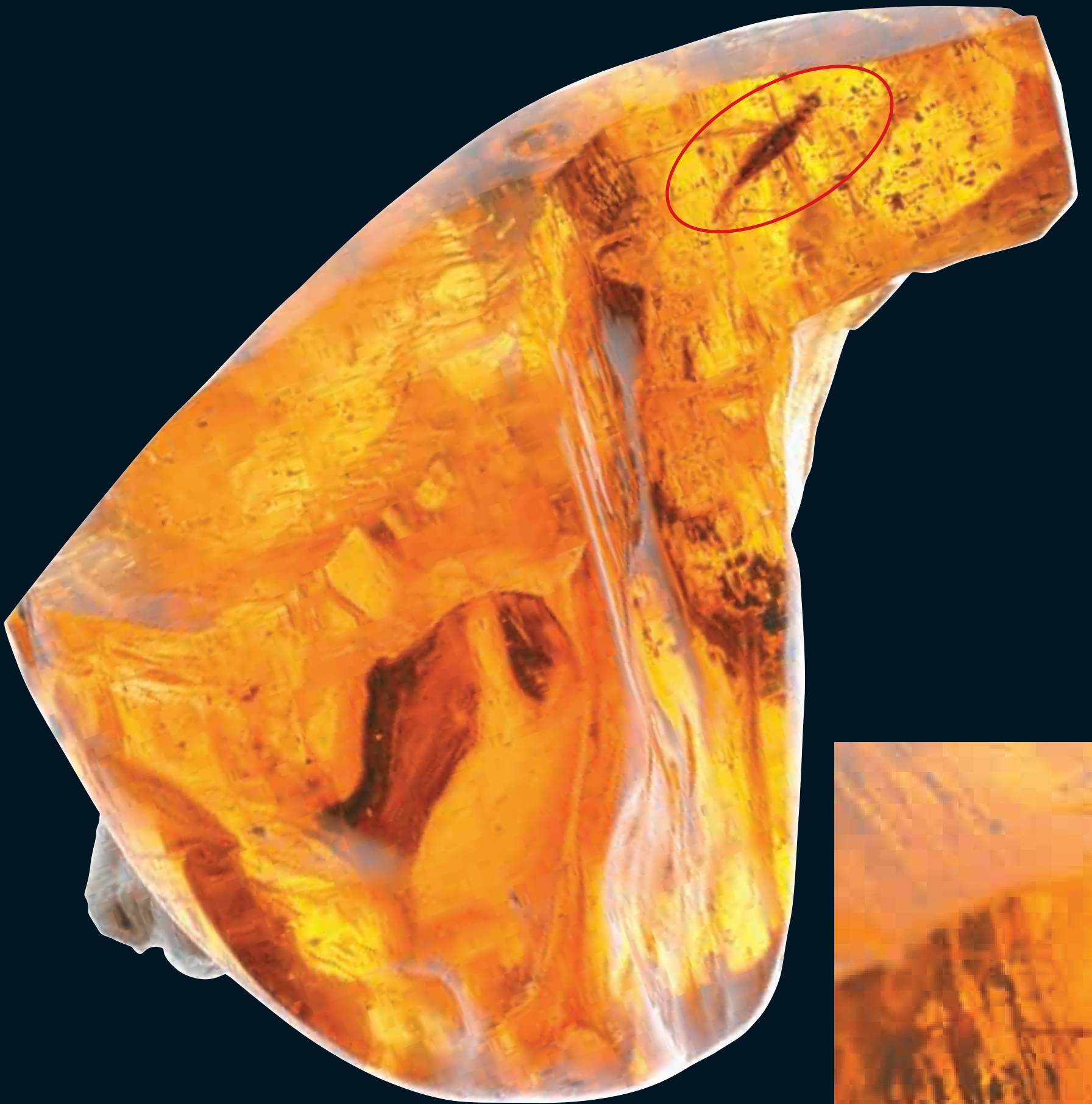
ग्रासहॉपर (टिड्डा), स्मॉल बीटल (छोटा भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

टिड्डों के फॉसिल नमूनों से पता चलता है कि वे टिड्डे आज के टिड्डों के समान ही थे। यह तथ्य कि 2.5 करोड़ वर्ष पहले जीवित टिड्डे आज के टिड्डों से समानता रखते थे, यह दर्शाता है कि उनका क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।
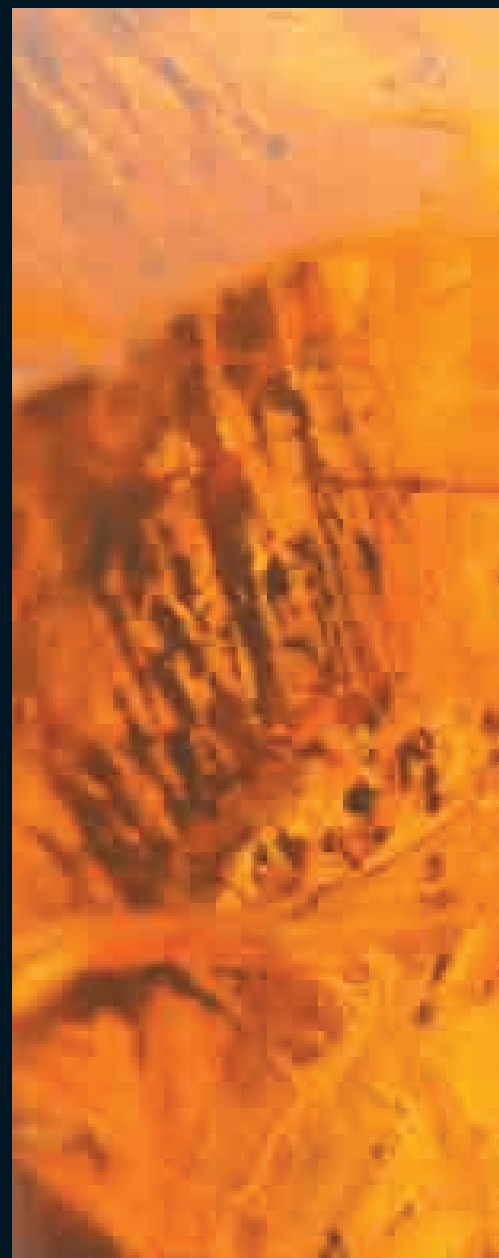
Leafhopper
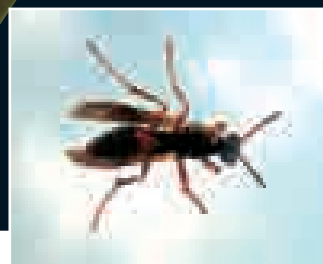
सेलियोनिड ततेया, लीफहॉपर (पत्ती खाने वाला टिड्डा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

सेलियोनिड ततैया और लीफहॉपर के 2.5 करोड़ वर्ष पहले अंबर (पेड़ से निकलने वाला लीसा जैसा पदार्थ) में फॉसिल बन गए। सेलियोनिड ततैया और लीफहॉपर का कई करोड़ वर्ष में भी न बदलना क्रमिक–विकास को झुठलाता है।

सिलियॉनिड ततैया

पिनहोल बोरर बीटल (बेधक भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

क्रमिक–विकासवादी एक भी फॉसिल का उदाहरण सामने नहीं रख सकते कि बीटल का क्रमिक–विकास हुआ। दसियों हजार फॉसिल यह दिखाते हैं कि बीटल का क्रमिक–विकास नहीं हुआ। सभी अन्य जीवों की तरह यह कीड़ा भी अपने पूरे लक्षणों के साथ अचानक प्रकट हुए और करोड़ों वर्षों से अपरिवर्तित हैं। इसे प्रमाणित करने वाली खोजों में से एक यह 2.5 करोड़ वर्ष पुराना अंबर में फॉसिल बना पिनहोल बोरर बीटल है।
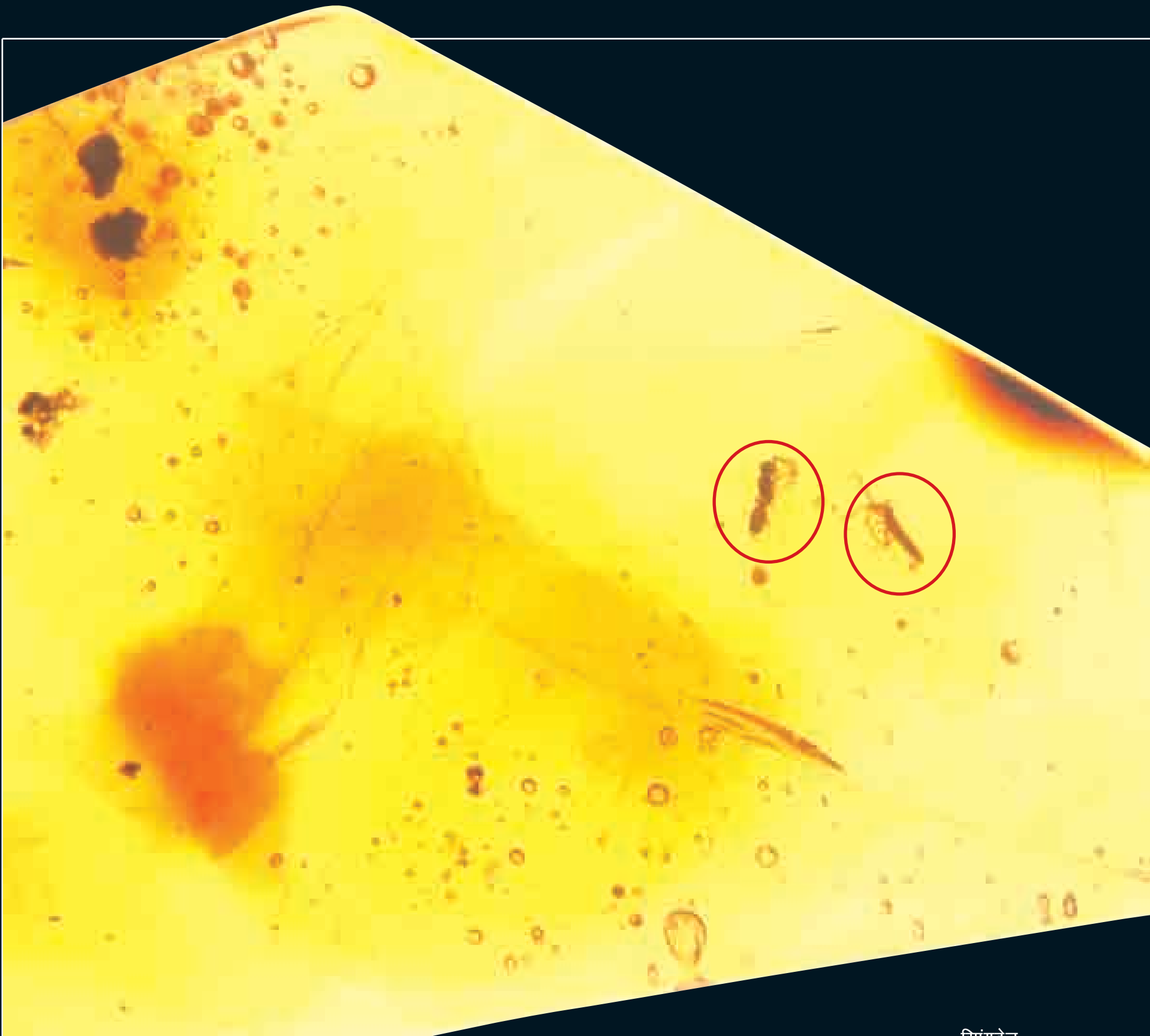
स्प्रिंगटेल

छोटा परजीवी ततैया, स्प्रिंगटेल

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

क्रमिक–विकास के सिद्धांत को फॉसिल खोजों से आमना–सामना होने पर बड़ी पराजय का सामना करना पड़ा है। इसका एक उदाहरण चित्र में दर्शाया 2.5 करोड़ वर्ष पुराना अंबर में फॉसिल बना परजीवी ततैया और स्प्रिंगटेल है। आज के जीवित नमूनों से ये अलग नहीं हैं। ये प्राचीन ऑर्थोपॉड (संधिपाद जीव)रचना के तथ्य की ही ओर इशारा करते हैं।
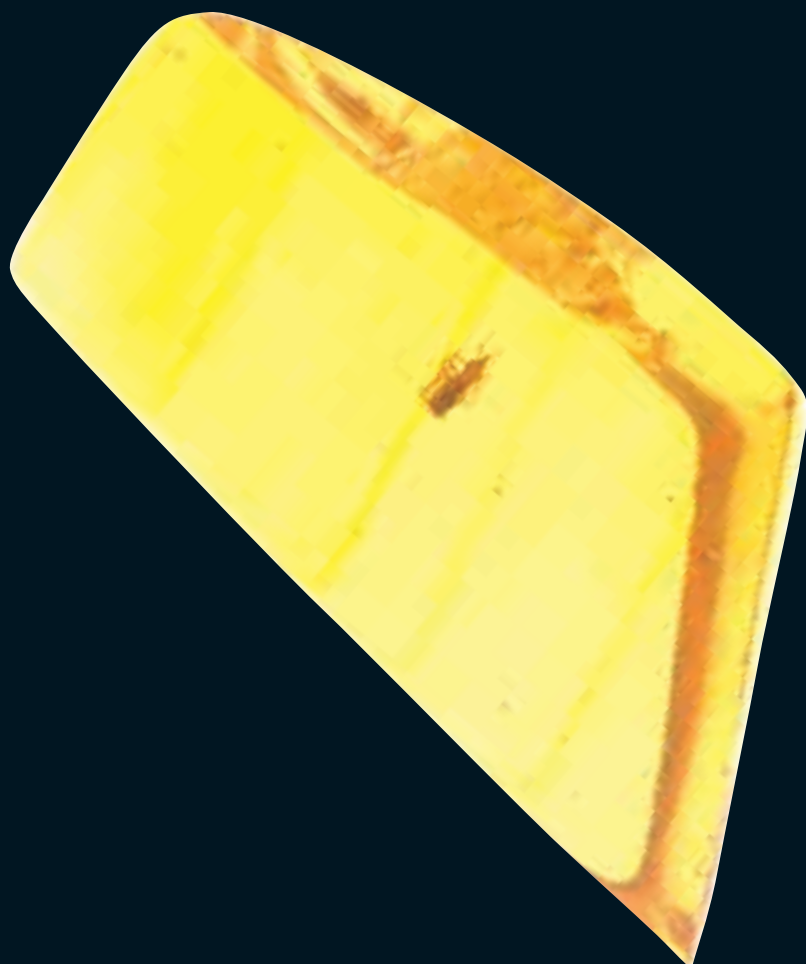
टेरोमेलिड ततैया

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

टेरोमेलिड ततैया कई करोड़ वर्षों में भी नहीं बदले – दूसरे शब्दों में कहें तो उनका कभी भी क्रमिक–विकास नहीं हुआ। यह निर्विवाद वैज्ञानिक सच्चाई फॉसिल रिकॉर्ड से सामने आई है। इसका एक उदाहरण चित्र में दिखाया गया 2.5 करोड़ वर्ष पुराना ततैया का फॉसिल है।
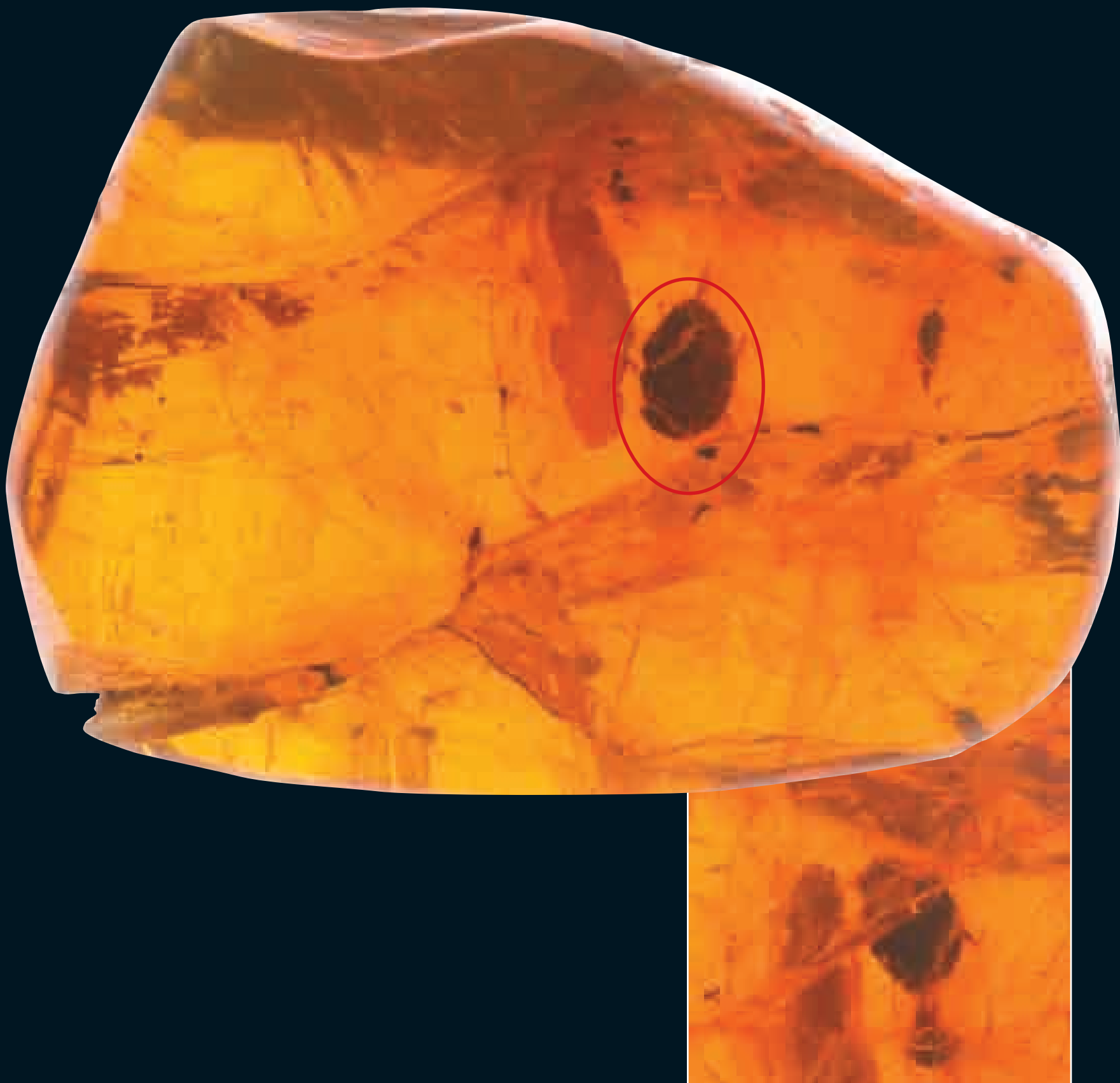
रोव बीटल (इधर–उधर फिरने वाला भुनगा), बीटल

उम्र : 2.55 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

रोव बीटल कॉलियोपट्रा श्रेणी का है। रोव बीटल के साथ ही अन्य छोटा बीटल अंबर में फॉसिल बन गया है। रोव बीटल, जो 2.5 करोड़ वर्ष से नहीं बदले हैं, क्रमिक–विकासवादियों के दावों को झुठलाते हैं।

उड़ने वाला नर चींटा

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 13 मिलीमीटर (0.5 इंच) लंबाई, 7 मिलीमीटर (0.2 इंच) चौड़ाई

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

उड़ने वाली नर चींटियों या नर मधुमक्खियों को रानियों के साथ प्रजनन के लिए कॉलोनियों से भेजा गया था। अंबर में जमे हुए इस 2.5 करोड़ वर्ष पूर्व जीवित चींटे के फॉसिल और आज पाये जाने वाले उड़ने वाले चींटे में कोई अंतर नहीं है।

गॉल नेट (पेड़ों को नुकसान पहुंचाने वाला भुनगा)
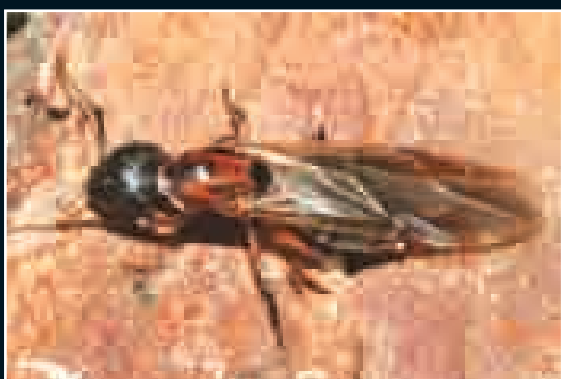
पंखदार चींटी, दो गाल नैट (पेड़ों को नुकसान पहुंचाने वाले भुनगे)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

गाल नैट मक्खी की एक प्रजाति है जो मच्छर से भी छोटी होती है। यहां पर दो गाल नैट 2.5 करोड़ वर्ष पहले फॉसिल बन गए थे। इनके साथ में एक पंखदार चींटी का फॉसिल है। पंखदार चींटियां और नैट, जो कई करोड़ वर्षों में भी नहीं बदले, इस बात के प्रमाणों में से एक हैं कि क्रमिक–विकास कभी भी नहीं हुआ।

गॉल नेट (पेड़ों को नुकसान पहुंचाने वाला भुनगा)
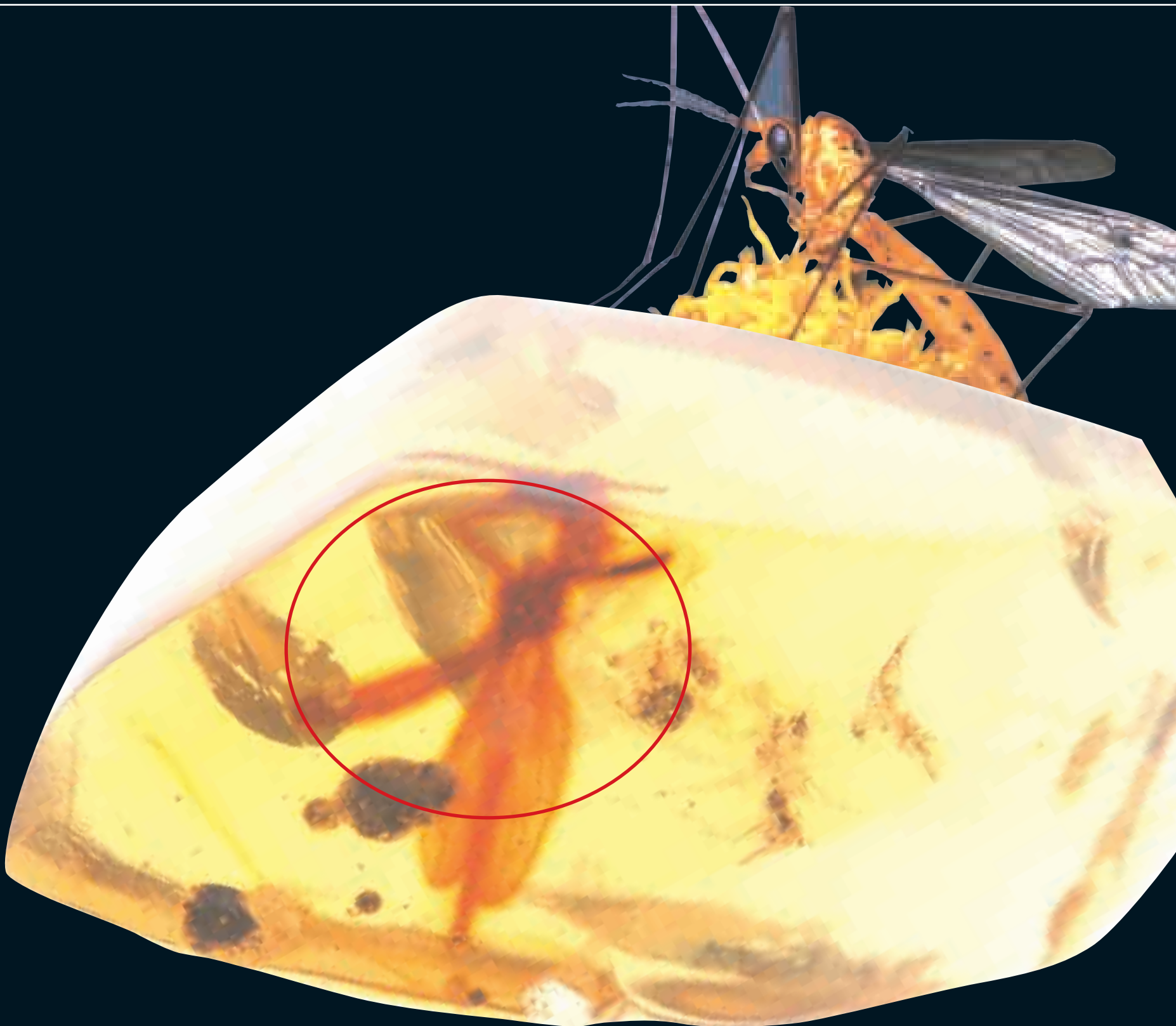
क्रेनफ्लाई (एक प्रकार की मक्खी)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष पूर्व पाई जाने वाली और आज की क्रेनफ्लाई में कोई अंतर नहीं है। चित्र में दिखाया गया अंबर में बना यह फॉसिल इसका एक संकेत है।

हंपबैक्ड फ्लाई (कूबड़दार मक्खी)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

हंपबैक्ड फ्लाई एक बहुत छोटी प्रजाति है जो फलों वाली मक्खी से मिलती–जुलती है। फॉसिल नमूनों की खोजों से पता चलता है कि हंपबैक्ड फ्लाई हमेशा इसी वर्तमान रूप में मौजूद रही। यह 2.5 करोड़ वर्ष पुराने अंबर वाली हंपबैक्ड फ्लाई इस तथ्य की पुष्टि करती है।
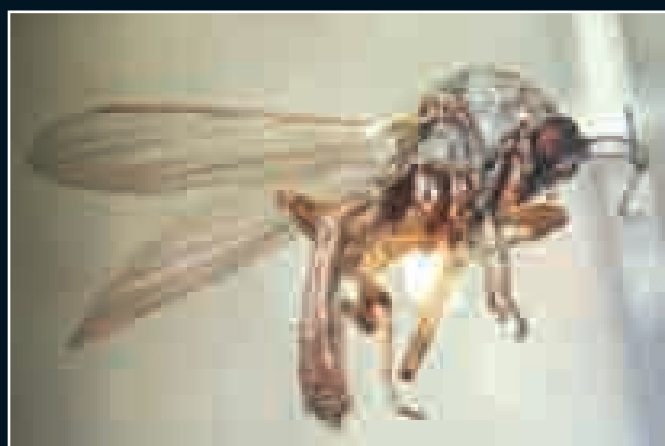
बाइटिंग मिज कीड़ा

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

आज के बाइटिंग मिज और कई करोड़ वर्ष पूर्व रहने वाले फॉसिल बन चुके इस बाइटिंग मिज में कोई अंतर नहीं है।

मॉथ फ्लाई

फंगस नैट

तीन मॉथ फ्लाई (पतंगे जैसी मक्खी), गहरे रंग के पंख वाला फंगस नैट

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

ये मॉथ फ्लाई और गहरे रंग के पंख वाला फंगस नैट एक ही समय फॉसिल बने।

2.5 करोड़ वर्ष पुराने ये जीव क्रमिक–विकासवादियों के दावों को निरस्त करते हैं।

मकड़ी का जाल, छोटी काली स्केवेंजर मक्खी (सड़ी–गली चीजें खाने वाली क्खी)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

कीटों में कई करोड़ वर्षों में भी कोई बदलाव नहीं आया, ऐसी ही खोजों में से एक यह 2.5 करोड़ वर्ष पुराना स्केवेंजर फ्लाई का फॉसिल है। कीट के साथ ही मकड़ी का एक जाल भी फॉसिल बन गया था। मकड़ी के जालों की भी मकड़ी की ही तरह कई करोड़ वर्ष से वही संरचना बनी हुई है।

दो स्प्रिंगटेल

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष पूर्व रहने वाली और आज पाई जाने वाली स्प्रिंगटेल में कोई अंतर नहीं है।

हंपबैक्ड फ्लाई

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

जैसे कि मछली हमेशा से मछली ही है, रेंगने वाले जीव हमेशा से रेंगने वाले जीव ही हैं और पक्षी हमेशा से पक्षी ही हैं, उसी तरह कीट हमेशा से कीट ही हैं। 2.5 करोड़ वर्ष से ज्यों की त्यों बनी हुई हंपबैक्ड फ्लाई से एक बार फिर इसी तथ्य को बल मिलता है।
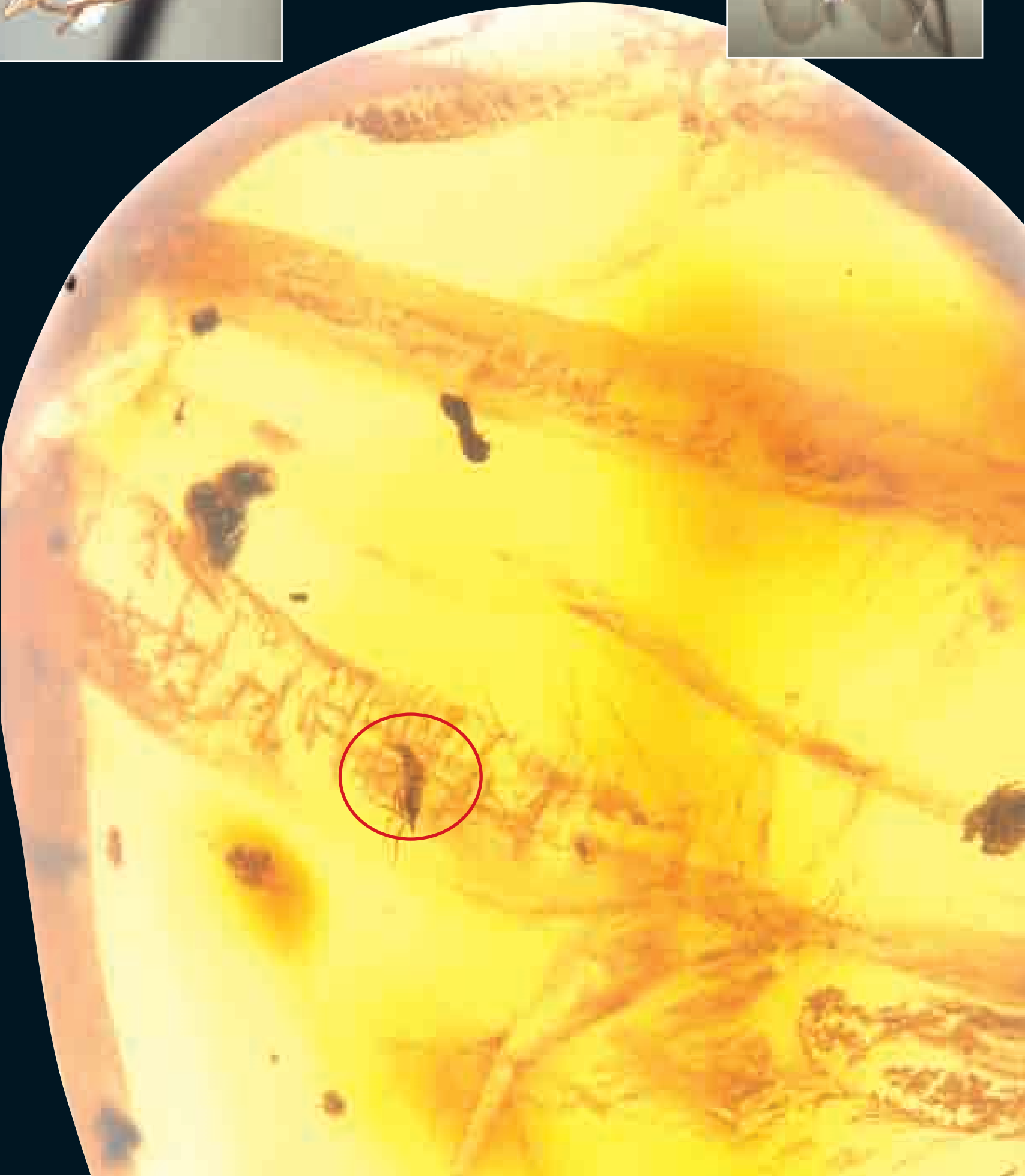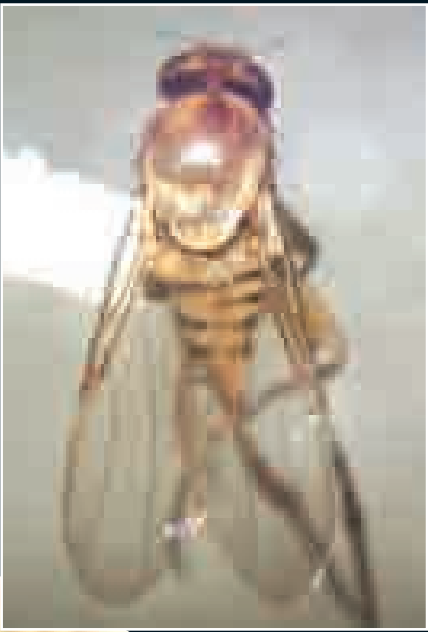
इयरविग, मजदूर चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इस अंबर में फॉसिल में तब्दील हो चुकी एक मजदूर चींटी एक इयरविग के साथ है। डरमैपटेरा श्रेणी के कीटों को आम तौर पर इयरविग कहा जाता है। 10 वर्गों में करीब 1800 प्रजातियां पहचानी जा चुकी हैं। सभी फॉसिलीकृत नमूनों में ध्यान आकर्षित करने वाली विशेषता यह है कि अन्य जीवों की ही तरह इनकी संरचना में भी कोई अंतर नहीं आया। इयरविग कई करोड़ वर्षों में भी परिवर्तित नहीं हुए, और इन्होंने क्रमिक–विकास को अमान्य साबित किया है।

मजदूर चींटी

इयरविग (कान का कीड़ा)

प्लांटहॉपर निम्फ

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

व्यस्क प्लांटहॉपर की ही तरह प्लांटहॉपर के निम्फ (लार्वा जैसी अल्पविकसित अवस्था) भी कई करोड़ वर्षों से वही लक्षण बनाए हुए हैं। चित्र में दिखाया गया 2.5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल नमूना दर्शाता है कि आज के लार्वा बहुत पहले के लार्वा के ही समान हैं।

मक्खी
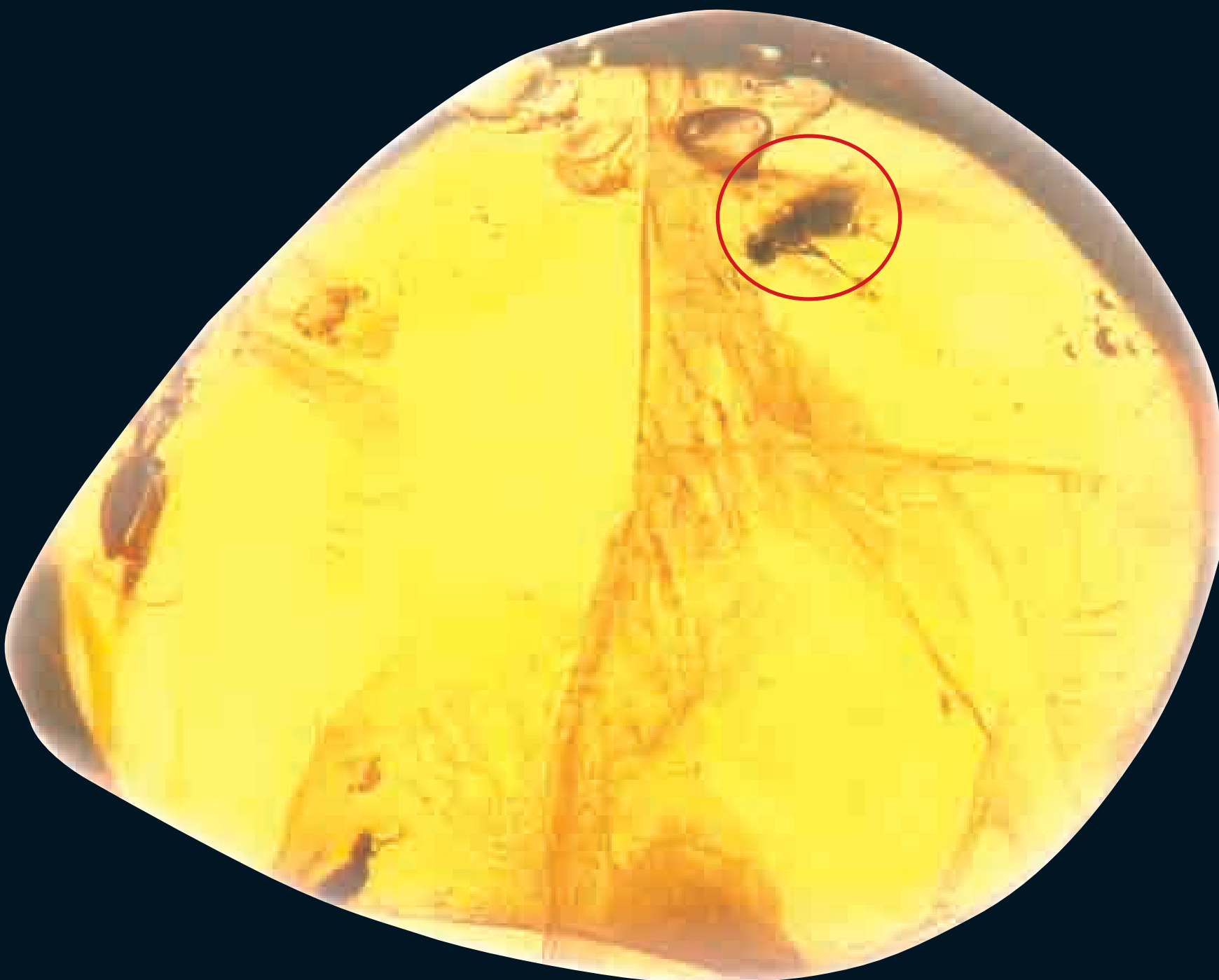
उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

मक्खियां हमेशा मक्खियां ही बनी रहीं, ये किसी अन्य जीव रूप से नहीं बने और न ही किन्हीं बीच की अवस्थाओं से होकर गुजरीं। चित्र में दिखाया गया अंबर में 2.5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल ऐसा ही एक उदाहरण है।
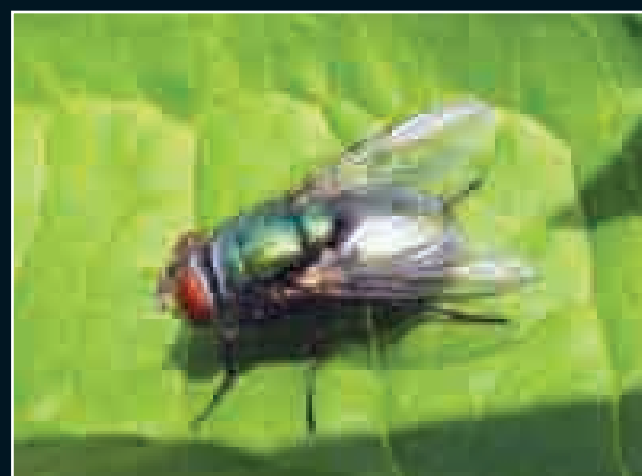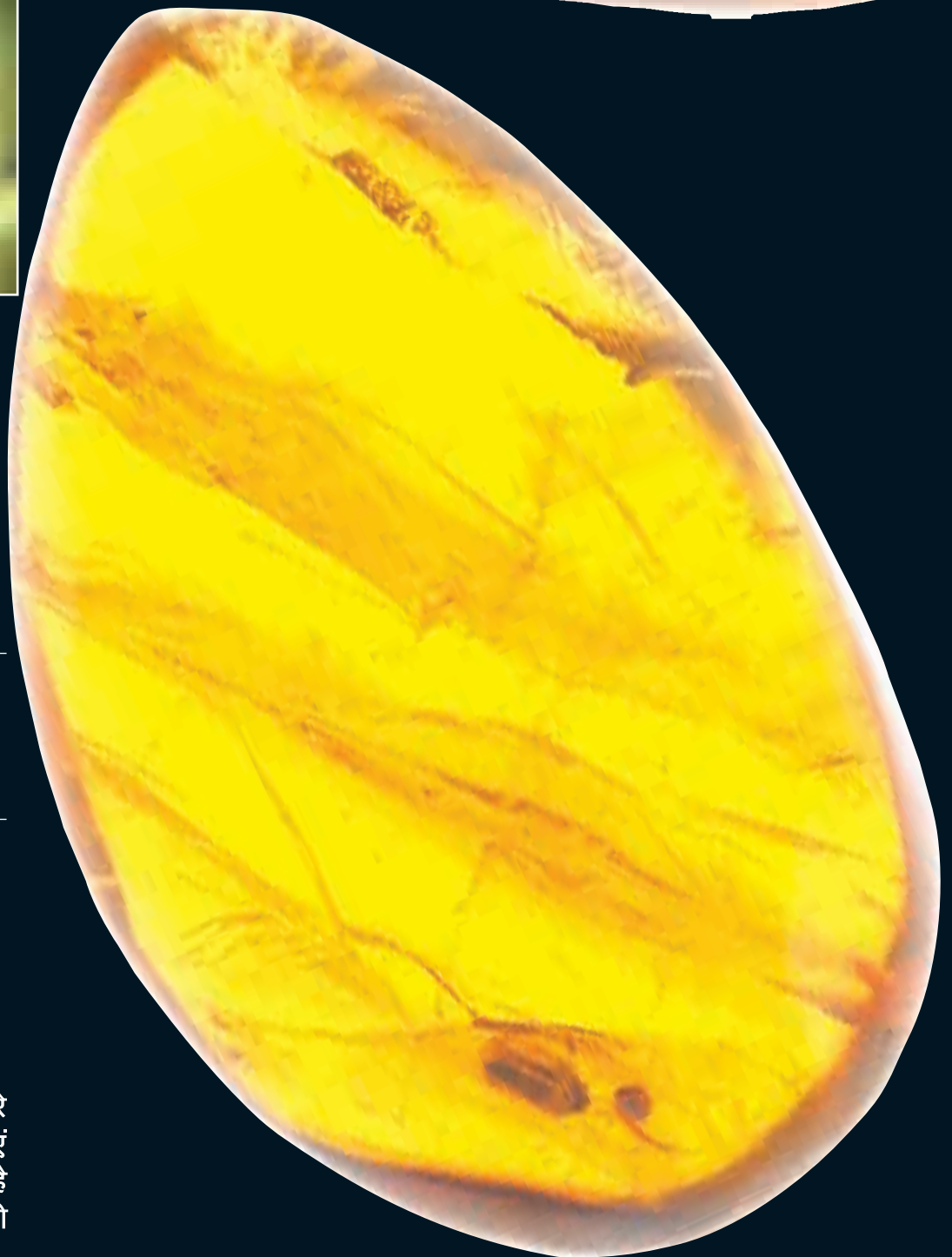
छोटी काली स्केवेंजर मक्खी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

मक्खी की सभी ज्ञात प्रजातियों की पूरे इतिहास के दौरान एकदम समान विशेषताएं बनी रहीं। फॉसिल रिकॉर्ड से पता चलता है कि अन्य सभी जीवों की ही तरह मक्खियों की रचना भी अल्लाह द्वारा की गई।
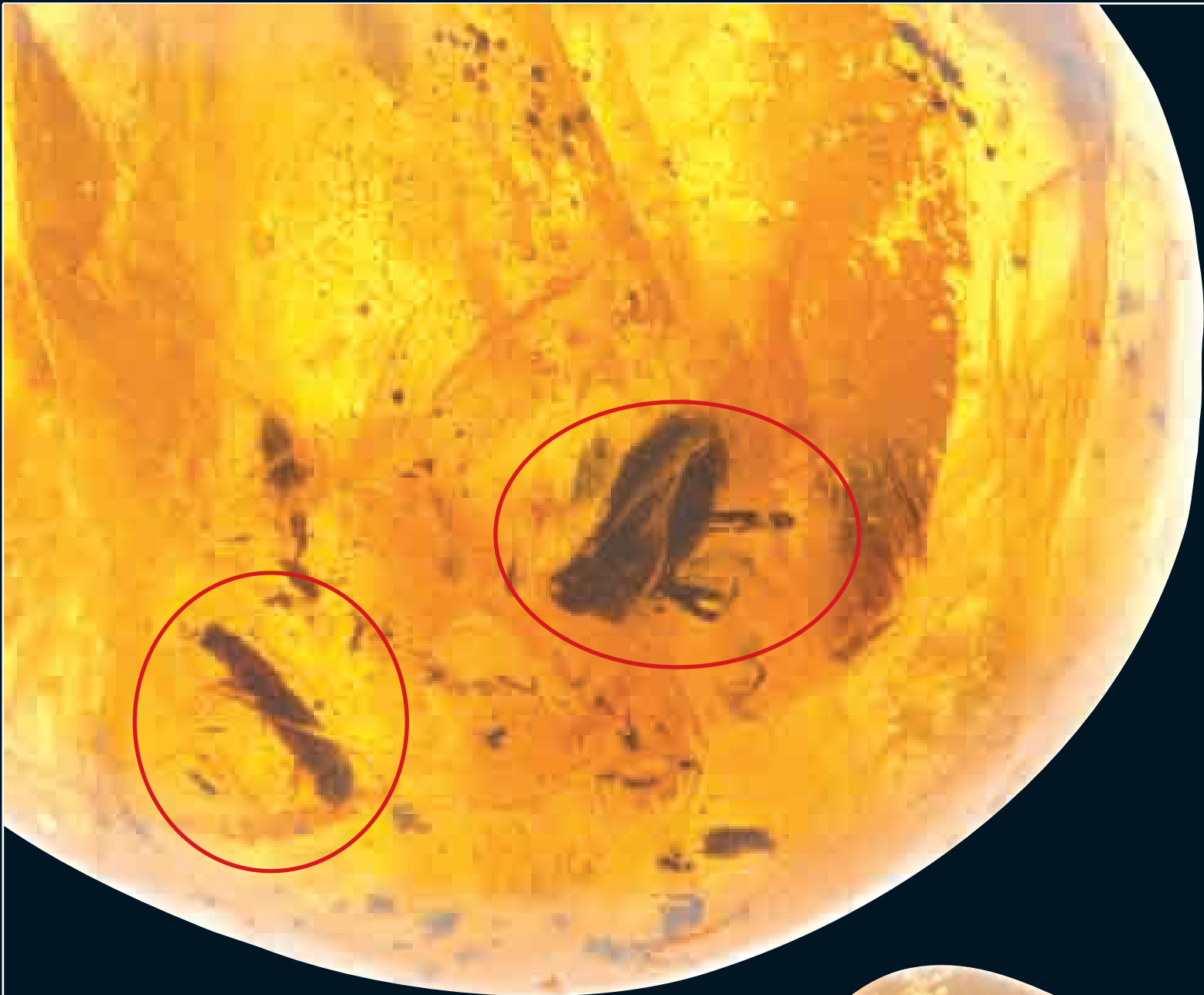
स्नाउट बीटल

स्नाउट बीटल (घुन), पिनहोल बोरर बीटल (छेद करने वाला भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष पूर्व रहने वाले और आज पाए जाने वाले घुनों और छेद करने वाले भुनगों में कोई अंतर नहीं है। यह इस बात का सबूत है कि क्रमिक–विकास कभी भी नहीं हुआ।
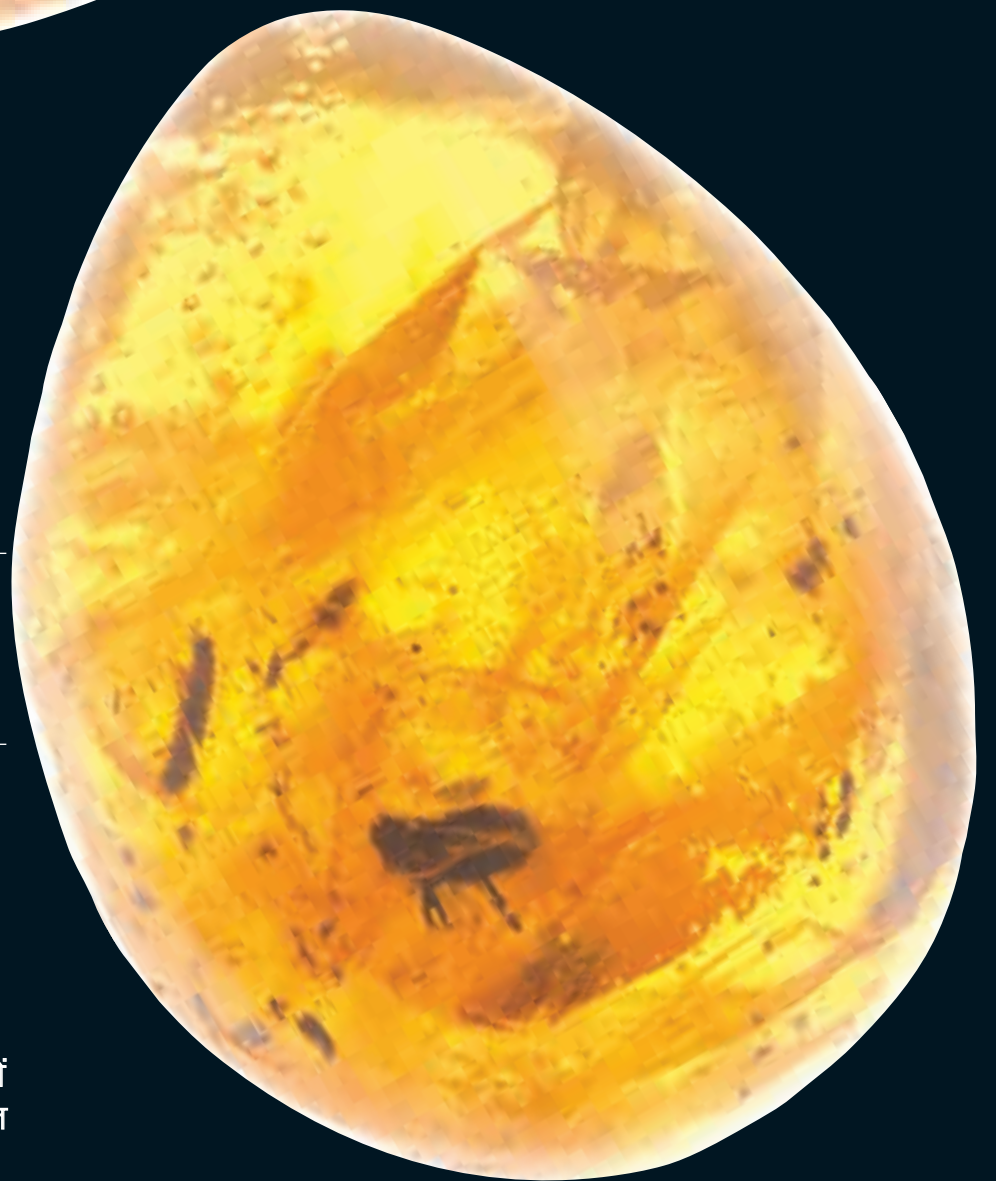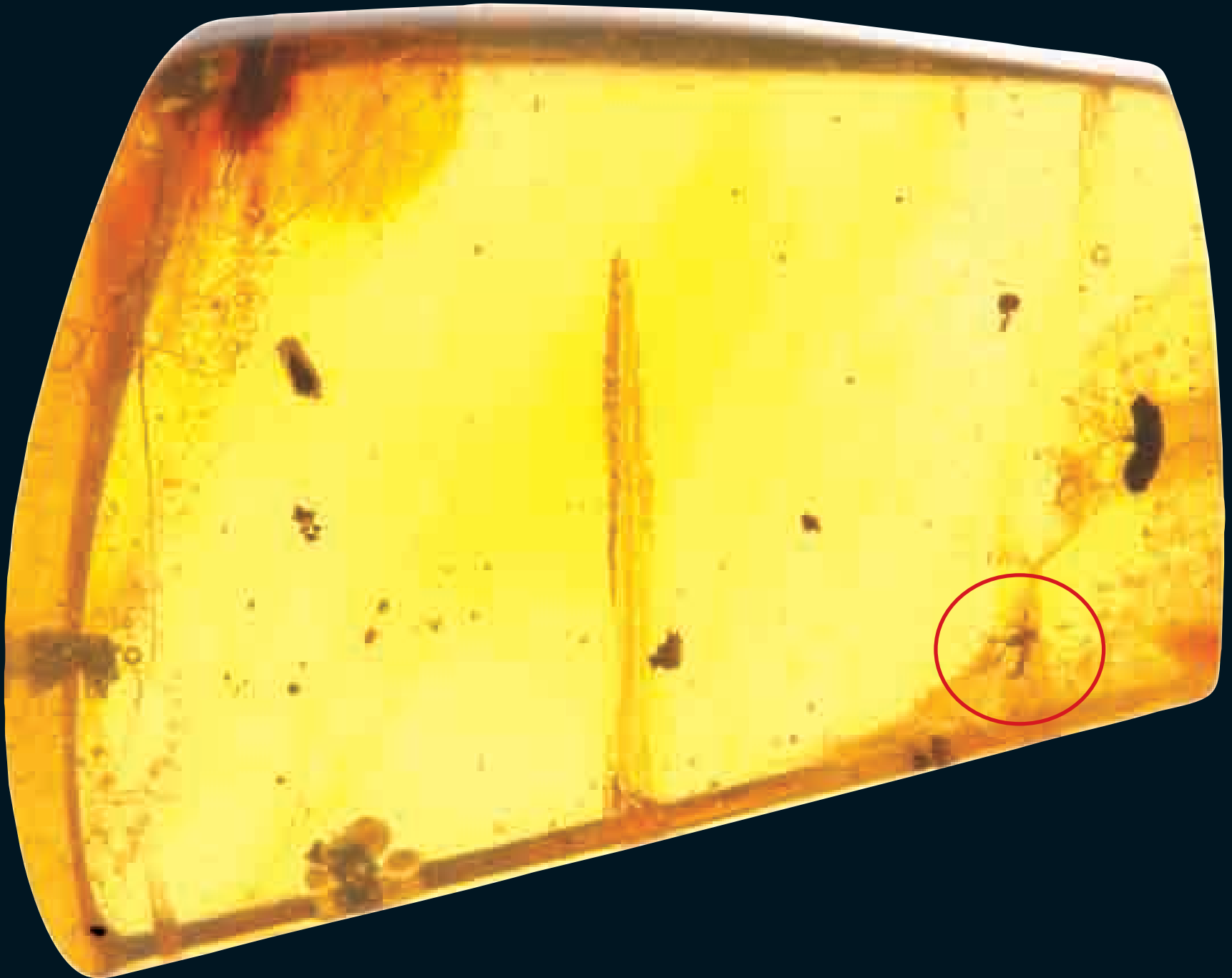
मॉथ फ्लाई (पतंगे जैसी मक्खी)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इन मक्खियों का मॉथ (पतंगा) से मिलते–जुलते होने के कारण मॉथ फ्लाई नाम पड़ा। ये कई करोड़ वर्षों से उसी रूप में बनी हुई हैं। यह अंबर में बना 2.5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल बताता है कि कई करोड़ वर्ष पहले रहने वाली मॉथ फ्लाई आज की मॉथ फ्लाई जैसी ही थी।
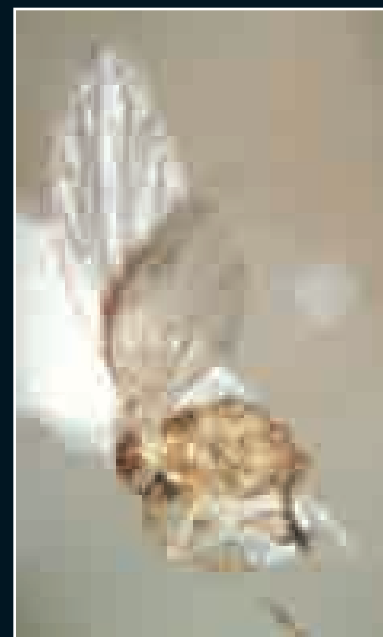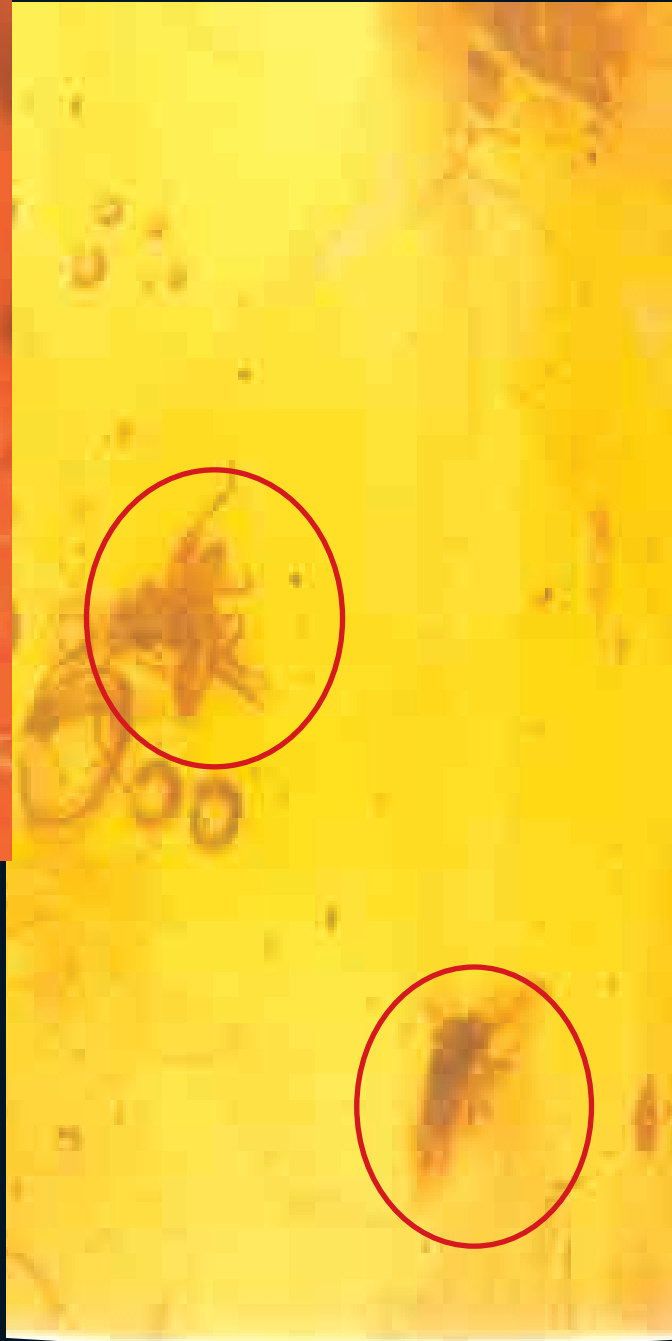
झींगुर, ट्री बग (खटमल जैसा कीड़ा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

चित्र में अंबर में फॉसिल बन गए झींगुर के साथ हेमिप्टेरा श्रेणी के विभिन्न कीट हैं। कई करोड़ वर्ष पहले रहने वाले झींगुर और आज के झींगुर में कोई अंतर नहीं है।

गाल नैट (पेड़ों को नष्ट करने वाला भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

गाल नैट, जो कई करोड़ वर्ष में भी नहीं बदले, क्रमिक–विकास के सिद्धांत को अमान्य साबित करते हैं। यह अंबर में बना गाल नैट फॉसिल 2.5 करोड़ वर्ष पुराना है।
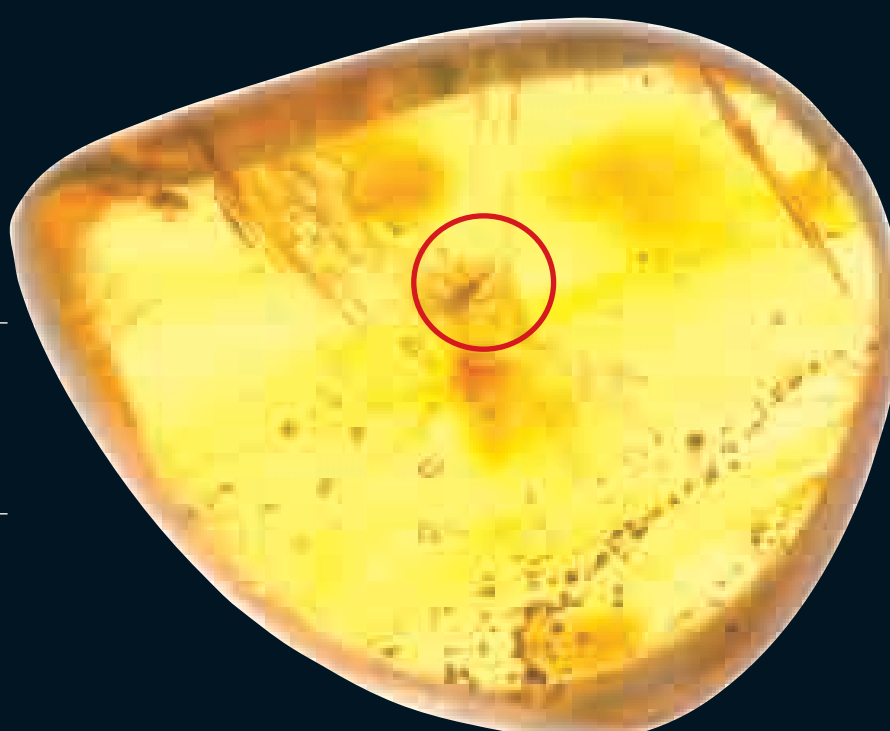
बाइटिंग मिज, गाल नैट

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

ये 2.5 करोड़ वर्ष पुराने मिज और गाल नैट आज के गाल नैट और मिज के समान ही हैं। यह उन प्रमाणों में से एक है जो सत्यापित करते हैं कि जीवित प्राणी कभी भी क्रमिक–विकास से होकर नहीं गुजरे।
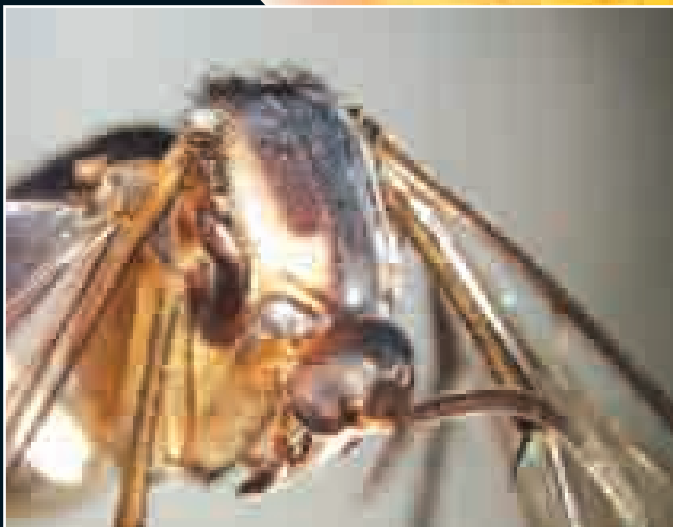
फंगस नैट

फंगस नैट (फफूंद में पाया जाने वाला भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

चित्र में दिखाया गया एक फंगस नैट अंबर में सुरक्षित है। ये कीट कई करोड़ वर्षों से एक समान हैं। इनकी संरचनाओं में एक लंबे समय से कोई परिवर्तन न होना एक ऐसा तथ्य है जिसकी क्रमिक–विकासवादी कभी भी व्याख्या नहीं कर सकते हैं।
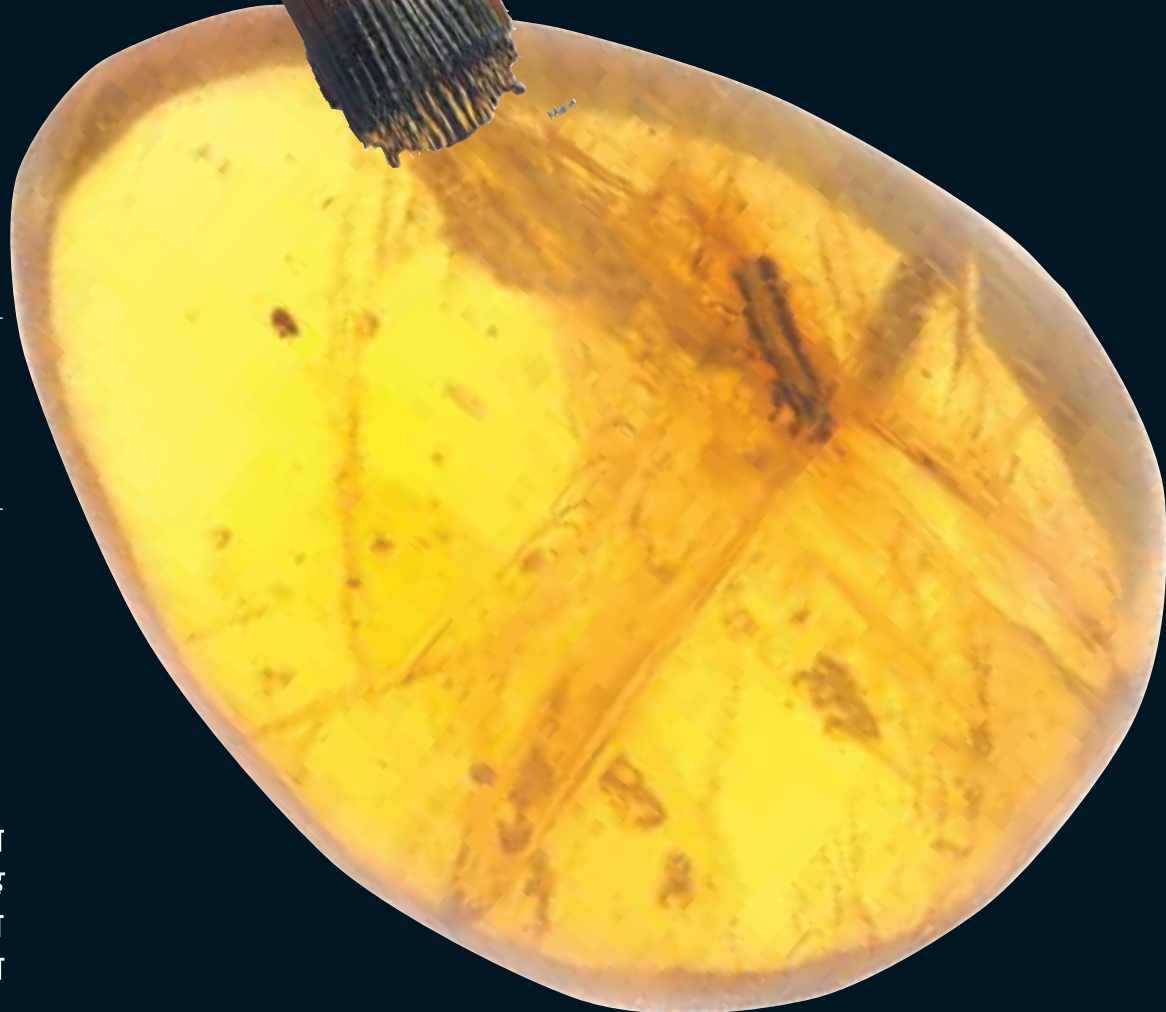
पिनहोल बोरर बीटल (छेद करने वाला भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

आज के जीवित पिनहोल बोरर भुनगों के वही तंत्र और संरचना हैं जो कई करोड़ वर्ष पहले थी। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि 2.5 करोड़ वर्ष पुराने पिनहोल बोरर बीटल आज पाए जाने वाले पिनहोल बोरर बीटल का समरूप था।

छोटी काली स्केवेंजर मक्खी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

अंबर में फॉसिल बनी यह स्केवेंजर मक्खी 2.5 करोड़ वर्ष पुरानी है। कई करोड़ वर्ष के अंतराल के बावजूद इसका वैसा ही बने रहना क्रमिक–विकासवादियों का मुंह बंद कर देता है।

वुडनैट (लकड़ी का कीड़ा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 29 मिलीमीटर (1.1 इंच) लंबाई, 27 मिलीमीटर (1 इंच) चौड़ाई में

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

डारविनवादियों को गलत साबित करने वाले उदाहरणों में से एक यह

2.5 करोड़ वर्ष पुराने अंबर में फॉसिल में परिवर्तित वुडनैट है। कई करोड़ वर्षों में भी अपरिवर्तित रहने वाले वुडनैट यह सिद्ध करते हैं कि वे क्रमिक–विकास से कभी भी नहीं गुजरे।
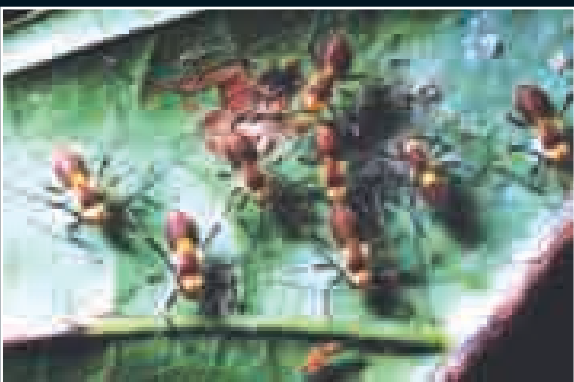
सोकिड (जूं जैसा कीड़ा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 13 मिलीमीटर (0.5 इंच) गुणा 12 मिलीमीटर (0.4 इंच); इनक्लूज़न (समावेश) : 2 मिलीमीटर (0.08 इंच)

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

आज के सोकिड और 2.5 करोड़ वर्ष पहले के सोकिड में कोई अंतर नहीं है। 2.5 करोड़ वर्ष से सोकिड का अपरिवर्तित बने रहना क्रमिक–विकासवादियों के सभी दावों को निरस्त कर देता है।

मेफ्लाई (अल्पजीवी कीड़ा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 25 मिलीमीटर (0.9 इंच) गुणा 16 मिलीमीटर (0.6 इंच)

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

मेफ्लाई की 2500 से अधिक ज्ञात प्रजातियां हैं। इन कीटों का जीवन–काल बहुत छोटा होता है। कई करोड़ वर्षों में भी इनकी संरचना वही बनी हुई है। चित्र में दिखाया गया मेफ्लाई अंबर में 2.5 करोड़ वर्ष पुराना है। किन्हीं भी प्राणियों का 2.5 करोड़ वर्षों में वैसा ही बने रहना हमें बताता है कि उनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि उनकी रचना की गई।
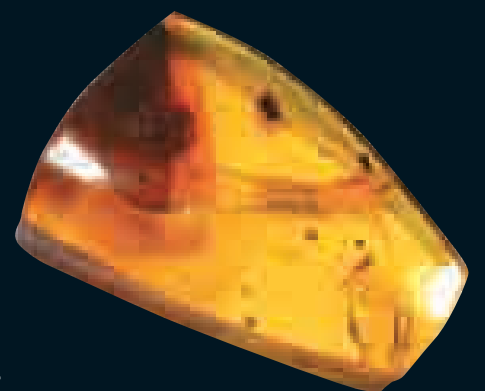
वीविल (घुन)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 12 मिलीमीटर (0.4 इंच) गुणा 10 मिलीमीटर (0.3 इंच)

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

वीविल, जिनकी 60000 से अधिक प्रजातियां हैं, कुरकुलियोनोइडी वर्ग के हैं। ये फसलों को नुकसान पहुंचाने वाले कीड़ा हैं। लाखों वर्ष पुराने वीविल फॉसिल दर्शाते हैं कि जब से यह अस्तित्व में आए हैं इन प्राणियों की संरचना में कोई अंतर नहीं आया। इसका अर्थ यह हुआ कि ये कभी भी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे।

मॉथ फ्लाई

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 10 मिलीमीटर (0.3 इंच) लंबाई गुणा 8 मिलीमीटर (0.3 इंच) चौड़ाई में

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष पुराने मॉथ फ्लाई और आज के मॉथ फ्लाई में कोई अंतर नहीं है। अंबर में बना यह फॉसिल इसका एक उदाहरण है।
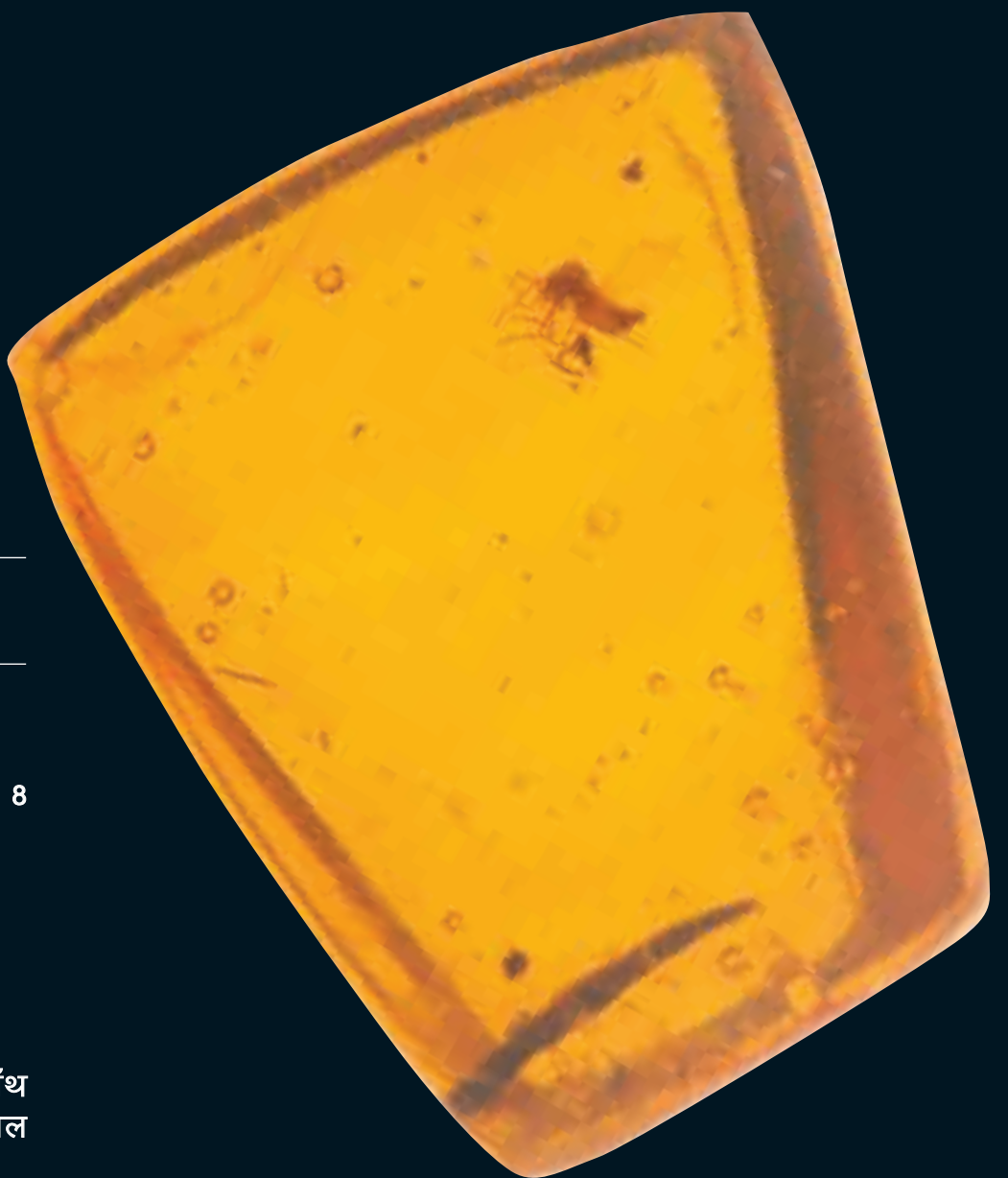
Cricket

झींगुर, क्रेन फ्लाई

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 11 मिलीमीटर (0.4 इंच) लंबाई गुणा 8 मिलीमीटर (0.3 इंच) चौड़ाई में

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

झींगुर और क्रेनफ्लाई ठीक एक ही समय फॉसिलीकृत हुए थे। जैसा कि आप देख सकते हैं कि इन प्रजातियों में 2.5 करोड़ वर्षों में कोई बदलाव नहीं आया है। यह तथ्य इशारा करता है कि जीवित प्राणी कभी भी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे, बल्कि उनकी रचना की गई।

झींगुर
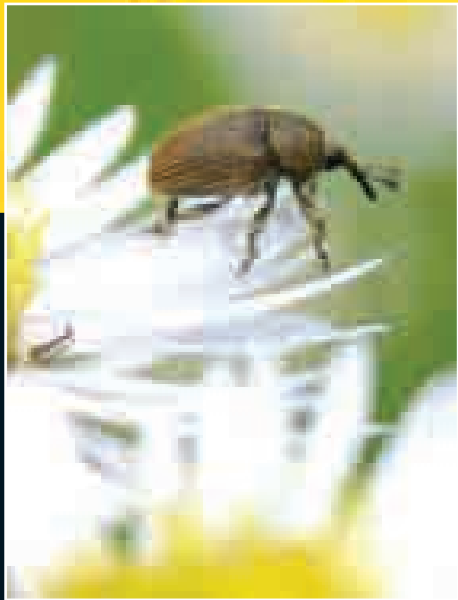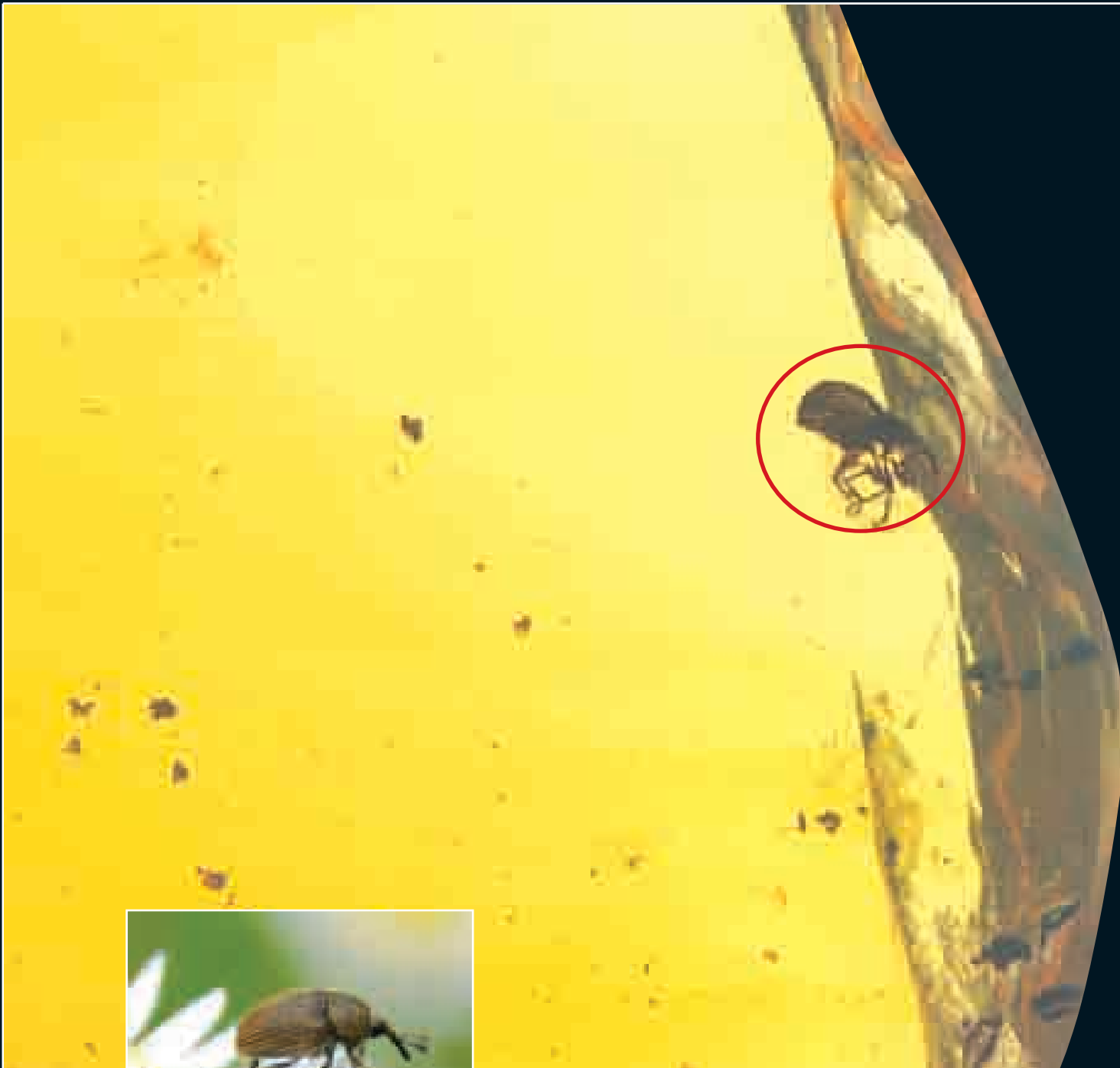
वीविल (घुन)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

घुन कई करोड़ वर्ष से अपरिवर्तित बने हुए हैं और यह दर्शाते हैं कि क्रमिक–विकास कभी भी नहीं हुआ। यहां चित्र में दिखाया गया 2.5 करोड़ वर्ष पुराना वीविल का यह फॉसिल ऐसे नमूनों में से एक है।

निम्फल आइसोपॉड (केकड़े जैसे जीव आइसोपॉड के निम्फ)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

जैसे कि आज पाए जाने वाले आइसोपॉड और 2.5 करोड़ वर्ष पहले के आइसोपॉड में कोई अंतर नहीं है, उसी तरह इनके लार्वा में भी कोई अंतर नहीं है।
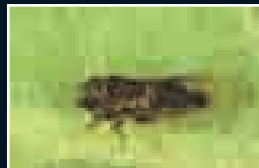
जंपिंग प्लांट लाइस (पौधों पर रहने वाली जूं)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इन कीटों का भोजन पौधे का रस होता है और ये उछल कर चलते हैं। इनका कई करोड़ वर्ष से एक समान बने रहने का एक प्रमाण 2.5 करोड़ वर्ष पुराना अंबर में बना यह फॉसिल है। अंबर में दफन इस कीड़े और आज के जीवित नमूनों में कोई अंतर नहीं है।

चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

चींटियां, जो कई करोड़ वर्षों से तनिक भी परिवर्तित नहीं हुईं, उन सबूतों में से एक हैं जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत को रद्द करते हैं।

चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

कई करोड़ वर्ष पहले पेड़ों पर रहने वाली चींटी की इस प्रजाति और आज पाई जाने वाली चींटियों में कोई अंतर नहीं है। किसी भी अंतर का न होना क्रमिक–विकासवादियों के सभी दावों को झुठलाता है कि जीवित प्राणियों का चरणों में विकास हुआ।
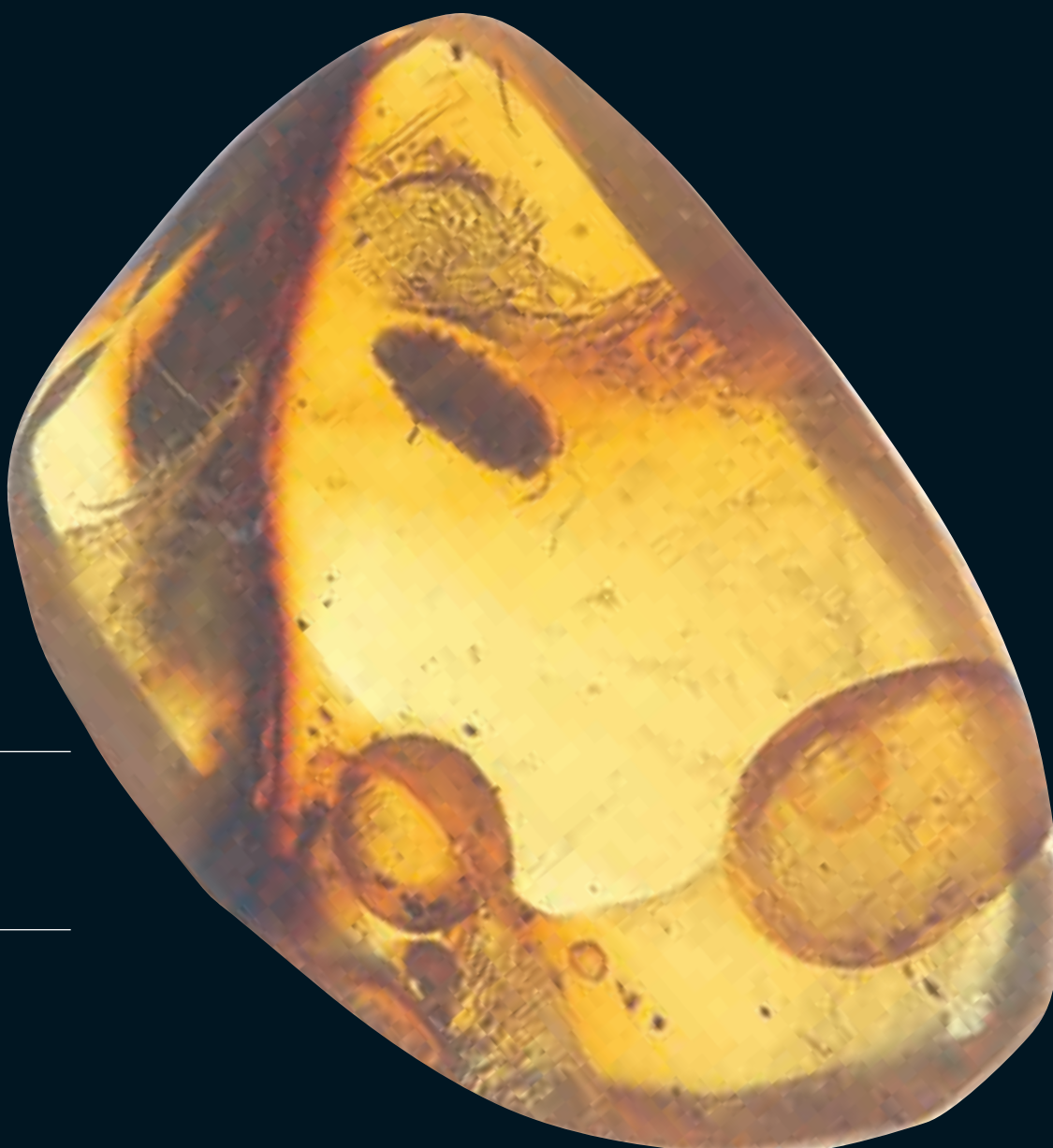
सो बग (एक प्रकार की लकड़ी की जूं)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष पुराना अंबर में बना यह सो बग का फॉसिल दर्शाता है कि सो बग कई करोड़ वर्ष से ज्यों के त्यों बने हुए हैं दूसरे शब्दों में कहें तो वे कभी भी क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे हैं।
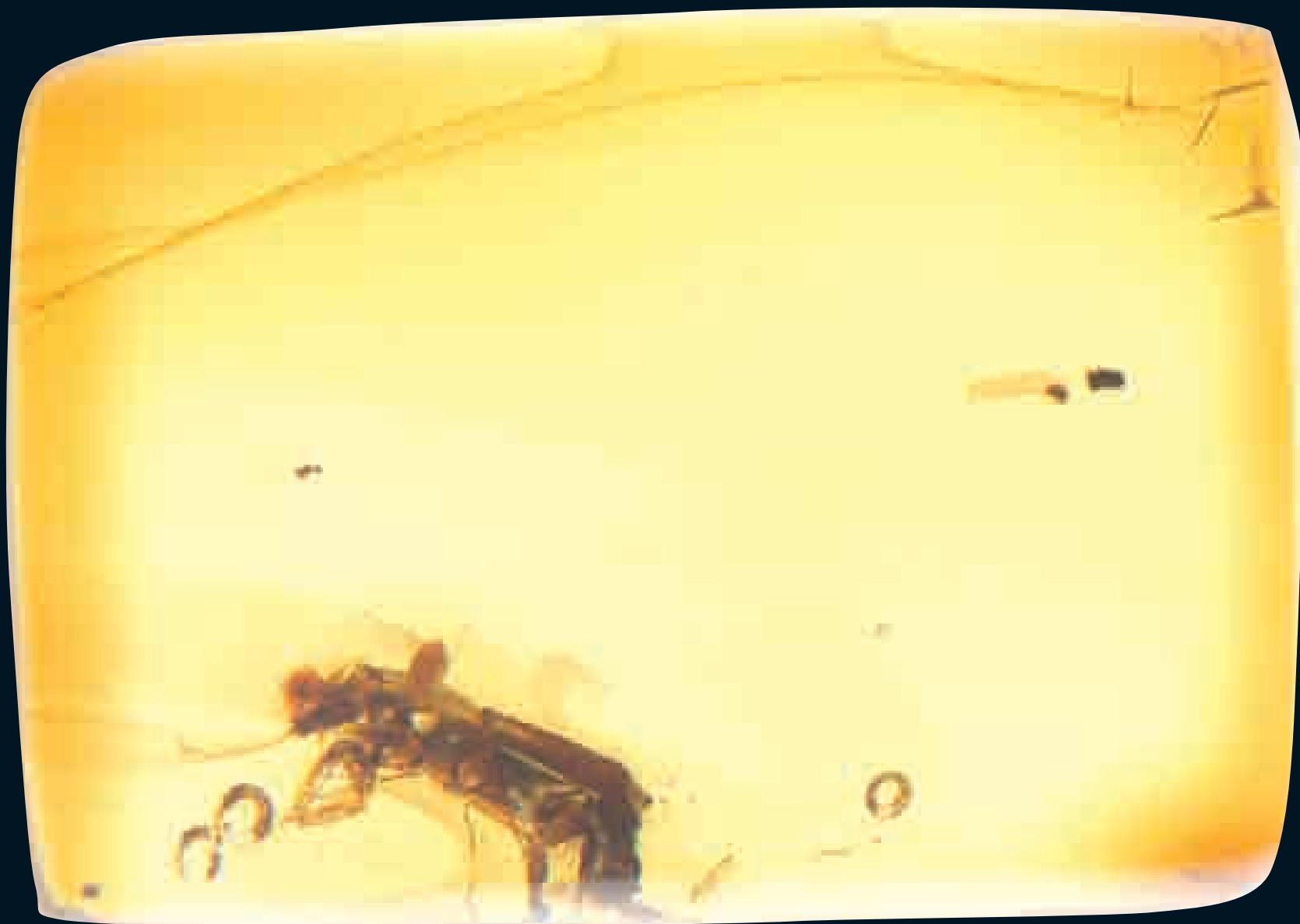
माइट और बार्क बीटल (पेड़ की छाल पर रहने वाला भुनगा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इस अंबर में एक बार्क बीटल अपनी पीठ पर एक माइट लिए हुए फॉसिल बन गया। कई करोड़ वर्ष गुजर जाने के बावजूद बार्क बीटल और माइट में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। जीवन के ये रूप, जो बिना किसी बदलाव के 2.5 करोड़ वर्ष से बने हुए हैं, क्रमिक–विकास को अमान्य साबित करते हैं।

रोव बीटल

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

2.5 करोड़ वर्ष के रोव बीटल और आज के जीवित रोव बीटल में कोई अंतर नहीं है। रोव बीटल का कई करोड़ वर्षों से अपरिवर्तित बने रहना इस बात का एक प्रमाण हैं कि क्रमिक–विकास कभी नहीं हुआ।

असैसिन बग (चूसने वाला घातक कीड़ा)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

अन्य सभी जीवों की ही तरह एसेसिन बग भी हमेशा से असेसिन बग ही हैं। डारविनवादियों के दावों के विपरीत ये किसी अन्य जीव रूप के वंशज नहीं हैं और कभी भी विकास की मध्य अवस्थाओं से नहीं गुजरे हैं। 2.5 करोड़ वर्ष पुराने असेसिन बग इस तथ्य को सिद्ध करते हैं।

एंट लायन

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

एंट लायन ड्रैगनफ्लाई से मिलती–जुलती कीटों की एक पंखदार प्रजाति है। चित्र में दिखाया गया अंबर में 2.5 करोड़ वर्ष पुराना एंट लायन का सिर आज के एंट लायन जैसा ही है।

कैटरपिलर (इल्ली)

उम्र : 2.7 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

अन्य फॉसिलों की ही तरह अंबर में बने फॉसिल भी दिखाते हैं कि जीवित प्राणियों का एक से दूसरे में क्रमिक विकास नहीं हुआ है, बल्कि लंबे समय में अपने अस्तित्व के दौरान उन्होंने उन्हीं विशेषताओं को बनाए रखा है। ये फॉसिल इसी तथ्य की ओर संकेत देते हैं कि कैटरपिलर हमेशा कैटरपिलर बने रहे और ये कभी भी क्रमिक–विकास से होकर नहीं गुजरे।
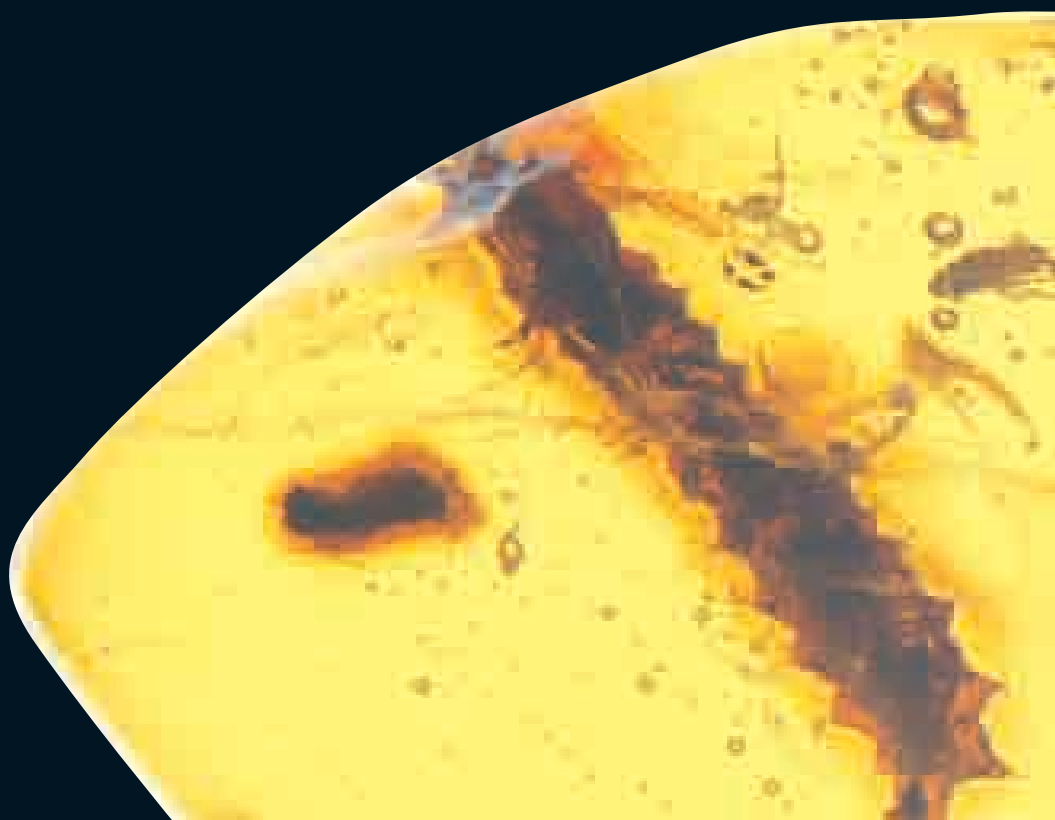
मच्छर, उड़ने वाली दीमक

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 19 मिलीमीटर (0.7 इंच) लंबाई गुणा 13 मिलीमीटर (0. 5 इंच) चौड़ाई में

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

चित्र में 2.5 करोड़ वर्ष पुराने अंबर में फॉसिल बना उड़ने वाला दीमक दिखाया गया है। इन प्राणियों का 2.5 करोड़ वर्षों के अंतराल के बावजूद अपनी संरचनाओं को बचाए रखना यह दर्शाता है कि क्रमिक–विकास सही नहीं है और ईश्वर की महान रचना एक प्रमाणिक तथ्य है।
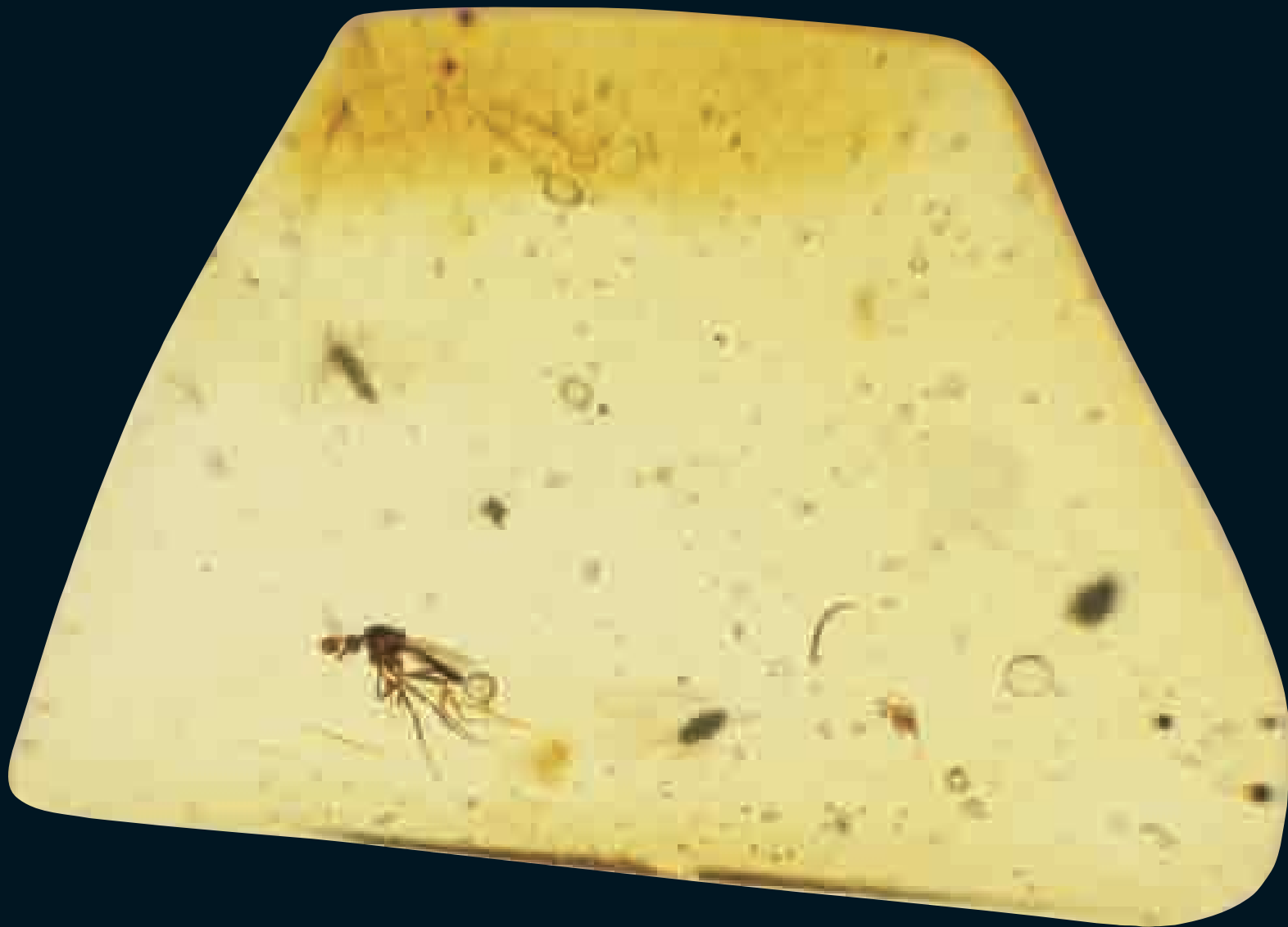
सैंडफ्लाई (काटने वाला रोंएदार छोटा कीड़ा), अंडों की एक लड़ी के साथ फंगस नैट

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

इस अंबर में एक सैंडफ्लाई और अपने कई अंडों के साथ एक फंगस नैट एक ही समय में फॉसिल बन गए। यह फॉसिल दर्शाता है कि इन जीवन रूपों की संरचनाओं में कई करोड़ वर्ष में कोई बदलाव नहीं आया और यह क्रमिक–विकास के सिद्धांत के दावों को भी निरस्त करते हैं।
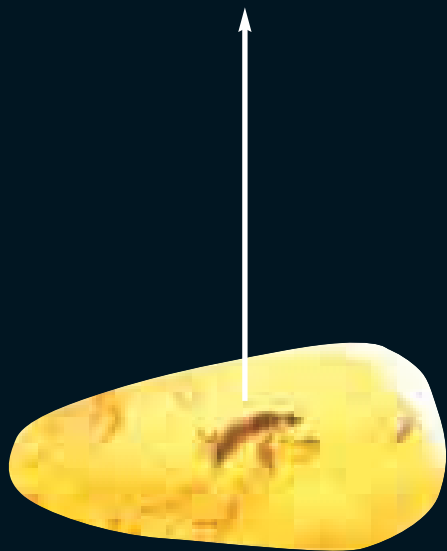
घास की मक्खी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

घास की मक्खियां हमेशा से घास की मक्खियों के रूप में ही मौजूद रहीं, इसका एक प्रमाण यह 2.5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल है। कई करोड़ वर्ष पहले पाई जाने वाली घास की मक्खियां आज जैसी ही थीं।

तिलचट्टा

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

फॉसिल खोजें बताती हैं कि तिलचट्टे करोड़ों वर्षों में भी किसी परिवर्तन से नहीं गुजरे। फॉसिल रिकॉर्ड दिखाता है कि तिलचट्टों का कभी भी क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि उनकी रचना की गई।
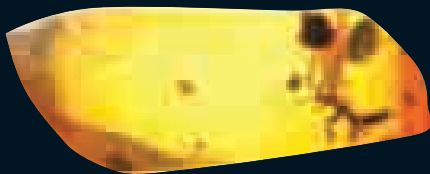
इंस्टार, ततैया

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

एक ततैया और एक कीड़े का लार्वा एक ही समय में इस अंबर में फॉसिल बन गए।

2.5 करोड़ वर्ष पुराने ये जीव रूप क्रमिक–विकास के दावों के खंडन के लिए महत्वपूर्ण नमूने हैं।
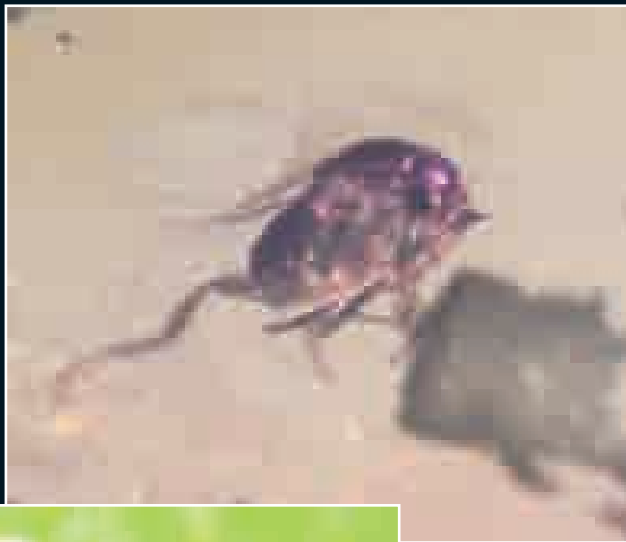
मच्छर

स्कटल फ्लाई (तेजी से भागने वाली मक्खी)

मच्छर, स्कटल फ्लाई (तेजी से भागने वाली मक्खी)

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

चित्र में दिखाया गया यह 2.5 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल उन दसियों हजार फॉसिलों में से एक है जो बताते हैं कि मक्खियां हमेशा से मक्खियां ही हैं। करोड़ों वर्षों से ज्यों के त्यों बने हुए यह कीट बताते हैं कि डारविनवादियों के दावे झूठे हैं।
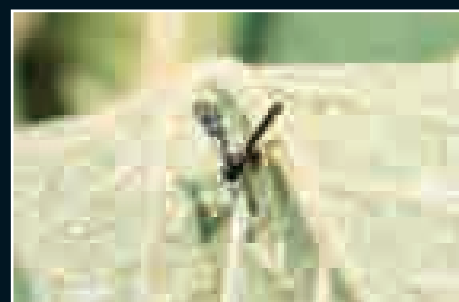
ब्रैकॉनिडी ततैया

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 6.3 सेंटीमीटर (2.5 इंच) गुणा 3.8 सेंटीमीटर (1.5 इंच) गुणा 1.2 सेंटीमीटर (0.5 इंच)

स्थान : सैंटियागो के निकट, डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

अंबर में फॉसिल बना यह परजीवी ततैया 2.5 करोड़ वर्ष पुराना है। इसमें और आज के जीवित नमूनों में कोई अंतर नहीं है। यह महत्वपूर्ण प्रमाण है कि क्रमिक–विकास मान्य नहीं है।
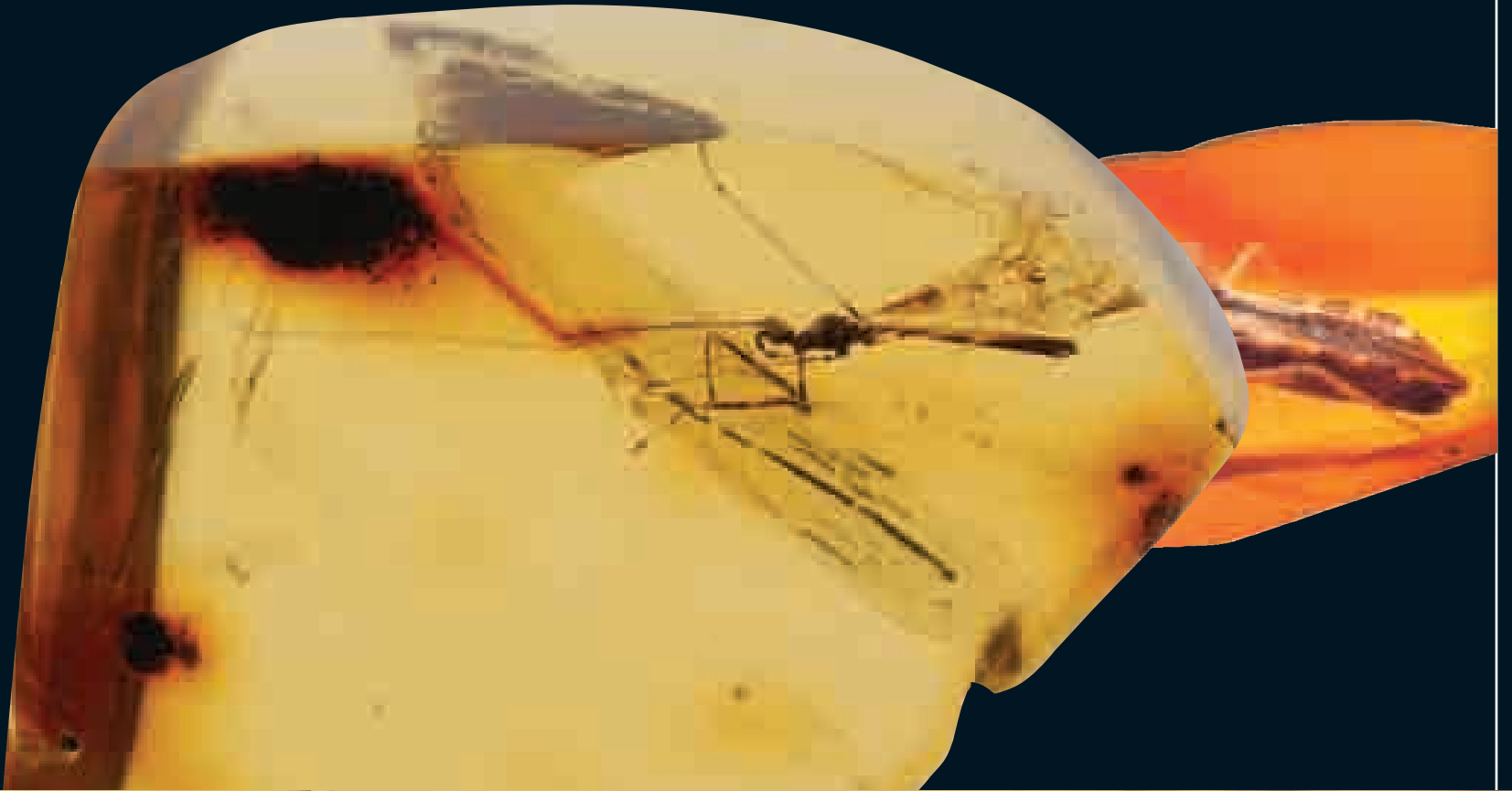
असैसिन बग

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

अंबर में फॉसिल बना यह असेसिन बग 2.5 करोड़ वर्ष पुराना है। इसमें और आज के जीवित नमूनों में कोई अंतर नहीं है। यह हमें बताता है कि सजीव प्राणी कभी भी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से नहीं गुजरे।

एंथोकोरिड बग

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

ये कीट प्रजाति आमतौर पर फूलों पर या पत्तियों के नीचे की तरफ पाया जाता है। यह पौधे के ऊत्तक के अंदर अपने अंडे देते है। करोड़ों वर्ष पहले पाए जाने वाले इस कीट में और आज जीवित कीटों में कोई अंतर नहीं है।

इयरविग

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

ऐसे लाखों फॉसिल हैं जो वास्तविक रूप से डारविनवादियों को चुप निशब्द कर देते हैं। डारविनवादी जिन फॉसिलों के सामने एकदम असहाय हो जाते हैं उनमें से एक यह

2.5 करोड़ वर्ष पुराना अंबर में फॉसिल बना इयरविग है। अन्य सभी फॉसिल खोजों की ही तरह यह फॉसिल भी दर्शाता है कि क्रमिक–विकास मान्य नहीं है।
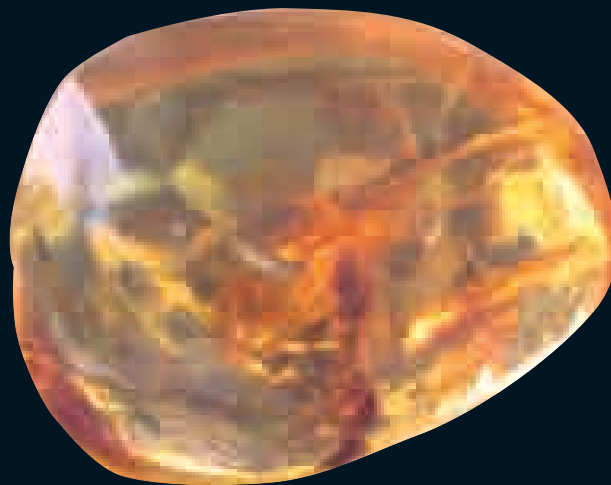
रानी चींटी

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

रानी चींटी चींटियों की कॉलोनी की नींव रखती हैं और फिर मजदूर चींटियों का एक काम रानी चींटी और उसके अंडों की रक्षा करना होता है। चित्र में दिखाई गई यह रानी चींटी प्रमाण है कि चींटियां कई करोड़ वर्षों में भी उसी तरह बनी हुई हैं। यह इस तथ्य को दर्शाता है कि क्रमिक–विकास कभी भी नहीं हुआ और सभी जीवों की रचना सर्वशक्तिमान अल्लाह ने की।
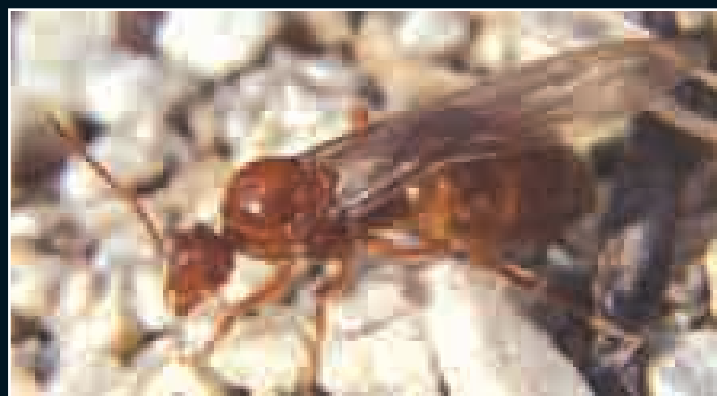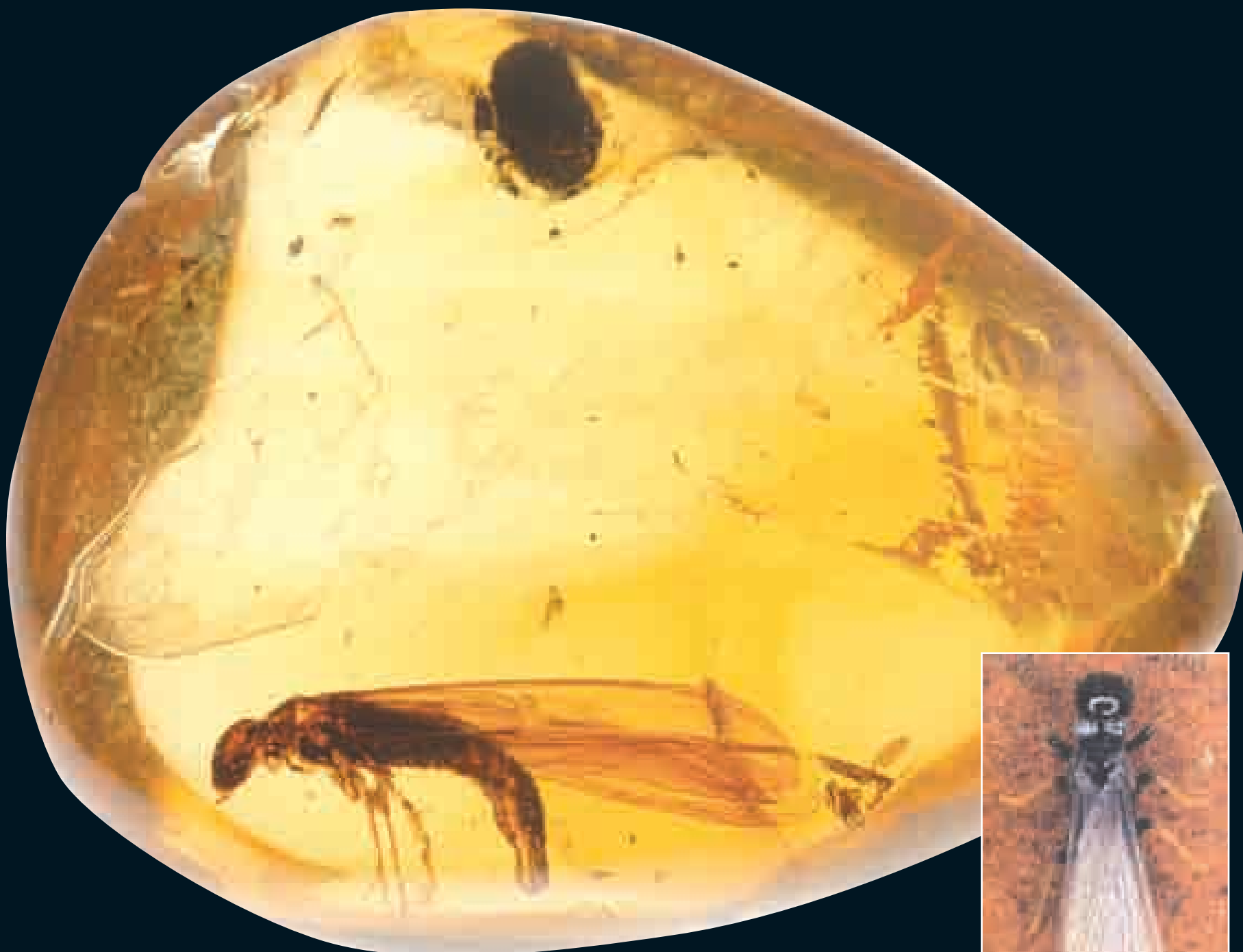
पंखदार दीमक

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

स्थान : डोमिनिकन रिपब्लिक

काल : ओलिगोसीन

हालांकि दीमक चींटियों से मिलते–जुलते दिखते हैं, लेकिन वास्तव में इनके बहुत अलग लक्षण और क्षमताएं होती हैं। दीमक लाखों वर्षों से कॉलोनियों में रह रहे हैं और आज तक इनकी संरचनाओं में कोई भी बदलाव नहीं आया है। 2.5 करोड़ वर्ष पुराने दीमक के फॉसिल इसका प्रमाण हैं। लाखों वर्षों के अंतराल के दौरान रहने वाले दीमक आज के जीवित दीमकों जैसे ही थे। 2.5 करोड़ वर्ष पहले के मजदूर दीमकों की ही तरह आज के मजदूर दीमकों का भी परोपकारी व्यवहार बना हुआ है। ये मजदूर दीमक अंधे होने के बावजूद लार्वा (ईल्ली) सैनिकों और रानियों के लिए भोजन जुटाते हैं और कई मीटर का आवास बनाते हैं। आज के दीमकों की विशेषताएं अब तक पाए जाने वाले सभी दीमकों में पाई गई हैं।

चित्र में दिखाया गया अंबर में बना दीमक का यह फॉसिल 2.5 करोड़ वर्ष पुराना है।

ब्राजील में खोजे गए फॉसिल नमूने

ब्राजील की भूवैज्ञानिक बनावट दक्षिण अमेरिकी पठार से मिलती–जुलती दिखाई पड़ती है। इस देश की आधे से अधिक चट्टानी संरचनाएं पूर्वकैमब्रियन काल में (4.6 अरब से 54.3 करोड़ वर्ष पहले) ही बन गई थी। ब्राजील में निचली परतों पर परिवर्तित और आग्नेय चट्टानें हैं, सबसे ऊपर तलछटी चट्टानें हैं : तलछटी चट्टान की कुछ परतें पूर्वकैमब्रियन काल की हैं, जबकि अन्य बहुत बाद में बनी हैं।

साओ फ्रांसिस्को इलाके की चट्टानों में पूर्वकैमब्रियन माइक्रोफॉसिल (माइक्रोस्कोप से देखे जाने वाले बहुत छोटे जीवों के फॉसिल) क्षेत्रों का बड़ी संख्या में पता लगा है। ब्राजील में दो अन्य प्रमुख फॉसिल क्षेत्र सैनटाना और क्रेटो संरचनाएं हैं।

अराराइप बेसिन में स्थित सैनटाना संरचना के ज्यादातर फॉसिल क्रिटेशियस काल (14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष) के हैं। सैनटाना संरचना की एक विशेषता यह है कि इसमें मछलियों की 25 से अधिक प्रजातियों के फॉसिल नमूने अच्छी तरह सुरक्षित हैं। सैनटाना संरचना के फॉसिलों में विभिन्न रेंगने वाले, जलस्थलचर बिना रीढ़ वाले जंतु और पौधे भी शामिल हैं।

हाल ही तक क्रेटो संरचना को सैनटाना संरचना का ही अंग समझा जाता था। परंतु, इस क्षेत्र में हुई खोजों से बहुत पुराने

अराराइप क्षेत्र में किए गए शोध के दौरान मछलियों की 25 से ज्यादा अच्छी तरह सुरक्षित प्रजातियों के फॉसिल मिले।

अराराइप क्षेत्र में महत्वपूर्ण फॉसिल इलाकों में से एक इलाका सिएरा है।

समय के कीटों के जीवाश्म की एक परत का पता लगा। इस विशेष काल के कीटों के जीवाश्म को एकदम अलग संरचना के रूप में क्रेटो में रखा गया। इस कीट समूह के अलावा इस फॉसिल क्षेत्र से मकड़ियों, बिच्छुओं, केकड़ों और कई पौधों की प्रजातियां के जीवाश्म भी मिले हैं।

ब्राजील के जीवाश्म क्षेत्र से मिले करोड़ों वर्ष पुराने जीवाश्मों ने एक बार फिर प्रदर्शित कर दिया है कि इस दावे की कोई वैज्ञानिक बुनियाद नहीं है कि जीवित वस्तुएं समान पूर्वजों से क्रमशः विकसित होकर बनी हैं। ये जीवाश्म प्राणियों के क्रमिक–विकास के विचार का खण्डन करते हैं और सृष्टि की रचना के सिद्धांत की पुष्टि करते हैं।

नोवा ओलिंडा खान, जहां ढेरों फॉसिल मिले थे।

क्रेटो संरचना से ऐसे चूनापत्थर निकाले गए जिनमें फॉसिलों के नमूने मिले।

सैनटाना में मिले असंख्य फॉसिल उजागर करते हैं कि आज के जीव–जंतु क्रमिक–विकास से नहीं गुजरे।मअवसनजपवदण
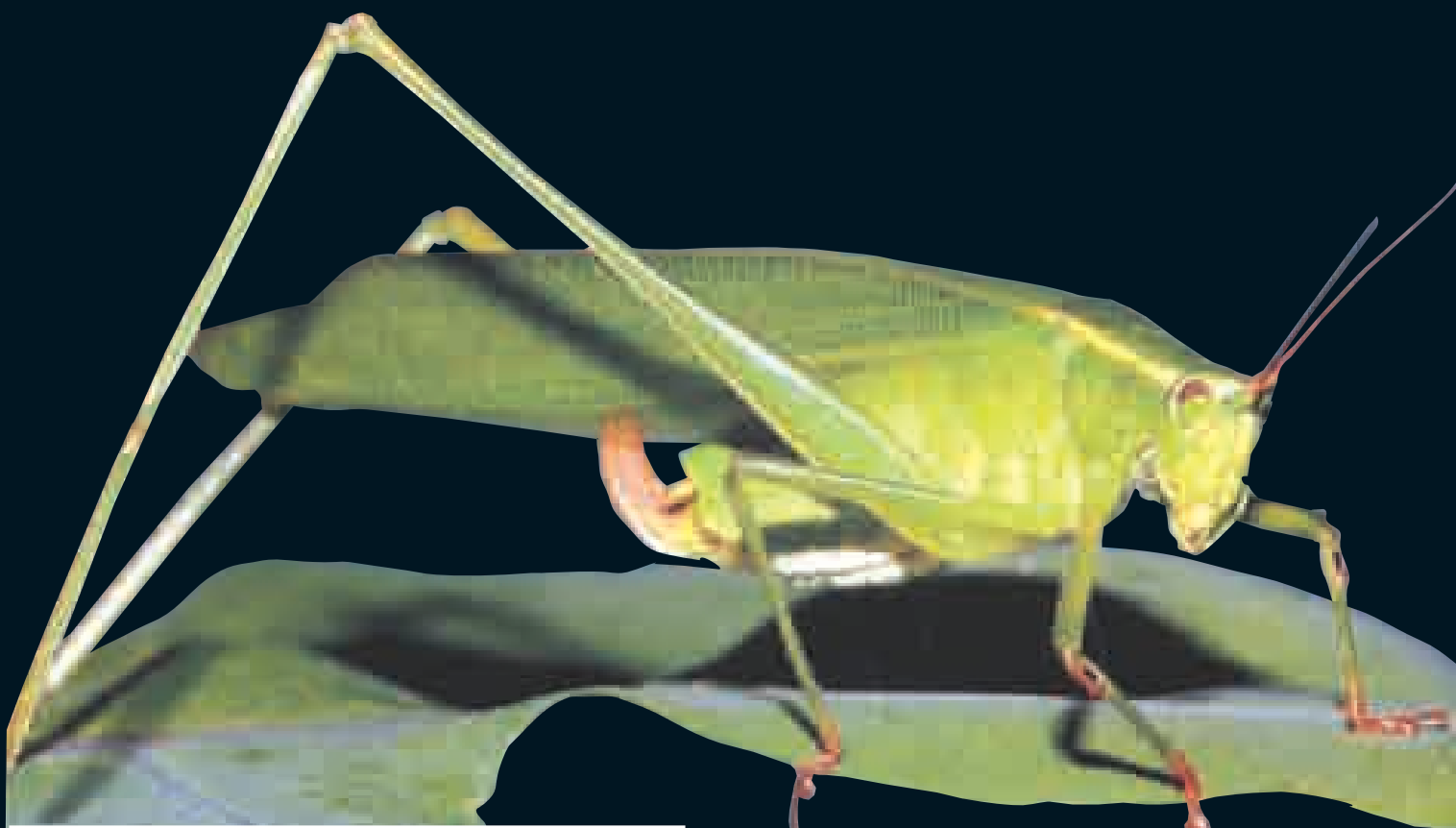
बुश क्रिकेट (झाड़ी में रहने वाला झींगुर)

उम्र : 12.8 करोड़ वर्ष

आकार : पंखों के साथ कुल 15 मिमी (0.5 इंच); मैट्रिक्स : 110 मिमी (4.3 इंच) गुणा 100 मिमी (3.9 इंच)

स्थान : सिएरा, ब्राजील

संरचना : सैनटाना संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस, अपर एप्टिअन सिनोमेनिअन

बुश क्रिकेट टेटीगोनिडे परिवार से संबंध रखता है और केवल उत्तरी अमेरिका में ही इसकी 225 प्रजातियां हैं। लेकिन इनमें से ज्यादातर भुनगे उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में रहते हैं।

बुश क्रिकेट करोड़ों वर्षों में भी नहीं बदले हैं। चित्र में दिखाया गया इसका जीवाश्म इस सत्य का प्रमाण है।

तिलचट्टा

उम्र : 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष

आकार : फैले पंख 23 मिमी (0.9 इंच); मैट्रिक्स : 128 मिमी (5 इंच) गुणा 128 मिमी (5 इंच)

स्थान : नोवा ओलिंदा मेंबर, सिएरा, ब्राजील

संरचना : क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस, अपर एप्टिअन सिनोमेनिअन

ब्राजील का अराराइप बेसिन अद्भुत रूप से सजे हुए अत्यधिक विस्तृत आरंभिक क्रिटेशियस फॉसिलों का घर है, कुछ तो यहां तीन आयाम (यानी लंबाई, चौड़ाई, मोटाई) में संरक्षित किया गया हैं। इस कॉकरोच के प्रोनोटम (सिर के कवच) और पंखों के नाड़ी–जाल का अच्छी तरह परीक्षण किया जा सकता है।

10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष पुराने कॉकरोचों का यह जीवाश्म वैसा ही है जैसा आज का कोई जीवित कॉकरोच हो, इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत मानने योग्य नहीं है।

मक्खी

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : लंबाई 1.9 सेंटीमीटर (0.75 इंच); मैट्रिक्स : 90 मिमी (3.5 इंच) चौड़ाई 5 मिमी (0.2 इंच) मोटाई

स्थान : अराराइप बेसिन, ब्राजील, दक्षिणी अमेरिका

संरचना : नोवा ओलिंदा मेंबर, क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

फॉसिल रिकॉर्ड बताते हैं कि पंख वाले और बगैर पंख वाले कीट एक ही समय में प्रकट हुए। यह बात इस दावे को रद्द कर देती है कि बगैर पंख वाले कीटों के लंबे समय में अपने पंख विकसित कर लिए और इनसे ही उड़ने वाली प्रजातियां बनीं। इस चित्र में दिखाई गई मक्खी अति प्राचीन काल की खोजों का एक नमूना है जो क्रमिक–विकासवादियों को का खण्डन करता है।
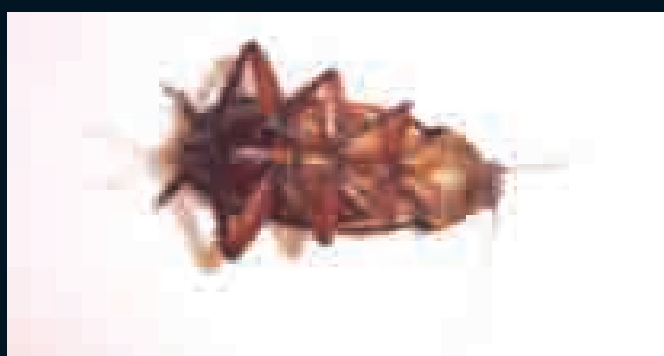
तिलचट्टा

उम्र : 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : 8.8 सेंटीमीटर (3.5 इंच) गुणा 9.1 सेंटीमीटर (3.6 इंच)

संरचना : सैनटाना संरचना

स्थान : सिएरा दे अराराइप, ब्राजील

काल : क्रिटेशियस

इस चित्र में दिखाया गया 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष पुराना तिलचट्टा आधुनिक युग के तिलचट्टे का समरूप है। जैसा आज का तिलचट्टा है, करोड़ों वर्षों से तिलचट्टे की संरचनात्मक विशेषताएं एक समान हैं इससे यह सिद्ध होता है कि क्रमिक–विकास वास्तव में कभी हुआ ही नहीं।

टिड्डा

उम्र : 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष

आकार : कुल 30 मिमी (1.1 इंच), एंटीना के साथ 75 मिमी (2.9 इंच); मैट्रिक्स : 110 मिमी (4.3 इंच) गुणा 100 मिमी (3.9 इंच)

स्थान : नोवा ओलिंदा मेंबर, सिएरा, ब्राजील

संरचना : क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस, अपर एप्टिअन सिनोमेनिअन

यहां चित्र में प्रदर्शित 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष पुराना टिड्डा इस बात का प्रमाण है कि टिड्डे हमेशा से टिड्डे ही रहे। करोड़ों वर्षों में भी अपरिवर्तित टिड्डे यह दर्शाते हैं कि इनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि इनकी रचना हुई।

गारफिश

उम्र : 11 करोड़ वर्ष

आकार : 48 सेंटीमीटर (18 इंच)

स्थान : ब्राजील

संरचना : सैनटाना संरचना

काल : क्रिटेशियस

गारफिश क्रमिक–विकास के विचार को अमान्य साबित करने वाली असंख्य प्रजातियों में से एक है। गारफिश जुरासिक काल (20.6 से 14.4 करोड़ वर्ष) के उन प्राचीन ज्ञात उदाहरणों में से एक है जो करोड़ो वर्षों से एक जैसी बनी रही। यहां चित्र में प्रदर्शित जीवाश्म 11 करोड़ वर्ष पुराना है और यह बताता है कि गारफिश बिल्कुल भी क्रमशः विकसित नहीं हुई हैं।

कुछ फॉसिल पत्थर की परत के दोनों हिस्सों में समान रूप से सूक्ष्म मात्राएं छोड़ देते हैं। 11 करोड़ वर्ष पहले के इस बिच्छू का फॉसिल इसका एक उदाहरण है।

बिच्छू

उम्र : 11 करोड़ वर्ष

आकार : 26 मिलीमीटर (1 इंच)

स्थान : अराराइप, ब्राजील

संरचना : सैनटाना संरचना

काल : क्रिटेशियस, एप्टिअन

सबसे प्राचीन बिच्छू के ज्ञात जीवाश्मों में से एक 32 करोड़ वर्ष पुराना है। चित्र में दिया गया जीवाश्म 11 करोड़ वर्ष पुराना है। चाहे 32 करोड़ वर्ष पुराने बिच्छू हों या 11 करोड़ वर्ष पुराने या फिर आज के, सभी निश्चित रूप से समान हैं। करोड़ों वर्षों से बिना परिवर्तित बिच्छू आज इस बात का ठोस प्रमाण हैं कि प्राणियों की रचना हुई।
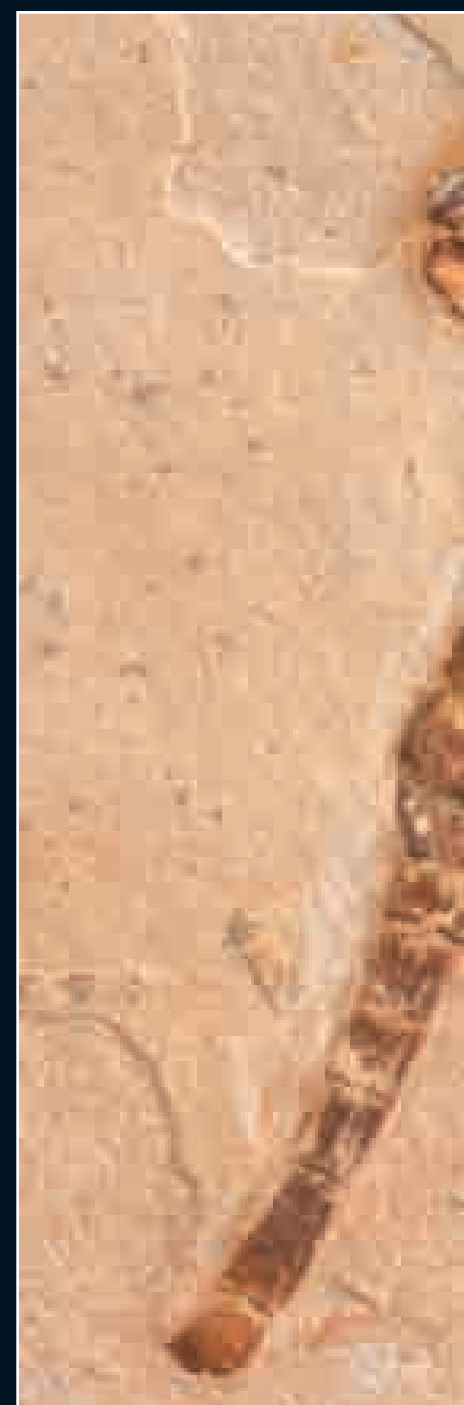
तिलचट्टा

उम्र : 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष

आकार : 25 मिमी (0.9 इंच) कीट का; मैट्रिक्स : 90 मिमी (3.5 इंच) गुणा 113 मिमी (4.4 इंच)

स्थान : नोवा ओलिंदा मेंबर, सिएरा, ब्राजील

संरचना : क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस, अपर एप्टिअन सिनोमेनिअन

इस चित्र में दिखाया गया 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म तिलचट्टों के उन जीवाश्मों में से एक है जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत को काल्पनिक साबित करते हैं। यह जीवित उदाहरणों से किसी भी रूप में अलग नहीं है।

तिलचट्टा

उम्र : 12.8 करोड़ वर्ष

आकार : टांगों सहित 18 मिमी (0.7 इंच) मैट्रिक्स : 110 मिमी (4.3 इंच) गुणा 93 मिमी (3.6 इंच)

स्थान : सिएरा, ब्राजील

संरचना : सैनटाना संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

यदि कोई जीव करोड़ों वर्षों तक सभी पर्यावरणीय परिवर्तनों के बावजूद अपने आकार–प्रकार को बनाए रखता है, बिल्कुल नहीं बदलता है तो यह कहा ही नहीं जा सकता कि इस जीव का क्रमिक–विकास हुआ है। हजारों जीवों के करोड़ों जीवाश्म यह सिद्ध करते हैं कि यह असंभव है।

एक्वेटिक बीटल (जलीय भुनगा)

उम्र : 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष

आकार : 26 मिमी; मैट्रिक्स : 115 मिमी (4.5 इंच) गुणा 102 मिमी (4.5 इंच)

स्थान : नोवा ओलिंदा मेंबर, सिएरा, ब्राजील

संरचना : क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस, अपर एप्टिअन सिनोमेनिअन

जलीय भुनगे अपने जीवन का ज्यादातर समय पानी के अंदर ही बिताते हैं। उत्तरी अमेरिका में ही इसकी 500 ज्ञात प्रजातियां हैं और विश्व भर में करीब 5000 प्रजातियां हैं। ये पानी के अंदर सांस लेने के लिए पानी की सतह से हवा के बुलबुले खींच सकती हैं। इन भुनगों की आकर्षक रूप से जटिल संरचना होती है और करोड़ों वर्षों से इन्होंने इन्हीं आदर्श गुणों को बनाए रखा है। चित्र में दिखाया गया जलीय भुनगे का जीवाश्म इस बात का प्रमाण है कि ये आज भी वैसे ही हैं जैसे ये 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष पहले थे और ये किसी भी क्रमिक–विकास को नहीं दर्शाते हैं।

टिड्डा

उम्र : 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष

स्थान : अराराइप बेसिन, सिएरा, ब्राजील

संरचना : क्रेटो संरचना

काल : क्रिटेशियस, मेसेज़ोइक युग

चित्र में दिखाया गया टिड्डे का जीवाश्म 10.8 से 9.2 करोड़ वर्ष के बीच का है। अन्य प्राणियों की ही भांति जो कि वर्षों से वैसे ही बने हुए हैं, यह टिड्डा डारविनवादियों को यह दिखाता है कि ये प्रजातियां किसी भी क्रमिक–विकास को नहीं दर्शाती हैं।

तिलचट्टा

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 2.5 सेंटीमीटर (1 इंच) लंबाई; मैट्रिक्स : 11.5 सेंटीमीटर (4.5 इंच) गुणा 11.5 सेंटीमीटर (4.5 इंच) चौड़ाई और 0.7 सेंटीमीटर (0.2 इंच) मोटाई

स्थान : अराराइप बेसिन, ब्राजील

संरचना : नोवा ओलिंदा मेंबर, क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

करोड़ों वर्षों से जो कीट ज्यों का त्यों है, वह है तिलचट्टा। तिलचट्टे के 32 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म मिले हैं। क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर तिलचट्टों के प्रभाव को फोकस पत्रिका ने इस प्रकार बताया है :

सिद्धांत के अनुसार पर्यावरण में होने वाले बदलावों, दुश्मन प्रजातियों, प्रजातियों के बीच होड़ जैसी चीजों के कारण प्राकृतिक चयन होना चाहिए और इतने लंबे समय में प्रजातियों में काफी बदलाव दिखाई देना चाहिए, साथ ही उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) से भी भारी बदलाव दिखने चाहिए। लेकिन तथ्य तो कुछ और ही कहानी कहते हैं। तिलचट्टों का ही उदाहरण लें। ये बहुत तेजी से प्रजनन करते हैं और इनका जीवनकाल छोटा होता है, लेकिन करीब 25 करोड़ वर्षों से ये उसी तरह बने हुए हैं। (एवरिमिन सिकमाज सोकाक्लारी : यासायान फोसिलेर ख्क्रमिक–विकास की बंद गली : जीवित फॉसिल्स फोकस, अप्रैल 2003)

टिड्डा

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 2 सेंटीमीटर (0.8 इंच) लंबाई; मैट्रिक्स : 10.5 सेंटीमीटर (4 इंच) गुणा 7.5 सेंटीमीटर (2.9 इंच) चौड़ाई और 0.5 सेंटीमीटर (0.2 इंच) मोटाई

स्थान : अराराइप बेसिन, ब्राजील, दक्षिणी अमेरिका

संरचना : नोवा ओलिंदा मेंबर, क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

टिड्डे ऑर्थोर्पिटेरा श्रेणी के जीव हैं और इनका जीवाश्म रिकॉर्ड बताता है कि करोड़ों वर्षों से ये उसी आकार–प्रकार में हैं। टिड्डे अधिकतर उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाये जाते हैं, लेकिन पूरे भूमंडल पर ये विभिन्न क्षेत्रों में देखे जा सकते हैं।

टिड्डों के सभी जीवाश्म यह दिखाते हैं कि करोड़ों वर्षों में भी उनकी जाति नहीं बदली; दूसरे शब्दों में, टिड्डों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ। चित्र में दिखाया गया यह 12.5 करोड़ वर्ष पुराना टिड्डे का जीवाश्म इसके सबूतों में से एक है।

टिड्डा
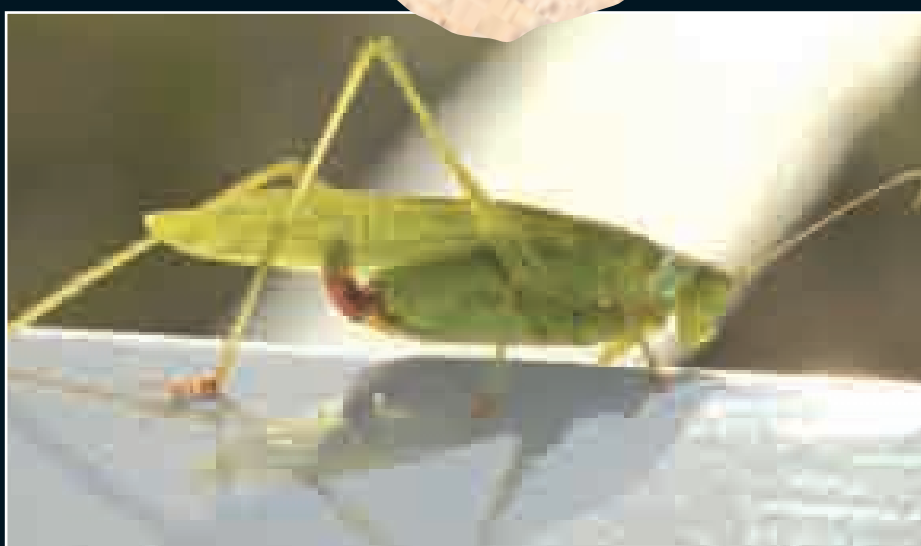
उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 3.8 सेंटीमीटर (1.5 इंच)

स्थान : अराराइप बेसिन, ब्राजील

संरचना : नोवा ओलिंदा मेंबर, क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

यह 12.5 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म इस बात का प्रमाण है कि टिड्डे हमेशा ही टिड्डे बने रहे। इस तथ्य के सामने, क्रमिक–विकासवादियों के लिए इस बात की तार्किक व्याख्या संभव ही नहीं है।

लंबे एंटीना वाला टिड्डा

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 1.5 सेंटीमीटर (0.6 इंच), इसके 1.8 सेंटीमीटर (0.7 इंच) लंबे एंटीना से इसकी कुल लंबाई बढ़कर 3.4 सेंटीमीटर (1.3 इंच) हो जाती है।

स्थान : अराराइप बेसिन, ब्राजील

संरचना : नोवा ओलिंदा मेंबर, क्रेटो संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

इन टिड्डों की सबसे अलग विशेषता इनके लंबे पतले एंटीना हैं जो लंबाई में इनके शरीर से लगभग दोगुने होते हैं। अन्य सभी टिड्डों की तरह लंबे एंटीना वाले टिड्डे भी करोड़ों वर्षों से वैसे ही बने हुए हैं। यह चित्र यह दर्शाता है कि आज के टिड्डे और 12.5 करोड़ वर्ष पुराने टिड्डे में कोई अंतर नहीं है।

पेरू में खोजे गए फॉसिलों के नमूने

पेरू की भूवैज्ञानिक और भौगोलिक संरचना ऐसी है कि यहां पर विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग जीवाश्म मिले हैं। देश के तीन प्रमुख क्षेत्र हैं : तटवर्ती क्षेत्र, मध्य क्षेत्र जिसमें एंडीज पर्वतमाला है, और अमेज़न बेसिन जिसमें अमेज़न शामिल हैं। ज्यादातर जीवाश्म क्षेत्र एंडीज और देश के उत्तरी हिस्से में हैं।

पेरू की मुख्य जीवाश्म क्षेत्रों में से एक देश के उत्तर में काजामार्का संरचना है। इस संरचना की चट्टान की बनावट का मुख्य अवयव चूना पत्थर है। एक अन्य महत्त्वपूर्ण जीवाश्म क्षेत्र पिस्को संरचना है, जो अपने मछली के जीवाश्मों के लिए प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र

देश के दक्षिण में स्थित पिस्को संरचना विशाल फॉसिल क्षेत्रों में से एक है।

में विभिन्न समुद्री प्राणियों के जीवाश्म मिले हैं, जिसमें ह्वेल, डॉल्फिन, समुद्री सिंह, पेंग्विन और कछुए शामिल हैं। यह संरचना

तट से लगभग 30 किलोमीटर (18.6 मील) की दूरी पर है, जो पेरू के बहुत प्राचीन समय की भूवैज्ञानिक जानकारी देता है।

पेरू में जीवाश्म की खोजों से सामने आए महत्त्वपूर्ण तथ्य भी क्रमिक–विकास के सिद्धांत को निरस्थ करते हैं। 19वीं सदी के मध्य से क्रमिक–विकासवादी इस उम्मीद के साथ फॉसिलों की खोज में लगे थे कि ये उनके क्रमिक–विकास के सिद्धांत में सहायक होंगे लेकिन इसमें उन्हें निराशा ही हाथ लगी। अपने सभी प्रयासों के बावजूद इस सिद्धांत के समर्थन में एक भी जीवाश्म को खोजा नहीं जा सका। खुदाई और खोज से मिले नतीजे क्रमिक–विकास के सिद्धांत को सिद्ध करने के बजाय यह बताते हैं कि सभी जीव अचानक, पूर्ण रूप से और दोषरहित रूप में प्रकट हुए। ये यह भी दिखाते हैं कि जीवित वस्तुओं के अस्तित्व में आने के बाद कभी भी किसी भी प्रकार के परिवर्तन को नहीं दर्शाया। यह प्रमाण है कि वे किसी भी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का विषय नहीं

काज़ामार्का की चूने की चट्टानों में कई प्रकार के फॉसिल मिलते हैं। अन्य सभी की तरह, पिस्को से प्राप्त फॉसिलों के उदाहरण भी यह उजागर करते हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।
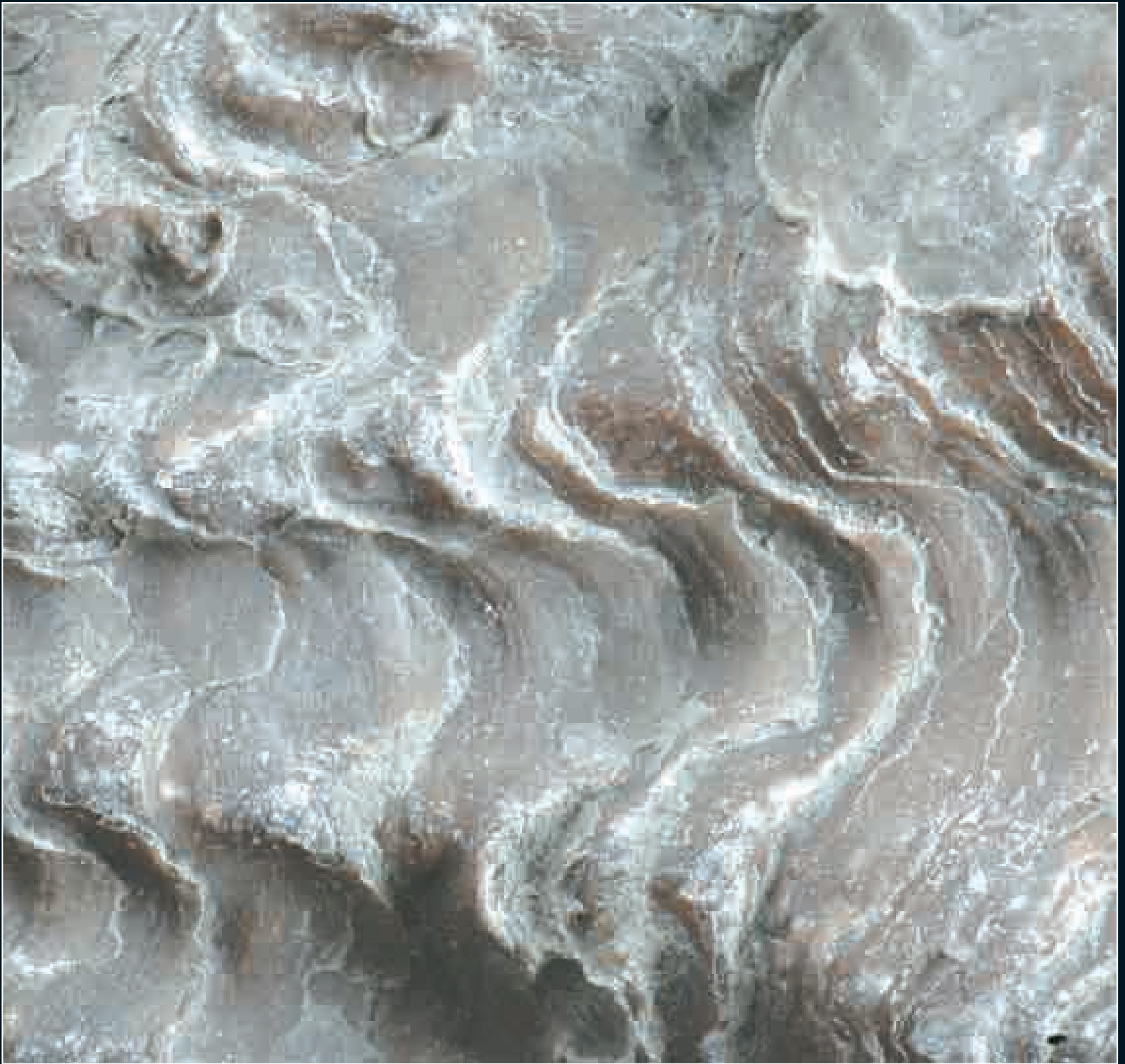
ऑयस्टर (सीप)

उम्र : 2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष

आकार : 7.6 सेंटीमीटर (3 इंच)

स्थान : कासामार्का, पेरू

काल : मिओसीन

2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष पुराने ऑयस्टरों की तरह ही आज के ऑयस्टर हैं, इससे पता चलता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत मानने योग्य नहीं है। करोड़ों वर्षों से एक जैसे ऑयस्टरों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि उनकी रचना की गई थी।

ऑयस्टर

उम्र : 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष

आकार : लगभग 8 सेंटीमीटर (3.25 इंच)

स्थान : बांबामार्का, काजामार्का, पेरू

काल : जुरासिक

चित्र में दिखाया गया ऑयस्टर 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष पुराना है, यह वैसा ही है जैसे आज का कोई जीवित ऑयस्टर। यह क्रमिक–विकास के सिद्धांत का खण्डन करता है।
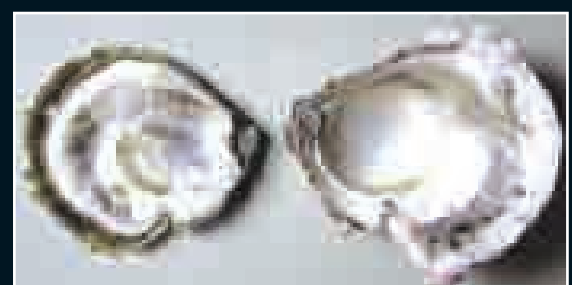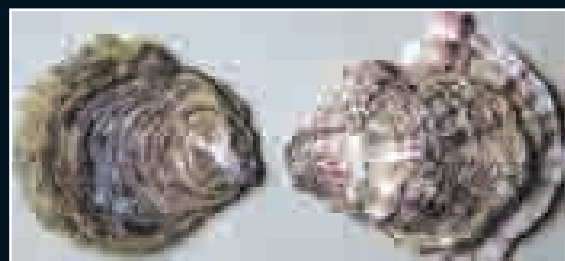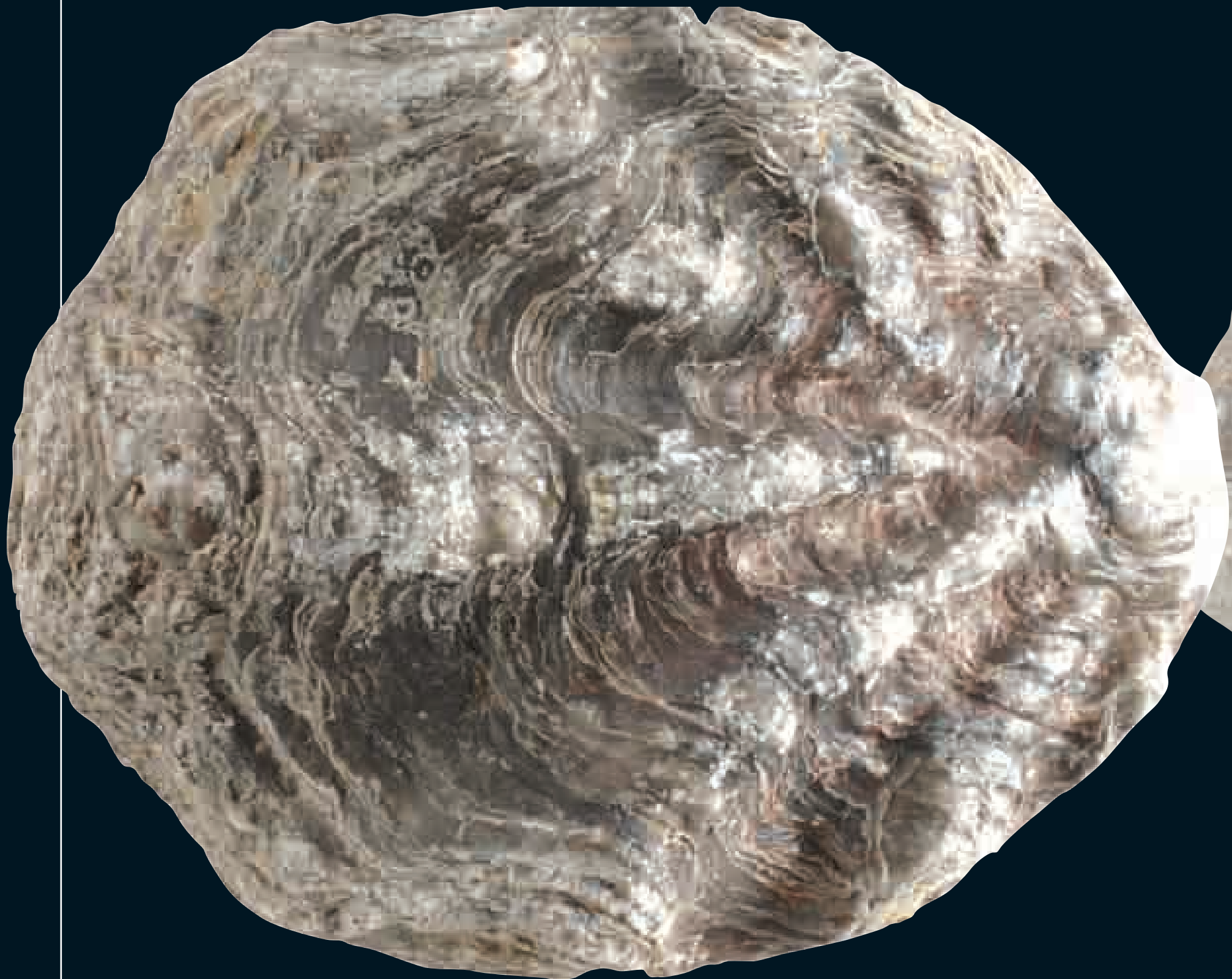
आज के सीप

ऑयस्टर

उम्र : 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष

आकार : लगभग 8 सेंटीमीटर (3.25 इंच)

स्थान : बांबामार्का, काजामार्का, पेरू

काल : जुरासिक

जीवाश्मों का रिकॉर्ड ऐसे जीवों से भरा हुआ है जो करोड़ों वर्षों से अपरिवर्तित रहे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण चित्र में दिखाया गया 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष पुराना ऑयस्टर का जीवाश्म है। अन्य सभी जीवाश्म नतीजों की ही तरह यह भी क्रमिक–विकास को झुठलाता है।
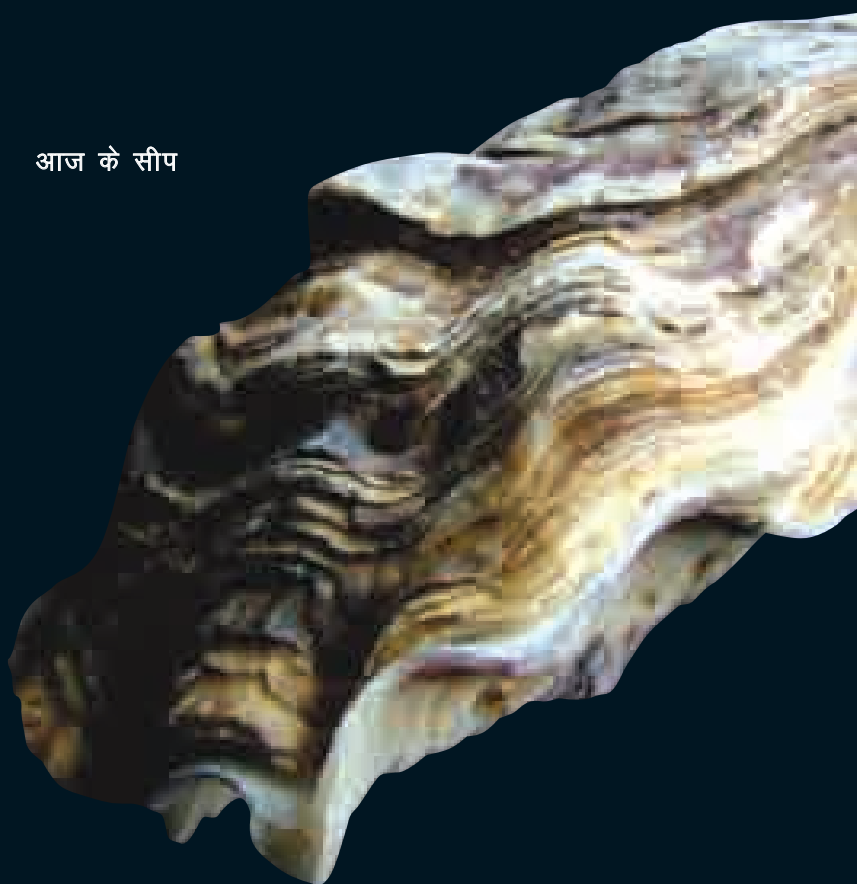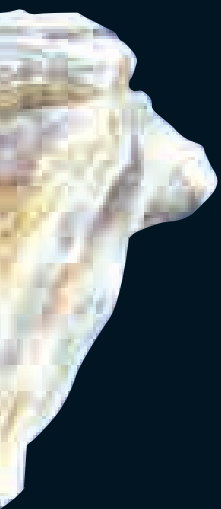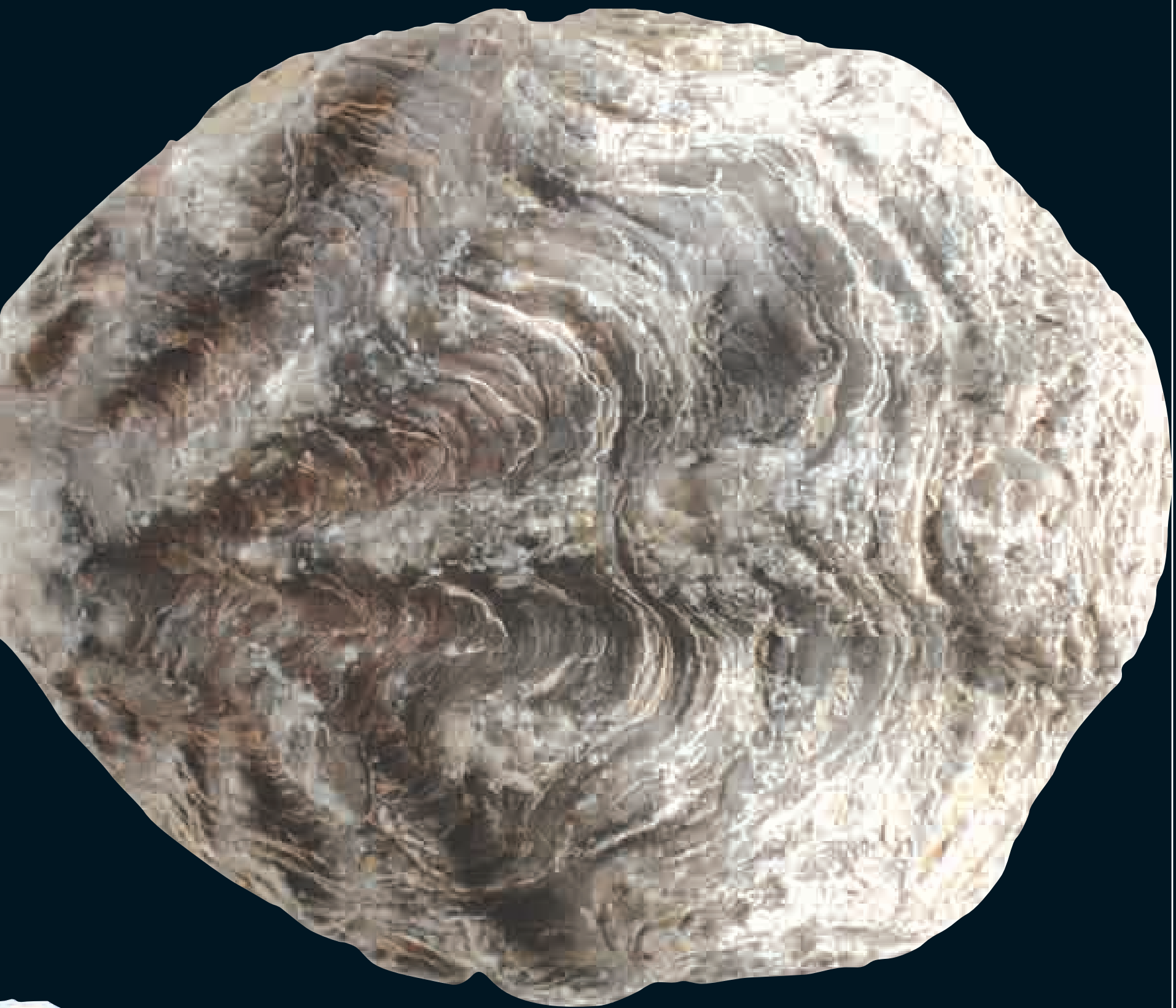
अर्जेंटीना में खोजे गए जीवाश्म के संग्रह

अर्जेंटीना में खोजे गए अधिकतर जीवाश्म पैटागोनिया क्षेत्र से हैं। दक्षिणी अमेरिकी महाद्वीप में चिली और अर्जेंटीना के दक्षिणी भागों को पैटागोनिया क्षेत्र कहा जाता है। अर्जेंटीना में यह एंडीज के पूर्व में है। पेंग्विन, ह्वेल, सील, जंगली शुतुरमुर्ग और सी लायन जैसे विभिन्न प्रकार के जीव यहां पाए जाते हैं और इस इलाके में जीवाश्म भी प्रचुर मात्रा में मिलते हैं।

इस क्षेत्र का एक जीवाश्म क्षेत्र इशीगुआलास्टो संरचना है। भूवैज्ञानिक खोजों से पता चला है कि करीब 23 करोड़ वर्ष पूर्व यह क्षेत्र अत्यधिक मौसमी बारिश और सक्रिय ज्वालामुखी वाला बाढ़ का केंद्र था। इस जीवाश्म क्षेत्र में ट्रायसिक काल (24.8 से 20.6 करोड़ वर्ष) के स्तनधारी और समुद्री जीवों के बड़ी संख्या में जीवाश्म संग्रह पाए जाते हैं। 1950 के दशक से इसके महत्त्व को समझा गया और फिर यहां पर खुदाई और खोजबीन का काम विशाल स्तर पर चला।

अर्जेंटीना का एक जीवाश्म क्षेत्र सांताक्रुज में जारामिलो जंगल है जहां 35 करोड़ वर्ष पुराने वृक्षों के अवशेष हैं। यह भी एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण है जो संकेत देता है कि अनेक वनस्पति प्रजातियां करोड़ों वर्षों से आज भी वैसी ही बनी हुई हैं और किसी क्रमिक–विकास का हिस्सा नहीं रही हैं।

जैरामिलो में जम कर पत्थर बन गए पेड़ों के जंगल के फॉसिल

इशिगुआलास्टो आज एक भरपूर फॉसिलों वाला क्षेत्र है, लेकिन 23 करोड़ वर्ष पहले यह बेहद नीचे स्थित बेसिन था, जो पानी में डूबा रहता था।

चिली में खोजे गए फॉसिल नमूने

इस देश के उत्तर में अटाकामा मरुस्थल के बाह्यीय क्षेत्रों में जीवाश्म यहां–वहां अक्सर मिल जाते हैं। जीवाश्म संग्रहों से संबंधित समृद्ध क्षेत्रों में से एक पैटागोनिया है, जो देश के दक्षिण में है। एंडीज पर्वतमाला में भी जीवाश्म क्षेत्र है।

चिली के जीवाश्म क्षेत्रों से स्तनधारी, समुद्री और रेंगने वाले जीवों तथा वनस्पतियों की विभिन्न प्रजातियों के जीवाश्म मिले हैं। प्रसिद्ध जीवाश्म क्षेत्रों में से एक क्विरीक्विना संरचना है जिसके ज्यादातर फॉसिल क्रिटेशियस काल के हैं। इनकी सहायता से क्रिटेशियस काल के समुद्री जीवन के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारियां मिली हैं। मध्य चिली की कुछ जीवाश्म क्षेत्र, विशेष रूप से एंडीज, स्तनधारी जीवाश्मों के भंडार के लिए प्रसिद्ध हैं।

इन क्षेत्रों से मिले सभी जीवाश्मों ने डारविनवादियों को एक बार फिर भयंकर संकट में डाल दिया है, क्योंकि यह जीवाश्म प्रदर्शित करते हैं कि जीवित प्राणियों में सभी भूवैज्ञानिक कालों के दौरान कोई परिवर्तन नहीं हुआ। दूसरे शब्दों में कहें तो किसी भी प्रजाति का जीवाश्म रिकॉर्ड में आने पर जो रूप था, वही रूप लाखों नहीं बल्कि करोड़ों वर्षों तक बना रहा। प्रजाति या तो खत्म हो गई या फिर आज भी वैसी ही बनी हुई है। यह स्पष्ट प्रमाण है कि जीव–जंतु कभी भी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अंग नहीं थे।

जैसा कि जीवाश्मों की खोजों से पता चलता है कि पृथ्वी पर प्रजातियां अचानक प्रकट हुईं, न कि क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से क्रमशः विकसित हुई हैं। अचानक प्रकट होने का मतलब है रचना। अल्लाह ने सभी जीव–जंतुओं की दोषरहित ढंग से शून्य से रचना की है। जीवाश्मों की खोजों ने एक बार फिर इस सत्य को सामने रख दिया है।
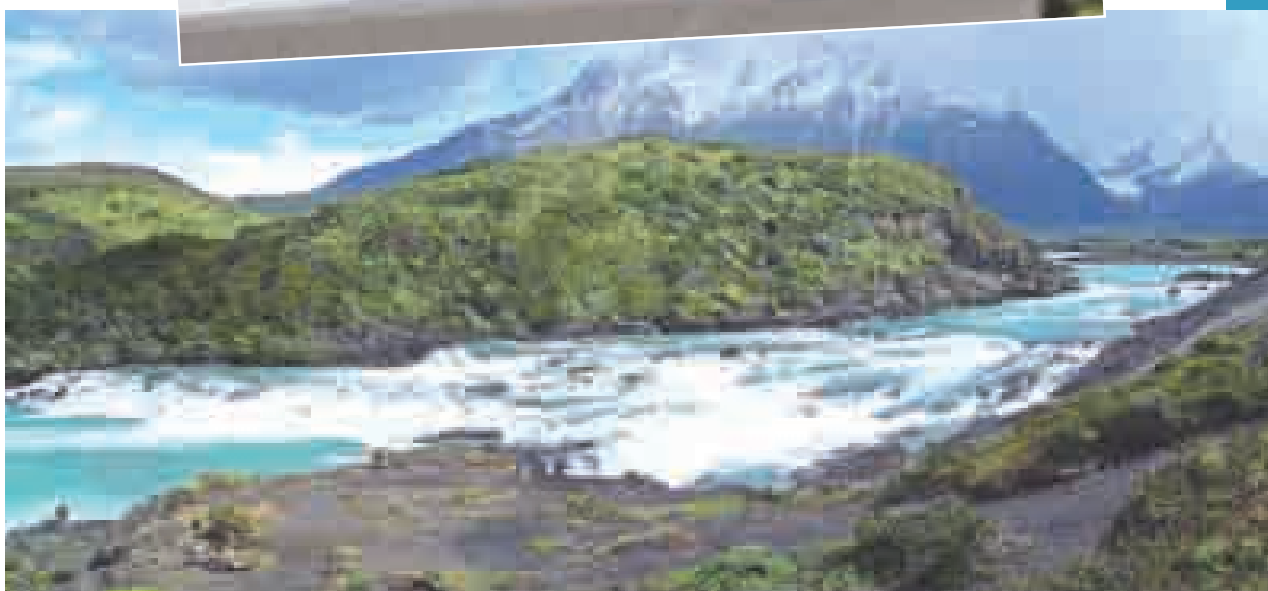
एंडीस क्षेत्र से कई प्रकार के स्तनपायी जानवरों के फॉसिल मिले थे।

अरॉकेरिया शंकु का टुकड़ा

उम्र : 16.5 करोड़ वर्ष

आकार : 5.6 सेंटीमीटर (2.2 इंच) गुणा 7 सेंटीमीटर (2.7 इंच)

स्थान : जारामिलो, सांता क्रुज, पैटागोनिया, अर्जेंटीना

काल : जुरासिक, कैलोवियन

जारामिलो में पत्थर की तरह जम गए जंगलों से 16.5 करोड़ वर्ष पुराने अरॉकेरिया शंकु जीवाश्म का यह टुकड़ा मिला था। शंकु के सारे विवरणों को प्रदर्शित करने वाला यह जीवाश्म इस बात का उदाहरण है कि यह प्रजाति क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुई। आज के शंकुओं के लक्षण भी 16.5 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्मों के ही समान हैं।

केकड़ा

उम्र : 2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष

स्थान : रिओ डी ला प्लाटा, पैटागोनिया, अर्जेंटीना

काल : मिओसीन

जीवाश्म रिकॉर्ड में अक्सर पाए जाने वाले जीवों में से एक केकड़ा है। करोड़ों वर्ष पुराने केकड़ों और आज पाए जाने वाले केकड़ों में कोई अंतर नहीं है, इसका एक प्रमाण चित्र में दिखाया गया 2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष पुराना केकड़ा है। यह केकड़ा आज के केकड़े जैसा ही है।

अरॉकेरिया शंकु

उम्र : 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष

आकार : हरेक आधा 7.6 सेंटीमीटर (3 इंच) का है

स्थान : सेरो क्वाड्राडो, पैटागोनिया, अर्जेंटीना

संरचना : अश्मीकृत वन (पत्थर की तरह जमे हुए जंगल)

काल : जुरासिक

यह अरॉकेरिया शंकु 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष पुराना है और आज के शंकु जैसा ही है। यह इस बात का प्रमाण है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत असत्य है और एक बहुत बड़ा धोखा है। संपूर्ण जीवाश्म रिकॉर्ड अल्लाह के द्वारा की गई रचना के तथ्य को सामने ला देते है।

कॉरमोरेंट (समुद्री चील) की खोपड़ी

उम्र : 1.8 करोड़ वर्ष

आकार : 12.7 सेंटीमीटर (5 इंच)

स्थान : चिली

काल : मिओसीन

चित्र में दिखाई गई 1.8 करोड़ वर्ष पुरानी कॉरमोरेंट स्कल (समुद्री चील की खोपड़ी) इस बात का प्रमाण है कि प्रागैतिहासिक काल से लेकर आज तक कॉरमोरेंट एक जैसे बने हुए हैं। किसी भी प्रकार का कोई अंतर न होना इस बात का संकेत है कि पक्षियों में करोड़ों वर्षों मैं भी परिवर्तन नहीं हुआ है; दूसरे शब्दों में कहें तो इनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ है।

कॉरमोरेंट (समुद्री चील) की खोपड़ी

उम्र : 1.8 करोड़ वर्ष

आकार : 15.2 सेंटीमीटर (6 इंच)

स्थान : चिली

काल : मिओसीन

कॉरमोरेंट फेलाक्रॉकोरासिडा वर्ग का एक समुद्री पक्षी है और वर्तमान में इसकी 38 विभिन्न प्रजातियां जीवित हैं।

जीवाश्म रिकॉर्ड दिखाते हैं कि करोड़ों वर्षों पहले के कॉरमोरेंट के लक्षण आज के कॉरमोरेंट जैसे ही हैं। पक्षियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ, इसको साबित करने वाला यह सत्य एक बार फिर क्रमिक–विकासवादियों की पराजय की घोषणा कर रहा है।

केकड़ा

उम्र : 2.5 करोड़ वर्ष

आकार : 15 सेंटीमीटर (6 इंच)

स्थान : कॉन्सपेसियन, दक्षिणी चिली

काल : ओलिगोसीन

जीवाश्म रिकार्ड हर दृष्टिकोण से क्रमिक–विकास को निरस्त करते हैं। चित्र में दिखाया गया 2.5 करोड़ वर्ष पुराना केकड़े का जीवाश्म क्रमिक–विकास के सिद्धांत को अप्रमाणित करने वाले उदाहरणों में से एक है। करोड़ों वर्षों से अपरिवर्तित केकड़ा एक बार फिर इस बात की पुष्टि कर रहा है कि प्रजातियों का क्रमिक–विकास नहीं हुआ है, क्योंकि यह जीवाश्म आज के केकड़ों से बिल्कुल अलग नहीं है।

यूरोप में मिले
फॉसिलों के नमूने

जर्मनी में खोजे गए जीवाश्म के संग्रह

भूवैज्ञानिक खोजों से पता चलता है कि पूरे जुरासिक काल (20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष) के दौरान पश्चिमी यूरोप का बड़ा हिस्सा गर्म, छिछले समुद्रों से ढका था। समुद्री प्राणियों से संबंधित जीवाश्म बड़ी संख्या में इन क्षेत्रों से मिले हैं।

विशेष रूप से, जर्मनी के कुछ जीवाश्म क्षेत्रों से हम डेवोनियन और जुरासिक कालों के जीव रूपों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त कर सके हैं। इन जीवाश्म क्षेत्रों में सबसे महत्त्वपूर्ण मेसेल, सोलन्होफेन और होल्जमेडेन संरचना और हन्सरक्सशीफेर प्राणी–समूह हैं।

हन्सरक्सशीफेर प्राणि–समूह में पैलियोज़ोइक काल (54.3 से 25.1 करोड़ वर्ष) की ढेर सारी प्रजातियों के जीवाश्मों की एक बड़ी संख्या सम्मिलित है। क्षेत्र से मिले ज्यादातर जीवाश्म निम्न और मध्य डेवोनियन काल के हैं। हन्सरक्सशीफेर प्राणि–समूह की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता, बर्गेस शेल की तरह, यह है कि कुछ जीवन रूपों के जीवाश्म अपने कोमल ऊतकों के साथ इस तरह बन गए कि इनसे हमें न केवल इनकी बाहरी संरचनाओं का पता चलता है; जो करोड़ों वर्षों से अस्तित्व में रहे हैं, इनकी जीवन–शैली तथा व्यवहार के बारे में भी जानकारी मिलती है।

ये अवशेष बताते हैं कि हर दौर में जीवित प्राणियों में जटिल प्रणालियां मौजूद रही हैं और उनकी शारीरिक संरचना बहुत विकसित रही है। इन सच्चाइयों का सामना होने पर डारविनवादियों की हालत बड़ी निराशाजनक हो जाती है, जो मानते हैं कि जीवित प्राणियों का विकास क्रमशः किसी काल्पनिक आदिम स्थिति से अधिक जटिल स्थिति की ओर हुआ है। उनके लिए निराशा की बात यह है कि बिना किसी अपवाद के सभी जीवाश्म रिकार्ड क्रमिक–विकास के सिद्धांत का खंडन कर रहे हैं और बार–बार रचना होने की सत्यता को सिद्ध कर रहे हैं।

होल्जमेडेन संरचना से मिले जीवाश्म आम तौर पर गहरे जल में रहने वाले प्राणियों से संबंध रखते हैं। ज्यादातर जीवाश्म अपने अंगों और कंकाल के साथ अच्छी तरह सुरक्षित हैं। दुर्लभता से मिलने वाले मुलायम ऊत्तक वाले जीवाश्म भी होल्जमेडेन में पाए

मेस्सेल में किए गए फॉसिल संबंधी शोध

जर्मनी के विशाल फॉसिल क्षेत्रों में से एक सान्हाफेन एक ऐसा स्थान है जहां से बड़ी संख्या में फॉसिल निकाले गए हैं।

हन्सरक्सशीफर और शीफरहाल्डे में किए शोध

गए हैं। सोलन्होफेन आमतौर पर ऐसे जीव रूपों के जीवाश्म हैं जो छिछली खाड़ियों और जल शोषक व मूंगे की चट्टानों में रहते थे। सोलन्होफेन से धरती पर रहने वाले जीवों जैसे कीट, पौधे, छिपकलियां, मगरमच्छ और पक्षियों के भी जीवाश्म मिले हैं। इनमें पक्षियों की सबसे पुरानी प्रजातियों में से एक आर्रकियोपेट्रिक्स के सात अलग–अलग जीवाश्म भी शामिल हैं।
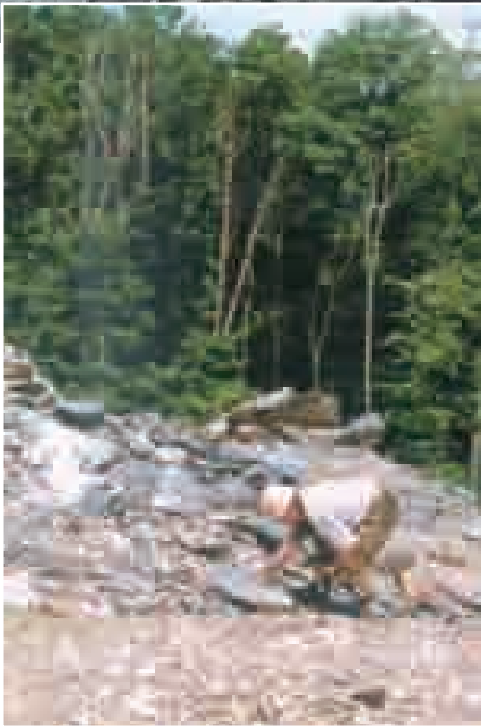
जर्मनी में इसके अलावा प्रमुख फॉसिल क्षेत्र मेसेल संरचना है। प्रागेतिहासिक काल में यह एक झील थी जो करीब 700 मीटर (2296 फीट) चौड़ी और 1000 मीटर गहरी थी। आज इसमें इओसीन काल (5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष) के जीवाश्मों की बड़ी संख्या है। ऐसा समझा जाता है कि मेसेल में उस समय ऊष्णकटिबंधीय जलवायु रही होगी। इसमें विभिन्न जीवों जैसे कि पौधों, पक्षियों, चमगादड़ों, रेंगने वालों, मछली, कछुओं और कीटों के जीवाश्म मिलते हैं।

स्टुटगार्ट के नजदीक स्थित हॉल्जमादेन फॉसिल क्षेत्र, उन विशाल फॉसिल क्षेत्रों में से एक है जहां शुरुआती जुरासिक काल की प्रजातियां मिली हैं।

श्रिंप (झींगामछली)

उम्र : 14.5 करोड़ वर्ष

स्थान : आइकस्टाट, बायेर्न, जर्मनी

आकार : मैट्रिक्स : 10.5 सेंटीमीटर (4.1 इंच) गुणा 15.2 सेंटीमीटर (5.9 इंच)

काल : जुरासिक, माल्म जेटा

श्रिंप (झींगामछली) उप–संघ क्रस्टेशिया का एक आर्थ्रापोड है। इसका शरीर कवच से ढंका होता है, जो मुख्य रूप से कैल्शियम कार्बोनेट का बना होता है। श्रिंप की विभिन्न प्रजातियां मीठे और नमकीन पानी दोनों में ही पाई जाती हैं। सबसे पुराने श्रिंप के जीवाश्म करीब 20 करोड़ वर्ष पुराने हैं।

चित्र में दिखाया गया श्रिंप का जीवाश्म लगभग 14.5 करोड़ वर्ष पुराना है। श्रिंप, जिनका करोड़ों वर्षों से वही आकार–प्रकार बना हुआ है, इस बात का प्रमाण हैं कि जीव–जंतु कभी भी क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए हैं।

तारा मछली

उम्र : 39 करोड़ वर्ष

स्थान : हन्सरक्सशीफेर, बुंडेनबाश, जर्मनी

काल : डेवोनियन

समुद्र में आजकल पाई जाने वाली तारा मछली और 39 करोड़ वर्ष पुरानी तारा मछली में कोई अंतर नहीं है। करोड़ों वर्षों के अंतराल के बावजूद तारा मछली में कोई बदलाव नहीं आया है और न ही अतीत में इसका क्रमिक–विकास हुआ।
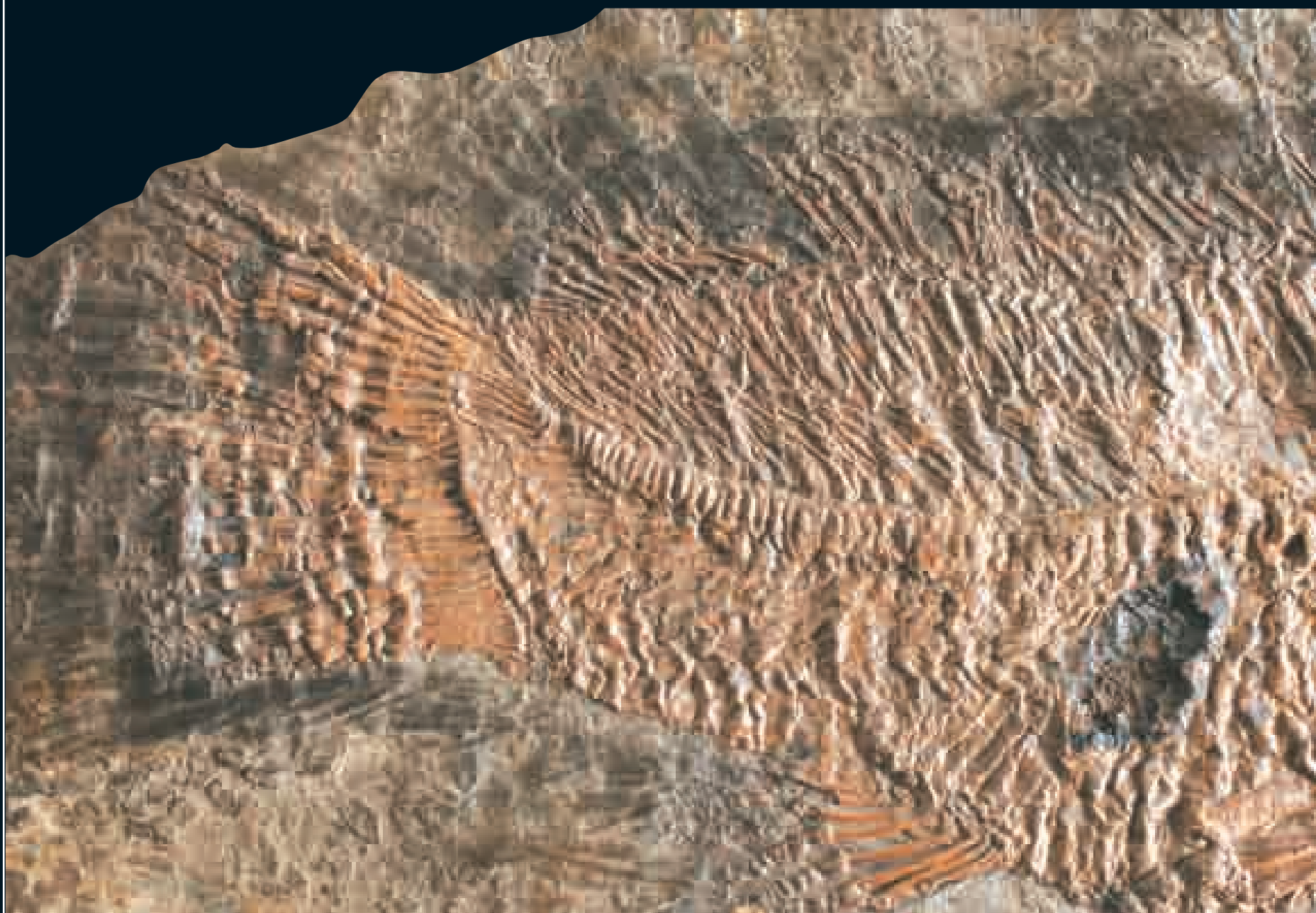
बोफिन

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : ओल्शीफेर, मेसेल, डार्मस्टाड, हेस्सेन, जर्मनी

काल : इओसीन, ल्यूटेटिअन

बोफिन एमिडा वर्ग से है। अन्य कई मछली की प्रजातियों की ही तरह इनका भी जीवाश्म का इतिहास समृद्ध है। प्राचीनतम ज्ञात जीवाश्म नमूनों में से एक लगभग 15 करोड़ वर्ष पुराना है।

सभी जीवाश्म यह दिखाते हैं कि बोफिन करोड़ों वर्षों से ज्यों की त्यों हैं और किसी भी तरह से इनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ है। चित्र में दिखाई गई 5 करोड़ वर्ष पुरानी बोफिन और आजकल पाई जाने वाली बोफिन में कोई भी अंतर नहीं है।

श्रिंप (झींगामछली)

उम्र : 15.5 करोड़ वर्ष

आकार : 7.5 सेंटीमीटर (2.9 इंच) लंबी; मैट्रिक्स : 20.8 सेंटीमीटर (8.1 इंच) गुणा 21.6 सेंटीमीटर (8.5 इंच)

स्थान : सोलन्होफेन, आइकस्टाट, जर्मनी

काल : जुरासिक

दशकों के शोध के बावजूद डारविनवादी ऐसा एक भी जीवाश्म खोजने में असफल रहे हैं, जिससे यह साबित हो सके कि क्रमिक–विकास हुआ था। हालांकि लाखों जीवाश्म संग्रहों ने दिखा दिया कि क्रमिक–विकास कभी नहीं हुआ। हरेक जीवाश्म ने यह बता दिया है कि अपने अस्तित्व के दौरान जीवित प्राणियों में कोई भी बदलाव नहीं आया है और करोड़ों वर्ष गुजर जाने के बावजूद वे एकदम वैसे ही बने रहे।

चित्र में दिखाया गया जीवाश्म इस बात का प्रमाण है कि आज के श्रिंप और 15.5 करोड़ वर्ष पुराने श्रिंप में कोई अंतर नहीं है।

गारफिश

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 31.75 सेंटीमीटर (12.5 इंच)

स्थान : फ्रैंकफर्ट, जर्मनी

संरचना : मेसेल शेल्स

काल : इओसीन

गारफिश, जो फॉसिल रिकॉर्ड में सबसे पहले 18 करोड़ वर्ष पहले आई, ऐसा फॉसिल उदाहरण है जो आज भी जीवित है। चित्र में दिखाया गया गारफिश का जीवाश्म 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुराना है। करोड़ों वर्ष से एक समान बनी हुई गारफिश क्रमिक–विकास को खारिज करती है।

चमगादड़

उम्र : 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 8.2 सेंटीमीटर (3.2 इंच) लंबा गुणा 4.5 सेंटीमीटर (1.8 इंच) चौड़ा

स्थान : फ्रैंकफर्ट, जर्मनी

संरचना : मेसेल शेल्स

काल : इओसीन

चमगादड़ो के जीवाश्म इस दावे को झुठलाते हैं कि जीवधारी क्रमिक–विकास से विकसित हुए हैं। इस तरह के जीवाश्म यह तथ्य उजार करते हैं कि जीवधारियों की रचना खुदा ने की।
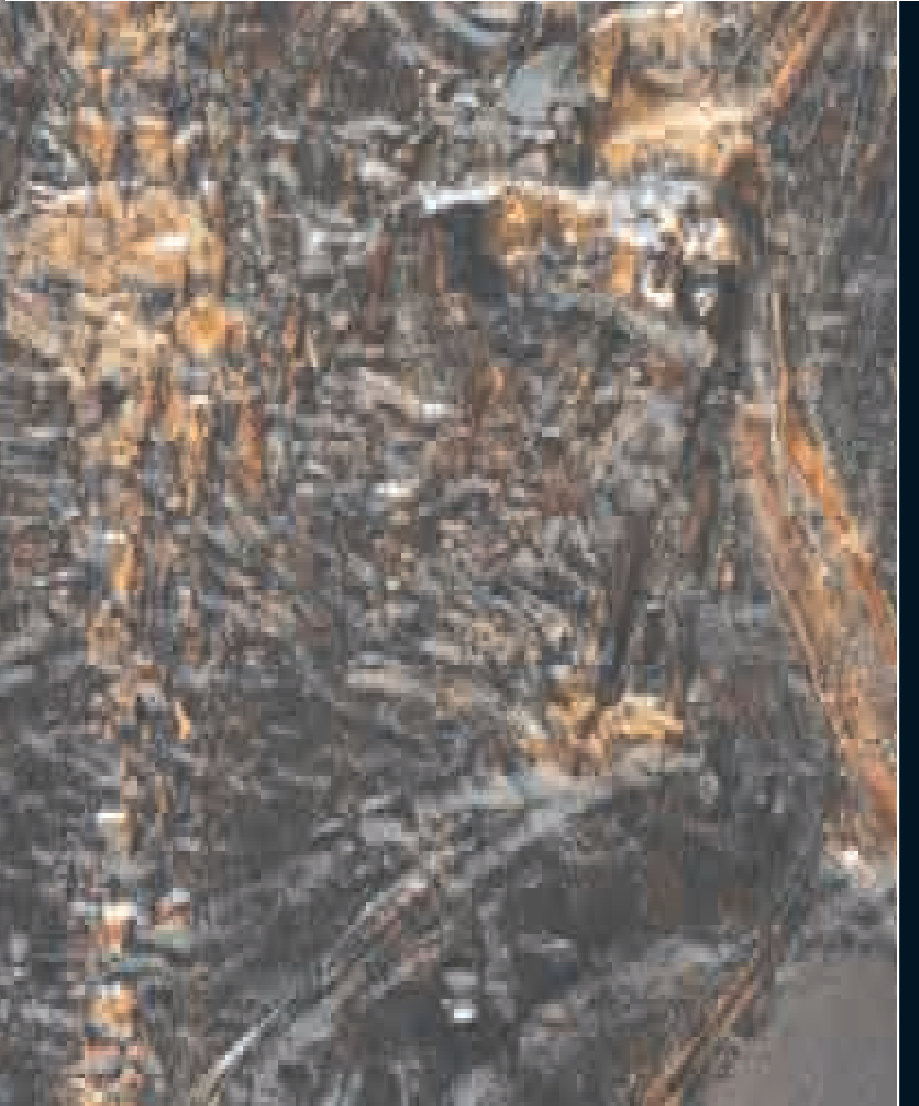
सेलाकैंथ

उम्र : 14.5 करोड़ वर्ष

स्थान : आइकस्टाट, बायेर्न, जर्मनी

काल : जुरासिक, माल्म जेटा

क्रमिक–विकासवादी लंबे समय तक सेलाकैंथ को एक गायब हो चुका बीच का रूप यानी आधा मछली, आधा रेंगने वाला जीव बताते रहे। लेकिन अब तक मिले 200 जीवित नमूनों ने इस बात को उजागर कर दिया है कि इस प्राणी के बारे में किए गए दावे एक छलावे से अधिक कुछ नहीं हैं। सेलाकैंथ कोई बीच का रूप नहीं बल्कि एक संपूर्ण और दोषरहित संरचना वाली एक मछली है जो गहरे पानी में रहती है। सेलाकैंथ के लगभग 41 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म मिल चुके हैं और यह करीब पचास करोड़ वर्षों से अपरिवर्तित बनी हुई है।

चित्र में दिखाया गया सेलाकैंथ का फॉसिल 14.5 करोड़ वर्ष पुराना है और यह साबित करता है कि क्रमिक–विकासवादियों का "पानी से सूखी धरती में परिवर्तन" का दावा एक धोखा है।

लॉब्स्टर (बड़ा झींगा)

उम्र : 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 12.9 सेंटीमीटर (5.1 इंच) गुणा 16.2 सेंटीमीटर (6.4 इंच); डेकापॉड (दस पैर) : 5.5 सेंटीमीटर (2.2 इंच)

स्थान : सोलन्होफेन, जर्मनी

काल : जुरासिक, माल्म जेटा

लॉब्स्टर की आंखें में वर्गाकार सतहें होती हैं जो उनमें आमतौर से पाई जाती हैं। यह वर्ग वास्तव में वर्गाकार प्रिज्म की बाहरी सतह होती है। लॉब्स्टर की आंख के इन प्रिज्मों में हरेक की आंतरिक सतह एक दर्पण जैसी होती है जो प्रकाश को तेजी से परिवर्तित करती है। इस सतह से परिवर्तित प्रकाश पीछे स्थित रेटीना पर एकदम सटीक ढंग से केंद्रित हो जाता है। ये सभी प्रिज्म एक ऐसे कोण की तरफ स्थापित किए गए हैं कि ये प्रकाश के प्रतिबिंब को एक ही बिंदु की तरफ बड़ी कुशलता से मोड़ देते हैं।

यह शानदार तालमेल वाली व्यवस्था सभी लॉब्स्टरों में बिना किसी नुक्स के करोड़ों वर्षों से काम कर रही है। आज के लॉब्स्टर देखने के लिए इस व्यवस्था का उसी तरह प्रयोग कर रहे हैं जैसे 20 करोड़ वर्ष पुराने लोबस्टर किया करते थे। यह तथ्य असरदायक ढंग से डारविनवादियों को गलत साबित कर देता है, जो जीवों के क्रमिक विकास का दावा करते हैं।
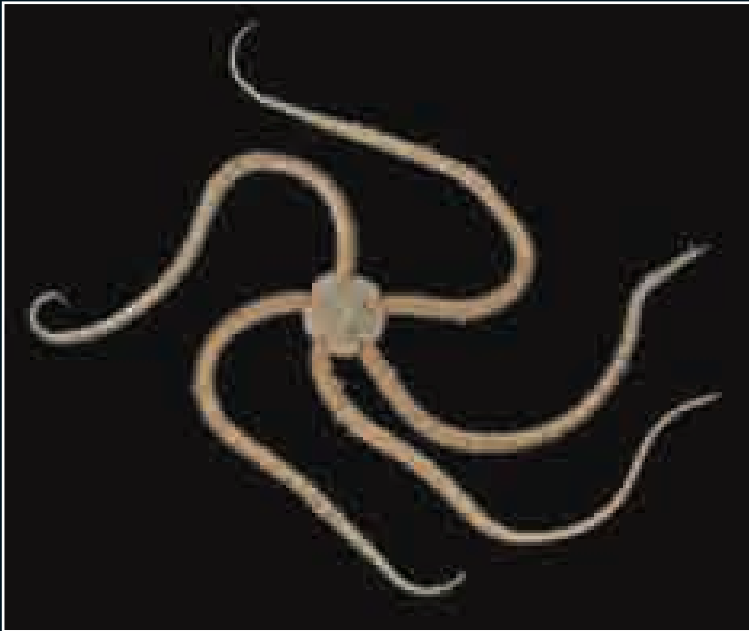
ब्रिटलस्टार

उम्र : 15 करोड़ वर्ष

आकार : 5 सेंटीमीटर (2 इंच) चौड़ाई में; मैट्रिक्स 95 मिलीमीटर (3.7 इंच) गुणा 75 मिलीमीटर (2.9 इंच) चौड़ाई में और 20 मिलीमीटर (0.7 इंच) मोटाई

स्थान : सोलन्होफेन, दक्षिणी जर्मनी

काल : अपर जुरासिक

ब्रिटलस्टार एक जीवित फॉसिल है जो निश्चित तौर पर क्रमिक–विकास को खारिज करता है। 30 करोड़ वर्ष पुराने ब्रिटलस्टार वैसे ही थे जैसे 24.5 करोड़ वर्ष पुराने और 15 करोड़ वर्ष पुराने; और जैसे आज के जीवित ब्रिटलस्टार के नमूने हैं। ब्रिटलस्टार, जिनमें करोड़ों वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है, हमें बताते हैं कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक झूठ है।
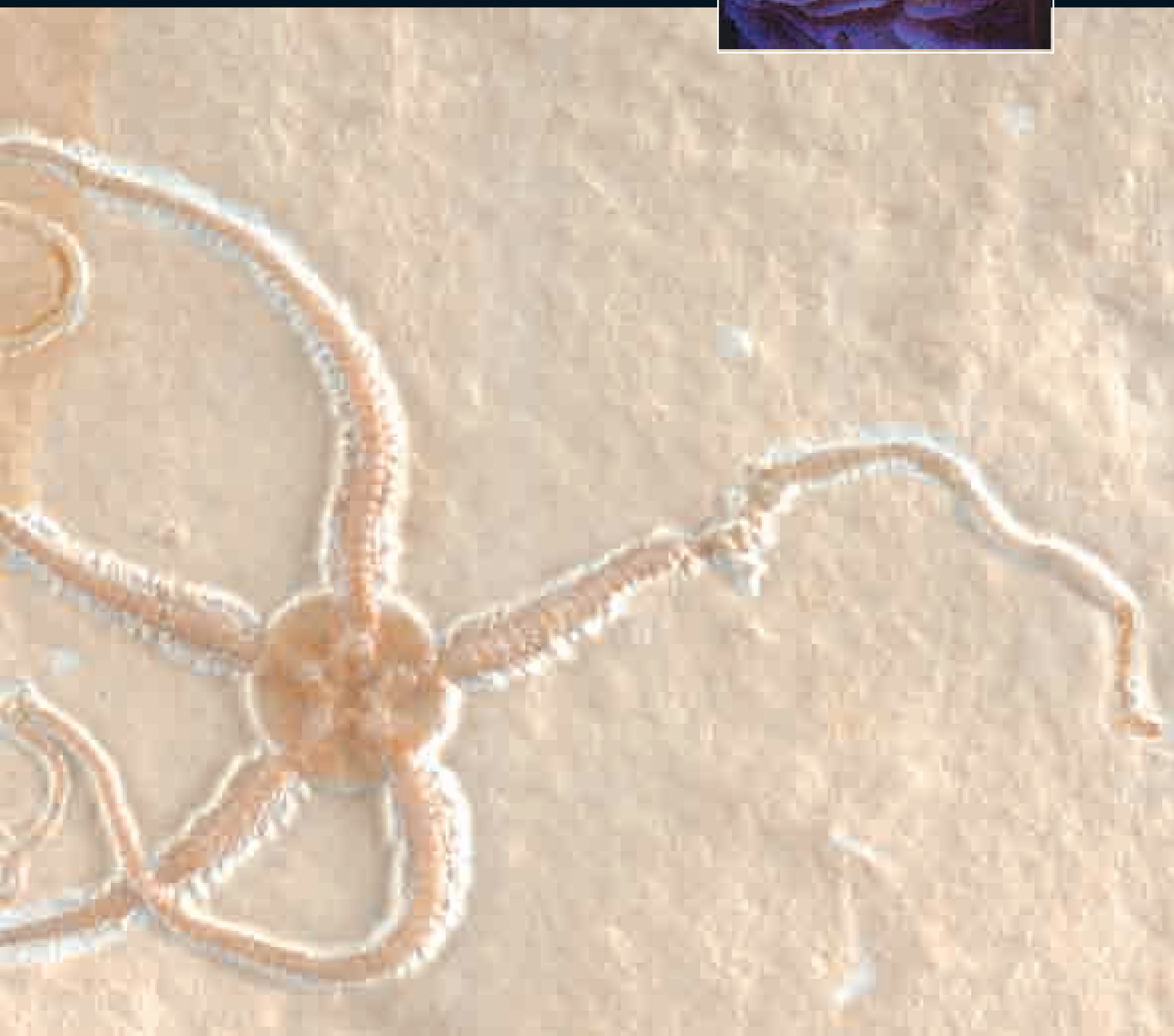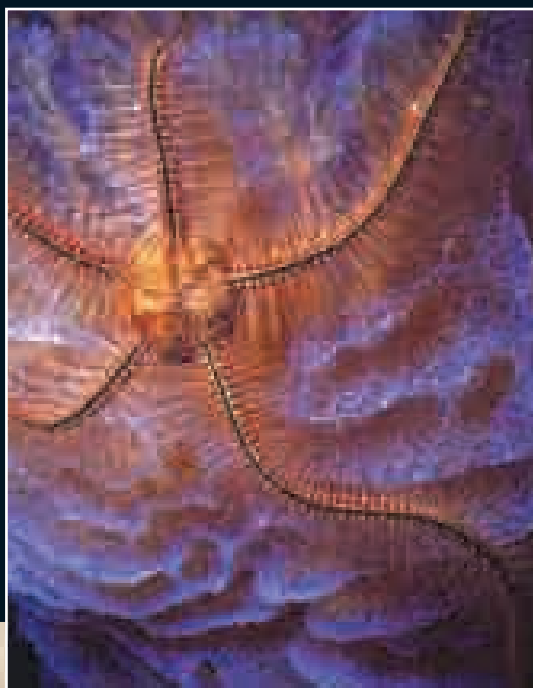
गैस्ट्रोपॉड

उम्र : 41 से 36 करोड़ वर्ष

आकार : प्लेट 9.3 सेंटीमीटर (3.7 इंच) गुणा 13.2 सेंटीमीटर (5.2 इंच)

स्थान : हन्सरक स्लेट, बन्डनबेश, जर्मनी

काल : डेवोनियन

गैस्ट्रोपॉड का वर्ग मोलस्क है। सबसे पुराने नमूने कैमब्रियन काल के अंतिम दौर के हैं। चित्र में दिखाया गया नमूना 41 से 36 करोड़ वर्ष के बीच का है। गैस्ट्रोपॉड, जो करोड़ों वर्ष पुराने हैं, निश्चित तौर पर क्रमिक–विकास को रद्द करते हैं।
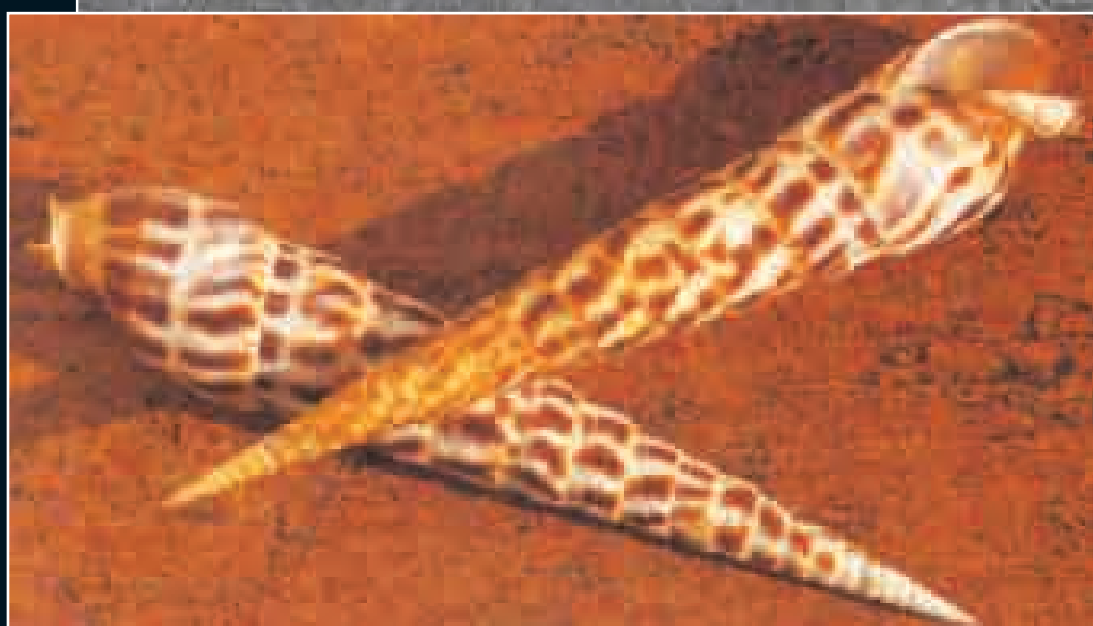
गैस्ट्रोपॉड

उम्र : 41 से 36 करोड़ वर्ष

आकार : प्लेट 7 सेंटीमीटर (2.75 इंच) गुणा 9 सेंटीमीटर (3.5 इंच)

स्थान : हन्सरक स्लेट, बन्डनबेश, जर्मनी

काल : डेवोनियन

गैस्ट्रोपॉड जैसे 41 से 36 करोड़ वर्ष पहले थे वैसे ही आज भी हैं। करोड़ों वर्षों के अंतराल के बावजूद इन प्राणियों में कोई बदलाव न आना इस बात का महत्त्वपूर्ण प्रमाण है कि जीवधारी कभी भी किसी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से विकसित नहीं हुए हैं।

श्रिंप (झींगामछली)

उम्र : 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष

आकार : 19.5 सेंटीमीटर (7.7 इंच) सिर से पूंछ तक

स्थान : सोलन्होफेन लाइमस्टोन, आइकस्टाट, पश्चिमी जर्मनी

काल : जुरासिक

श्रिंप जो करोड़ों वर्षों से बिना किसी बदलाव के जीवित, यह दर्शाती हैं कि उनका क्रमिक–विकास नहीं बल्कि उनकी रचना हुई। यदि किसी जीवित वस्तु की उसी तरह की विशेषताएं हों जैसी करोड़ों वर्ष पहले थीं तो इसका अर्थ है कि उस प्राणी का किसी भी रूप में क्रमिक–विकास नहीं हुआ। जीवाश्म रिकॉर्ड इस बात का प्रमाण है कि क्रमिक–विकासवादियों के दावे झूठे हैं।

स्पेन में खोजे गए जीवाश्म संग्रह

स्पेन में कई पर्वत और पहाड़ी क्षेत्र हैं, जैसे कि पिरेनीज और सिएरा नेवाडा। देश का चौबीस प्रतिशत भाग 1000 मीटर (3280 फीट) से अधिक ऊंचाई पर है। पहाड़ी क्षेत्रों में कुछ महत्त्वपूर्ण जीवाश्म क्षेत्र हैं।

चट्टानों की संरचना दो तरह की है। आइबेरियन प्रायद्वीप का उत्तरी और पश्चिमी हिस्सा मुख्य रूप से क्रिस्टलीय चट्टानों जैसे ग्रेनाइट और परतदार चट्टानों का बना है। दूसरा हिस्सा तलछटी चट्टानों से बना है, जिसमें चूनापत्थर की मात्रा ज्यादा है।

स्पेन से मिले जीवाश्म में डेवोनियन काल (41.7 से 35.4 करोड़ वर्ष) के ब्रैकियोपॉड (बहुत से पैरों वाले) और विभिन्न समुद्री प्राणी, कार्बनीफेरस काल (35.4 से 29 करोड़ वर्ष) के पौधों और जंतुओं की बहुत सारी प्रजातियां और सेनोज़ोइक काल (6.5 करोड़ वर्ष से आज तक) के स्तनधारी, रेंगनेवाले, जलचर, पक्षी और पौधों के कई जीवाश्म हैं।

इन सभी जीवाश्मों ने डारविनवादियों को बुरी स्थिति में डाल दिया है। इन खोजों से क्रमिक विकास के दावे के समर्थन में कोई भी सबूत नहीं मिला है, बल्कि लाखों नमूनों से यही नतीजा सामने आता है कि जीवित प्राणियों की अचानक रचना की गई और ये लंबे भूवैज्ञानिक कालों के दौरान किसी भी परिवर्तन से नहीं गुजरे। इसका मतलब स्पष्ट है : जीवित वस्तुओं का क्रमिक–विकास नहीं हुआ। सर्वशक्तिमान अल्लाह ने उन सभी की रचना की।

चूना पत्थर की चट्टानों से निर्मित ऑर्देसा खाई 600 मीटर (1968 फीट) गहरी है।
बारदेनास रील्स, स्पेन
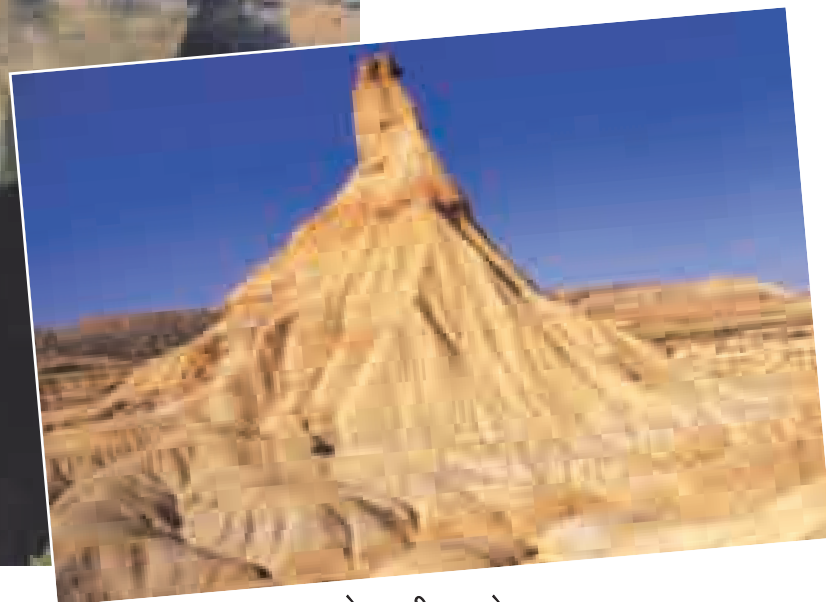
बारदेनास रील्स, स्पेन

चेक गणराज्य में खोजे गए जीवाश्म के संग्रह

चेक गणराज्य की अधिकतर भौगोलिक संरचना में बोहेमिया का पहाड़ी क्षेत्र शामिल है। यह क्षेत्र समुद्र सतह से लगभग 900 मीटर (2953 फीट) की ऊंचाई पर है और यहां प्रचुर मात्रा में जीवाश्म पाए जाते हैं।

प्रोटेरोज़ोइक काल (2.5 अरब वर्ष से 54.5 करोड़ वर्ष) के सूक्ष्मजीवी जीवाश्मों के अलावा, कैमब्रियन काल (54.3 से 49 करोड़ वर्ष) और डेवोनियन काल (41.7 से 35.4 करोड़ वर्ष) के कई फॉसिल खोजे गए हैं। इनमें सबसे आश्चर्यजनक ट्राइलोबाइट की 1300 अलग–अलग प्रजातियां हैं। ये बारेंदे ट्राइलोबाइटस के नाम से जानी जाती हैं क्योंकि फ्रांसीसी जीवाश्म–वैज्ञानिक जॉकहिम बारेंदे ने इनमें से लगभग 300 का नामकरण किया था। बारेंदे ट्राइलोबाइट अक्सर जिन क्षेत्रों में मिल जाते हैं, उनमें से एक जिन्से संरचना है। जिन्से से पैलियोज़ोइक काल (54.3 से 25.1 करोड़ वर्ष) के कई समुद्री प्राणियों के जीवाश्म संग्रह भी मिले हैं, ऐसा समझा जाता है कि कैमब्रियन काल के दौरान जिन्से में ठण्डी जलवायु हुआ करती थी।

चेक गणराज्य के समृद्ध जीवाश्म स्रोत प्राकृतिक इतिहास को समझने में हमारी बड़ी सहायता करते हैं, क्योंकि इन खोजों ने दिखा दिया है कि डारविनवादियों के दावे के अनुरूप कोई भी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया कभी नहीं चली है। जैसा कि डारविनवादी कहते हैं उसके विपरीत जीवित वस्तुएं समान पूर्वज से विकसित नहीं हुई हैं। प्रत्येक प्रजाति जीवाश्म रिकॉर्ड में अपने अनूठे गुणों के साथ अचानक प्रकट हुई। यह सृष्टि की रचना का महत्त्वपूर्ण प्रमाण है और डारविनवाद की पोल खोल कर रख देता है।

अपने प्रचुर फॉसिल क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध बोहेमिया से लाखों वर्ष पुराने फॉसिल मिले हैं। इनमें से फॉसिलों का प्रत्येक नमूना उजागर करता है कि ये प्राणी विकसित नहीं हुए थे, बल्कि ख़ुदा ने इन्हें बनाया था।
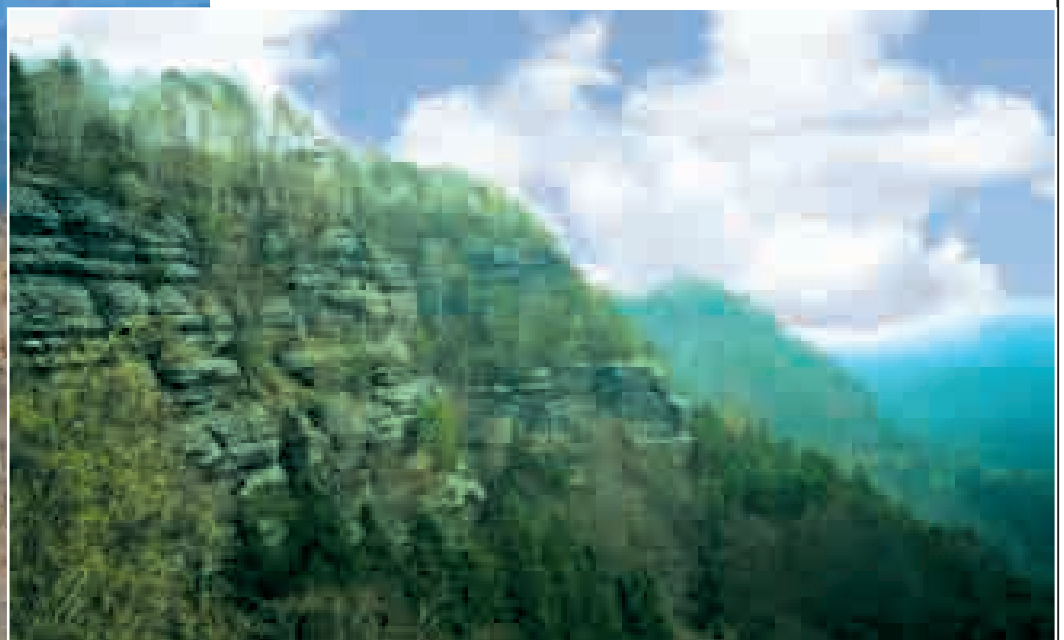
फर्न (पणागः सुन्दर महीन पत्तियों वाला पौधा)

उम्र : 36 से 28.6 करोड़ वर्ष

आकार : 13 सेंटीमीटर (5.1 इंच) गुणा 10 सेंटीमीटर (3.9 इंच)

स्थान : केनालेस, लिओन, स्पेन

काल : कार्बनीफेरस

36 से 25.6 करोड़ वर्ष पुराने फर्न वैसे ही थे जैसे आज के फर्न हैं। करोड़ों वर्षों से एक जैसे बने हुए ये पौधे निर्विवाद रूप से खुदा की रचना की सच्चाई को ही प्रकट कर रहे हैं।

मेढ़क

उम्र : 1.2 करोड़ वर्ष

आकार : 11.5 सेंटीमीटर (4.5 इंच) गुणा 18 सेंटीमीटर (7 इंच)

स्थान : उत्तर–पश्चिम बोहेमिया, चेक गणराज्य

काल : मिओसीन

चित्र में दिखाया गया 1.2 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म प्रमाण है कि मेढ़क हमेशा से मेढ़क रहे हैं। 1.2 करोड़ वर्ष पुराने मेढ़कों और आज के मेढ़कों में कोई अंतर नहीं है।

इटली में खोजे गए फॉसिल नमूने

इटली की चट्टानों की संरचना वही है जो एक समय में टेथिस समुद्र के तल की थी। टेथिस समुद्र ने आरंभिक यूरोप के कुछ हिस्सों को ढ़का हुआ था। भूवैज्ञानिक खोजें बताती हैं कि टेथिस समुद्र पैंजिआ के टूटने से पैदा हुआ। पैंजिआ लगभग 16.5 करोड़ वर्ष पहले धरती पर एकमात्र महाद्वीप था। टेथिस समुद्र बहुत बड़े क्षेत्र में फैला हुआ था। भूमध्य रेखा के निकट होने के कारण यह उष्णकटिबंधीय गुणों वाला था। लगभग 6.5 करोड़ वर्ष पहले इसी टेथिस समुद्र से भूमध्यसागर बना। जैसे–जैसे जमीन ऊपर उठती गई, करोड़ों वर्षों तक चलने वाले भूवैज्ञानिक कालों के दौरान टेक्टॉनिक प्लेटों के खिसकने के कारण यह धीरे–धीरे उत्तर की ओर खिसकती गई।

इटली की चट्टानी परतों में बहुत से समुद्री जीवों के जीवाश्म पाए जाते हैं क्योंकि ये एक समय में टेथिस समुद्र की तल था। इन फॉसिलों से पता चलता है कि समुद्री जीवों की सभी ज्ञात प्रजातियां अपनी जटिल संरचनाओं के साथ अचानक प्रकट हुईं – दूसरे शब्दों में कहें तो शून्य से उनकी रचना की गई थी। इस बात का संकेत देने वाले कोई जीवाश्म नहीं हैं कि जीवन के अनेक रूप किसी एक काल्पनिक समान पूर्वज से निकलकर सामने आए या उनका एक से दूसरे में क्रमिक–विकास हुआ। जीवाश्म रिकॉर्ड के सामने डारविनवाद हार गया है, एक ऐसी करारी हार जो करोड़ों जीवाश्म नमूनों के कारण जगजाहिर हो चुकी है।

संगमरमर के भंडार सामान्यतः उन महासागरों के नीचे या पहाड़ों की तलहटी में पाए जाते हैं जो कभी मूंगे की चट्टानों से भरे रहे हों। इस तस्वीर में इटली स्थित आल्प्स में मौजूद संगमरमर के भंडार नजर आ रहे हैं।

इटली के मोंटे बोल्का फॉसिल क्षेत्र में मिला एक मछली का फॉसिल

मोंटे बोल्का में किए गए फॉसिल संबंधी शोध

इटली की बटरलॉश खाई में पर्मियन काल(29 करोड़ से लेकर 24.8 करोड़ वर्ष पहले) की एक चट्टान का ढांचा है।

रेजरफिश

उम्र : 60 लाख वर्ष

स्थान : फियूम, मारेक्रिया, इटली

काल : अपर मिओसीन

रेजरफिश (वर्ग : सेंट्रीसीडे) के अंग कवच से ढ़ंके होते हैं और इसकी पीठ पर कंटीले फिन होते हैं। चित्र में दिखाई गई रेजरफिश 60 लाख वर्ष पुरानी है और इसके सारे गुण आज पाए जाने वाली रेजरफिश के ही समान हैं। इससे पता चलता है कि लाखों वर्षों से रेजरफिश में कोई बदलाव नहीं आया है और यह कभी भी बीच की अवस्थाओं से नहीं गुजरी है।

सीहॉर्स (समुद्री घोड़ा)

उम्र : 2.6 करोड़ वर्ष

आकार : 5 सेंटीमीटर (2 इंच)

स्थान : इटली

काल : मिओसीन

सिंगनेथिडे वर्ग का सीहॉर्स करोड़ों वर्ष से बिना किसी बदलाव के वैसा ही है। यह उन प्रजातियों में से एक है जिन्होंने क्रमिक–विकास के सिद्धांत को चुनौती दी है। चित्र में दिखाया गया सीहॉर्स 2.6 करोड़ वर्ष पुराना है और आज के जीवित सीहॉर्स के ही समान है।
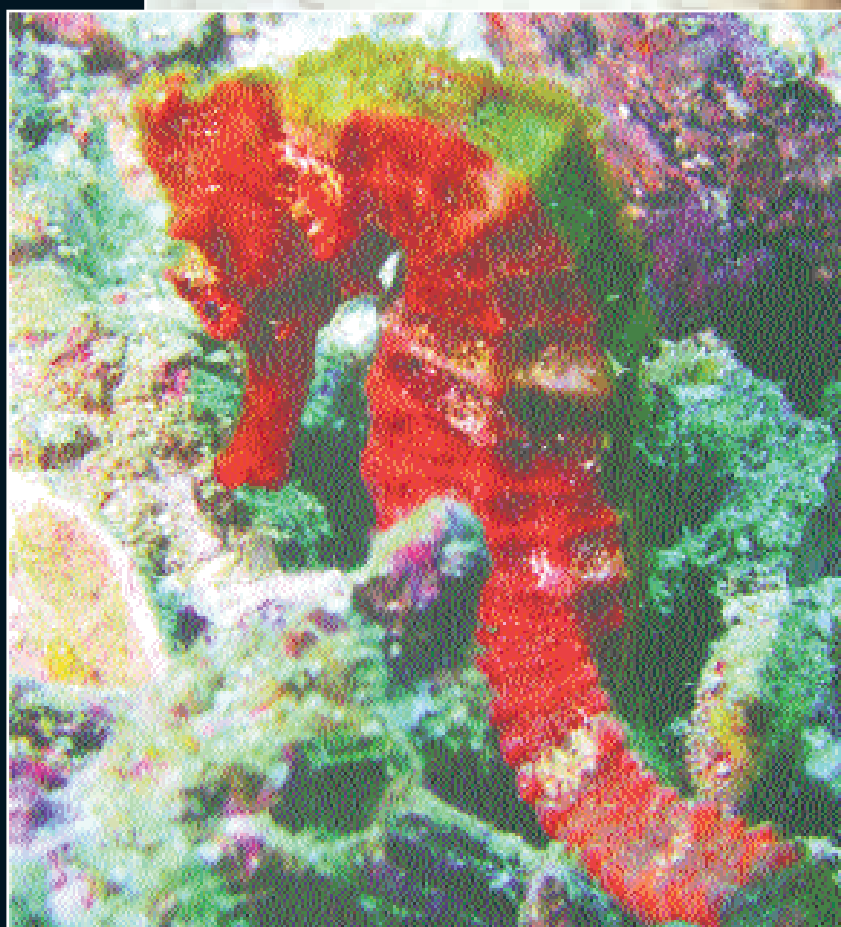
यलोटेल

उम्र : 4.8 करोड़ वर्ष

आकार : 19.6 सेंटीमीटर (7.7 इंच)

स्थान : मोंटे बोल्का, वेरोना, इटली

काल : इओसीन

इटली में मिले मछली के फॉसिलों में से एक यलोटेल है। चित्र में दिखाया गया जीवाश्म 4.8 करोड़ वर्ष पुराना है। 4.8 करोड़ वर्ष पुरानी और आज की यलोटेल के बीच की समानता यह बताती है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत असत्य है।

ड्रैगनफ्लाई लार्वा

उम्र : 1 करोड़ वर्ष

आकार : 42 मिलीमीटर (1.6 इंच) गुणा 35 मिलीमीटर (1.3 इंच)

स्थान : विट्टोरिया डीअल्बा, क्यूनियो, इटली

काल : अपर मिओसीन

ड्रैगनफ्लाई लार्वा के जीवाश्म अपने वयस्कों के जीवाश्म की ही तरह यह बताते हैं कि क्रमिक–विकास कभी नहीं हुआ। चित्र में दिखाए गए 1 करोड़ वर्ष पुराने और आज के ड्रैगनफ्लाई लार्वा में कोई अंतर नहीं है। इससे पता चलता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक मनगढ़ंत कहानी है।

पाइपफिश

उम्र : 2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष

आकार : 25 सेंटीमीटर (10 इंच)

स्थान : मारेक्किया नदी, पेगियो बर्नी, इटली

काल : मिओसीन, मेसीनियन स्टेज

पाइपफिश सीहॉर्स के समान उपवर्ग की ही सदस्य है। लंबी, पतली शारीरिक संरचना और जीवित जीवाश्मों में से एक पाइपफिश क्रमिक–विकास को गलत साबित करती है। चित्र में दिखाई गई 2.3 करोड़ से 50 लाख वर्ष पहले की पाइपफिश आज के नमूनों के ही समान है।

ब्रिटेन में खोजे गए जीवाश्म संग्रह

ब्रिटेन में प्राचीनतम ज्ञात जीवाश्म संग्रह सिलूरियन काल (44.3 से 41.7 करोड़ वर्ष) और डेवोनियन काल (41.7 से 35.4 करोड़ वर्ष) के हैं। विभिन्न प्रजातियों के जीवाश्म ब्रिटेन में पाए जा सकते हैं। ब्रिटेन का भूवैज्ञानिक इतिहास 60 करोड़ वर्ष से भी पुराना है। यहां पर उष्णकटिबंधीय जलवायु और हिमयुग दोनों ही रहे हैं, समुद्र के स्तर में बदलाव आते रहे, ज्वालामुखी के विस्फोट और क्षरण हुए। बड़ी संख्या में जीवाश्म वाले क्षेत्रों की बहुतायत देश के दक्षिण में है। ऐसा ही एक इलाका डॉरसेट है, जहां विभिन्न फॉसिल क्षेत्र हैं।

डॉरसेट की चट्टानों की संरचना के गुण अलग–अलग हैं। लेकिन डॉरसेट विशेषतौर पर अपनी तटीय पट्टी के लिए प्रसिद्ध है, जिसे जुरासिक तट के नाम से जाना जाता है। इसमें जुरासिक काल की चट्टानें हैं और विभिन्न जीवाश्म क्षेत्र हैं। इन क्षेत्रों से सैकड़ों प्रजातियों के अच्छी तरह संरक्षित और पर्याप्त जानकारी देने वाले जीवाश्म मिले हैं। हरेक जीवाश्म से यही पता चलता है कि सजीव जीवों में करोड़ों वर्षों में भी कोई बदलाव नहीं आया और ये कभी भी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का हिस्सा नहीं रहीं।

जीम ुनंततल पद ब्वबवा भ्मल पे ं उिवने विैपस ंतमं पद म्दहसंदकण ।सस जीम विैपसे नदबवअमतमक पद जीपे तमहपवद तमअमंस जींज मअवसनजपवद दमअमत जववा चसंबमण

डोरसेट के जुरासिक तट से मिले एमोनाइट के फॉसिलों पर किए गए शोध।

ब्रिटेन में महत्त्वपूर्ण फॉसिल क्षेत्रों वाला दूसरा इलाका लेंकशायर है। इस इलाके के फॉसिल क्षेत्र में सबसे पुराने क्षेत्र कार्बनीफेरस काल (35.4 से 29 करोड़ वर्ष) के हैं। करीब 34 करोड़ वर्ष पहले यह इलाका एक समुद्र का तल था, जो गर्म लेकिन बहुत गहरा नहीं था। इसी वजह से इस काल के बहुत सारे समुद्री जीवाश्म यहां से मिले हैं।

ब्रिटेन में खोजे गए कई प्रजातियों के जीवाश्म से एक बार फिर इस बात को बल मिला है कि जीव–जंतु किसी कथित समान पूर्वज की वंशज नहीं हैं; और क्रमिक–विकास का सिद्धांत, जिसके अनुसार जीवों का क्रमिक विकास हुआ, सही नहीं है। अन्य सभी जीवाश्मों की ही तरह इन जीवाश्मों से भी पता चलता है कि जीवित प्राणी क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए हैं बल्कि उनकी रचना की गई।

डोरसेट का यह तट जुरासिक काल की चट्टानों से बना है। इन चट्टानों से कई फॉसिल निकाले गए थे।
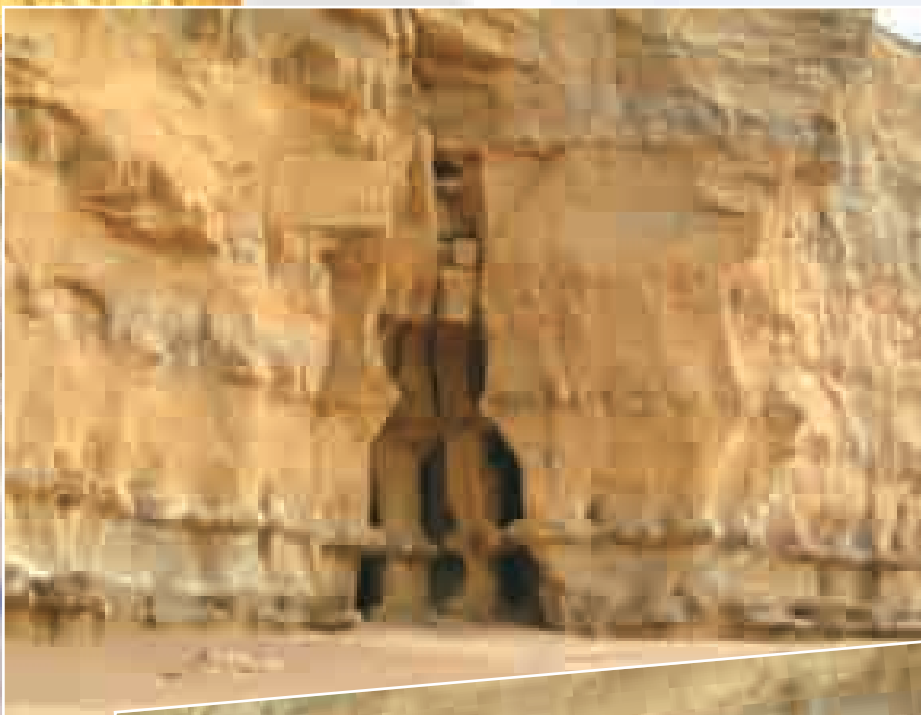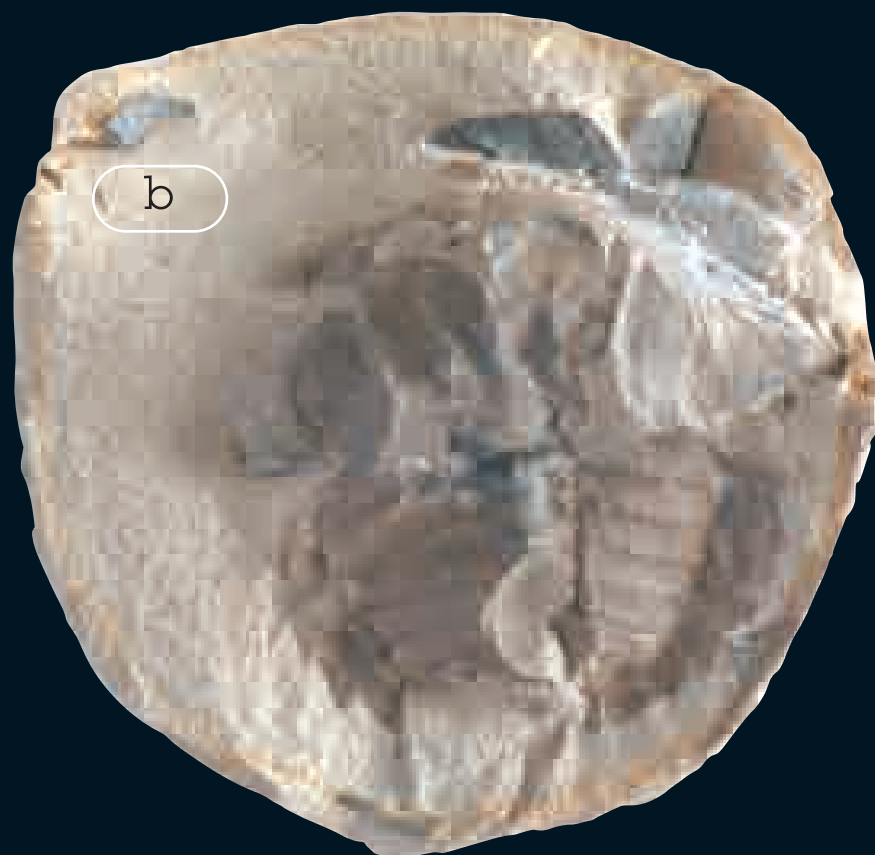
एक फॉसिल अपने नेगेटिव के साथ

हॉर्सशू केकड़ा

उम्र : 30 करोड़ वर्ष

आकार : 30 मिलीमीटर (1.1 इंच) गुणा 28 मिलीमीटर; नोडयूल (ग्रंथी) : 37 मिलीमीटर (1.4 इंच) गुणा 39 मिलीमीटर (1.5 इंच)

स्थान : क्रॉक हे ओपन कास्ट कुओरे, लेंकशायर, ब्रिटेन

काल : कार्बनीफेरस, पेनसिल्वेनियन, वेस्टफेलियन ए, डकमेंशियन

जाइफोस्यूरा (हॉर्सशू केकड़े) कैमब्रियन काल से अस्तित्व में हैं। चित्र में दिखाया गया नमूना 30 करोड़ वर्ष पुराना है। 30 करोड़ वर्षों से ज्यों के त्यों बने हुए हॉर्सशू केकड़ों ने क्रमिक–विकासवादियों के क्रमिक विकास के दावे को धराशायी कर दिया है।

ब्रिटलस्टार

उम्र : 18 करोड़ वर्ष

आकार : 8 सेंटीमीटर (3.1 इंच); मैट्रिक्स : 15 सेंटीमीटर (5.9 इंच) गुणा 13.5 सेंटीमीटर (5.3 इंच)

स्थान : आइप डॉर्सेट, ब्रिटेन

संरचना : प्लीइन्सबेशियन – तारा मछली क्षेत्र

काल : जुरासिक

यह 18 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म बताता है कि 20 करोड़ वर्षों से ब्रिटलस्टार ज्यों के त्यों हैं। ये जीव, जो आज पाए जाने वाले जीवों के समान हैं, एक बार फिर जाहिर कर देते हैं कि क्रमिक–विकास मानने लायक नहीं है।

नॉटिलस (एक प्रकार के समुद्री घोंघेदार जीव)

उम्र : 16.7 करोड़ वर्ष

आकार : 22 मिलीमीटर (0.8 इंच)

स्थान : फ्रेशवाटर, डॉर्सेट, ब्रिटेन

काल : जुरासिक, इनफीरियर ओलाइट

नॉटिलस उन अनेक जीवों में से एक है जिनमें अपनी प्रारंभिक रचना के बाद से कोई बदलाव नहीं आया। चित्र में दिखाया गया 16.7 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म इस बात का एक प्रमाण है कि ये प्राणी करोड़ों वर्गों से एक समान बने हुए हैं।

बाइवाल्व

उम्र : 20 करोड़ वर्ष

आकार : 5.5 सेंटीमीटर (2.2 इंच)

स्थान : कॉनिंग्सबाइ खदान, स्कनथ्रोप, हम्बरसाइड, ब्रिटेन

काल : अपर सिनेमूरियन, जुरासिक

आजकल के दो खोल वाले बाइवाल्व वैसे ही हैं जैसे 20 करोड़ वर्ष पूर्व थे। अन्य सभी सजीवों की ही तरह जब से बाइवाल्व की रचना हुई, तबसे इन्होंने अपनी वही विशेषताएं बनाए रखीं और इनमें कोई बदलाव नहीं आया।

नॉटिलस

उम्र : 16.7 करोड़ वर्ष

आकार : 34 मिलीमीटर (1.3 इंच)

स्थान : शरबॉर्न, डॉर्सेट, ब्रिटेन

काल : जुरासिक

आज के नॉटिलस के वही गुण हैं जो उनमें करोड़ों वर्ष पहले थे। जीवाश्म रिकॉर्ड बताता है कि युगों से ये नहीं बदले हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो ये कभी भी क्रमिक–विकास का हिस्सा नहीं बने। चित्र में दिखाया गया 16.7 करोड़ वर्ष पुराना नॉटिलस जीवाश्म का नमूना इसी तथ्य को प्रकट करता है।

मकड़ी

उम्र : 30 करोड़ वर्ष

आकार : व्यास 5 सेंटीमीटर (2 इंच)

स्थान : क्रॉक हे ओपन कास्ट कौरी, विगन, लेकशायर, ब्रिटेन

संरचना : उत्तरी विगन की 4 फुट कोयले की परत के ऊपर रूफ शेल्स

काल : अपर कार्बनीफेरस, वेस्टफेलियन ए, पेनसिल्वेनियन

मकड़ियां 30 करोड़ वर्षों से ज्यों की त्यों कायम ऐसी एक और जीव हैं जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर करारा हमला कर रही हैं। क्रमिक–विकासवादियों के सभी दावों को ध्वस्त करते हुए करोड़ों वर्षों से मकड़ियों की खूबियां एकदम पहले जैसी बनी हुई हैं और ये इनमें कभी भी कोई बदलाव नहीं आया।
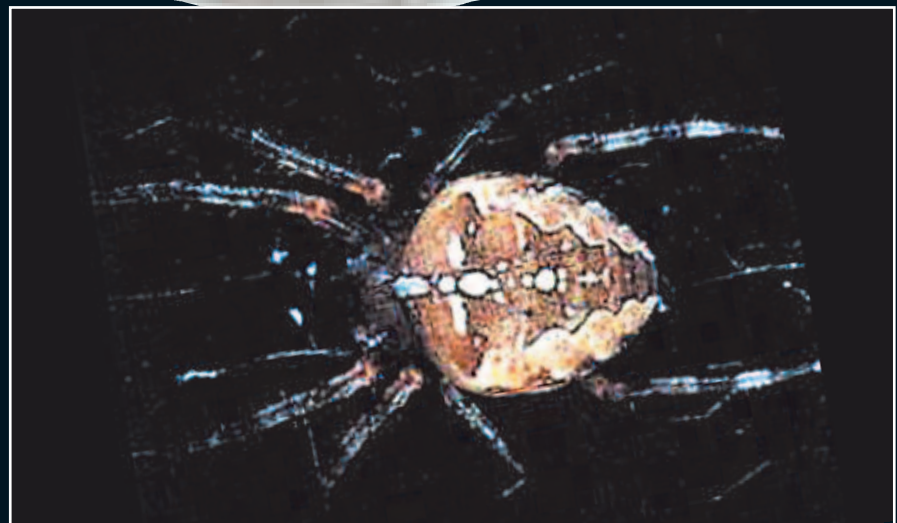
नॉटिलस (एक प्रकार का समुद्री घोंघेदार जीव)

उम्र : 16.7 करोड़ वर्ष

आकार : 40 मिलीमीटर (1.5 इंच)

स्थान : बर्टन ब्रैडस्टॉक डॉरसेट, यू.के.

काल : जुरासिक, इन्फीरियर ओलाइट (मध्य जुरासिक काल के चट्टानी समूहों में से एक)

आज के समय में जीवित नॉटिलस और लाखों वर्ष पहले जीवित रहे नॉटिलस में कोई अंतर नहीं है। किसी अंतर का न होना इस बात का सबूत है कि जीवों का क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

रूस में प्राप्त जीवाश्म संग्रह

साइबेरिया से प्राप्त जमे हुए जानवरों के अतिरिक्त, रूस में बड़ी संख्या में अंबर में सुरक्षित जीवाश्म भी मिले हैं। ये बाल्टिक अंबर कहे जाने वाले अंबर से प्राप्त हुए हैं, जो कि पश्चिम में बर्लिन से लेकर पूर्व में उराल पर्वत के विशाल क्षेत्र में पाए जाते हैं। ज्यादातर बाल्टिक अंबर इओसीन काल (5.4 से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पहले) के हैं।

इस अंबर का ज्यादातर हिस्सा सैमलैंड क्षेत्र, जो कि इस समय रूस की सीमा में आता है, में है और सतह के नीचे औसतन 25 मीटर (82 फीट) से लेकर 40 मीटर (131 फीट) की गहराई पर पाया जाता है। धरती की जिस परत में यह पाया जाता है उसे "ब्लू अर्थ" कहते हैं। प्रत्येक 1000 किलो (2204 पाउंड) मिट्टी में लगभग 1 किलो (2.2 पाउंड) अंबर होता है, और प्रत्येक कुछ सौ में से केवल एक में इन्क्लूज़न यानी भीतर फंसा हुआ कोई जीव मिलता है।

अंबर का रंग, उसकी बनावट और अन्य निश्चित शारीरिक विशेषताएं, वह काल जिसमें यह बना था और पेड़ की किस्म जिससे यह तैयार हुआ, के अनुसार भिन्न होती हैं। अंबर के सबसे पुराने ज्ञात नमूने उच्चतर कार्बन उत्पादक काल (कार्बनीफेरस) (35.4 से लेकर 29 करोड़ वर्ष पहले) के हैं।

अंबर में इन्क्लूज़न के शामिल होने की प्रक्रिया में, एक बार जीवित प्राणी के रेज़िन (लीसा) में फंस जाने के बाद लगातार दो बेहद महत्त्वपूर्ण प्रक्रियाएं होती है। पहला है, ठंड या गर्मी के कारण कठोर होना। दूसरा है, रेज़िन में फंसे ऊतकों का क्षरण। इस क्षरण प्रक्रिया के दौरान रिसने वाले द्रव, रेज़िन द्रव के साथ मिलकर एक खास तरह की बनावट ग्रहण करते हैं। जीव का शरीर गुब्बारे जैसे बुलबुलेदार ढांचे के बीच सुरक्षित हो जाता है। रेज़िन के अंबर में बदलने के लिए उसे ढेरों बड़े रासायनिक और भूगर्भीय चरणों से गुजरना पड़ता है।

रूस के फॉसिल अंबरों की प्रचुर मात्रा वाले इलाकों में से एक क्षेत्र।

वैज्ञानिकों के लिए, अंबर में इंन्क्लूज़न कि गतिविधि एक महत्त्वपूर्ण कार्यक्षेत्रा को दर्शाता है। कई जीवित प्राणियों के नमूने घोसले में खाना ले जाते समय, रक्षा करते समय, अपने आप को आवरण में छिपाने की को. शिश करते समय, अपने बच्चों की सुरक्षा के प्रयास के दौरान या आक्रमणकारी को बेअसर करने के लिए रासायनिक तत्व छोड़ने का प्रयास करते समय फंस जाते हैं। और ये सभी नमूने यह गवाही देते हैं कि जीवित प्राणियों की विशेषताओं में लाखों वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है – दूसरे शब्दों में, क्रमिक–विकास जैसी कोई प्रक्रिया हुई ही नहीं थी।

पोलैंड में मिले जीवाश्म संग्रह

जिन देशों में बाल्टिक अंबर मिलता है उनमें से एक पोलैंड है। अंबर के समृद्ध स्रोतों में से एक बाल्टिक क्षेत्र से प्राप्त हुए अंबर के भीतर मिले जीवाश्म औसतन 5 से लेकर 4.5 करोड़ वर्ष पुराने हैं। बाल्टिक अंबर को अन्य अंबरों से अलग करने वाली मुख्य विशेषता वह खास अम्ल है, जो बाल्टिक अंबर में होता है। सुसिनिक एसिड नाम का यह अम्ल, पेड़ों की उन प्रजातियों में मिलता है, जिनके बारे में अनुमान है कि वे इओसीन काल (5.4 से लेकर 3.7 करोड वर्ष पहले) के दौरान इस इस क्षेत्र में पाई जाती थीं।

बाल्टिक अंबर में मिलने वाले प्राणियों की बहुसंख्या आर्थ्रोपॉड (संधिपाद प्राणी, जैसे केकड़ा, मकड़ी इत्यादि) की है। कीटों, कोमल शरीर वाले प्राणियों (जैसे घोंघा) और अन्य रीढ़ वाले प्राणी बेहद कम मिलते हैं। ये सुरक्षित जीवाश्म दर्शाते हैं कि मक्खियां हमेशा मक्खियां ही रही हैं, तितलियां हमेशा ही तितलियां रही हैं और कैटरपिलर हमेशा ही कैटरपिलर रहे हैं – दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो पूरे इतिहास के दौरान जीवित प्राणियों में कोई बदलाव नहीं आया है। इस अर्थ में, ये क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए धर्मसंकट पैदा करते हैं। कभी अपने शिकार या अपने लार्वा के साथ या कभी लार्वा के चरण से निकलते हुए फॉसिल बन गए ये प्राणी, हमे बताते हैं कि ये दसियों लाख वर्षों से एक ही जीवन चरण से विकसित हुए हैं, और कभी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से विकसित नहीं हुए।

बाल्टिक अंबर अति विशाल क्षेत्र से एकत्रित किए गए हैं। इस क्षेत्र में किया गया शोध

काटने वाले मिज (छोटी मक्खी) का झुण्ड

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : 29 मिलीमीटर (1.1 इंच), 17 मिलीमीटर (0.6 इंच)

स्थान : केलिनिन ग्रेड क्षेत्रा, रूस

काल : इओसीन

ये जीवाश्म रिकॉर्ड साबित करते हैं कि जीवित प्राणी अन्य प्रजातियों से नहीं बने हैं और न ही धीरे–धीरे विकसित हुए। 4.5 करोड़ वर्ष पुरानी मादा मिज, जो कि आज जीवित मिज जैसी है, एक बार फिर यह उजागर करती है।

फासमिड

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिन ग्रेड, रूस

काल : इओसीन

रंगरूप बदलकर खुद को छिपाने में माहिर, वॉकिंग स्टिक नामक ये कीड़े पेड़ की टहनियों या पत्तों जैसे दिखते हैं। जिस शाखा पर ये आराम कर रहे होते हैं उससे अलग इनको पहचान पाना असंभव होता है। 4.5 करोड़ वर्ष पहले जीवित वॉकिंग स्टिक और आज जीवित ये कीड़े खुद को बिल्कुल एक ही तकनीक से शिकारियों से बचाते हैं और एक ही तरीके से रंगरूप बदलकर खुद को छिपाते हैं। इन कीड़ों की बनावट 4.5 करोड़ वर्ष से नहीं बदली है – यह इस बात का सबूत है कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।
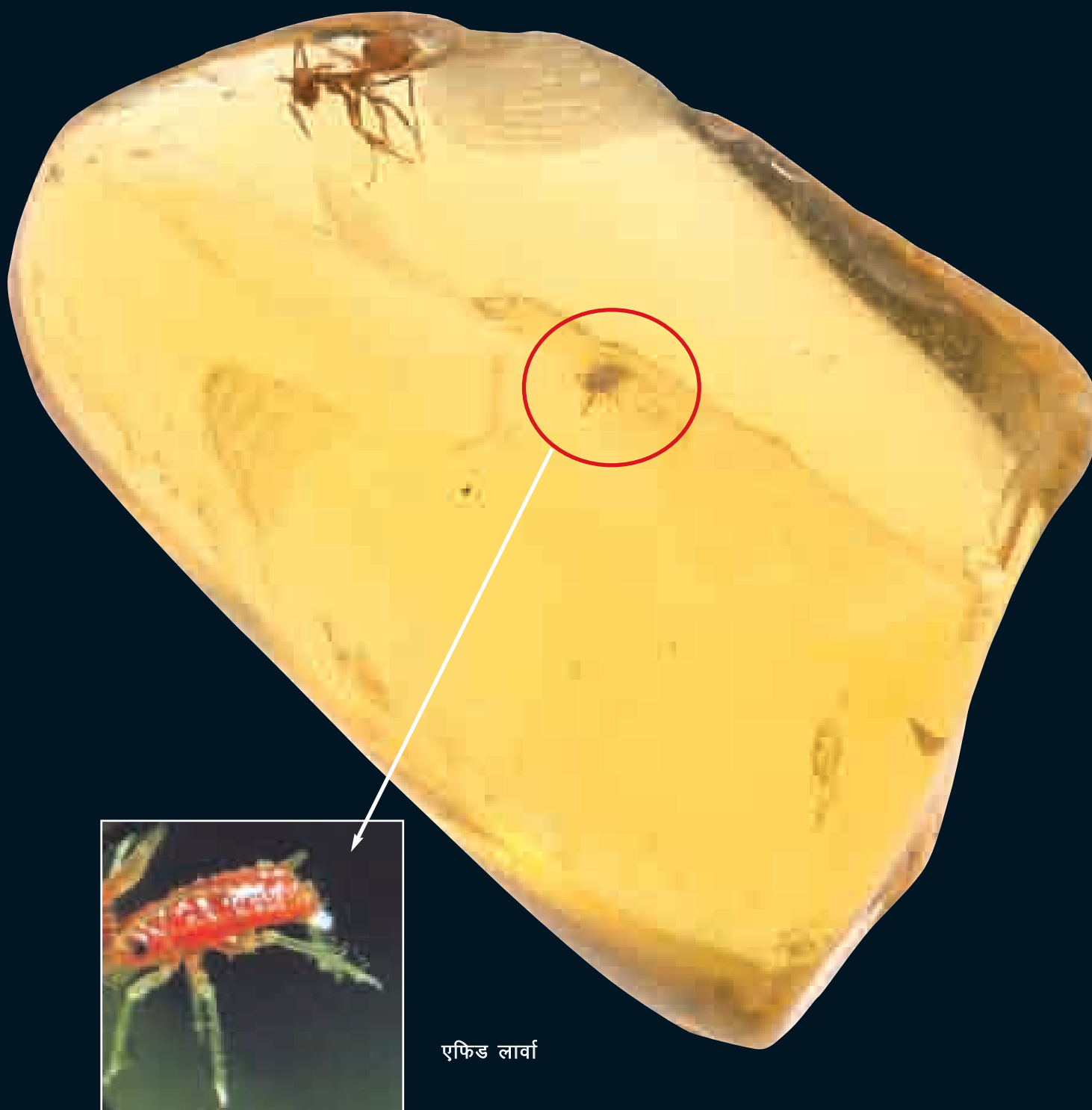
एफिड लार्वा

एफिड लार्वा के साथ मजदूर चींटी (वर्कर एंट)

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : 20 मिलीमीटर (0.7 इंच) बाई 12 मिलीमीटर (0.4 इंच); इन्क्लूज़न : 2 मिलीमीटर (0.07)

स्थान : कालिनिनग्राद क्षेत्र, रूस

काल : इओसीन

"चींटी", कीटों की उन 8,000 प्रजातियों को कहा जाता है जो सामाजिक जीवन जीते हैं, कालोनियों में रहते हैं, और जमीन के नीचे घोंसले बनाते हैं। चींटी की प्रत्येक प्रजाति की खास विशेषताएं हैं। इस अंबर में मजदूर चींटी के साथ अर्द्ध–वयस्क एफिड (एक प्रकार का कीट जो पौधों का रस चूसता है) जीवाश्मित हो गया है। एफिड सामान्यतः चींटियों के साथ सहकारी जीवन जीते हैं, क्योंकि कुछ चींटियां एफिड को खाना खिलाती हैं।

4.5 करोड़ वर्ष पुराने जंतुओं से मिलते–जुलते आज की चींटी और एफिड क्रमिक–विकास के सिद्धांत के दावों को खारिज करते हैं।

केकड़ा मकड़ी

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 17 मिलीमीटर (0.6 इंच) गुणा 8 मिलीमीटर (0.03) चौड़ा; मकड़ी : 5 मिलीमीटर (0.1 इंच)

स्थान : बाल्टिक, कालिनिनग्राद, रूस

काल : इओसीन

मकड़ियों, जिनके ये नमूने केकड़ों से मिलते–जुलते हैं, की करीब 2,000 भिन्न प्रजातियां हैं। इस अंबर में मिली केकड़ा मकड़ी 4.5 करोड़ वर्ष पुरानी हैं और आज की केकड़ा मकड़ियों के समान हैं।

एफिड (पौधों के लिए घातक, रस पीने वाले छोटे कीटों का वर्ग) का लार्वा

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : 7 मिलीमीटर (0.2) व्यास

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

पेम्फीगडे परिवार के एफिड पंखहीन होते हैं। वनस्पतियों में इनके रहने का प्रमुख स्थान है पेड़, और कभी–कभी जड़ी–बूटियों वाले पौधे। यहां दिखाया गया एफिड लार्वा 4.5 करोड़ वर्ष पुराना है। एफिड और उनके लार्वा इस पूरी अवधि में ज्यों के त्यों रहे हैं, जो कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत के सभी दावों की धज्जियां उड़ाता है।

ट्रू मिज (मिज, छोटी मक्खी)

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : 14 मिलीमीटर (0.5 इंच) लंबा, 8 मिलीमीटर (0.3 इंच) चौड़ा

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड

काल : इओसीन

जब बात कीटों की उत्पत्ति की आती है तो डारविनवादी बेबस हो जाते हैं, जैसा कि वे कई अन्य मामलों में भी होते हैं – और अंबर के जीवाश्म मिलने की कोई वैज्ञानिक व्याख्या नहीं कर सकते। जीवन के रूप इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

लंबी टांगों वाली मक्खियों का जोड़ा

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

15 मिलीमीटर (0.5) लंबा, 9 मिलीमीटर (0.3 इंच) (चौड़ा)

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

दो पर वाले कीड़ों की श्रेणी की सदस्य इस मक्खी ने बिना किसी बदलाव की प्रक्रिया से प्रभावित हुए, लाखों वर्षों से समान विशेषताओं को बचाए रखा है। ऐसी प्रजाति, जिसमें 4.5 करोड़ वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है, क्रमिक–विकास को गलत करार देती है।
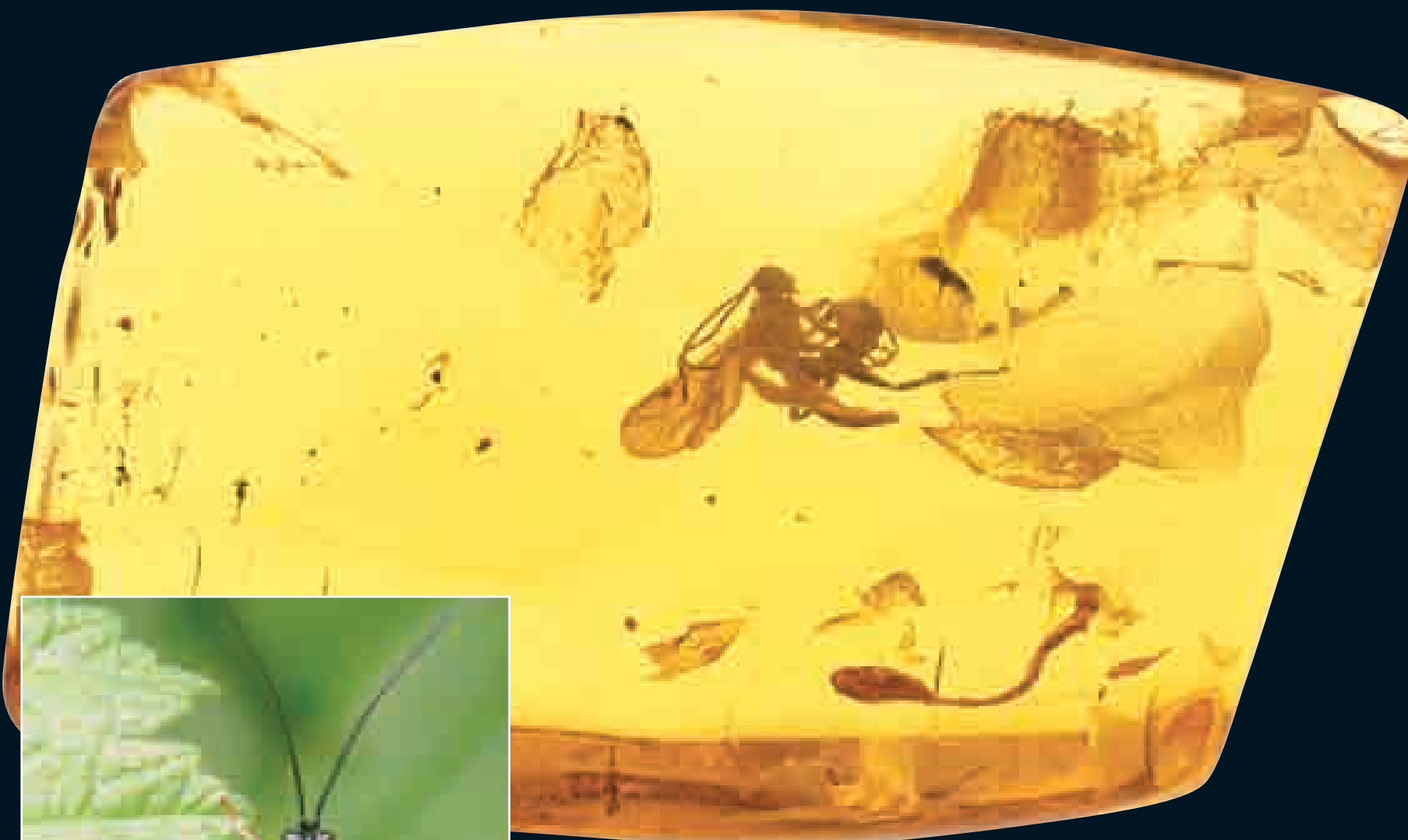
ततैया

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

यहां बाल्टिक अंबर में सुरक्षित 5 करोड़ वर्ष पुराने ततैया का चित्र है। अन्य जीवित प्राणियों की तरह ततैया, जो 5 करोड़ वर्षों से बिल्कुल नहीं बदला है, यह दर्शाता है कि क्रमिक–विकास कभी नहीं हुआ, और यह कि उन्हें अल्लाह ने बनाया।

कैडिसफ्लाई (अंडे से तुरंत बाहर निकली मक्खी)

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

कैडिसफ्लाई के लार्वा को मछली को फंसाने के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। कैडिसफ्लाई ने परिवर्तन की किसी भी प्रक्रिया से गुजरे बिना लाखों वर्षों से अपनी बनावट और विशेषताओं को बचाए रखा है। 5 करोड़ वर्ष पुराना कैडिस मक्खी का फॉसिल भी इस बात का सबूत है कि जीवित प्राणियों में कभी कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।
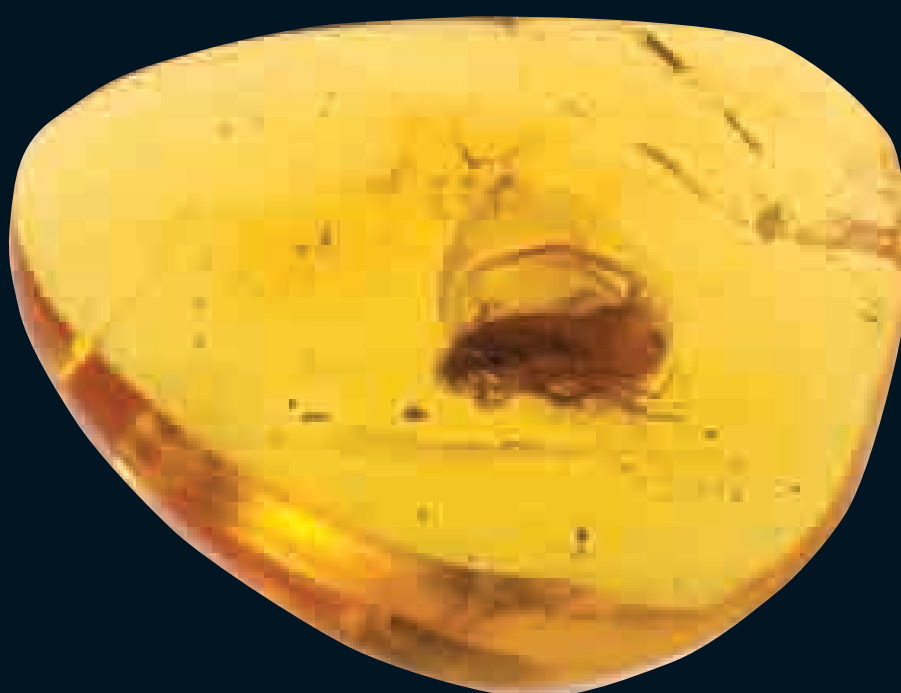
स्टोन फ्लाई (पत्थरों के नीचे पाया जाने वाला कीट)

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

स्टोन फ्लाई लंबाई में 5 से 10 मिलीमीटर की होती है और उनके सिर में दो लंबे एंटीना होते हैं; उनका लार्वा को मछली फंसाने के चारे के रूप में प्रयोग किया जाता है। उनमें भी लाखों वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है। यहां दिखाया गया 5 करोड़ वर्ष पुराने स्टोन फ्लाई का फॉसिल आज जीवित स्टोन फ्लाई जैसा ही है।
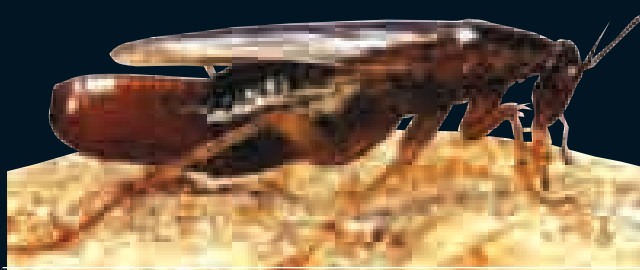
तिलचट्टा (कॉकरोच)

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

सबसे पहले ज्ञात पंख वाले कीटों के रूप में जाना जाने वालों यानी तिलचट्टे, फॉसिल रिकॉर्ड में 35 करोड़ वर्ष पहले कार्बनिफेरस (उच्च कार्बन उत्पादक काल) में प्रकट होते हैं। मामूली–सी गति, और यहां तक कि हवा के बहाव के प्रति भी संवेदनशील नाज़ुक एंटीना, उत्तम पंख और परमाणु विकिरण को भी झेल लेने की क्षमता के साथ यह कीड़ा – कई करोड़ वर्षों से अपरिवर्तित है। यह 5 करोड़ वर्ष पुराना कॉकरोच आज जीवित प्रजाति से बिल्कुल अलग नहीं है।

पतंगा (मोथ)

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड

काल : इओसीन

मोथ, कीटों की एक प्रजाति है जो देखने में बहुत हद तक तितलियों जैसे लगती है। तितलियां और मोथ दोनों ही लेपिडोप्टेरा वर्ग के सदस्य हैं। यहां दिखाया गया 5 करोड़ वर्ष पहले का पतंगा इनकी आज जीवित प्रजातियों से बिल्कुल अलग नहीं है और यह एक बार फिर साबित करता है कि जीवित प्राणी क्रमिक–विकास का कभी विषय नहीं रहे।
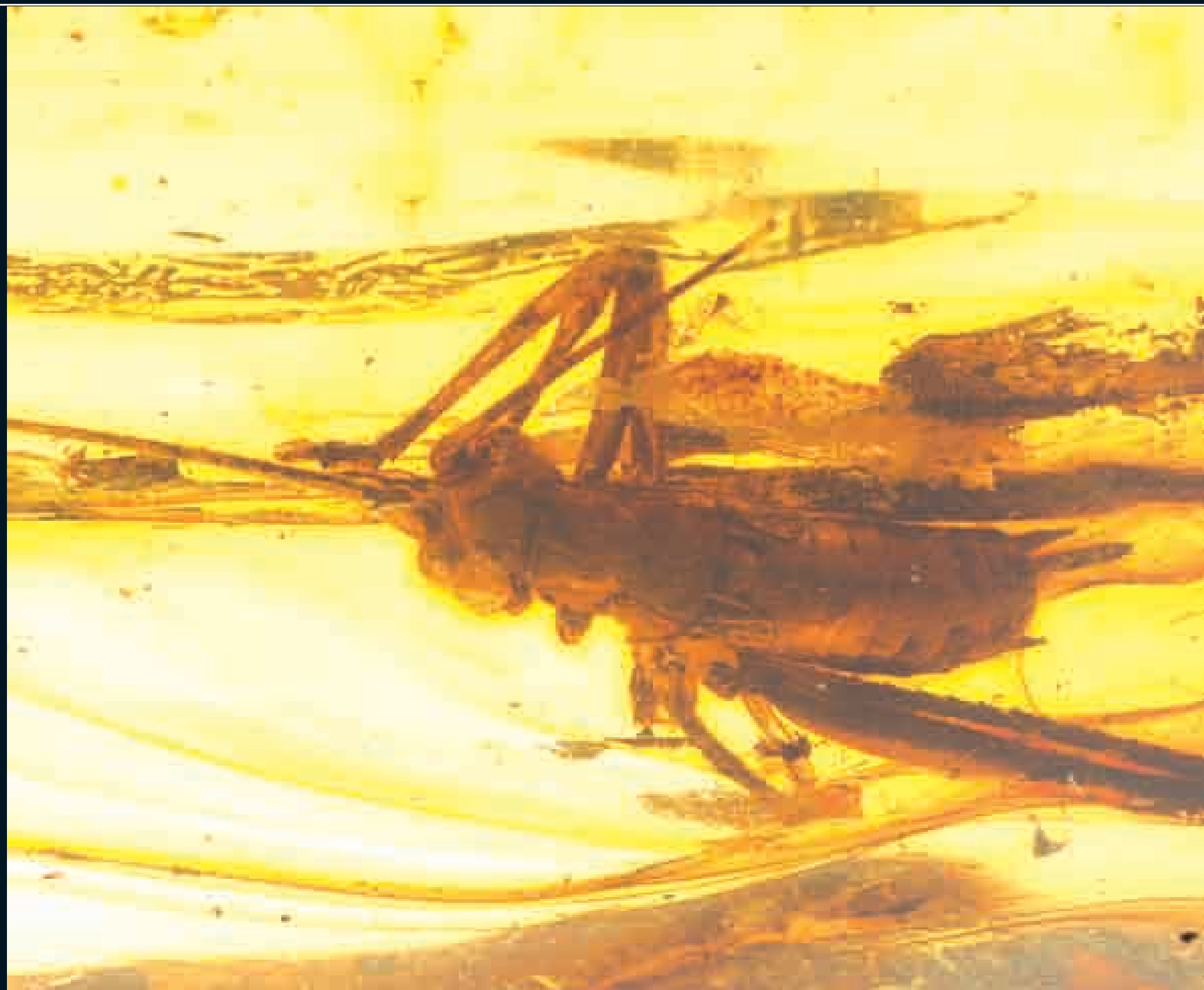
टिड्डा

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

क्रमिक–विकासवादियों की सोच के विपरीत, जीवाश्म रिकॉर्ड बताते हैं कि इस कीट का कोई आदिम पूर्वज नहीं है। जीवाश्म संबंधी खोजों के अनुसार, कीटों की सभी प्रजातियां अपनी सभी विशेषताओं के साथ अचानक प्रकट हुईं और तब से उन्हीं विशेषताओं को बनाए रखा है। इसका एक उदाहरण 5 करोड़ वर्ष पुराने टिड्डे का यह फॉसिल है, जो कि आज के जीवित टिड्डों से बिल्कुल अलग नहीं है।
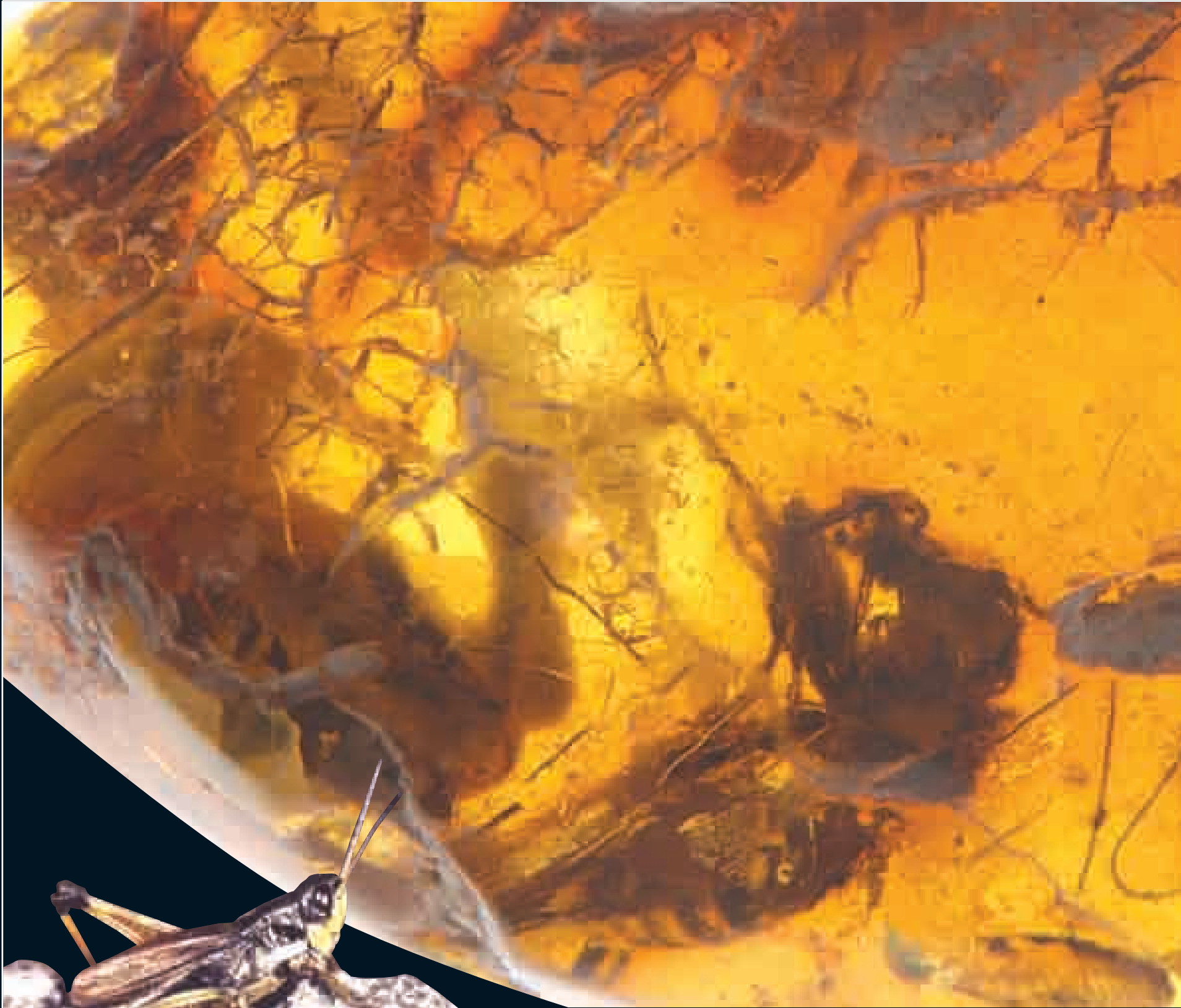
दो झींगुर

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

अंबर में सुरक्षित और 5 करोड़ वर्ष पुराने ये झींगुर, आज जीवित झींगुरों जैसे ही हैं। इन कीटों में लाखों वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं आया है उनका क्रमिक–विकास नहीं हुआ, बल्कि उनकी रचना की गई।

कैटरपिलर (इल्ली)

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

इल्ली हमेशा ही इल्ली रही हैं, इसका उदाहरण अंबर में सुरक्षित यह 5 करोड़ वर्ष पुराना नमूना है। लाखों वर्षों के अंतराल के बावजूद इल्ली की विशेषताओं में कोई परिवर्तन नहीं आना यह दर्शाता है कि क्रमिक–विकास पूरी तरह छलावा है।

मक्खी
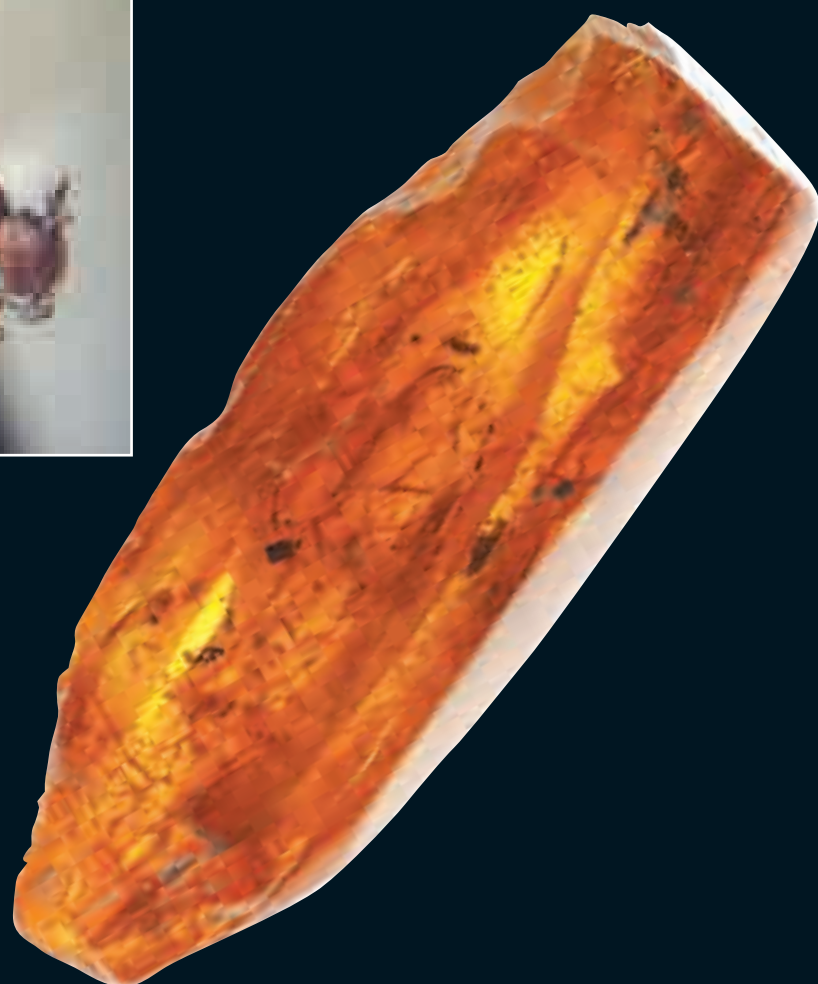
उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : पोलैंड

काल : इओसीन

5 करोड़ वर्ष पहले जीवित मक्खियों और आज की मक्खियों में कोई फर्क नहीं है। यहां दिखाया गया अंबर में सुरक्षित मक्खी का जीवाश्म इस तथ्य का एक उदाहरण है।

मक्खी

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : पोलैंड

काल : इओसीन

मक्खियां जीवाश्म रिकॉर्ड में अचानक प्रकट होती है। उनकी मुख्य विशेषताओं में से एक है उनकी असाधारण सावधनी और सतर्कता से काम लेने की क्षमता। मनुष्य अपनी बाहों को प्रति सेकंड 10 बार उठा और गिरा नहीं सकते, लेकिन एक औसत मक्खी अपने परों को प्रति सेकंड 500 बार फड़फड़ा सकती है। यही नहीं, दोनों पंख एक साथ फड़फड़ाते हैं। दोनों पंखों के फड़फड़ाने में जरा से अंतर से मक्खी अपना संतुलन खो देती है। फिर भी, मक्खी के पंख फड़फड़ाने में इस तरह का अंतर कभी नहीं होता। जीवित वस्तुओं का दोषहीन संरचना के साथ अचानक प्रकट होने के कारण का क्रमिक विकास के सिद्धांत से इस तथ्य की पुष्टि करना वास्तव में असंभव है। इस बात का क्रमिक–विकास के सिद्धांत से समझ पाना बिल्कुल असंभव है कि जीवित प्राणी अपनी दोषहीन संरचनाओं के साथ अचानक कैसे प्रकट हुई। यह ख़ुदा की रचना का एक सीधा उदाहरण है।
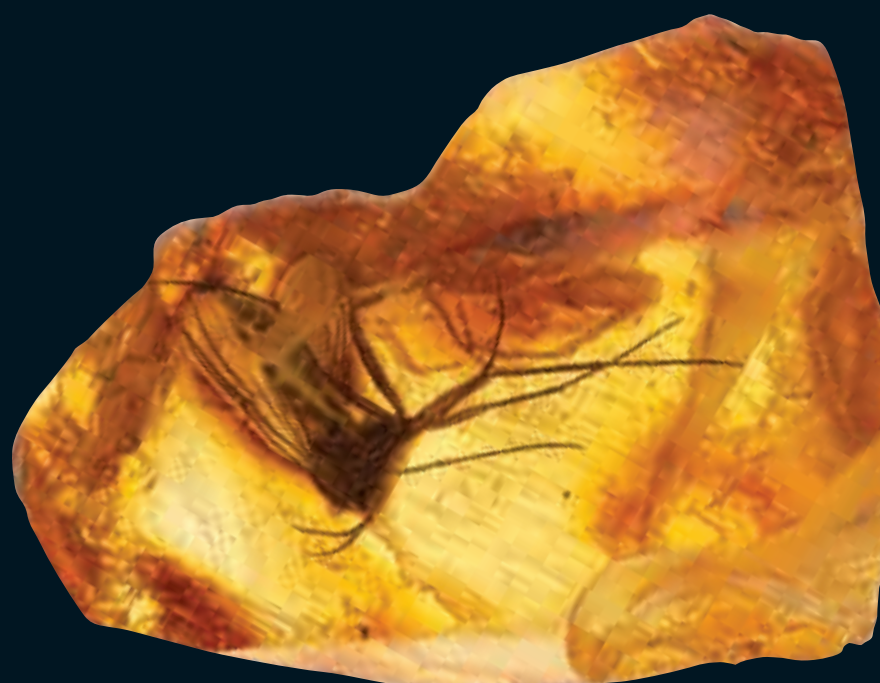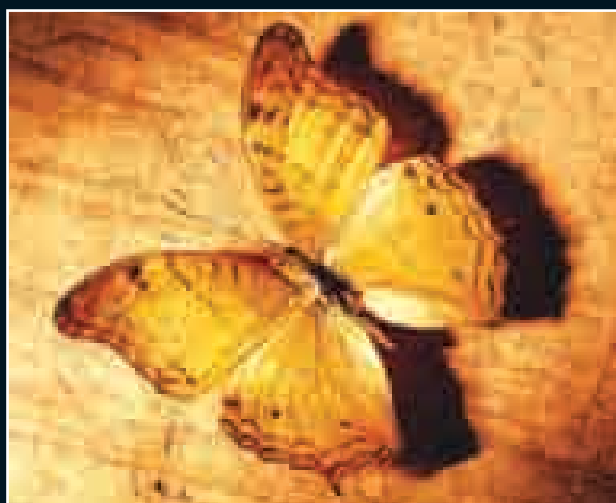
तितली

उम्र : 5 करोड़ वर्ष

स्थान : पोलैंड

काल : इओसीन

5 करोड़ वर्ष पहले जीवित तितली का यह जीवाश्म बताता है कि दसियों लाख वर्षों के गुजरने के बावजूद ये कीट ज्यों–के–त्यों हैं।
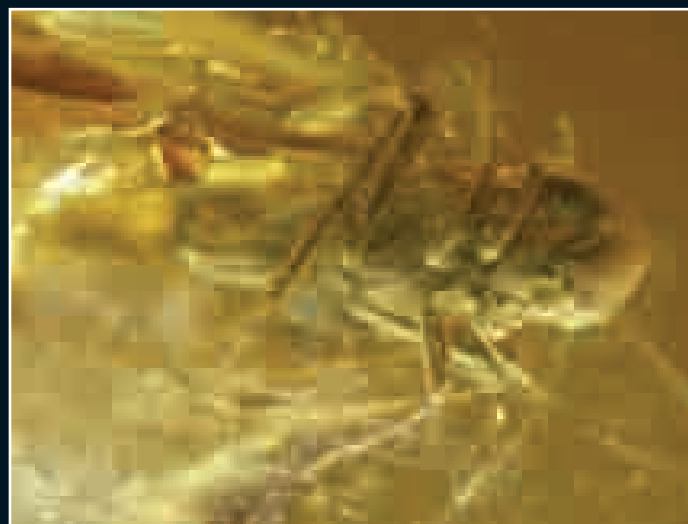
लीफहॉपर (पौधों का रस पीने वाले कीड़ों के परिवार का एक सदस्य)

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : 10 मिलीमीटर (0.3 इंच) लंबा, 8 मिलीमीटर (0.3 इंच) चौड़ा; लीफहॉपर : 4 मिलीमीटर (0.16 इंच)

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

यहां दिखाया गया 4.5 करोड़ वर्ष पूर्व जीवित लीफहॉपर आज के जीवित लीफहॉपर से बिल्कुल अलग नहीं है। दोनों में पूरी तरह समानता इस बात का महत्वपूर्ण संकेत हैं कि क्रमिक–विकास काल्पनिक प्रक्रिया है, जो वास्तव में कभी हुई ही नहीं।

मोथ (पतंगा)

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : 27 मिलीमीटर (1 इंच) लंबा, 18 मिलीमीटर (0. 7 इंच) चौड़ा

स्थान : बाल्टिक, कालिनिनग्राद, रूस

काल : इओसीन

आज जीवित पतंगे लाखों वर्ष पूर्व जीवित पतंगों के समान हैं यानी जीवित प्राणियों का रूप अपने अस्तित्व के समय से नहीं बदला हैं – और वे क्रमिक–विकास का अंग नहीं रहे हैं। यहां दिखाया गया 4.5 करोड़ वर्ष पहले के पतंगे का यह जीवाश्म एक बार फिर इस तथ्य को उजागर करता है।

स्कटल फ्लाई
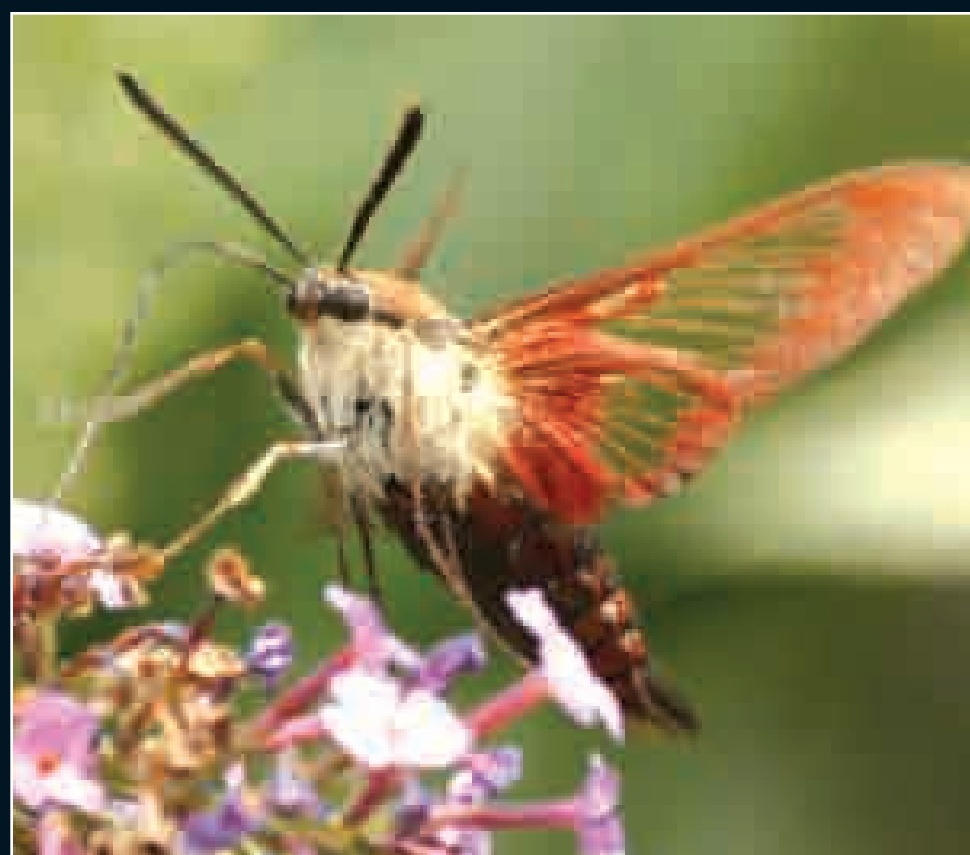
उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 23 मिलीमीटर (0.9 इंच) लंबा, 13 मिलीमीटर (0.5 इंच) चौड़ा; इन्क्लूज़न : 1 मिलीमीटर (0.01 इंच)

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : अपर इओसीन

4.5 करोड़ वर्ष पूर्व जीवित मक्खी का यह जीवाश्म बताता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक काल्पनिक प्रक्रिया है, जो कभी हुई ही नहीं। जीवित प्राणी, डारविन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत के विपरीत, किसी एक ही पूर्वज से पैदा नहीं हुए हैं, और न ही बीच के किन्हीं चरणों से गुज़रे हैं।

उड़ने वाला नर चींटा

उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 13 मिलीमीटर (0.5 इंच) गुणा 8 मिलीमीटर (0.3 इंच)

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

यहां दिखाया गया 4.5 करोड़ वर्ष पुराना उड़ने वाला चींटा आज भी जीवित उड़ने वाले चींटों जैसा ही है।

डांस फ्लाई
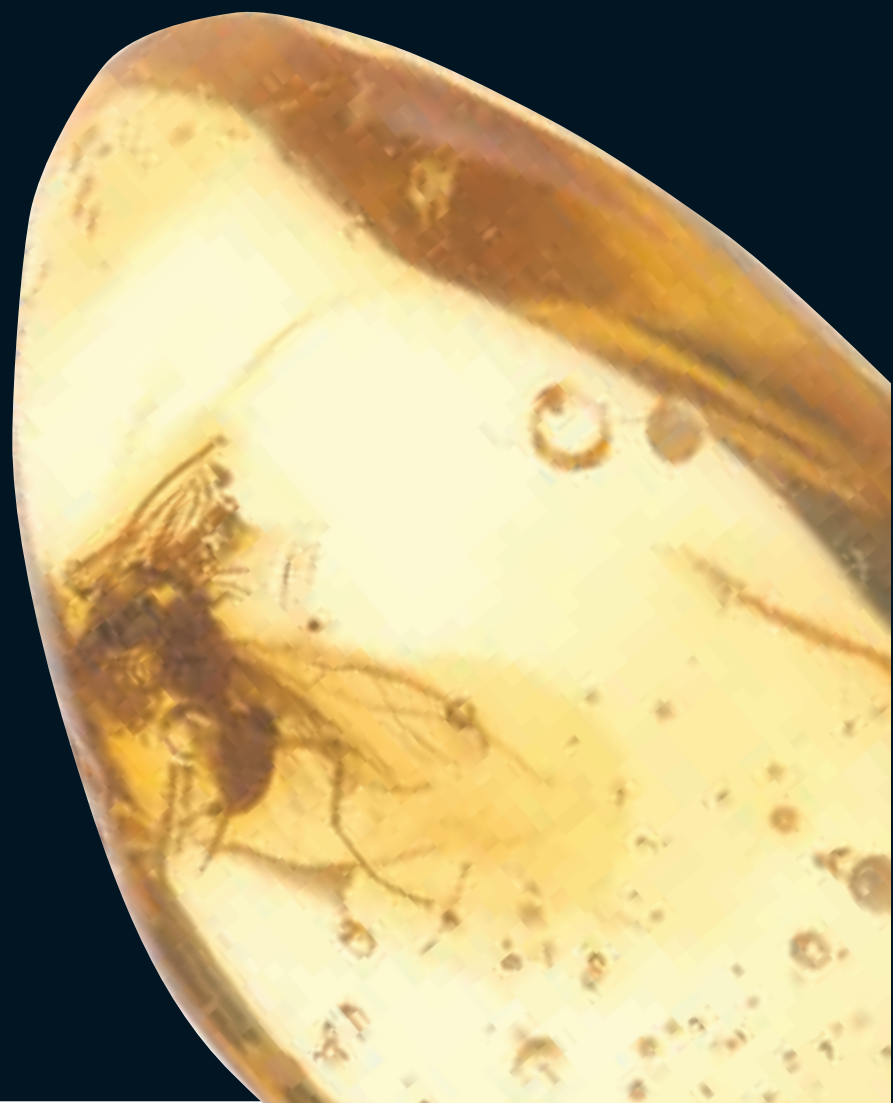
उम्र : 4.5 करोड़ वर्ष

आकार : अंबर : 32 मिलीमीटर (1.2 इंच) गुणा 23 मिलीमीटर (0.9 इंच); इनक्लूशन : 2 मिलीमीटर (0.01 इंच)

स्थान : बाल्टिक, केलिनिनग्रेड, रूस

काल : इओसीन

जीवित प्राणियों ने अपने उत्पत्ति के समय से वही विशेषताएं बनाए रखी हैं और कभी क्रमिक–विकास से नहीं गुज़रे, इसका उदाहरण 4.5 करोड़ वर्ष पहले जीवित मक्खी का यह जीवाश्म है, जो कि आज की डांस फ्लाई का समरूप है।
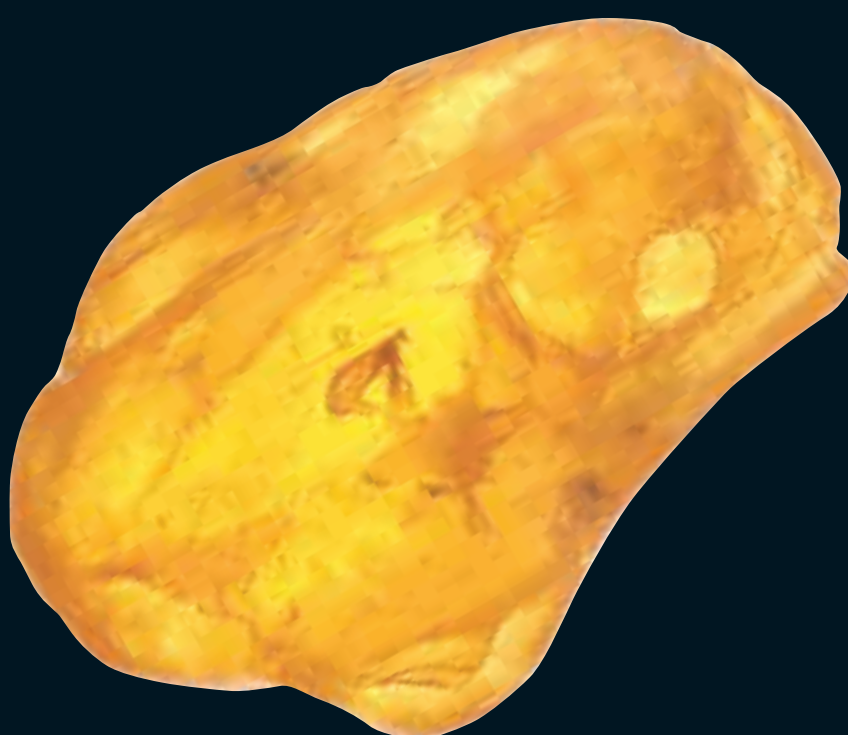
अफ्रीका और मध्य पूर्व में मिले फॉसिलों के नमूने

मोरक्को में मिले जीवाश्म संग्रह

40 करोड़ वर्ष पहले के ट्रिलोबाइट (पानी में रहने वाले संधिपाद जानवरों की एक प्रजाति) के जीवाश्मों के लिए प्रसिद्ध मोरोक्को, में अलग–अलग कालों के जीवाश्म बड़ी संख्या में मिले हैं। एटलस पर्वतों और दूसरे इलाकों में हुई खुदाई से मोरक्को के प्रचुर जीवाश्म वाले क्षेत्रों का पता चला है।

मोरक्को में ज्यादातर पाए जाने वाले जीवाश्म इकिनॉइड के हैं। इकिनॉइड, समुद्री अर्चिन का प्रचलित नाम, वास्तव में बिना रीढ़ वाले समुद्री जीवों के विस्तृत वर्ग को दिया गया नाम है। इस जीव की 800 प्रजातियां हैं जो सामान्यतः समुद्र तल पर रहती हैं। इसके 45 करोड़ वर्ष पुराने नमूने मिलते हैं। अपनी सभी जटिल बनावटों और दोषरहित कार्यप्रणाली सहित इकिनॉइड का अस्तित्व करीब 50 करोड़ वर्षों से हैं, जो वास्तव में क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर एक करारी चोट है। ये जीव अपनी सभी पूर्ण विकसित बनावटों के साथ उस समय जीवित थे जब, क्रमिक–विकासवादियों के अनुसार, जीवन एकदम आरंभिक अवस्था में था। और उनमें से कई अब भी बिल्कुल उन्हीं विशेषताओं के साथ जीवित हैं। वे कई करोड़ वर्षों से नहीं बदले हैं और किसी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अंग नहीं बने हैं।

एटलस पर्वत जो कि 2400 किलोमीटर (1500 मील) तक फैले हुए हैं, इनमें फॉसिल के प्रचुर क्षेत्र हैं। सबसे ऊंची चोटी बेल तॉब्काल है, जिसकी ऊंचाई 4167 मीटर (13665 फीट) है। एटलस पर्वतों का निर्माण लाखों वर्ष पूर्व अमेरिकी और अफ्रीकी महाद्वीपों की टक्कर के कारण हुआ था। माना जाता है कि उत्तरी अमेरिका स्थित एपलाचियन पर्वत भी इस प्रकार की भूगर्भीय हलचल का परिणाम हैं।

हेफल्ला में मिला 49 से लेकर 44.3 करोड़ वर्ष पुरानी स्टारफिश का फॉसिल

14.6–6.5 करोड़ वर्ष पहले की नीडल मछली का फॉसिल, जो कि हमारे आज के समय की नीडल मछली से बिल्कुल अलग नहीं है।

समुद्री अर्चिन

उम्र : 14.6 से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : 5.4 सेंटीमीटर (2.2 इंच)

स्थान : मोरक्को

संरचना : इकिनॉइड क्षेत्र

काल : क्रिटेशियस (जुरासिक काल के बाद का काल)

आज जीवित समुद्री अर्चिन और कई करोड़ वर्ष पहले जीवित समुद्री अर्चिन में कोई अंतर नहीं है। यहां 14.6 से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष पहले के जीवित समुद्री अर्चिन के जीवाश्म का चित्र दिया गया है। इन जीवों से पता चलता है कि जीवित प्राणी विकसित नहीं हुए, बल्कि उनकी विशेषताएं और प्रणालियां वही बनी हुई हैं जो उनको बनाए जाने के समय थीं।
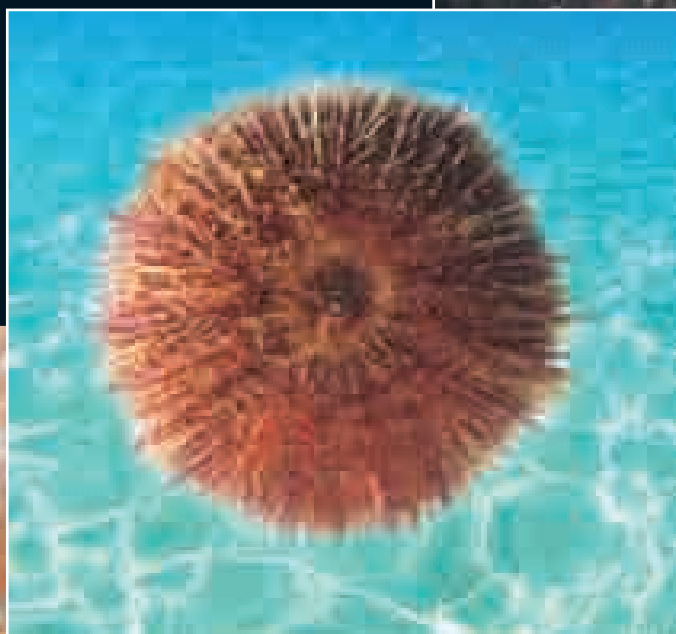
ट्रिलोबाइट (पानी में रहने वाले संधिपाद जीवों की एक प्रजाति)

उम्र : 41 करोड़ से लेकर 36 करोड़ वर्ष

आकार : 5 सेंटीमीटर (2 इंच)

स्थान : एटलस पर्वत, मोरक्को

काल : डेवोनियन

ट्रिलोबाइट के सबसे पहले नमूने 53 करोड़ वर्ष पूर्व डेबोनियन काल के जीवाश्म रिकार्ड में मिलते हैं। इनकी जटिल बनावट और विकसित प्रणालियों की वजह से डारविनवादियों के लिए इनकी व्याख्या करना मुश्किल है। आंखों की जटिल बनावट के साथ जीवाश्म रिकॉर्ड में पचास करोड़ वर्ष पूर्व इनका अचानक नजर आना क्रमिक–विकास के संदर्भ में इनकी व्याख्या को मुश्किल बनाता है। यह साफ है कि अन्य जीवों की तरह ट्रिलोबाइट को भी अल्लाह ने बनाया था।

कैंब्रियन काल के जीव–जंतुओं की तस्वीर

नीडल मछली

उम्र : 10 करोड़ वर्ष

आकार : 203 मिलीमीटर (7.9 इंच); मैट्रिक्स : 113 मिलीमीटर (4.4 इंच) गुणा 185 मिलीमीटर (7.2 इंच)

स्थान : रमलिया ताउज़

काल : क्रिटेशियस (जुरासिक काल के बाद का काल)

203 मिलीमीटर (7.9 इंच) लंबी यह मछली एक वयस्क है, जिसके विवरणों को अच्छी तरह संभाल कर रखा गया है। आज जीवित नीडल मछलियों और लाखों वर्ष पहले जीवित नीडल मछलियों में कोई फर्क नहीं है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत को गलत साबित करते हुए नीडल फिश अपनी बनावट में बिना किसी बदलाव के लाखों वर्षों से अपना अस्तित्व बचाए हुए है।
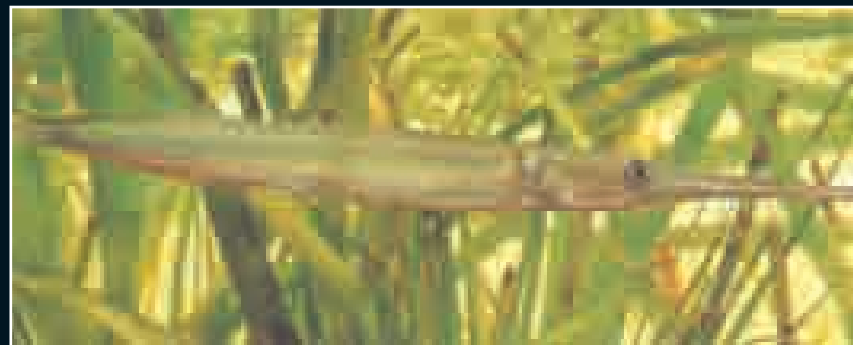
तारा मछली

उम्र : 42 करोड़ वर्ष

आकार : 5.7 सेंटीमीटर (2.3 इंच)

स्थान : ऑर्डोविशियन मेसिसी, मोरक्को

संरचना : कताउआ संरचना

काल : ऑर्डोविशियन

कांटों जैसी अपनी बाहरी बनावट वाली तारा मछली (प्रवर्ग : एकिनोडर्माटा) ने कई करोड़ वर्षों से अपना अस्तित्व बनाए रखा है। 42 करोड़ वर्ष पहले जीवित तारा मछली की वही विशेषताएं थीं। जो आज जीवित तारा मछली की हैं। इस सच्चाई को क्रमिक–विकासवादी कभी स्पष्ट नहीं कर पाएंगे। यह तथ्य साबित करता है कि जीवित प्राणी विकसित नहीं हुए, बल्कि उनकी रचना की गई थी।

ट्रलोबाइट (पानी में रहने वाले संधिपाद जीवों की एक प्रजाति)

उम्र : 40 करोड़ वर्ष

स्थान : मोरक्को

काल : डेवोनियन

जीवाश्म रिकॉर्ड क्रमिक–विकास के सिद्धांतों के दावों का समर्थन नहीं करते। इसके विपरीत, पृथ्वी की परतों के जीवाश्म रिकॉर्ड की पड़ताल करने पर हमे पता चलता है कि जीवित प्राणी अचानक प्रकट हुए। 53 करोड़ वर्ष पुरानी कैमब्रियन सबसे गहरी परत है, जिसमें जीवाश्म मिलते रहे हैं। इस परत में मिलने वाले सबसे ज्यादा जीवाश्म ट्राइलोबाइट के हैं। 53 करोड़ वर्ष पहले की दुनिया के ट्राइलोबाइट की आंखों में कई लेंस लगे थे – इस शानदार बनावट की वजह से उन्हें शिकार करते समय देखने और तैरकर अपने शिकार की ओर जाने में मदद मिलती थी। इस नाज़ुक बनावट ने क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर करारी चोट की है।

समुद्री अर्चिन

उम्र : 14.6 से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : 3.5 सेंटीमीटर (1.4 इंच)

स्थान : मोरक्को

संरचना : इकिनॉइड क्षेत्र

काल : क्रिटेशियस (जुरासिक काल के बाद का काल)

समुद्री अर्चिन का सबसे पुराना नमूना आर्दोविशियन काल का है। उनमें लगभग पचास करोड़ वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं आया है, जो यह साबित करता है कि ये जीव क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए।
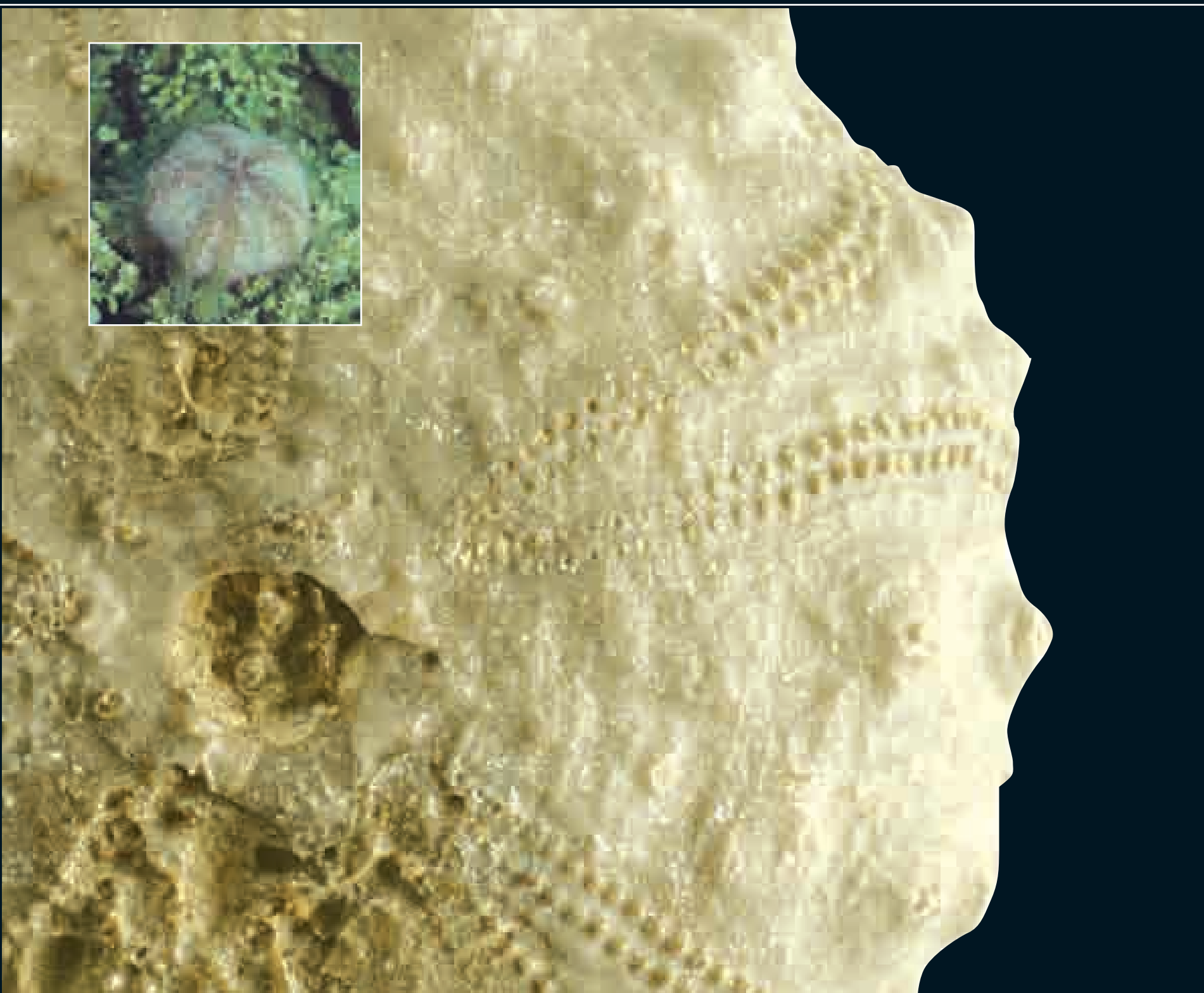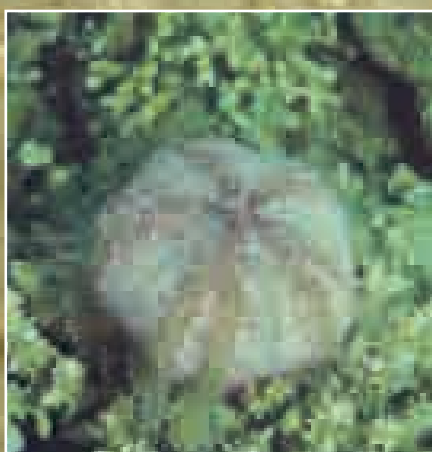
समुद्री अर्चिन

उम्र : 9.5 से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष

आकार : 2.5 सेंटीमीटर (1 इंच)

स्थान : मिडलेट, मोरक्को

काल : क्रिटेशियस का आखिरी समय

कई लाख वर्ष पहले जीवित समुद्री अर्चिन आज जीवित समुद्री अर्चिन से बिल्कुल अलग नहीं थे। 7.2 करोड़ वर्षों से उनकी बनावट में कोई बदलाव का नहीं आना है यह साबित करता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत झूठा है।

समुद्री अर्चिन

उम्र : 9.5 से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष

आकार : 4 सेंटीमीटर (1.6 इंच) गुणा 4.5 सेंटीमीटर (1.8 इंच)

स्थान : ताउज़, मोरक्को

काल : क्रिटेशियस का आखिरी चरण

जो समुद्री अर्चिन 9.5 से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष पहले जीवित थे, उनमें और आज जीवित इन प्रजातियों में कोई अंतर नहीं है। समुद्री अर्चिन, जो इन लाखों वर्षों के दौरान बदले नहीं है इस बात का सबूत देते हैं कि जीवित प्राणी विकसित नहीं हुए थे।

समुद्री अर्चिन

उम्र : 10 करोड़ वर्ष

स्थान : ताज़ा प्रांत, मोरक्को

संरचना : महाद्वीपीय सैंडस्टोन की परतें

काल : क्रिटेशियस

समुद्री अर्चिन, तारा मछली, क्रीनॉइड और सी कुकम्बर आदि जातियां एकिनोडरमटा प्रवर्ग से संबंधित हैं। समुद्री अर्चिन का अस्तित्व लगभग पचास करोड़ वर्षों से है और इन्होंने क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर करारी चोट की है। उनकी बनावट लाखों वर्षों से नहीं बदली है, जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत के इस दावे को गलत करार देता है कि प्रजातियां धीरे–धीरे अन्य जीव–जंतुओं से विकसित हुईं।

तारा मछली

उम्र : 50 करोड़ से लेकर 44 करोड़ वर्ष

आकार : 8.6 सेंटीमीटर (3.4 इंच)

स्थान : मोरक्को

संरचना : हेफल्ला सैंडस्टोन संरचना

काल : ऑर्डोविशियन

तारा मछली का यह जीवाश्म 50 करोड़ वर्ष पुराना है–जो कि ऐसा दुलर्भ नमूना है जिसकी विशेषताएं ज्यों की त्यों सुरक्षित हैं। तारा मछली की विशेष पहचान को प्रदर्शित करने वाली उसकी पांच भुजाओं में आज के समय में भी कोई परिवर्तन नहीं आया है। लाखों जीवाश्मों की तरह यह जीवाश्म भी यह जाहिर करता है कि जीवित प्राणी विकसित नहीं हुए और कई करोड़ वर्षों में किसी बदलाव से नहीं गुज़रे।
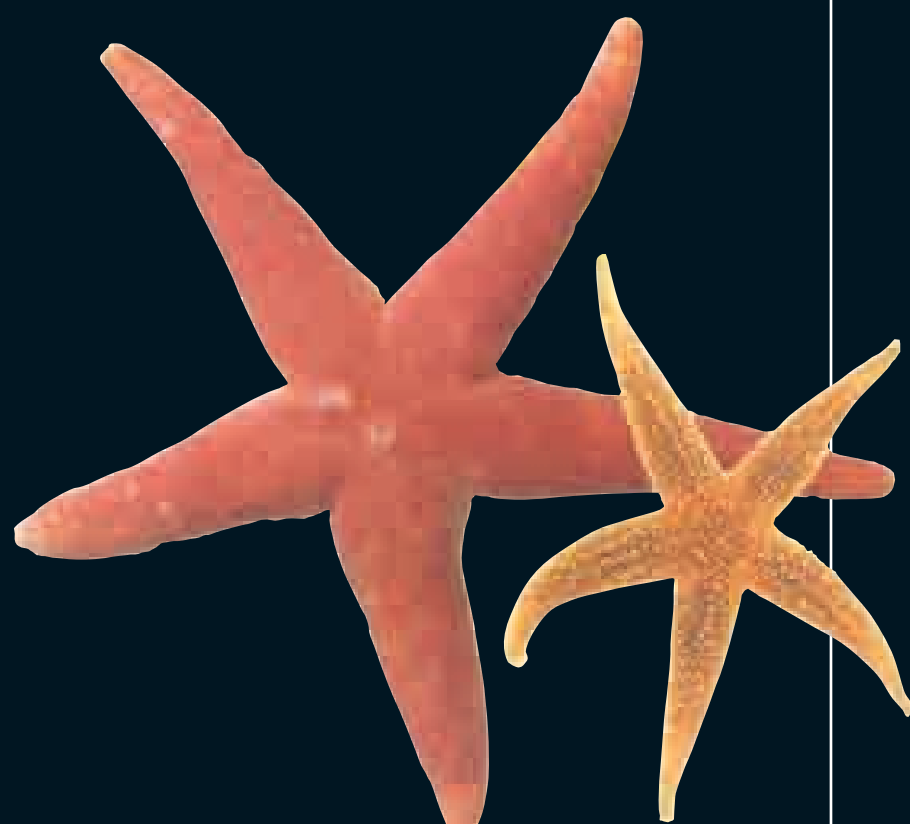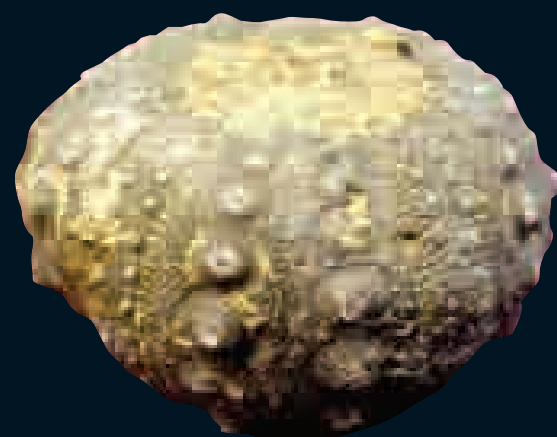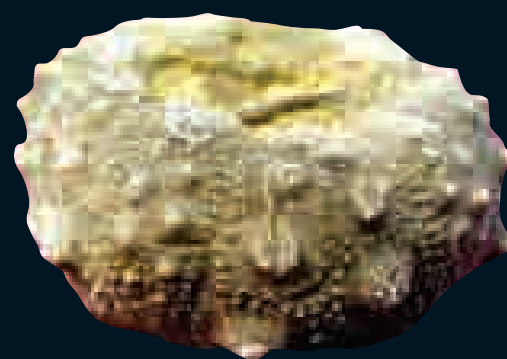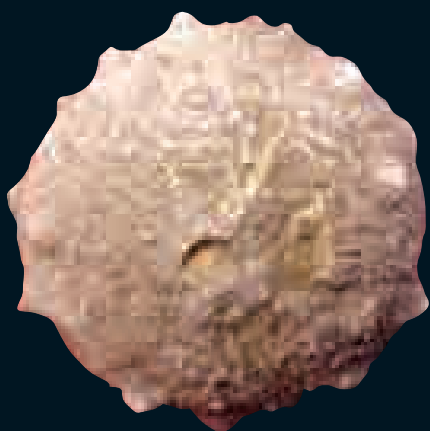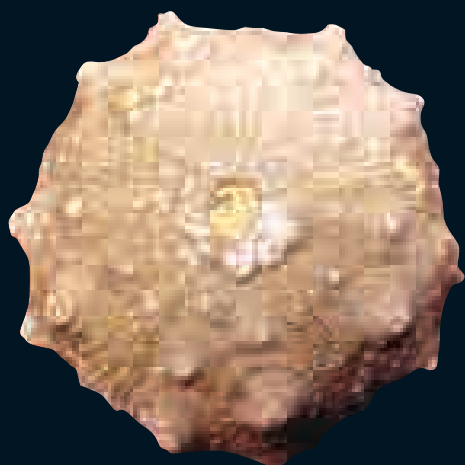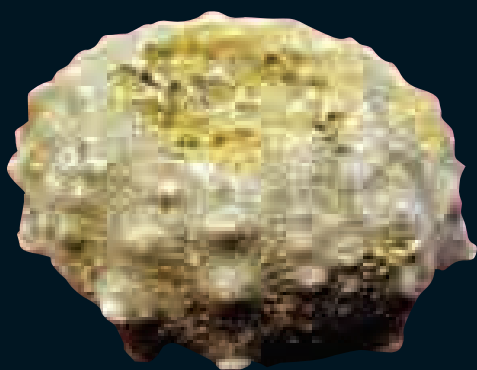
समुद्री अर्चिन

उम्र : 9.5 करोड़ से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष

आकार : 2.5 सेंटीमीटर (1 इंच)

स्थान : मिडलेट, मोरक्को

काल : क्रिटेशियस का आखिरी चरण

9.5 करोड़ से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष पहले जीवित समुद्री अर्चिन के जीवाश्म उन लाखों जीवाश्मों में से एक हैं जो यह साबित करते हैं कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं। ये जीवाश्म बिल्कुल आज के समय में जीवित समुद्री अर्चिन जैसे ही हैं, और यह इस बात का सबूत है कि जीवित प्राणियों की रचना अल्लाह ने की थी।

समुद्री अर्चिन

उम्र : 14.6 करोड़ से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : 3.8 सेंटीमीटर (1.5)

स्थान : मोरक्को

संरचना : इकिनॉइड क्षेत्र

काल : क्रिटेशियस का आखिरी चरण

मोरक्को की इकिनॉइड परतों से मिला 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष पुराना समुद्री अर्चिन का यह जीवाश्म रचना के असंख्य सबूतों में से एक है। आज जीवित समुद्री अर्चिन और आज से लाखों वर्ष पहले जीवित रहे समुद्री अर्चिन में कोई अंतर नहीं है।

लेबनान में मिले फॉसिलों के नमूने

लेबनान की भूगर्भीय बनावट क्रिटेशियस और जुरासिक काल (14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष और 20.8 से 14.6 करोड़ वर्ष पहले) की है। लेबनान से मिले जीवाश्म सामान्यतः इसी काल से संबंधित हैं। लेबनान के ज्यादातर पर्वतों में परती चट्टानें भी हैं, जो कि जीवाश्म को सुरक्षित रहने के लिए आदर्श स्थान हैं। सतह से करीब चट्टानी परतों में बड़ी संख्या में मूँगे और स्पंज की परतें हैं और साथ ही साथ जुरासिक काल के क्रसटेशियन (केकड़े जैसे संधिपाद जीव, ज्यादातर समुद्र में पाए जाते हैं) के अस्थिपंजर के जीवाश्म होते हैं। यही नहीं, क्रिटेशियस काल के समुद्री जीवों के फॉसिल, अंबर और पौधों के जीवाश्म भी मिल चुके हैं।

लेबनान के जीवाश्म क्षेत्रों की गिनती विश्वभर के महत्त्वपूर्ण जीवाश्म क्षेत्रों में होती है। इनमें हजौला, हाकिल और अन्नाम्मुरा ज्यादा समृद्ध हैं। इन क्षेत्रों में मछलियों की 250 से ज्यादा प्रजातियों के जीवाश्म मिले हैं, जिनमें से 150 को पहचाना जा चुका है। लेबनान में मिले रीढ़ वाले जीवों के जीवाश्म सामान्यतः सेनाज़ॉइक युग (6.5 करोड़ वर्ष पहले से लेकर आज तक) से संबंधित हैं। ये सभी फॉसिल दर्शाते हैं कि जीवित प्राणी लाखों वर्षों के दौरान बदले नहीं हैं, दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वे क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए हैं। जीवाश्म रिकॉर्डों से पता चलता है कि कई करोड़ वर्ष पहले

हाकिल, जहां फॉसिल क्षेत्रों की प्रचुरता है, में की गई खुदाई एक बार फिर बतलाती है कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत का दावा आधारहीन है।

के जीवित प्राणी एवं आज पाए जाने वाले जीवों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है और यह तथ्य डारविनवादियों के दावों को सिरे से खारिज करता है। इन वैज्ञानिक खोजों से जाहिर होता है कि जीवित प्राणियों को क्रमिक–विकास ने नहीं, अल्लाह ने पैदा किया था।
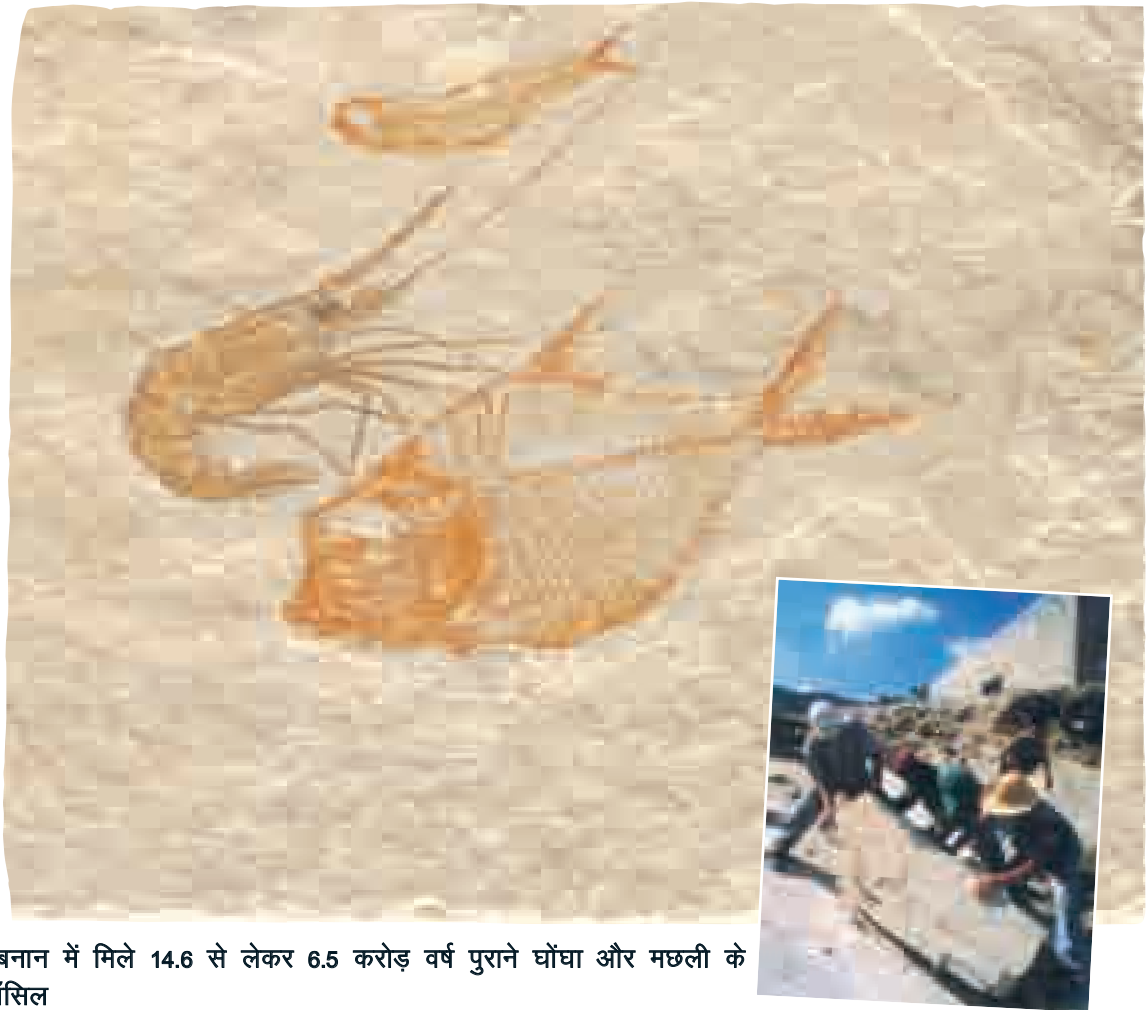
लेबनान में मिले 14.6 से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष पुराने घोंघा और मछली के फॉसिल

फॉसिलों को किसी प्रकार के नुकसान से बचाने के लिए उस चट्टान को सावधानीपूर्वक तोड़ना चाहिए जिसमें फॉसिल हैं। ऊपर हाकिल और वहां किए गए अध्ययनों को दिखाया गया है।

शार्क मछली

उम्र : 9.5 करोड़ वर्ष

आकार : 180 मिलीमीटर (7 इंच); मैट्रिक्स : 205 मिलीमीटर (8 इंच) गुणा 135 मिलीमीटर (5.3 इंच)

स्थान : हाकिल, लेबनान

काल : मध्य क्रिटेशियस, मध्य सेनोमेनिअन

छोटी शार्क मछली के इस जीवाश्म के पर और कोमल हड्डियों वाले अस्थिपंजर के सामान्य विवरण सुरक्षित हैं – यह जीवाश्म इस बात का एक और सबूत है कि जीवित प्राणी क्रमिक–विकास से नहीं गुज़रे। आज जीवित शार्क मछलियों और लाखों वर्ष पहले की शार्क मछलियों में कोई फर्क नहीं है।
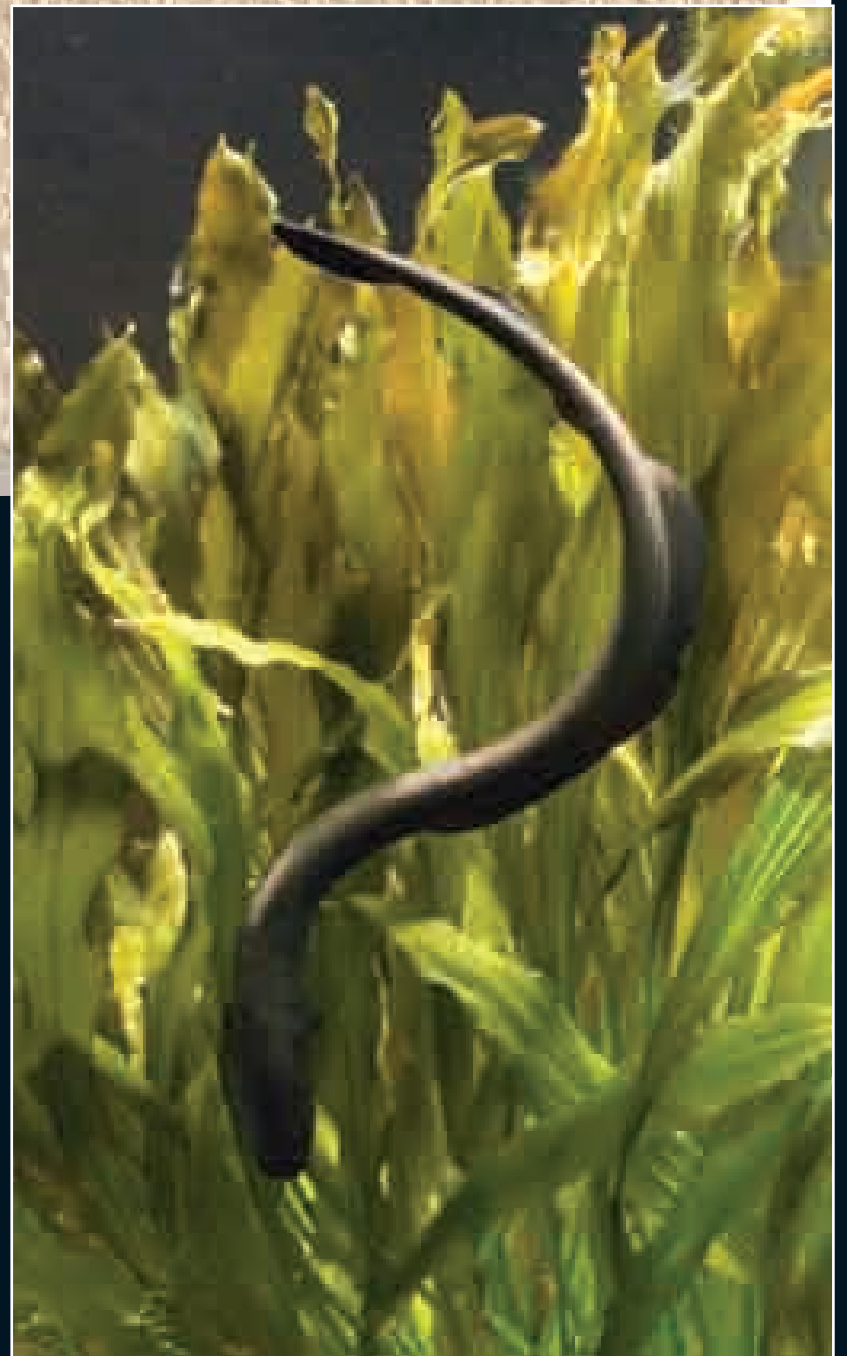
ईल (एक प्रकार की मछली)

उम्र : 9.5 करोड़ वर्ष

आकार : 58 मिलीमीटर (2.2 इंच) (अगर सीधा किया जाए तो); मैट्रिक्स : 56 मिलीमीटर (2.2 इंच) गुणा 65 मिलीमीटर (2.5 इंच)

स्थान : हाकिल, लेबनान

काल : मध्य क्रिटेशियस, मध्य सेनोमेनियन

साँप के समान मछलियों की श्रेणी एंग्विलिफॉर्म्स में ईल मछलियों की 400 से ज्यादा प्रजातियां हैं। लाखों वर्षों से उनमें कोई परिवर्तन नहीं हुआ यह बात एक बार फिर क्रमिक–विकास के सिद्धांत की कमजोरी को उजागर करती है।
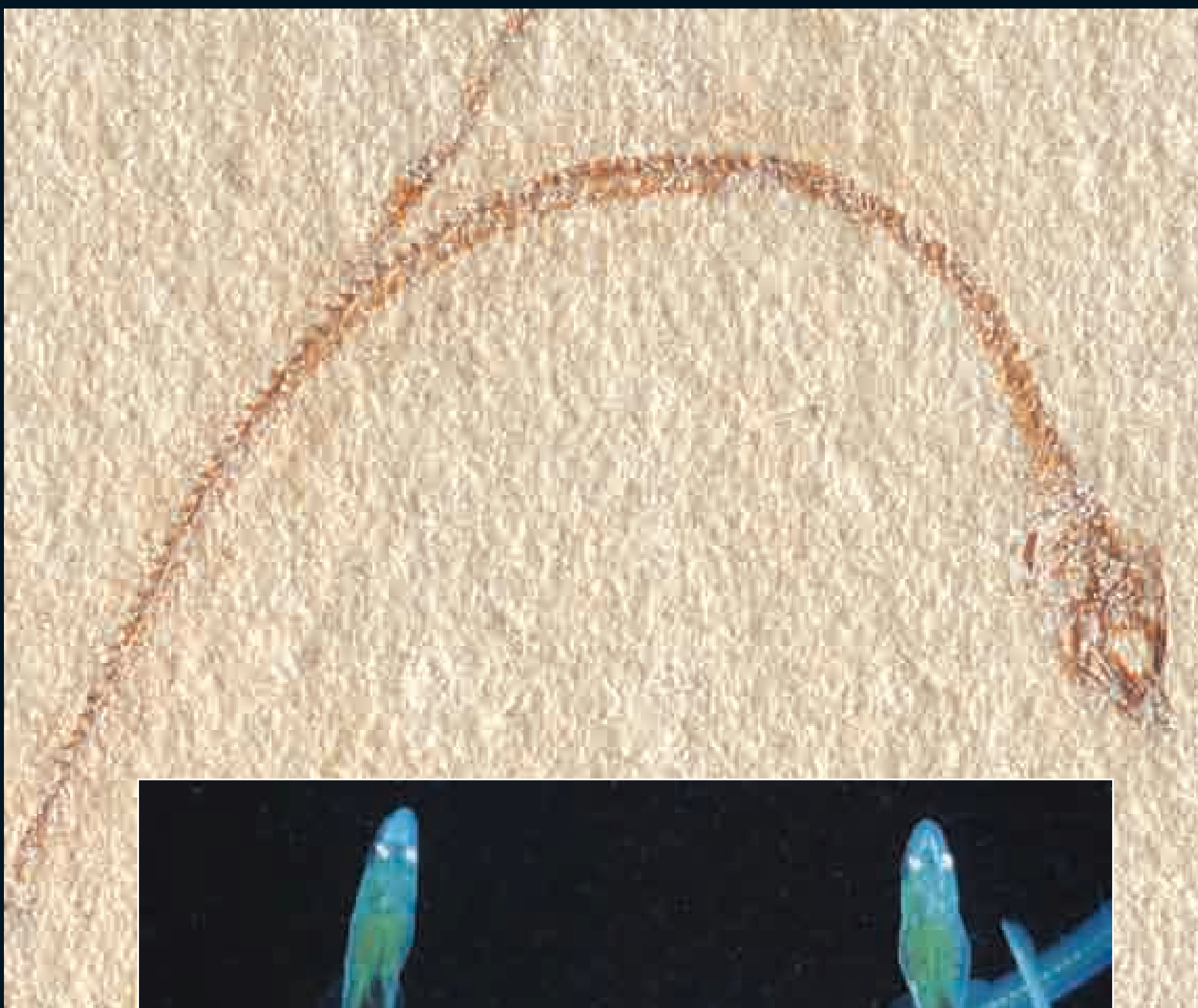
उड़ने वाली मछली

उम्र : 9.5 करोड़ वर्ष

आकार : 28 मिलीमीटर (1.1) मांसपेशीय परों के दोनों सिरों तक, 47 मिलीमीटर (1.8) लंबाई में; मैट्रिक्स : 75 मिलीमीटर (2.9 इंच) गुणा 70 मिलीमीटर (2.7 इंच)

स्थान : हाकिल, लेबनान

काल : मध्य क्रिटेशियस, मध्य सेनोमेनियन

आज के समय में जीवित उड़ने वाली मछली जैसा यह जीवाश्म साबित करता है कि जीवित प्राणी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अंग नहीं रहे। रीढ़ वाले इन जीवों में लाखों वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं आया है। यह एक बार फिर डारविनवाद के मूल आधार "धीरे–धीरे क्रमिक–विकास" के दावे की धज्जियां उड़ाता है।
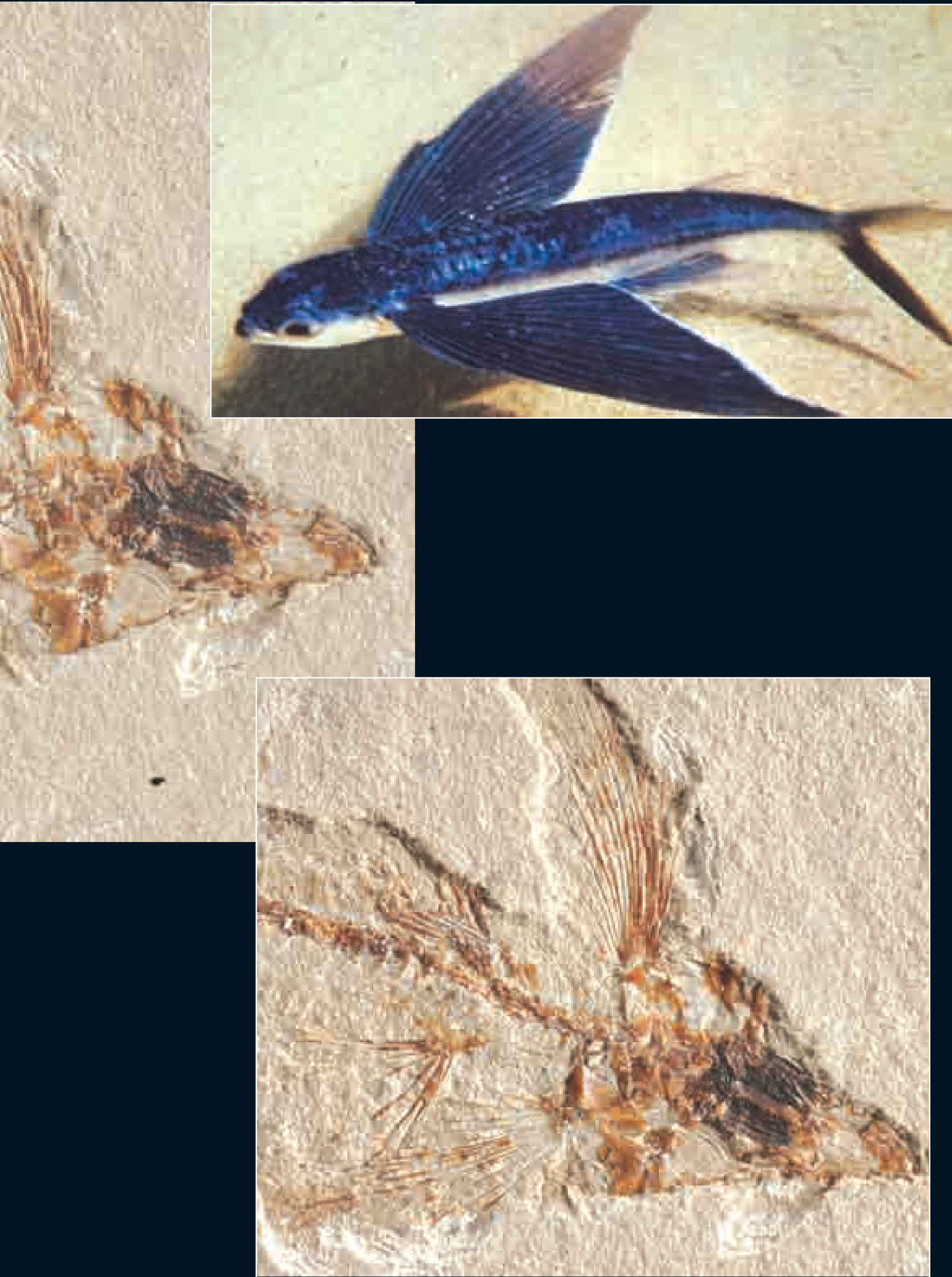
वाइपर मछली

उम्र : 9.5 से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष

आकार : 16.5 सेंटीमीटर (6.5 इंच)

स्थान : हाकिल, लेबनान

उच्च क्रिटेशियस

वाइपर मछली अधिकांशतः उष्णकटिबंधीय जल में रहती है और लाखों वर्षों से किसी परिवर्तन से नहीं गुजरी है। वाइपर मछली के सभी जीवाश्म दर्शाते हैं कि यह जीव अपनी बनावट में किसी परिवर्तन के बिना लाखों वर्षों से जीवित है। क्रमिक–विकास इसको स्पष्ट नहीं कर सकता। वाइपर मछली एक बार फिर रचना के तथ्य को साबित करती है।
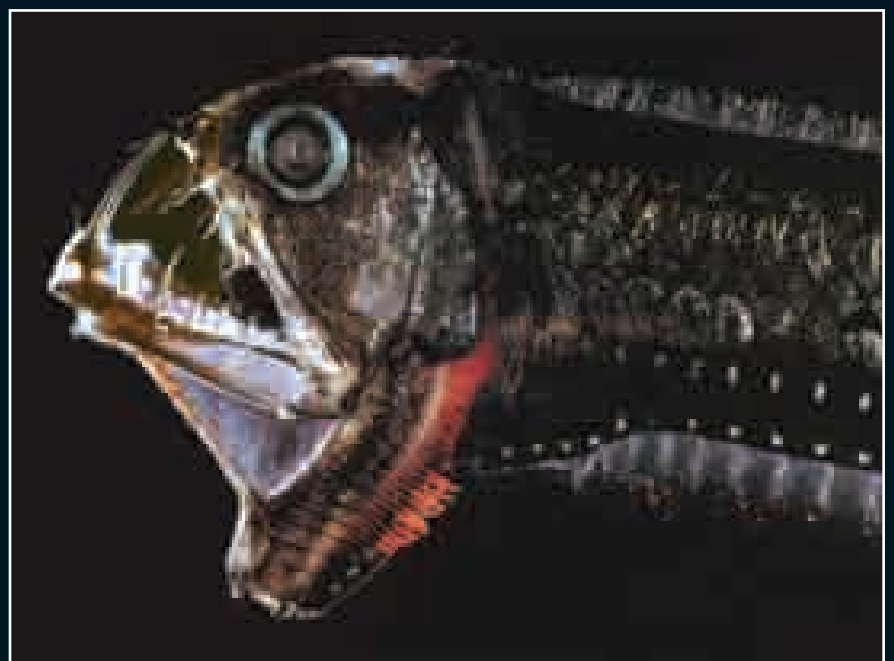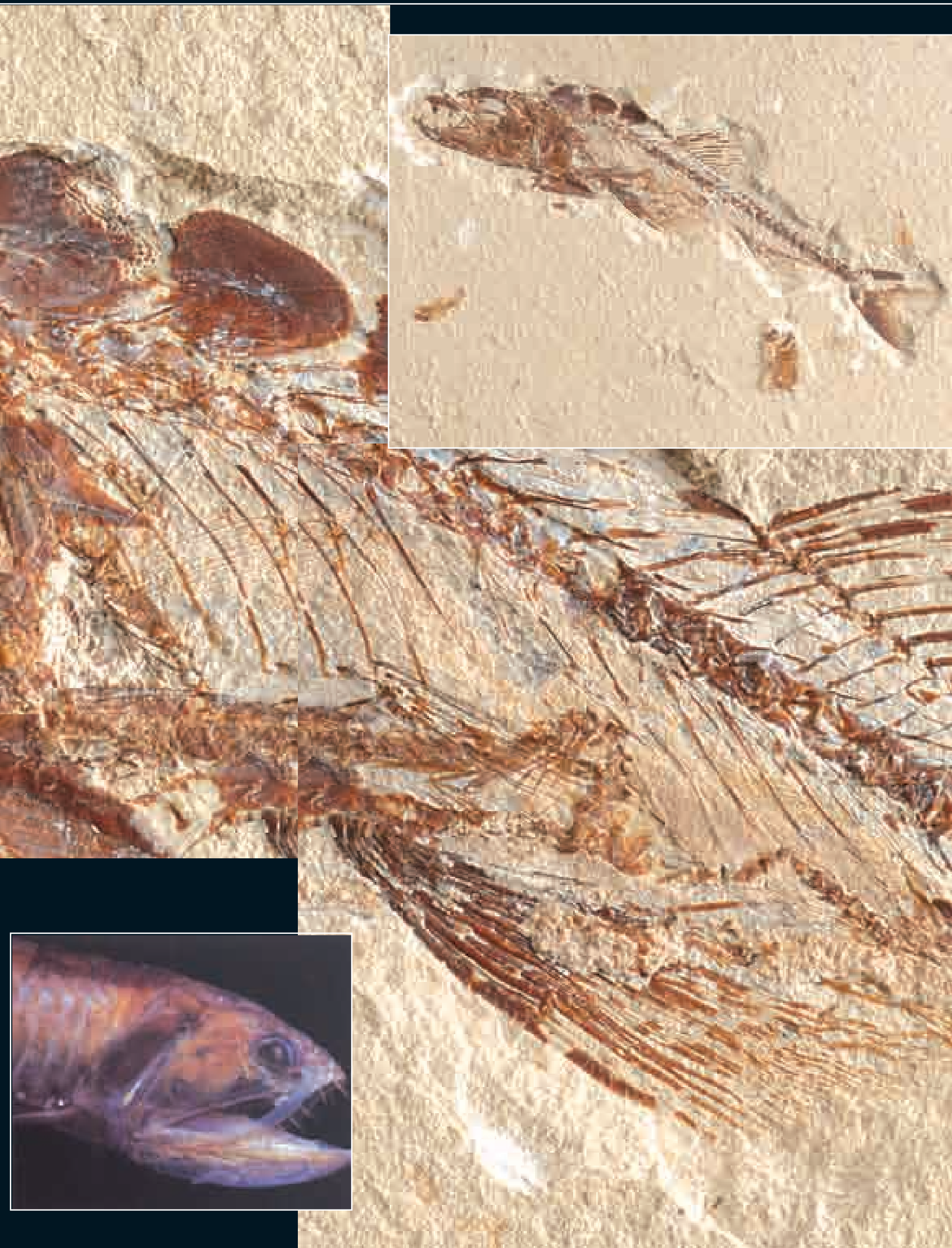
समुद्री केकड़ा (श्रिम्प)

उम्र : 12.7 से लेकर 89 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 8.1 सेंटीमीटर (3.2 इंच) गुणा 10.9 सेंटीमीटर (4.3 इंच)

स्थान : हजौला, लेबनान

काल : मध्य क्रिटेशियस, सेनोमेनियन

इस नमूने में एक समुद्री केकड़ा और दो मछलियों के फॉसिल हैं। मछलियों के पर और हड्डियों की बनावट अच्छी तरह सुरक्षित रखी गई हैं। समुद्री केकड़ा आर्थ्रोपॉडा प्रवर्ग से संबंध रखता है। सबसे पुराना जीवश्म जुरासिक काल (20.8 करोड़ से लेकर 14.6 करोड़ वर्ष पहले) का है। ये जीवाश्म हमें बताते हैं कि समुद्री केकड़े कई करोड़ वर्षों से नहीं बदले हैं और न ही विकास के किसी मध्यवर्ती चरण से गुज़रे हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो, वे विकसित नहीं हुए थे, बल्कि उनकी रचना की गई।
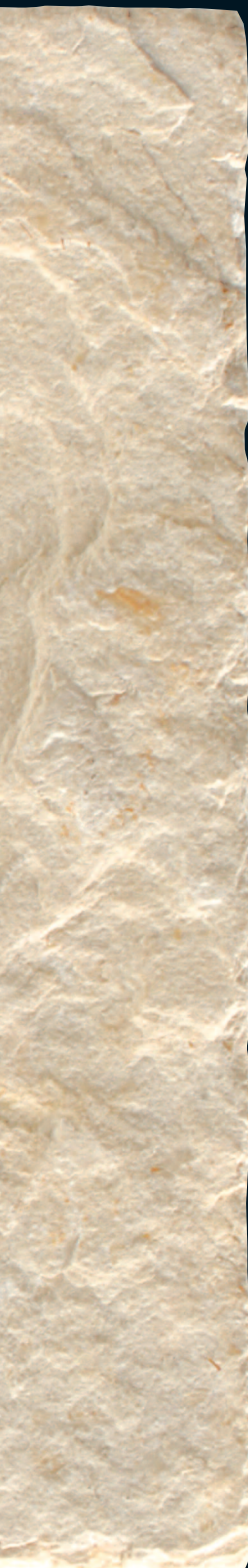
उड़ने वाली मछली

उम्र : 10 करोड़ वर्ष

आकार : 26 मिलीमीटर (1 इंच) परों के दोनों सिरों तक, 120 मिलीमीटर (4.7 इंच) लंबाई; मैट्रिक्स : 180 मिलीमीटर (7 इंच) गुणा 90 मिलीमीटर (3.5 इंच)

स्थान : हाकिल, लेबनान

काल : मध्य क्रिटेशियस, सेनोमेनियन

उड़ने वाली मछली का यह जीवाश्म हाकिल के चूने के पत्थर में मिला था। यह मछली अपनी सभी बाहरी विशेषताओं के साथ सुरक्षित है। यह मछली 12 सेंटीमीटर (4.7 इंच) लंबी है, और इसके पर 26 मिलीमीटर (1 इंच) लंबे हैं। आज जीवित मछलियों और उन मछलियों में कोई अंतर नहीं है जो लाखों वर्षों पहले जीवित थीं। यह इस बात को है कि ये जीव विकसित नहीं हुए थे, बल्कि उनकी रचना की गई।

उड़ने वाली मछली

उम्र : 9.5 से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष

आकार : 2.5 सेंटीमीटर (1 इंच) गुणा 4.5 सेंटीमीटर (1.7 इंच); मैट्रिक्स : 6 सेंटीमीटर (2.4 इंच) गुणा 8 सेंटीमीटर (3.2 इंच)

स्थान : हजौला, बिबलौस, लेबनान

काल : उच्च क्रिटेशियस

जीवित प्राणी क्रमिक–विकास का अंग नहीं रहे हैं इस बात का एक और सबूत उड़ने वाली मछली का यह जीवाश्म है। 9.5 से 7.2 करोड़ वर्ष पहले जीवित इस उड़ने वाली मछली के फॉसिल और आज जीवित उड़ने वाली मछली में कोई फर्क नहीं है। इस मछली के पंख–जैसे पर और लंबी पूंछ उन्हें पानी की सतह पर उड़ने में मदद करती है।

ईल

उम्र : 9.5 करोड़ वर्ष से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष

आकार : 10.2 सेंटीमीटर (4 इंच)

स्थान : हाकिल, लेबनान

काल : उच्च क्रिटेशियस

जीवाश्म बन चुकी अन्य मछलियों के साथ एक ईल मछली का जीवाश्म। एंग्विलिफॉर्म्स (सांप जैसी मछलियों की श्रेणी) से संबद्ध ईल मछली सामान्यतः उथले पानी में रहती है। कुछ ईल गहरे पानी {4000 मीटर (13123 फीट,)} में रहती हैं। इनका आकार 10 सेंटीमीटर (4 इंच) से लेकर 3 मीटर (9.8 फीट) और वजन 65 किलोग्राम (143.3 पाउंड) तक हो सकता है। जीवाश्म बन चुकी यह ईल आज जीवित ईल से भिन्न नहीं है। ये 9.5 करोड़ से लेकर 7.2 करोड़ वर्ष से किसी बदलाव से नहीं गुज़री हैं, जो यह साबित करता है कि ये जीव क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से नहीं गुज़रे।
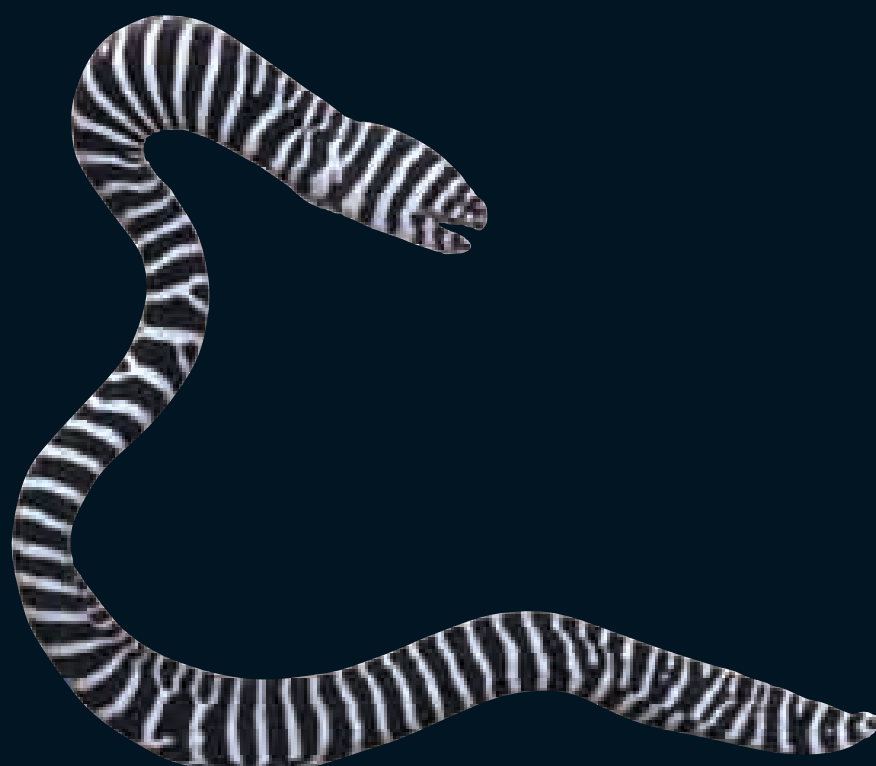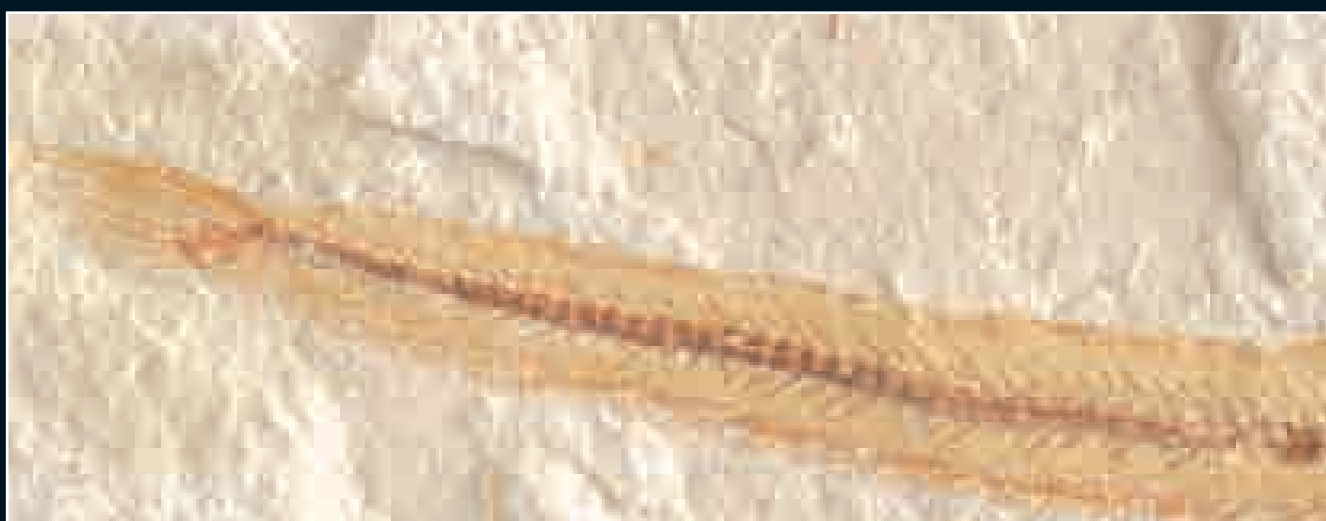
ईल

उम्र : 14.6 करोड़ वर्ष से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : 8 सेंटीमीटर (3.2 इंच) गुणा 15 सेंटीमीटर (6 इंच)

स्थान : हजौला, लेबनान

काल : मध्य क्रिटेशियस, सेनोमेनियन

इस ईल मछली के जीवाश्म की लंबाई 8 सेंटीमीटर (3.2 इंच) गुणा 15 सेंटीमीटर

(6 इंच) है। इस जीवाश्म का सिर अच्छी तरह सुरक्षित है, और इसके शरीर के विवरणों का अध्ययन किया जा सकता है। ये ईल, जो लाखों वर्ष पहले जीवित थीं, आज के समय में जीवित ईल मछलियों से भिन्न नहीं हैं। यहां दिखाई गई 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष पुरानी ईल मछली इस बात का सबूत है।
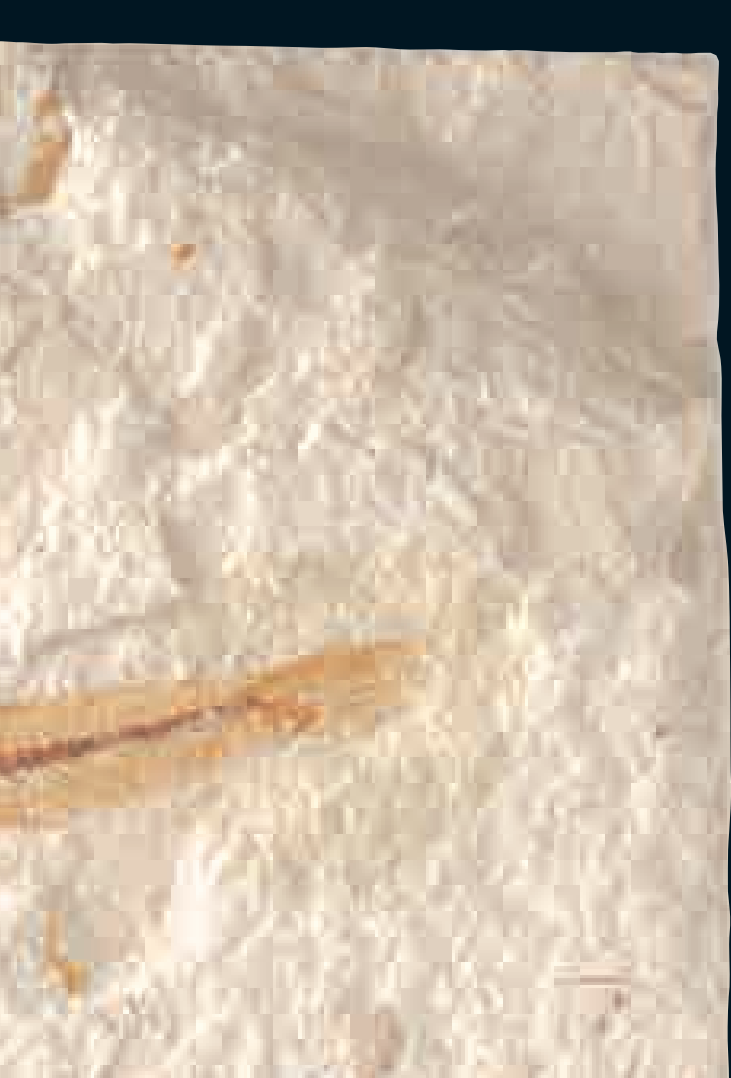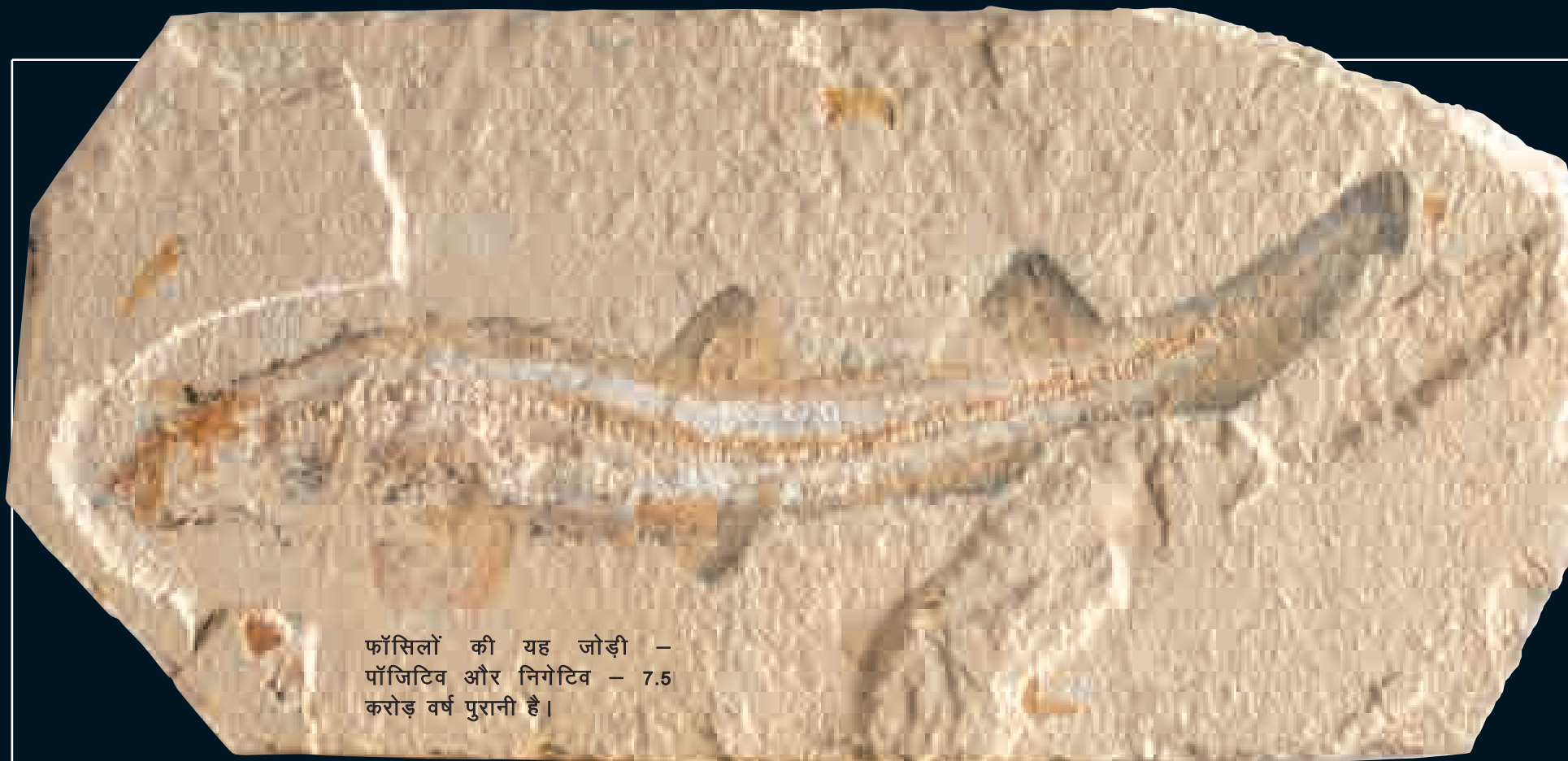
फॉसिलों की यह जोड़ी — पॉजिटिव और निगेटिव — 7.5 करोड़ वर्ष पुरानी है।

शार्क मछली

उम्र : 7.5 करोड़ वर्ष

स्थान : बिबलौस, हाकिल, लेबनान

काल : क्रिटेशियस, सेनोमेनियन

शार्क मछली के फॉसिल अक्सर लेबनान के पहाड़ों में मिलते हैं। शार्क मछलियां, मछलियों के वर्ग कार्टिलेजिनस से संबंध रखती हैं। कार्टिलेजिनस मछलियों के अस्थि—पंजर में कैल्शियम नहीं होता, बल्कि वे कार्टिलेज ऊतकों से बने होते हैं। कैल्शियम उनके दांतों में और कभी—कभी उनकी रीढ़ में पाया जाता है। इसी वजह से, शार्क के अस्थि—पंजर के बजाय आमतौर पर उनके दांतों के जीवाश्म पाए जाते हैं।

अब तक मिला शार्क मछली का सबसे पुराना जीवाश्म 40 करोड़ वर्ष पहले का है। अन्य जीवित प्राणियों की तरह यह जीवाश्म दर्शाता है कि शार्क मछली में कई करोड़ वर्षों में कोई बदलाव नहीं आया है। डारविनवादियों के दावों के विपरीत, शार्क मछली किसी अन्य प्रजाति से विकसित नहीं हुई, बल्कि अपने पूर्ण बनावट के साथ अचानक अस्तित्व में आईं। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो उनकी रचना की गई।

स्लिपर झींगा मछली

उम्र : 9.8 करोड़ वर्ष

स्थान : लेबनान

काल : क्रिटेशियस

स्लिपर झींगा मछली (परिवार : स्किलैरिडे) एक धीमी गति से चलने वाली क्रस्टेशियन (कठोर खोल वाले जीव) है, जो कि लगभग 40–45 सेंटीमीटर (15–18 इंच) लंबी होती है। आज जीवित स्लिपर झींगा मछली की विशेषताएं वही हैं जो उनमें लाखों वर्षों पहले थीं। इन लाखों वर्षों के दौरान उनमें मामूली बदलाव भी नहीं आया है। यहां दिखाया गया 9.8 करोड़ वर्ष पुरानी झींगा मछली का जीवाश्म इस तथ्य की पुष्टि करता है।

मैडागास्कर से मिले फॉसिलों के नमूने

दुनिया का चौथा सबसे बड़ा द्वीप मैडागास्कर, हिंद महासागर के पूर्वी अफ्रीकी तट के निकट है। इस क्षेत्र में दुनिया के 5 फीसदी पौधों और जानवरों की प्रजातियां पाई जाती हैं, जिनमें से 80 फीसदी केवल मेडागास्कर में मिलती हैं। द्वीप के पूर्वी तट पर छोटी लेकिन खड़ी चट्टानें हैं। उत्तर में सारातनाना पर्वतीय क्षेत्र है, जिनमें कुछ ज्वालामुखी पर्वत हैं।

भूगर्भीय अध्ययन दर्शाते हैं कि 16.5 करोड़ वर्ष पहले मेडागास्कर अफ्रीका का हिस्सा था, लेकिन बाद में महाद्वीप से अलग होना शुरू हो गया। इस क्षेत्र में खुदाई कार्य कर रहे पुरावनस्पतिशास्त्रियों ने मेसाज़ॉइक युग (24.8 से 6.5 करोड़ वर्ष पूर्व) के पक्षियों, स्तनपायी और समुद्री जीवों के जीवाश्म बड़ी संख्या में प्राप्त किए हैं।

जीवाश्म संबंधी अन्य सभी खोजों की तरह मेडागास्कर से प्राप्त हुए जीवाश्म, क्रमिक–विकास के सिद्धांत और वास्तविक जीवाश्म रिकॉर्डों के मुख्य अंतरविरोधों को उजागर करते हैं। जीवाश्म इस बात को साबित करते हैं कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत की धारणा से जीवन की उत्पत्ति को स्पष्ट करना असंभव है। अचानक उभरी प्रजातियां, जिनमें कई करोड़ वर्षों के दौरान बदलाव नहीं आया, इस बात को दर्शाती हैं कि जीवित प्राणियों का क्रमिक–विकास कभी नहीं हुआ बल्कि उनकी रचना की गई।
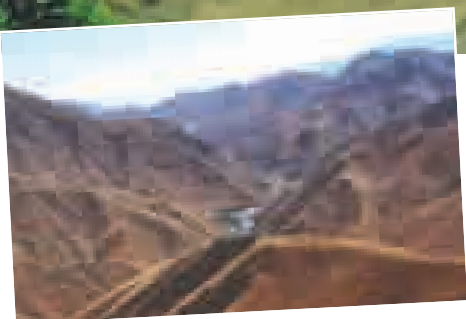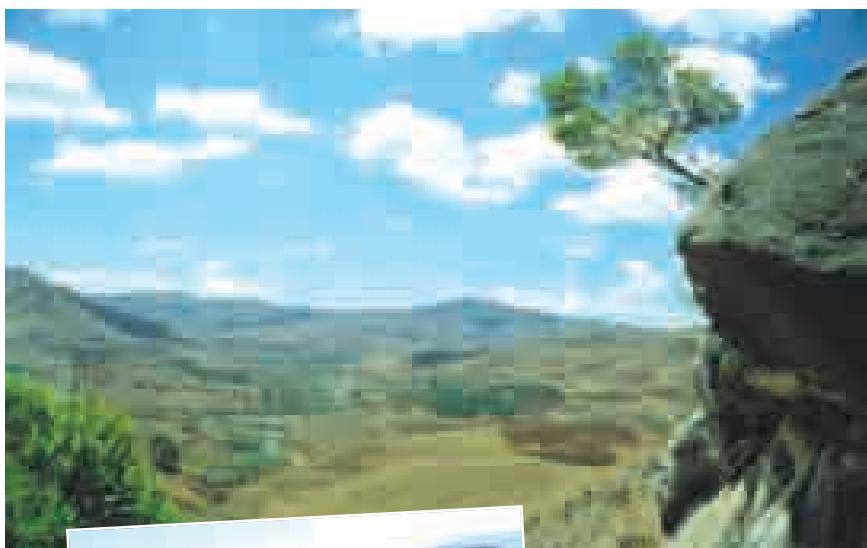
मेडागास्कर में, जहां वर्षा वन और मरुस्थल दोनों हैं, भूवैज्ञानिक इतिहास के अलग–अलग युगों से संबंधित कई फॉसिल खोजे गए हैं। ये फॉसिल उजागर करते हैं कि जीवित प्राणियों में कई हजार लाख वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है।

17.2 से लेकर 16.8 वर्ष पुराने समुद्री अर्चिन के फॉसिल

11.4 करोड़ वर्ष पुरान यह नॉटिलस (एक प्रकार का समुद्री जीव) आज जीवित नॉटिलस से बिल्कुल भी अलग नहीं है।
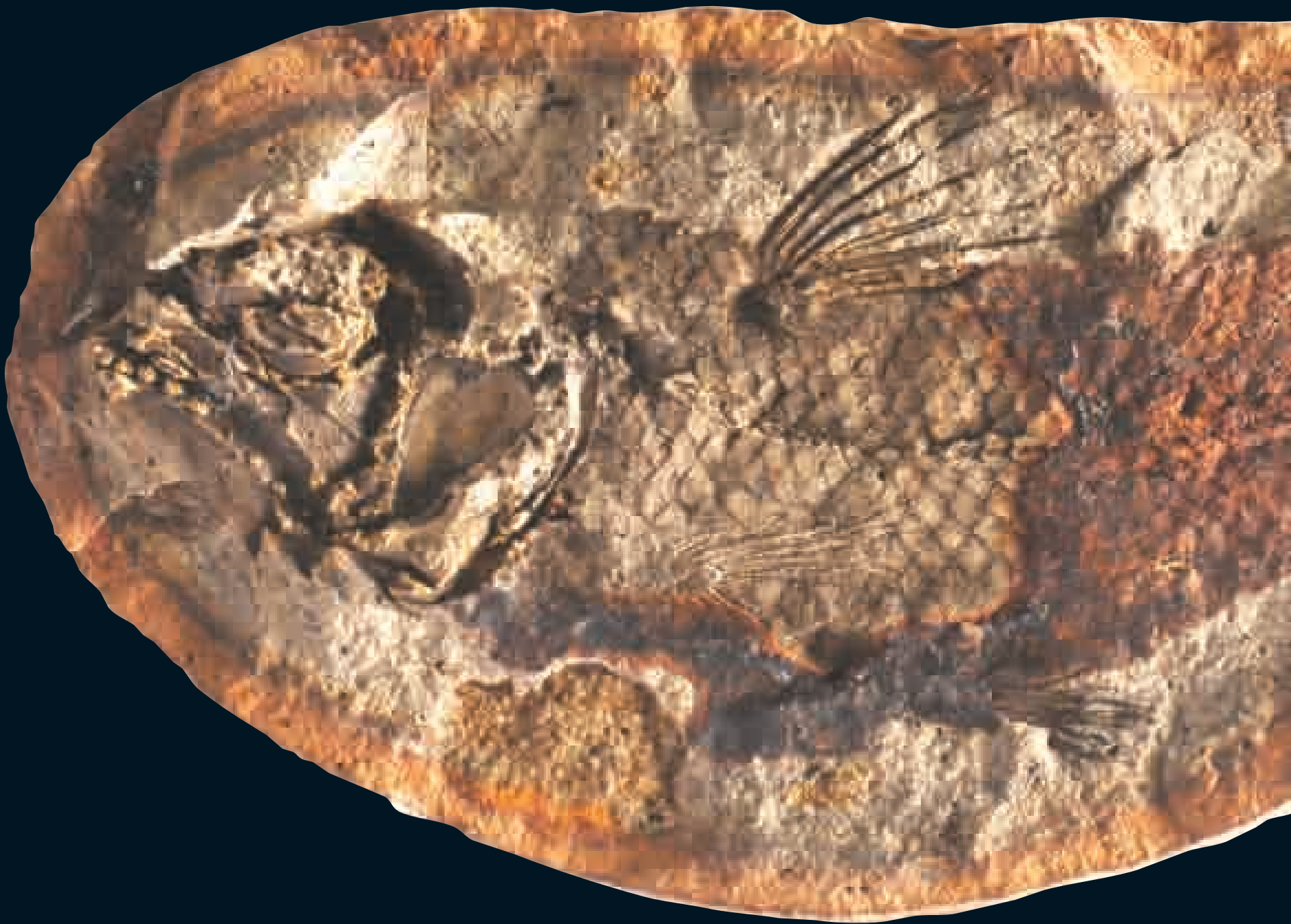
सेलाकैंथ

उम्र : 24 करोड़ वर्ष

स्थान : एंबीलोब, मेडागास्कर

काल : लोअर ट्रायसिक

40 करोड़ वर्ष पुरानी यह मछली सेलाकैंथ, क्रमिक–विकास के सिद्धांत की राह में बाधा है। इस मछली में 40 करोड़ वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं आया है। महाद्वीपों का दूसरे स्थान पर चले जाना, वातावरण के बदलाव और पर्यावरणीय स्थितियों में बदलाव के बावजूद, लाखों वर्षों के दौरान इस मछली की शारीरिक बनावट सुरक्षित है – यह बात क्रमिक–विकासवादियों को चकरा देती है।

सेलाकैंथ एक बार फिर इस सिद्धांत को गलत करार देती है कि जीवित प्राणी विकसित हुए थे और वे क्रमिक–विकास की सतत प्रक्रिया से गुज़रे थे।

सेलाकैंथ यहां दो हिस्सों में दिखाई दे रही हैं। इस प्रकार के फॉसिलों में, बीच से फटे पत्थर के दोनों हिस्सों पर जीव की हूबहू छाप मिलती है।
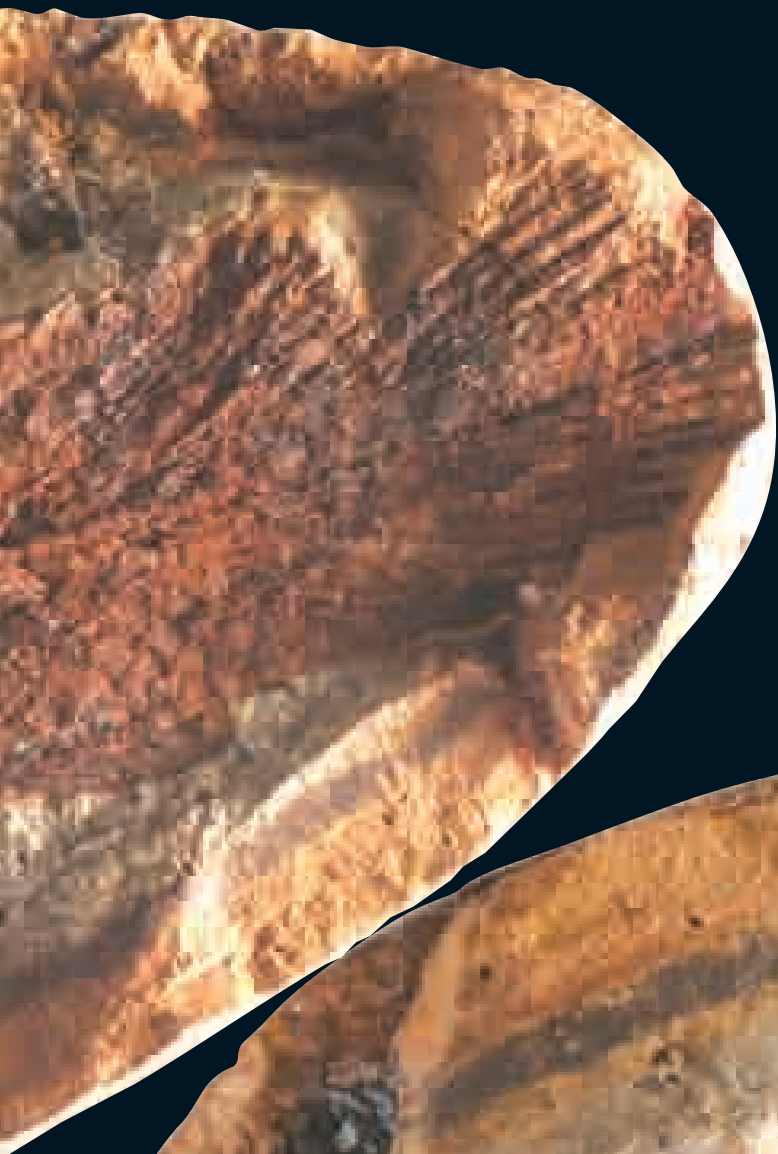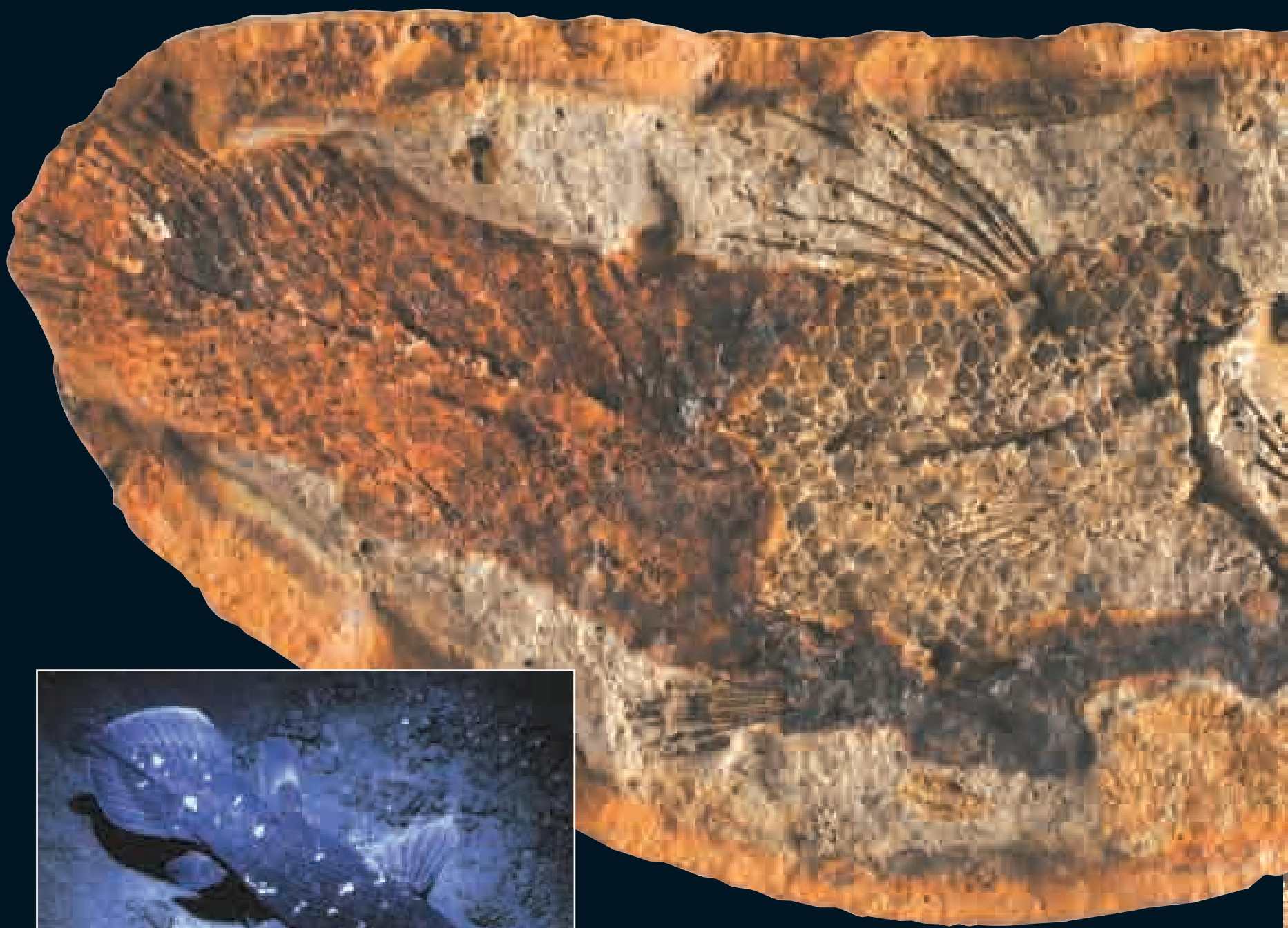
सेलाकैंथ, 150 सेंटीमीटर (5 फीट) लंबी एक विशाल मछली है, इसका शरीर मोटी परत से ढ़का होता है, जो कवच जैसा दिखता है। यह हड्डी वाली मछली के वर्ग ऑसटेशथिस से संबंधित है, और परतों में मिले फॉसिलों के पहले नमूने डेवोनियन काल के हैं। 1938 तक कई क्रमिक–विकासवादी मानते थे कि यह मछली समुद्र तल पर चलने के लिए अपने परों के दो जोड़ों का प्रयोगी करती थी और यह समुद्र और जमीन पर रहने वाले जानवरों का बीच का रूप था। अपने दावे के समर्थन में क्रमिक–विकासवादियों ने सेलाकैंथ मछली के जीवाश्मों फॉसिलों में परों की हड़ीली बनावट का उल्लेख किया, जो उन्हें मिले थे।

हालांकि, 1938 में आए बदलावों ने मध्यवर्ती प्रजातियों के दावों को उस वक्त पूरी तरह खारिज कर दिया, जब दक्षिण अफ्रीका के तट के निकट एक जीवित सेलाकैंथ को पकड़ा गया। माना जा रहा था कि ये जीव 7 करोड़ वर्ष पहले विलुप्त हो चुके थे। अध्ययन बताते हैं कि सेलाकैंथ में 40 करोड़ वर्षों में भी कोई बदलाव नहीं आया है।
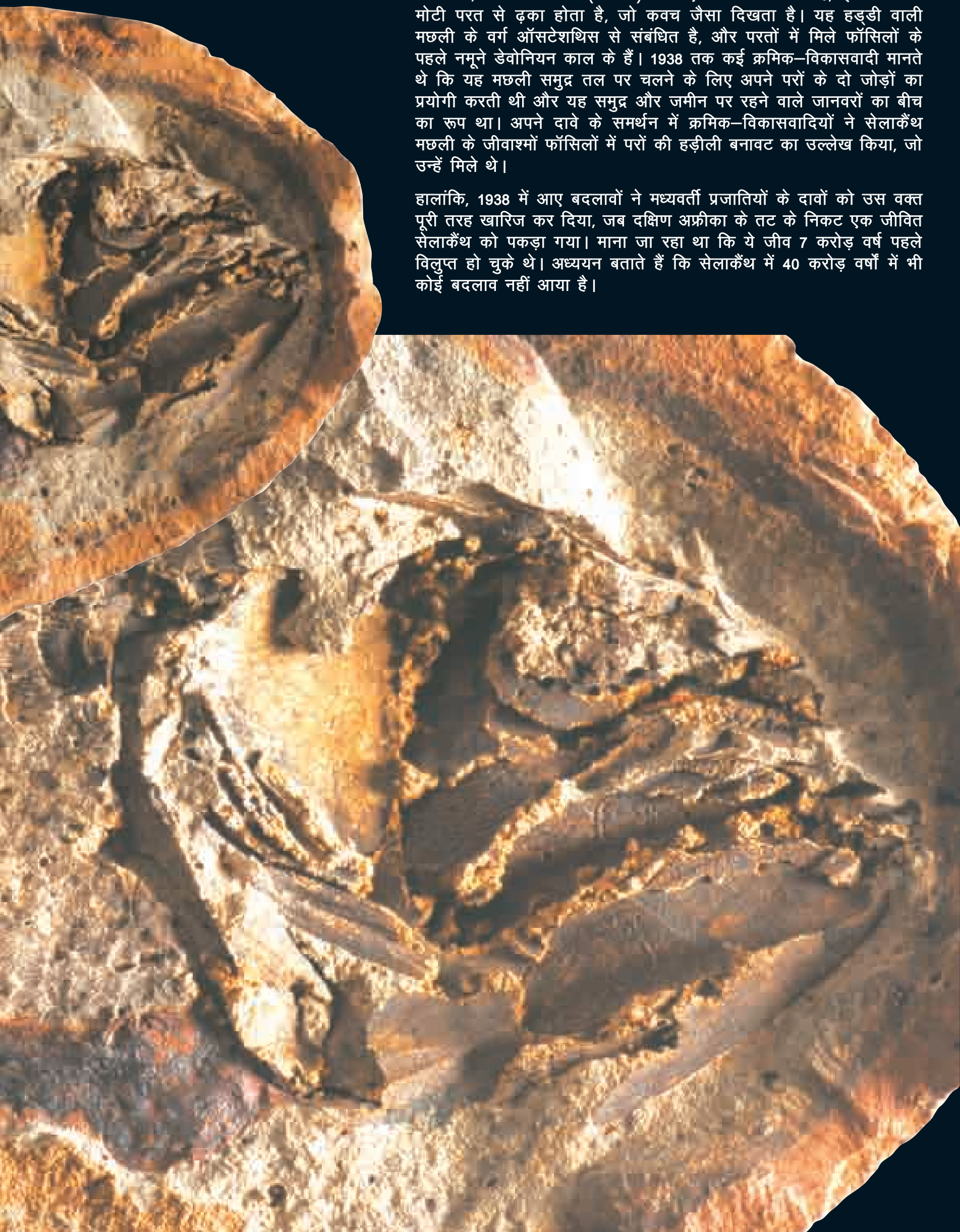
बाइवाल्व (एक प्रकार का समुद्री जीव)

उम्र : 20.8 करोड़ से लेकर 14.6 करोड़ वर्ष

स्थान : माजुंगा बेसिन, मेडागास्कर

काल : जुरासिक

यहां दिखाया गया 20.8 करोड़ वर्ष से लेकर 14.6 करोड़ वर्ष पहले पाया जाने वाला बाइवाल्व और आज के समय में जीवित बाइवाल्व में कोई अंतर नहीं है। यह इस बात का सबूत है कि वे क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए और यह कोई बीच का रूप नहीं है।
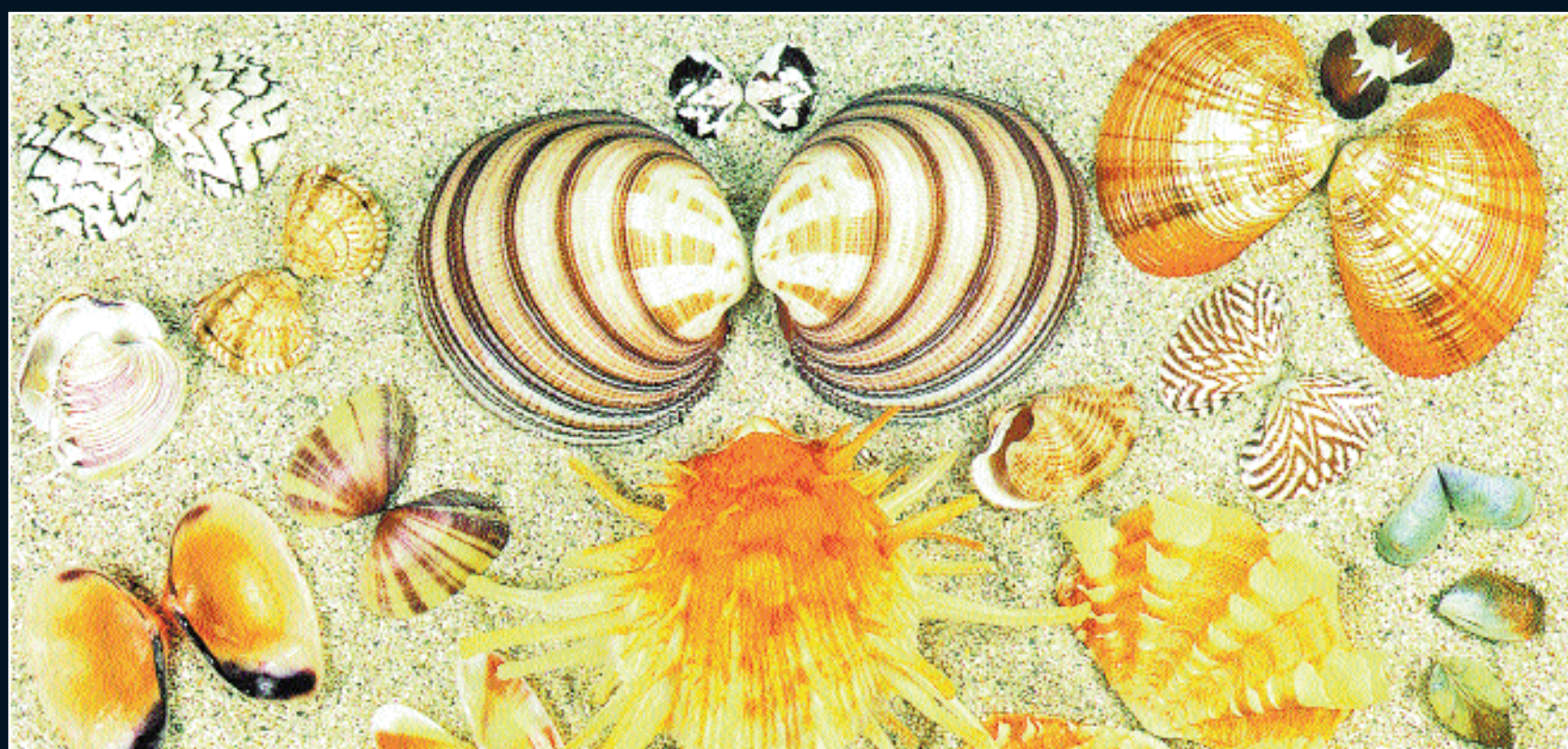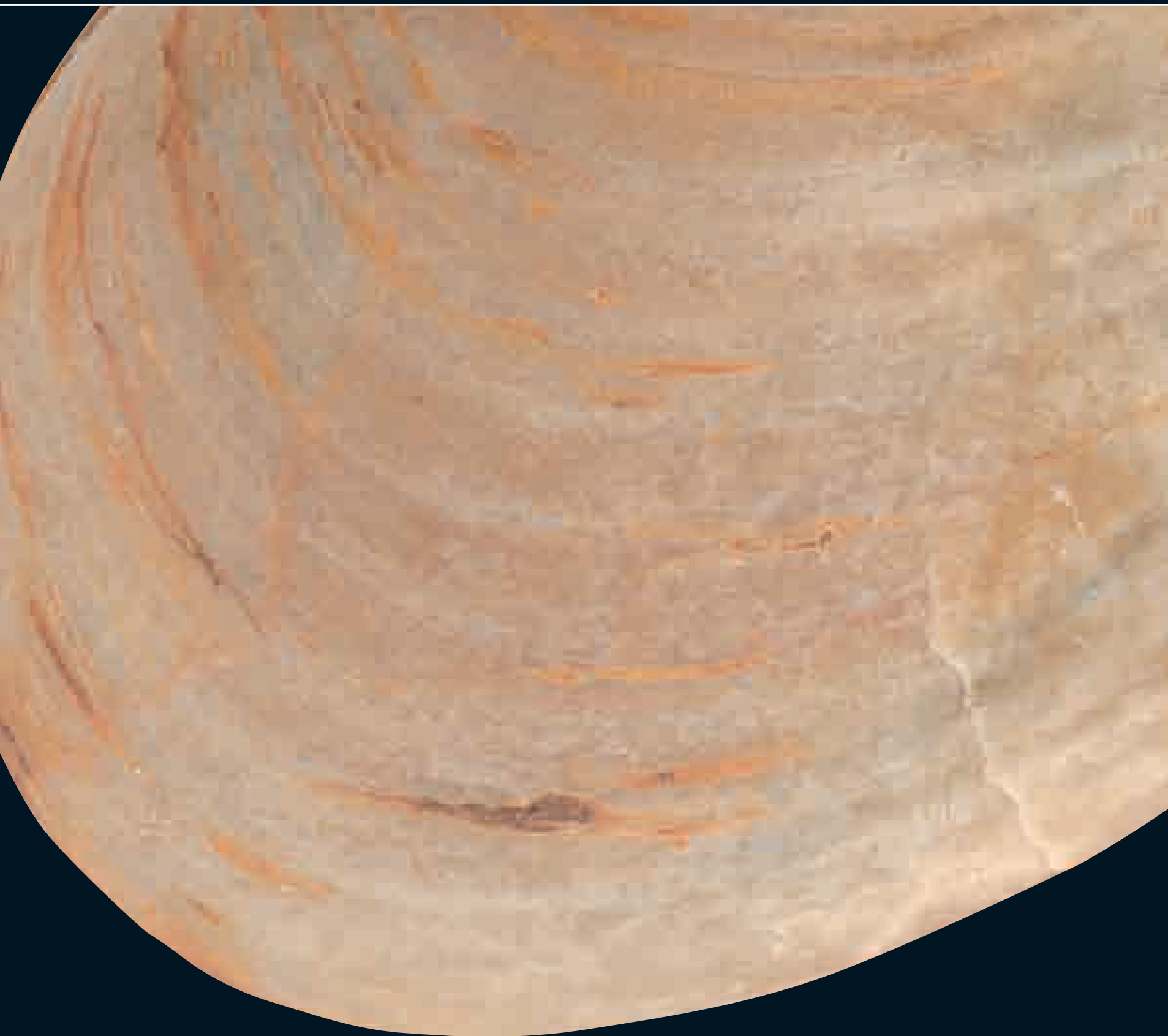
नॉटिलस

उम्र : 11.4 करोड़ वर्ष

आकार : 55 मिलीमीटर

स्थान : मेडागास्कर

काल : क्रिटेशियस, अल्बियन चरण

30 करोड़ वर्ष पहले का एक नॉटिलस, 15 करोड़ वर्ष पहले का नॉटिलस और आज जीवित नॉटिलस हर प्रकार से एक समान हैं। यहां दिखाया गया 11.4 करोड़ वर्ष पुराने नॉटिलस का जीवाश्म, इस बात का संकेत हैं कि इन जीवों में कई करोड़ वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं आया है।

नॉटिलस

उम्र : 11.3 करोड़ से लेकर 9.7 करोड़ वर्ष

आकार : 1.9 सेंटीमीटर (0.7 इंच) इसके अंडाकार के शीर्ष पर, और 5.3 सेंटीमीटर (2.1 इंच) चौड़ाई

स्थान : माहजंग, मेडागास्कर

काल : क्रिटेशियस, अल्बियन अवस्था

जीवाश्मों को देखने पर पता चलता है कि कई करोड़ वर्ष पहले जीवित रहे जंतुओं और उनके आज के प्रतिरूपों में कोई अंतर नहीं है। ऐसा ही एक जीव नॉटिलस है, जो अस्तित्व में आने के बाद से किसी परिवर्तन से नहीं गुज़रा है। यहां दिखाया गया 11.3 करोड़ से लेकर 9.7 करोड़ वर्ष पुराना फॉसिल यही साबित करता है।
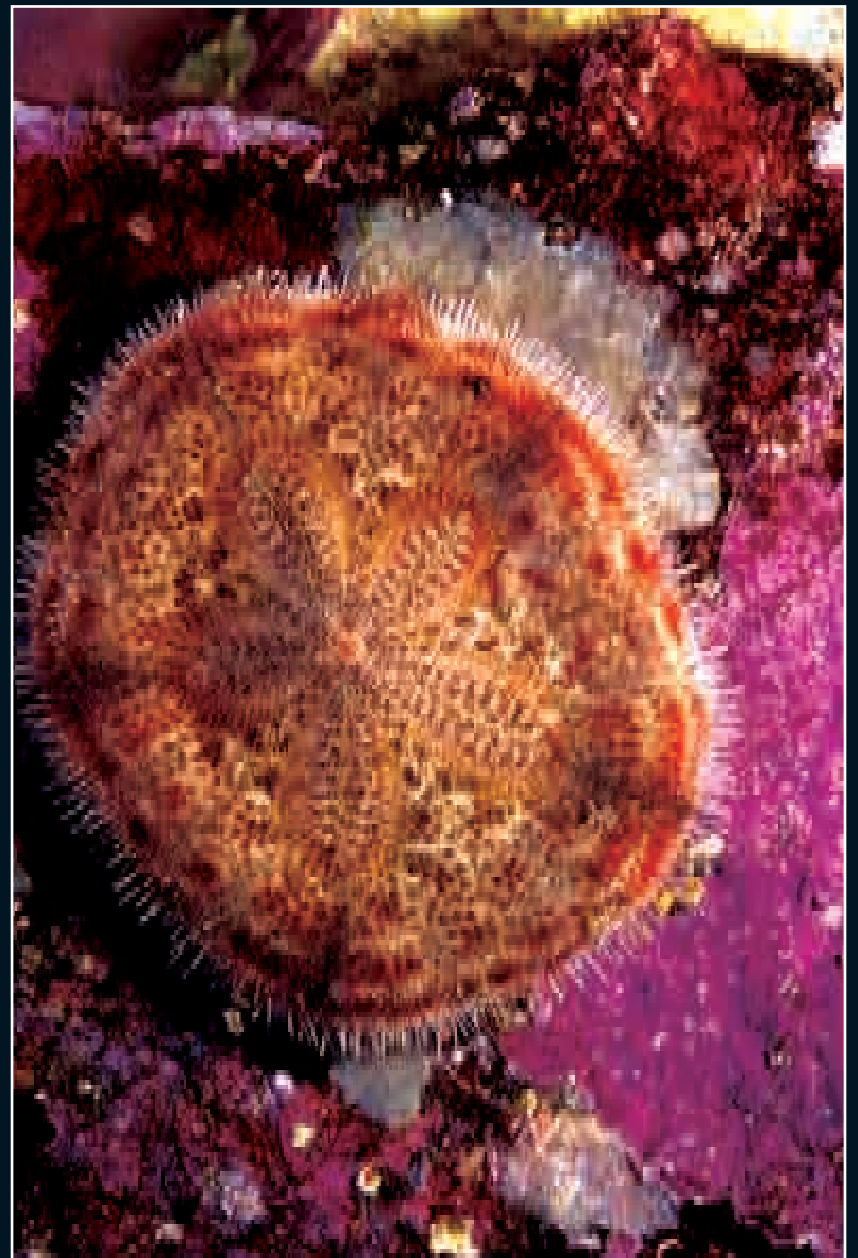
समुद्री अर्चिन

उम्र : 17.2 करोड़ से लेकर 16.8 करोड़ वर्ष

स्थान : मेडागास्कर

काल : जुरासिक, बेजोशियन चरण

यहां दिखाया गया समुद्री जीवाश्म का फॉसिल 17.2 से लेकर 16.8 करोड़ वर्ष पुराना है। इसमें और आज के समय में जीवित समुद्री अर्चिन में कोई अंतर नहीं है। यह फॉसिल जाहिर करता है कि ये जीव विकसित नहीं हुए थे, बल्कि उनकी रचना की गई।

नॉटिलस

उम्र : 11.3 करोड़ से लेकर 9.7 करोड़ वर्ष

आकार : 6.6 सेंटीमीटर (2.6 इंच) इसके अंडाकार के शीर्ष पर, और 5 सेंटीमीटर (2 इंच) चौड़ाई

स्थान : माजुंग, मेडागास्कर

काल : क्रिटेशियस, अल्बियन अवस्था

यह तथ्य कि 11.3 से लेकर 9.7 वर्ष पहले जीवित रहे नॉटिलस और आज जीवित नॉटिलस बिल्कुल एक जैसे हैं, यह दर्शाता है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक बड़ा छलावा है।
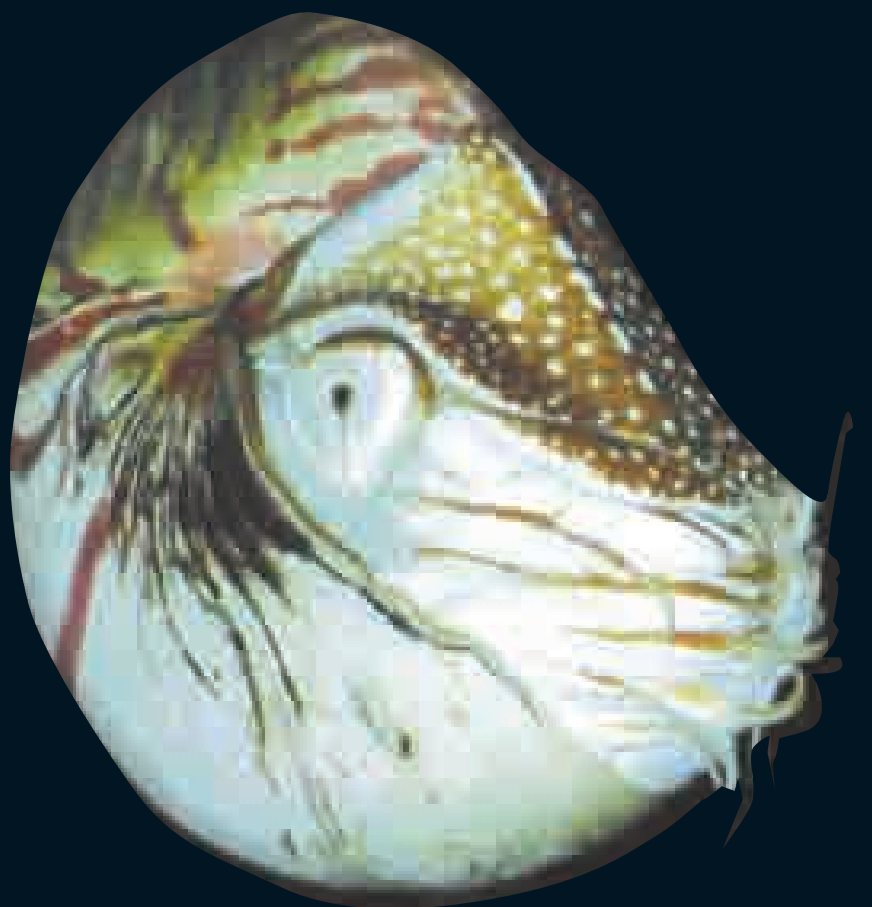
नॉटिलस

उम्र : 11.4 करोड़ वर्ष

आकार : 55 मिलीमीटर (2.1 इंच)

स्थान : मेडागास्कर

काल : क्रिटेशियस, अल्बियन चरण

30 करोड़ वर्षों में नॉटिलस के किसी बदलाव से न गुज़रने पर क्रमिक–विकास के सिद्धांत को गंभीर चोट पहुंची है। यहां दिखाया गया 11.4 करोड़ वर्ष पुराना जीवित नॉटिलस, आज के समय के नॉटिलस के समान है।
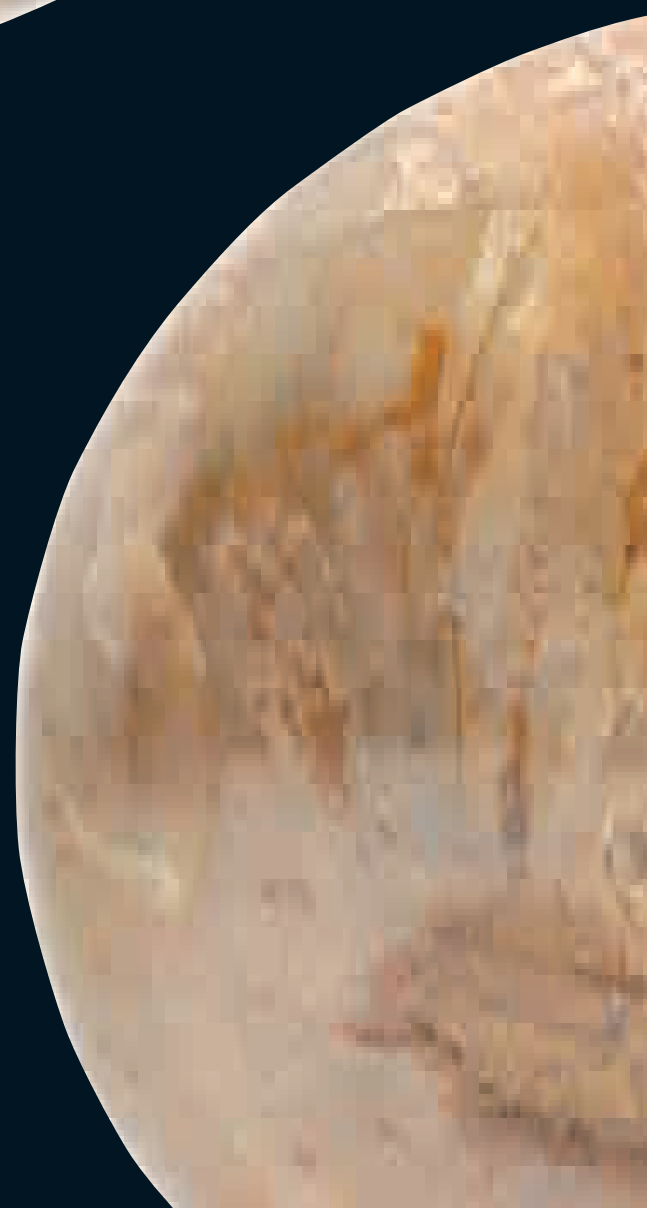
सीप

उम्र : 20.8 करोड़ से लेकर 14.6 करोड़ वर्ष

स्थान : माजुंग बेसिन, मेडागास्कर

काल : जुरासिक

समुद्री क्रस्टैशियन (केकड़े जैसे संधिपाद जीव) जीवों ने कई करोड़ वर्षों से जीवाश्म रिकॉर्ड की अपनी विशेषताओं को बनाए रखा है। इसका एक उदाहरण दोहरे खोल वाली सीप है। यहां दिखाई गई सीप 20.8 करोड़ से लेकर 14.6 करोड़ वर्ष पहले जीवित थी और यह आज के समय में जीवित सीप के समान ही है यह क्रमिक–विकास के सिद्धांत के के लिए एक चुनौती है।
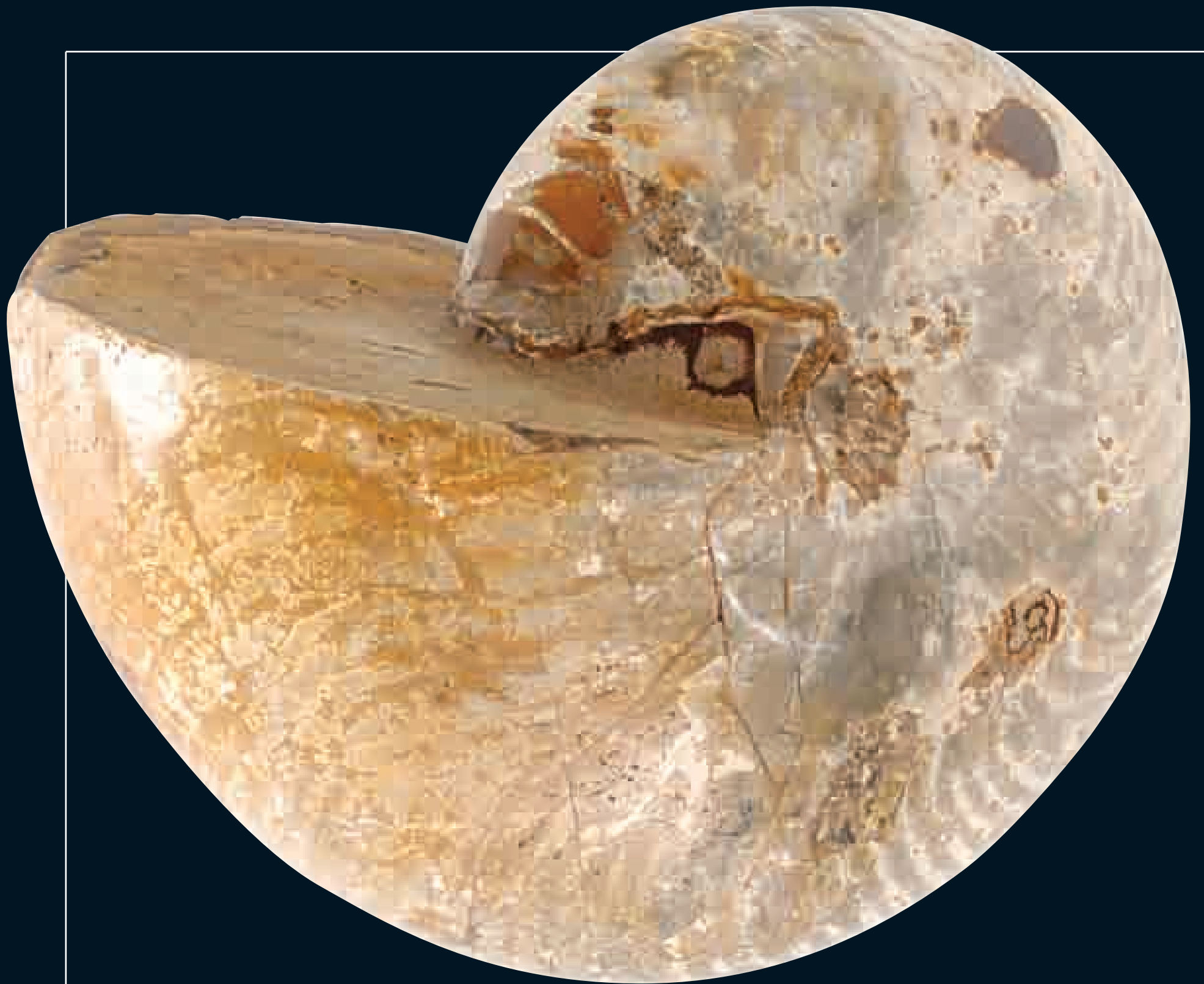
नॉटिलस

उम्र : 11.4 करोड़ वर्ष

आकार : 70 मिलीमीटर (6.7 इंच)

स्थान : मेडागास्कर

काल : क्रिटेशियस, अल्बियन चरण

नॉटिलस एक बिना रीढ़ वाला जीव है जो आज के समय में आम तौर पर समुद्र में पाया जाता है। ये जीव डारविनवाद की अवैधता को उजागर करते हैं। आज के समय में जीवित नॉटिलस और 11.4 करोड़ वर्ष पहले जीवित नॉटिलस में कोई फर्क नहीं है।

नॉटिलस

उम्र : 11.4 करोड़ वर्ष

आकार : 17 सेंटीमीटर (6.6 इंच)

स्थान : मेडागास्कर

काल : क्रिटेशियस, एल्बियन

नॉटिलस 30 करोड़ वर्षों से बचा हुआ है और इस दौरान उसने अपनी शारीरिक बनावट को भी सुरक्षित रखा है। यहां दिखाया गया जीवाश्म 11.4 करोड़ वर्ष पहले जीवित नॉटिलस का है। यह जीव कई करोड़ वर्षों से नहीं बदला है और यह तथ्य इस बात का जीता–जागता उदाहरण है कि क्रमिक–विकास कभी हुआ ही नहीं।

चीन, आस्ट्रेलिया
और न्यूजीलैंड में
मिले फॉसिलों के नमूने

चीन में मिले जीवाश्मों के नमूने

एशिया के भूगर्भीय इतिहास में विभिन्न पर्वतीय संरचनाओं को महत्त्वपूर्ण स्थान हासिल है। हिमालय पर्वत विश्व के सबसे कम उम्र के पर्वतों में से हैं, और बड़ी संख्या में हिमालय के तल पर मिले रीढ़हीन जीवों के फॉसिल यह जाहिर करते हैं कि ये चट्टानी परतें कभी पानी में डूबी हुई थीं।

एशियाई महाद्वीप के सबसे महत्त्वपूर्ण जीवाश्म क्षेत्र चीन में हैं। इनमें पश्चिमी लिआओनिंग, युन्नान और शान्दोंग क्षेत्रों में प्रचुर मात्रा में जीवाश्म हैं। इन क्षेत्रों से पक्षियों की प्रजातियों, स्तनपायी जीवों, जल और थल पर रहने वाले जीवों, रेंगने वाले जीवों, मछलियों, कीटों और पौधों के जीवाश्म बड़ी संख्या में मिले हैं। एक बार फिर, प्रत्येक जीवाश्म यह साबित करता है कि जीवित प्राणी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से विकसित नहीं हुए हैं और यह अल्लाह द्वारा रचना की सच्चाई को भी जाहिर करता है।

लिआओनिंग क्षेत्र की यिज़िआन और ज़्यूफोतांग संरचनाओं में विशेष जंतुओं (खास क्षेत्र या काल से संबंधित जानवर) की पहचान की गई है। दोनों

बेइपिआओ में फॉसिल निकालने के लिए की गई खुदाई। इस क्षेत्र में मिले फूल वाले पौधों के कुछ फॉसिल सबसे पुराने हैं।

आगे : लियाओनिंग स्थित चट्टान की परतों में से एक में फॉसिल हैं।

लियाओनिंग के जीवश्म क्षेत्र में किए गए शोधकार्यों के बाद ऐसे कई नमूने मिले, जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत को गलत ठहराते हैं।

संरचनाओं में मिलने वाले फॉसिल ज्यादतर क्रिटेशियस काल (14.6 करोड़ से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष पहले) के हैं।

युन्नान क्षेत्र की शेंगजियांग संरचना कैमब्रियन काल (49 करोड़ से लेकर 45.3 करोड़ वर्ष पहले) की जीवन की विविधताओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इस संरचना में सीवीड, एनिमोन (पवन–पुष्प, एक प्रकार का फूल), स्पंज (जलशोषक), ट्रिलोबाइट, अन्य ट्रिलोबाइट – जैसे ऑथ्रोपॉड, एनेलिड (एनेलिडा प्रवर्ग से संबंधित लाल खून के कीड़े जिनके शरीर में छल्ले जैसे होते हैं) और कीड़ों की अन्य किस्में, की प्रजातियों के जीवाश्म बड़ी संख्या में मिले हैं – ये जीवाश्म क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर करारा प्रहार करते हैं। इन जीवाश्मों से जानकारी मिलती है कि कैमब्रियन काल में प्रकट हुए जीवित प्राणियों में आज के जीवों से बेहद मिलती–जुलती जटिल विशेषताएं थीं और कभी–कभी ज्यादा बेहतरीन और खास विशेषताएं थीं। यह क्रमिक–विकासवादियों के उन दावों की बुनियादों को हिला देता है कि आज के जीवन का स्वरूप प्रारंभिक जीवित प्राणियों से विकसित हुआ।

युन्नान के फॉसिल क्षेत्रों में से एक फॉसिल क्षेत्र
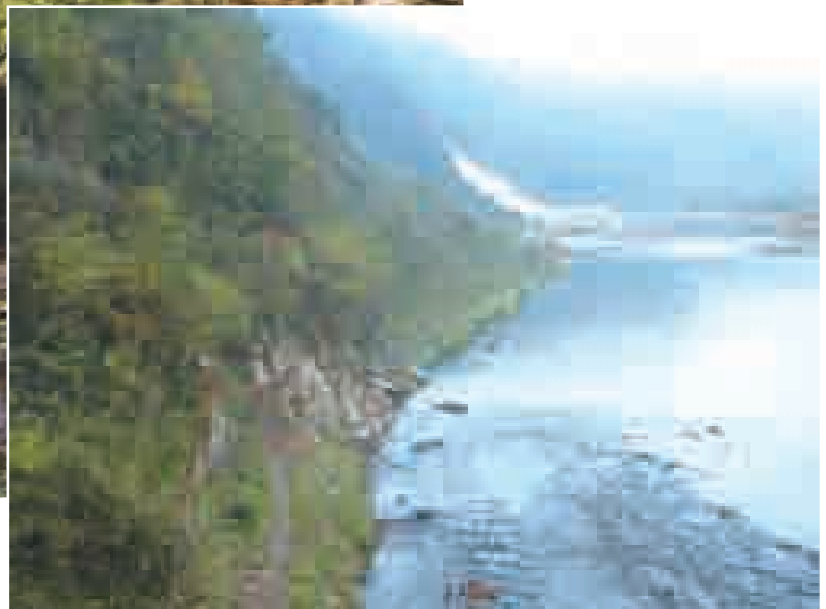
मेफ्लाई (अल्पजीवी कीट)

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 20 मिलीमीटर (0.8 इंच); मैट्रिक्स : 118 मिलीमीटर (4.6 इंच) गुणा 68 मिलीमीटर (2.7 इंच)

स्थान : चाओ यांग, चीन का लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

यहां दिखाया गया मेफ्लाई जीवित जीवाश्म का एक नमूना है। आज के समय में पाई जाने वाली मेफ्लाई से मिलता–जुलता यह 12.5 करोड़ वर्ष पुराना नमूना, क्रमिक–विकासवादियों के दावों को अमान्य घोषित करता है।

स्कॉर्पियन फ्लाई (बिच्छू मक्खी)

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : पंख : 19 मिलीमीटर (0.8 इंच); मैट्रिक्स : 75 मिलीमीटर (3 इंच) गुणा 95 मिलीमीटर (3.7 इंच)

स्थान : चाओ यांग, चीन का लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

स्कॉर्पियन फ्लाई, 50 मिलीमीटर (2 इंच) की औसत लंबाई के पंख वाला एक छोटा कीड़ा है। पेट में बिच्छू के डंक जैसे एक अंग के कारण इसे "स्कॉर्पियन फ्लाई" नाम दिया गया है"।

यहां तस्वीर में दिखाया गया फॉसिल 12.5 करोड़ वर्ष पुराना है। 12.5 करोड़ वर्ष पहले की स्कॉर्पियन फ्लाई और आज जीवित स्कॉर्पियन फ्लाई में कोई अंतर नहीं है। यह साफ तौर पर दर्शाता है कि अन्य जीव–जंतुओं की तरह, स्कॉर्पियन फ्लाई भी विकसित नहीं हुई हैं।

क्रेनफ्लाई (एक प्रकार की मक्खी)

उम्र : 12.8 करोड़ वर्ष

आकार : 12 मिलीमीटर (0.5 इंच); पंख : 9 मिलीमीटर (0.4 इंच); मैट्रिक्स : 72 मिलीमीटर (2. 8 इंच) गुणा 48 मिलीमीटर (1.9 इंच)

स्थान : चाओ यांग, चीन का लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

देखने में विशाल नैट या मच्छर जैसी क्रेनफ्लाई की बनावट वास्तविक नैट से बिल्कुल अलग है। इसकी मुख्य विशेषता इसके शरीर की लंबाई से दोगुने लंबे पैर हैं।
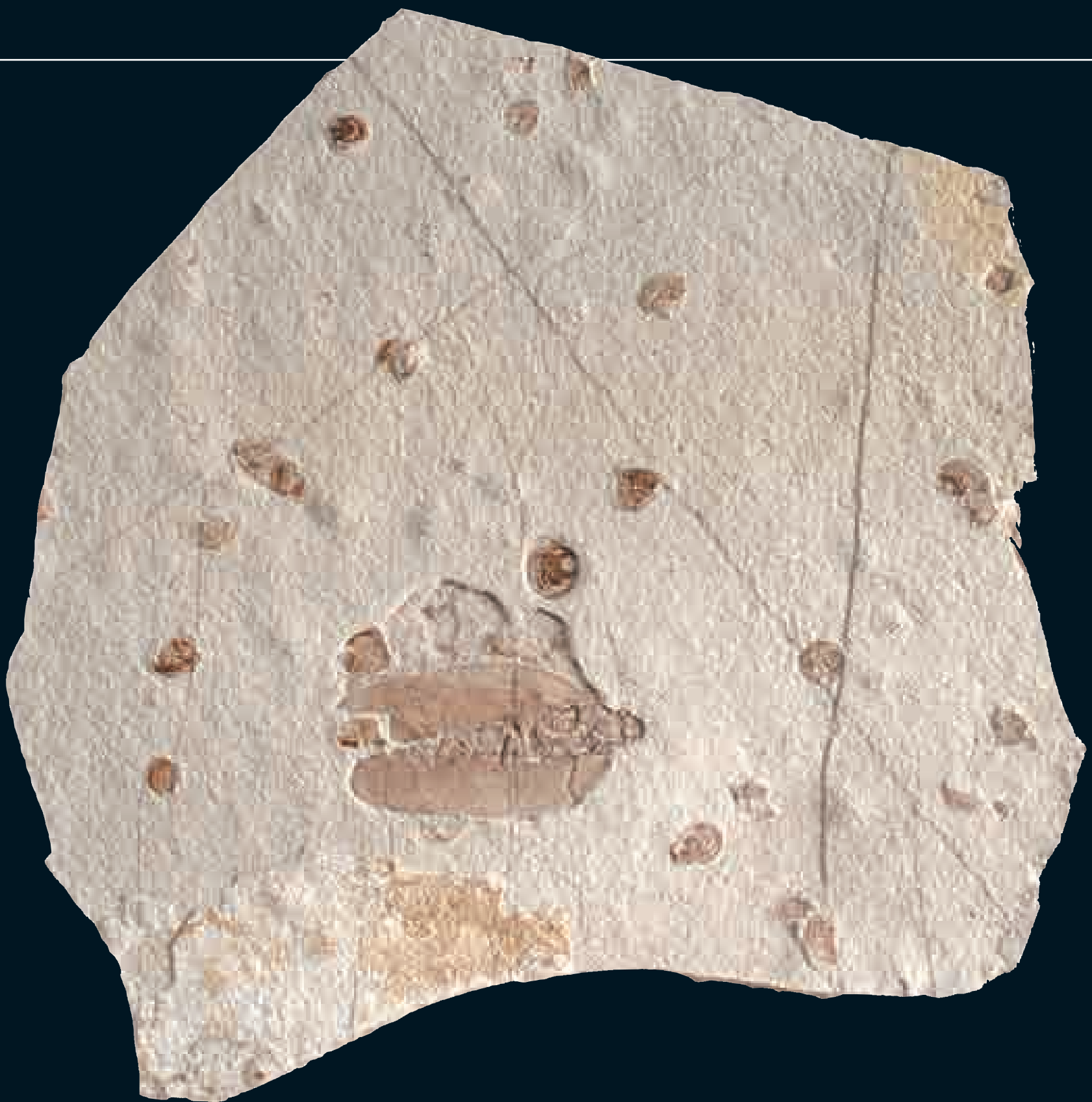
फ्रॉगहॉपर

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 23 मिलीमीटर (0.9 इंच); मैट्रिक्स : 80 मिलीमीटर (3.2 इंच) गुणा 80 मिलीमीटर (3.2 इंच)

स्थान : चाओ यांग, चीन का लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

फ्रॉगहॉपर, जिसका वर्गीकरण सेर्कोपिडे परिवार में किया गया है, के लार्वा एक सुरक्षा प्रदान करने वाले झागदार उत्सर्जन में लिपटे हुए हैं।

आज से लाखों वर्ष पहले जीवित फ्रॉगहॉपर और आज के समय के फ्रॉगहॉपर में कोई अंतर नहीं है। लाखों वर्ष गुज़रने के बावजूद ये कीड़े जस की तस रहे। यह इस बात को दर्शाता है कि जीवित प्राणी क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए हैं।

प्लांटहॉपर

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 17 मिलीमीटर (0.7 इंच); मैट्रिक्स : 60 मिलीमीटर (2.4 इंच) गुणा 46 मिलीमीटर (1.8 इंच)

स्थान : चाओ यांग, चीन का लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

पौधे खाने वाले इन कीटों के वयस्कों की दो अलग–अलग प्रजातियां हैं। एक उड़ सकता है, जबकि दूसरा नहीं उड़ सकता। इन दोनों प्रजातियों की बनावट में लाखों वर्षों से कोई बदलाव नहीं आया है। आज के समय में मौजूद इन कीटों की प्रजातियों की सभी जटिल बनावटें और तंत्र, लाखों वर्ष पहले पाए जाने वाले प्लांटहॉपर में भी मौजूद थीं। इन लाखों वर्षों के दौरान भी ये विशेषताएं बदली नहीं हैं जो इस बात की ओर संकेत देता है कि क्रमिक–विकास की जिस प्रक्रिया का दावा डारविनवादी करते हैं, वह कभी हुई ही नहीं।

फंगस नैट

उम्र : 12.8 करोड़ वर्ष

आकार : 5 मिलीमीटर लंबे पंख के साथ 8 मिलीमीटर (0.3 इंच) लंबाई; मैट्रिक्स : 77 मिलीमीटर (3 इंच) गुणा 50 मिलीमीटर (2 इंच)

स्थान : चाओ यांग, चीन का लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

सिएरिडे परिवार से जुड़े फंगस नैट विशेषतः नमी वाले स्थानों, खासकर पौधों के निचले हिस्सों, में रहते हैं जो कि जमीन के नजदीक होता है।

यहां 12.8 करोड़ वर्ष पहले जीवित फंगस नैट का जीवाश्म दिखाया गया है। लाखों वर्ष पहले जीवित रहे फंगस नैट हमारे समय में जीवित फंगस नैट जैसे ही हैं। जीवाश्म रिकॉर्ड दर्शाते हैं कि फंगस नैट हमेशा एक जैसे जैसे ही रहे हैं, यह तथ्य इस दावे को खारिज करता है कि ये अन्य जीव–जंतुओं से विकसित हुए थे।

सैलमैंडर (रेंगने वाला जीव जो जमीन और पानी दोनों में रह सकता है)

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : सैलमेंडर : 11 सेंटीमीटर (4.3 इंच) गुणा 6 सेंटीमीटर (2.4 इंच) लंबाई; मैट्रिक्स : 29.6 सेंटीमीटर (11.7 इंच)

स्थान : हुलुदाओ शहर, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : ज़्यूफोतांग संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

चीन में मिला सेलमैंडर का जीवाश्म दुनिया का सबसे पुराना ज्ञात सेलमैंडर है। ज्वालामुखी में अचानक हुए कुछ विस्फोटों के परिणामस्वरूप, जीवों के फॉसिल अक्सर राख की परत के नीचे अच्छी तरह सुरक्षित हो जाते हैं। कभी–कभी यह इतनी अच्छी तरह से सुरक्षित होते हैं कि उनके कुछ नरम ऊतकों और अंतिम भोजन जो उन्होंने किया, को भी पहचानना संभव होता है।

सैलमेंडर के ये फॉसिल हमारे समय में जीवित सैलमेंडर से बिल्कुल भी अलग नहीं हैं। कई सौ लाख वर्ष तक बिना किसी परिवर्तन से प्रभावित हुए पानी और जमीन पर रहने वाले ये जानवर एक बार फिर यह बताते हैं कि क्रमिक–विकासवादी गलत हैं।
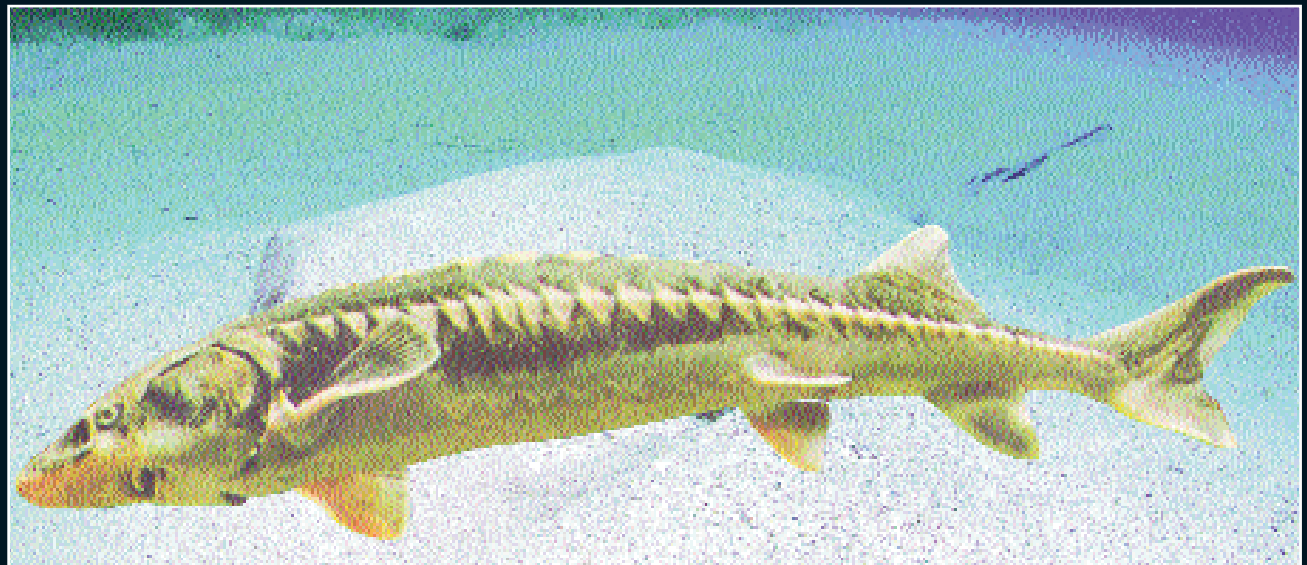
कछुआ

उम्र : 14.6 से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 17.5 सेंटीमीटर (7 इंच) गुणा 21 सेंटीमीटर (8.3 इंच)

स्थान : लिंगयुआन, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : क्रिटेशियस

वैज्ञानिक तथ्य यह उजागर करते हैं कि जीवित प्राणी विकसित नहीं हुए हैं, लेकिन डारविनवादी लगातार इसको अनदेखा करते हैं। यहां दिखाया गया 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष पुराना कछुए का जीवाश्म, जो कि आज के जीवित कछुए जैसा ही है, एक बार फिर उन तथ्यों पर ज़ोर देता है जिसे डारविनवादी देखना नहीं चाहते हैं : जीवित प्राणी लाखों वर्षों से नहीं बदले हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वे विकसित नहीं हुए हैं।

कछुआ

उम्र : 14.6 से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 17.5 सेंटीमीटर (7 इंच) गुणा 21 सेंटीमीटर (8.3 इंच)

स्थान : लिंगयुआन, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : क्रिटेशियस

वैज्ञानिक तथ्य यह उजागर करते हैं कि जीवित प्राणी विकसित नहीं हुए हैं, लेकिन डारविनवादी लगातार इसको अनदेखा करते हैं। यहां दिखाया गया 14.6 से 6.5 करोड़ वर्ष पुराना कछुए का जीवाश्म, जो कि आज के जीवित कछुए जैसा ही है, एक बार फिर उन तथ्यों पर ज़ोर देता है जिसे डारविनवादी देखना नहीं चाहते हैं : जीवित प्राणी लाखों वर्षों से नहीं बदले हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वे विकसित नहीं हुए हैं।

b

a
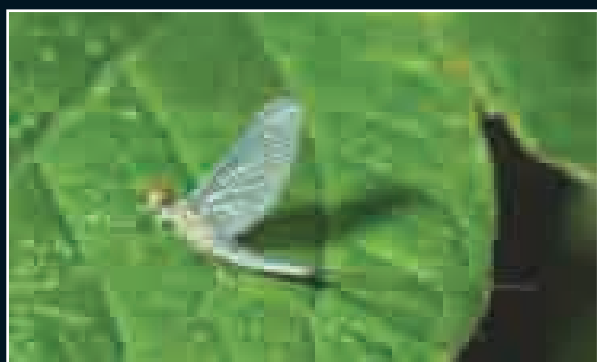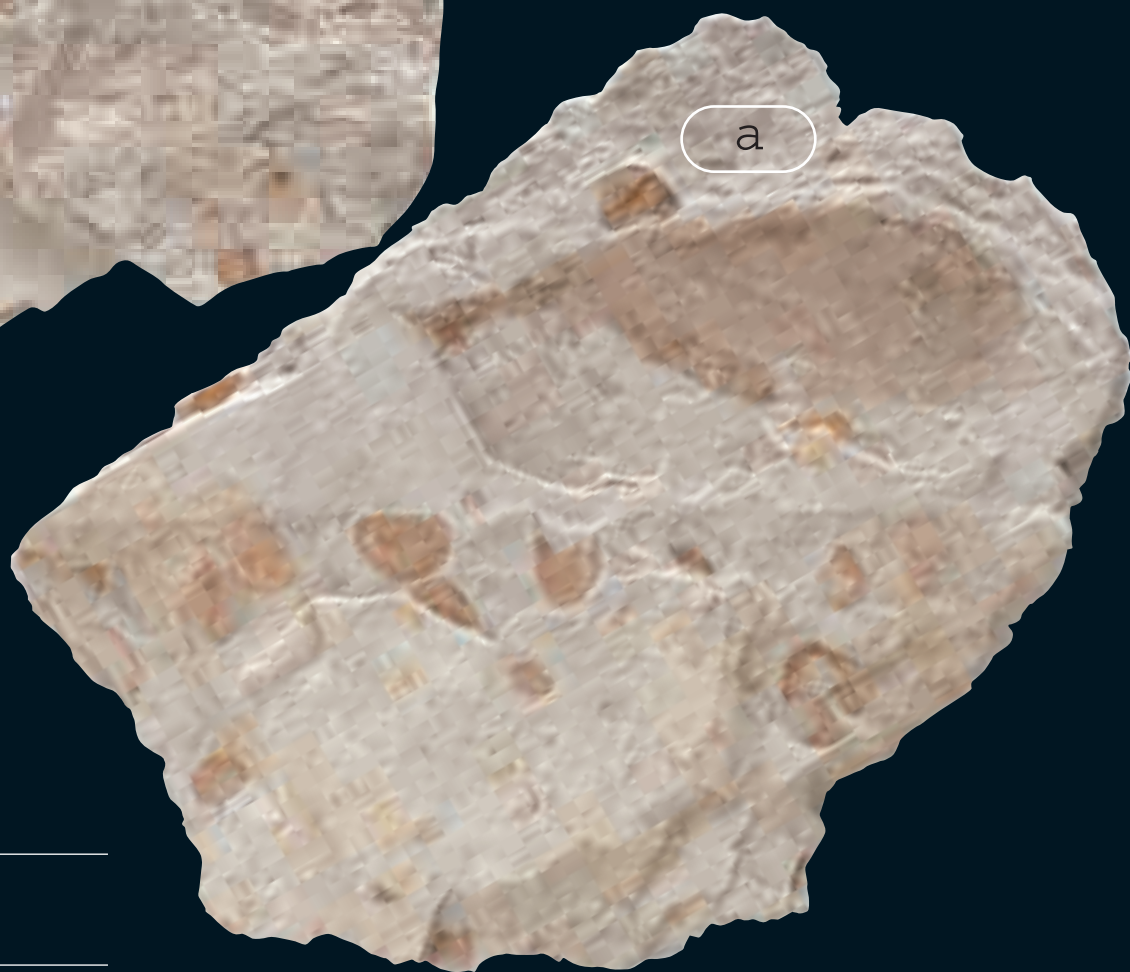
मेफ्लाई

उम्र : 15.6 से लेकर 15 करोड़ वर्ष

आकार : शरीर : 3.3 सेंटीमीटर (1.3 इंच); मैट्रिक्स : 7.6 सेंटीमीटर (3 इंच) गुणा 10 सेंटीमीटर (4 इंच)

स्थान : बीपिआओ, लिआओनिंग प्रांत

काल : अपर जुरासिक

अन्य जीवों की तरह मेफ्लाई उन्हीं विशेषताओं को प्रदर्शित करती हैं जो उनमें उस समय थीं जब वे पहली बार प्रकट हुई थीं। जीवाश्मों से पता चलता है कि मेफ्लाई किसी मध्यवर्ती चरण से नहीं गुज़री हैं। जो मेफ्लाई आज 15.6 से 15 करोड़ वर्ष पहले जीवित थीं वे आज जीवित मेफ्लाई जैसी हैं।
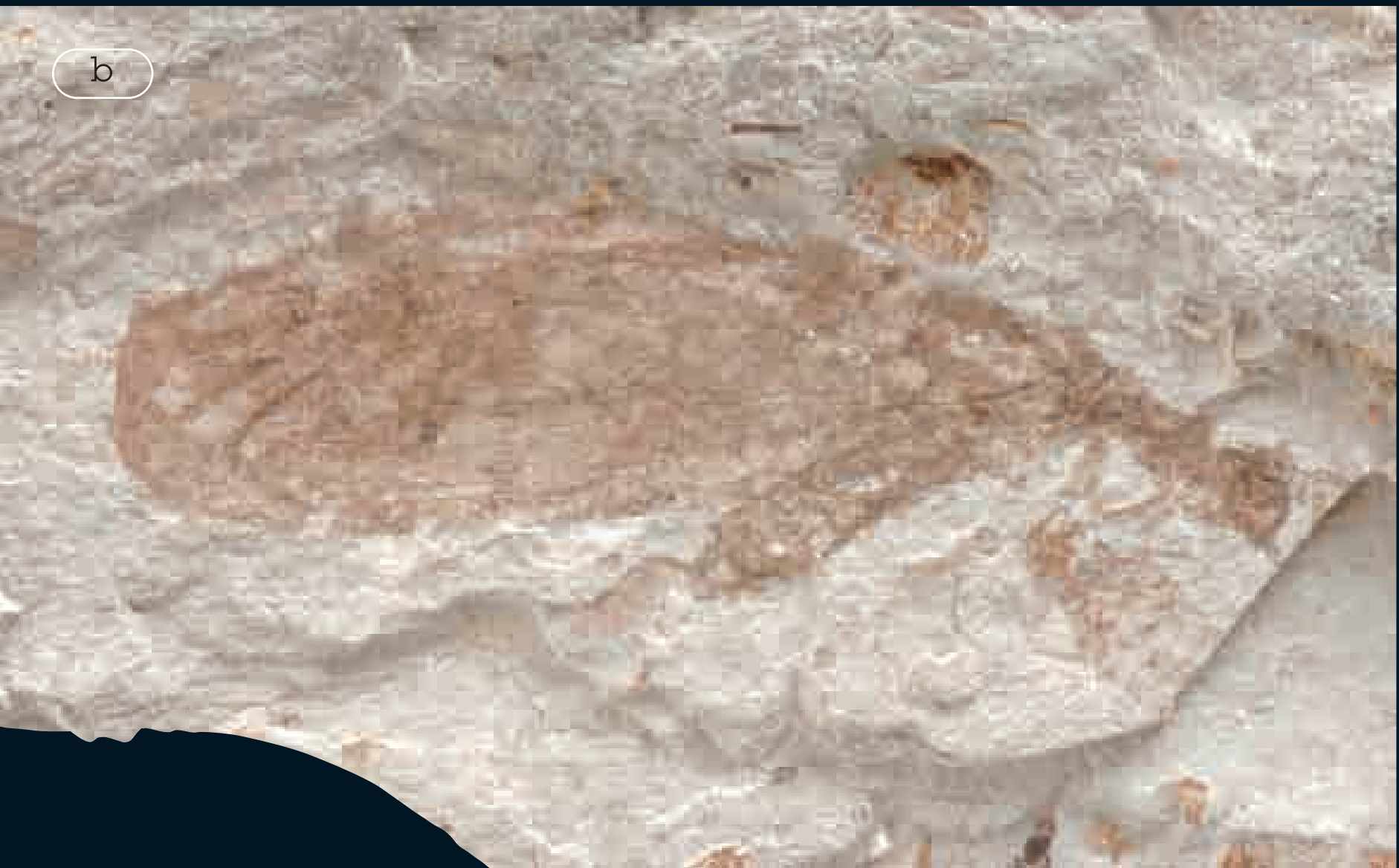
सैलमेंडर

उम्र : 20.8 से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : 4.5 सेंटीमीटर (1.8 इंच)

स्थान : लिआओनिंग प्रांत

काल : क्रिटेशियस

यहां दिखाया गया सैलमेंडर का 20.8–6.5 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म यह दर्शाता है कि सैलमेंडर लाखों वर्षों से बिना किसी बदलाव के अस्तित्व में हैं। आज के सैलमेंडर के जैसा यह जीवाश्म इस बात का का प्रमाण है कि डारविनवादियों द्वारा बताए गई क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अस्तित्व कभी था ही नहीं।

a
b
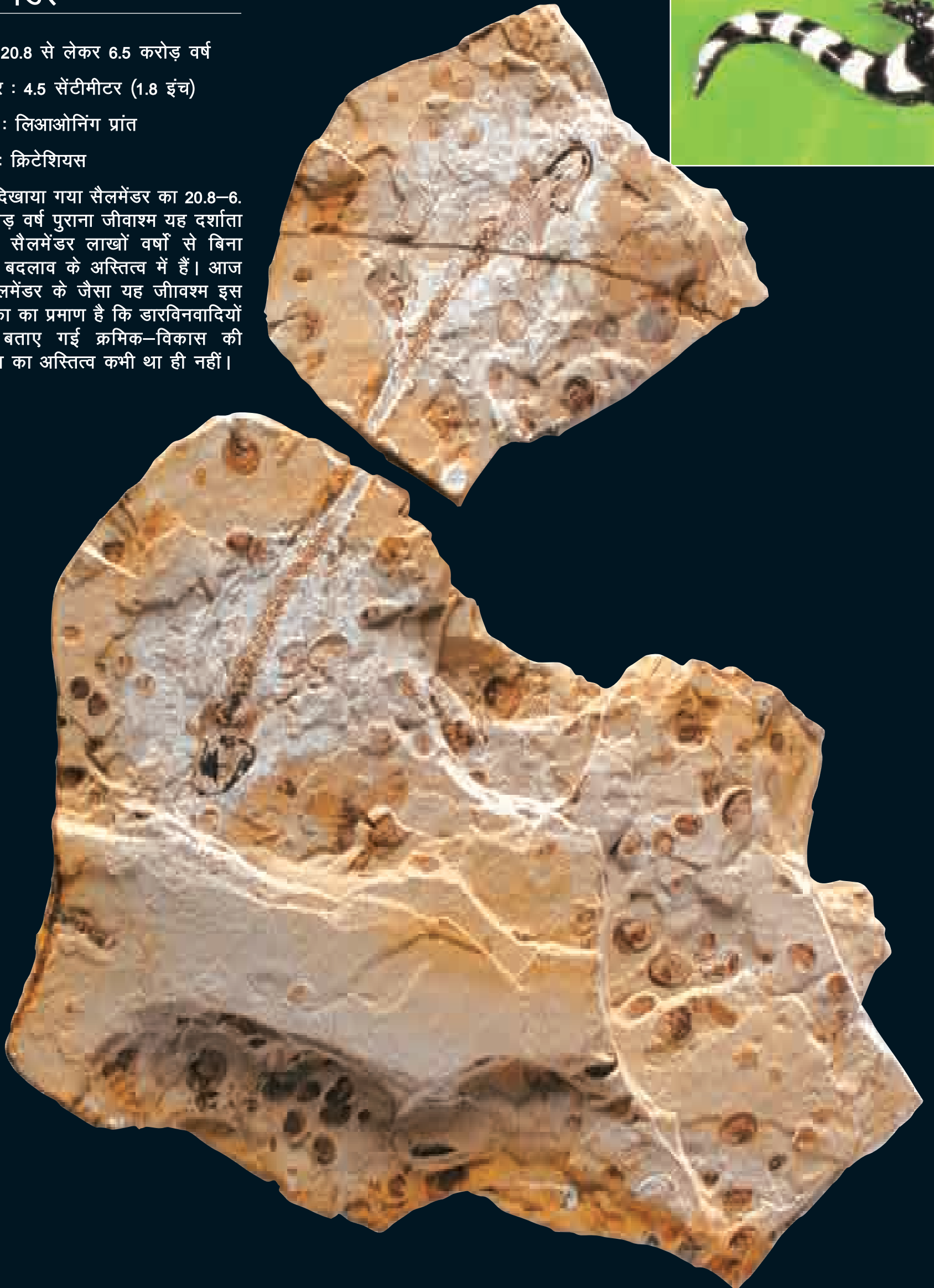
15.6 से लेकर 15 करोड़ वर्ष पुरानी मकड़ी के इस फॉसिल के दो भाग हैं।

मकड़ी

उम्र : 15.6 से लेकर 15 करोड़ वर्ष

आकार : 1.5 सेंटीमीटर (0.6 इंच)(पैर की लंबाई), 0.7 सेंटीमीटर (0.28 इंच) (शरीर)

स्थान : बीपिआओ, लिआओनिंग प्रांत, चीन

काल : अपर जुरासिक

मकड़ी का सबसे पुराना ज्ञात जीवाश्म जल मकड़ी का है, जो कि 42.5 करोड़ वर्ष पुराना है। यहां दिखाया गया जीवाश्म 15.6 से लेकर 15 करोड़ वर्ष पुराना है। इस तरह के जीवाश्म दर्शाते हैं कि मकड़ियां कई सौ लाख वर्षों से नहीं बदली हैं। डारविनवादियों के पास इन खोजों का कोई नियमित और वैज्ञानिक जवाब नहीं है।

b
a
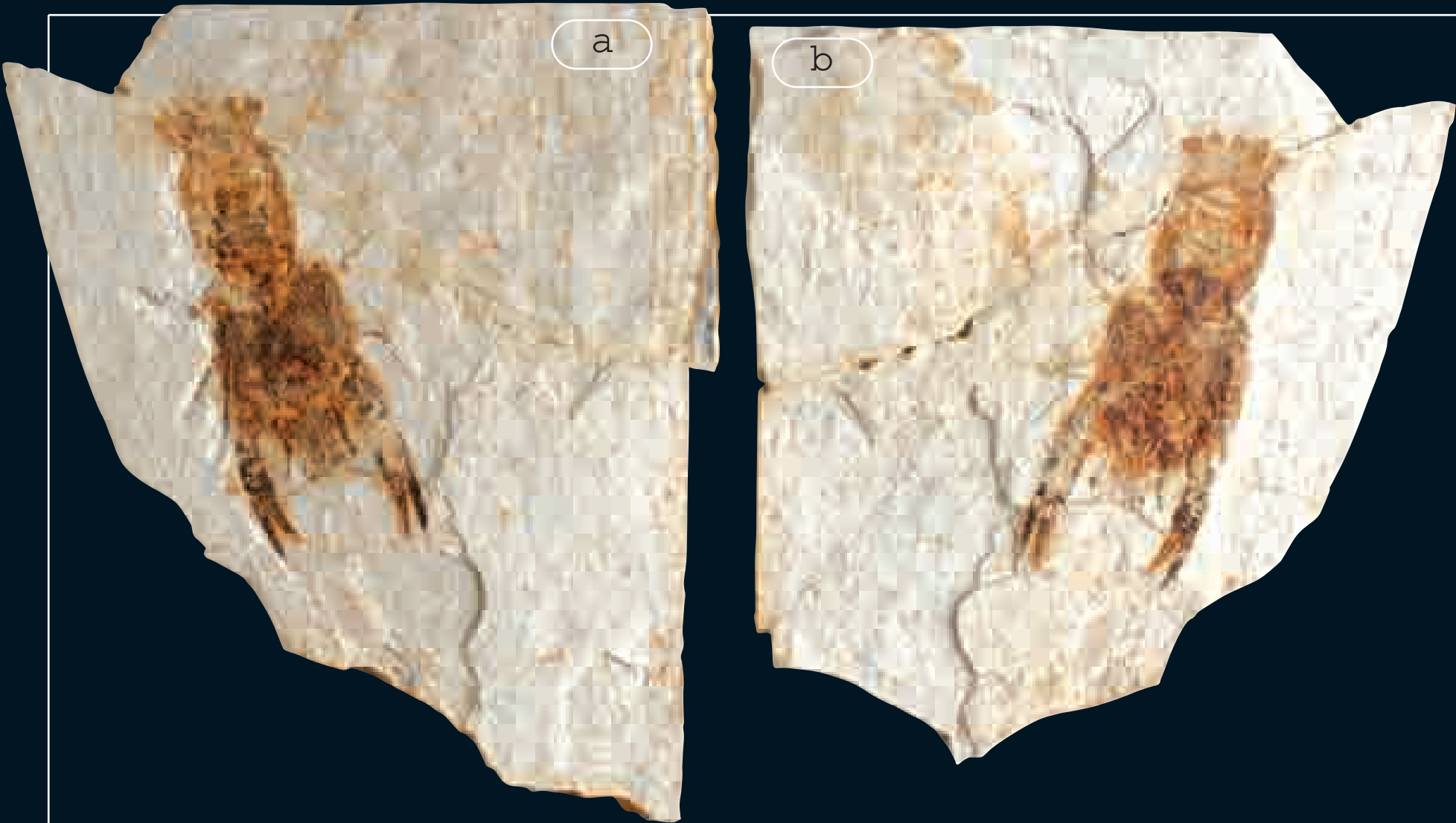
क्रेफिश

उम्र : 12.8 करोड़ वर्ष

आकार : 1.) 109 मिलीमीटर (4.3 इंच) लंबी; मैट्रिक्स : 158 मिलीमीटर (6.2 इंच) गुणा 165 मिलीमीटर (6.5 इंच),

2.) 109 मिलीमीटर (4.3 इंच) लंबाई; मैट्रिकस : 180 मिलीमीटर (7.1 इंच) गुणा 160 मिलीमीटर (6.3 इंच)

स्थान : लिंगयुआन, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

क्रेफिश ताजा पानी के क्रस्टेशियन (केकड़े जैसे संधिपाद जीव जो ज्यादातर समुद्र में पाए जाते हैं) होते हैं, जोकि देखने में लॉब्सटर (झींगा मछली) जैसी दिखती हैं। लाखों वर्षों से उन्होंने अपनी बनावट को बनाए रखा है। 12.8 करोड़ वर्ष पहले जीवित झींगामछली और आज की झींगामछली एक जैसी है, डारविनवादी इस तथ्य की व्याख्या नहीं कर पाते। जीवाश्म इस तथ्य को उद्घाटित करते हैं कि जीव–जंतुओं को अल्लाह ने बनाया है।

ड्रैगनफ्लाई

उम्र : 15.6 से 15 करोड़ वर्ष

आकार : पंख का पूरा विस्तार : 11.4 सेंटीमीटर (4.5 इंच); शरीर : 7.6 सेंटीमीटर (3 इंच); मैट्रिक्स : 16.5 सेंटीमीटर (6.5 इंच) गुणा 13.7 सेंटीमीटर (5.4 इंच)

स्थान : बेइपिआओ, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : अपर क्रिटेशियस

हेलिकॉप्टर बनाने वाली बड़ी कंपनियां हेलीकॉप्टर को डिज़ाइन करते समय ड्रेगनफ्लाई के पंखों की बनावट और उड़ान तंत्र का विश्लेषण करते हैं। ड्रेगनफ्लाई का उन्नत उड़ानतंत्र, जो उसके पंखों की बनावट के प्रभावशाली प्रयोग को सुनिश्चित करता है, 15 करोड़ वर्ष पहले भी मौजूद था। ड्रेगनफ्लाई के करोड़ों वर्ष पुराने जीवाश्म डारविनवादियों को कुछ कहने लायक नहीं छोड़ते और डारविनवादियों के दावों को रद्द करते हैं।
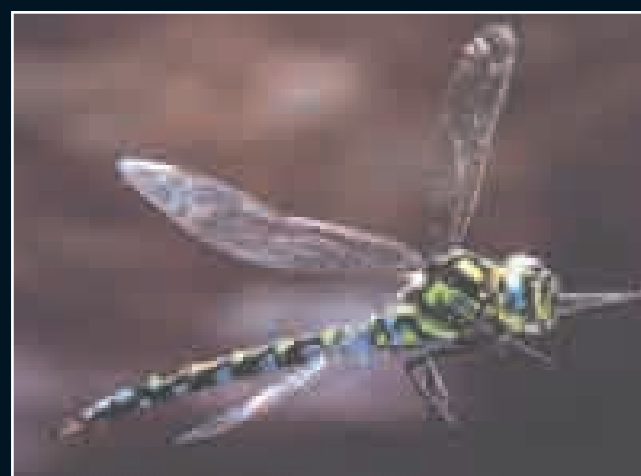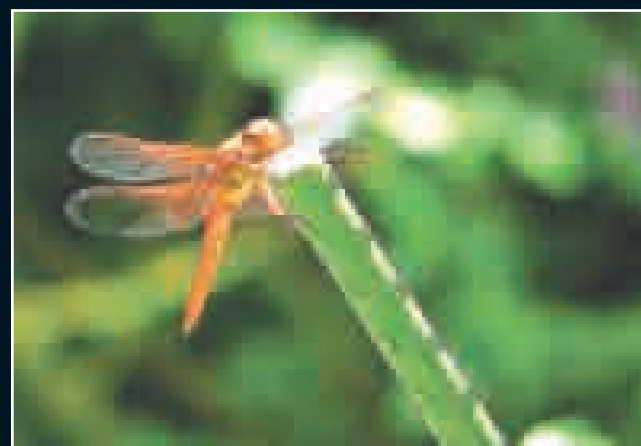
पक्षी

उम्र : 14 करोड़ वर्ष

आकार : मैट्रिक्स : 16 सेंटीमीटर (6.3 इंच) गुणा 17 सेंटीमीटर (6.7 इंच)

स्थान : सिहेतुन शांगयुआन, बीपिआओ शहर, लिआओनिंग प्रांत, चीन

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : अपर जुरासिक, लोअर क्रिटेशियस

चीन में मिले पक्षियों के विभिन्न जीवाश्म इस बात के सबूतों में से एक हैं कि पक्षी हमेशा पक्षी ही रहे हैं और वे किसी अन्य जीव से विकसित नहीं हुए हैं। डारविनवादी यह दावा करते हैं कि पक्षी रेंगने वाले जीवों से विकसित हुए हैं, लेकिन इस दावे की पुष्टि करने के लिए उनके पास कोई सबूत नहीं है। पिछले 150 वर्षों में मिले जीवाश्मों के सभी नमूने इस बात को दर्शाते हैं कि क्रमिक–विकासवादियों के दावे पूरी तरह आधारहीन हैं। यहां दिखाया गया 14 करोड़ वर्ष पुराने पक्षी का जीवाश्म एक बार फिर इस तथ्य को साबित करता है।

कछुए का बच्चा

उम्र : 12 करोड़ वर्ष

आकार : 18 सेंटीमीटर (7 इंच)

स्थान : सिहेतुन, शांगयुआन, बीपिआओ शहर, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : लोअर यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

"..... इस बेहद सफल श्रेणी का उत्पत्ति स्रोत प्राचीन जीवाश्मों की कमी के कारण पता नहीं चला है, हालांकि रीढ़ वाले अन्य जीवों की तुलना में कछुओं ने ज्यादा और बेहतर जीवाश्म अवशेष छोड़ते हैं। कछुओं और कॉटिलोसॉर्स ..... के मध्यवर्ती रेंगने वालें जीवों का पूरी तरह से अभाव है, जिनसे कछुए तथाकथित, तैयार हुए।"(इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका ऑनलाइन, "टर्टल")

स्टर्जन मछली

उम्र : 15.6 से लेकर 15 करोड़ वर्ष

आकार : 22 सेंटीमीटर (8.5 इंच)

स्थान : पेइपिआओ ाहर, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : जुफोतांग संरचना

काल : अपर जुरासिक

स्टर्जन, मछली के उस वर्ग से संबंधित रखती है जिसकी यूरोप, एशिया और उत्तरी अमेरिका में 20 विभिन्न प्रजातियां हैं। ये अपने जीवन का ज्यादा समय समुद्रों में बिताती हैं, और निश्चित मौसमों में नदियों में आती हैं।

15.6 से 15 करोड़ वर्ष पूर्व जीवित रही स्टर्जन और आज के समय में मौजूद स्टर्जन में कोई फर्क नहीं है। जीवाश्म रिकार्डों से उजागर होता है कि मछली की पूर्वज मछली थी, पक्षियों के पूर्वज पक्षी थे, और इंसानों के पूर्वज भी पूरी तरह इंसान ही थे। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो सभी जीवित–प्राणी अपनी विशेष और संपूर्ण बनावटों के साथ प्रकट हुए थे। उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह ने बनाया था।

प्लांटहॉपर (पौध खाने वाले कीड़े)

उम्र : 15.6 से लेकर 15 करोड़ वर्ष

स्थान : बीपिआओ, लिआओनिंग प्रांत

काल : उच्च जुरासिक

वे कीट जिनकी बनावट 15 करोड़ वर्ष में भी नहीं बदली है, जीव–जंतुओं के आदिम से उन्नत स्वरूपों में परिवर्तित होने के तथाकथित जीवों के क्रमिक–विकास के सिद्धांत को पूरी तरह खारिज करते हैं। पौधों के इन कीटों की जो बनावट 15 करोड़ वर्ष और 12 करोड़ वर्ष पहले थी वही आज भी है।
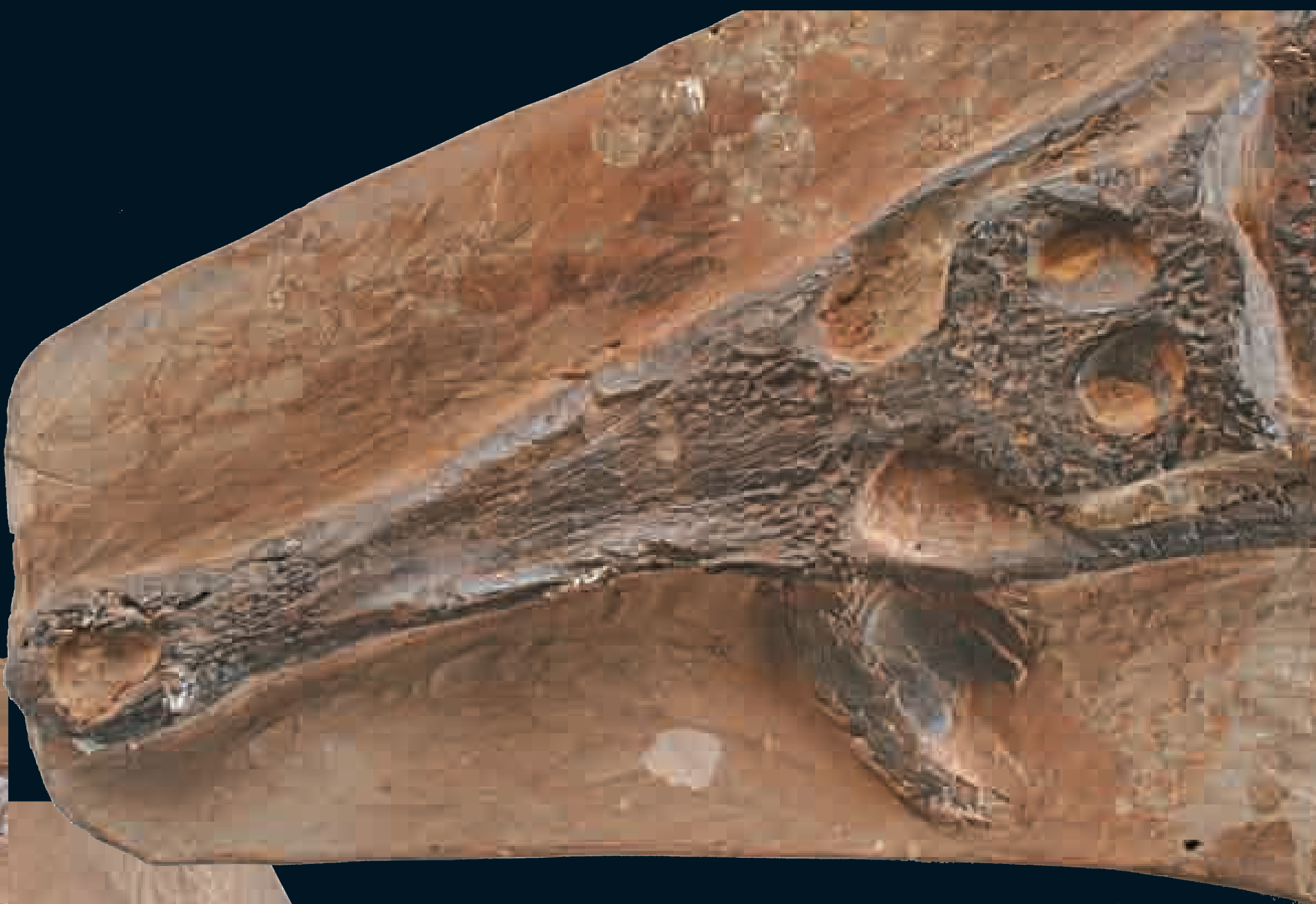
मगरमच्छ

उम्र : 10 करोड़ वर्ष

आकार : 76 सेंटीमीटर (30 इंच)

स्थान : एशिया

काल : क्रिटेशियस

मगरमच्छों ने अपने पीछे कई जीवाश्म छोड़े हैं। उनके शरीर बिना किसी दोषहीन रूप में अचानक प्रकट हुए (मगरमच्छों के जीवाश्म 14 करोड़ वर्ष पुराने हैं) और बिना किसी बदलाव के आज के समय तक पहुंच गए हैं। यहां दिखाए गए 10 करोड़ वर्ष पुराने मगरमच्छ में और आज जीवित उसके प्रतिरूप में कोई अंतर नहीं है, जो एक बार फिर रचना की सच्चाई को साबित करता है।

13 करोड़ वर्ष पुरानी यह स्टर्जन मछली खुद को धनात्मक और ऋणात्मक रूपों में प्रस्तुत करती है।
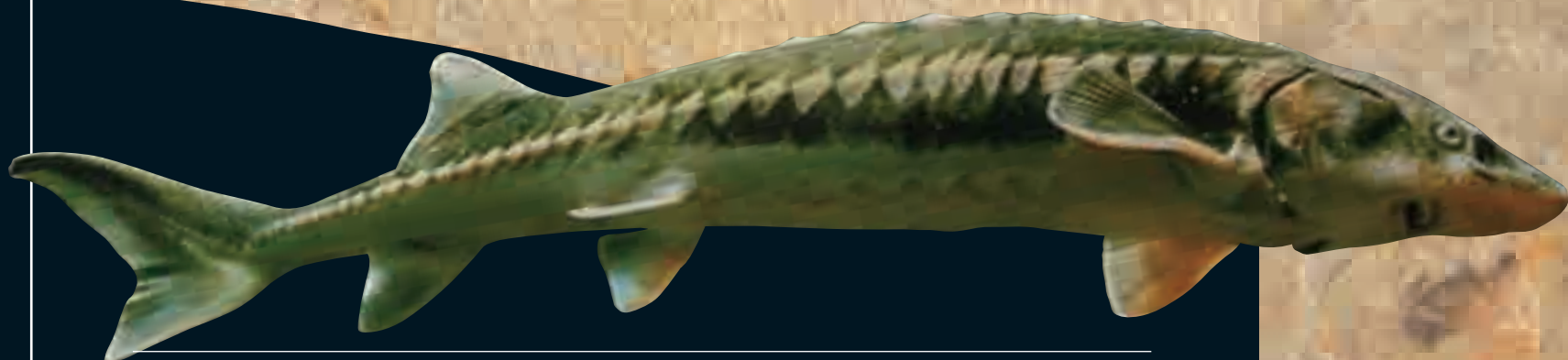
स्टर्जन

उम्र : 13 करोड़ वर्ष

आकार : 11.6 सेंटीमीटर (4.6 इंच)

स्थान : लिआओनिंग प्रांत

काल : क्रिटेशियस

13 करोड़ वर्ष पूर्व जीवित रही स्टर्जन मछली की विशेषताएं 14.6 करोड़ या 12 करोड़ वर्ष पहले जीवित, या आज जीवित स्टर्जन मछलियों जैसी ही हैं। लाखों वर्ष गुजरने के बावजूद स्टर्जन क्रमिक विकास की किसी बीच की मंजिल से नहीं गुजरीं और इस तरह वे क्रमिक–विकासवादियों के दावों को निरस्त करती हैं।
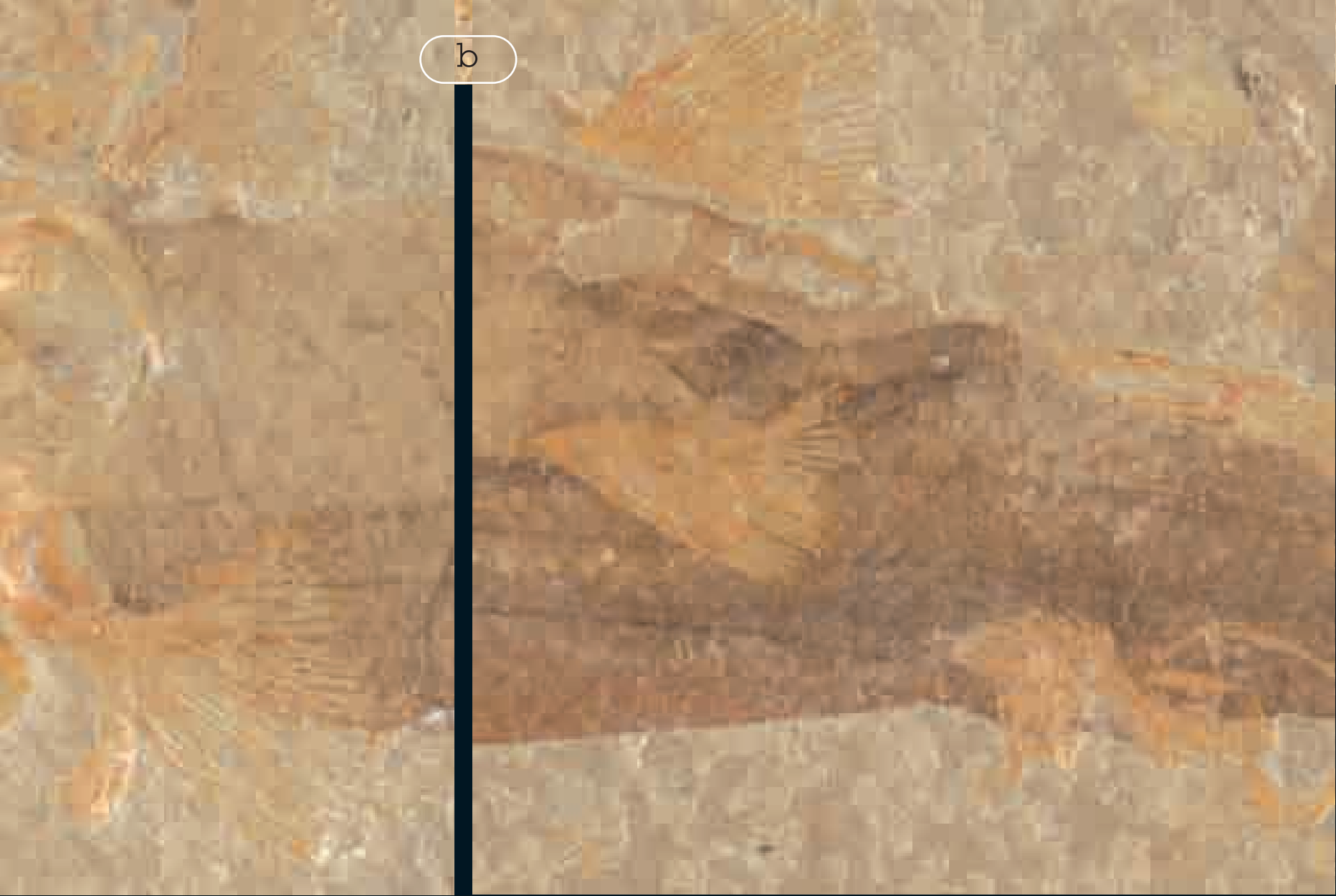
फॉसिलों की यह जोड़ी 5.4 से 3.7 करोड़ वर्ष पुरानी है।

a

ब्लैक फिश (काली मछली)

उम्र : 5.4 करोड़ से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष

आकार : 10 सेंटीमीटर (4 इंच)

स्थान : हूबे, चीन

काल : इओसीन

यह मछली आज भी उत्तरी अटलांटिक तट के आसपास मिलती हैं। अन्य जीवित प्राणियों की तरह, मछलियों में लाखों वर्षों में कोई बदलाव नहीं आया है – दूसरे शब्दों में, वे क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए। 5.4 करोड़ से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पहले जीवित काली मछली, हमारे समय में पाई जाने वाली मछलियों से बिल्कुल अलग नहीं हैं।

कछुआ
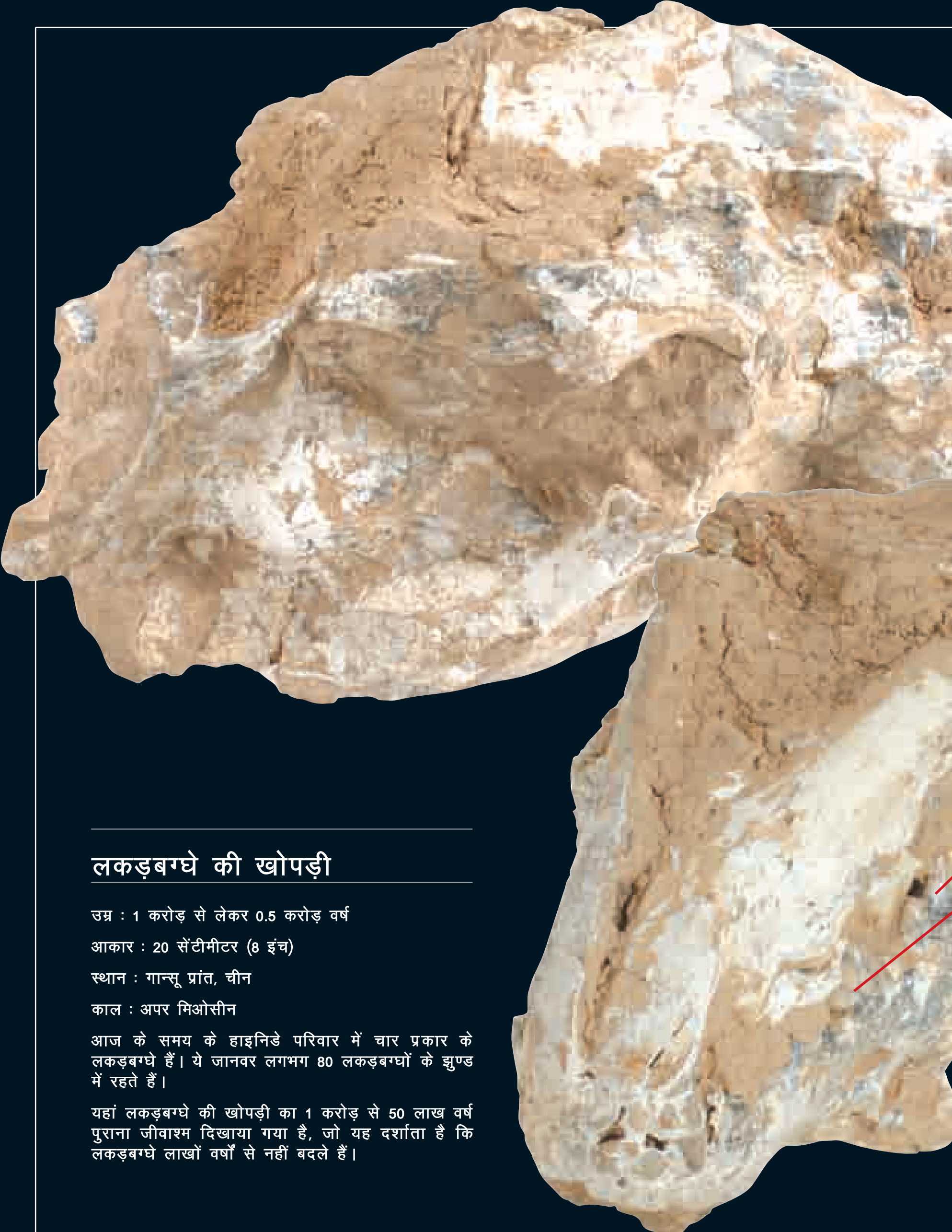
उम्र : 15 करोड़ वर्ष

स्थान : चीन

काल : जुरासिक

अगर जीवित प्राणी उसी बनावट को बनाए रखता है जो 15 करोड़ वर्ष पहले उसकी बनावट थी, तो यह इस बात का संकेत है कि डारविनवादियों का यह दावा अवैज्ञानिक है कि जीवित प्राणी समय लंबे में धीरे–धीरे विकसित हुए। कछुए जिनमें कई सौ लाख वर्षों के दौरान परिवर्तन नहीं आया, विकसित नहीं हुए है, बल्कि उन्हें बनाया गया था।
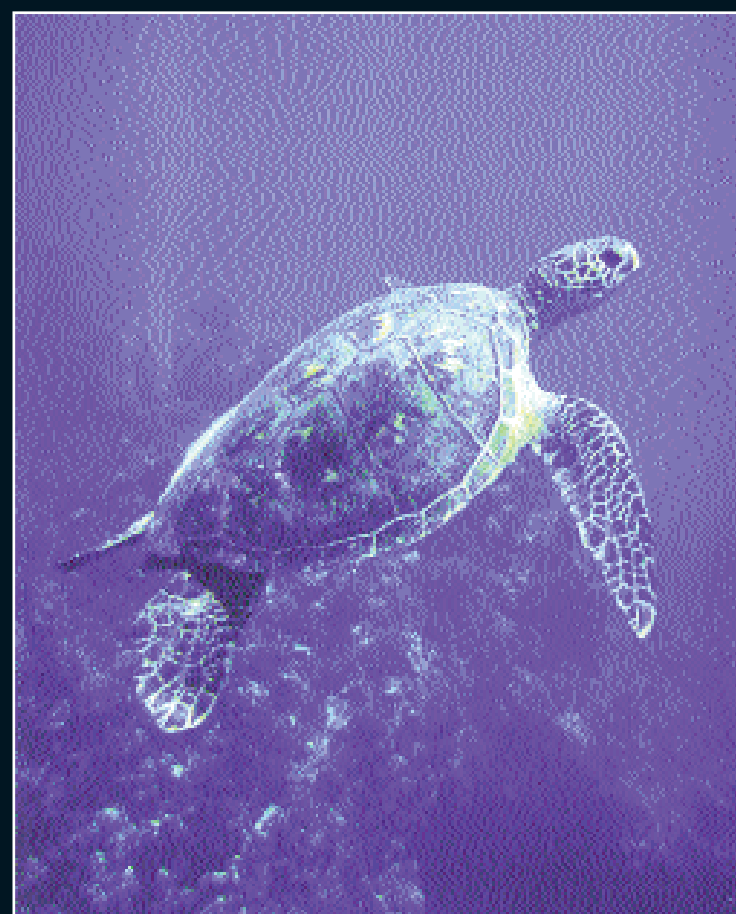
लकड़बग्घे की खोपड़ी

उम्र : 1 करोड़ से लेकर 0.5 करोड़ वर्ष

आकार : 20 सेंटीमीटर (8 इंच)

स्थान : गान्सू प्रांत, चीन

काल : अपर मिओसीन

आज के समय के हाइनिडे परिवार में चार प्रकार के लकड़बग्घे हैं। ये जानवर लगभग 80 लकड़बग्घों के झुण्ड में रहते हैं।

यहां लकड़बग्घे की खोपड़ी का 1 करोड़ से 50 लाख वर्ष पुराना जीवाश्म दिखाया गया है, जो यह दर्शाता है कि लकड़बग्घे लाखों वर्षों से नहीं बदले हैं।
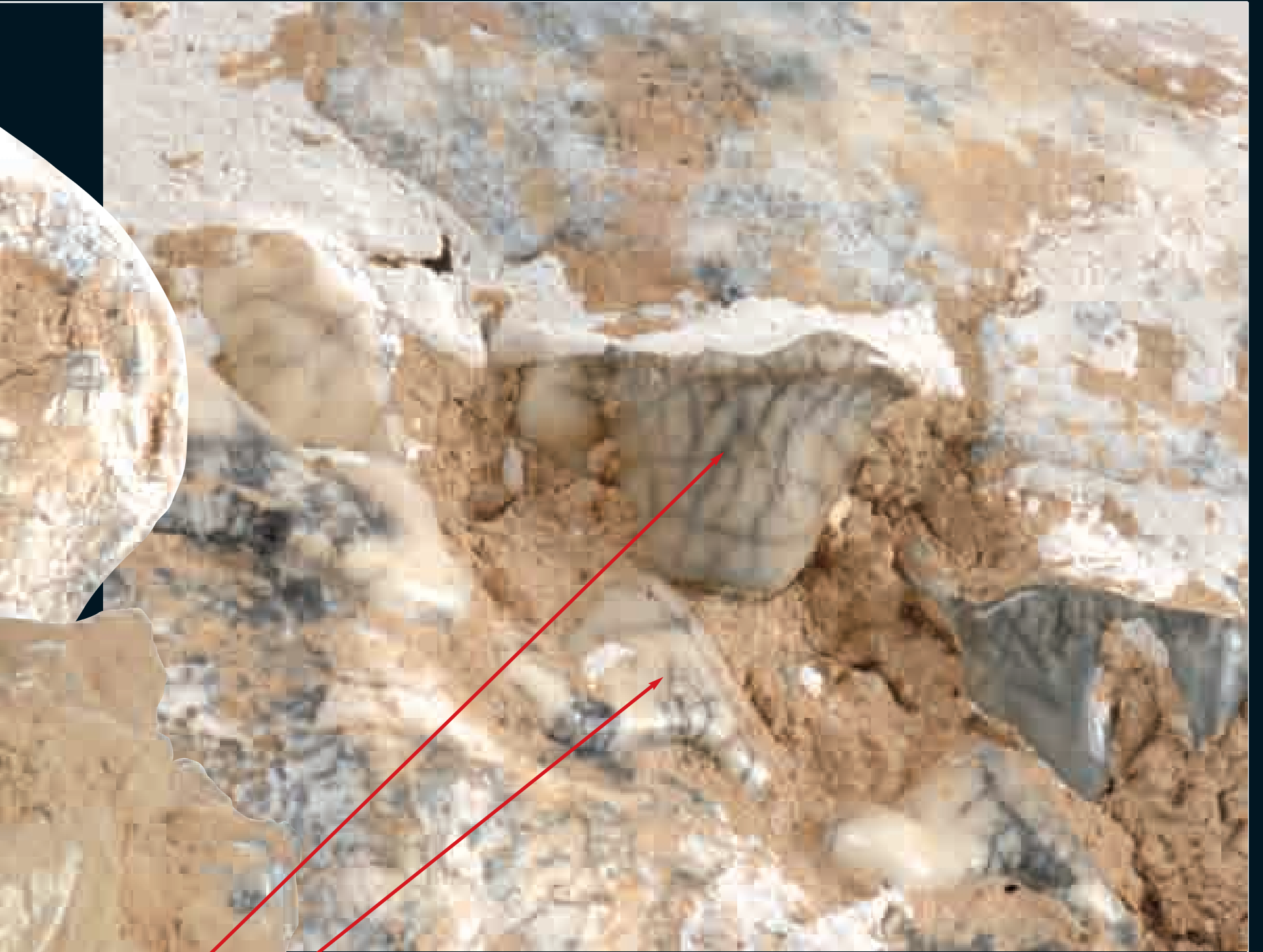
स्टर्जन

उम्र : 14.6 करोड़ से लेकर 6.5 करोड़ वर्ष

आकार : 20 सेंटीमीटर (7.7 इंच); मैट्रिक्स : 23 सेंटीमीटर (9 इंच) गुणा 29 सेंटीमीटर (11.5 इंच)

स्थान : सिहेतुन, बीपिआओ शहर, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : जिउलांगसांग मेंबर, चाओमिदिआन्ज़ी संरचना (जिहोल समूह)

काल : क्रिटेशियस

जीवाश्म संग्रह यह जाहिर करते हैं कि जीव–जंतुओं के अन्य वर्गों की तरह मछली भी अपनी सभी बनावटों और अपनी संपूर्ण शारीरिक रचना समेत अचानक प्रकट हुई। इसका एक उदाहरण यह 14.6 करोड़ से लेकर 6.5 करोड़ पुरानी स्टर्जन मछली का यह जीवाश्म है, जो आज पाई जाने वाली स्टर्जन मछली से बिल्कुल भिन्न नहीं है।
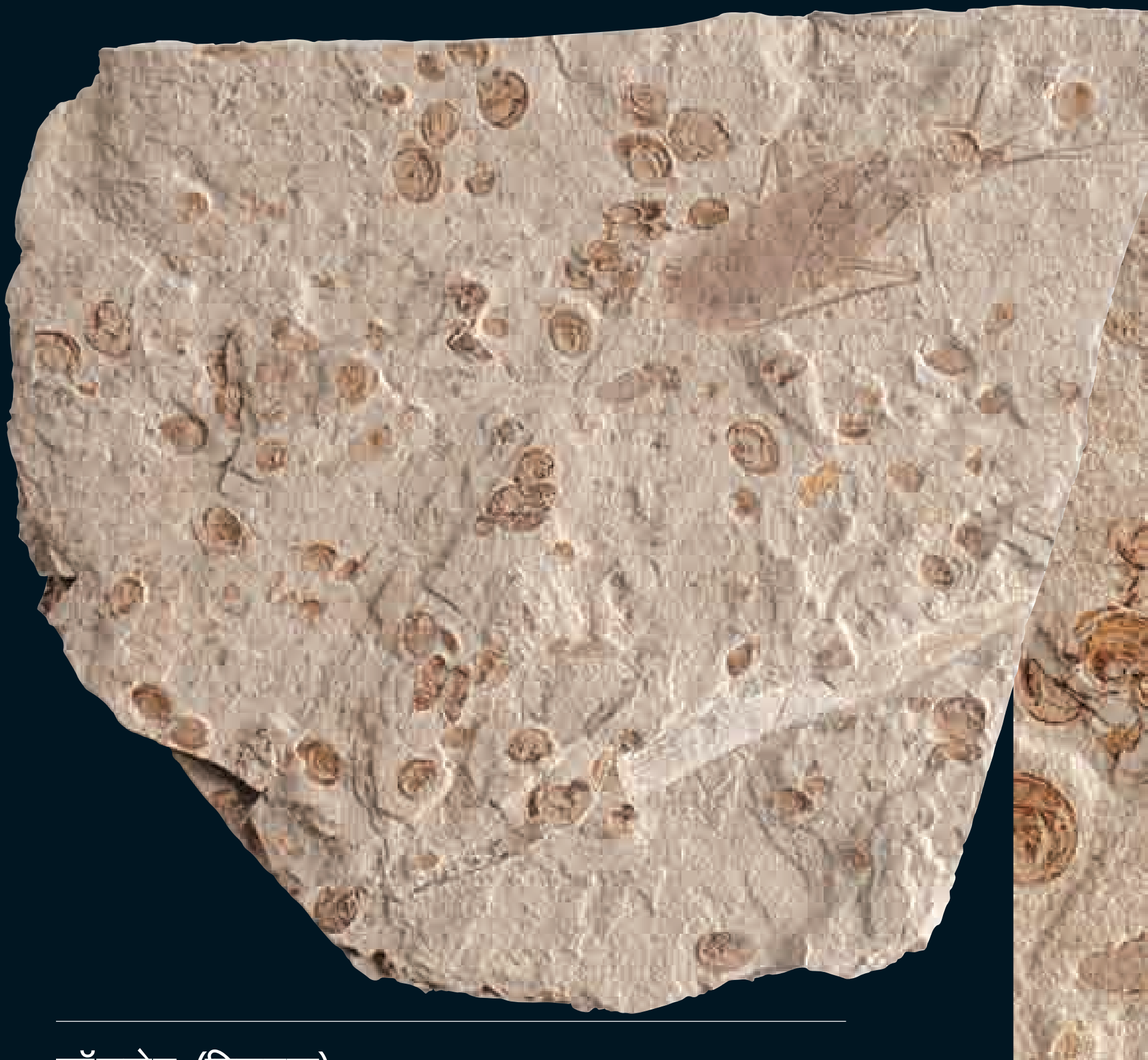
कॉकरोच (तिलचट्टा)

उम्र : 12.5 करोड़ वर्ष

आकार : 26 मिलीमीटर (1 इंच); मैट्रिक्स : 85 मिलीमीटर (3.3 इंच) गुणा 77 मिलीमीटर (3 इंच)

स्थान : चाओ यांग, लिआओनिंग प्रांत

संरचना : यिज़िआन संरचना

काल : लोअर क्रिटेशियस

ये कीट संधिपाद जीव हैं और इन्सेक्टा वर्ग से संबंधित हैं। कीटों के सबसे पुराने जीवाश्म डेवोनियन काल (41.7 से 35.4 करोड़ वर्ष पूर्व) के हैं। हालांकि, हाल के कार्बनिफेरस (35.4 करोड़ से 29 करोड़ वर्ष पूर्व) के दौरान विभिन्न प्रकार के कीट अचानक प्रकट हुए। उदाहरण के लिए, कॉकरोच अपनी उन बनावटों के साथ अचानक प्रकट हुए हैं, जो उनमें आज भी हैं। अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नेचुरल हिस्टरी की बेट्टी फेबर कहती हैं कि 35 करोड़ वर्ष पहले के कॉकरोच के जीवाश्म आज जीवित कॉकरोच जैसे ही हैं। (एम. कुसिनित्ज़, साइंस वर्ल्ड, 4 फरवरी 1983, पृ.1)

चित्र में दिखाया गया 12.5 करोड़ वर्ष पुराना जीवाश्म इस बात का प्रमाण है कि कॉकरोच कई सौ लाख वर्षों से विकसित नहीं हुए हैं।
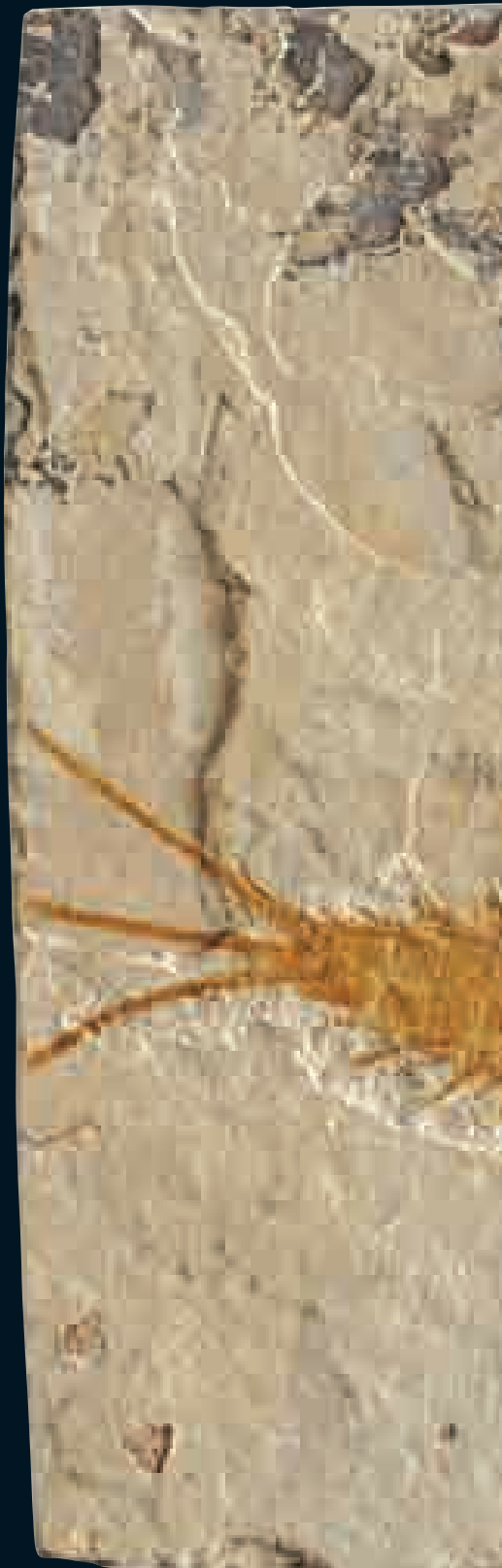
मेफ्लाई का लार्वा

उम्र : 15.6 करोड़ से लेकर 15 करोड़ वर्ष

संरचना : यिज़िआन संरचना

स्थान : लिआओनिंग प्रांत

काल : जुरासिक काल का अंतिम समय

कम–उम्र तक जीवित रहने वाले वयस्कों की तरह, मेफ्लाई केवल कुछ दिन जीवित रहती है, और इनमें से कुछ केवल चंद घंटे जीवित रहती हैं। यहां दिखाया गया जीवाश्म मेफ्लाई लार्वा का है। आज पाई जाने वाली मेफ्लाई और आज से 15.6 से 15 करोड़ वर्ष पूर्व पाई जाने वाली मेफ्लाई में कोई फर्क नहीं है।

बाघ की खोपड़ी

उम्र : 2 करोड़ वर्ष

आकार : 29 सेंटीमीटर (11.5 इंच)

स्थान : एशिया

काल : मिओसीन

बाघ, फेलिडे परिवार का एक स्तनपायी जानवर है। बाघ की 80 प्रतिशत प्रजातियां भारतीय प्रायद्वीप में रहती हैं।

इस चित्र में दिखा गया बाघ का जीवाश्म 2 करोड़ वर्ष पुराना है और इसमें वहीं विशेषताएं हैं जो हमारे समय के बाघों में नजर आती हैं। लाखों वर्षों से उनकी हड्डियों का ढांचा एक–सा है, जो कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत को खारिज करता है।

.

गैंडे की खोपड़ी

उम्र : 2 करोड़ वर्ष

आकार : 51 सेंटीमीटर (20 इंच)

स्थान : एशिया

काल : मिओसीन

राइनोसिरॉटिडे परिवार के गैंडे सामान्यत अफ्रीका और एशिया में रहते हैं, लेकिन उनमें लाखों वर्षों से कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। इस चित्र में दिखाया गया 2 करोड़ वर्ष पूर्व जीवित गैंडे की खोपड़ी जाहिर करती है कि गैंडे लाखों वर्षों से ऐसे ही रहे हैं, जैसे आज के समय में हैं।

मेफ्लाई का लार्वा

उम्र : 15.6 करोड़ से 15 करोड़ वर्ष

संरचना : यिज़िआन संरचना

स्थान : लिआओनिंग प्रांत

काल : जुरासिक का अंतिम चरण

आज जीवित मेफ्लाई और 15.6 करोड़ से 15 करोड़ वर्ष पूर्व पाई जाने वाली मेफ्लाई एक समान हैं। इससे यह बात साबित होती है कि क्रमिक–विकास का परिदृश्य विज्ञान पर आधारित नहीं है।

न्यूज़ीलैंड से मिले जीवाश्म के संग्रह

न्यूज़ीलैंड से मिले अधिकांश जीवाश्म समुद्री जीवों के हैं। बेहद अच्छी तरह से सुरक्षित नमूने विभिन्न समुद्री प्रवर्गों से संबंधित हैं। यहां क्रिटेशियस और दूसरे कालों के जीवाश्म अक्सर मिलते रहते हैं। हालाकि कैमब्रियन, थोरडोविशियन और परमियन काल के जीवाश्म दुर्लभत से मिलते हैं। यहां जानवरों के फॉसिलों के अतिरिक्त, जुरासिक काल के विभिन्न पौधों के फॉसिल भी निकाले गए हैं, जो कि आज के समय तक बिना किसी बदलाव के मौजूद हैं।

न्यूज़ीलैंड से मिले जीवाश्मों के प्रकार वही चीज़ उजागर करते हैं, जो अन्य जीवाश्म रिकॉर्ड बताते हैं। ऐसा एक भी फॉसिल नहीं मिला है जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत का समर्थन करता हो। सभी खोजें यह बताती हैं कि जीवित प्राणी अपनी सभी जटिल बनावटों के साथ अचानक अस्तित्व में आए। दूसरे शब्दों में कहा जाए, तो उन्हें बनाया गया था और वे कई सौ लाख वर्षों से बदले नहीं हैं। वे कभी विकसित नहीं हुए। इनका कभी भी क्रमिक विकास नहीं हुआ।

NEW ZEALAND

न्यूजीलैंड में रॉटोरुआ के गरम पान के सोतों में पाए जाने वाली शैवाल में लगभगत धरती के इतिहास की शुरुआत से कोई बदलाव नहीं आया है।

ग्लेशियर के साथ बह गई न्यूज़ीलैंड की परतदार चट्टानों का चित्र। परतदार चट्टानें वे परिवर्तनशील चट्टानें हैं जिनका निर्माण महाद्वीपों के टकराव के दौरान पृथ्वी की गहराई में हुआ था।

आस्ट्रेलिया से मिले जीवाश्म के संग्रह

ऑस्ट्रेलिया में बड़ी संख्या में जीवाश्म क्षेत्र है, जिनमें से कुछ को संयुक्त राष्ट्र ने सुरक्षित रखने जाने वाले ऐतिहासिक स्थान का दर्जा दिया है।

माना जाता है कि ऑस्ट्रेलिया और अंटार्कटिका लगभग 4 करोड़ वर्ष से लेकर 3 करोड़ वर्ष पहले गोंडवानालैंड के विशाल महाद्वीप से अलग हुए हैं। उसके बाद काफी लंबे समय तक मौसम में बदलाव उन घटनाओं में से एक है जिसकी वजह से ऑस्ट्रेलिया में विभिन्न प्रकार के जीवाश्म बड़ी संख्या में पाए गए। प्रजातियों की विविधता को समझने के लिए इस देश के जीवाश्म क्षेत्रों से प्राप्त हुए जीवाश्म बेहद महत्त्वपूर्ण हैं। रिवरसीफ, ब्लफ डाउन्स, मुरगन, लाइटनिंग रिज और नैराकूर्टे अपने जीवाश्म क्षेत्रों के लिए प्रसिद्ध हैं।

इन क्षेत्रों से सेनोज़ोइक युग (6.5 करोड़ से लेकर आज के समय तक) के जानवरों, छोटे मेंढ़क से लेकर कंगारू तक बड़ी संख्या में मिलते हैं जो अच्छी तरह सुरक्षित हैं। इनके अतिरिक्त, पैलियोज़ोइक युग (54.3 से लेकर 25.1 करोड़ वर्ष पहले) से संबंधित समुद्री जीवों के जीवाश्म भी मिले हैं, जो रीढ़वाले जीवों के इतिहास की महत्त्वपूर्ण जानकारी उपलब्ध कराते हैं।
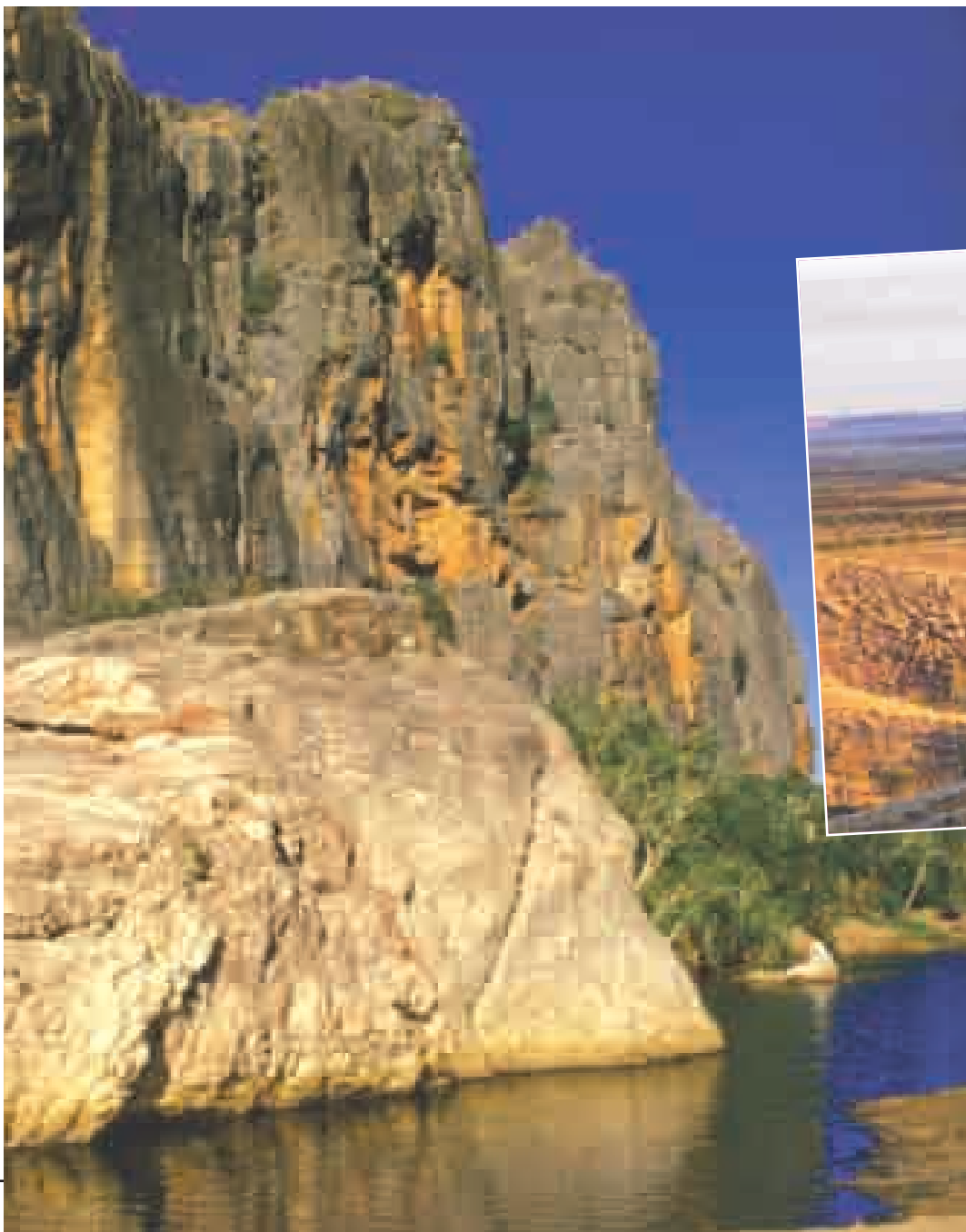
ऑस्ट्रेलिया में मिलने वाले जीव–जंतु एकदम अलग तरह के हैं। वहां विशालकाल रेंगने वाले जीव और बच्चे के लिए थैली वाले जानवर (जैसे कंगारू) आम तौर पर प्रचलित हैं, जबकि वहां की वनस्पतियों में सूखा झेलने में सक्षम मोटी और चिपचिपी पत्तियों वाले पौधे शामिल हैं।

35 करोड़ वर्ष पुरानी भूवैज्ञानिक बनावट वाली विंडजाना गॉर्ज उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में स्थित है। कभी महासागर की नीचे रही इस बनावट में डेवोनियन काल के फॉसिल हैं।

केकड़ा

उम्र : 2.3 से .5 करोड़ वर्ष

स्थान : न्यूज़ीलैंड

काल : मिओसीन

2.3 करोड़ से लेकर 0.5 करोड़ वर्ष पुराना यह केकड़े का जीवाश्म इस बात का सबूत है कि केकड़े हमेशा केकड़े रहे हैं और क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए हैं। यह नमूना और हमारे समय के केकड़े समान विशेषताएं रखते हैं, जो यह दर्शाता है कि ये जीवित प्राणी ईश्वर द्वारा बनाए गए थे।
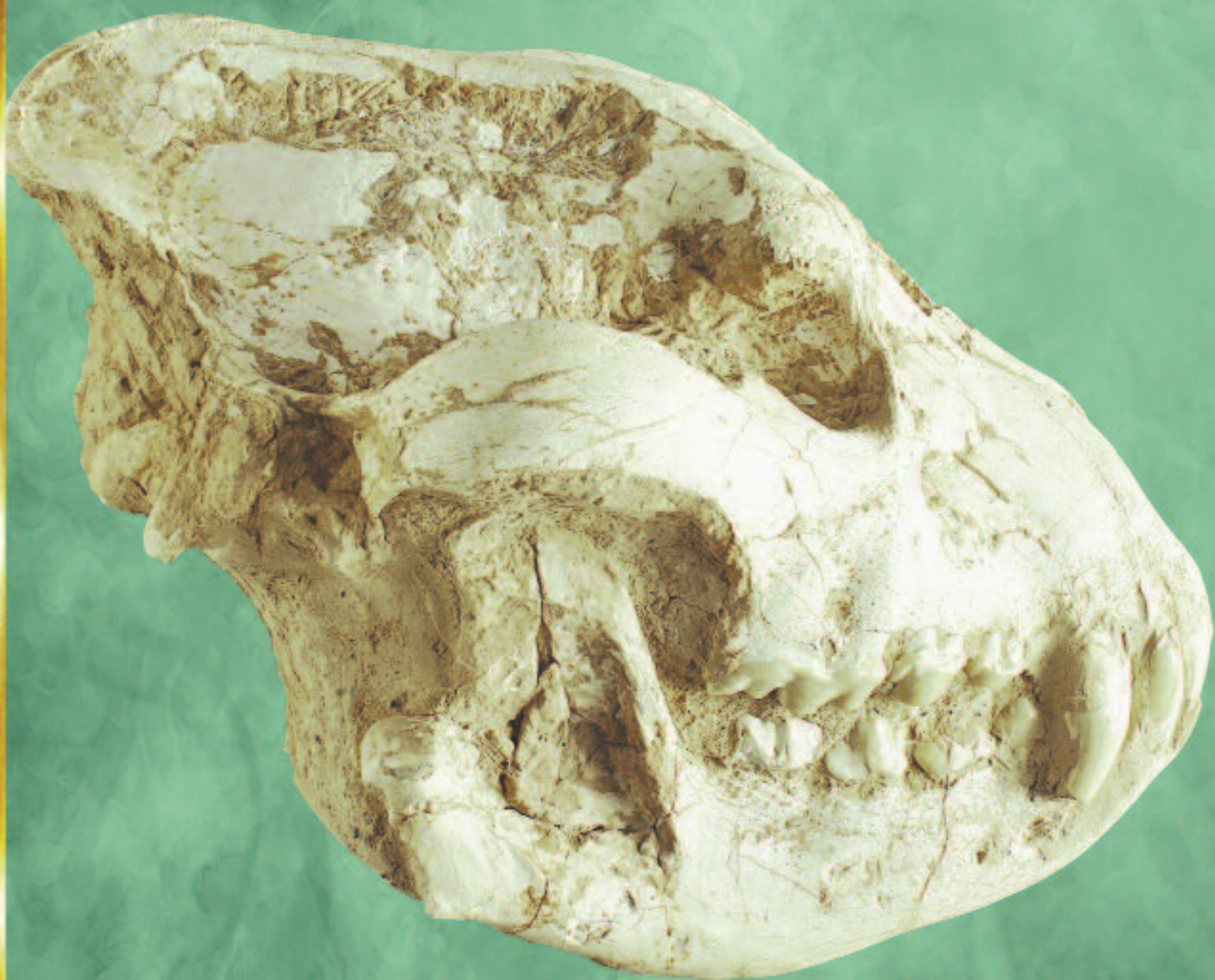
खोपड़ियों के फॉसिल

खोपड़ियों के फॉसिल द्वारा डारविनवाद पर चोट

डारविन के इस सिद्धांत को वैज्ञानिक खोजों से साबित नहीं किया जा सका कि आदमी और बंदर एक ही पूर्वज से विकसित हुए थे। न उस समय जब इसे पहली बार प्रस्तावित किया गया था, और न ही 19वीं शताब्दी के मध्य से अब तक के लगभग 150 वर्षों में। इंसान के क्रमिक–विकास की काल्पनिक कथा के समर्थन में किए गए सभी प्रयास बेकार सा. बित हुए हैं।

एकत्रित किए गए सभी जीवाश्म यह साबित करते हैं कि बंदर हमेशा बंदर थे और इंसान हमेशा इंसान थे और यह कि बंदर इंसानों में परिवर्तित नहीं हुए, और बंदरों और मनुष्यों के पूर्वज एक नहीं हैं।

डारविनवादियों के जबर्दस्त प्रचार और अकादमिक दायरे में भय पैदा करने के तमाम प्रयासों के बावजूद, कई वैज्ञानिकों ने इस सच्चाई को सामने लाने का साहस जुटाया। उनमें से एक हैं हार्वर्ड विश्वविद्यालय के जीवाश्म वैज्ञानिक डेविड पिल. बीम, जिनका कहना है कि इंसान के तथाकथित क्रमिक–विकास के विचार के पक्ष में वैज्ञानिक आंकड़े नहीं हैं : अगर आप किसी अन्य विषय से जुड़े वैज्ञानिक को बुलाते और हमारे पास उपलब्ध थोड़े से प्रमाण उसे दिखाते तो वह निश्चित तौर पर कहता, “छोड़ो इसे, इस पर आगे काम करने के लिए पर्याप्त तथ्य नहीं हैं।”1

फॉसिल विज्ञान पर एक किताब ‘द बोन पेडलर’ के लेखक विलियम फिक्स, बताते हैं कि किस तरह से वैज्ञानिक प्रमाण इंसान के तथाकथित “क्रमिक–विकास” का समर्थन नहीं करते हैं।

जैसा कि हमने देखा है, आज ऐसे असंख्य वैज्ञानिक और प्रचारक हैं जो हमें यह बताने का दुस्साहस करते हैं कि “इसमें कोई संदेह नही” है कि इंसान की उत्पत्ति कैसे हुई थी। अगर उनके पास केवल प्रमाण होता.........2

जीवाश्म रिकॉर्ड और प्रमाण की कमी के चलते निराश हुए क्रमिक–विकासवादी केवल नकली खोपड़ियों को पुनः व्यवस्थित कर सकते थे और उन खोपड़ियों के बा. रे में कल्पना कर सकते थे जिन्हें नकली प्रमाणित किया जा चुका था। हालांकि, बंदरा. ें, साथ ही साथ अतीत में जीवित अन्य प्राणियों और मनुष्य की विभिन्न नस्लों की खोपड़ियों पर किए गए शोधों से पता चलता है कि जीवित प्राणी उन्हीं विशेषताओं के साथ जीवित थे जो

फॉसिलों की जांच करने वाला प्रत्येक क्रमिक–विकासवादी स्वयं की कल्पना के आधार पर भिन्न परिदृश्य प्रकट कर सकता है, जिसका वास्तव में कोई वैज्ञानिक मूल्य नहीं है।

फॉसिल में तब्दील हो चुकी 2 करोड़ वर्ष पुरानी बाघ की खोपड़ी

उनमें पहले से थीं और पूरे इतिहास के दौरान उनमें कोई बदलाव नहीं आया है। इसका अर्थ यह है कि जीवित प्राणी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से उत्पन्न नहीं हुए, और उन्हें सर्वशक्तिमान अल्लाह ने बनाया है। जैसा कि आगे के पृष्ठों में दिए गए उदाहरणों, साथ ही साथ कई जीव–जंतुओं, जैसे मेंढक, छिपकली, ड्रेगनफ्लाई, मक्खियां और कॉकरोच, के पैर और अन्य अंगों से भी यहीं पता चलता है और उनके सिर में भी कोई बदलाव नहीं आया है। पक्षियों और मछली के सिर की बनावट भी अपरिवर्तित ही रही। जब पहली बार शेरों, भेड़ियों, लोमड़ियों, गैंडे, पांडा, बाघ, चीते और लकड़बग्घों का निर्माण हुआ, उसी समय उनके सिर की जो बनावट थी उसमें दसियों लाख वर्षों से कोई बदलाव नहीं हुआ है।

शारीरिक रचना में बदलाव न होना, जीवित प्राणियों के क्रमिक–विकास को खारिज करता है।

यह समानता, जो सभी प्रजातियों में थी, इंसानों के बारे में भी सही साबित होती है। जिस तरह कई लाख वर्षों के दौरान दसियों हजार जीवित प्रजा.

फॉसिल में तब्दील हो चुकी 2 करोड़ वर्ष पुरानी गेंडे की खोपड़ी

पूरे समय के दौरान,
किसी भी प्रजाति की खोपड़ी में
कोई परिवर्तन नहीं हुआ है

अन्य अंगों एवं शारीरिक विशेषताओं की तरह ही, विभिन्न प्रजातियों की खोपडियों और सिर की बनावट लाखों वर्षों से बिल्कुल वैसी ही है, यानी उनमें कोई बदलाव नहीं आया है। किसी भी जीव–जंतु की खोपड़ी में क्रमिक–विकास संबंधी कोई बदलाव नहीं आया है। उन प्रजातियों की तरह, जो लाखों वर्षों से क्रमिक–विकास संबंधी किसी भी बदलाव के बिना वैसी ही हैं, मनुष्य भी क्रमिक–विकास संबंधी बदलावों से नहीं गुजरे। हम हमेशा ही अपनी सभी शारीरिक विशेषताओं के साथ मनुष्य ही बने रहे हैं। जिन खोपडि़यों को तथाकथित क्रमिक–विकास के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, वे या तो बंदरों की विलुप्त हो चुकी प्रजातियों से संबंधित हैं, या मनुष्यों की उन नस्लों से जिनका आज कोई अस्तित्व नहीं है। और इनमें से किसी को भी क्रमिक–विकास के प्रमाण के रूप में स्वीकार नहीं किया जा सकता।
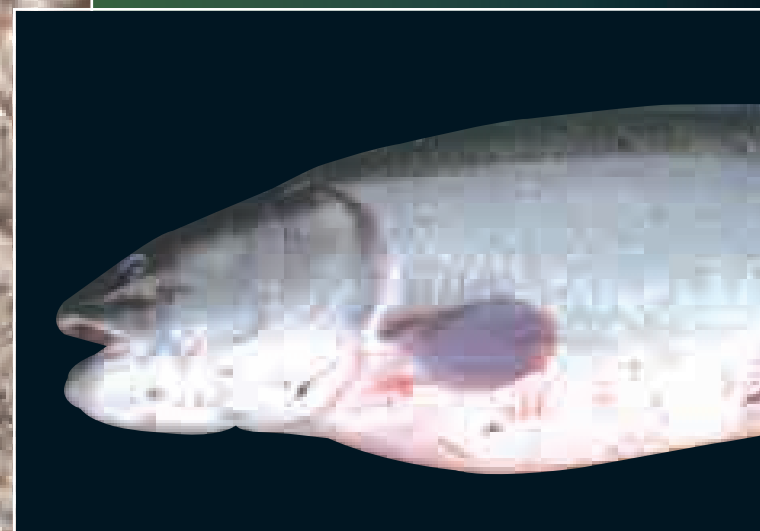
5.4 से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पुरानी बोफिन मछली का फॉसिल।

5 करोड़ वर्ष पुराने मेंढक का फॉसिल

10.8 से लेकर 9.2 करोड़ वर्ष पुराने टिड्डे का फॉसिल
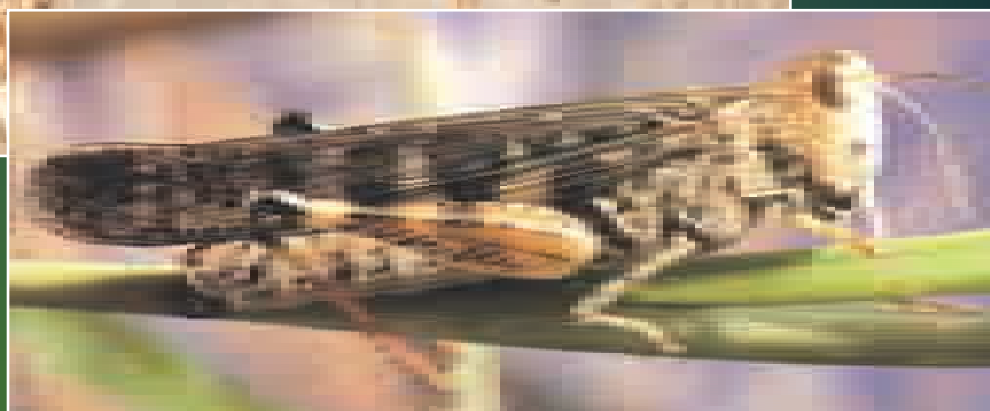
12.5 करोड़ वर्ष पुराने न्यूरोप्टेरन (जालीदार पंखों वाले कीड़े) का फॉसिल

4.8 से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पहले जीवित हेरिंग मछली का फॉसिल

12.5 करोड़ वर्ष पुराने न्यूरोप्टेरन (जालीदार पंखों वाले कीड़े) का फॉसिल

4.8 से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पुराने ततैये का फॉसिल

5.4 से लेकर 3.7 करोड़ वर्ष पुराने भोजवृक्ष का फॉसिल

तियों के सिर की बनावट में कोई बदलाव नहीं आया है, उसी तरह इंसानों की खोपड़ियों में भी क्रमिक–विकास संबंधी कोई बदलाव नहीं हुआ है। जिस तरह मछली हमेशा मछली रही है, पक्षी हमेशा पक्षी रहे हैं और रेंगने वाली जीव हमेशा रेंगने वाले जीव रहे हैं, उसी तरह इंसान भी हमेशा इंसान ही रहे। किसी भी जीवित प्राणी का कोई भी अंग या बनावट किसी शुरुआती रूप से अधिक उन्नत रूप में "विकसित" नहीं हुई है, जैसा कि क्रमिक–विकासवादी लगातार कहते हैं। जब क्रमिक–विकासवादी इंसान के कथित क्रमिक–विकास की बात करते हैं, तो वह खुद ही क्रमिक–विकास संबंधी व्यवस्था और वंश वृक्ष तैयार करते हैं, जिसमें वे उन खोपड़ियों के आयतन, भवों का उभार या माथे की बनावट को प्रमाण के रूप में पेश करते हैं, जिन्हे उन्होंने खोजा था। लेकिन यह भिन्नताएं किसी भी तरह से क्रमिक–विकास की प्रमाण नहीं हैं, क्योंकि इनमें से कुछ खोपड़ियां इंसानों की अलग–अलग नस्लों से संबंधित हैं, जो अतीत में जीवित थे, जबकि अन्य खोपड़ियां बंदरों की कुछ विलुपत प्रजातियों की हैं। यह पूरी तरह स्वाभाविक है कि इंसानों की अलग–अलग प्रजातियों की खोपड़ियों की बनावट अलग हो। मछलियों की भिन्न प्रजातियों के सिर भी भिन्न आकार के होते हैं। उदाहरण के लिए सालमन मछली के सिर का आकार ईल मछली के सिर के आकार से बेहद अलग है, फिर भी दोनों ही मछलियां हैं।

आज जीवित कुछ नस्लों, जैसे मलेशिया के मूल निवासी, के माथे पीछे की ओर उठे हुए हैं और उनकी भवें चौड़ी हैं – जो कि होमो इरेक्टस की खोपड़ी की विशिष्टिताएं हैं।

मानव नस्लों की खोपड़ियों में असमानता

यह पूरी तरह स्वाभाविक है कि जापानियों की खोपड़ियां काले मनुष्यों, इन्युइट या जर्मन की खोपड़ी से अलग होती हैं। इन असमानताओं के कारण यह नहीं माना जा सकता कि कोई नस्ल किसी दूसरी नस्ल के मुकाबले ज्यादा विकसित या कम आगे बढ़ी हुई है और इसे क्रमिक–विकास का सबूत कतई नहीं माना जा सकता। ये अंतर सिर्फ यही बताते हैं कि खुदा ने कितने अलग–अलग किस्म की और कितनी श्रेष्ठ रचनाएं की हैं।
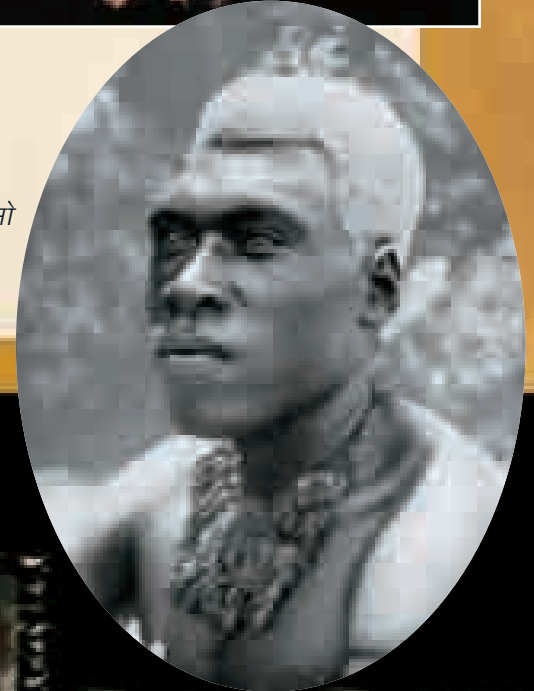
बंगाल का एक अधेड़ उम्र का आदमी

पेरू का एक मूल निवासी जो 15वीं शताब्दी में जीवित था

एक आदमी जिसकी मौत 1893 में दक्षिणी पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र के सोलोमन द्वीप समूह में हो गई थी।

25 से लेकर 30 वर्ष की उम्र का जर्मन पुरुष

35 से 40 वर्ष की उम्र का एक इन्युइट पुरुष

जायरे का 35 से 45 वर्ष की उम्र का पुरुष

निएंडरथल :
मनुष्यों की एक नस्ल

मनुष्यों की भिन्न नस्लें जो इतिहास में जीवित थीं, क्रमिक–विकास का कोई प्रमाण पेश नहीं करतीं

निएंडरथल (होमो निएंडरथेलेंसिस) वो मानव हैं जो 100,000 वर्ष पहले इंग्लैंड में प्रकट हुए थे और लगभग 35,000 वर्ष पहले वे खत्म हो गए–या मनुष्यों की अन्य प्रजातियों के साथ घुलने–मिलने के कारण उन्हीं में सम्मिश्रित हो गए। उनमें और आज के मनुष्यों में मुख्य अंतर यह है कि उनके अस्थिपंजर थोड़े बड़े हैं और उनकी खोपड़ियों का आयतन थोड़ा ज्यादा है। वैज्ञानिक खोजें बताती हैं निएंडरथल मनुष्य की अन्य नस्लों की तरह ही बुद्धिमत्ता के स्तर और संस्कृति के साथ पूर्ण मानव नस्ल थे। एक जाति क्रो–मैगनन मानव की भी है जिसके बारे में माना जाता है कि वह 30,000 वर्ष पहले जीवित थीं। उनकी खोपड़ी गुंबद–नुमा और माथा चौड़ा है। उनकी खोपड़ी का 1600–क्यूबिक–सेंटीमीटर आयतन आज के समय के औसत मनुष्य से ज्यादा है। उनकी खोपड़ियों पर भवों का उभार मोटा है और उनकी खोपड़ियों के पिछले हिस्से पर हड़ीला उभार है, जो निएंडरथल मानवों की भी खास विशेषताएं हैं।

क्रो–मैगनन और निएंडरथल मानवों की शारीरिक भिन्नताएं जैसी ढेरों भिन्नताएं आज के समय की मानव नस्लों में भी हैं। जिस तरह एक अमेरिकी और एक इन्यूइट, या एक अफ्रीकी एवं एक यूरा. `पीय के बीच अंतर, यह साबित नहीं करता कि उनमें से दूसरे से श्रेष्ठ है, उसी तरह इन विलुप्त नस्लों की शारीरिक विशेषताएं उन्हें आदिम या बंदर–सा नहीं बनाती।

=ँच `पउपसम वसंतां लं कं इपसपदउमलमद इपत =मापसकम ज ामदमतमा जंतपी`ीदमेपदकमद प्रम. ापसउप=जपतण ।उं `ीपप्रइपत =मापसकम ष्पस. ामसष अमलं ष्लंतैं उंलउनदष कमृपसकपतसमतए जंउ इपत पदेंदकैंतसंतण

निएंडरथल की बांसुरी

निएंडरथल का काल्पनिक पुनर्निर्माण

इसी प्रकार, इंसान की विभिन्न नस्लों की खोपड़ी की बनावट में अंतर है। पिगमी और ब्रिटिश, रूसी और चीनी, आदिवासी जातियां और इन्युट या काले लोगों और जापा. नियों के माथे की बनावट, आंखों के गड्ढों, भवों के उभार और खोपड़ी के आयतन में अंतर होता है। लेकिन इन भिन्नताओं का मतलब यह नहीं कि एक नस्ल दूसरी से विकसित हुई है या कि कोई नस्ल विशेष किसी अन्य नस्ल से "ज्यादा आदिम" या "ज्यादा आगे बढ़ी हुई" है।

जब तक आदिवासी नस्ले अन्य नस्लों से नहीं मिलतीं, तब तक उनकी विशेषताएं हमेशा एक सी रहेंगी। चाहे कितना भी समय क्यों न गुज़र जाए, ये लोग इस तरह विकसित नहीं होंगे कि अन्य विशेषताएं हासिल कर लें। उनकी खोपड़ी विशाल आकार की नहीं होंगी और न ही वे भिन्न शारीरिक विशेषताएं हासिल करेंगे। उदाहरण के लिए, आज के समय में जीवित मलेशियाई मूल के कुछ लोगों की भावों का उभार बहुत अधिक और माथा पीछे की ओर उठा हुआ होता है – जो कि होमो इरेक्टस की खोपड़ी की खास विशेषता है, जिसे क्रमिक–विकासवादी "आदिम" बताते हैं। अगर क्रमिक–विक. ासवादियों की बात सच होती, तो मलेशियाई मूल के इन लोगों की बनावट कथित तौर पर अर्थ–विकसित मानव की बनावट होनी चाहिए थी। हालांकि, ऐसा कोई मामला नहीं है। यह तथ्य कि होमो इरेक्टस की खोपड़ी की कुछ संरचनात्मक विशेषताएं अब भी देखी गई हैं, यह उजागर करता है कि कि होमो इरेक्टस आदिम प्रजाति नहीं थे, साथ ही साथ इससे यह भी पता चलता है कि "इंसान के वंश वृक्ष" का तथ्य सफेद झूठ है।

संक्षिप्त में कहा जाए, तो यह तथ्य कि अतीत में जीवित कुछ इंसानों की नस्लों की संरचनाओं का भिन्न होना, क्रमिक–विकास का प्रमाण नहीं है। शारीरिक भिन्नताएं हर युग के इंसानों में देखी जा सकती हैं। अमेरिकी और जापानियों, यूरोपीयन और आदिवासी नस्लें, इनयुट, काले लोग या पिगमियों की खोपड़ियां समान नहीं हैं। फिर भी, इससे यह साबित नहीं होता कि इनमें से कोई भी नस्ल किसी अन्य नस्ल से ज्यादा उन्नत या ज्यादा आदिम है।

अगर हजारों साल बाद, किसी वैज्ञानिक को 21वीं सदी में जीवित रहे के एक 1.90 मीटर लंबे अमेरिकन की खोपड़ी मिलती है और वह उसकी तुलना 21वीं सदी में ही जीवित 1.60 मीटर लंबे एक जापानी की खोपड़ी से करने का निर्णय करता है, तो उसे कई भिन्नताएं नज़र आएंगी, जिनमें सबसे पहली आकार की भिन्नता होगी।

अगर इन भिन्नताओं के आधार पर वह यह दावा करता है कि अमेरिकी लोग क्रमिक–विकास की काल्पनिक प्रक्रिया के दौरान ज्यादा उन्नत थे, जबकि जापानी आम तौर पर आदिम इंसान थे, तो उसकी व्याख्या निश्चित तौर पर सत्य से कोसों दूर होगी।

यही नहीं, खोपड़ी के आकार से इंसान की बुद्धि या काबिलियत को मापा नहीं जा सकता। कई लोगों का शरीर पर्याप्त रूप से विकसित होता है, लेकिन उनकी दिमागी काबिलियत सीमित होती है। इसी तरह, ऐसे कई बहुत अक्लमंद लोग हैं जिनके शरीर और खोपड़ियां अन्य लोगों से छोटी हैं। केवल आकार के आधार पर, तथाकथित क्रमिक–विकास की व्यवस्था में इन लोगों की खोपड़ियों की रैंकिंग का निश्चित तौर पर कोई वैज्ञानिक मूल्य नहीं होगा, क्योंकि ऐसी कोई भी क्रमव्यवस्था वास्तविकता को नहीं दर्शाएगी। यह बात प्रसिद्ध है कि खोपड़ियों के आयतन में भिन्नताओं से अक्ल और कुशलताओं पर कोई असर नहीं पड़ता।

ऐसे किसी भी इंसान की खोपड़ी में वृद्धि नहीं होती जो जिंदगी भर अत्यधिक मानसिक गतिविधियों में व्यस्त रहता है। वह आम तौर पर मानसिक तौर पर ज्यादा सक्षम हो जाता है। अक्ल दिमाग के आयतन के अनुसार नहीं बदलती, बल्कि वह दिमाग के भीतर ही न्यूरॉन और साइनैप्सेस के संघटन के जरिए बदलती है। 3
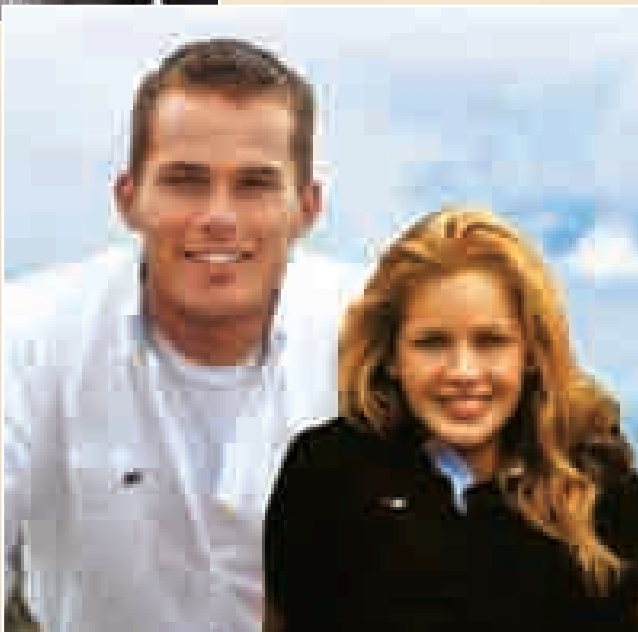
बंदरों में नकल करने की काबिलियत का मतलब यह नहीं कि बंदर विकसित होकर इंसान बन सकते हैं

डारविनवादी दावा करते हैं कि बंदरों की नकल करने की क्षमता इस बात का सबूत है कि इंसान बंदरों से विकसित हुए। बेशक, बंदर उन हाव–भाव और व्यवहारों की नकल कर सकते हैं जो वे देखते हैं। प्रशिक्षण मिलने पर, वे वस्तुओं के आकार और रंग को पहचान सकते हैं, और इशारा करने पर समझदारीभरी प्रतिक्रिया कर सकते हैं। फिर भी, इसका मतलब यह नहीं है कि वे समय गुजरने के साथ इंसानों में विकसित हो गए। अगर ऐसा होता, तो जानवरों की वे सभी प्रजातियों जिन्हें समझदार माना जाता है – कुत्ते, बिल्लियां, घोड़े – उन्हें धीरे–धीरे इंसानों में विकसित हो जाना चाहिए था। उदाहरण के लिए, तोते को प्रशिक्षण देने पर, वे चौकोर आकृतियों व गोल आकृतियों तथा लाल व नीले में अंतर कर सकते हैं, और वस्तुओं को सही स्थान पर रख सकते हैं। यही नहीं, तोतों में इंसानों की आवाज़ की नकल करके बातचीत करने की क्षमता भी है, जो कि बंदर नहीं कर सकते। इस मामले में – डारविनवादियों के अतार्किक दावों के अनुसार – तोते के अंदर अक्लमंद इंसानों में विकसित होने की अत्यधिक संभावना होनी चाहिए थी।

अपनी चालाकी के लिए प्रसिद्ध एक अन्य जानवर लोमड़ी है। डारविनवादियों के अनुचित और अवैज्ञानिक तर्क के अनुसार, लोमड़ी की खोपड़ी को धीरे–धीरे बढ़कर उसकी अक्ल के अनुसार हो जाना चाहिए था, और समय के साथ इन स्तनपायी जीवों को मनुष्य की तरह अक्लमंद और चेतना रखने वाली प्रजाति में विकसित हो जाना चाहिए था। लेकिन यह परिवतर्न कभी नहीं हुआ। लोमड़ी हमेशा से लोमड़ी ही रही है।

अकादमिक पेशों से जुड़े लोगों द्वारा इन अनुचित तर्कों को वैज्ञानिक शब्दावलियों और लातिनी शब्दों से सजा कर स्पष्ट करने का प्रयास करते देखना आश्चर्यजनक होता है। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि बंदरों ने अपनी मानसिक क्षमता और शारीरिक कुशलताएं कैसे विकसित कीं, या वे उन चीजों की नकल कैसे करते हैं जो उन्हें अपने आसपास नजर आती हैं, इन चीज़ों से वे किसी दिन इंसान नहीं बन जाएंगे। बंदर हमेशा ही बंदर रहे हैं, और सदैव ऐसे ही रहेंगे। और इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि क्रमिक–विकासवादी कितने जोरदार ढंग से बहस करते हैं क्योंकि सत्य स्वयं ही स्पष्ट है : इंसान की

उत्पत्ति क्रमिक–विकास की किसी प्रक्रिया के द्वारा नहीं हुई, बल्कि उसे अल्लाह ने बनाया है, अक्लमंदी, चेतना और विवेक उसे अल्लाह ने दिए हैं।

इंसान को इंसान के रूप में ही बनाया गया था और वह अपनी रचना के समय से अब तक इंसान ही है। यही वह सच्चाई है जो अक्ल और विज्ञान ने हमें दिखाई है।

पूरे भूगर्भीय इतिहास के दौरान बंदरों की 6,000 से ज्यादा प्रजातियां जीवित रही हैं, और उनमें से अधिकांश लुप्त हो चुकी हैं। आज पृथ्वी पर बंदरों की केवल 120 प्रजातियां बची हैं। लेकिन बंदरों की ये लगभग 6,000 विलुप्त प्रजातियां, क्रमिक–विकासवादियों के लिए प्रचुर संसाधन मुहैया कराती हैं। उन्होंने बंदरों की विलुल्प प्रजातियों और इंसान की नस्लों की कुछ खोपड़ियों को छोटी खोपड़ी से बड़ी खोपड़ी के क्रम में व्यवस्थित करके और उन्हें पक्षपातपूर्ण टिप्पणियों से सजा कर अपने उद्देश्यों के अनुकूल इंसान के क्रमिक–विकास का परिदृश्य तैयार किया। इन तरीकों का प्रयोग करके वे वर्षों से क्रमिक–विकास के सिद्धांत के अनुयायी तैयार करने और लोगों को धोखा देने का प्रयास कर रहे हैं। लेकिन अब उन्हें यह जानने की जरूरत है कि जिन हथकंडों का उन्होंने इस्तेमाल किया वे अब किसी काम के नहीं हैं।

औरों को यह समझाने के लिए कि इंसान के क्रमिक–विकास का परिदृश्य सही है, क्रमिक–विकासवादी जिन जाली प्रमाणों का प्रयोग करते हैं, वे इस प्रकार हैं :

1. चार्ल्स डॉसन द्वारा सन् 1912 में खोजे गए पिल्टडाउन मैन, जो कथित तौर पर 500,000 वर्ष पुराना था, को इंसान के कथित क्रमिक–विकास के सुनिश्चित सबूत के तौर पर पेश किया गया था। हालांकि, जीवाश्म मिलने के 40 वर्ष बाद, वैज्ञानिकों ने एक बार फिर उसकी जांच की और आश्चर्यजनक जालसाजी का भंडाफोड़ किया। पिल्टडाउन मैन की खोपड़ी 500 वर्ष पुराने आदमी से संबंधित थी, और उसके निचले जबड़े की हड्डी हाल ही में मरे बंदर की थी। दांतों को विशेष तरीके से व्यवस्थित करके जबड़े से जोड़ा गया था और उनके जोड़ों को भर दिया गया था ताकि वे इंसान के दांत लगें। इसके बाद प्राचीन रूप प्रदान करने के लिए हड्डी के इन सभी टुकड़ों पर पोटेशियम डाइक्रोमेट के निशान लगा दिए गए थे।

2. सन् 1922 में अमेरिकन म्यूज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री के निदेशक, हेनरी फेअरफील्ड ऑस्बौर्न ने घोषणा की कि उन्हें स्नेक ब्रुक के निकट पश्चिमी

इतिहास के किसी काल में कोई आदिम मनुष्य नहीं था

इन तस्वीरों में दिखाए गए आधे–बंदर, आधे–मनुष्य,या जिनसे आपका परिचय अखबा. रों, पत्रिकाओं, और यहां तक स्कूल की किताबों में हुआ, कभी थे ही नहीं। बंदर हमेशा बंदर ही रहे हैं; मनुष्य हमेशा मनुष्य ही रहे हैं। यह चित्र क्रमिक–विकासवादियों के दिमाग की गलत उपज हैं, और वास्तविक इतिहास को नहीं दर्शाते।

नेब्रास्का में प्लिओसीन काल से संबंधित चबाने वाले दांत का जीवाश्म मिला है। इस दांत में कथित तौर पर आदमी और बंदर दोनों की खूबियां थीं और यह एक प्रजाति का दांत था जिसे "नेब्रास्का मैन" का नाम दिया गया था। इस एक दांत के आधार पर नेब्रास्का मैन के सिर और शरीर को फिर से बनाया गया था। यही नहीं, नेब्रास्का मैन को उसके पूरे परिवार के साथ दिखाया गया। लेकिन सन् 1927 में अस्थिपंजर के अन्य हिस्से भी मिल गए और टुकड़ों की इस नई खोज से पता चला कि वह दांत न तो आदमी का था और ना ही बंदर का, बल्कि वह प्रॉस्थेन्नॉप्स नामक जंगली सुअर की एक लुप्त प्रजा. ति से संबंधित था।

3. रेमेपिथिकस को क्रमिक–विकास के सिद्धांत के सबसे बड़े और सबसे लंबे समय तक बोले गए झूठ के रूप में जाना जाता है। यह नाम 1932 में भारत में मिले जीवाश्मों को दिया गया था, जो कि कथित तौर पर इंसान और बंदर के विभाजन के पहले चरण को दिखाते थे, जो कि लगभग 1.4 करोड़ वर्ष पहले पैदा हुआ था। इस जीवाश्म को क्रमिक–विकासवादियों ने लगभग 50 वर्षों तक ठोस सबूत के रूप में प्रयोग किया। हालांकि, बाद में हुए विश्लेषणों से पता चला कि रेमेपिथिकस के दांतों की विशेषताएं कुछ जीवित चिंपांजियों से बहुत मिलती थीं। उदाहरण के लिए, थेरोपिथिकस गैलाडा यानी इथियोपिया में समुद्री तट से उच्च क्षेत्रों में रहने वाले बबून के (अफ्रीका तथा दक्षिण ऐशिया का बंदर) जबड़े में सामने के चार दांत और भेदक दांत होते हैं, और चेहरा रामापिथिकस की तरह छोटा होता है। छोटी प्रजाति का बबून अन्य जीवित बंदरों के संबंधी हैं। साइंस पत्रिका के अप्रैल 1982 के अंक में, "इंसानों ने आरंभिक पूर्वज खोया" शीर्षक के लेख में घोषणा की गई कि रामापिथिकस केवल एक लुप्त ऑरांगउटान है।

4. जुलाई 1984 में केन्या की तुरकाना झील में एक इंसान का लगभग पूरी तरह जीवाश्म में तब्दील हो चुका अस्थि–पंजर मिला था। माना जाता है कि यह फॉसिल, जिसे तुरकाना ब्वॉय का उपनाम दिया गया, लगभग 12 वर्ष की उम्र का है, और वयस्क होने पर इसकी लंबाई 1.83 मीटर होती। सीधे खड़े करने पर अस्थि–पंजर की बनावट आज जीवित इंसान से बिल्कुल अलग नहीं है। इस अस्थि–पंजर की भारी, ऊंची बनावट आज के समय में उष्णकटिबंधी क्षेत्रों में रहने वाले आदमियों की बनावट से पूरी तरह मिलती है। रिचर्ड लीके ने कहा कि आज के समय की भीड़ में अगर इस लड़के को खड़ा कर दिया जाए तो यह पहचान में नहीं आएगा।4 चूंकि इंसान का यह अस्थिपंजर दस लाख छह हजार वर्ष पुरानी चट्टानी परत में मिला था, इसलिए उसे केवल उम्र के अनुसार होमो इरेक्टस के एक और प्रतिनिधि के रूप में वर्गीकृत कर लिया गया। तुरकाना ब्वॉय क्रमिक–विक. ासवादियों द्वारा जीवाश्मों की पूर्वाग्रह से भरी और विकृत व्याख्या का एक खास नमूना है।

प्रेरणा का स्रोत

सबसे पहले मिले रामापिथिकस के फॉसिल में दो हिस्सों वाला एक अपूर्ण जबड़ा मिला था (नीचे देखें)। लेकिन केवल इस एक हड्डी वाले जबड़े के आधार पर क्रमिक–विकासवादी कलाकारों को रामापिथिकस के काल्पनिक परिवेश और परिवार के सदस्यों को चित्रित करने में कोई परेशानी नहीं हुई। यह जानने के बाद कि यह जंतु, जिसके परिवार और परिवेश को एक हड्डी वाले जबड़े के आधार पर दोबारा बनाया गया था, वास्तव में एक सामान्य बंदर था, रामापिथिकस को चुपचाप मानवता के काल्पनिक वंश वृक्ष से हटा दिया गया। (डेविड पिलबीम, ह्यूमन्स लूस एन अर्ली एनसेस्टर, साइंस, अप्रैल 1982, पृष्ठ 6–7)।

सिर्फ एक हड्डी वाला जबड़ाझमउप़्प

5. "लूसी", डोनाल्ड जोहान्सन द्वारा 1974 में खोजे गए जीवाश्म को दिया गया नाम है। कई क्रमिक–विक. ासवादियों ने दावा किया कि लूसी इंसानों और उनके कथित होमिनिड पूर्वजों के बीच का परिवर्तित स्वरूप था। हालांकि बाद में हुए विश्लेषणों से पता चला कि लूसी बंदरों की विलुप्त प्रजाति ऑस्ट्रैलोपिथिकस की सदस्य है। ऑस्ट्रैलोपिथिकस के दिमाग का आकार चिंपान्जियों के समान है। कई अन्य विशेषताएं – जैसे उनकी खोपड़ियों के विवरण, उनकी आंखों की नजदीकी, उनके चबाने के पैने दांत, उनके जबड़े की बनावट, उनकी लंबी बाहें और छोटे पैर – यह प्रमाण देती हैं कि ये जीव आज के चिंपांज़ियों से अलग नहीं थे। यहां तक कि इनकी पेडू भी चिंपांजियों के समान ही है।5

6. रिचर्ड लीके ने मानव शास्त्र के इतिहास में महानतम खोज के रूप में एक खोपड़ी को प्रस्तुत किया, जिसे केएनएम–ईआर 1470 का नाम दिया गया, जिसे उन्होंने 28 लाख वर्ष पुराना बताया। उनके अनुसार, ऑस्ट्रैलोपिथिकस के समान उस जीव की खोपड़ी का आयतन कम था, साथ ही साथ उसका चेहरा आज के इंसानों जैसा था, और वह ऑस्ट्रैलोपिथिकस और इंसान के बीच की गुम कड़ी थी। लेकिन थोड़े ही समय बाद यह पता चला कि केएनएम–ईआर 1470 की खोपड़ी का इंसान–जैसा चेहरा, जो कि विज्ञान जर्नलों और प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिकाओं के मुख्यपृष्ठ पर अक्सर नजर आता था, खोपड़ी के

अंशों के गलत ढंग से जुड़ने का परिणाम था – जो कि जानबूझ कर की गई "गलती" हो सकती है।

जैसा कि आपने देखा ऐसी कोई भी वैज्ञानिक खोज नहीं है जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत का समर्थन, या कम से कम पुष्टि ही करती हो। केवल कुछ वैज्ञानिक है जो इस पर आंख मूंद कर विश्वास करते हैं। ये वैज्ञानिक क्रमिक–विकास की कहानी पर खुद ही विश्वास करते हैं, हालांकि इसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, और झूठे निर्माण और पूर्वाग्रहग्रसित व्याख्याओं द्वारा अन्य लोगों को भी इस पर भरोसा दिलाने का प्रयास करते हैं। कथित तौर पर "इंसान के पूर्वज" के बारे में सभी खबरें और खबरों में प्रयोग किए गए चित्र बिल्कुल मनगढ़ंत हैं। ठोस प्रमाणों ने इंसान के क्रमिक–विकास की कहानी को नष्ट कर दिया है।

अगले पृष्ठों में, हमने खोपड़ियों के जीवाश्मों के ऐसे असंख्य उदाहरण दिए हैं जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत को अमान्य करार देते हैं। ये खोपड़ियां उन प्रमाणों में से एक है, जिनसे पता चलता है कि इनमें से किसी भी जीव–जंतु में पूरे इतिहास के दौरान कभी बदलाव नहीं आया या वह किसी भी अन्य प्रजातियों में रूपांतरित नही हुआ और यह सभी प्रजातियां उन विशेषताओं के साथ हमेशा रही हैं, जो उनमें शुरुआत में थीं।

इन प्रमाणों के साथ ही, डारविनवादी विचारों के गतिरोध और तर्कों की कमी को प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए, डारविनवादी यह दावा करते हैं कि लगातार बदलाव के कारण प्रजातियों में सुधार हुआ है। लेकिन वे उस समरूपता की व्याख्या कैसे करेंगे जो कि सभी जीव–जंतुओं में लगातार दिखाई पड़ रही है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत, जो यह दावा करता है कि इंसानों का विकास बंदरों से हुआ है, को यह भी स्पष्ट करना चाहिए कि अन्य प्रजातियां परिवर्तन की प्रक्रिया से क्यों विकसित नहीं हुईं, जिस तरह डारविनवादियों के अनुसार बंदर विकसित हुए हैं। डारविनववादियों के पास इसका जवाब नहीं है कि भालू दो पैरों वाले जीवित प्राणियों में क्यों परिवर्तित नहीं हुए हैं, या लोमड़ी अपनी अक्ल का विकास करके एक का. बिल प्रोफसर में क्यों विकसित नहीं हुई, या पांडा प्रभावशाली कलाकृतियां बनाने वाले पेंटर में क्यों तब्दील नहीं हुए। डारविनवाद की समझ में नहीं आने वाली तर्कहीनता का ढ़िढोरा पीटने के लिए क्रमिक–विकास के विषय का वर्णन ऐसे उदाहरणों और तर्कों से किया गया है जिन्हें बच्चे भी आसानी से खारिज कर सकते हैं। डारविनवाद को इस तरह प्रस्तुत किया गया है जैसे वह कोई वैज्ञानिक सिद्धांत हो, लेकिन वास्तव में यह अकल्पनीय तर्कहीनता से भरी विचारधारा है।

जैसा कि आप देखेंगे, डारविनवाद इतिहास का सबसे बड़ा घोटाला है, जिसकी स्थापना पूरी तरह झूठों और धोखाधड़ियों और अनुचित व अतार्किक दावों पर हुई है। पूरी दुनिया 21वीं शताब्दी में डारविनवाद के पूरी तरह से नष्ट होने की गवाह बनेगी।

लूसी की कहानी खत्म हुई

ण्ण्ण्अलविदा लूसी
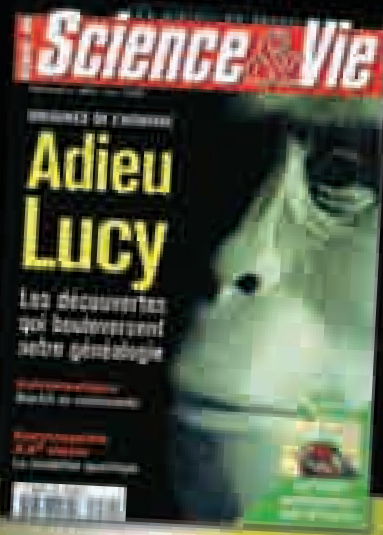
दो क्रमिक–विकासवादी शरीर–रचनाविज्ञानियों, सॉली ज़करमैन और चार्ल्स ऑक्सनार्ड ने "लूसी" नामक फॉसिल की जांच की, इस फॉसिल को 1974 में इसकी खोज के बाद ही सभी मनुष्यों का दो पैरों वाला पूर्वज घोषित किया गया था। उन्होंने इस दावे को खारिज कर दिया और दावा किया कि लूसी की शारिरिक रचना और चलने का तरीका किसी भी रूप में मनुष्यों से नहीं मिलता, और यह केवल बंदरों की एक प्रजाति थी।

बाद के वर्षों में,ˋबपमदबम मज अपम पत्रिका के कवर पर छपे शीर्षक में घोषणा की गई कि लूसी केवल बंदर की एक प्रजाति थी। क्रमिक–विकासवादियों को मनुष्य के काल्पनिक पूर्वज को अलविदा कहना पड़ा।

1. मनुष्य और बंदरों के पैरों में ढेरों शारीर रचना संबंधी असमानताएं हैं। बंदरों के पैर लंबे और झुके हुए हैं, और मनुष्यों के पैरों का अगला हिस्सा तक बंदरों के पैर में नहीं होता।
2. मनुष्य के शरीर का ऊपर का हिस्सा तना हुआ होता है, और हम अपने दोनों पैरों पर सीधे चलते है। यह हमारे चलने–फिरने का विशेष तरीका है। बंदर अपने शरीर के ऊपरी हिस्से आगे की तरफ झुका कर और अतिरिक्त सहायता के लिए अपनी बाहों का प्रयोग करते हुए चलते हैं। मनुष्यों और बंदरों की शारीरिक बनावट के इस अंतर को पाटना असंभव है और यह मानवजाति के क्रमिक–विकास की कहानी को पूरी तरह झुठलाता है।
3. जैसा कि आप तस्वीरों में देख सकते हैं, दूसरी तरफ मुड़ सकने वाला अंगूठा, जो कि इंसानी हाथ की एक अहम खूबी है, बंदर के हाथ में नहीं होता।

ये अंतर भी इस बात को दिखाने के लिए काफी हैं कि बंदर से इंसान बनने की बात किस कदर नामुमकिन है।

उनदसंतैंद वतजां इपत ˋजंकंद मअतपउसम=जपासमतप. ीपांलमेपदपद पउांदैंसैंˎदैं हद्वेजमतउमा पप्रपद लमजमतसप. कपतण

1. रिचर्ड ई. लीके, द मेकिंग ऑफ मैनकाइंड, लंदन : माइकल जोसफ लिमिटेड, 1981, पृ. 43।
2. विलियम आर. फिक्स, द बोन पेडलर, न्यूयॉर्क : मैकमिलन कंपनी, 1984, पृ. 150–153।
3. मार्विन लूबेनाउ, बोन्स ऑफ कंटेंशन, ग्रांड रेपिड्स, एमआई : बेकर, 1992, पृ. 136।
4. हवाला नं. 3 देखें, पृ. 83।
5. रिचर्ड एलन और ट्रेसी ग्रीनवुड, "प्राइमेट्स एंड ह्यूमन एवोल्यूशन" इयर 13 बायोलॉजी टेक्सटबुक में, 1919, स्टूडेंट रिसोर्स एंड एक्टिविटी मैनुअल, (बाइज़ोन इंटरनेशनल, न्यूज़ीलैंड में मुद्रित), पृ. 260।

लोमड़ी की खोपड़ी

उम्र : 86 लाख वर्ष

काल : मिओसीन

स्थान : चीन

यह बताने के लिए कि इंसान विशिष्टतः बंदरों से विकसित हुए हैं, क्रमिक–विकासवादी इसके प्रमाण के तौर पर–कम से कम उनकी नज़रों में–विभिन्न खोपड़ियों का सहारा लेता हैं। इन खोपड़ियों, जो या लुप्त बंदरों की है या इंसान की अन्य वंशों की हैं जो अतीत में किसी समय जीवित थे , का सहारा लेकर तैयार किया गया परिदृश्य पूरी तरह छलावा हैं। इस पूरे समय के दौरान किसी भी जीवित प्राणी की सामान्य शारीरिक बनावट या खोपड़ी की बनावट में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, और यह दावा झूठा है कि बंदर इस तरह के किसी विकास का अंग थे।

जैसा कि यहां दिखाई गई 86 लाख वर्ष पुरानी लोमड़ी की खोपड़ी से पता चलता है, लोमडी की खोपड़ियों में कभी कोई बदलाव नहीं आया है। लोमड़ियों ने अपनी अक्ल का और विकास करने, अपने दिमाग का आकार बढ़ाने और अपनी बनावट में सुधार करके मांसाहारी जीवों के अन्य रूपों में तब्दील होने का फैसला नहीं किया। लोमड़ियां हमेशा लोमड़ियां रही हैं, शेर हमेशा शेर ही बने रहे हैं, और बंदर भी हमेशा से बंदर ही रहे हैं।

जैसा कि ठोस खोज और अधिक स्पष्ट कर देती हैं कि यह दावा कि जीवित प्राणी अन्य जीवों से विकसित हुए, और यह कि इंसानों के पूर्वज बंदरों की प्रजातियां थीं, एक भयानक झूठ है।

भेड़िये की खोपड़ी

उम्र : 95 लाख वर्ष

काल : मिओसीन

स्थान : चीन

95 लाख वर्ष पहले जीवित रहे भेड़िये का यहां दिखाया गया जीवाश्म दर्शाता है कि लाखों वर्षों के दौरान भी भेड़ियों की खोपड़ी की बनावट में कोई अंतर नहीं आया है। यही तथ्य अन्य जीवित प्राणियों पर भी लागू होता है। भेड़ियों, बाघों, घोड़ों, भालुओं या बंदरों की खोपड़ियों में कोई फर्क नहीं आया है। इसलिए क्रम–विकावादियों द्वारा इस बात पर ज़ोर देना अतार्किक है कि बंद. रों ने समय के साथ धीरे–धीरे अपनी शारीरिक रचना में बदलाव किया और मनुष्य में परिवर्तित हो गए।

19वीं सदी के अंतिम दशकों से, डारविनवादी वैज्ञानिक आवरण में छिपे असंख्य झूठों के जरिए ला. `गों को धोखा देते रहे हैं। आज जबकि विज्ञान उन्नत हो चुका है और इंटरनेट की पहुंच दूर–दूर तक हो गई है, इस झूठ को बनाए रखना असंभव है।

उत्तर–पूर्वी बाघ की खोपड़ी

उम्र : 7.9 करोड़ वर्ष

काल : क्रिटेशियस

स्थान : चीन

किसी भी उत्तर–पूर्वी बाघ ने कभी यह नहीं सोचा, “क्यों न मैं दो परों पर चलूं” और अपनी हड्डियों की बनावट में परिवर्तन करके ऐसा करना शुरू कर दिया।

जैसा कि यहां दिखाया गया 7.9 करोड़ वर्ष पुराने जीवाश्म से पता चलता है, उत्तर–पूर्वी बाघ कभी किसी बदलाव की प्रक्रिया से परिवर्तित नहीं हुए। यह सभी जीवित प्राणियों पर लागू होता है। प्रत्येक प्रजाति उसकी खास विशेषताओं के साथ अस्तित्व में लाई गई थी और जब तक वह धरती पर रही वैसी ही बनी रही। यह विचार कि जीवित प्रजातियां लगातार बदलाव से गुजर रही हैं, कि वे आदिम से ज्यादा जटिल प्रजाति में विकसित होती हैं, और यह कि वे किसी और प्रजाति से विकसित होती हैं – केवल कल्पना की उड़ान हैं, जिनके समर्थन में कोई भी वैज्ञानिक खोज नहीं हैं।
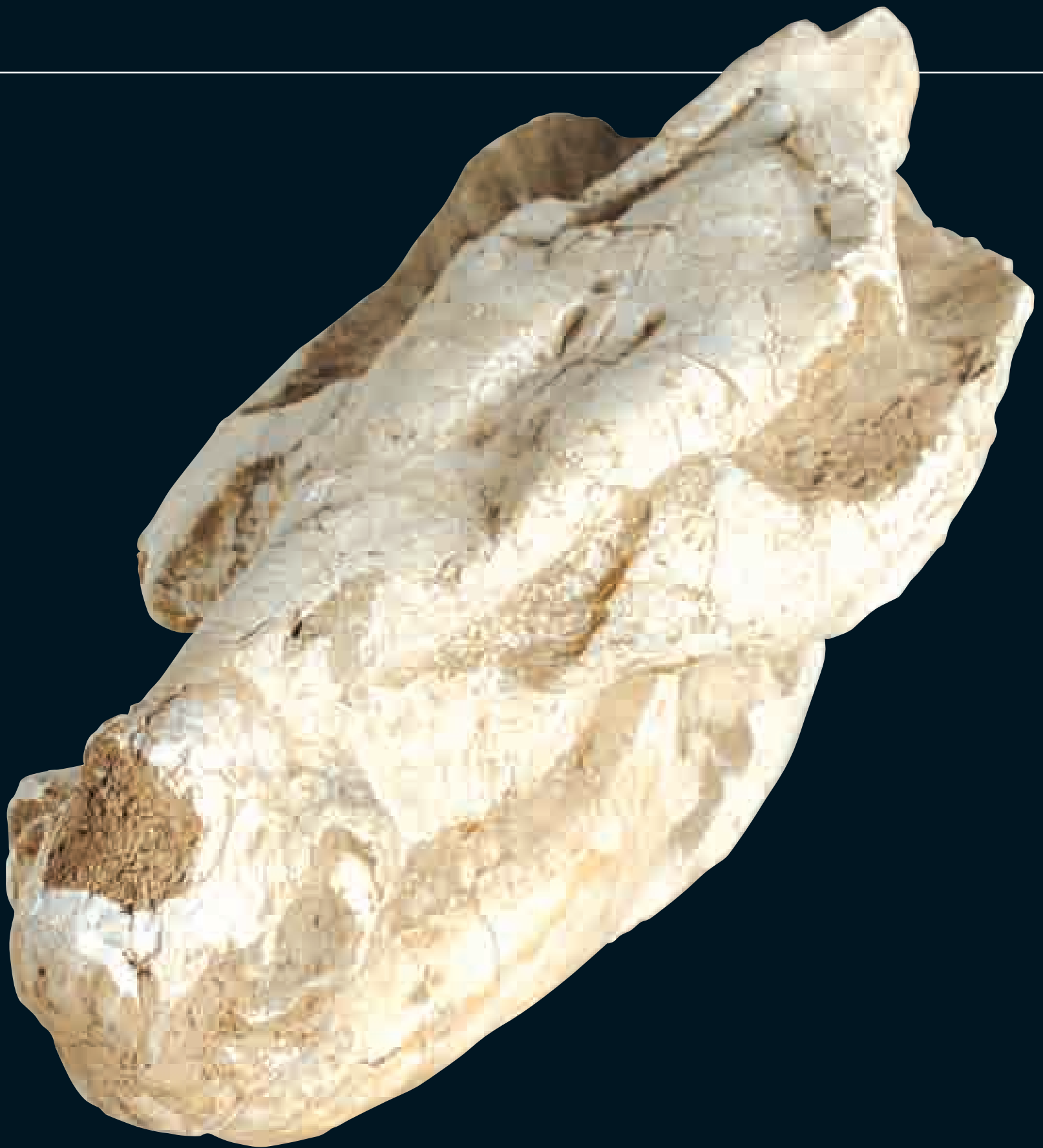
लोमड़ी की खोपड़ी

उम्र : 9.5 करोड़ वर्ष

काल : क्रिटेशियस

स्थान : चीन

डारविनवादी मानते हैं कि अगर बेरोकटोक संयोग लगातार घटने के लिए लाखों वर्ष प्रदान किए जाए, तो इससे चमत्कार हो सकते हैं। वे कल्पना करते हैं कि बेरोकटोक संयोग मिट्टी जैसे निर्जीव पदार्थों को जीवित प्राणियों और जीवित प्राणियों को दूसरे जीवों में बदल सकते हैं – जैसे, मछली को मगरमच्छ में, मगरमच्छों को डायनासोर में, डायनासोर को पक्षियों में, या भालुओं को व्हेल में। वास्तविकता यह है कि किसी भी लोमड़ी या मगरमच्छ, छिपकली या मछली या शैवाल या फूल में इस प्रकार का बदलाव कभी नहीं हुआ है। कई सौ लाख वर्ष पुराने जीवाश्म यह साबित कर चुके हैं कि जीवित प्राणी इस पूरे समय में किसी बदलाव या तब्दीली से नहीं गुज़रे। यहां दिखाया गया 9.5 करोड़ वर्ष पुरानी लोमड़ी की खोपड़ी की तरह, सभी जीवाश्म उजागर करते हैं कि डारविनवाद अमान्य है।

भूरे भालू की खोपड़ी

उम्र : 9 करोड़ वर्ष

काल : क्रिटेशियस

स्थान : चीन

उर्सीडे परिवार के सदस्य भूरे भालू (उर्सोस आर्कटस) के बाल भूरे या कभी–कभी क्रीम रंग के होते है। वे आम तौर पर जंगल से घिरे पहाड़ी इलाकों में रहते हैं।

किसी भी भूरे भालू ने कभी यह नहीं सोचा, "क्यों ना मैं अपनी समझदारी को बढ़ाऊं, अपनी खोपड़ी में सुधार करूं और सभ्यता का निर्माण करूं?" और तत्काल शहरों का निर्माण, कलाकृति बनाना, साहित्य का सृजन और वैज्ञानिक आविष्कार करना शुरू कर दिया। भालू हमेशा भालू के रूप में ही रहे हैं और कभी जीवन के किसी अन्य रूप में परिवर्तित नहीं हुए। सभी जीव–जंतु उन्हीं विशेषताओं के साथ जीवित रहे हैं जो उनके पास हमेशा थीं। यह बिल्कुल अतार्किक और मूर्खतापूर्ण दावा है कि बंदर इंसानों में तब्दील हो गए। और इस दावे की कोई भी वैज्ञानिक बुनियाद नहीं है।

भेड़िये की खोपड़ी

उम्र : 9.3 करोड़ वर्ष

काल : मिओसीन

स्थान : चीन

अगर क्रमिक–विकासवादियों के दावे सही होते, तो आज से 93 लाख वर्ष पहले जीवित भेड़ियों की खोपड़ी आज के समय में जीवित भेड़ियों की खोपड़ी से स्पष्ट तौर पर भिन्न होतीं। लेकिन यहां दिखाया गया नमूने से समझा जा सकता है कि आज पाए जाने वाले भेड़िये की खोपड़ी और 93 लाख वर्ष पुरानी यह खोपड़ी एक समान हैं। इन मध्यवर्ती वर्षों के दौरान किसी भी भेड़िये ने खुद से यह नहीं कहा, "मुझे अपनी क्षमताओं का विस्तार करके एक संगीतमय नाटक क्यों नहीं तैयार करना चाहिए?" और संगीतकार बन गया, या खुद ही यह नहीं सोचा, "क्यों न मैं महलों के डिज़ाइन बनाऊं?" और शिल्पकार बनने की कोशिश करने लगा।

जैसा कि जीवाश्म रिकॉर्ड स्पष्ट तौर पर साबित करते हैं, केवल भेड़िये ही नहीं, बल्कि किसी भी जीवित प्राणी की शारीरिक बनावट में कोई बदलाव नहीं हुआ, और जीवन का कोई भी स्वरूप किसी अन्य रूप में विकसित नहीं हुआ। हालांकि, डारविनवादी यह दावा करते हैं कि क्रमिक–विकास संबंधी बदलाव – जो कि मछली, कीड़ों, रेंगने वाली जीवों, पक्षियों या स्तनपायी जानवरों की शारीरिक विशेषताओं में कहीं नजर नहीं आते – वास्तव में बंदरों में हुए थे; और बंदरों की कुछ प्रजातियां इंसानों में तब्दील हो गईं। फिर भी सभी जीवित प्रजातियों की गतिहीनता यह दर्शाने के लिए पर्याप्त हैं कि यह दावा एक झूठ है।
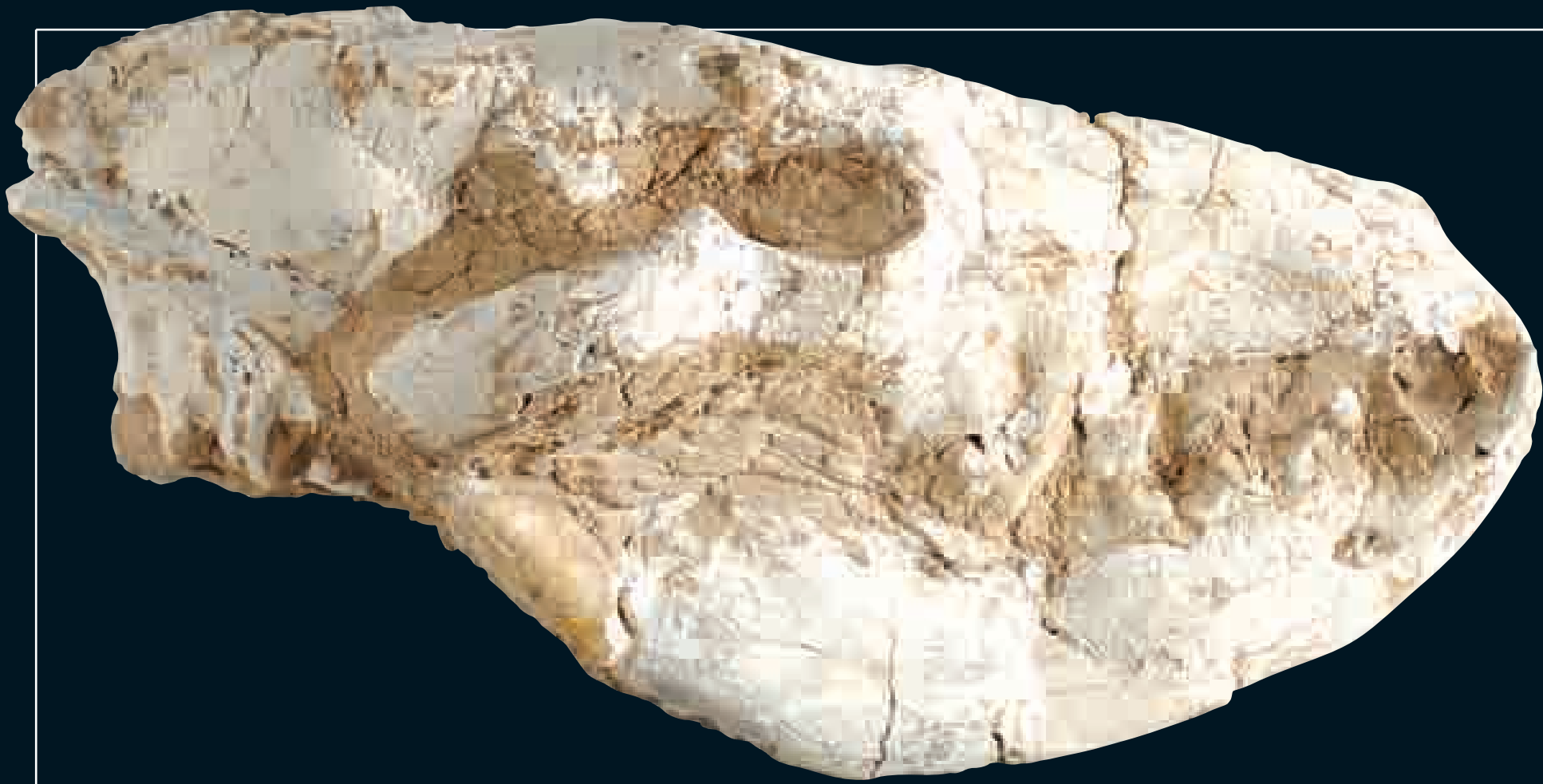
आर्कटिक लोमड़ी की खोपड़ी

उम्र : 82 लाख वर्ष

काल : मिओसीन

स्थान : चीन

बंदरों की नकल करने की काबिलियत से प्रभावित होकर, डारविनवादियों ने दावा किया कि इन जानवरों ने अपनी अक्ल को बढ़ाने का उपाय किया और विकसित होकर इंसान बन गए। जबकि वास्तविकता यह है कि कई जीवित प्राणियों में प्राकृतिक तौर पर नकल करने की क्षमता है या वह अपने अत्यधिक समझदारी भरे व्यवहार के लिए जाने जाते हैं। उदाहरण के लिए लोमड़ियां बेहद समझदार और चालाक होती हैं। लेकिन किसी लोमड़ी ने किसी भी दिन खुद से नहीं कहा, "चूंकि मैं इतनी अक्लमंद जानवर हूं, तो क्यों न मैं वैज्ञानिक बन जाऊं?" और एक दिन खुद के शरीर में मौजूद कोशिकाओं को एक इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप के नीचे जांचने लगी! कितनी भी चालाक क्यूं ना हो, लोमड़ियां हमेशा ही लोमड़ियां रही हैं।

इसी प्रकार, और जैसा कि वैज्ञानिक खोजों द्वारा साबित हो चुका है, बंदर हमेशा बंदर के रूप में ही मौजूद रहे हैं, और इंसान हमेशा ही इंसान के रूप में। क्रमिक–विकासवादियों द्वारा वैज्ञानिक प्रमाणों की उपेक्षा करने और तथ्यों को छिपाने से कुछ नहीं बदलता। जीवन की उत्पत्ति सृजन से हुई है।
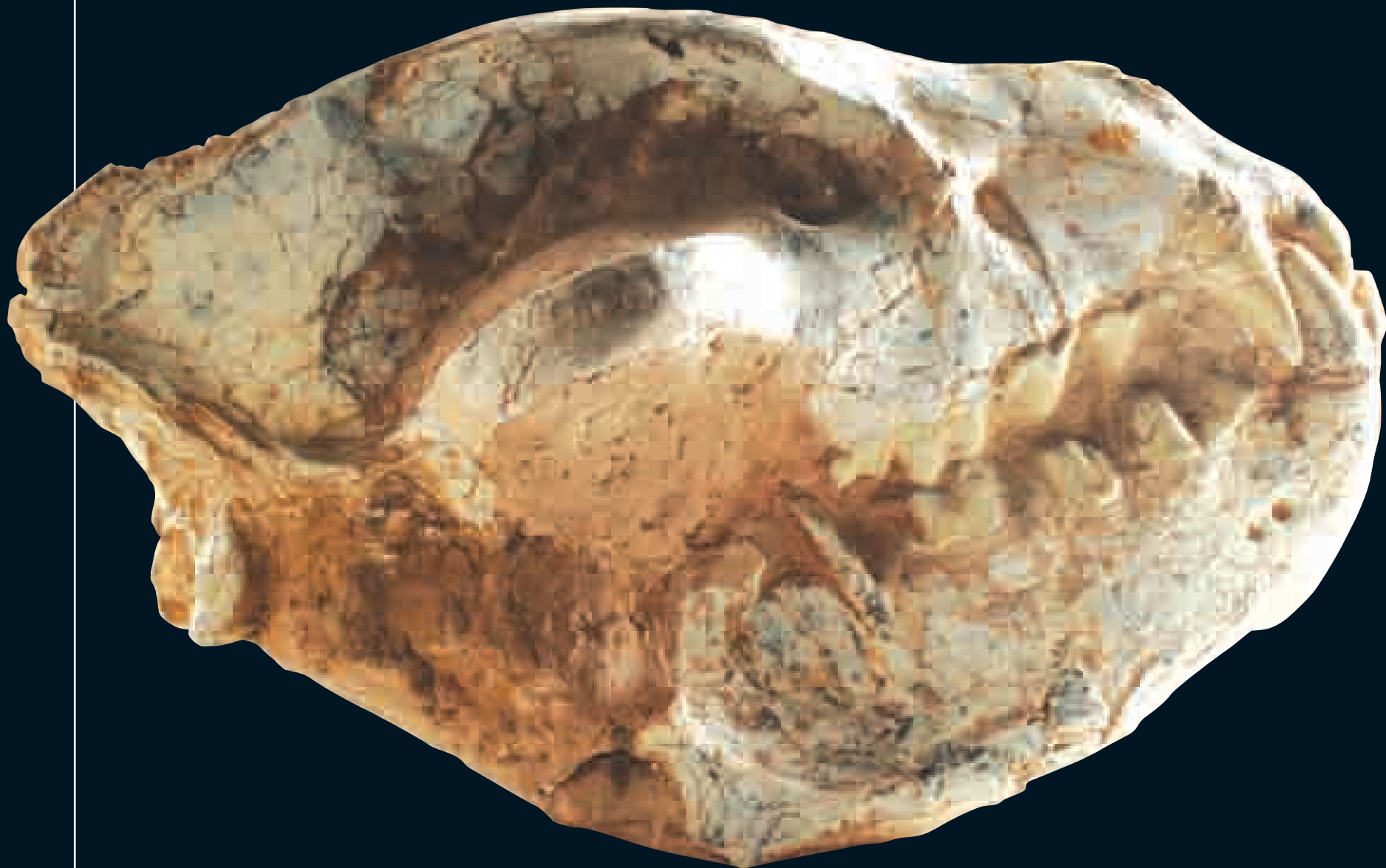
पांडा की खोपड़ी

उम्र : 8.8 करोड़ वर्ष

काल : क्रिटेशियस

स्थान : चीन

फॉसिल रिकॉर्ड साबित कर चुके हैं कि पांडा हमेशा ही पांडा रहे हैं और किसी क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए हैं। ऐसा ही एक प्रमाण यहां दिखाया गया 8.8 करोड़ पुरानी पांडा की खोपड़ी का यह जीवाश्म है।

अब तक जीवित रहे किसी भी पांडा ने खुद से कभी नहीं कहा, "मैं कभी–कभी दो पैरों पर खड़ा हो सकता हूं, तो क्यों न मैं हमेशा ही दो पैरों पर चलूं और सीधे खड़ा रहूं" और फिर अपनी हड्डियों की बनावट को बदलना शुरू कर दिया। दसियों लाख वर्षों के अंतराल के बावजूद पांडा आज भी मौजूद अपनी सभी विशेषताओं के साथ, हमेशा ही बिल्कुल एक जैसे रहे हैं।

पांडा से जुड़ा यह तथ्य अन्य जीवों पर भी लागू होता है। कोई भी जीवित प्राणी कभी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया से नहीं गुज़रा न ही कभी परिवर्तित हुआ।

बाघ की खोपड़ी

उम्र : 8.8 करोड़ वर्ष

काल : क्रिटेशियस

स्थान : चीन

बंदरों की लुप्त प्रजातियों की खोपड़ियों से छेड़छाड़ करना और उन्हें कथित मानव क्रमिक–विकास के प्रमाण के रूप में पेश करना डारविनवादियों की आदत बन चुकी है। हालांकि, उनके छल हर बार उजागर हुए हैं, लेकिन जिस तरह वह लगातार ऐसा करते हैं उससे उनकी निराशा का पता चलता है – क्योंकि जीवन के असंख्य स्वरूपों से संबंधित खोपड़ियों के जीवाश्म में तब्दील को चुके लाखों नमूने इस बात को साबित कर चुके हैं कि ना तो वह जीव–जंतु जो हमे नजर आते हैं, ना ही वे जो कि अतीत में जीवित थे और जो हमें जीवाश्म रिकॉर्ड में प्रचुर मात्रा में मिलते है, कभी क्रमिक–विकास से उत्पन्न हुए।

जीवाश्मों से पता चलता है कि बाघ हमेशा बाघ ही रहे हैं, भेड़िये हमेशा भेड़िये, गैंडे हमेशा गैंडे ही रहे हैं और ऑरंगुटन हमेशा ऑरंगुटन रहे हैं।

यहां दिखाया गया 8.8 करोड़ वर्ष पुराना बाघ का जीवाश्म मात्र एक उदाहरण है। 8.8 करोड़ पूर्व पाए जाने बाघों की खोपड़ियों और आज के खोपड़ियों में कोई भिन्नता नहीं है।

भालू की खोपड़ी

उम्र : 8 करोड़ वर्ष

काल : क्रिटेशियस

स्थान : चीन

जिस तरह मीडिया डारविनवाद को एक "विवादरहित" वैज्ञानिक सत्य के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास करता है, वह वास्तव में विचारधारात्मक संघर्ष का परिणाम है। वास्तव में, डारविनवाद को एक दकयानूसी सिद्धांत के रूप में जाना जाता है जो कि लगातार वैज्ञानिक खोजों से संघर्ष करता रहता है। जीवाश्म जो ऐसी कई खोजों में से एक हैं, जो इस बात की पुष्टि करते हैं।

क्रमिक–विकासवादी यह दावा करते हैं कि इंसान और बंदर कथित तौर पर समान पूर्वज से विकसित हुए है, लेकिन वे दसियों लाख वर्षों के दौरान किसी भी जीवित प्राणी की खोपड़ी, सिर की बनावट, या अस्थि–पंजर में मामूली बदलाव भी न होने के तथ्य को स्पष्ट नहीं कर पाते। इस प्रश्न का जवाब नहीं मिलता कि जब किसी भी अन्य प्रजा. ति की शारीरिक बनावट में कोई बदलाव नहीं हुआ तो बंदर एक दिन इंसानों में कैसे विकसित हो गए। क्रमिक–विक. ासवादियों के पास इस प्रश्न का कोई तार्किक जवाब नहीं है कि बंदरों, और भालुओं ने बोलना, लिखना, फिल्में और मूर्तियां बनाना, प्रभावशाली इमारतों का निर्माण, उपन्यास, कविताएं, नाटक और पटकथाएं लिखना, तकनीकी आविष्कार करना और अंतरिक्ष को समझना क्यों नहीं शुरू कर दिया।

जिस तरह किसी भी भालू ने उन्नत विशेषताएं प्राप्त करने का निर्णय नहीं किया और किसी दूसरे जीव में नहीं बदले, उसी तरह बंदर भी इंसानों में तब्दील नहीं हुए। भालू हमेशा ही भालू रहे हैं, बंदर हमेशा बंदर रहे, और इंसान भी हमेशा ही इंसान रहे हैं।

यहां दिखाया गया 8 करोड़ वर्ष पुराना भालू का जीवाश्म आज के समय में जीवित नमूनों से बिल्कुल अलग नहीं हैं, जो सभी के लिए यह सचाई को उद्घाटित करता है।
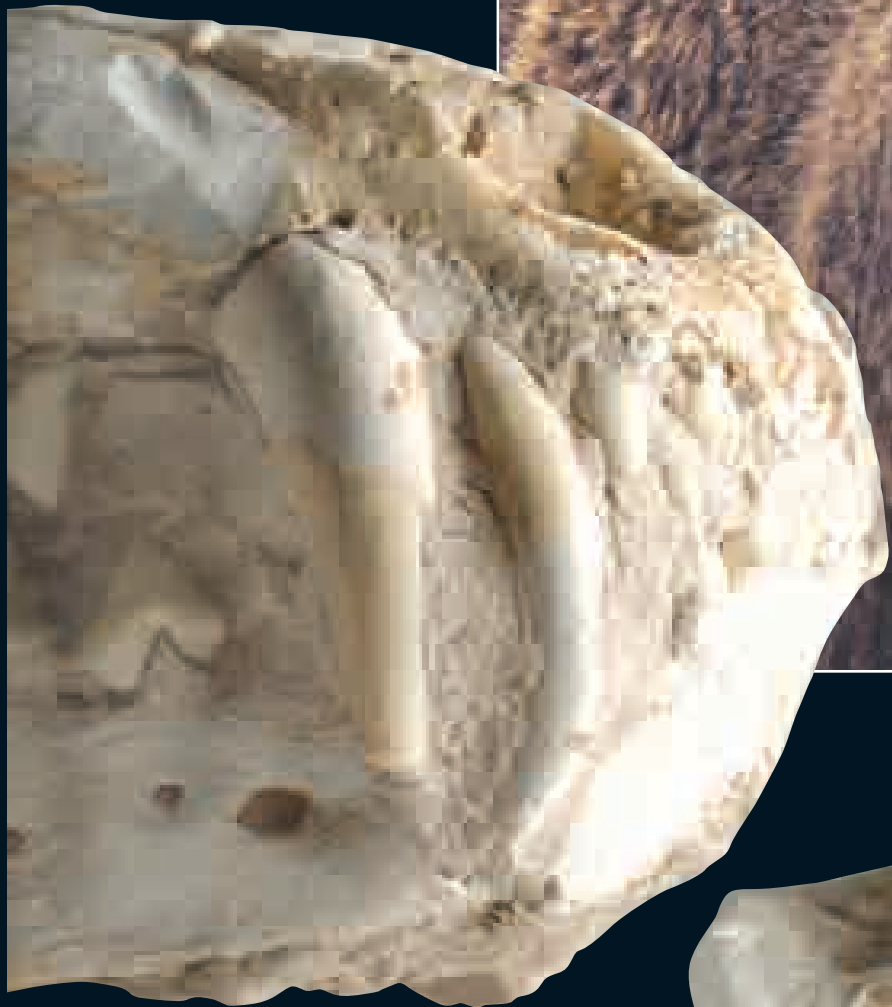
उपसंहार

सृष्टि और सभी जीवित प्राणियों की रचना अल्लाह ने की है

क्रमिक–विकास का सिद्धांत, 19वीं सदी की एक दकयानूसी सोच है, और आज के वैज्ञानिक तथ्यों की रोशनी में पूरी तरह ढह चुका है। डारविनवादियों के पास जीवाश्म रिकॉर्ड का कोई वैज्ञानिक जवाब नहीं है, जो कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत पर घातक चोट करते हैं।

डारविनवादी ऐसा एक भी जीवाश्म नहीं दिखा पाते जो यह बताता हो कि क्रमिक–विकास कभी हुआ था, और इस उम्मीद से अलग–अलग उपायों का सहारा लेते हैं कि ये उनकी हार को ढक लेंगे : कभी वे विभिन्न लुप्त प्रजातियों के जीवाश्मों को मध्यवर्ती रूपों के तौर पर प्रस्तुत करते हैं, जबकि इसमें बिल्कुल भी सच्चाई नहीं है। कभी वे नकली जीवाश्मों के जरिए क्रमिक–विकास को साबित करने का, कम से कम अपनी निगाहों में, प्रयास करते हैं। तो कभी वे पूरी तरह से काल्पनिक चित्रों के द्वारा लोगों को धोखा देने का प्रयास करते हैं। वह ऐसा आभास कराने की कोशिश करते हैं जिससे क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक ऐसी सच्चाई लगे कि जिस पर सवाल नहीं उठाया जा सकता हो और वे भरमाने वाले शीर्षक भी देते हैं जैसे "खोई हुई कड़ी मिली!" या "हमारे पूर्वज जीवाणु थे" या "क्रमिक–विकास को साबित करती नई खोज", वगैरह–वगैरह।

ये हथकंडे 19वीं शताब्दी और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में भले ही सफल रहे हों, जब विज्ञान और तकनीक आज जितने उन्नत नहीं थे। लेकिन 21वीं सदी में, डारविनवादियों को हताश करने वाली सभी चालबाजियां सामने आ चुकी हैं।

आज छोटे बच्चे भी इस बात को समझ रहे हैं कि ऐसा कोई बीच का जीवाश्म नहीं है जिससे क्रमिक–विकास का पता चलता हो और यह कि इंसान बंदरों से पैदा नहीं हुए हैं। इस बात को भी समझ रहे हैं कि जीवित प्राणियों की उच्च विकसित और जटिल संरचनाओं को क्रमिक–विकास के सिद्धांत के संदर्भ में स्पष्ट नहीं किया जा सकता, और यह कि डारविनवाद विज्ञान के इतिहास का सबसे बड़ा धोखा है।

जैसा कि इस आयत में बताया गया है : "बेशक, ये उनके सफेद झूठों में से ही एक है", (सूरत अस–सफ्फात, 151)। कुरान में अल्लाह ने हमें बताया है कि किसी न किसी झूठ के सहारे काफिर यकीन से अपनी पीठ फेर लेते हैं। डारविनवादी खुद विश्वास करने से बचने के लिए और दूसरों को भी धार्मिक नैतिकता के मूल्यों से दूर करने के लिए विभिन्न छल–छद्मों का सहारा लेते हैं और सभी प्रकार के अवैज्ञानिक दावे करते हैं।

वास्तव में, एक आयत में इस बात पर ज़ोर दिया गया है : "और फिर भी वे (काफिर) कहा करते थे" (सूरत अस–सफ्फात, 167) कि जिसे विश्वास नहीं होता वह लगातार बहाने बनाता है। लेकिन वे जल्द ही सत्य को देख और समझ लेंगे। कई आयतों में यह बताया गया है कि एक समय आएगा जब अविश्वासी लोग सत्य को पहचानेंगे और उसे समझेंगे। ये आयतें हमें, सांकेतिक अर्थों में, बताती हैं, कि डारविनवादी भी सत्य को देखेंगे। इनमें से कुछ आयतें इस तरह हैं :

वर्षों तक रेंगने वाले जानवर से पक्षी में संक्रमण के तथाकथित उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया गया आर्केओपटेरिक्स, इसका उदाहरण है कि क्रमिक–विकासवादी कैसे जनता को धोखा देने का प्रयास करते हैं। यह दावा किया गया था कि आर्केओपटेरिक्स, 15 करोड़ वर्ष पुराना एक पक्षी, में रेंगने वाले जानवरों की कुछ विशेषताएं हैं और इसलिए वह रेंगने वाले जानवरों और पक्षियों के बीच की "खोई हुई कड़ी" है। हालांकि, हाल में हुई सभी वैज्ञानिक खोज दर्शाती हैं कि आर्केओपटेरिक्स एक उड़ने वाला पक्षी था, जो कि इन सभी दावों का गलत ठहराता है। यही नहीं, टेरोपॉड डायनासोर पक्षियों के तथाकथित रेंगने वाले पूर्वज की उम्र आर्केओपटेरिक्स से बहुत कम है। यह अन्य तथ्य है जिसे क्रमिक–विकासवादी अनदेखा करने का प्रयास करते हैं।

उन्होंने सुअर के दांत को ''नेब्रास्का के आदमी'' का फॉसिल बताया

1922 में, अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री के निदेशक, हेनरकी फेअरफील्ड ऑस्बॉर्न ने घोषण की कि उनहें स्नेक ब्रूक के निकट पश्चिमी नेब्रास्का में प्लिओसीन काल से संबंधित चबाने वाले दांत का फॉसिल मिला है। इस दांत में कथित तौर पर आदमी और बंदर दोनों की खूबियां थीं। यह फॉसिल ''नेब्रास्का मैन'' के नाम से जाना गया। नेब्रास्का मैन को तुरंत ही एक ''वैज्ञानिक नाम'', हेस्पेरोपिथिकस हेरॉल्डकुकी, दे दिया गया। इस एक दांत के आधार पर नेब्रास्का मैन के सिर और शरीर को फिर बनाया गया था। यही नहीं, प्राकृतिक परिवेश के बीच समूचे परिवार के रूप में नेब्रास्का मैन को उसकी पत्नी और बच्चों के साथ चित्रित भी किया गया। 1927 में, अस्थिपंजर के अन्य हिस्से भी मिल गए। टुकड़ों की इस नई खोज के अनुसार, वह दांत न तो आदमी का था, न ही बंदर का। बाद में पता चला कि वह दांत प्रॉस्थेन्नॉपस नामक जंगली अमेरिकी सुअर की एक विलुप्त प्रजाति से संबंधित था।

लेकिन उन्होंने इसे खारिज कर दिया है और जल्द ही वे जान जाएंगे! (सूरत अस–सफ्फात, 170)

उन्हें खाने–पीने और ऐश करने के लिए छोड़ दो। झूठी उम्मीद के द्वारा उन्हें पथभ्रमित होने दो। वे जल्द ही जान जाएंगे। (सूरत अल हिज्र, 3)

उन्हें नाशुक्रगुजार होने दो उसके लिए, जो हमने उन्हें दिया है! उन्हें मज़े करने दो–वे जल्द ही जान जाएंगे! (सूरत अल–अन्क़बूत, 66)

हम उम्मीद करते हैं कि डारविनवादी भी अपनी अतार्किक जिद्द को छोड़ देंगे और उन सचाईयों को स्वीकारेंगे जिन्हें हर कोई बेहद आसानी से देख सकता है। यह विज्ञान द्वारा उजागर की गई सचाई है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत गलत है, और यह कि सृष्टि और जीवित प्राणियों को अल्लाह ने बनाया है।

सभी जीवाश्म जिनके कुछ उदाहरण इस पुस्तक में दिए गए हैं, अल्लाह के सृजन के महत्त्वपूर्ण प्रमाण हैं। कुरान के कई आयतों में यह उल्लेख किया गया है कि धरती के ऊपर और नीचे इस बात के प्रमाण हैं जिनसे सृजन की सच्चाई का पता चलता है। उदाहरण के लिए, सूरत अस–सफत की आयत 137 में कहा गया है :

और तुम उनके ऊपर से गुजर जाते हो।

सभी स्थितियों में, यह आयत जीवाश्मों की ओर इशारा कर रही है जो जमीन के नीचे पड़े हैं और जीवन के वास्तविक इतिहास को उजागर करते हैं। पूरी दुनिया में धरती के नीचे असंख्य जीवाश्मों के नमूने हैं जो यह दर्शाते हैं कि जीवित प्राणी अस्तित्व में आने के समय से एक जैसे रहे हैं और कई सौ लाख वर्षों के दौरान बदले नहीं हैं – संक्षिप्त में, इनसे पता चलता है कि वे क्रमिक–विकास से विकसित नहीं हुए। इन सभी जीवाश्मों से पता चलता है कि जीवित प्राणी अपनी सभी जटिल विशेषताओं के साथ पूरी तरह विकसित हुए और बिना किसी कमी के अस्तित्व में आए – अन्य शब्दों में, उन्हें अल्लाह ने बनाया था।

हमारे सर्वशक्तिमान अल्लाह ने सभी जीवित प्राणियों को श्रेष्ठतम रूप में बनाया है। सभी अस्तित्वमान प्राणी खुदा की शक्ति और महानता को प्रदर्शित करते हैं। इन तथ्यों की रोशनी में, किसी भी व्यक्ति का यह कर्तव्य है कि वह अपने तर्कों और चेतना का प्रयोग करे और इस पर विचार करे कि सृष्टि का निर्माण सुनिश्चित योजना के तहत किया गया है, उसका कर्तव्य है कि अपने परवरदिगार, अल्लाह की महानता को स्वीकार करे, और यथासंभव तरीके से उसकी सेवा करे।

वह अल्लाह ही है जिसने हर चीज को पैदा किया। जमीन और आसमान की चाबियां उसी के पास है। और जो लोग अल्लह की निशानियों का इंकार करते हैं, यह वह लोग हैं, जो नुकसान में रहेंगे।
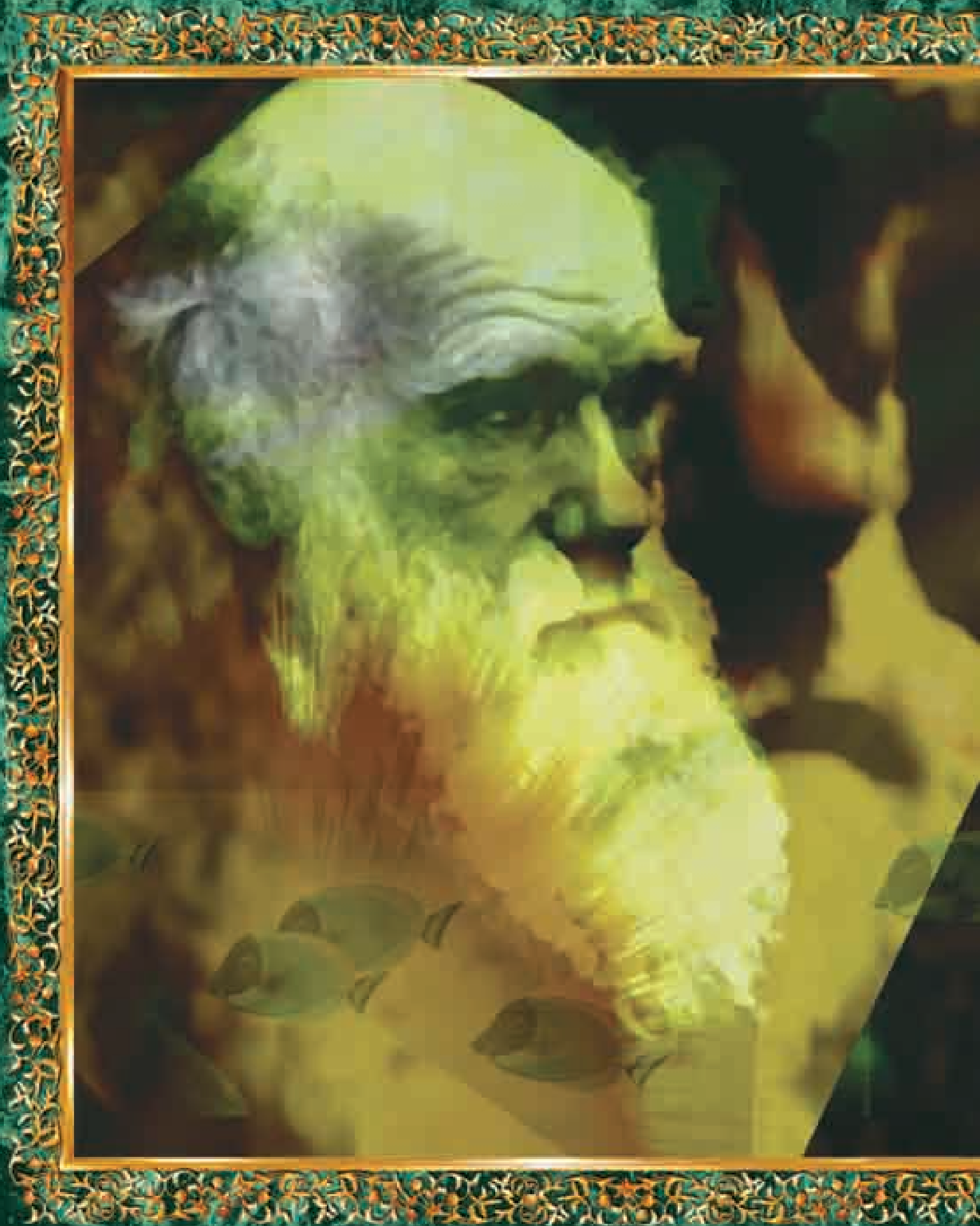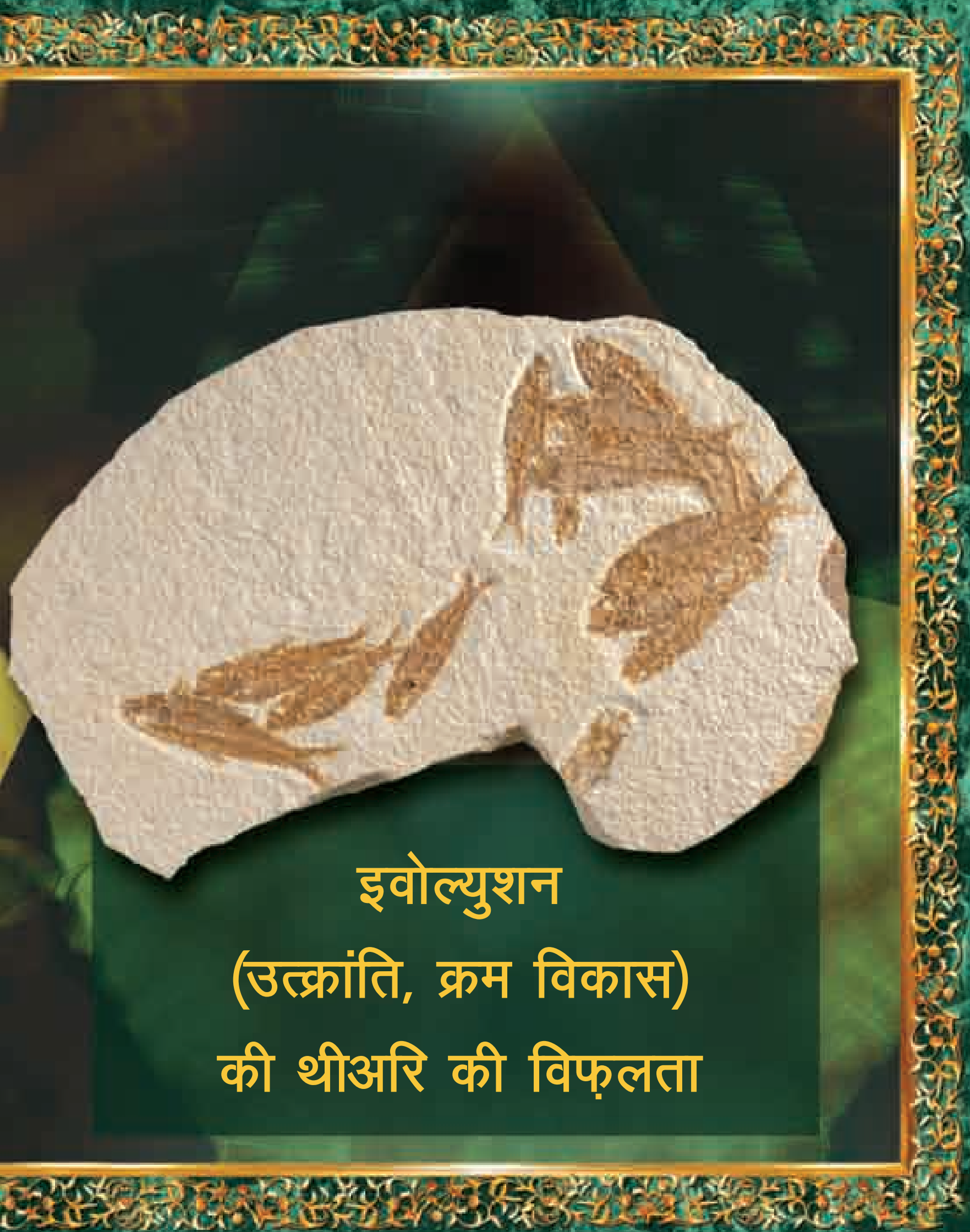
इवोल्युशन
(उत्क्रांति, क्रम विकास)
की थीअरि की विफ़लता

आतंकवाद का वास्तविक सैद्धांतिक मूलः डार्विनिज़्म और भौतिकवाद

ज्यादातर लोग यह मानते है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत सर्वप्रथम चार्ल्स डार्विन ने सामने रखा थी और वह वैज्ञानिक प्रमाण, अवलोकन और प्रयोगों पर आधारित है। हालांकि सच यह है कि डार्विन इस सिद्धांत के आविष्कारक नहीं थे और यह सिद्धांत कोई वैज्ञानिक प्रमाण पर आधारित नहीं है। यह सिद्धांत भौतिकवादी फिलॉसोफ़ी के प्राचीन मत के स्वरूप के साथ अनुकूलन साधने पर आधारित है। इस सिद्धांत को वैज्ञानिक आविष्कारों का समर्थन नहीं है, लेकिन फिर भी भौतिकवादी फिलॉसोफ़ी के नाम पर इस सिद्धांत को बिना सोचे समझे समर्थन दिया जा रहा है।

इस कट्टरता के परिणाम स्वरूप कई दुर्घटनाएँ हुई है। डार्विनिज़्म और उसे समर्थन देनेवाली भौतिकवादी फिलॉसोफी के प्रसार के साथ इस सवाल का जवाब बदल गया है कि "मानव आखिर क्या है?" जो लोग यह जवाब देते थे कि "अल्लाह मानवों का सृजन करता है और उन्हें अल्लाह द्वारा सिखाई गई सुंदर नैतिकता के अनुसार जीना है", ऐसा माननेवाले लोग अब यह मानने लगे हैं कि "मानव संयोग से पैदा हुआ है और अस्तित्व के संघर्ष की लड़ाई द्वारा विकसित हुआ प्राणी है।" इस महान झूठ के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकानी बाकी है। जातिवाद, फ़ासिज़्म, कौमवाद और अन्य कई वैश्विक बर्बर विचारधाराएं इसी झूठ में से पनपते रहे हैं।

इस लेख में डार्विनिज़्म के कारण दुनिया में हुई दुर्घटना की परख की जाएगी और हमारे समय की सबसे महत्त्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं में से एक आतंकवाद की समस्या के साथ जुड़े हुए उसके तारों का पर्दाफाश किया जाएगा.

डार्विन का झूठः "जीवन एक संघर्ष है"

अपना सिद्धांत बनाते वक्त डार्विन ने एक मूलभूत भूमिका के साथ शुरूआत की "जीवित चीजो का विकास अस्तित्व की लडाई पर आधारित है। जो शक्तिशाली होता है वह इस संघर्ष में विजयी होता है। कमज़ोर को पराजय और गुमनामी से दण्डित होना पडता है।"

डार्विन के मतानुसार प्रकृति में अस्तित्व को बचान के लिए बेरहम संघर्ष और निरंतर टकराव चलता रहता है। शक्तिशाली हमेशा कमजोर को पछाड़ता है और इसीके कारण विकास हो सकता है। डार्विन ने अपनी किताब द ऑरिज़िन ऑफ स्पीशीज़ (प्रजातियों का उत्पत्ति) को दिया हुआ सबटाईटल "द ऑरिज़िन ऑफ स्पीशीज़ बाय मीन्स ऑफ नैचुरल सैलेक्शन ऑर द प्रिज़र्वेशन ऑफ फेवर्ड रेसेज़ इन द स्ट्रगल फॉर लाईफ़" (प्रकृति चयन या जीवन के संघर्ष में कृपापात्र जातियों के संरक्षण द्वारा जीवन की उत्पत्ति) उस अभिप्राय को संक्षिप्त रूप से प्रदर्शित करता है।

इसके सिवाय डार्विन ने यह मत भी सामने रखा था कि "अस्तित्व के लिए लडाई'' का सिद्धांत मानव जातियों के समूहों के बीच में भी लागू होता है। उस काल्पनिक दावे के अनुसार "फेवर्ड जातियाँ" संघर्ष में विजयी रही थी।

डार्विन के मुताबिक फेवर्ड जातियाँ गोरे युरोपियन थे। अस्तिव के संघर्ष में अफ्रिकन और एशियन जातियाँ पिछड़ गई थीं। डार्विन और भी आगे बढ़े और सूचित किया की यह जातियाँ बहुत जल्द "अस्तित्व के संघर्ष" में संपूर्ण रूप से हार जायेंगी और अदृश्य हो जायेंगी।

भविष्य के किसी समय में (शतकों द्वारा नापा जानेवाला दूर का समय नहीं) मनुष्य की सभ्य जातियाँ लगभग संपूर्ण नाश कर देंगी और पूरी दुनिया में बर्बर जातियों की जगह लेंगी। इसी दौरान ऐन्थ्रोपोमोर्फस एप्स (मनुष्य जैसे गुणवाले वानर) निःसंदेह मिट जायेंगे। इसके बाद मनुष्य और उसके नज़दीकी सहयोगीओं के बीच की दरार, जैसे आज नीग्रो और ऑस्ट्रेलियाई और गॉरिला के बीच में है, कॉकेशियन और बबून जैसे कुछ निम्न जाति के वानर के बीच की दरार से भी ज्यादा बढ़ेंगी।1

भारतीय मानव–वैज्ञानिक ललिता विद्यार्थी बताती है कि डार्विन की क्रमिक–विकास के सिद्धांत ने किस तरह सामाज़िक विज्ञान पर ज़ातिवाद को थोप दिया है।

उनकी (डार्विन की) सर्वाईवल ऑफ द फ़िटेस्ट थीअरि का उस समय के सामाज़िक वैज्ञानिकों द्वारा गर्मजोशी से स्वागत किया

गया था और वह मानते थे कि मनुष्य जाति ने क्रम विकास के विविध स्तरों को पाया है जिसके परिणाम स्वरूप गोरे मनुष्य की संस्कृति का उद्‌भव हुआ। उन्नीसवीं सदी के दूसरी मध्यावधि तक पश्चिमी वैज्ञानिकों ने विशाल बहुमत द्वारा ज़ातिवाद को हकीकत के तौर पर स्वीकृत कर लिया गया था।2

थॉमस रॉबर्ट माल्थुस

डार्विन की प्रेरणा का स्रोतः माल्थूस की 'थीअरि ऑफ रुथलेसनेस' (क्रूरता कर सिद्धांत)

इस विषय में डार्विन की प्रेरणा का स्रोत ब्रिटिश अर्थशास्त्री थॉमस माल्थूस की किताब एन ऐस्से ऑन द प्रिन्सिपल ऑफ पॉप्युलेशन थी। माल्थुस ने गिनती करके कहा कि मानव जनसंख्या तेज़ी से बढ़ती जा रही है। इस मत के मुता. बिक युद्ध, अकाल और रोग जैसी दुर्घटनाएँ जनसंख्या को काबू में रखती थीं। संक्षेप में कहें तो इस क्रूर दावे के मुताबिक कुछ लोगों को ज़िन्दा रखने के लिए अन्य लोगों को मरना पड़ता था। अस्तित्व का मतलब "स्थायी युद्ध" होने लगा।

19वीं सदी में माल्थुस के विचारों को व्यापक स्वीकृति मिली। खास तौर से यूरोप के ऊँचे घराने के बुद्धिमान लोगों ने माल्थूस के क्रूर विचारों का समर्थन किया। "द सायन्टिफ़िक बैकग्राउन्ड ऑफ द नाज़ी रेस प्युरिफिकेशनश प्रोग्राम' (नाज़ीयों के द्वारा ज़ाति शुद्धिकरण कार्यक्रम की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि) 19वीं सदी का यूरोप माल्थूस के विचारों को जो महत्त्व देता था उसे इस तरह बयान किया गया है।

> उन्नीसवीं सदी के प्रारंभिक मध्यावधि में समग्र युरोप के शासक वर्गों के सदस्य नई आविष्कृत की गई "जनसंख्या समस्या" की चर्चा करने के लिए और गरीबों का मृत्युदर बढ़ाने के लिए माल्थूसियन विचारों पर अमल करने के लिए इकट्ठे हुए थेः "गरीबों में स्वच्छता का अनुमोदन करने के बजाय हमे इससे विरुद्ध आदतों को प्रोत्साहन देना चाहिए। हमारे शहरों में हमें गलियाँ और छोटी बनानी चाहिए, घरों में ज्यादा लोगो को भर देना चाहिए और प्लैग की महामारी फिर से हमला करे ऐसे अवसर पैदा करने चाहिए। हमें देश में गाँवों को स्थिर तालाबों के पास बसाने चाहिए और कच्छी व दूषित जगहों पर आवास बनाने को प्रोत्साहन देना चाहिए," और ऐसी कई बातें थीं।3

इस क्रूर नीति के चलते कमज़ोर और अस्तित्व के संघर्ष में हार चुके लोगों का सफाया हो जायेगा और इसके परिणामस्वरूप जनसंख्या में तेज़ बढ़ोतरी संतुलित हो जायेगी। यह तथाकथित 'गरीबों का दमन' की नीति वास्तव में 19वीं सदी के ब्रिटेन में लागू की गई थी। एक औद्योगिक आदेश जारी किया गया था जिस के मुताबिक आठ और नौ साल के बच्चों को कोयले की खदानों में प्रतिदिन सोलह घंटो तक काम करना पड़ता था और इन भयानक परिस्थितियों में हज़ारों लोग मारे गये थे। माल्थूस की थीअरि "अस्तित्व के लिए संघर्ष" के कारण लाखों ब्रिटिश नागरिकों को पीड़ादायक जीवन जीना पड़ा।

इन विचारों से प्रभावित डार्विन ने इस टकराव की विचारधारा को पूरी प्रकृति पर लागू किया और प्रस्ताव रखा कि मजबूत और सक्षम, अस्तित्व की इस लड़ाई में विजयी होते हैं। इसके अलावा उन्होंने दावा किया की अस्तित्व का तथाकथित संघर्ष प्रकृति का न्यायसंगत और अपरिवर्तनीय नियम है। दूसरी ओर उन्होंने सृजन का इनकार करके लोगो को अपनी धार्मिक मान्यताओं का त्याग करने के लिए आमंत्रित किया और इस तरह 'अस्तित्व के लिए संघर्ष' की क्रूरता के सामने रौड़ा बनने वाले ऐसे सभी नैतिक मूल्यों को हानि पहुँचाई।

लोगो को कठोरता और क्रूरता से भरे कार्य करने के लिए प्रेरित करने वाली इन क्रूर विचारधाराओं के प्रसार के कारण 20वीं सदी में मनुष्य जाति ने भारी कीमत चुकाई है।

"जंगल का कानून" किस और ले गया फ़ासिज़म

डार्विनीज़म ने 19वीं सदी में ज़ातिवाद को बढ़ावा दिया तो "नाज़ीईज़म" जैसी एक ऐसी विचारधारा की नींव भी रखी जिससे दुनिया 20वीं सदी में खूनखराबे में डूब जायें।

नाज़ी विचारधारा के समर्थकों में प्रबल डार्विनिस्ट प्रभाव देखा जा सकता है। एडोल्फ हिटलर और आल्फ्रेड रोसेनबर्ग द्वारा प्रतिपादित की गई इस थीअरि को परखा जाये तो हमको "प्राकृतिक चयन" (नैचुरल सिलेक्शन), "चयनात्मक सहवास" (सिलेक्टिव मेटिंग), और "जातियों के बीच में अस्तित्व के लिए संघर्ष" जैसी धारणाएं देखने को मिलेगी। अपनी किताब का नाम माईन काम्फ़ (मेरा संघर्ष) रखते वक्त हिटलर डार्विन के "अस्तित्व के लिए संघर्ष" की थीअरि और जीत हमेशा सक्षम को मिलती है, के सिद्धांत से प्रेरित हुआ था। हिटलर खास तौर से जातियों के बीच संघर्ष के बारे में बात करता है :

इतिहास उस दिन अपनी चरम सीमा पर पहुंच जाएगा जब जातियां पुरोहित तंत्र पर आधारित अद्‌वितीय वैभव के नए सहस्त्राब्दिक (मिलेनियल) साम्राज्य का उदय होगा, जो कि स्वयं प्रकृति के आदेश के अनुसार होगा।

1933 में न्युरेमबर्ग गुट की रैली में हिटलर ने यह घोषणा की थी कि "उच्च जाति स्वयं निम्न जाति को अपने अधीन कर लेती है। यह एक ऐसा अधिकार है जो हम प्रकृति में देखते है और उसे एकमात्र विश्वसनीय अधिकार कहा जा सकता है।"

इतिहास में प्रवीण सभी विद्वान इस तथ्य को स्वीकार करते है कि नाज़ी समर्थक डार्विनिज़्म से प्रभावित थे। इतिहासकार हिकमैन हिटलर पर डार्विनिज़्म के प्रभाव का वर्णन कुछ इस प्रकार से करते हैं :

(हिटलर) क्रमिक–विकास का एक अडिग विश्वासी और प्रचारक था। हिटलर की मनोविकृति की पेचीदगी चाहे कितनी गहन या गूढ़ हो, यह तय है कि (संघर्ष की विचारधारा महत्त्वपूर्ण थी, क्योंकि) .....उसकी किताब माईन काम्फ़ स्पष्ट रूप से क्रमिक–विकास के कई विचार आगे रखती है, खास तौर पर संघर्ष, सर्वाईवल ऑफ द फिटेस्ट और बहेतर समाज़ बनाने के लिए कमज़ोर लोगों का सफ़ाया जैसे विचारों पर जोर दिया गया है।5

इन विचारों से साथ उभरे हिटलर ने दुनिया को हिंसा के दौर में धकेल दिया जो पहले कभी भी देखा नहीं गया था। कई वंशीय और राजनैतिक समूह, खास तौर से यहूदीओं को नाज़ी नजरबंदी शिविरों में भयानक क्रूरता और कत्लेआम के नजर कर दिया गया। नाज़ी आक्रमण से शुरू हुए द्वितीय विश्वयुद्ध में 5.5 करोड लोगो की जान चली गई। डार्विनिज़्म के 'अस्तित्व के लिए संघर्ष' के सिद्धांत ने दुनिया में एक बडी त्रासदी को जन्म दिया।

रक्तरंजित गठबंधनः डार्विनिज़म और कम्युनिज़म

सामाज़िक डार्विनिज़म के दक्षिण पंथ में फ़ासिस्टस पाये जाते है, वही वामपंथी पांख पर साम्यवादीयों (कम्युनिस्ट) का कब्जा है। साम्यवादी हमेशा से डार्विन की थीअरि के मज़बूत समर्थक रहे हैं।

डार्विनिज़म और साम्यवाद के बीच चोली–दामन का रिश्ता इन दोनो वाद के प्रवर्तकों के बीच के रिश्ते जितना पुराना है। साम्यवाद के प्रवर्तक मार्क्स और एंजल्स ने डार्विन की किताब द ऑरिज़िन ऑफ द स्पीशिज़ के प्रकट होते ही उसे पढ़ लिया और उसके "द्वन्द्वात्मक भौतिकवादी" रुख से आश्चर्यचकित हुए। डार्विन के प्रभाव तले लिखी गई अपनी किताब द डायालेक्टिक्स ऑफ नेचर में एंजल्स ने डार्विन पर प्रशंसा के पुल बांधो और किताब के एक अध्याय "द पार्ट प्लेड बाय लैबर इन द ट्रांज़िशन फ्रोम एप टु मैन" (एप से मानव के पारगमन में मज़दूरी की भूमिका) में उन्होंने क्रमिक विकास के सिद्धांत में अपना योगदान देने की कोशिश की।

मार्क्स और एंजल्स के पदचिह्नों पर चलनेवाले रूसी साम्यवादी जैसे कि प्लेखानोव, लेनिन, त्रोत्स्की और स्टालिन सभी डार्विन की क्रमिक–विकास के सिद्धांत थीअरि से सहमत हुए। रूसी साम्यवाद के प्रवर्तक के रूप में देखे जाने वाले प्लेखानोव ने मार्क्सिज़म को "सामाज़िक विज्ञान में डार्विनिज़म का उपयोग" (डार्विनिज़म इन इट्स एप्लिकेशन टु सोशियल सायन्स" माना।6

त्रोत्स्की ने कहा था, "डार्विन की खोज़ जैविक (ऑर्गेनिक) पदार्थ के पूरे क्षेत्र में तर्कविद्या (डायालेक्टिक) की शानदार विजय है।"7

"डारविनवाद की शिक्षा" की साम्यवाद के लिए कैडर्स तैयार करने में अहम भूमिका है। उदाहरण के तौर पर इतिहासकार एक हकीकत पर ध्यान देते हैं कि स्टालिन अपनी जवानी में धार्मिक थे पर डार्विन की किताबों के कारण वह नास्तिक हो गये।8

चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना करने वाले और करोड़ों लोगों का कत्ल कराने वाले माओ ने खुलेआम कहा कि "चाईनीज़ समाजवाद डार्विन और क्रमिक विकास की थीअरि की नींव पर रचा हुआ है।"9

हार्वर्ड युनिवर्सिटी के इतिहासकार जैम्स रीव पर्सी अपने शोध पर आधारित किताब चाइना और चार्ल्स डार्विन में माओ और चाईनीज़ साम्यवाद पर डार्विनिज़म की असर का विस्तृत विवरण देते हैं।10

संक्षिप्त में क्रमिक–विकास का सिद्धांत और साम्यवाद के बीच अटूट संबंध है। यह थीअरि दावा करती है कि जीवित वस्तुएं संयोग से पैदा हुई है और वह नास्तिकता के लिए तथाकथित वैज्ञानिक समर्थन देती है। नास्तिकता की विचारधरा पर आधारित माना जानेवाला साम्यवाद इसी कारण से डार्विनिज़म से मज़बूत रूप से जुडा हुआ है। इसके सिवाय क्रमिक–विकास की थिअरी यह मुद्दा सामने रखती है कि टकराव (दूसरे शब्दों में कहे तो "अस्तित्व के लिए संघर्ष") के कारण प्रकृति में विकास संभव है और वह "डायालेक्टिक्स" की विचारधारा को समर्थन देता है जो साम्यवाद के लिए बुनियाद है।

अगर हम "डायालेक्टिक टकराव" (जिससे 20वीं सदी के दौरान कुछ 12

करोड़ लोगों की मौत हुई थी) की साम्यवादी विचारधारा को "किलींग मशीन" मान ले तो डार्विनिज़्म ने पृथ्वी पर जिन दुर्घटनाओं को जन्म दिया है उनके परिमाणों को हम बहेतर तरीके से समझ सकते हैं।

डार्विनिज़्म और आतंकवाद

हमने जो अब तक समझा है उसके मुताबिक डार्विनिज़्म हिंसा की विविध विचारधाराओं का मूल है जिसने 20वीं सदी में मानवजाती में तबाही फैलाई है। इस समझ और पद्धत्ति के पीछे मूलभूत धारणा यह है "जो हम में से एक नहीं है उसे लड़ना।"

हम इसे निम्नलिखित तरीके से समझा सकते हैं :

दुनिया में विविध मान्यताएँ, विश्वमत और फिलोसोफ़ी मौजूद है। यह बहुत प्राकृतिक है कि इन तमाम विचारधाराओं में ऐसे लक्षण है जो एक–दूसरे का विरोध करते हैं। हालांकि, यह विविध विचारधराएं निम्नलिखित दो में से एक तरीके से एक–दूसरे को देख सकते हैं :

1) जो अपने जैसे नहीं है उनके अस्तित्व की वह आदर कर सकते है और मानवतापूर्ण रीत अपना कर उनके साथ बातचीत आरंभ करने का प्रयास कर सकते हैं। यह रीत सचमुच कुर्रान की नैतिकता के अनुरूप हैं।

2) वह अन्यो के साथ लड़ाई करने को पसंद कर सकते है और उन्हें हानि पहुँचा कर लाभ लेने का प्रयास कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो एक जंगली जानवर की तरह बर्ताव कर सकते हैं। यह रीत भौतिकवाद द्वारा उपयोग में ली जाती है जोकि अधार्मिक है।

हम जिस खौफ़ को आतंकवाद के नाम से पहचानते है वह और कुछ नहीं पर दूसरे दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति है।

जब हम इन दोनों रास्तों के बीच के अंतर को ध्यान में लेते है तब हम देख सकते हैं कि "मनुष्य एक झगड़ालू प्राणी" का जो विचार डार्विनिज़्म ने लोगों पर अवचेतन तरीके से (सबकॉन्शियसली) थोप दिया है। वह विशेष रूप से प्रभावकारी है। व्यक्ति. विशेष और समूह जो टकराव का रास्ता चुनते हैं उन्होंने डार्विनिज़्म और उस विचारधारा के सिद्धांतों के बारे में कभी कुछ सुना न हो यह संभव है। लेकिन आखिरकार वे ऐसे अभिप्राय से सहमत होते है जिसका फिलोसोफिकल आधार डार्विनिज़्म पर टिका हुआ है। 'इस दुनिया में मज़बूत ही टिकता है', "बडी मछली छोटी मछलियों को खा जाती हैं", "युद्ध एक गुण है", और "मनुष्य युद्ध छेड़ कर प्रगति करता है" जैसे डार्विनिज़्म पर आधारित नारों के चलते वे इस अभिप्राय की सार्थकता में विश्वास करने लगते हैं। अगर डार्विनिज़्म को अलग कर दिया जाए तो यह वाक्य केवल खोखले नारे ही रह जायेंगे।

वास्तव में जब डार्विनिज़्म को अलग कर दिया जाता है तब "टकराव" की कोई फिलोसोफ़ी टिक नहीं पाती। वि व में सबसे अधिक लोग जिन तीन ई वरीय धर्मों में मानते हैं वह इस्लाम, ईसाई और यहूदी धर्म हैं जो हिंसा का विरोध करते हैं। यह तीनों धर्म वि व में शांति और सौहार्द लाना चाहते हैं और निर्दोष लोगों पर क्रूरता, त्रासदी और हत्या का विरोध करते हैं। टकराव और हिंसा उस नैतिकता का को बरबाद करती है जो अल्लाह ने मनुष्य के लिए तय की है और यह अस्वाभाविक व अनचाही विचारधाराऐं हैं। हालांकि, डार्विनिज़्म टकराव और हिंसा को प्रा—तिक, न्यायसंगत और अनिवार्य परिकल्पना बताता है जिनका अस्तित्व जरूरी है। इसी कारण के चलते अगर कुछ लोग इस्लाम, ईसाई और यहूदी धर्मों की विचारधारा और प्रतीकों का उपयोग कर इन धर्मों के नाम पर आतंकवादी हरकतें करते है तो आप निःसं ाय कह सकते हैं कि यह लोग मुस्लिम, ईसाई या यहूदी नहीं हैं। वे वास्तविक सामाज़िक डार्विनिस्टस हैं। वे धार्मिक लिबास में छिपे हुए शैतान हैं लेकिन वे असली समर्थक नहीं हैं। अगर वे धर्म की सेवा करने का दावा करते भी हैं तो भी वे वास्तव में धर्म और उसके समर्थकों के वास्तविक शत्रु हैं। इसका कारण यह है कि वे क्रूरता से ऐसा गुनाह करते हैं जिस को धर्म समर्थन नहीं देता और इससे लोगों की निगाह में धर्म की छवि बिगड़ती है।

वो चाहे किसी भी विचारधारा को समर्पित हो, जो लोग सारी दुनिया में आतंक फैलाते है वे असल में डार्विनिस्टस है. डार्विनिज़्म एक ही एसी फिलोसोफ़ी है जो टकराव को एक मूल्य समज़ती है और इसके लिए प्रेरित करती है.

यही कारण है कि हमारी पृथ्वी को आतंकवाद से ग्रस्त करने वाला कोई ईश्वरीय धर्म नहीं बल्कि नास्तिकता है और इस नास्तिकता की अभिव्यक्ति करने वाली विचारधारा है : "डार्विनिज़्म" और "भौतिकवाद"।

इस्लाम आतंकवाद का स्त्रोत नहीं है, बल्कि उसका उपाय है

कुछ लोग कहते हैं कि वे धर्म का कार्य करते हैं लेकिन वे अपने धर्म का गलत मतलब निकालते हैं ंद मगंउचसमण जीम इमेज ूल जव नदकमतेजंदक ` तमसपहपवद पे जव `जनकल पजे कपअपदम `वनतबमण

और उसका गलत आचरण करते हैं। इसलिए इन लोगों का उदाहरण समक्ष रख कर धर्म के बारे में दृष्टिकोण बनाना गलत होगा। धर्म को समझने का उत्तम तरीका उसके ईश्वरीय स्त्रोत का अध्ययन है।

इस्लाम का पवित्र स्त्रोत कुर्रान है; और कुर्रान में नैतिकता का मानक कुछ पश्चिमी देशों के लोगों के मन में प्रवर्तमान छवि से बिल्कुल अलग है। कुर्रान नैतिकता, प्रेम, करूणा, दया, नम्रता, बलिदान, सहिष्णुता और शांति के विचारों पर आधारित है और इस नैतिकता का सही पालन करने वाला मुस्लिम सबसे विनम्र, विचारशील, सहिष्णु, विश्वसनीय और भद्र होगा। वह अपने आसपास प्रेम, मान, सौहार्द और जीवन के आनंद का प्रसार करेगा।

इस्लाम शांति और कल्याण का धर्म है

इस्लाम शब्द का मूल उस शब्द में है जिसका मतलब अरबी भाषा में "शांति" होता है। इस्लाम वह धर्म है जो मनुष्यजाति के लिए शांतिपूर्ण जीवन प्रदान करने हेतु अवतरित किया गया है जिससे धरती पर उसके माध्यम से अल्लाह की अनन्त करूणा और दया की अभिव्यक्ति हो। अल्लाह उन सभी लोगों को इस्लामिक मूल्यों की ओर बुलावा देता है जिनके माध्यम से पूरी दुनिया में दया, करूणा, सहिष्णुता और शांति की अनुभूति की जा सके। सुरत अल–बकरा आयत 208 में अल्लाह इस्लाम के समर्थकों को कुछ इस प्रकार से संबोधित करते हैं :

ऐ वोह लोगों जो आस्था रखते हो। संपूर्णता से शांति में प्रवेश करो (इस्लाम में), शैतान के पदचिह्नों का अनुसरण न करो। वह तुम्हारा एक खुला हुआ दुश्मन है। यह आयात स्पष्ट रूप से कहती है कि सिर्फ "इस्लाम में प्रवेश करने" से ही, मतलब यह है कि कुर्रान के मूल्यों के अनुसार जीने से ही सुरक्षा सु. निश्चित की जा सकती है।

अल्लाह लोगो को ांति और सुरक्षा बनाने के लिए आह्वान करते है जब कि अधार्मिक काफिर विचारधाराएं टकराव और आतंक को बढावा देती है.

अल्लाह ने अन्याय की आलोचना की है

अल्लाह ने लोगों को बुराई से दूर रहने का आदेश दिया है; अल्लाह ने अविश्वास, अनैतिकता, बगावत, क्रूरता, आक्रमकता, कत्ल और रक्तपात से मना किया है। जो इस आदेश को मानने में विफ़ल होते हैं उन्हें अल्लाह "शैतान के पदचिह्नों पर चलनेवाले" और कुर्रान में जिसे खुलेआम पापी माना गया है। इस बारे में कुर्रान की कई आयातों में से कुछ आयातें इस प्रकार हैं। अमतेमे वद जीपे उंजजमत पद जीम ंद तमंकरू

लेकिन वोह जो अल्लाह के करार के साथ सहमत होने के बाद उसे तोड देते है और अल्लाह ने जिसे जोड़ने का आदेश दिया है उसको तोड़ते हैं और धरती पर भ्रष्टाचार फैलाते हैं। ऐसे लोगों के लिए बुरा ठिकाना है। (सुरत अर–राद : 25)

और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें दे रखा है उसमें से आखिरत का घर बनाने का उपाय करो और अपने दुनयवी हिस्से को भी न भूलो। और जैसे अल्लाह ने तुम्हारे साथ अच्छा बर्ताव किया है तुम अच्छा बर्ताव करो और धरती पर फसाद (बिगाड़) न फैलाओ। वास्तव में, अल्लाह फसाद फैलाने वालों को पसंद नहीं करता। (सूरत अल–कसस : 77)

इन आयातों को पढ़कर हम समझ सकते हैं कि इस्लाम धर्म में आतंकवाद और हिंसा समेत हर तरह के अनिष्टकारी कामों से मना किया है और ऐसे काम करनेवालों की निंदा की है। एक मुस्लिम दुनिया को खुबसूरती प्रदान करता है और दुनिया को सुधारता है.

इस्लाम सहिष्णुता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का समर्थन करता है

इस्लाम वह धर्म है जो अभिव्यक्ति, विचार और जीवन की स्वतन्त्रता प्रदान करता है। लोगों में तनाव, विवाद, झूठी निन्दा और नकारात्मक विचारधारा को रोकने का इस्लाम ने आदेश दिया है।

इसी तरह से इस्लाम आतंकवाद और हिंसा से ज़ुड़ी सभी प्रवृत्तियों का दृढ़ता से विरोध करता है।

धर्म में मामले कोई दबाव नहीं है। सत्य मार्गदर्शन गुमराही के मार्ग से स्पष्ट कर दिया गया है। इसलिए जो झूठे खुदाओं को अस्वीकार करता है और अल्लाह में आस्था रखता है उसने अत्यंत दृढ़ सहारे को पकड़ लिया है जो कभी नहीं छूटेगा। अल्लाह सब सुनता और जानता है। (सुरत अल–बकारा : 256)

इसलिए उन्हें याद दिलाएं, आपका काम सिर्फ़ याहिदानी कराना है। आप उन्हें अल्लाह में आस्था रखने के लिए विवश नहीं कर सकते। (सुरत अल–ग़ाशियाह : 22)

लोगों पर दबाव डालना कि वह धर्म में आस्था रखें या उसके स्वरूपों को मानें, यह इस्लाम के सार और स्पिरिट की विरुद्ध है। इस्लाम के मुताबिक सच्ची श्रद्धा मात्र ईच्छाशक्ति और विवेक की स्वतंत्रता से ही मुमकिन है। इतना जरूर है कि मुस्लिम एक–दूसरे को कुर्रान की नैतिकता के बारे में सलाह मशवरा दे सकते हैं लेकिन वह किसी भी प्रकार के बल, शारीरिक या मानसिक दबाव का प्रयोग नहीं कर सकते। इसके अलावा वे किसी को इस्लाम धर्म में लाने के लिए किसी भी विशेषाधिकार का प्रयोग नहीं करेंगे। थोड़ी देर के लिए हम एक ऐसे समाज की कल्पना करें जो इसके विपरीत हो। उदाहरण के तौर पर, एक ऐसा स्थान जहां लोगों पर धर्म अपनाने के लिए कानूनी दबाव डाला जाता है। समाज का ऐसा मॉडल (स्वरूप) इस्लाम के संपूर्ण खिलाफ़ है क्योंकि श्रद्धा और भक्ति ऐसे मूल्य हैं जिन्हें व्यक्ति ईच्छाशक्ति की स्वतंत्रता द्वारा ही अल्लाह की और मोड़ा जा सकता है। अगर कोई तंत्र लोगों पर आस्था और भक्ति थोप देता है तो वह लोग सिर्फ़ उस तंत्र के भय से ही धार्मिक बनेंगे। धार्मिक द्रष्टिकोण से देखें तो धर्म की पालना अल्लाह की खुशी पाने के लिए की जानी चाहिए। ऐसे वातावरण में जहां लोगों का विवेक स्वतंत्र हो।

अल्लाह ने निर्दोष लोगों की हत्या को हराम (गैरकानूनी) बना दिया है

कुर्रान के मुताबिक निर्दोष व्यक्ति की हत्या करना सबसे बड़ा पाप है।

सिवाय दो कारणों के जब कोई किसी का कत्ल करता है (तो उसे सजा देने के लिए) या फिर धरती पर भ्रष्टाचार फैलाने के लिए किसी को मारना – इन कारणों के अलावा अगर कोई किसी व्यक्ति का खून बहाता है तो यह समस्त मानवजाति की हत्या के बराबर है। और अगर कोई किसी अन्य व्यक्ति को जीवन देता है तो यह समस्त मानवजाति को जीवन देने के बराबर है। हमारे दूत उनके पास स्पष्ट संकेतो से साथ आयें लेकिन इसके बावजूद भी उनमें से कई लोगों ने धरती पर अत्याचार किये हैं। (सुरत अल–मइदाः 32)

जो अल्लाह के साथ किसी और खुदा को नहीं पुकारते और किसी ऐसे व्यक्ति को जिसके कत्ल को अल्लाह ने हराम कर दिया हो इसे कत्ल नहीं करते मगर कोई न्यायसंगत कारण के और न वह व्याभिचार करते हैं। जो कोई इसके विपरीत करेगा वह कड़े दंड को आमंत्रण देगा। (सुरत अल–फुरकान : 68)

इन आयातों में बिना किसी कारण के एक निर्दोष व्यक्ति की हत्या करने वाले को अपार दंड देने की धमकी दी गई है। अल्लाह ने बताया है कि किसी भी एक व्यक्ति की हत्या करना समस्त मानवजाति की हत्या करने के बराबर है। अल्लाह की बनाई हुई सीमाओं का पालन करनेवाला व्यक्ति किसी भी व्यक्ति को हानि नहीं पहुँचा सकता तो फिर हजारों निर्दोष लोगों का कत्ल करना उसके लिए बहुत दूर की बात है। जो लोग यह मानते है कि वे इस दुनिया में न्याय और सज़ा को टाल सकते हैं वे अपने इरादों में कभी सफ़ल

नहीं हो पायेंगे क्योंकि उन्हें अल्लाह की मौजूदगी में अपने कारनामों का हिसाब देना होगा। इसलिए जो ईमान वाले हैं वह जानते हैं कि मौत के बाद उन्हें अपने कर्मों का हिसाब देना होगा और वह बड़ी सूक्ष्मता से अल्लाह की बनाई हुई मर्यादाओं का पालन करते हैं।

अल्लाह ईमान वालों को दयावान और कृपालु बनने का आदेश देते हैं।

कुर्रान में इस्लामिक नैतिकता का इस प्रकार वर्णन दिया गया है :

"फिर उन लोगों में से होता जो 'ईमान' लाये और एक–दूसरे को सब्र की ताकीद की ओर दया करने की ताकीद की।" (सुरत अल–बलाद : 17–18)

हमने इस आयत में देखा कि "एक–दूसरे को दया के लिए ताकीद की" यह अल्लाह द्वारा अपने सेवकों को भेजे गये नैतिक आद. `शों में से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आदेश है ताकि जिससे उन्हें निजात और दया मिले और वह ज़न्नत को प्राप्त कर सकें।

कुर्रान में दर्शाया गया इस्लाम आधुनिक, प्रबुद्ध और प्रगतिशील धर्म है। एक मुस्लिम शांतिप्रिय इंसान है; वो लोकतांत्रिक प्रवृत्ति रखने वाला सुसंस्कृत, प्रबुद्ध, ईमानदार, कला और विज्ञान का ज्ञाता होने के साथ सहिष्णु है।

कुर्रान के उमदा नैतिक शिक्षण के साथ शिक्षित हुआ मुस्लिम हर व्यक्ति से प्रेम से मिलता है जैसी की कुर्रान की मंशा है। वह हर विचार के प्रति आदर दिखाता है और वह कला और सौंदर्य की कदर करता है। हर मामले में वह समझौताकारी है, तनाव मिटाता है और शांति की स्थापना करता है। ऐसे व्यक्तियों से बने समाज में आज के सबसे आधुनिक राष्ट्रों की तुलना में ज्यादा विकसित संस्कृ ति, उच्च सामाज़िक नैतिकता, अधिक आनंद, खुशी, न्याय, सुरक्षा, समृद्धि होगी।

अल्लाह ने सहिष्णुता और क्षमाशीलता का आदेश दिया है

क्षमाशीलता और सहिष्णुता की धारणा को इन शब्दों में इस तरह प्रदर्शित किया गया है : "नर्मी और क्षमा से काम लो" (सुरत अल–आराफ : 199) यह इस्लाम के सबसे मूलभूत सिद्धांतों में से एक है। जब हम इस्लाम के इतिहास की ओर देखते हैं तो पाते हैं कि कुर्रान की नैतिकता को जिस तरह मुस्लमानों ने सामाजिक जीवन में ढ़ाला है वह स्पष्ट दिखाई पड़ती है। मुस्लिम हमेशा अपने साथ स्वतंत्रता और सहिष्णुता का वातावरण लाये हैं और जहां भी गये हैं वहां गैरकानूनी रीति–रिवाज को खत्म कर दिया। उन्होंने विभिन्न धर्म और संस्कृति के मानने वालों और विभिन्न भाषाएं बोलने वालों को एक छत के नीचे शांति और सौहार्द के साथ रहना सिखाया और अपने भाईयों को शांति और सौहार्द की सौगात दी है। विशाल क्षेत्र में फैला हुआ उसमानी साम्राज्य का सदियों तक अस्तित्व में बने रहने के मुख्य कारणों में से एक यह है कि उसके सामाजिक वातावरण में इस्लाम द्वारा लाई गई सहिष्णुता और आपसी मेल–मिलाप था। अपने सहिष्णु और प्रेममय बर्ताव से सदियों तक जाने जाने वाले मुस्लिम हमेशा दयालु और न्यायी रहे हैं। इस बहुराष्ट्रीय ढ़ांचे में सभी जातीय समूह अपने धर्मों और उनके नियमों के अनुसार जीने के लिए स्वतंत्र हैं।

सच्ची सहिष्णुता को अगर कुर्रान के बताये हुए मार्गदर्शन के मुताबिक कार्यांवित किया जाए तभी दुनिया में शांति और कल्याण लाया जा सकता है। इस हकीकत की ओर कुरआन की इस आयत में इस तरह ध्यान दिलाया गया है :

बराबर हो ही नहीं सकती भलाई और बुराई। तुम (बुराई को) उस चीज़ से टालो जो उत्तम है, फिर कया तुम देखोगे कि तुम्हारा और जिसके बीच वैर था (वह ऐसा हो जाएगा) मानो वह कोई आत्मीय मित्र है। (सुरत अल–फुस्सिलतः 34)

उपसंहार

इन सभी बातों से हमें पता चलता है कि इस्लाम जिस नैतिकता की मानवजात से अनुमोदन करता है वह दुनिया में शांति, सौहार्द और न्याय जैसे गुण लाती है। वह बर्बरियत जिसे आतंकवाद कहते हैं और जिसने और पूरी दुनिया को अपने घेरे में ले लिया है, अज्ञानी और हटधर्मी लोगों का काम है। जिसका कुर्रान की नैतिकता से कोई सम्बन्ध नहीं और उन्हें धर्म के साथ कुछ लेनादेना नहीं है। जो लोग धर्म का मुखौटा पहनकर अपनी बर्बरता दिखाने का प्रयत्न करते हैं ऐसे लोग और समूहों का उपाय कुर्रान की नैतिकता का शिक्षण है। दूसरे शब्दों में कहें तो इस्लाम और कुर्रान की नैतिकता आतंकवाद के अस्तित्व को नष्ट करने का उपाय है और उसकी समर्थक नहीं है।

---

1. Charles Darwin, The Descent of Man, 2nd edition, New York, A L. Burt Co., 1874, p. 178
2. Lalita Prasad Vidyarthi, Racism, Science and Pseudo-Science, Unesco, France, Vend me, 1983. p. 54
3.Theodore D. Hall, The Scientific Background of the Nazi "Race Purification" Program,http://www.trufax.org/avoid/nazi.html
4. L.H. Gann, "Adolf Hitler, The Complete Totalitarian", The Intercollegiate Review, Fall 1985, p. 24; cited in Henry M. Morris, The Long war against God, Baker Book House, 1989, p. 78
5.R. Hickman, Biocreation, Science Press, Worthington, OH, pp. 51 52, 1983; Jerry Bergman, "Darwinism and the Nazi Race Holocaust", Creation Ex Nihilo Technical Journal 13(2): 101-111, 1999
6.Robert M. Young, Darwinian Evolution and Human History, Historical Studies on Science and Belief, 1980
7.Alan Woods and Ted Grant, Reason in Revolt: Marxism and Modern Science, London: 1993
8.Alex de Jonge, Stalin and The Shaping of the Soviet Union, William Collins Sons & Limited Co., Glasgow, 1987, p. 22
9.K. Mehnert, Kampf um Mao's Erbe, Deutsche Verlags-Anstalt, 1977
10. James Reeve Pusey, China and Charles Darwin, Cambridge, Massachusetts, 1983

परिचय

क्रमिक–विकास क्यों?

कुछ लोगों के लिए इवोल्युशन (क्रमिक विकास) की थीअरि या डार्विनिज्म सिर्फ वैज्ञानिक अर्थ है और उनकी प्रतिदिन की ज़िंदगी पर इसका कोई प्रत्यक्ष असर नहीं है। निःसंदेह यह एक बड़ी गलतफहमी है। यही नहीं कि यह थीअरि जीवविज्ञान के दायरे में एक बड़ा मुद्‌दा है, इससे बहुत आगे क्रमिक–विकास का सिद्धांत में एक भ्रमक फिलॉसोफी को आधार बनाया गया है, जिसने बड़ी संख्या में ला. `गों पर प्रभाव डाला है, और वह है, भौतिकवाद।

भौतिकवाद की फिलॉसोफ़ी सिर्फ़ पदार्थ का अस्तित्व स्वीकृत करती है और मनुष्य को "पदार्थ का ढेर" मानकर चलती है। यह फिलॉसोफ़ी दावा करती है कि मनुष्य एक प्राणी के अलावा कुछ नहीं है और 'टकराओ' उसके अस्तित्व का एक मात्र सिद्धांत है। भौतिकवाद का विज्ञान पर आधारित आधुनिक फिलॉसोफ़ी के रूप में प्रचार किया जाता है लेकिन हकीकत यह है कि वह एक प्राचीन मत है जिसका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है। प्राचीन ग्रीस में प्रगट हुए इस मत का 18वीं सदी के नास्तिक दार्शनिकों ने पुनः आविष्कार किया। इसके बाद 19वीं सदी में कार्ल मार्क्स, चार्ल्स डार्विन और सिग्मंड फ्रॉइड जैसे विचारकों ने इस मत को विज्ञान की कई शाखाओ में दाखिल किया। दूसरे शब्दों में कहें तो भौतिकवाद के लिए जगह बनाने के लिए विज्ञान को तोडा मरोडा गया।

पिछली दो सदियाँ भौतिकवाद की रक्तरंजित रणभूमि बनी रही हैं : भौतिकवाद पर आधारित विचारधाराओं (और प्रतिद्वन्दी विचारधाराएं जो भौतिकवाद के खिलाफ दलील पेश करती है लेकिन उसके मूलभूत सिद्धांत में साझेदार है) की वज़ह से दुनिया में स्थायी हिंसा, युद्ध और अव्यवस्था आई है। 12 करोड़ लोगों की मौत के लिए जिम्मेदार साम्यवाद भौतिकवादी फिलॉसोफ़ी का प्रत्यक्ष परिणाम है। भौतिकवादी विश्वमत के विकल्प का दिखावा करने के बावजूद फासिज़्म ने टकराव के ज़रिए प्रगति की मूलभूत भौतिकवादी विचार को स्वीकृत किया है और दमनकारी शासन, नरसंहार, विश्वयुद्ध और जनवध की चिंगारियां भडकाईं।

इन दो रक्तरंजित विचारधारा के अलावा व्यक्ति और सामाज़िक मूल्य भी भौतिकवाद द्वारा भ्रष्ट हुए हैं।

भौतिकवाद का भ्रमकारी संदेश आदमी को जानवर के निम्न स्तर पर ले जाता है जिसका अस्तित्व केवल एक संयोग है और जो किसी के प्रति जिम्मेदार नहीं है। भौतिकवाद के इस संदेश ने प्रेम, दया, स्वबलिदान, शाल. ीनता, ईमानदारी और न्याय जैसे नैतिक स्तंभ को गिरा दिया है। "जीवन एक संघर्ष है" जैसे भौतिकवादी आदर्शवाक्य से गुमराह होकर लोग अपने जीवन को सिर्फ़ हितो के टकराव के नज़रिये से देखने लगे जिसकी वजह से जीवन जंगल के कानून के आधार पर जिया जाने लगा।

पिछली दो सदियों की मानव द्वारा आयोजित दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार इस फिलॉसोफ़ी के सुराग वो हर उस विचारधारा में पाये जाते है जो लोगों के बीच के भेदभाव को "टकराव का कारण" मानते हैं। इसमें आज के समय के आतंकवादी भी शामिल हैं जो धर्म की सुरक्षा करने का दावा करते है लेकिन निर्दोष लोगों की हत्या करके बड़ा पाप

कार्ल मार्क्स ने यह स्प ट किया था कि डार्विन की थीअरि ने भौतिकवाद और इस प्रकार से साम्यवाद को ठौस आधार दिया है. उन्होने अपने किताब दास कैपिटल (जो उनका महानतम कार्य माना जाता है) डार्विन को अर्पित करके डार्विन के प्रति अपनी हमदर्दी दिखाई. इस किताब के जर्मन संस्करण में उन्होने लिखा हैः 'एक सपर्पित प्रशंसक की ओर से चार्ल्स डार्विन को'
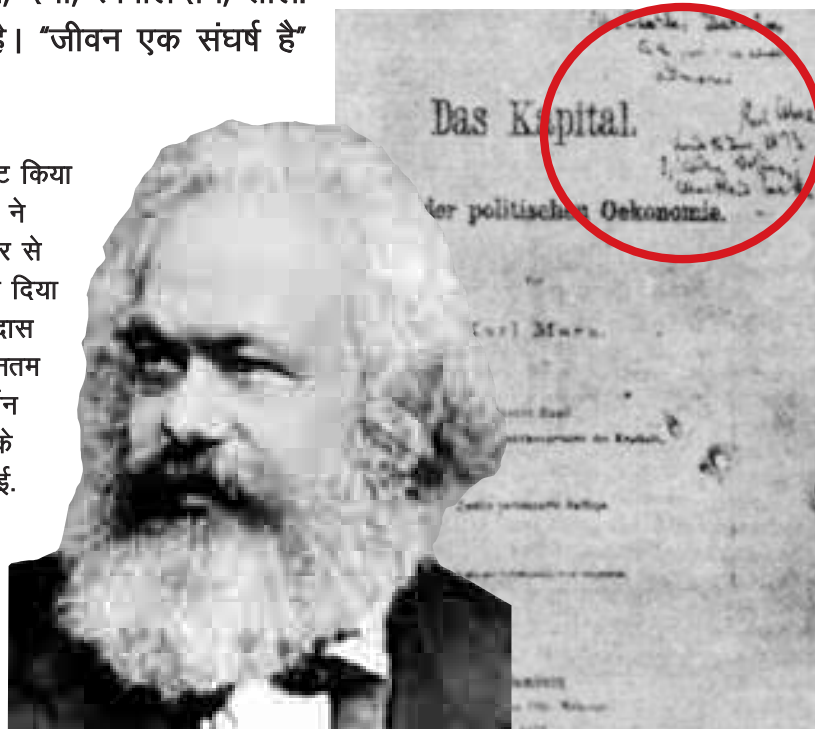
करते है। यहां पर जिग–सॉ पझल पूरी करने में क्रम विकास की थीअरि या डार्विनिज़्म काम में आता है। यह एक झूठी मान्यता है कि भौतिकवाद एक वैज्ञानिक विचार है। इसी कारण साम्यवाद और डायालेक्टिकल भौतिकवाद के शोधक कार्ल मार्क्स ने लिखा कि डार्विनिज़्म अपने विश्वमत के लिए "प्राकृतिक इतिहास में आधार" था।

हालांकि, यह आधार अत्यंत पुराना और दकयानूसी है। आधुनिक वैज्ञानिक खोजें बार–बार यह बताती हैं कि डार्विनिज़्म को विज्ञान से जोड़ने वाली लोकप्रिय मान्यता गलत है। वैज्ञानिक प्रमाण डार्विनिज़्म को व्यापक तौर पर नकार देता है और यह बताता है कि हमारे अस्तित्व का उदगम क्रमिक–विकास नहीं बल्कि सृजन है। अल्लाह ने ब्रह्मांड, सारी जीवित चीज़े और मनुष्य का सृजन किया है। इस हकीकत से लोगों को वाकिफ़ करने के लिए यह किताब लिखी गई है। मूलतः तुर्की में और बाद में कई देशों में इस किताब के प्रथम प्रकाशन के समय से आज तक लाखों लोगों ने इस किताब को पढ़ा और सराहा है। तुर्कीश के अलावा यह किताब अंग्रेजी, जर्मन, इटालियन, स्पेनिश, रशियन, चाइनीज़, बोस्निअन, अरेबिक, ऊर्दू, मलय और इंडोनेशियन भाषाओं में छपी है। (इस किताब के टेस्ट इन सभी भाषाओं में ूण्मअवसनजपवदकमबमपजण्बवउ से निःशुल्क प्राप्त किए जा सकते हैं।

द इवोल्युशन डिसीट का असर विरोधी मत के प्रचारकों ने भी स्वीकार किया है। न्यु सायन्टिस्ट में छपे एक लेख "बर्निंग डार्विन" का विषय हारुन यहया थे। यह अग्रणी लोकप्रिय डार्विनिस्ट पत्रिका ने अपने 22 अप्रैल, 2000 के अंक में उल्लेख किया है कि हारुन यहया "एक अंतर्राष्ट्रीय हीरो" हैं। पत्रिका ने चिंता जताई है कि यहया की किताबें "इस्लामिक विश्व में सभी जगह फैल गई हैं।"

सामान्य वैज्ञानिक समुदाय की अग्रणी पत्रिका 'साइंस' ने हारुन यहया के कार्य का असर और उसकी सोफिस्टिकेशन पर जोर दिया है। 18 मई 2001 को छपे 'द साइंस' के लेख "क्रिएशनिजम टेक्स रूट व्हेर युरोप, एशिया मीट," (युरोप और एशिया जहां मिलते हैं वहां रचनावाद ने अपनी जडें फैलाई है) में इस बात पर ध्यान दिया गया है कि तुर्की में "द इवोल्युशन डिसीट" और "द डार्क फ़ॅस ऑफ डार्विनिज़्म" देश के कुछ हिस्सों में पाठ्यपुस्तकों से भी ज्यादा प्रभावक बनी हुई है।" इस लेख के रिपॉर्टर उसके बाद हारुन यहया के कार्य की जांच करते हैं जिसने "उत्तर अमरीका के बाहर विश्व की सबसे बड़ी इवोल्युशन–विरोधी मुहिम" छेड़ी है।

यह सब इवोल्युशनिस्ट पत्रिकाएं 'द इवोल्युशन डिसीट' के असर पर ध्यान देती हैं लेकिन इस किताब की दलीलों के सामने वे कोई वैज्ञानिक खुलासा पेश नहीं करती है। निश्चित रूप से इसका कारण यह है कि खुलासा देना मुमकिन ही नहीं। क्रमिक–विकास की थीअरि संपूर्ण गतिरोध का सामना कर रही है। आगे आने वाले इस किताब के अध्याय को पढ़ने के बाद आपको यह हकीकत मालूम हो जायेगी। यह किताब आपको यह अनुभूति कराने में मदद करेगी कि डार्विनिज़्म कोई वैज्ञानिक थीअरि नहीं बल्कि स्युडो–साइन्टिफ़िक (झूठ पर आधारित वैज्ञानिक) सिद्धांत है जिसे प्रतिप्रमाण और साफ़–साफ़ खण्डन के बावजूद भौतिकवाद की फ़िलोसोफ़ी को सहारा देने के लिए टिकाया गया है।

हम यह आशा करते है कि 'द इवोल्युशन डिसीट' लम्बे समय तक भौतिकवादी–डार्विनिस्ट सिद्धांत (जो 19वीं सदी से मानवजात को गुमराह कर रहा है) के खण्डन में अपना योगदान देती रहेंगी। और यह किताब लोगों को हमारे जीवन की निर्णायक हकीकतो (जैसे कि हम किस तरह से अस्तित्व में आये और हमारे सर्जक के प्रति हमारा क्या फ़र्ज है) की लोगो को याद दिलायेंगी।

बौद्धिक डिज़ाइन (रचना), दूसरे शब्दों में कहें तो सृजन (क्रिएशन)

यह महत्त्वपूर्ण है कि "डिज़ाइन" शब्द को सही तरह से समझ लिया जाये। अल्लाह ने दोषहीन डिज़ाइन बनाई इसका यह मतलब नहीं कि उसने पहले योजना बनाई और बाद में उसका अनुसरण किया। पृथ्वी और आकाश के मालिक अल्लाह को सृजन करने के लिए कोई "डिज़ाइन" की जरूरत नहीं। अल्लाह ऐसी सभी अपूर्णताओं से परे है। उसका आयोजन और सृजन एक ही क्षण में साथ–साथ होता है। जब भी अल्लाह कोई चीज़ बनाने की ठान लेता है तो उसके लिए सिर्फ यही शब्द बोलना काफी है, "जीवित हो जा!"

कुर्रान की यह आयातें हमें बताती हैं
जब वह किसी चीज़ का निर्णय करता है तो उसे सिर्फ इतना आदेश देना होता है, "हो जा" और वह हो जाती है। (सूराह या सीन : 82)

वह (अल्लाह) आकाशों और धरती जैसी अनोखी नई चीज़ों का बनाने वाला है और जब वह किसी बात का निर्णय करता है, तो बस उसके लिए कह देता है। हो जा! तो वह हो जाती है। (सुरत अल–बकाराः 117)

प्रस्तावना

हमारे समय का एक महान चमत्कार: क्रमिक–विकास के झूठ में लोगों का विश्वास

पृथ्वी पर बसने वाली लाखों प्रजातियों में चमत्कारिक विशेषताएँ, अनोखे बर्ताव के नमूने और दोषहीन भौतिक संरचना देखने को मिलती है। हर जीवित वस्तु अपनी अनोखे विवरण और सौंदर्य के साथ बनाई गई है। पौधे, प्राणी और मनुष्य आकार की बाहरी दिखावट से लेकर उनकी कोशिकाएं (जो खाली आंख से दिखाई नहीं देते) तक को महान् ज्ञान और कला के साथ बनाया गया था। आज विज्ञान की कई महान शाखाएँ अस्तित्व में हैं और ये जीवित वस्तुओं के हर विवरण का संशोधन करने वाली है उन शाखाओं में कार्यरत हजारों वैज्ञानिक इन विवरणों के चमत्कारिक पहलुओं को उज़ागर करते हैं और वे चीज़ें अस्तित्व में कैसे आई इस प्रश्न का जवाब देने का प्रयास करते हैं।

इनमें से कुछ वैज्ञानिक जिन संरचनाओं का अध्ययन करते हैं उसके चमत्कारिक पहलुओं और उनके अस्तित्व में आने की पीछे का तर्क खोजने पर दंग रह जाते हैं और वे इन सब में निहित अनंत ज्ञान और बुद्धिमानी के साक्षी बनते हैं। हालांकि, अन्य लोग आश्चर्यजनक तरीके से दावा करते हैं कि यह सब चमत्कारिक विशेषताएँ किसी संयोग की पैदाईश है। यह वैज्ञानिक इवोल्युशन कही जाने वाली क्रमिक–विकास के सिद्धांत को मानते हैं। उनके विचार से यह जीवित वस्तुओं को बनाने वाले प्रोटीन, कोशिकाएँ और अंग–सब कुछ आकस्मिक संयोगों के सिलसिले से अस्तित्व में आए। यह आश्चर्यजनक है कि सालों तक अध्ययन करने वाले, लम्बे–लम्बे अध्ययनों में हिस्सा लेने वाले और एक कोशिका के अंदर की एक ही संरचना (जो खाली आँखो से देखना नामुमकिन है) के चमत्कारिक कार्यों के बारे में किताबें लिखने वाले यह लोग मान सकते है कि यह अदभुत संरचनाएँ संयोग से पैदा हुई हैं।

यह प्रसिद्ध प्रॉफेसर जिन संयोगों के सिलसिले को मानते हैं वह तर्क के सामने ठहर नहीं पाता और उनके ऐसा करने से बाहरी अवलो. कनकार दंग रह जाते हैं। इन प्रोफेसरों के मतानुसार, कई सरल रासायनिक पदार्थ पहले इकट्ठे हुए और प्रोटीन बनाया – यह तो ऐसी असंभव बात हुई जैसे कि अक्षरों का अव्यवस्थित बिखरा हुआ समूह एक साथ आकर कोई कविता बना लें। इसके बाद कुछ और संयोग हुए जिसके परिणामस्वरूप अन्य प्रोटीन्स का उदभव हुआ। यह प्रोटीन्स भी फिर सुव्यवस्थित ढ़ंग से जुड़े। सिर्फ प्रोटीन ही नहीं पर डीएनए और आरएनए, किण्वक (इन्जाइम), हॉर्मोन्स और कोशिका की संरचनाएँ – यह सब जो कोशिका के अंदर की बहुत जटिल संरचना है। यह सब संयोगों से पैदा हुए और एक साथ इकट्ठे हुए। ऐसे अरबों संयोगों के फ़लस्वरूप प्रथम कोशिका का जन्म हुआ अन्धाधुंध संयोग की यह चमत्कारिक क्षमता यहां पर खत्म नहीं हुईं, बल्कि इन कोशिकाओं का गुणन होता गया और इनकी संख्या बढ़ती गई। इस दावे के मुता. बिक अन्य संयोग हुए, जिसने इन कोशिकाओं को संगठित किया और उसी में से प्रथम जीव पैदा हुआ।

जीवित वस्तु में सिर्फ एक आँख बनाने के लिए अरबों असंभव घटनाओं को एक साथ होना था। यहाँ भी "संयोग" नाम की अन्धाधुंध प्रक्रिया का समीकरण में प्रवेश हुआ पहले इस संयोग ने खोपड़ी में श्रेष्ठ संभावित जगह पर आवश्यक आकार के दो छिद्र खोले और उस जगह में संयोग से प्रवेश करने वाली कोशिकाओं ने आँखो को बनाना शुरू किया।

जैसे हमने पहले देखा है, संयोगों को जो पैदा करना था उसका ज्ञान उन्हें पहले से था और इसी के मुताबिक उन्होंने काम किया। शुरूआत से ही "संयोग" को पता था कि देखना, सुनना और साँस लेना क्या है यह बात अलग है कि उस समय दुनिया में कहीं भी इन क्रियाओं का एक भी उदाहरण मौजूद नहीं था। संयोग ने महान बुद्धिमानी और ज्ञान का प्रदर्शन किया, विचारशील सुनियोज़ित आयोजन दिखाया और धीरे–धीरे जीवन को बनाया। यह एक संपूर्ण अतार्किक परिदृश्य है जिसके लिए ऐसे प्रोफेसरों, वैज्ञानिकों और संशोधकों ने अपना जीवन समर्पित किया है जिनके नामों को बड़े आदर से लिया जाता है और जिनके विचार काफ़ी प्रभावकारी हैं। आज भी बचकाना जिद्द से वे इन परीकथाओं मे न माननेवाले लोगो को वे अपनी बिरादरी में स्थान नहीं देते और उन पर अवैज्ञानिक व कट्टर होने का आरोप

रखते हैं। इसमें और कट्टर, धर्मान्ध व अज्ञानी मध्यकालीन मानसिकता (जिसने पृथ्वी समतल होने का दावा कर रहे लोगों को सज़ा दी थी) के बीच में कोई फर्क नहीं है।

इसके अलावा इनमें से कुछ लोग मुस्लिम होने का और अल्लाह में आस्था रखने का दावा करते हैं। "अल्लाह ने पूरी सृष्टि और जीवन बनाया" इस हकीकत को ऐसे लोग अक्सर अवैज्ञानिक मानते हैं और इसके बदले में मानते हैं कि "अरबों चमत्कारिक संयोगों से बनी हुई अचेत प्रक्रिया से यह जीवन उत्पन्न हुआ है।" इस गलत धारणा को वे वैज्ञानिक मानते हैं।

अगर आप इन लोगों के सामने नक्काशी किया गया पत्थर या लकड़ी की मूर्ति रखें और उनसे कहें, "देखिऐ, यह कमरा और उसमें रखी हुई सभी चीज़े इस मूर्ति ने बनाई है" तो वे कहेंगे यह एकदम मूर्ख जैसी बात है और उसमें मानने का इन्कार करेंगे। फिर भी वे खुद मूर्खतापूर्ण बात घोषित करते हैं कि "संयोग नाम की अचेत प्रक्रिया ने विशाल आयोजन के साथ धीरे धीरे इस दुनिया और उसमें अरबों अदभुत जीवित वस्तुओं का सृजन किया।" इस मूर्खतापूर्ण बात को वे महानतम वैज्ञानिक व्याख्या मानते हैं।

संक्षिप्त में कहें तो यह लोग संयोग को खुदा मानते हैं और दावा करते हैं कि वह इतना बुद्धिमान, जाग्रत और शक्तिशाली है कि वह ब्रह्मांड में जीवित चीज़ें और सभी संवेदनशील सन्तुलन का सृजन कर सकता है। जब कहा जाता है कि वह अल्लाह था, जो अनंत बुद्धिमानी का मालिक है और जिसने सभी जीवित चीज़ो को बनाया है, तो यह इवोल्युशनिस्ट प्रोफेसर इस हकीकत को मानने से इनकार कर देते है और अपने वो रूख पर अड़े रहते हैं कि अचेत, अबुद्धिमान और शक्तिहीन अरबों संयोग, जिनकी खुद की कोई मरज़ी नहीं है, वे वास्तव में सृजनात्मक बल है।

इतिहास के सबसे अतार्किक और अविवेकी हकीकत में शिक्षित, बुद्धिमान और ज्ञानी लोग वशीभूत होकर एक समूह के रूप में विश्वास रखते है, यह अपने आप में एक महान चमत्कार है। इसी तरह अल्लाह चमत्कारिक तरीके से कोशिका जैसी चीज़ का सृजन करता है, जिसमें उसके अदभुत संचालन और गुण भी शामिल हैं, तब यही लोग आश्चर्यजनक तरीके से अपनी आँखो के सामने जो हकीकते और सत्य है उसके प्रति बेखबर और अंधे मालूम पड़ते हैं। छोटे बच्चे भी जो हकीकतों को आसानी से देख सकते हैं उन्हे इवोल्युशनिस्ट्स देख नहीं पाते और चाहे कितनी बार उनके सामने इस सत्य को दोहराया जाये फिर भी वे इसे समझने में नाकाम रहते हैं। यह अल्लाह के सब से बड़े चमत्कारों में से एक है।

इस किताब को पढ़ने पर आप इन चमत्कारों से बार बार वाकिफ़ होते रहेंगे। और आप यह देखेंगें कि वैज्ञानिक हकीकतों के आगे ढ़ेर हो चुके एक सिद्धांत होने के अलावा डार्विनिज़्म एक बडा झूठ है, जो तर्क और बुद्धि से बिल्कुल असंगत है और उसका समर्थन करने वाले को यह सिद्धांत छोटा बना देता है।
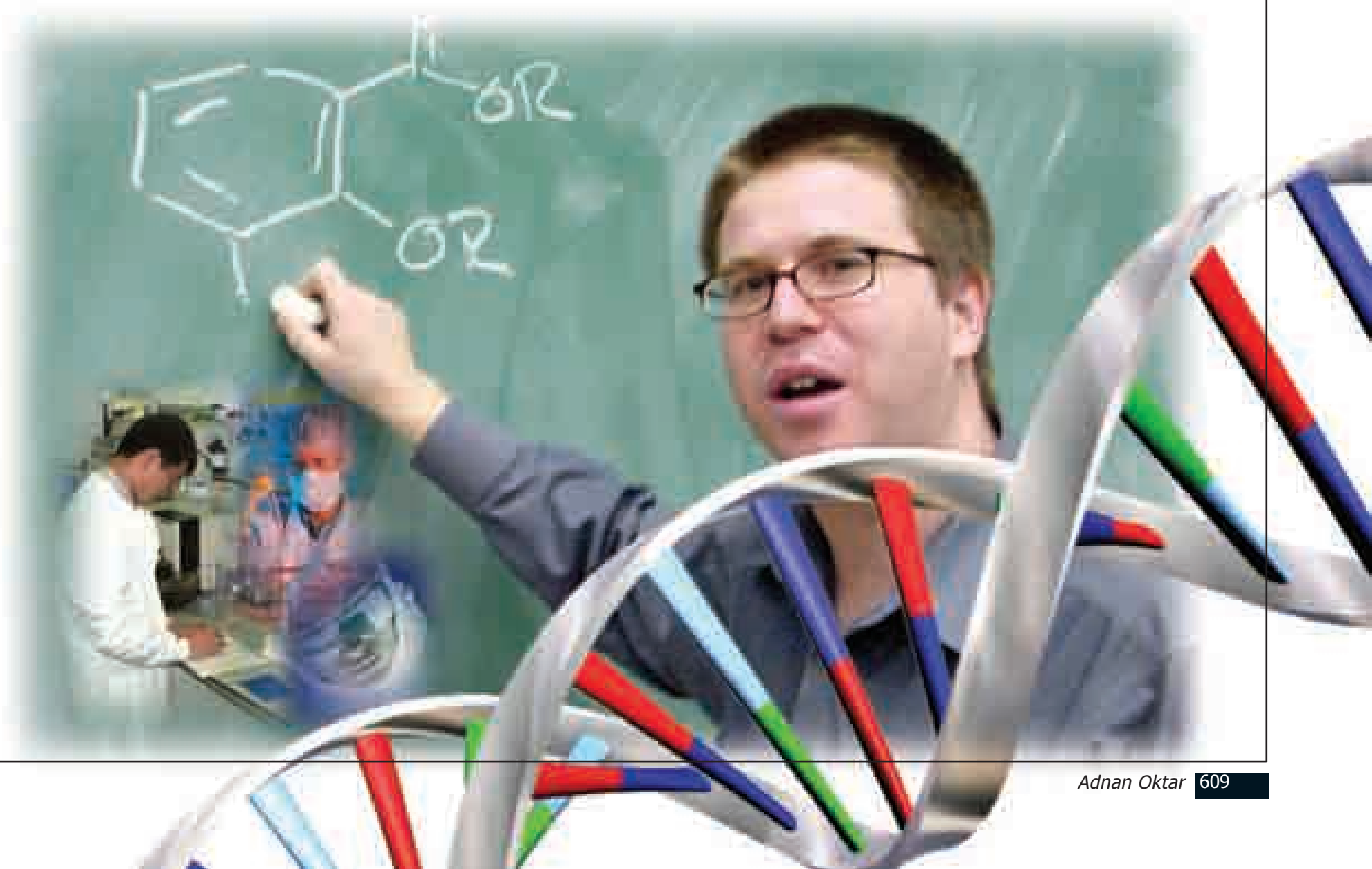
अध्याय 1

पूर्वाग्रह से मुक्त होना

ज्यादातर लोग वैज्ञानिकों से सुनी हुई बातो को निःसंदेह सच मानकर चलते हैं। उनको यह भी मालूम नहीं होता कि वैज्ञानिकों के मन में भी विविध दार्शनिक या सैद्धांतिक पूर्वाग्रह हो सकते हैं। सत्य यह है कि इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक विज्ञान के नाम पर जनता के मन पर खुद के पूर्वग्रह और फिलॉसोफ़िकल मत थोपते हैं। उदाहरण के तौर पर उन्हें यह मालूम है कि बेतरतीब (रॅन्डम) घटनाएँ अनियमितता और गड़बड़ के अलावा और कुछ पैदा नहीं कर सकतीं। यह जानने के बावजूद वे आज भी दावा करते हैं कि ब्रह्मांड और जीवित वस्तुओं में पाई जाने वाली यह अदभुत व्यवस्था, योजना और रचना किसी संयोग से पैदा हुई।

उदाहरण के तौर पर, एक जीव–वैज्ञानिक आसानी से यह मान लेता है कि जीवन का बिल्डिंग ब्लॉक माना जाने वाले प्रॉटीन अणु में विस्मयकारी तालमेल है और ऐसी कोई संभावना नहीं है कि यह कोई संयोग से पैदा हुआ हो। फिर भी वह निश्चयपूर्वक कहता है कि अरबों सालों पहले यह प्रोटीन पृथ्वी की आदिम स्थितियों के तहत अस्तित्व में आया था। यह वैज्ञानिक यहीं पर ठहरता नहीं है। किसी हिचकिचाहट के बगैर वह यह भी दावा करता है कि सिर्फ एक ही नहीं बल्कि लाखों प्रोटीन संयोग से पैदा हुए और आश्चर्यजनक तरीके से एक साथ आये और प्रथम जीवित कोशिका का सृजन किया। इसके अलावा वह हटधर्मता से अपनी राय का बचाव करता है। यह व्यक्ति “इवोल्युशनिस्ट” वैज्ञानिक है। अगर यही वैज्ञानिक किसी समतल मार्ग पर चलता हुआ जाता है और एक–दूसरे पर रखी हुई तीन ईंटों को देखता है, तो वह यह कभी नहीं मानेगा की यह ईंट संयोग से यहाँ आईं और फिर से किसी संयोग से एक–दूसरे पर चढ़ गईं। सचमुच अगर कोई इस तरह का अनुमान करता है तो उसे पागल माना जायेगा।

जो लोग सामान्य घटनाओं को तर्क और बुद्धि की धार पर परख सकते हैं वे लोग खुद के अस्तित्व के बारे में विचार करते वक्त ऐसा अतार्किक और बुद्धिहीन दृष्टिकोण क्यों अपनाते हैं? ऐसा विरोधाभास कैसे संभव है? ऐसा दावा करना मुमकिन नहीं है कि यह दृष्टिकोण विज्ञान के नाम पर अपनाया गया है। अगर किसी मामले में दो समान रूप से संभावित विकल्प हैं तो वैज्ञानिक अभिगम के लिए दोनों विकल्पों को ध्यान में लेना आवश्यक है। और अगर इन दो विकल्पों में से किसी एक के होने की संभावना बहुत कम है (मान लो कि सिर्फ एक प्रतिशत है), तो 99 प्रतिशत संभावना वाले अन्य विकल्प को महत्त्व देना यह तार्किक और वैज्ञानिक अभिगम है।

इस वैज्ञानिक आधार को मन में रखते हुए हम आगे बढ़ते हैं। जीवित चीज़ें किस तरह से पृथ्वी पर आईं इसके बारे में दो दृष्टिकोण हैं। पहला यह कि अल्लाह सभी जीवित चीज़ों को उनके वर्तमान जटिल स्वरूप में पैदा करता है। दूसरा यह कि जीवन की रचना अचेत और बेतरतीब (रॅन्डम) संयोगों से हुई थी। यह दूसरा अभिप्राय है जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत का दावा है।

जब हम वैज्ञानिक डाटा की ओर देखते हैं (मिसाल के तौर पर आण्विक जीव विज्ञान या मॉलेक्युलर बायोलॉजी को लें तो हमें पता चलेगा) यह बिल्कुल संभव नहीं है कि जीवित कोशिका या इस कोशिका में मौजूद लाखों प्रोटीन महज़ एक संयोग से अस्तित्व में आये हैं (जैसा की इवोल्युशनिस्ट दावा कर रहे हैं)। हम आगे आनेवाले अध्यायो में उदाहरण देंगे उनके मुताबिक संभावना की गिनतियाँ भी कई बार इस हकीकत की पुष्टि करती हैं। इसलिए जीवित वस्तुओं के उदभव के बारे में इवोल्युशनिस्टों की धारणा सत्य हो सकती है इसकी संभावना शून्य है।

इसका यह मतलब है कि प्रथम विकल्प सत्य है इसकी संभावना “सो” प्रतिशत है। इसका अर्थ है कि जीवन को जाग्रत रूप से अस्तित्व में लाया गया है। दूसरे शब्दों में कहें तो जीवन का “सृजन” किया गया था। सभी जीवित चीज़ें उच्च्य शक्ति, बुद्धिमानी और ज्ञान में उन्नत सृष्टिकर्ता (क्रिएटर) की रचना द्वारा अस्तित्व में आई हैं। यह वास्तविकता महज़ एक दृढ़ विश्वास की विषयवस्तु नहीं है; यह एक सामान्य नतीजा है जिस तक बुद्धि, तर्क और विज्ञान पहुंचाते हैं।

इन संयोगों के तहत हमारे “इवोल्युशनिस्ट” वैज्ञानिक को अपना दावा वापस ले लेना चाहिए और जो सुस्पष्ट व साबित हो चुकी

हकीकत है उसको मान लेना चाहिए। इसके विरुद्ध कुछ करने का मतलब यह है कि वह अपनी दर्शन, विचारधारा और सिद्धांत के लिए विज्ञान का शोषण करने वाला मनुष्य है और सच्चा वैज्ञानिक नहीं है।

हमारे यह "वैज्ञानिक" जब जब वास्तविकता का सामना करते हैं तब तब उनका गुस्सा, जिद्द और पूर्वग्रह और बढ़ते चले जाते हैं।

अन्धा भौतिकवाद

हम जिस झूठी श्रृद्धा के बारे में बात कर रहे है उसका नाम है भौतिकवादी फिलॉसोफ़ी जो यह दलील देती है कि पदार्थ अनंत काल से अस्तित्व में है और पदार्थ के अलावा कुछ भी नहीं है। क्रमिक–विकास का सिद्धांत इस भौतिकवादी फिलॉसोफ़ी के लिए तथाकथित "वैज्ञानिक आधार" है और इस फिलॉसोफ़ी को टिकाने के लिए विवेकहीनता से इस सिद्धांत का बचाव किया जाता है। जब विज्ञान क्रमिक–विकास के दावों को अयोग्य करार देता है (और यही एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है जिस पर 20वीं सदी के अंत में दुनिया आकर पहुँची है) तब भौतिकवाद को ज़िंदा रखने के लिए इस सिद्धांत को तोड़ा मरोड़ा जाता है और ऐसी स्थिति पर पहुँचाया जाता है जहाँ वह क्रमिक–विकास को समर्थन देता हो।

तुर्की के एक प्रमुख इवोल्युशनिस्ट जीव–वैज्ञानिक द्वारा लिखी गई कुछ पंक्तियाँ एक अच्छा उदाहरण है जो हमें यह समझने का अवसर देती है कि अंधी भक्ति किस अव्यवस्थित निर्णय और बुद्धिहीनता की ओर ले जाती है। यह वैज्ञानिक जीवन के लिए बेहद ज़रूरी किण्वको (इन्जाइम) में से एक सायटोक्रोम–सी की संयोगवश रचना की संभावना के बारे कुछ इस तरह से चर्चा करते हैं।

सायटोक्रोम–सी की श्रृंखला की रचना की संभावना शून्य के बराबर है। मतलब अगर जीवन को किसी विशेष श्रृंखला की आवश्यकता है तो यह कहा जा सकता है कि समस्त ब्रह्मांड में इस घटना की संभावना सिर्फ एक बार संभव हो सकती है। अन्यथा हमारी व्याख्या के दायरे से बाहर कुछ मेटाफ़िज़िकल (अभौतिक) शक्तियों ने उसकी रचना में काम किया होना चाहिए। लेकिन इस संभावना का स्वीकार करना विज्ञान के उद्देश्य के लिए योग्य नहीं है। इसलिए हमें प्रथम अनुमान (हाइपोथिसीस) की तरफ नज़र करनी होगी।2

माइकल बेहेः
"कोशिका की सरासर जटिलता के इर्दगिर्द एक र्मनाक चुपकीदी छाई हुई ह

इस वैज्ञानिक को सृजन के बदले "शून्य के बराबर की संभावना" "ज्यादा वैज्ञानिक" लगती है। हालांकि, विज्ञान के नियमानुसार अगर कोई घटना से दो वैकल्पिक स्पष्टीकरण जुड़े हुए हैं और उनमें से किसी एक के होने की संभावना "शून्य के बराबर" है तो अन्य विकल्प सच्चा माना जाता है। हालांकि मतान्ध भौतिकवादी अभिगम उच्चतम सृष्टिकर्ता को स्वीकार करने की अनुमति नहीं देता है। यह मनाही इस वैज्ञानिक और भौतिकवादी मत रखने वाले अन्य कई लोगों को तर्क और बुद्धिमता से परे दावों को स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है।

जो लोग इन वैज्ञानिकों पर विश्वास करते हैं वह भी इसी भौतिकवादी सम्मोहन से रोमांचित और अन्धे हो जाते हैं और इनकी किताबें और लेख पढ़ते वक्त भी वे यही उदासीनता अपनाते हैं।

इस मतान्ध भौतिकवादी दृष्टिकोण की वज़ह से ही वैज्ञानिक समुदाय में कई प्रमुख वैज्ञानिक नास्तिक हैं। जो अपने आप को इस सम्मोहन की ज़ंजाल से मुक्त करते हैं और खुले दिमाग से सोचते हैं वे सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को स्वीकार करने से हिचकिचाते नहीं। सृजन की हकीकत का बचाव करने की मुहिम का समर्थन करने वाले प्रमुख नामों में से एक अमेरिकन बायॉकेमिस्ट डॉ माइकल जे. बेहे जीवों के सृजन को मानने से परहेज़ करने वाले वैज्ञानिकों का इस प्रकार वर्णन करते हैं।

पिछले चार दशकों में आधुनिक बायॉकेमिस्ट्री ने कोशिका के रहस्यों को उजागर किया है। इसके लिए हजारों लोगों ने अपने जीवन का अच्छे से अच्छा समय प्रयोगशाला में इस कठिन कार्य को समर्पित किया है......... कोशिका की छानबीन करने और आण्विक (मॉलेक्युलर) स्तर पे जीवन की छानबीन के साझा प्रयासो का परिणाम हैः "डिज़ाइन" की कोलाहल से भरी स्पष्ट और चुभनेवाली चीख!

परिणाम इतना सुस्पष्ट और इतना महत्त्वपूर्ण है कि इसे विज्ञान के इतिहास में सबसे महान सिद्धियों में स्थान देना चाहिए। लेकिन उसके बदले असाधारण विषम मौन कोशिका की कड़ी जटिलता को घेरे हुए है। वैज्ञानिक समुदाय क्यों इस चौंकाने वाली खोज़ को बेसब्री से स्वीकार नहीं करते? डिज़ाइन के अवलोकन पर क्यों प्रचंडता से विवाद किया जा रहा है? दुविधा यह है कि जहाँ इस विषय के एक पहलू को बुद्धिमान डिज़ाइन का लैबल दिया गया है तो वहीं अन्य पहलू को अल्लाह लैबल दिया जाना चाहिए।3

इन नास्तिक इवोल्युश्निस्ट वैज्ञानिकों की यह दुर्दशा है जिनको आप किसी मैगजीन में पढ़ते हो या टी. वी. पर देखते हो। इन लोगों द्वारा किये गये विशुद्ध वैज्ञानिक शोधों में उन्हें सृष्टिकर्ता का अस्तित्व दिखाई देता है। फिर भी उन्होंने जो मतान्ध भौतिकवादी शिक्षा ग्रहण की है उससे वे इतने संवेदनहीन और अन्धे हो गये हैं कि वे अब भी सृष्टिकर्ता के अस्तित्व के इनकार पर अडिग है।

जो लोग सृष्टिकर्ता के स्पष्ट संकेतों और प्रमाणों का अनादर कर रहे हैं वे संपूर्ण रूप से संवेदनहीन बन जाते हैं। अपनी संवेदनहीनता के कारण अज्ञानभरे आत्मविश्वास की पकड़ में आकर वे शायद मूर्खता और बेतुकेपन को भी समर्थन देने लगे यह संभव है। इस चर्चा का सब से अच्छा उदाहरण प्रमुख इवोल्युशनिस्ट रिचर्ड डॉकिन्स हैं जिन्होने ईसाईयों से कहा है कि वे अगर वर्जिन मॅरी की प्रतिमा को अपनी ओर हाथ लेहराते हुए देखें तो भी उसे चमत्कार न मान लें। डॉकिन्स के मतानुसार, "शायद प्रतिमा के हाथ में मौजूद सभी परमाणु एक साथ एक ही दिशा में गति कर रहें होंगे – ऐसा होने कि संभावना बहुत कम है लेकिन संभव है।"4

रिचर्ड डोकिन्स,
क्रम विकास के प्रसार प्रचार में व्यस्त

ईमान नहीं रखने वाली मनोवैज्ञानिक स्थिति समस्त इतिहास में मौजूद रही है। कुर्रान में इसका कुछ इस प्रकार से ब्यौरा दिया गया है।

अगर हम उनके पास फरिश्तों को भेजें और कोई मृत व्यक्ति उनसे बात करे और हम उनकी आँखो के सामने सभी चीज़े लाकर जमा कर दें तो भी वे नहीं मानेंगे। सिवाय इसके कि अल्लाह ही चाहे। लेकिन उनमें से ज्यादातर लोग सत्य की अवहेलना करते है। (सुरत अल–अनाम : 112)

यह आयात स्पष्ट करती है कि इवोल्युशनिस्टस के विचार करने का कोई मौलिक तरीका नहीं है और ना ही यह विचारधारा उनकी कोई विशेषता है। वास्तव में इवोल्युशनिस्टस वैज्ञानिक जिस रूख पर कायम है वह कोई आधुनिक वैज्ञानिक विचार नहीं है बल्कि अज्ञान है जो सबसे असभ्य काफ़िर समुदायों के समय से चला आ रहा है।

कुर्रान की एक और आयत में इसी मनोवैज्ञानिक स्थिति को बताया गया है :

अगर हम उनके लिए आकाश का कोई दरवाज़ा खोल दें और वे पूरे दिन वहां लगातार चढ़ते रहें तो भी वह यही कहेंगे : हमारी आंखें धोखा खा रही हैं–बल्कि हमें वशीभूत किया गया है।" (सूरत अल–हिज्रः 14–15)

इवोल्युशनिस्टों के द्वारा मतारोपण (मास इवोल्युशनिस्ट इनडॉक्ट्रिनेशन)

ऊपर दी गई आयातें स्पष्ट करती हैं कि लोग अपने अस्तित्व की वास्तविकताओं को क्यूं नहीं देख पाते इसका एक कारण यह है कि कोई "सम्मोहन" या "वशीकरण" उनकी बुद्धि में गतिरोध पैदा कर रहा है। यह वही "सम्मोहन" है जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत की विश्वव्यापक स्वीकृति के मूल में है। सम्मोहन से हमारा मतलब है किसी विचारधारा को लगातार जबरदस्ती थोपना जिसे मतारोपण या इनडॉक्ट्रिनेशन कहते हैं। क्रमिक–विकास के सिद्धांत की सत्यार्थता के बारे में लोगों को इतने तीव्र इनडॉक्ट्रिनेशन के प्रभाव में डाला जाता है कि वे इस थीअरि में छिपी विकृति को पहचान नहीं पाते।

यह इनडॉक्ट्रिनेशन दिमाग पर नकारात्मक असर डालता है और उस से निर्णय लेने की और समझने की क्षमता चली जाती है। आखिर लगातार इनडॉक्ट्रिनेशन के प्रभाव तहत दिमाग वास्तविकताओं को अपने मूल रूप में परख नहीं पाता और थोपी गई विचारधारा के मुता. बिक परखता है। अन्य उदाहरणों में भी इस घटना का अवलोकन किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अगर कोई सम्मोहित हुआ है और उस पर मतारोपण किया गया है कि वह जिस बिस्तर पर सो रहा है वह कार में है तो सम्मोहन के इस क्रिया के बाद वह बिस्तर को कार के रूप में परखता है। वह सोचता है कि यह बहुत तार्किक और बुद्धिसंगत है क्योंकि वह इसे इसी तरह देखता है, समझता है और वह सही है इस बारे में उसके मन में कोई संदेह नहीं है। ऊपर दिये गये उदाहरण इनडॉक्ट्रिनेशन प्रक्रिया की ताकत और कार्यक्षमता दिखाते हैं और यह उदाहरण वैज्ञानिक वास्तविकताएँ है जिन्हें अनगिनत प्रयोगों से सिद्ध किया गया है जो वैज्ञानिक प्रकाशनों में छपे है और यह मनोविज्ञान और साईकाईअट्री के पाठ्य पुस्तकों में रोजाना दिखाई देते रहते हैं।

क्रमिक–विकास का सिद्धांत और उस पर आधारित भौतिकवादी विश्वमत यह इनडॉक्ट्रिनेशन पद्धतियों द्वारा लोगों पर थोप दिये गये हैं। जो लोग मीडिया, शैक्षणिक स्त्रोत और "वैज्ञानिक" मंच पर इवोल्युशन के (मतारोपण) इनडॉक्ट्रिनेशन के लगातार संपर्क में आते हैं, वे यह नहीं समझ पाते कि इस सिद्धांत का स्वीकार करना वास्तव में तर्क के सबसे मूलभूत सिद्धांतो के विपरीत है। यही इनडॉक्ट्रिनेशन वैज्ञानिकों को भी अपनी पकड़ में लेता है। वैज्ञानिक करियर को अपना रहे युवा लोग समय के गुज़रने पर ज्यादा से ज्यादा भौतिकवादी

विश्वमत अपना रहे हैं। इस सम्मोहन से मोहित कई इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक 19वीं सदी के अतार्किक और पुराने दावों के लिए प्रमाण को ढूंढते फिरते हैं जो लम्बे समय से वैज्ञानिक प्रमाण द्वारा खारिज़ हो चुके हैं।

इसके अलावा भी कुछ प्रक्रियाएं हैं जो वैज्ञानिकों को इवोल्युशनिस्टस (क्रमिक–विकासवादी) और भौतिकवादी होने के लिए प्रेरित करती है। पश्चिमी देशों में प्रमोशन पाने के लिए, शैक्षणिक सम्मान प्राप्त करने के लिए या किसी सायन्टिफ़िक जर्नल में अपने लेखों को प्रकट करवाने के लिए वैज्ञानिक को कुछ मानक के अनुसार चलना पड़ता है। क्रमिक–विकास या इवोल्युशन को सीधे–सीधे स्वीकार करना यह सर्वप्रथम मापदण्ड है। इस तन्त्र की वजह से एक वैज्ञानिक को अपनी पूरी ज़िंदगी और वैज्ञानिक करियर एक मतान्ध मान्यता की खातिर कुर्बान करना पड़त है। 2000 में प्रकट हुई अपनी किताब आईकोन्स ऑफ इवोल्युशन में अमेरिकी मोलेक्युलर बायोलोजिस्ट इस दबाव डालनेवाली प्रक्रिया का हवाला देते हैं।
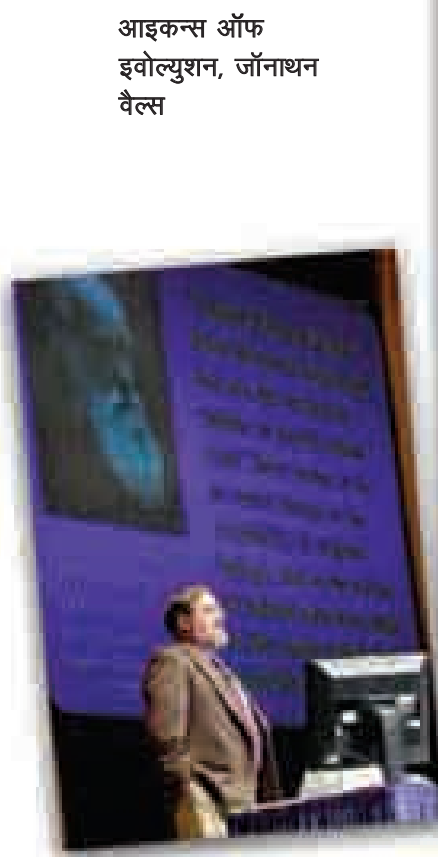
आइकन्स ऑफ इवोल्युशन, जॉनाथन वैल्स
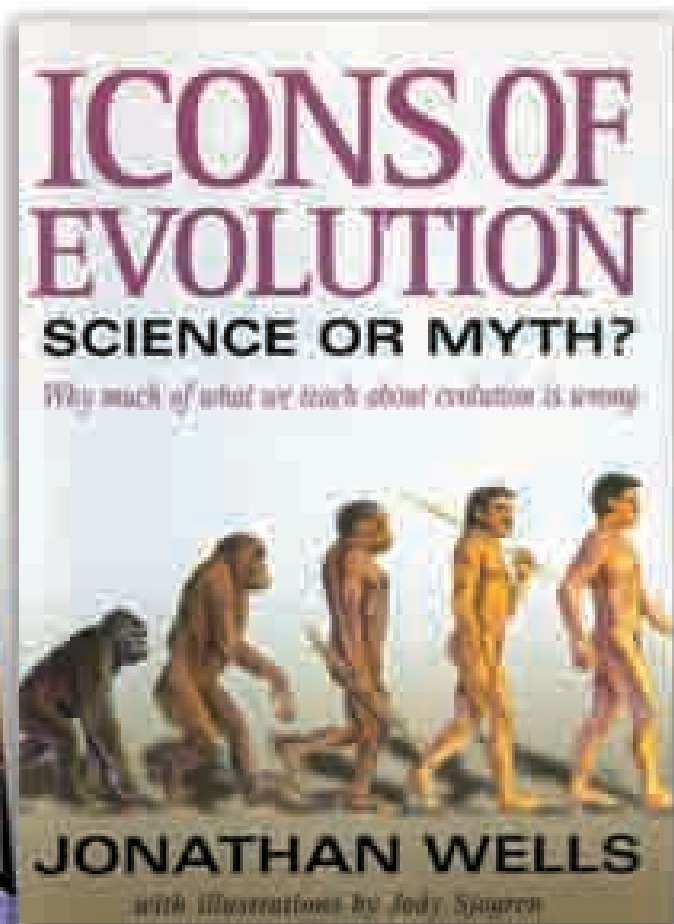
रुढ़िबद्ध डार्विनिस्ट प्रमाणों पर संकुचित स्पष्टीकरण थोप कर और इसे विज्ञान का एकमात्र तरीका घोषित करके शुरूआत करते हैं। उनके आलोचकों को अवैज्ञानिक का लैबल लगा दिया जाता है और इन आलोचकों के लेख मुख्य धारा की सायन्टिफ़िक जर्नल द्वारा खारिज़ किये जाते हैं। यह जर्नल के संपादकीय बॉर्ड में रुढ़िबद्ध लोगों का प्रभाव होता है। सरकारी एजेंसीयों द्वारा आलोचकों को धनराशि देने से इन्कार किया जाता है। यह सरकारी एजेंसियां 'पीअर' रिव्यू के लिए रुढ़िबद्ध लोगों को ग्रांट की दरखास्त भेजती है और आखिर में इन आलोचकों को वैज्ञानिक समुदाय से बाहर का रास्ता दिखाया जाता है। इस प्रक्रिया में डार्विनवादी मत के विरुद्ध जो प्रमाण होते हैं वे आसानी से मिट जाते हैं जैसे कि भीड़ के सामने खड़े हुए चश्मदीद गवाह गुम हो जाते हैं या इस सबूत को विशष प्रकाशन में दफ़ना दिया जाता है जहां सिर्फ समर्पित शोधकर्ता इसे ढूँढ़ पाता है। एक बार आलोचकों को शांत कर देने के बाद और विरुद्ध–प्रमाण को नष्ट कर देने के बाद रुढ़िबद्ध लोग घोषणा करते हैं कि उनके सिद्धांत के बारे में वैज्ञानिक वादविवाद चलता है पर उसके खिलाफ़ कोई सबूत नहीं है।5

ये वो वास्तविकता है जो इस दावे के ईर्दगिर्द मंडराती रहती है कि "क्रमिक–विकास को आज भी विज्ञान की दुनिया–विश्व में स्वीकृति मिल रही है"। इवोल्युशन को ज़िंदा इसलिए नहीं रखा गया कि उसका वैज्ञानिक मूल्य है बल्कि वास्तव में यह एक सैद्धांतिक बंधन है। इस हकीकत से वाकिफ़ बहुत कम वैज्ञानिक यह कहने का ज़ोखिम ऊठा सकते हैं कि राजा ने कोई कपड़े पहने नहीं।

इस किताब के शेष भाग में हम क्रमिक–विकास के खिलाफ आधुनिक विज्ञान के जाँच परिणामों की समीक्षा करेंगे जिनकी या तो इवोल्युशनिस्ट्स ने उपेक्षा की है या "विशेष प्रकाशनों के पन्नों में दफना दिया है" और यह अल्लाह के अस्तित्व का स्पष्ट प्रमाण है। पाठक इस हकीकत का गवाह बनेंगे कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत वास्तव में एक धोखा है – ऐसा धोखा जिसे विज्ञान ने कदम–कदम पर झूठा साबित किया है लेकिन सृजन की हकीकत पर परदा डालने के लिए इसे बरकरार रखा गया है। हम पाठकों से यह आशा करते हैं कि वह लोगों के मन को धुंधले करने वाले और निर्णय लेने की उनकी शक्तियों को बर्बाद करने वाले इस सम्मोहन से जागकर जल्द बाहर आयेगा और वह इस किताब से जुड़ी हुई बातों पर गंभीरता से विचार करेगा।

अगर वह अपने आपको इस सम्मोहन से छुड़ा पाता है और स्पष्ट व मुक्त मन से किसी पूर्वाग्रह के बगैर सोचता है तो स्वच्छ और पारदर्शक सत्य अपने आप उसके सामने आयेगा। यह एक अटल सत्य है जिसे आधुनिक विज्ञान के सभी पहलुओं द्वारा प्रदर्शित किया जा चुका है कि जीवित प्राणी संयोग से नहीं बल्कि सृजन के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आए हैं। मनुष्य जब सोचता है कि वह खुद किस तरह से अस्तित्व में आया। पानी की एक बूंद से किस तरह वह पैदा हुआ या अन्य सभी जीवित प्राणियों की पूर्णता के बारे में सा. ेचता है तो वह सृजन की हकीकत को आसानी से देख सकता है।

अध्याय 2

सिद्धांत का संक्षिप्त इतिहास

इवोल्युशनिस्ट विचारधारा की जड़ें प्राचीन समय तक जाती हैं। जब वह सृजन की हकीकत का इन्कार करने वाली रुढ़िबद्ध मान्यता थी। प्राचीन ग्रीस के ज्यादातर विधर्मी (पेगन) फिलोसोफ़र ने क्रमिक–विकास के विचार का समर्थन किया। जब हम फिलोसॉफ़ी के इतिहास पर नजर डालते हैं तो हम पाते हैं कि क्रमिक–विकास का विचार कई प्राचीन फिलोसॉफ़ियों का विधर्मी आधार है।

हालांकि, इस आधुनिक विज्ञान के जन्म और विकास में प्राचीन विधर्मी फिलोसॉफ़ी ने नहीं बल्कि अल्लाह में श्रद्धा है जिसने प्रेरक भूमिका निभाने में है। आधुनिक विज्ञान की बुनियादी रखने वाले ज्यादातर लोग अल्लाह को मानते थे; और विज्ञान का अध्ययन करते वक्त अल्लाह के बनाये हुए ब्रह्मांड की खोज़ करने और उसके नियम तथा उसके सृजन के विवरण को परखने की ईच्छा रखते थे। कोपरनिकस, केप्लर, और गेलिलियो जैसे खगोलविद; जीवाश्म विज्ञान (पैलिओन्टोलजि) के पितामह कुवियर; वनस्पतिशास्त्र और प्राणीशास्त्र के पथप्रदर्शक लिनेअस और दुनिया के आज तक के सबसे महानतम माने जाने वाले वैज्ञानिक आइज़ेक न्यूटन – यह सब लोग न सिर्फ यह की विज्ञान का अल्लाह के अस्तित्व को मानते हुए करते थे बल्कि यह भी आस्था रखते थे की उसी के सृजन के परिणामस्वरूप समस्त ब्रह्मांड अस्तित्व में आया है।6 हमारे समय के महानतम जीनियस माने जाने वाले आल्बर्ट आईनस्टाईन व अन्य ऐसे श्रद्धालु वैज्ञानिक थे जो अल्लाह को मानते थे और उन्होंने कहा था "गहरी आस्था के बगैर कोई जीनियस वैज्ञानिक की मैं कल्पना नहीं कर सकता। ऐसी परिस्थिति को हम इस छवि से प्रदर्शित कर सकते हैं : धर्म बिना विज्ञान अपंग है।"7

जर्मन भौतिकशास्त्री मैक्स प्लांक, जिनकी गिनती आधुनिक भौतिक विज्ञान के प्रवर्तकों में होती है, ने कहा था : "किसी भी प्रकार के वैज्ञानिक कार्य में गंभीरतापूर्वक व्यस्त व्यक्ति यह महसूस करता है कि विज्ञान के मंदिर के प्रवेशद्वार पर यह शब्द लिखे होते हैं : आपको धर्म में आस्था होनी चाहिए। यह वो गुण है जिससे वैज्ञानिक अपने आप को जुदा नहीं कर सकता।"8

क्रमिक–विकास का सिद्धांत भौतिकवादी फिलोसॉफ़ी का परिणाम है जो प्राचीन भौतिकवादी फिलोसॉफ़ी के पुनःजाग्रत होने के साथ सतह पर आई और 19वीं सदी में उसका व्यापक प्रसार हुआ। हमने जैसा कि पहले उल्लेख किया है, भौतिकवाद शुद्ध भौतिक कारकों के द्वारा प्रकृति को समझाने की कामना रखता है। यह प्रारंभ से ही सृजन का इनकार करता है इसलिए वह इस बात पर ज़ोर देता है कि कोई भी जीवित या निर्जीव वस्तु सृजन से नहीं बल्कि संयोग के परिणामस्वरूप पैदा हुई है जो बाद में एक सुयोजित व्यवस्था की परिस्थिति में तबदील हुआ। हालांकि, मानव मस्तिष्क कुछ इस तरह से बनाया गया है कि वह जहां भी व्यवस्था देखता है वहां आयोजन की संकल्पशक्ति का अस्तित्व पाता है। भौतिकवादी फिलोसॉफ़ी, जो मानव मन के इस मूलभूत गुण के विरुद्ध है, ने इस फिलोसॉफ़ी को 19वीं सदी के मध्य में "थीअरि ऑफ इवोल्युशन" (क्रमिक–विकास का सिद्धांत के नाम से जन्म दिया।

डार्विन की कल्पना

जिस क्रमिक–विकास का सिद्धांत का आज बचाव किया जा रहा है उस सिद्धांत का प्रतिपादन करने वाला आदमी अव्यवसायी (ऐमटर) अंग्रेज़ प्रकृतिवाद चार्ल्स रॉबर्ट डार्विन था।

डार्विन ने कभी भी जीवविज्ञान की औपचारिक शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। उसने केवल अपने शौक और मनोरंजन के लिए प्रकृति और जीवित चीज़ों के विषय में दिलचस्पी ली। उसकी इसी दिलचस्पी ने उसे एचएमएस बीगल नामक जहाज की समुद्री यात्रा में जुड़ने के लिए प्रेरित किया। यह जहाज 1832 में इंग्लैंड से रवाना हुआ और पांच साल तक विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की यात्रा करता रहा। युवा डार्विन विभिन्न प्रजातियों से बहुत प्रभावित हुए, विशेष रूप से गालापागोस टापुओं पर फ़िन्च नामक चिडीया में उसने विशेष रुचि दिखाई। उसने सोचा कि इन चिड़ियों की चोंच में जो विविधता दिखती है वह उनके प्राकृतिक आवासों के साथ

चार्ल्स डार्विन

अनुकूलन साधने का परिणाम था। मन में इस विचार के साथ डार्विन ने कल्पना की कि जीवन और प्रजातियों का उदभव "पर्यावरण के अनुकूल" होने में छिपा हुआ है। डार्विन ने इस हकीकत का विरोध किया कि ईश्वर ने विविध जीवित प्रजातियों को अलग–अलग बनाया बल्कि उसने यह विचार दिया कि यह प्रजातियां एक समान पूर्वज में से पैदा हुईं और प्राकृतिक परिस्थितियों के परिणामस्वरूप एक–दूसरे से अलग हुईं।

डार्विन का अनुमान कोई वैज्ञानिक खोज़ या प्रयोग पर आधारित नहीं था। हालांकि, अपने समय के विख्यात भौतिकवादी जीव–वैज्ञानिकों से समर्थन और प्रेरणा जुटाकर डार्विन ने इसे एक आडंबर से पूर्ण सिद्धांत में तबदील कर दिया। डार्विन का विचार यह था कि पर्यावरण से अनुकूलन साधने वाले प्राणीयों ने अपने गुणों या लक्षणों को श्रेष्ठ संभव तरीके से अपनी आने वाली पीढ़ीयों को सौंपे; यह लाभदायी गुण समय समय पर एकत्रित होते गये और इस से कोई एक प्रकार के गुण रखने वाले जीव का दूसरी जातियों में रूपांतरण हुआ जो अपने पूर्वजों से काफी अलग थी। (यह "लाभदायक गुणों" का उद्‌भव कहां से हुआ वो उस वक्त ज्ञात नहीं था) डार्विन के मातानुसार, मनुष्य इस काल्पनिक प्रक्रिया का सबसे सुव्यवस्थित परिणाम था।
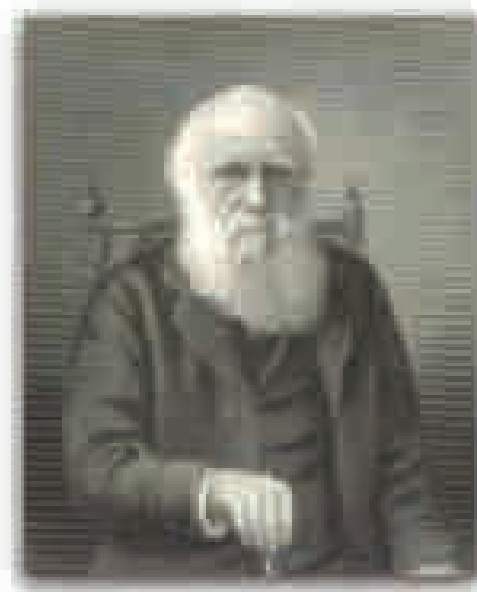
डार्विन ने इस प्रक्रिया को "प्राकृतिक चयन द्वारा क्रमिक–विकास". (इवोल्युशन बाय नैचरल सिलेक्शन) का नाम दिया। डार्विन ने सोचा कि उसने "जातियों का उदगम" (ऑरिजिन ऑफ स्पीशिज़) खोज निकाला था, एक जाति का उदगम अन्य जाति थी। उसने अपनी किताब द ऑरिजिन ऑफ स्पीशिज़, बाय मीन्स ऑफ नैचुरल सिलेक्शन में 1859 में यह विचार प्रकट किये। डार्विन अच्छी तरह जानता था कि उसके सिद्धांत को बहुत चुनौतियाँ झेलनी पड़ेंगी। इसलिए उसने अपनी किताब के एक अध्याय "थीअरि के सामने चुनौतियां" में उसने यह कबूल किया है। यह चुनौतियां मूलतः जीवाश्म रिकॉर्ड, जीवित प्राणीयों की जटिल संरचना से जुड़ी थी जो महज़ एक संयोग से और जीवित प्राणीयों की मूल प्रवृति से शायद समझाई नहीं जा सकेंगी (उदाहरण : आँख)। डार्विन को आशा थी कि नयी खोज़ों के ज़रिए इन चुनौतियों पर विजय पाई जा सकेगी; बावजूद उसके डार्विन ने कुछ चुनौतियों के लिए कई अयोग्य स्पष्टीकरण पेश किये। डार्विन के सामने इन 'चुनौतियों' पर अमेरिकी भौतिकशास्त्री लिप्सन ने यह टिप्पणी की थी।

द ऑरिज़िन ऑफ स्पीशिज़ पढ़ने पर मुझे लगा है कि डार्विन को जिस तरह से चित्रित किया जाता है उससे ऊलटा वह अपने बारे में ज्यादा विश्वास नहीं रखता है; "थीअरि की चुनौतियां" नामक अध्याय बताता है कि डार्विन काफ़ी दुविधा में थे। एक भौतिकशास्त्री होने के नाते एक आँख का उद्‌भव कैसे हुआ होगा इस बारे में डार्विन की टिप्पणियों से मैं आश्चर्यचकित हूँ।9

अपना सिद्धांत बनाते वक्त डार्विन पहले से के कई इवोल्युशनिस्ट जीव–वैज्ञानिकों खास तौर से फ्रैंच जीव–वैज्ञानिक लैमार्क से प्रभावित थे।10 लैमार्क के मतानुसार अपने जीवनकाल के दौरान जीवित प्राणीयों ने प्राप्त किये हुए लक्षण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाये और इस तरह उनका उदभव हुआ। जैसे कि ज़िराफ का उद्‌भव ऐंटिलोप नामक हिरन में से हुआ। खुराक के लिए पेड़ की ऊंची डाल तक पहुँचने के लिए ऐंटिलोप अपनी गरदनें पीढ़ी दर पीढ़ी उपर तक बढ़ाते गये और इस तरह ज़िराफ अस्तित्व में आया। "प्राप्त किये हुए गुणों को पास करना" – लैमार्क द्वारा सामने रखी गई इस बात को डार्विन ने जीवित प्राणियों के उद्‌भव का आधार बना दिया। लेकिन डार्विन और लैमार्क दोनो गलत थे क्योंकि उनके समय में जीवन का अध्ययन मात्र आदिकालीन अविकसित टैकनोलॉज़ी के माध्यम से और बहुत अपूर्ण स्तर पर ही हो सकता था। जेनेटिक्स (आनुवंशिकी विज्ञान) और बायोकैमिस्ट्री जैसे क्षेत्र उस वक्त विकसित नहीं हुए थे। इसलिए इन दोनों वैज्ञानिकों के सिद्धांत केवल कल्पनाशक्ति पर आधारित थे।

ग्रेगर मैन्डल नामक साधु द्वारा खोजे गये जीनेटिक नियमो ने क्रम विकास की थीअरि को दुविधा में डाल दिया.

जब डार्विन की किताबों की गूंज दूर तक जा रही थी उस वक्त ऑस्ट्रिया के वनस्पतिशास्त्री ग्रेगर मैन्डेल ने 1865 में वंशानुक्रम (इनहेरिटन्स) के नियमों की खोज़ की। सदी के अंत तक इस की खास कोई चर्चा नहीं हुई थी लेकिन 1900 के दशक के प्रारंभिक वर्षों में मैन्डेल की खोज़ को खूब महत्त्व मिला। यह जेनेटिक्स विज्ञान के जन्म की घड़ी थी। उसके कुछ समय बाद जीन्स और क्रोमोसोम्स (गुणसूत्र) की संरचना की खोज हुई। 1950 के दशक में डीएनए अणु (जो कोशिका में जिनेटिक सूचना दाखिल करता है) की खोज ने क्रमिक–विकास की थीअरि को गहरे संकट में डाल दिया। इसका कारण था जीवन की अविश्वसनीय जटिलता और डार्विन द्वारा प्रस्तावित इवोल्युशनरी प्रक्रिया की अयोग्यता।

इन परिवर्तनों के परिणामस्वरूप डार्विन का सिद्धांत इतिहास की कचरा पेटी में फेंका जाना चाहिए था। हालांकि, ऐसा नहीं हुआ क्योंकि कुछ गुट वैज्ञानिक मंच पर इस सिद्धांत में सुधार और मरम्मत का आग्रह करते रहे। वास्तव में इस सिद्धांत के पीछे कुछ विचारधारात्मक आशय छिपे थे ना कि कोई वैज्ञानिक हस्तक्षेप; यह समझने पर ही हमें पता लगेगा की इस थीअरि को बचाने के प्रयास क्यों किये गये।

डार्विन के समय में विज्ञान और टैकनोलजि का आदिकालीन स्तर

जब डार्विन ने अपनी धारणाओं को सामने रखा तब जीनेटिक्स, माइक्रोबायोलोजि और बायोकैमिस्ट्री की ाखाओं का अस्तित्व नहीं था. अगर डार्विन ने अपनी थीअरि को सामने रखा उससे पहले यह ाखाओ का विकास हो चुका होता तो डार्विन बहुत आसानी से समझ गये होते कि उनकी थीअरि संपूर्ण अवैज्ञानिक है और उन्होने ऐसे निरर्थक दावे करने का प्रयास नहीं किया होता. जातियो का स्वरूप निर्धारित करनेवाली जानकारी जीन्स में पहले से मौजूद होती है और जीन्स को बदल कर नयी जातियां पैदा करना प्राकृतिक चयन के लिए नामुमकिन है.

इसी तरह, उन दिनो में विज्ञान की दुनिया में कोशिका की संरचना और कार्य के बारे में बहुत छिछोली और कच्ची समझ प्रवर्तमान थी. अगर डार्विन को ईलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप के जरिए को. शिका का अवलोकन करने का मौका मिला होता तो उन्होने कोशिका की सं. रचनाओ में भारी जटिलता और असाधारण रचना देखी होती. अपनी आँखो से उन्होने अवलोकन किया होता कि इतनी जटिल व्यवस्था थोडे बहुत बदलावो से आकार नहीं ले सकती है. अगर उन्हे बायो–मैथेमेटिक्स का ज्ञान होता तो उन्हे यह महसूस हुआ होता कि प्रोटीन का एक भी अणु संयोग से अस्तित्व में नहीं आ सकता है तो फिर पूरी कोशिका के बारे में तो संयोग का प्रश्न ही नहीं खडा होता है.

सिर्फ ईलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप की खोज़ के बाद कोशिका का विस्तृत अभ्यास संभव हो सका था. डार्विन के समय में जो आदिकालीन माइक्रोस्कोप मौजूद थे उनसे सिर्फ कोशिका की बाहरी सतह का अवलोकन किया जा सकता था.

जीवित कोशिका सृजन का चमत्कार है जो वैज्ञानिको को चकाचौंध कर देती है. जब उसे ईलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप में देखा जाता है तो को. शिका के अंदर अत्यंत सक्रिय संरचना देखने को मिलती है जो हमे मधुकोश के आसपास व्यस्त मधुमख्खीओ की याद दिलाती है. ारीर में रोज मरनेवाली लाखो कोशिका केबदले नयी कोशिकाएं पैदा होती है और मानव ारीर को जीवित रखने के लिए अरबो कोशिकाएं संगठित ाक्ति के साथ सामंजस्य से अपना कार्य करती है.

कोशिकाओं ने इतनी संगठित गतिविधि अपने आप विकसित की होगी एसा मानना एक वाहियात तर्क है. कोशिका में परफैक्शन और सुव्यवस्था पैदा करनेवाला अल्लाह है. इन कोशिकाओ को ईलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप की मदद के बगैर देखा नहीं जा सकता है. जीवन के हर पहलु में हमारे मालिक का अतुल्य सृजन और अनंत ज्ञान इतना साफ–साफ दिखाई देता है कि कोई भी इसे छिपा नहीं सकता है.

नीओ–डार्विनिज़्म के भीषण प्रयास

20वीं सदी की प्रथम त्रिमाही में जीनेटिक्स के नियम खोज़े जाने की वज़ह से डार्विन की थीअरि गहरे संकट में आ गई। फिर भी डार्विन के हमेशा वफ़ादार बने रहने का मन बना चुके वैज्ञानिकों के समूह ने कुछ उपायों के साथ सामने आने का साहस किया। 1941 में जियोलोज़िकल सोसायटी ऑफ अमरीका द्वारा आयोजित बैठक में वे सब एकजुट हुए। जी लेड्यार्ड स्टैबिन्स और थीओडोसियस डोबझान्स्की जैसे आनुवंशिकी विद्वान, अरनेस्ट मायर और जुलियन हक्सली जैसे प्राणीशास्त्री, ज्योर्ज गेलोर्ड सिम्पसन और ग्लैन एल जैप्सन जैसे जीवाश्मवैज्ञानिक और रोनाल्ड फिशर तथा सेवॉल राईट जैसे मैथेमेटिकल जीनेटिसीस्टस लम्बी चर्चा के बाद डार्विनिज़्म को "पैच अप" (पैबंद लगाने) तरीकों पर सहमत हुए।

इस समूह ने जीवित प्राणियों के उद्भव का तथाकथित कारण बने हुए लाभदायक विविधताओं के उदगम के प्रश्न पर ध्यान केन्द्रित किया – यह वह मुद्दा था जो खुद डार्विन समझाने में नाकाम रहा था और लैमार्क का अवलंबन लेकर इस मुद्दे को उसने दरकिनार कर दिया था. इस मुद्दे को अब "रॅन्डम म्युटेशन्स" का नाम दिया गया। उन्होंने इस नए सिद्धांत को "द मॉर्डन सिन्थेटिक इवोल्युशन थीअरि" कहा जो डार्विन के प्राकृतिक चयन की थीसिस में म्युटेशन (परिवर्तन) की कल्पना जोड़कर बनाई गई थी। बहुत ही कम समय में, इस सिद्धांत को "नीओ–डार्विनिज़्म" के नाम से जाना गया और इस सिद्धांत को सामने रखने वालो को "नीओ–डार्विनिस्टस" कहा गया।

आनेवाले दशक नीओ–डार्विनिज़्म साबित करने के भीषण प्रयासों का युग बनने वाला था। यह पहले से सिद्ध हो चुका था कि जीवित प्राणीयों के जीन्स में होनेवाले म्युटेशन्स या अकस्मात् हमेशा हानिकारक होते हैं। नीओ–डार्विनिस्ट लोगों ने म्युटेशन के हजारों प्रयोग करके "लाभदायक म्युटेशन" के लिए मजबूत पक्ष बनाने का प्रयास किया। उनके सभी प्रयास पूर्ण रूप से असफल रहे।

उन्होंने यह साबित करने की भी कोशिश की कि प्रथम जीव आदिकालीन ज़मीनी परिस्थितियों के तहत पैदा हुआ था जो सिद्धांत में मान लिया गया था लेकिन यह प्रयोग भी असफल रहे। जीवन शायद संयोग से पैदा हुआ होगा ऐसा साबित करने वाला हर प्रयोग असफल हुआ। संभावनाओं की गिनतीयों ने साबित किया की जीवन का बिल्डिंग ब्लॉक माना जानेवाला एक भी प्रोटीन संयोग से पैदा नहीं हो सकता। और कोशिका – जो इवोल्युशनिस्ट्स के मुताबिक तथाकथित आदिकालीन और निरंकुश ज़मीनी परिस्थितियों के तहत संयोग से पैदा हुई – को 20वीं सदी की सबसे अत्याधुनिक प्रयोगशाला में भी रसायनिक प्रक्रिया से बनाने में सफलता मिली नहीं है।

फॉसिल या जीवाश्म रिकॉर्ड भी नीओ–डार्विनिस्ट सिद्धांत को पराजित कर देता है। नीओ–डार्विनिस्ट सिद्धांत के दावे के मुता. बिक "ट्रांसिशनल फॉर्म्स" सजीव का आदिकालीन से प्रगतिशील जातियों मे क्रम विकास दिखाते हैं। लेकिन यह "ट्रांसिशनल फॉर्म्स" दुनिया में कहीं भी पाये गये नहीं है। इसके साथ–साथ तुलनात्मक शरीर रचना (ऐनेटोमी) ने यह दिखाया है कि जिन जातियों का उद्भव एक–दूसरे में से होना था उनकी शरीर रचना वास्तव में बहुत अलग थी और वे एक–दूसरे के पूर्वज या वंशज कदापि नहीं हो सकती।

वैसे भी नीओ–डार्विनिज़्म कभी भी वैज्ञानिक सिद्धांत नहीं था लेकिन अगर उसे "झूठा धर्म" न कहें तो वह एक वैचारधारात्म मत था। केनेडा के फिलोसॉफर ऑफ साइंस माईकल रूज़ जो अपने आप में इवोल्युशन के मज़बूत समर्थक हैं उन्होंने 1993 की एक बैठक में दिये हुए भाषण में यह बात कबूल कि थी :

यह बात निःसंदेह है कि भूतकाल में और मैं मानता हूं कि वर्तमान में भी कई इवोल्युशनिस्टस के लिए इवोल्युशन ने कुछ इस तरह से काम किया है जैसे किसी तत्व के साथ कोई चीज़ जो एक सेक्युलर धर्म होने के समान हो और मुझे बहुत स्पष्ट दिखाई देता है कि किसी बुनियादी स्तर पे एक वैज्ञानिक सिद्धांत होने के नाते इवोल्युशन एक प्रकार की प्राकृतिकता के प्रति समर्पित होता है।11

यही कारण है कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत के चैम्पियन्स इस सिद्धांमत के खिलाफ कई सबूत होने के बावजूद आज भी उसे समर्थन देते रहते हैं। हालांकि, वे लोग जिस बात पर सहमत नहीं हो पाते वो यह है कि इवोल्युशन के खरे होने के लिए जो विविध प्रतिरूप सामने रखे गये हैं उनमें से कौन–सा "सही" है। इन प्रतिरूपों में से सबसे महत्त्वपूर्ण माने जाने वाला एक प्रतिरूप "पन्कच्युऐटेड ईक्विलिब्रियम" है।

ट्रॉयल एंड एरर : पन्कच्युऐटेड ईक्विलिब्रियम

इवोल्युशन में माननेवाले ज्यादातर वैज्ञानिक धीमे और क्रमशः क्रमिक–विकास की नीओ–डार्विनिस्ट थीअरि को स्वीकार करते हैं। हालांकि, हाल के दशकों में एक अलग प्रतिरूप सामने रखा गया है। "पन्कच्युऐटेड ईक्विलिब्रियम" के नाम से जाना जाने वाले कि इस मॉडल में इस बात का समर्थन किया गया है कि जीवित जातियां छोटे–छोटे बदलावों के सिलसिले से नहीं बल्कि बड़े और अचानक होने वाले बदलावों से अस्तित्व में आई। इस धारणा का कोलाहलपूर्ण समर्थन देने वाले प्रथम लोग 1970 के दशक की शुरूआत में दिखे। दो अमेरिकन जीवाश्म वैज्ञानिक नील्स एल्ड्रेज़ और स्टीफन जे गाउल्ड बहुत अच्छी तरह जानते थे कि जीवाश्म रिकॉर्ड नीओ–डार्विनिस्ट सिद्धांतों के दावों को संपूर्ण रूप से नकार चुके हैं। जीवाश्म ने साबित किया है कि सजीव क्रमशः क्रमिक–विकास से उत्पन्न नहीं हुए बल्कि अचानक और संपूर्ण संरचना के साथ उत्पन्न हुए हैं। नीओ–डार्विनिस्ट तीव्र आशा के साथ जी रहे थे (और आज भी जी रहे हैं) कि एक दिन खोये हुए "ट्रांसिशनल फॉर्म्स" मिल जायेंगे। यह आशा बेबुनियाद है ऐसा महसूस करने पर एल्ड्रेज़ और गाउल्ड, जो अपने इवोल्युशनरी मत छोड़ नहीं सकते थे, एक नया मॉडल सामने रखा : पन्कच्युऐटेड ईक्विलिब्रियम। यह मॉडल (स्वरूप) दावा करता है कि क्रमिक–विकास छोटे–मोटे बदलावों के परिणामस्वरूप नहीं बल्कि अचानक और बड़े बदलावों के फ़लस्वरूप हुआ है।

यह मॉडल और कुछ नहीं पर स्वप्नचित्रों का मॉडल (प्रतिरूप) है। उदाहरण के लिए एल्ड्रेज़ और गाउल्ड के लिए रास्ता तैयार करने वाले यूरोपियन जीवाश्म वैज्ञानिक ओ एच शिंडेवोल्फ ने दावा किया कि जीनेटिक संरचना में भारी "अकस्मात" के परिणामस्वरूप प्रथम पक्षी सरीसृप (रेंगने वाले प्राणी) के अंडे से बाहर आया।12 इसी सिद्धांत के अनुसार जमीन पर रहने वाले कुछ प्राणी अचानक और महत्त्वपूर्ण रूपांतरण से गुज़रकर महाकाय व्हेल में परिवर्तित हो सकते थे। जीनेटिक्स, बायोफिज़िक्स और बायोकैमिस्ट्री के सभी नियमों से पूर्ण रूप से विपरीत यह दावे परी में तबदील हो जाते मेंढक की परीकथाओं जितने ही वैज्ञानिक हैं। फिर भी नीओ–डार्विनिस्ट का दावा जो गहरे संकट में आया था उससे तनाव में आकर कुछ इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म वैज्ञानिकों ने इस सिद्धांत को अपना लिया जो खुद नीओ–डार्विनिज़म से भी कई गुना विचित्र और अतार्किक थी।

इस मॉडल का एकमात्र उद्देश्य जीवाश्म रिकॉर्ड में जो दरार रह गई थी उसके लिए खुलासा देना था जो नीओ–डार्विनिस्ट मौडल समझाने में नाकाम रहा था। हालांकि, "एक पक्षी अचानक सरीसृप के अंडे में से आ टपका" ऐसे दावे के साथ पक्षियों के क्रमिक–विकास में जीवाश्म के सबूत की जो दरार रह गई है उसे समझाने का प्रयास करना बुद्धिमानी नहीं होगी क्योंकि इवोल्युशनिस्ट्स के खुद स्वीकार करते हैं कि एक जाति में से दूसरी जाति में क्रमिक–विकास की घटना होने के लिए जीनेटिक सूचना में बहुत बड़े और लाभदायी बदलाव की आवश्यकता होती है। हालांकि, किसी भी प्रकार का म्युटेशन जीनेटिक सूचना में सुधार नहीं लाता या उस में कोई नयी सूचना मिलाता नहीं है. म्युटेशन्स मात्र जीनेटिक सूचना को अस्तव्यस्त कर देता है। इसलिए पन्कच्युऐटेड ईक्विलिब्रियम मॉडल द्वारा कल्पित "ग्रॉस म्युटेशन्स" जीनेटिक सूचना में मात्र "ग्रॉस" (स्पष्ट) या "ग्रेट" (बड़ी) कटौती और हानि पहुँचाते हैं। इसके अलावा, जीवन के उद्भव के प्रश्न का जवाब देने में मिली विफ़लता के कारण "पन्कच्युऐटेड ईक्विलिब्रियम" का मॉडल अपने प्रथम कदम पर ही डगमगा जाता है। जीवन के उद्भव का प्रश्न नीओ–डार्विनिस्ट मॉडल को भी शुरूआत से ही नकार देता है। एक भी प्रोटीन संयोग से पैदा होने की कोई गुंजाईश न होने के कारण करोड़ों अरबों प्रोटीन के बने सजीव "पन्कच्युऐटेड" या "क्रमशः" क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अंग है या नहीं इस पर वाद. विवाद करना ही बुद्धिसंगत नहीं है।

इसके बावजूद जब "इवोल्युशन" का मुद्दा ऊठता है तो आज भी नीओ–डार्विनिज़म का मौडल ही मन में आता है. आगे आनेवाले अध्यायो में हम सब से पहले नीओ–डार्विनिस्ट मौडल के दो काल्पनिक मैकेनिज़म (प्रक्रिया) की जाँच करेंगे और बाद में इस मॉडल को परखने के लिए जीवाश्म रिकॉर्ड की ओर देखेंगे। इसके बाद हम जीवन के उद्भव के प्रश्न पर विचार करेंगे जो नीओ–डार्विनिस्ट मौडल और "इवोल्युशन बाय लीप्स" जैसे अन्य तमाम मौडल को अमान्य ठहराता है।

ऐसा करने से पहले पाठक को यह याद दिलाना उपयोगी होगा कि हर कदम पर हम जो हकीकत का सामना करेंगे वो यह है कि इवोल्युशनरी द्रश्य एक परीकथा, एक बहुत बडा धोखा है जिसका वास्तविक दुनिया से कोई मेल नहीं है। यह ऐसा परिद्रश्य है जिसका उपयोग दुनिया को 140 सालों तक मूर्ख बनाने के लिए किया गया है। अत्याधुनिक वैज्ञानिक खोज़ों के कारणवश अंत में इस सिद्धांत का लगातार समर्थन करना असंभव हुआ है।
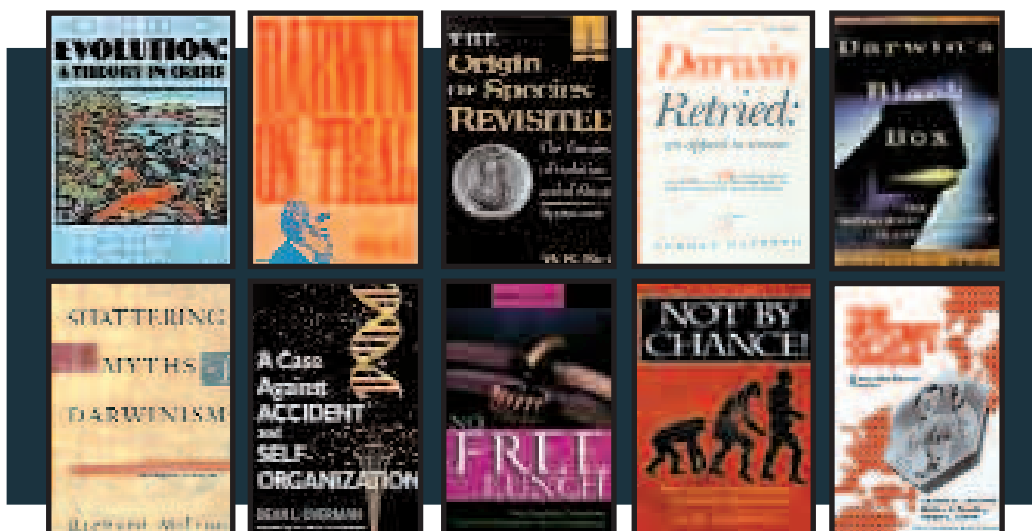
आज दुनिया में (विशे ातः अमरीका और युरोप में) हजारो वैज्ञानिक क्रम विकास की थीअरि में नहीं मानते है और इस थीअरि की अयोग्यता पर उन्होने कई किताबे प्रकाशित की है. उपर इसके कुछ उदाहरण दिये गये है.

मध्यवर्ती स्वरूप का कोई अस्तित्व नहीं है

क्रम विकास की थीअरि यह दावा करती है कि म्युटेशन्स के जरिए सजीव विविध जातियों में रूपांतरित होते है. हालांकि, आधुनिक विज्ञान ने यह स्प ट किया है कि यह एक बडा झूठ है.

कृ.अगर सभी जातिया अन्य जातियो में से उतरकर आई है तो फिर हमे अनगिनत मध्यवर्ती स्वरूप क्यूं देखने को नहीं मिलते? अगर जातियो के इतनी स्प ट व्याख्या दी गई है तो फिर समग्र प्रकृति ऊलझी हुई क्यूं नहीं दिखाई देती है?कृ.लेकिन इस थीअरि के मुता. बिक कई मध्यवर्ती स्वरूपो का अस्तित्व होना चाहिए तो फिर हम उन्हे पृथ्वी की पपडी में अनगिनत संख्या में दबे हुए क्यूं नहीं पाते है?कृ.सभी भूस्तरीय रचना और स्तर क्यूं मध्यवर्ती कडीयों से भरपूर नहीं है? भूस्तरशास्त्र सचमुच ऐसी कोई ऑर्गेनिक श्रुंखला को उजागर नहीं करता है; और यह   ाायद सबसे स्प ट और गंभीर गतिरोध है जो मेरी थीअरि के खिलाफ ऊठाये जा सकते है.

चार्ल्स डार्विन, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़, ऑक्सफॉर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, न्यू यॉर्क, 1998, पृ. 140, 141, 227
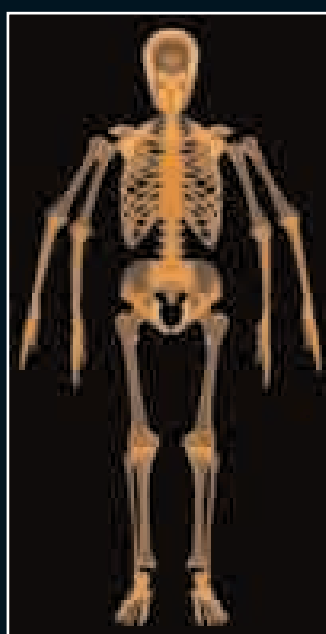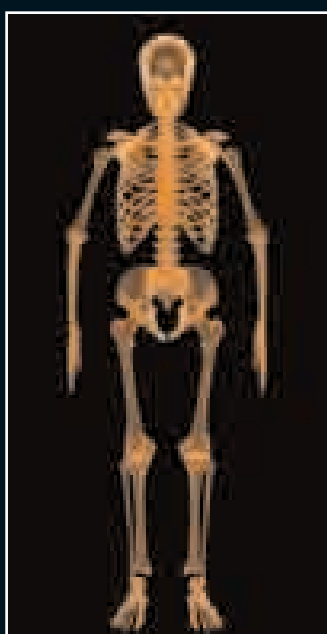
सामान्य मानव खोपडी

सब से पहले, अगर सजीव सचमुच संपूर्ण अलग प्राणीयों में रूपांतरित हुए है तो उनकी रूपांतरण की प्रक्रिया के अनगिनत मध्यवर्ती चरण होने चाहिए.

इवोल्युशनिस्टस के दावों के अनुसार अगर रैन्डम म्युटेशन्स से सजीव विक. सित हुए है तो फिर इसके परिणामस्वरूप तीन दिमाग, चार आँखे, जालयुक्त हाथवाले और अन्य कई विलक्षण प्राणी पैदा हुए होने चाहिए थे।

क्रम विकास की थीअरि यह दावा करती है कि म्युटेशन्स के जरिए सजीव विभिन्न जातियों में रूपांतरित होते है. हालांकि, आधुनिक विज्ञान ने यह स्प ट किया है कि यह एक बडा झूठ है. सबसे पहले अगर सजीव सचमुच संपूर्ण अलग प्राणीयों में रूपांतरित हुए है तो इस रूपांतरण की प्रक्रिया के दौरान अनगिनत मध्यवर्ती चरण होने चाहिए. भूस्तरीय रिकॉर्ड मध्यवर्ती जीवाश्म से भरा हुआ होना चाहिए (याने ऐसे प्राणीयो के जीवाश्म जो अभी भी क्रम विकास की प्रक्रिया से गुजर रहे है). हालांकि, अब तक खुदाई करके निकाले गये 10 करोड जीवाश्म में से सभी का संपूर्ण स्वरूप है जिस से हम आज परिचित है. अगर सचमुच क्रम विकास हुआ होता तो पृथ्वी मध्यवर्ती स्वरूपवाले अरबो जीवाश्म से भरी हुई होती. इसके अलावा, इनमें से लाखो प्राणी का हाल म्युटेशन्स के कारण विकृत और असाधारण रूप से असामान्य होता.

इवोल्युशनिस्टस के दावो के मुताबिक   रीर का हर अंग रैन्डम म्युटेशन्स के जरिए अस्तित्व में आयाः अपने कार्यो का विकास करते वक्त एक असामान्य अंग बारबार म्युटेशन से गुज़रा और हर म्युटेशन ने उसकी प्रवर्तमान अजीब सं. रचना को अलग अजीब स्वरूप में रूपांतरित किया. यह दावा इस बात को जरूरी बनाता है कि पृथ्वी पर ऐसे लाखो स्वरूप मौजूद है जिसमें से हर स्वरूप हरेक अलग चरण में विभिन्न असाधारण लक्षण दिखाता है. फिर भी ऐसा

एक भी उदाहरण हमारे सामने हाज़िर नहीं है. दो, तीन, चार या पांच सिरवाले मनु यो के कई जीवाश्म मौजूद होने चाहिए या कीटको में हम देखते है वैसी दर्जनो जटिल आँखे होनी चाहिए या दो या तीन मीटर लम्बे हाथ या एसा कोई भी विचित्र लक्षण पाया जाना चाहिए. इसी तरह, विलक्षण प्राणीयों और पौधो के अनगिनत नमूने होने चाहिए. हालांकि, एसा एक भी नमूना मिला नहीं है. सभी सामुद्रिक प्राणीयों द्वारा विचित्र मध्यवर्ती स्वरूपो की लम्बी श्रुंखला छोडी जानी चाहिए थी. यह हकीकत खुद क्रम विकास की थीअरि को गिराने का तख्ता तैयार करती है. एक दिन ाायद एसा कुछ 'मध्यवर्ती' जीवाश्म देखने को मिलेगा ऐसी आशा में इस थीअरि का समर्थन करना योग्य नहीं है. (पिछले 140 सालो में खुदाई से मिला हर नमूना क्रम विकास की संभावना का खण्डन करता है). 140 साल गुजरने के बाद अब एक भी प्रदेश एसा नहीं बचा है जहां खुदाई करनी बाकी हो. संशोधन पर अरबो डॉलर्स खर्च किये जा चुके है. फिर भी डार्विन ने जिसकी कल्पना की थी वैसे मध्यवर्ती स्वरूपो वाले जीवाश्म अभी भी मिले नहीं है. डार्विनिस्ट लोग क्रम विकास का संकेत दे सके ऐसा एक भी मध्यवर्ती स्वरूपवाला जीवाश्म मिला नहीं है. दूसरी ओर, लाखों 'जीवित जीवाश्म' सृजन की हकीकत के लिए निर्णायक सबूत देते है.

सामान्य मानव पैर

अध्याय 3

क्रमिक–विकास के काल्पनिक मैकेनिज़म

नीओ–डार्विनिस्ट मॉडल जिसे हम बतौर क्रमिक–विकास की मुख्य धारा के सिद्धांत के रूप में लेंगे यह तर्क देता है कि जीवन की उत्पत्ति दो प्राकृतिक मैकेनिजम के जरिए हुई है : "प्राकृतिक चयन" और "म्युटेशन"। यह सिद्धांत मूलतः यह दावा करता है कि प्राकृतिक चयन और म्युटेशन दो पूरक मैकेनिज़म (व्यवस्थाएं) हैं। इवोल्युशनरी रूपान्तरण (मोडिफिकेशन) रैन्डम म्युटेशन्स (जीन्स में आकस्मिक बदलाव) में छिपा है जो सजीवों की जीनेटिक संरचनाओं में घटित होता है। म्युटेशन्स से पैदा हुए लक्षणों को प्राकृतिक चयन की मैकेनिज़म के द्वारा चयन किया जाता है और इसी प्रकार सजीव उत्पन्न होते हैं।

जब हम इस सिद्धांत को गहराई से देखते हैं तब हमें पता चलता है कि इवोल्युशनरी मैकेनिज़म जैसी कोई व्यवस्था ही नहीं है। इसी प्रकार प्राकृतिक चयन और म्युटेशन्स भी विभिन्न जातियों के एक–दूसरे में रुपांतरण में कोई योगदान नहीं देते और यह कि वह देते है ऐसा दावा निराधार है।

प्राकृतिक चयन

डार्विन के पहले के जीव–वैज्ञानिक, प्राकृतिक चयन की प्रक्रिया से परिचित थे। डार्विन ने इस प्रक्रिया को यह व्याख्या दी : "एक ऐसा मैकेनिज़म जो जातियों को भ्रष्ट किये बगैर अपरिवर्तनशील रखता है।" डार्विन प्रथम व्यक्ति था जिसने यह दावा सामने रखा कि इस प्रक्रिया में क्रम विकास की ताकत थी और इसी दावे की नींव पर उसने अपने पूरे सिद्धांत को खड़ा किया। डार्विन ने अपनी किताब को जो नाम दिया वह सूचित करता है कि प्राकृतिक चयन डार्विन की थीअरि का आधार थाः द ऑरिज़िन ऑफ द स्पीशिज़, बाय मीन्स ऑफ नैचुरल सैलेक्शन।

हालांकि, प्राकृतिक चयन से सजीव की ऊत्पत्ति होती है यह साबित करने के लिए डार्विन के समय से लेकर आज तक कोई भी प्रमाण दिया नहीं गया है। लंदन में ब्रिटिश म्युज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री के वरिष्ठ जीवाश्म–वैज्ञानिक और प्रमुख इवोल्युशनिस्ट कॉलिन पेटरसन इस बात पर ज़ोर देते हैं कि प्राकृतिक चयन में सजीव को उत्पन्न करने की क्षमता हो ऐसा कभी भी देखा नहीं गया है :

> आज तक किसी ने भी प्राकृतिक चयन की मैकेनिझम के जरिए कोई जाति को उत्पन्न नहीं किया है। आज तक कोई इस घटना के नज़दीक भी नहीं गया है और नीओ–डार्विनिज़म में हो रही अधिकतर बहसें इसी प्रश्न के बारे में हैं।13

प्राकृतिक चयन का मत यह है कि वह जीवित प्राणी जो अपने प्राकृतिक आवासों की परिस्थितियों के ज्यादा अनुकूल है वह हालात पर काबू पायेंगे ऐसी संतानों को जन्म देकर जिनका अस्तित्व बाकी रहेगा। जब कि जो अयोग्य है वह लुप्त हो जायेंगे। उदाहरण के तौर पर ऐसे हिरन के समूह में जिन्हें जंगली जानवरों से खतरा है, जो तेज़ दौड़ पायेंगे वो ज़िंदा रहेंगे। यह सच है, लेकिन यह प्रक्रिया चाहे कितनी लम्बी हो उससे हिरन किसी अन्य प्राणी में तबदील नहीं होंगे। हिरन हमेशा हिरन रहेंगे।

जब हम उन घटनाओं को देखते हैं, जिसे ईवोल्युशनिस्ट उदाहरण के रूप में पेश करते हैं, तो हमें पता चलता है कि वह केवल धोखा देने का एक और प्रयास है।

"औद्योगिक कालापन" (इन्डस्ट्रियल मेलेनिज़म)

सन् 1986 में डग्लास फुतुयमा ने एक किताब प्रकाशित की, द बायोलोजि ऑफ इवोल्युशन, जो सबसे स्पष्ट रूप से प्राकृतिक चयन द्वारा क्रमिक–विकास के सिद्धांत को समझाने वाले स्त्रोत में से एक है। इस विषय में उसका सबसे मशहूर उदाहरण पतंगे की जनसंख्या

औद्योगिक मेलानिज़म (साँवलापन, कालापन) सचमुच क्रम विकास का सबूत नहीं हो सकता है क्यूं कि इस प्रक्रिया के फलस्वरूप पतंगो की नयी जातियां पैदा नहीं हुई है. यह चयन सिर्फ पहले से प्रवर्तमान विभिन्न पतंगो में ही देखने को मिला था. इसके अलावा मेला. निज़म की प्रचलित कहानी झूठी है. किताबो में छपी इसकी तस्वीरे मृत पतंगो के नमूनो की है जिन्हे इवोल्युशनिस्टस द्वारा पेडो के तने पर चिपकाया गया था या पिन किया गया था.

के रंग के बारे में है जो ईंग्लंड में औद्योगिक क्रांति के दौरान काला दिखाई पड़ा था।

सिर्फ फुतुयमा ही नहीं बल्कि लगभग सभी इवोल्युशनिस्टों की जीवविज्ञान की किताबों में औद्योगिक कालेपन की कहानी पायी जायेगी। यह कहानी 1950 के दशक में ब्रिटिश भौतिकशास्त्री और जीव–वैज्ञानिक बर्नार्ड केटलवेल द्वारा किये गये सिलसिलेवार प्रयोगों पर आधारित है और उसका संक्षिप्त ब्यौरा इस प्रकार दिया जा सकता है।

विवरण के मुताबिक इग्लैंड में औद्योगिक क्रांति के आरंभ के आसपास मांचेस्टर के ईर्द–गिर्द पेड़ों की छाल का रंग हल्का था। इसलिए उन पेड़ों पर बैठने वाले गहरे रंग के पतंगे शिकारी पक्षियों को आसानी से नज़र आने लगे और उनके अस्तित्व टिकने के आसार बहुत कम हो गए। पचास साल बाद जंगल में (जहां औद्योगिक प्रदूषण ने शैवाक या लाइकेन को मिटा दिया है) पेड़ों की छाल का रंग गहरा हुआ था और अब हल्के रंग वाले पतंगों का व्यापक शिकार होने लगा क्योंकि वे आसानी से नज़र आते थे। परिणामस्वरूप गहरे रंगवाले पतंगो की तुलना में हल्के रंगवाले पतंगों की तादात कम हो गई। इवोल्युशनिस्टस ने इसे अपने सिद्धांत का सबसे बड़ा प्रमाण मानते हैं। हल्के रंगवाले पतंगों का किस तरह से गहरे रंग वाले पतंगो में "उदभव" हुआ यह दिखाकर वे इस गुमराह करने वाले तर्क का सहारा और सांत्वन लेते हैं।

हालांकि, अगर हम इसे सच मान भी लें तो यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए की पतंगों को कभी भी इवोल्युशन थीअरि के प्रमाण के तौर पर उपयोग में नहीं लिया जा सकता क्योंकि पतंगे का ऐसा कोई नया रूप अस्तित्व में नहीं आया जो पहले अस्तित्व में नहीं था। गहरे रंग के पतंगो का अस्तित्व औद्योगिक क्रांति के समय से पहले था। सिर्फ जनसंख्या में पतंगों की वर्तमान विविधता के सापेक्ष अनुपात में बदलाव हुआ था। पतंगो ने कोई नया लक्षण या नये अंग नहीं पाये थे जिससे उनका "ज़ाति उदभवन" (स्पेशिएशन) होता। अगर पतंगों की एक जाति को दूसरी जाति में तबदील होना है (मान लो कि पक्षी) तो उनके जीन्स में नये बदलाव लाने पड़ेंगे। मतलब पक्षी के शारीरिक लक्षण पतंगों को देने के लिए उनमें बिल्कुल अलग–सा जिनेटिक प्रॉग्राम डालना पड़ेगा।

औद्योगिक कालेपन की जो इवोल्युशनिस्ट कहानी है उसके लिए यह जवाब उपयुक्त है। हालांकि, इस कहानी का एक दिलचस्प पहलू है : उसकी व्याख्या ही नहीं बल्कि खुद कहानी झूठी है। मॉलेक्युलर जीव–वैज्ञानिक जोनाथन वेल्स अपनी किताब आइकन्स ऑफ इवोल्युशन में समझाते हैं कि क्रमिक–विकास से जुड़ी हर किताब में काले पतंगो की कहानी शामिल की जाती है और इसलिए यह एक "आइकन" (प्रतिमा) बन गई है जो सत्य से दूर है। कहानी का "प्रायोगिक प्रमाण" माने जानेवाला बर्नार्ड केटलवैल का प्रयोग अपने आप में किस तरह का एक वैज्ञानिक कलंक है इसकी चर्चा वेल्स अपनी किताब में करते हैं। इस कलंक के कुछ बुनियादी तत्व इस प्रकार है :

केटलवैल के बाद किये गये कई प्रयोगों में यह सत्य उजागर हुआ कि इन पतंगों में से सिर्फ एक किस्म के पतंगे पेड़ की छाल पर बैठते थे और बाकी सभी जातियाँ छोटी, अनुप्रस्थ (हॉरिज़ोन्टल) डालियों के नीचे बैठते थे। 1980 से यह स्पष्ट हो चुका है कि काले पतंगे सामान्य तौर पर पेड़ की छाल पर नहीं बैठते। अपने 25 सालों के क्षेत्रकार्य (फिल्डवर्क) में सिरील क्लार्क और रोरी हाउलेट, माइकल मेजेरुस, टोनी लाइबर्ट और पॉल ब्रेकफिल्ड इस निष्कर्ष पर आये कि "केटलवैल के प्रयोग में पतंगों को असामान्य ढ़ंग से बर्ताव करने के लिए विवश किया गया था। इसलिए परीक्षण के परिणामों को वैज्ञानिक नहीं माना जा सकता।"

केटलवैल के निष्कर्ष का परीक्षण करने वाले वैज्ञानिक एक ओर दिलचस्प परिणाम के साथ सामने आये : हलके रंगवाले पतंगें इंग्लैंड कम प्रदूषित क्षेत्रों में ज्यादा तादात में होने चाहिए लेकिन गहरे रंग के पतंगों की तादात हलके रंगवाले पतंगो से चार गुना ज्यादा

है। इसका यह मतलब है कि केटलवैल ने जो दावा किया है और लगभग सभी इवोल्युशनिस्ट स्रोत द्वारा उसे समर्थन मिलता रहा है वह पतंगो की संख्या और पेड की छालों के बीच कोई परस्पर सम्बन्ध नहीं हैं।

शोध जितनी गहराई से होता गया उसी तरह इस कलंक ने एक नया मोड़ लिया : केटलवैल द्वारा जिनकी तस्वीरें ली गई हैं वे "छाल पर बैठे पतंगे" वास्तव में मरे हुए थे। केटलवैल ने मृत नमूनों को पेड़ की छाल से चिपका दिया था और बाद में तस्वीर खींची थी। वास्तव में पतंगे पेड़ के पत्तों के नीचे रहने के कारण ऐसी तस्वीर खींचना मुमकिन नहीं था।14

सिर्फ 1990 के दशक के अंतिम वर्षों में ही वैज्ञानिक समुदाय ने इन हकीकतों को उजागर किया था। महाविद्यालयों में दशकों तक "इवोल्युशन का परिचय" में सबसे ज्यादा दिलचश्पी से पढ़ाए गये विषयों में से एक औद्योगिक कालेपन की झूठी मान्यता का पतन होने की वजह से इवोल्युशनिस्ट काफ़ी निराश हुए. उनमें से एक जेरी कोयनी ने यह टिप्पणी की :

जब मैं छः साल का था तो मुझे मालूम हुआ कि क्रिसमस के त्यौहार पर सान्ता नहीं बल्कि मेरे पिताजी मेरे लिए अक्सर तोहफ़े लाया करते थे। मेरी इस खोज़ से मुझे जो आघात लगा वैसा ही आघात इस नयी खोज़ से लगा है।15

इस प्रकार "प्राकृतिक चयन का सबसे मशहूर उदाहरण" को एक वैज्ञानिक कलंक मानकर इतिहास के कचरे के ढ़ेर में फैंक दिया गया जो जरूरी भी था क्यूं कि इवोल्युशनिस्ट जैसा दावा कर रहे है उस से विरुद्ध प्राकृतिक चयन "इवोल्युशनरी मैकेनिझम" नहीं है। वह सजीव में ना तो नया अंग बनाता है और ना ही यह अंग दूर कर सकता है और एक जाति के सजीव को दूसरी जाति में बदल भी नहीं सकता है।

प्राकृतिक चयन जटिलता को क्यों समझा नहीं सकता है?

प्राकृतिक चयन क्रमिक–विकास के सिद्धांत में कुछ भी योगदान नहीं करता क्योंकि यह मैकेनिज़म जातियों की जीनेटिक सूचना को ना तो बढ़ा सकता है ना तो सुधार सकता है। वह एक जाति का दूसरी जाति में रूपांतर भी नहीं कर सकता। जैसे कि स्टारफिश को मछली में, मछली को मेंढक में, मेंढक को मगरमच्छ में या मगरमच्छ को पक्षी में! पन्कच्युऐटेड ईक्विलिब्रियम (विरामयुक्त सन्तुलन) के सब से बडे समर्थक स्टीफन जे गाउल्ड प्राकृतिक चयन के इस गतिरोध का इस तरह से ज़िक्र करते हैं।

डार्विनिज़म का सार एक ही शब्दसमूह में रहा है : प्राकृतिक चयन क्रमिक–विकास के बदलाव का सृजनात्मक बल है। कोई इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि जो जीने में असक्षम है उन्हें मिटाने में चयन नकारात्मक भूमिका निभायेगा। डार्विनियन सिद्धांत के मुताबिक प्राकृतिक चयन के द्वारा सक्षम का सृजन करना भी आवश्यक है।16

प्राकृतिक चयन के मुद्दे पर इवोल्युशनिस्ट गुमराह करने वाली जो अन्य पद्धत्तियां आजमाते हैं वह इस मैकेनिज़म (व्यवस्था) को सचेत चित्रित करने का प्रयास करते हैं। हालांकि, प्राकृतिक चयन में कोई चेतना नहीं है। सजीवों के लिए क्या अच्छा और क्या बुरा है यह तय करने की ईच्छाशक्ति उसमें नहीं है। परिणामस्वरूप जैविक तंत्र और अंगों में जो 'इर्रिड्युसिवल कॉमपलेक्सिटी' (वह जटिलता जिसे कम

प्राकृतिक चयन एक ऐसी व्यवस्था है जो किसी जाति में से कम. जोर प्राणीओ का पत्ता काट देता है. यह एक सन्तुलित बल है जो जीवित जातियो को न ट होने से बचाता है. इसके दायरे के बाहर उसमें किसी एक जाति को दूसरी में रूपांतरित करने की कोई क्षमता नहीं है.

नहीं किया जा सकता) के लक्षण हैं, उन्हें प्राकृतिक चयन के द्वारा नहीं समझाया जा सकता है। ऐसे सिस्टम और अंग भारी तादात में कई पूर्जों के बने होते हैं जो एक साथ समन्वय से काम करते हैं और इनमें से कोई भी पूर्जा न हो या दोषयुक्त हो तो यह अंग काम नहीं करेगा। (जैसे कि अगर मानव आँख के सभी घटक ठीक नहीं हैं तो आँख काम नहीं करेगी)। इसलिए इन सभी पूर्जो को एकत्रित करनेवाली ईच्छाशक्ति के पास भविष्य देखने की द्रष्टि होनी चाहिए और आखरी चरण पर मिलनेवाले लाभ के प्रति सीधा लक्ष्य होना चाहिए। प्राकृतिक चयन की अपनी कोई चेतना या ईच्छाशक्ति न होने के कारण वह ऐसा कोई काम नहीं कर सकती। इवोल्युशन की नींव को डगमगा देनेवाली यह हकीकत से खुद डार्विन भी चिंतित थे। उन्होने लिखा "अगर कोई ऐसा दिखा सके कि कोई भी जटिल अंग असंख्य और एक के बाद एक होने वाले सूक्ष्म परिवर्तन से नहीं उत्पन्न हो सकता है तो मेरा सिद्धांत पूरी तरह से ध्वस्त हो जाएगा।"17

प्राकृतिक चयन से किसी एक जाति के सिर्फ बदसूरत, दुर्बल या असक्षम लोग अलग हो जाते हैं। उससे नई जाति, नई जीनेटिक सूचना या नये अंग पैदा नहीं किये जा सकते हैं। मतलब यह कि सजीव प्राकृतिक चयन से उत्पन्न नहीं हो सकते। डार्विन ने यह कहकर इस वास्तविकता को स्वीकार किया : "जब तक अनुकूल विविधताओं को उत्पन्न होने के संयोग नहीं मिलते तब तक प्राकृतिक चयन कुछ नहीं कर सकता है।"18 यही कारण है कि नीओ–डार्विनिज़म को "लाभकारी बदलाव के कारण" के रूप में म्युटेशन को प्राकृतिक चयन की ऊँचाई पर बिठाना पड़ा। हालांकि हम आगे देखेंगे कि म्युटेशन्स सिर्फ "हानिकारक बदलावों के कारण" बन सकते है।

म्युटेशन्स

सजीवों की कोशिकाओं की नाभिक (न्युक्लिअस) में पाये जाने वाले और कोशिका की सभी जीनेटिक सूचना का संग्रह करने वाले डी एन ए अणु में जो तोडफोड या ऊलटफेर होते है उन्हें म्युटेशन्स बदलाव कहा जाता है। यह तोड़फोड़ या उलटफेर विकिरणों (रेडिएशन) या रासायनिक प्रक्रिया के कारण होते हैं। हर म्युटेशन एक "हादसा" है और वह डी एन ए का निर्माण करने वाले न्युक्लिओटाइड को हानि पहुँचाते हैं या उनकी जगह बदल देते हैं। अक्सर, इतनी हानि पहुँचाते है और परिवर्तन करते हैं कि कोशिका इस हानि की मरम्मत नहीं कर पाती है।

इवोल्युशनिस्ट अक्सर जिस की पीछे छिप जाते है वह म्युटेशन कोई जादुई छड़ी नहीं जो सजीवों को ज्यादा विकसित और परफैक्ट रचना में बदलती हैं। म्युटेशन की सीधी असर हानिकर होती है। म्युटेशन्स से आये हुए बदलाव सिर्फ वैसे ही हो सकते हैं जिसका अनुभव हिरोशिमा, नागासाकी और चेर्नोबिल के निवासीयों ने किया था : याने मौत, अशक्तता और बिमारीयां.....

इसका कारण समझना बहुत आसान है : डीएनए की संरचना काफ़ी जटिल है और उसमें बेतरतीब प्रभावों से सजीवों को हानि ही पहुँच सकती है। बी.जी. रंगानाथन कहते हैं :

पहली बात यह कि जेन्युइन या विश्वसनीय म्युटेशन्स प्रकृति में बहुत दुर्लभ है। दूसरा यह कि ज्यादातर म्युटेशन्स जीन्स की संरचना में सुनियोजित नहीं पर रेन्डम (अव्यवस्थित) बदलाव लाते हैं इसलिए हानिकारक है। अत्यंत सुनियोजित व्यवस्था में कोई भी रैन्डम बदलाव अच्छे नहीं पर बुरे परिणाम लायेगा। जैसे कि अगर भूकंप इमारत जैसी सुनियोजित रचना को हिला कर रख देता है तो इस इमारत की रचना में रैन्डम बदलाव ही संभव होगा और यह कोई सुधार नहीं है।19

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि आज तक कभी भी उपयोगी म्युटेशन को देखा नहीं गया है। सब म्युटेशन्स हानिकर साबित हुए हैं। दूसरे विश्वयुद्ध में प्रयुक्त किये गये परमाणु शस्त्रों द्वारा संभावित म्युटेशन्स की छानबिन करने के लिए बनाई गई जीनेटिक इफ्फेक्ट्स ऑफ एटमिक रॅडिऐशन समिति द्वारा तैयार किये गये रिपोर्ट पर इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक वॉरेन वीवर ने यह टिप्पणी की थी :

"कई लोग इस बात को जानकर चकित होंगे कि व्यवहारिक तौर पर सभी म्यूटेंट जीन्स (कोशिका के बदलाव लाने में सक्षम जीन्स) हानिकारक होते हैं।" यह बात कई लोगों को उलझन में डाल देती है क्योंकि म्युटेशन्स क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का आवश्यक घटक है। तो फिर क्रम विकास से लेकर जीवन के उच्चतम स्वरूपों तक पहुँचने वाली प्रक्रिया ऐसे म्युटेशन्स में से किस तरह आकार ले सकती है जो सब हानिकर पाये गये हैं? 20

"उपयोगी म्युटेशन पैदा करने" का हर प्रयास बुरी तरह विफ़ल हुआ है। दशकों तक इवोल्युशनिस्ट ने फ्रुटफ्लाई नामक जंतुओं में म्युटेशन्स पैदा करने के कई प्रयोग किये क्योंकि इस जंतु की प्रजोत्पत्ति बहुत तेज़ होती है इसलिए स्वाभाविक था कि उनमें म्युटेशन भी जल्द दिखाई पड़तें। पीढ़ी दर पीढ़ी यह जंतुओ की संरचना बदलने कि को. शिशें की गईं लेकिन कोई भी उपयोगी म्युटेशन देखने को न मिला। इसलिए इवोल्युशनिस्ट आनुवंशिकी वैज्ञानिक गॉर्डन टैलर ने लिखा :

म्युटेशन किसी सजीव के डीएनए में कोई नयी जानकारी ामिल नहीं करते है: म्युटेशन्स के परिणामस्वरूप, जीनेटिक जानकारी बनानेवाले कण अपनी जगह से विचलित हो जाते है या न ट होते है या किसी अलग जगह पर चले जाते है. म्युटेशन्स की बदौलत सजीव नया अंग या नया लक्षण नहीं प्राप्त कर सकते. ये सिर्फ असामान्य लक्षण पैदा करते है जैसे कि पीठ से बाहर आता हुआ पैर, या पेट में से बाहर आनेवाला कान.
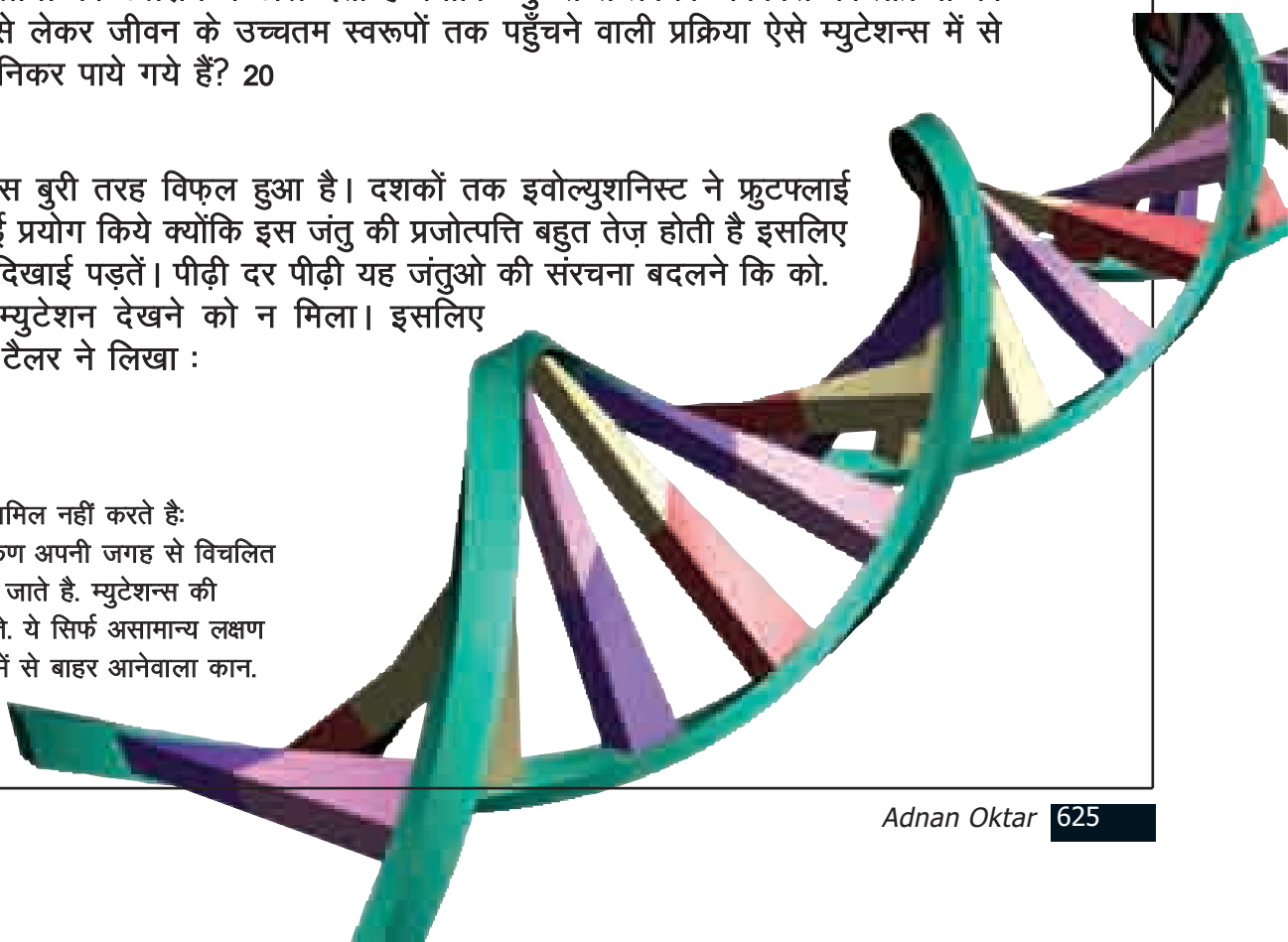
यह बहुत चौंकानेवाली हकीकत है (लेकिन इसका इतना ज़िक्र नहीं हुआ है) कि सारी दुनिया में आनुवंशिकी वैज्ञानिक साठ सालों या उससे भी ज्यादा समय से प्रयोगशालाओं में फ्रुट फ्लाई (जिसकी हर ग्यारह दिन में नयी पीढ़ी पैदा होती है) को उत्पन्न कर रहे हैं लेकिन अभी तक उन्होंने नयी प्रजातियों या नये किण्व (इन्जाइम) का उदभव देखा नहीं है।21

फ्रुट फ्लाई पर किये गये प्रयोगों को मिली विफ़लता पर एक अन्य संशोधक माइकल पीटमेन ने यह टिप्पणी की है :

मॉर्गन, गोल्डश्मिट, मुलर और अन्य आनुवंशिकी वैज्ञानिकों ने फ्रुट फ्लाई की पीढ़ीयों को गरमी, ठंड, प्रकाश, अंधकार और रसायनों तथा विकिरणों की असर के नीचे परखा है। सभी प्रकार के म्युटेशन्स (सभी सामान्य या सकारात्मक तरीके से हानिकारक) को प्रयोग में लिया गया है। लेकिन मानव सृजित क्रमिक–विकास नहीं देखा गया है। कुछ वैज्ञानिकों द्वारा बोतल में पैदा किये हुए फ्रुट फ्लाई को बाहर निकलने पर शायद ही कोई जीवित रह सके हों। वास्तव में म्युटन्ट मर जाते है, अप्रजायी या बाँझ हो जाते है या उनमें जंगलीपन के गुण देखने को मिलते हैं।22

यही बात मनुष्य के लिए भी सच है। मनुष्यो में देखे गये तमाम म्युटेशन्स के परिणाम हानिकर देखे गये हैं। इस मुद्दे पर इवोल्युशनिस्ट ने धूल झोंकते हैं और इन हानिकर म्युटेशन्स के उदाहरणों का "क्रमिक–विकास के सबूत" के रूप में भी हवाला देते हैं। मनुष्यों में घटित होने वाले सभी म्युटेशन्स मॉगोलिज़म, डाउन सिन्ड्रॉम, आल्बिनिज़म, डार्फिज़म या कैंसर जैसी शारीरिक त्रुटियों और अक्षमताओं में परिणित होते हैं। इवोल्युशनिस्ट पाठ्यपुस्तकों में इन म्युटेशन्स को "द इवोल्युशनरी मैकेनिज़म एट वर्क" (ईवोल्युशन की जीवित प्रक्रिया) के उदाहरण के तौर पर पेश किया जाता है। यह कहने की जरूरत नहीं कि लोगों को अक्षम और बीमार कर देने वाली प्रक्रिया कभी भी "द इवोल्युशनरी मैकेनिज़म" नहीं बन सकती – क्रमिक–विकास से ऐसे स्वरूप पैदा होने चाहिए जो जीने के लिए अनुकूल हो।

इस चर्चा का सार यह है कि इवोल्युशनिस्टस के दावो के समर्थन में म्युटेशन्स को क्यों स्वीकार नहीं किया जा सकता इसके तीन महत्त्वपूर्ण कारण है :

1) म्युटेशन्स का सीधा असर हानिकारक है : म्युटेशन्स अव्यवस्थित ढ़ंग से आकार लेते हैं इसलिए उसके प्रभाव में आने वाले हर सजीव को यह हानि पहुँचाते हैं। बुद्धि हमसे कहती है कि एक दोषहीन और जटिल संरचना में अजाग्रत दखल देने से वह संरचना में कोई सुधार नहीं होगा बलके ज्यादा खराबी पैदा होगी. सचमुच कोई "उपयोगी म्युटेशन" आज तक देखा नहीं गया है।

2) म्युटेशन्स किसी सजीव के डीएनए में कोई नई सूचना भरते नहीं है : म्युटेशन्स के परिणामस्वरूप जीनेटिक सूचना बनाने वाले कण अपनी जगह से खिसक जाते है या नष्ट हो जाते हैं या किसी अलग जगहों पर पहुंचा दिये जाते हैं। म्युटेशन से किसी सजीव को कोई नया अंग या लक्षण प्राप्त नहीं होता। इनसे सिर्फ पीठ में से पैर या पेट में से कान बाहर आना जैसी विकृतियां देखने को मिलती हैं।

3) म्युटेशन को आनेवाली पीढ़ी में ट्रांसफर करने के लिए उसे सजीव के जनन कोशिकाओं में आकार लेना पड़ता है। शरीर की किसी कोशिका या अंग में घटित होने वाला रैन्डम बदलाव आने वाली पीढ़ी को आगे नहीं पहुंचाया जा सकता है। जैसे कि, विकिरण या किसी अन्य कारण से परिवर्तित हुई मानव आँख, आने वाली पीढ़ियों को आनुवांशिकता की प्रक्रिया से आगे नहीं पहुंचाया जा सकता है।

सजीवों का क्रमिक–विकास होना असंभव है क्योंकि प्रकृति में ऐसा कोई मैकेनिज़म ही नहीं है जो क्रमिक–विकास का उदभव कर सके। इसके अलावा यह निष्कर्ष जीवाश्म रिकॉर्ड के प्रमाण के साथ सहमत होता है। जीवाश्म रिकॉर्ड क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अस्तित्व नहीं दिखाता है बल्कि उसका विरोध करता है।

बीसवीं सदी के प्रारंभ से इवोल्युशनरी जीवविज्ञानीओ को लाभदायी म्युटेशन्स की तलाश है और इसलिए उन्होने म्युटन्ट फ्लाय पैदा करने के प्रयास किये है. लेकिन इन प्रयासो का अंत बीमार और विकृत प्राणीयो के स्वरूप में ही होता है. उपर बांयी ओर दिया गया हुआ चित्र में एक सामान्य फ्रुट फ्लाय का सिर दिखता है जब कि नीचे दायीं ओर जो तस्वीर है उसमें फ्रुट फ्लाय का सिर दिखता है जिसमें से पैर बाहर की और लटके हुए है. उपर दायीं और दिख रही तस्वीर उस फ्रुट फ्लाय की है जिसके पँख विकृत हो चुके है – यह सब म्युटेशन के परिणाम है.

अध्याय 4

जीवाश्मों (फॉसिल) का रिकॉर्ड क्रम विकास की थीअरि का खंडन करता है

क्रमिक–विकास के सिद्धांत के मुताबिक हर सजीव अपने पूर्वज में से पैदा हुआ है। एक प्रजाति जिसका अस्तित्व था वह समय के गुज़रने पर किसी दूसरी प्रजाति में परिवर्तित हो गई और सभी प्रजातियां इसी तरह अस्तित्व में आई हैं। सिद्धांत के मुता. बिक यह रूपांतरण लाखों सालों से भी ज्यादा समय अवधि से गुज़रा है।

अगर यह सच होता तो जब यह तथाकथित रूपांतरण हो रहा था तब समय के इस विशाल अंतराल में अनगिनत मध्यवर्ती जातियां मौजूद होंगी। जैसे कि भूतकाल में कुछ अर्ध–मछली/अर्ध–सरीसृप सजीव का भी अस्तित्व होगा जिन्होंने अपने मछलियों के लक्षणों के अलावा सरीसृप के लक्षण भी प्राप्त किये होंगे। अथवा कुछ सरीसृप/पक्षी सजीवों का अस्तित्व होगा जिन्होंने अपने सरीसृप के लक्षणों के अलावा पक्षियों के भी लक्षण प्राप्त किये होंगे. इवोल्युशनिस्टस इन काल्पनिक सजीवों को "ट्रांसिशनल फॉर्म्स" कहते है जो भूतकाल में अस्तित्व में थे ऐसा वो मानते हैं। अगर ऐसे प्राणियों का सचमुच अस्तित्व था तो उनकी संख्या लाखों अरबों की संख्या में मौजूद होगी। इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन सजीवों के अवशेष जीवाश्म रिकॉर्ड में मौजूद होने चाहिए। यह ट्रांसिशनल फॉर्म्स की संख्या हाल के प्राणीयों की जातियों से भी कई गुना ज्यादा होनी चाहिए और उनके अवशेष पूरी दुनिया में मिलने चाहिए। द ऑरिज़िन ऑफ स्पीशिज़ में डार्विन ने इस हकीकत का स्वीकार किया और समझाया।

अगर मेरा सिद्धांत सच साबित होना है तो एक समूह की सभी प्रजातियों को एकसाथ अत्यंत निकटता से जोड़नेवाली अनगिनत मध्यवर्ती विविधताएँ निश्चित रूप से अस्तित्व में होंगी। फलस्वरूप उनके पुराने अस्तित्व का प्रमाण मात्र जीवाश्मों में से ही मिल सकता है।23

खुद डार्विन भी ऐसे मध्यवर्ती स्वरूपो की गैरमोजूदगी से परिचित थे। उन्होंने आशा कि यह अवशेष भविष्य में मिल जायेंगे। अपनी इस आशा के बावजूद डार्विन ने यह महसूस किया था कि यह गुमशुदा मध्यवर्ती स्वरूप उसके सिद्धांत के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट है। इसलिए उन्होंने अपनी किताब द ऑरिज़िन ऑफ द स्पीशिज़ के अध्याय "थीअरि के सामने चुनौतियां" में यह लिखा :

अगर सभी जातियां अन्य प्रजातियों में से सूक्ष्म क्रमशः क्रमिक परिवर्तन से पैदा हुई है तो हम क्यों हर जगह अनगिनत मध्यवर्ती स्वरूप देख नहीं पाते? यह समस्य प्रकृति क्यों अव्यवस्थित दिखाई नहीं देती और हमें सारी प्रजातियां क्यों सुव्यवस्थित दिखाई देती है? बल्कि इस सिद्धांत के मुताबिक अनगिनत मध्यवर्ती स्वरूपों का अस्तित्व पहले होगा, तो फिर हम पृथ्वी की परतों में उन्हें अनगिनत संख्या में दबे हुए क्यों नहीं पाते? तो फिर हर भौगोलिक रचना और हर परत ऐसी मध्यवर्ती कड़ियों से भरपूर क्यों नहीं है? यह तय है कि भू–विज्ञान ऐसी कोई भी क्रमिक ऑर्गेनिक (जैविक) श्रृंखला को उजागर नहीं करता है; और शायद यह सबसे सुस्पष्ट और गंभीर आपत्ति है जो मेरे सिद्धांत के खिलाफ़ भविष्य में उठाई जा सकती है।24

इस आपत्ति को चुनौती देने के लिए डार्विन एक ही खुलासा दे सकते थे कि आज तक खुदाई के ज़रिए जितने भी जीवाश्म मिले हैं वह पर्याप्त नहीं हैं। उन्होंने दावा किया कि जब जीवावशेषों के बारे में विशद अभ्यास पूर्ण होगा तब इस इन जीवाश्मों की खोई हुई कड़ियां मिल जायेंगी।

डार्विन की भविष्यवाणी को मानते हुए इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक 19वीं सदी के मध्य से पूरी दुनिया में जीवाश्म की खुदाई कर रहे है और अप्राप्त कड़ियां ढूंढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। अपने श्रेष्ठ प्रयासों के बावजूद अभी तक कोई भी मध्यवर्ती स्वरूप नहीं मिले हैं। खुदाई से मिले सभी जीवाश्म यह दिखाते है कि जीवन पृथ्वी पर अचानक और पूर्ण विकसित रूप में प्रकट हुआ जो इवोलुशनिस्ट की मान्यताओं के खिलाफ है। अपने सिद्धांत को सही साबित करने के प्रयासों में इवोल्युशनिस्टों ने अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मारी है और वह सिद्धांत के पतन का कारण बने हैं।

मशहूर ब्रिटिश जीवाश्म वैज्ञानिक डैरेक वी एज़र इवोल्युशनिस्ट होते हुए भी इस हकीकत को स्वीकार करते हैं।

अगर हम जीवाश्म रिकॉर्ड की विस्तृत जांच करें तो एक मुद्दा बार–बार सामने आता है कि क्रमशः क्रमिक–विकास नहीं बल्कि एक समूह की कीमत पर अन्य समूह का अचानक विस्फोट हुआ था।

अन्य इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक मार्क ज़ारनेकी यह टिप्पणी करते हैं :

इस सिद्धांत को साबित करने की राह में जीवाश्मों यानी पृथ्वी की भौगोलिक रचनाओं में सुरक्षित दफ़न हुई लुप्त प्रजातियों के चिह्न सबसे बड़ा रौड़ा बने हुए हैं। इन अवशेषों ने कभी भी डार्विन के काल्पनिक मध्यवर्ती रुपान्तर के सुरागों को पेश नहीं किया है – बल्कि प्रज़ातियां अचानक प्रकट हुईं और लुप्त हो गईं, और इस अनियमितता ने क्रिएशनिस्ट (सृजनात्मक) दलील को वेग दिया है कि हर जाति का सृजन खुदा ने किया था।26

पर्याप्त जीवाश्म अब तक नहीं पाये गये हैं, लेकिन एक दिन पाये जायेंगे – ऐसी खोखली दलील से जीवाश्म रिकॉर्ड के सबूतों में जो अंतर है उनको नहीं समझाया जा सकता है। अन्य अमेरिकन विद्वान रॉबर्ट वेस्सन ने 1991 में अपनी किताब बियोन्ड नैचुरल सैलेक्शन में कहा है कि "जीवाश्म रिकॉर्ड में जो अंतर हैं वह वास्तविक हैं और अर्थपूर्ण हैं।" वह इस प्रकार अपने दावे को विस्तार देते हैं :

"रिकॉर्ड में जो अंतर हैं वे वास्तविक हैं। किसी भी महत्त्वपूर्ण शाखा के रिकॉर्ड की गैरमौजूदगी अद्वितीय है। लम्बे समय तक प्रजातियां स्थायी रही हैं या लगभग स्थायी रही हैं। प्रजातियों ने शायद ही कभी दूसरी प्रजातियों में परिवर्तन दर्शाया हो या क्रमिक–विकास दर्शाया हो लेकिन एक–दूसरे की जगह लेती रही हैं और कम या ज्यादा बदलाव अचानक हुआ है। वे एक–दूसरे के द्वारा अदल–बदल होते है और बदलाव ज्यादा या कम अचानक होता है।"27

जीवन पृथ्वी पर अचानक और जटिल स्वरूप में आया

जब ज़मीनी परतें और जीवाश्म रिकॉर्ड की परख की जाती है तब यह देखना होता है कि सभी सजीव एक के बाद एक पैदा हुए या नहीं। पृथ्वी पर जहां सजीवों के जीवाश्म पाये गये हैं वह सबसे पुरानी परत कैमब्रियन है जिसकी अनुमानित उम्र 50–55 करोड़ वर्षों की है।

कैमब्रियन काल से सम्बन्ध रखने वाली परतों में पाये गये जीव जीवाश्म के रिकॉर्ड में अचानक प्रकट हुए हैं – उनके कोई पूर्वज नहीं है जिनका पहले से अस्तित्व हो। कैमब्रियन चट्टानों में पाये गये जीवाश्म शम्बूक (स्नैल), ट्रायलोबाइट, स्पंज, केंचुआ, जेलीफ़िश, दरियाई हेजहोग और अन्य जटिल बिना रीढ़ वाले प्राणियों के हैं। इतनी भारी तादात में जीवित प्राणियों के जटिल नमूने अचानक कुछ इस तरह से प्रकट हुए कि इस चमत्कारिक घटना को भूविज्ञान के साहित्य में "कैमब्रियन विस्फोट" कहा जाता है।

इस परत में पाये गये ज्यादातर प्राणियों की आँखे, गलफ़डा, और रक्तसंचार संबंधी प्रणाली आज के नमूनों की तरह जटिल और पूर्ण विकसित है। उदाहरण के तौर पर ट्रायलोबाइटस की डबल–लैन्स, कॉम्ब्ड–आई संरचना सृजन का एक अजूबा है। हार्वर्ड, रोचेस्टर और शिकागो युनिवर्सिटी में भूविज्ञान के प्राध्यापक डैविड रौप कहते हैं, "4500 करोड़ साल पहले ट्रायलोबाइट्स एक सर्वोत्तम रचना का इस्तेमाल करते थे। जिसे आज विकसित करने के लिए अच्छे प्रशिक्षित और कल्पनाशील ऑप्टिकल इं. जनीयर की जरूरत पडेगी।"28

यह जटिल मेरुदण्डहीन प्राणी अचानक और पूर्ण विकसित स्वरूप में प्रकट हुए और उनके व एककोशकीय सजीवों (जो पृथ्वी पर मेरुदण्डहीन प्राणी के आगमन से पहले मौजूद एकमात्र जाति थी) के बीच कोई कड़ी या मध्यवर्ती रूप नहीं थे।

इवोल्युशनिस्ट साहित्य के लोकप्रिय प्रकाशनों में से एक साइंस न्यूज़ के विज्ञान पत्रकार रिचर्ड मोनेस्टर्की "कैमब्रियन विस्फोट" (जो क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए मौत का कूआँ बना हुआ है) के बारे में कुछ इस प्रकार से बात करते हैं :

आज हम जो असाधारण रूप से जटिल संरचनावाले प्राणी देखते हैं वे पचास करोड़ साल पहले अचानक हाज़िर हुए। 55 करोड़ साल पहले के इस क्षण को कैमब्रियन काल की शुरूआत की घड़ी मानी जाती है। इसी क्षण के दौरान क्रमिक–विकास का विस्फोट हुआ जिसने समुद्रों को पृथ्वी के सर्वप्रथम जटिल सजीवों से भर दिया .... आज जो बड़े प्राणियों के वर्ग देखने को मिलते हैं वह कैमब्रियन काल के शुरूआती वर्गों में पहले से मौजूद थे .... और आज वह एक–दूसरे से जितने अलग नजर आते हैं उतने ही अलग वे प्राचीन काल में भी थे।29

कैमब्रियन विस्फोट की गहरी छानबिन करने पर पता चलता है कि कैमब्रियन विस्फोट क्रमिक–विकास के लिए कितनी बड़ी उलझन पैदा करता है। हाल ही में प्राप्त हुए नमूने सूचित करते हैं कि लगभग हर वर्ग, सब से बुनियादी प्राणी विभाजन, कैमब्रियन काल में अचानक पैदा हुए। 2001 में साइंस मैगैज़िन में प्रकाशित हुए लेख के अंश इस प्रकार हैं : "कुछ 54.5 करोड़ सालों पहले कैमब्रियन काल के प्रारंभ में लगभग सभी मुख्य प्रकार के प्राणियों की जिवाश्म रिकॉर्ड में अचानक मौजूदगी पाई गई। यह प्राणी आज भी पर्यावरण में छाये हुए हैं।"30 इसी लेख में बताया गया है कि अगर ऐसे जटिल और विभिन्न सजीव समूहों को क्रमिक–विकास का सिद्धांत से समझाना हो तो क्रमशः विकास की प्रक्रिया दिखाने वाले समृद्ध जीवाश्म क्षेत्र मिलने चाहिए थे किंतु आज तक इसे साबित करना संभव नहीं हो सका है।

कैम्ब्रायन रॉक्स में खुदाई से मिले जीवाश्म म्बूक, ट्रायलोबाइटस, स्पंज, जंतु, जेली फिश, स्टारफिश, सामुद्री क्रस्टेशियन और समुद्र लीली जैसे अपृ ठवंशी जातियो से जुडे है. दिलचश्प बात यह है कि यह सभी विभिन्न जातिया अचानक उत्पन्न हुई. इसी कारण से भूस्तरीय साहित्य में इस चमत्कारिक घटना को ‘कैम्ब्रायन विस्फोट’ के नाम से जाना जाता है.

इस भेददर्शी क्रमिक–विकास और विसर्जन के लिए भी सजीव समूह के पूर्व इतिहास की जरूरत पड़ेगी जिसके लिए कोई जिवाश्म रिकॉर्ड नहीं है।31

अचानक पृथ्वी इतनी बड़ी संख्या में प्राणियों की प्रजातियों से कैसे भर गई और जिनका कोई समान पूर्वज नहीं था वह विभिन्न प्रजातियां किस तरह पैदा हुई यह प्रश्न का जवाब इवोल्युशनिस्ट्स के पास नहीं है। ऑक्सफॉर्ड युनिवर्सिटी के प्राणीशास्त्री और दुनिया में इवोल्युशनिस्ट विचार का जोर–शोर से समर्थन करने वाले रिचर्ड डॉकिन्स खुद जिन दलीलों का समर्थन करते हैं उसका बुनियादी आधार गिरा देने वाली इस वास्तविकता के बारे में इस प्रकार टिप्पणी करते हैं :

जैसे कि चट्टानों के कैमब्रियन परतें सबसे पुरानी हैं जिसमें हम ज्यादातर मेरुदण्डहीन प्राणियों को खोज सकते हैं। और उनमें से कई प्राणी पहली बार पैदा होते ही क्रमिक–विकास के पूर्ण विकसित अवस्था में पाये जाते हैं। यह कुछ ऐसी बात है जैसे कि उन्हें किसी भी इवोल्युशनरी इतिहास बिना वहां सिर्फ रोपा गया हो।32

डॉकिन्स को स्वीकार करना पड़ा है कि कैमब्रियन विस्फोट सृजन का सबसे मज़बूत प्रमाण है क्योंकि पृथ्वी पर जीवन का पूर्ण विक. सित उद्‌भव समझाने का यह एक ही तरीका है। प्रमुख इवोल्युशनिस्ट जीव–वैज्ञानिक डग्लास फुतुयामा इस हकीकत को कबूल करते हैं। “सजीव पृथ्वी पर पूर्ण विकसित रूप में प्रकट हुए या नहीं हुए। अगर वे इस तरह से प्रकट नहीं हुए तो फिर वे बदलाव की कोई प्रक्रिया के द्वारा ऐसी जातियों में से पैदा हुए होंगे जिनका पहले से अस्तित्व था। अगर वे पूर्ण विकसित रूप में हाज़िर हुए तो इनका सृजन सचमुच किसी सर्वशक्तिमान बुद्धि ने किया होगा।”33 डार्विन को खुद इस संभावना की भनक लग गई थी, जब उन्होंने यह लिखा : “अगर

एक ही वंश या परिवार की अनगिनत जातियां सचमुच एक साथ अस्तित्व में आई हैं तो यह हकीकत प्राकृतिक चयन द्वारा धीमे बदलाव के साथ उदगम के सिद्धांत के लिए विनाशक सिद्ध होगी।"34 कैमब्रियन काल डार्विन की थीअरि को लगे "विनाशक झटके" से ज्यादा या कम नहीं। इसी वजह से स्वीडिश इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक स्टीफन बेन्गस्टन (जो कैमब्रियन युग का वर्णन करते वक्त मध्यवर्ती कड़ियों के अभाव को स्वीकार करते हैं) यह टिप्पणी करते हैं "डार्विन के लिए चकरा देने वाली और उलझा देने वाली यह घटना हमें आज भी चकाचौंध कर देती है।"35

जीवाश्म रिकॉर्ड स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि सजीवों का उदभव प्राचीन काल से उन्नत स्वरूप में नहीं हुआ था किंतु वे सब अचानक पूर्ण विकसित रूप में आये थे। संक्षिप्त में कहें तो सजीवों का अस्तित्व क्रमिक–विकास के कारण नहीं हुआ था लेकिन उन्हें बनाया गया था, उनका सृजन किया गया था।

मॉलेक्युलर (आणविक) तुलनाएँ इवोल्युशन के कैमब्रियन गतिरोध को गहरा बनाती हैं

कैमब्रियन विस्फोट के बारे में इवोल्युशनिस्ट्स को गहरी उलझन में डालने वाली एक अन्य हकीकत विविध जीवित वंश, जातियों और परिवारों के बीच की तुलनाएँ हैं। इन तुलनाओं के परिणाम बताते हैं कि अब से कुछ ही समय पहले इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा "नज़दीकी रिश्तेदार" माने जाने वाले प्राणीयों की जाति, वंश और वर्ग जीनेटिक्स के हिसाब से बहुत अलग है जो "मध्यवर्ती स्वरूप" के अनुमान (जिसका सिर्फ सैद्धांतिक अस्तित्व है) को और भी बड़े असमंजस में डाल देता है। सन् 2000 में नैशनल ऐकेडमी ऑफ साइंस की कार्यवाही में प्रकट हुए लेख में कहा गया है कि "मध्यवर्ती स्वरूप" माने जाने वाले जाति, वंश और वर्ग के समूह को डीएनए विश्लेषण ने भूतकाल में घसीट दिया है :

डीएनए का क्रम का विश्लेषण फाइलोज़ेनिक (जातियों का इवोल्युशनरी विकास और विविधता) वृक्षों की नयी व्याख्या प्रस्तुत करता है। वह वंश, प्रजाति या वर्ग जो मेटोज़ोअन वृक्ष की बुनियाद में एक के बाद एक होने वाली जटिलताओं का प्रतिनिधित्व करता था, उसे उस वृक्ष में अधिक ऊंचा स्थान दिया जा रहा है। इससे क्रमिक–विकास में कोई "मध्यवर्ती रूप" नहीं रह गया है और यह हमें बायलेटेरिअन (द्विपक्षी) जटिलता के उत्पत्ति के बारे में पुनर्विचार करने पर मजबूर करता है....36

इसी लेख में इवोल्युशनिस्ट लेखक इस बात पर गौर करते हैं कि स्पंज, स्नीडेरिअन्स और स्टेनोफोर्स जैसे समूहों के बीच "मध्यवर्ती" माने जाने वाली कुछ जाति, वंश या वर्ग को नये जीनेटिक संशोधन के कारण हम मध्यवर्ती नहीं मान सकते। एक वज़ह यह भी है कि ऐसे क्रमिक–विकास के परिवारिक वृक्ष का निर्माण करने की वे "आशा गंवा" चुके हैं :

नयी मॉलेक्युलर पर आधारित फ़ाइलोज़नि की कई महत्वपूर्ण अभिप्राय है। उनमें से सबसे प्रभावकारी स्पंज, स्नीडेरिअन्स, स्टेनोफोर्स और बायलेटेरिअन्स या "उर्बीलेटेरिया" के आखिरी समान पूर्वज के बीच में से "मध्यवर्ती" जाति, वंश, वर्ग का अदृश्य होना था। निष्कर्ष यह है कि उर्बीलेटेरिया की ओर ले जाने वाले तने में बड़ा अन्तराल है। हम उस उम्मीद को खो चुके हैं, जो हमारे इवोल्युश्नरी तर्कों में बहुत आम थी, जिससे एक दृश्यलेख के जरिए 'सिलामेट पूर्वजों' की मोरफोलोजी का पुनर्निर्माण करते थे। इस दृश्य लेख में प्रचलित 'प्राचीन' वंश की शारीरिक बनावट की बुनियाद पर एक के बाद एक आने वाले अत्याधिक जटिल वर्ग शामिल होते थे।37
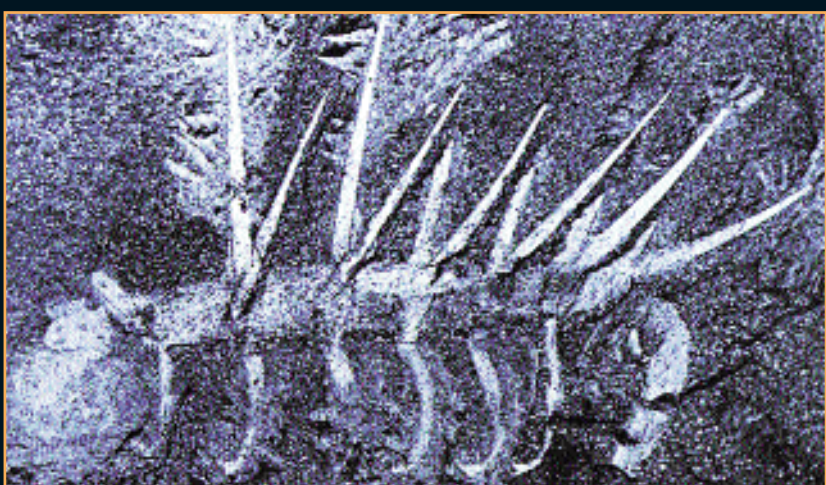
दिलचश्प मेरुदण्डः कैम्ब्रायन काल में अचानक पैदा होनेवाली प्रजातियों में से एक है हेल्युसीजेनिया (उपर, बायीं ओर देखे). यह और इसके जैसे कई अन्य कैम्ब्रायन जीवाश्म के मेरुदण्ड सख्त और तेज़ है. अगर इनके आसपास कोई शिकारी मौजूद नहीं थे तो फिर इन प्राणीयों के पास इतनी असरकारक संरक्षण व्यवस्था क्यों है इस बात का इवोल्युशनिस्टस खुलासा नहीं दे पा रहे है. शिकारी प्राणीयों के अभाव की वज़ह से प्राकृतिक चयन के द्रि ट से इस प्रकार के मेरुदण्ड के बारे में खुलासा देना नानुमकिन हो जाता है.

अध्याय 5

पानी से ज़मीन तक पारगमन (ट्रांज़िशन) की कहानी

इवोल्युशनिस्ट इसे सत्य मान लेते हैं कि कैमब्रियन परत में मिलने वाले समुद्री मेरुदण्डहीन सजीवों का किसी तरह से लाखों सालों की प्रक्रिया के बाद से मछलियों में उदभव हुआ। हालांकि, जिस प्रकार कैमब्रियन मेरुदण्डहीन सजीवों के पूर्वज नहीं हैं उसी तरह ऐसी कोई ट्रान्सिशनल (परिवर्तित) कडियां भी नहीं हैं जो यह सूचित करती हों कि इन मेरुदण्डहीन सजीवों और मछलियों के बीच क्रमिक–विकास हुआ हो। यह ध्यान में लेना चाहिए की मेरुदण्डहीन और मछलियों की संरचना में बहुत ज्यादा भेद है। मेरुदण्डहीन के सख्त ऊतक (टिश्यू) उनके शरीर के बाहर होते हैं, जबकि मछलियां रीढ़ की हड्डी वाली जीव हैं जिनके ऊतक उनके शरीर के अंदर हैं। इन दोनों के बीच में इतना बड़ा "क्रमिक–विकास" अगर होना है तो उसके लिए अरबों स्तरों से गुजरना पड़ेगा और उनको प्रदर्शित करने वाले अरबों मध्यवर्ती स्वरूप होने चाहिए।

इन काल्पनिक स्वरूपों की तलाश में इवोल्युशनिस्टस 140 सालों ये जीवाश्म चट्टानों की खुदाई कर रहे हैं। उन्हें लाखों मेरुदण्डहीन जीवाश्मों और मछलियों के लाखों जीवाश्म मिले हैं लेकिन फिर भी किसी ने आज तक ऐसा जीवाश्म नहीं ढूंढ़ा जो इन दोनों के बीच का मध्यवर्ती स्वरूप हो।

"इवोल्युशन ऑफ द लन्ग एंड द ऑरिज़िन ऑफ बॉनी फिशीज़" शीर्षक वाले लेख में इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक गैराल्ड टी टॉड कुछ ऐसी ही हकीकत को स्वीकार करते हैं :

अस्थिमय मछलियों के सभी तीन उपविभाजन लगभग उसी समय जीवावशेष रिकॉर्ड में दिखते हैं। रूपात्मक तरीके से वे पहले से ही व्यापक तौर पर भिन्न हैं और भारी तरह कवचित है।

उनका उद्‌भव कैसे हुआ? ऐसा क्या हुआ जिसके कारण से वे इतनी हद तक भिन्न हो गये? उनका इतना भारी कवच कैसे बना? और उनके पहले के मध्यवर्ती स्वरूपों का कोई अतापता क्यों नहीं है?38

इवोल्युशनरी दृश्यलेख एक और कदम आगे बढ़ता है और तर्क देता है कि मछलियां पहले मेरुदण्डहीन सजीवों में से उत्पन्न हुईं और बाद में एमेफिबीयंस (उभयचर) में रूपांतरित हुई। लेकिन यह साबित करने के लिए भी कोई सबूत नहीं है। आधी मछली/आधा उभयचर प्राणी का कभी अस्तित्व होगा या यह साबित कर सके ऐसा कोई भी जीवाश्म मिला नहीं है। इवोल्युशनरी जीवाश्म–वैज्ञानिक और मेरुदण्डहीन जीवाश्म–वैज्ञानिक विद्वान रोबर्ट एल कैरोल इस हकीकत को स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं। अपनी मशहूर किताब वर्टीब्रेट पेलिओन्टोलज़ि एंड इवोल्युशन में उन्होंने लिखा है कि "प्रारंभ में सरीसृप उभयचर से बहुत अलग थे और उनके पूर्वज अभी तक नहीं मिल पाये हैं।" 1997 में प्रकट हुई अपनी नयी किताब पैटर्नस एंड प्रोसेसेस ऑफ वर्टीब्रेट इवोल्युशन में उन्होंने स्वीकार किया है कि "रिपीडिस्टीअन मछली और प्रारंभिक उभयचर के बीच में कोई मध्यवर्ती जीवाश्म नहीं है।"39 दो इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक कॉल्बर्ट और मोरालेस उभयचर–मेंढ़क, सालामांडर और सिसिलीअन्स के तीन बुनियादी वर्ग पर टिप्पणी करते हैं :

कोई पेलेज़ोइक उभयचर अपने एक समान पूर्वज में अपेक्षित गुणों का संयोजन करे ऐसा कोई सबूत मिला नहीं है। सबसे पुराने ज्ञात मेंढ़क, सालामांडर और सिसिलीअन्स अपने जीवित वंशज से काफ़ी मिलते जुलते हैं।40

करीब पचास साल पहले इवोल्युशनिस्टस सोचते थे कि ऐसे प्राणी का सचमुच अस्तित्व था। सिलाकेन्थ नामक यह मछली (जिसकी उम्र 41 करोड़ सालों की मानी गई) पृथ्वी पर कार्य करने के लिए अनुकूल आदिकालीन वर्ग के फ़ेफड़े, विकसित दिमाग, पाचनतन्त्र,

रक्तसंचार तन्त्र और चलने के लिए आदिकालीन तन्त्र के साथ मध्यवर्ती स्वरूप के तौर पर सामने रखी गई थी। 1930 के दशक के अंत तक शरीररचना की यह व्याख्या निर्विवाद सत्य के तौर पर स्वीकृत होती रही थी। सिलाकेन्थ को विश्वसनीय मध्यवर्ती स्वरूप में पेश किया गया जिसने पानी से ज़मीन तक इवोल्युशनरी ट्रान्सिशन को साबित किया।

हालांकि, 22 दिसम्बर, 1938 को हिंद महासागर में एक बहुत दिलचस्प खोज हुई। सिलाकेन्थ परिवार का एक जीता–जागता सदस्य पकड़ा गया। इस सदस्य को पहले सात करोड़ सालों पहले नष्ट हो चुके मध्यवर्ती स्वरूप में पेश किया जाता था। सिलाकेन्थ के "जीवित" प्रोटोटाइप की खोज ने इवोल्युशनिस्ट्स को निःसंदेह गहरा सदमा दिया। इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक जे एल बी स्मिथ ने कहा कि "अगर में डायनासोर से किसी गली में मिलता तो भी मुझे इतना आश्चर्य न हुआ होता"।41 आने वाले सालों में 200 सिलाकेन्थ मछलियां दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कई बार पकड़ी गईं।

जीवित सिलाकेन्थ ने इस बात पर प्रकाश डाला कि अपने काल्पनिक दृश्यों को अंजाम देने के लिए इवोल्युशनिस्ट्स किस हद तक जा सकते हैं। जो दावा किया गया था उससे विपरित सिलाकेन्थ के शरीर में न तो आदिकालीन फ़ेफडा था ना ही बड़ा दिमाग था। इवोल्युशनिस्ट संशोधकों ने जिस अंग को आदिकालीन फ़ेफडे के रूप में पेश किया था वह लिपिड पाउच से ज्यादा कुछ न निकला।42

इसके अलावा सिलाकेन्थ (जिसे समुद्र से ज़मीन पर जाने की तैयारी कर रहे सरीसृप उम्मीदवार के रूप में पेश किया गया था) वास्तव में एक मछली थी जो समुद्र की गहराई में रहती थी और सतह से 180 मीटर से ज्यादा नज़दीक कभी भी जाती नहीं थी।43

"समुद्र से लेकर जमीन तक" के काल्पनिक द्रश्यलेख के मुताबिक कुछ मछलियों को खुराक से जुडी समस्याओ की बदौलत समुद्र से जमीन पर आने की जरूरत महसूस हुई. ऐसे अव्यावहारिक चित्रो के आधार पर इस दावे को "समर्थन" दिया जाता है.

41 करोड साल पुराना कोएलकेन्थ का जीवाश्म. इवोल्युशनिस्टस ने दावा किया कि यह एक मध्यवर्ती स्वरूप था जो पानी से जमीन तक के पारगमन (ट्रांजिशन) का प्रतिनिधित्व करता है.

1938 से आज तक इस मछली के जीवित होने के उदाहरण कई बार रंगे हाथ पकडे गये है जो इस बात का अच्छा उदाहरण देते है कि इवोल्युशनिस्टस किस हद तक बयानबाजी और अटकलो के दौर में ामिल होते है.

क्रम विकास को अयोग्य करार देनेवाला उदाहरण

TURTLES

10 करोड साल पुराने कछुए का जीवाश्मः यह आज के कछुए से बिलकुल अलग नहीं है. (द डॉन ऑफ लाइफ, ऑर्बिस पब्लिकेशन, लंदन 1972)

एक तरफ 4.5 करोड साल पुराने ताजे पानी के कछुए का जीवाश्म आप देख सकते है जो जर्मनी में मिला था.

बायीं ओर सबसे पुराने माने जानेवाले समुद्री कछुए के अवशे ा है जो ब्राज़िल में मिले थेः 11 करोड साल पुराना यह जीवाश्म आज के नमूने से मिलताजुलता है.

क्रम विकास की थीअरि जिस तरह से मछली और सरीसृप जैसे सजीवो के बुनियादी वर्गो को समझा नहीं सकती है उसी तरह इन वर्गो में किस क्रम के अनुसार वर्गो का उदभव हुआ है वह भी समझा नहीं पाती है. जैसे सरीसृप वर्ग से जुडा कछुआ अपने अनोखे कवच के साथ जीवाश्म के रिकॉर्ड में अचानक दिखाई देता है. अगर इवोल्युशनरी सूत्र का हवाला देकर कहे तोः "कृ.अन्य पृ ठवंशी प्राणीयों के मुकाबले कछुआ ज्यादा सालो तक जीता है और अच्छे जीवावशे ा छोड जाते है. बावजूद इसके इस अत्यंत सफल क्रम का उदभव आज भी अस्प ट है. कृ.कछुआ और कोटायलोसोर्स के बीच जो मध्यवर्ती स्वरूप हैकृकृजिन में से कथित रूप से कछुए का उदभव हुआ है वे सरीसृप प्राणीयों के कोई सुराग नहीं मिले है." (एन्सायक्लोपीडिया ब्रिटानिका ऑनलाइनए "टर्टल")

आदिकालीन कछुए की जीवाश्म और आज के कछुए के बीच कोई फर्क नहीं है. इसका स्प ट अर्थ यह है कि कछुओं का क्रम विकास नहीं हुआ है. कछुए के रूप में उनका सृजन हुआ तब से लेकर आज तक वे कछुए ही है.

पानी से जमीन तक पारगमन क्यूं असंभव है

इवोल्युशनिस्टस दावा करते है कि एक दिन पानी में रहनेवाली जातियां किसी प्रकार से जमीन पर आई और वह जमीन पर रहनेवाली जातियों में रूपांतरित हुई थी.

ऐसे पारगमन को असंभव करार देनेवाली कई स्प ट हकीकते हैः

1. वजन ऊठानाः समुद्र में रहनेवाले प्राणीयो को समुद्र में खुद का वजन ऊठाने में कोई दिक्कत नहीं होती है.

हालांकि, जमीन पर रहनेवाले ज्यादातर प्राणी सिर्फ अपने ारीर की आवाजाही में ही अपनी 40ः ऊर्जा गँवा देते है. पानी से जमीन तक पारगमन करनेवाले प्राणीओं को इस ऊर्जा की जरूरत के लिए नया पेशी तंत्र और कंकाल तंत्र विकसित करना होगा जिससे वे अपनी ऊर्जा की जरूरतो की आपूर्ति कर सके और यह आकस्मिक म्युटेशन से नहीं हो सकता है.

2. गरमी का अवरोधनः जमीन पर तापमान बहुत तेजी से बदलाव आ सकता है और उसमे बढौतरी या गिरावट भारी मात्रा में देखने को मिलती है. जमीन पर रहनेवाले प्राणी में एक एसी ाारीरिक व्यवस्था होती है जो तापमान में भारी बदलाव के सामने टक्कर ले सकती है. हालांकिए समुद्र में तापमान बहुत धीरे से बदलता है और इस फर्क की रैन्ज भी बहुत कम होती है. समुद्र के स्थायी तापमान के मुताबिक जिसका ारीर अनुकूल हुआ हो वह प्राणी जमीन पर आये तो तापमान के बदलावो के सामने कम से कम हानि हो उसके लिए उसे एक रक्षणात्मक व्यवस्था विकसित करनी होगी. जमीन पर आने के तुरंत बाद मछलियों ने रैन्डम म्युटेशन्स के जरिए एसा अनुकूलन साध लिया एसा दावा वाहियात होगा.

3. पानीः चयापचय के लिए जरूरी पानी का कम से कम व्यय हो यह ध्यान में रखकर इस्तेमाल करना पडता है क्यूं कि पृथ्वी पर सजीवो की आबादी के हिसाब से पानी की किल्लत है. उदाहरण के तौर परए त्वचा में यह क्षमता होनी चाहिए कि वह पानी की कुछ मात्रा गँवा सके लेकिन साथ साथ उसके ज्यादा वा पीभवन पर रोक लगा सके यह भी जरूरी है. यही कारण है कि जमीन पर रहनेवाले प्राणी को प्यास लगती है लेकिन समुद्री जीवो को प्यास हैरान नहीं करती है. इसी कारण से जलरहित आवास में रहना समुद्री जीवो की त्वचा के लिए ठीक नहीं है.

4. किडनीः समुद्र में रहनेवाले प्राणी अपने जलीय वातावरण द्वारा उत्सर्गद्रव्य (विशे ातः ऐमोनिया) छोडते है. जमीन पर पानी का इस्तेमाल व्यय किये बगैर करना होता है. इसी कारण से जमीन पर रहनेवाले प्राणीयों में किडनी की व्यवस्था होती है. किडनी के कारण ऐमोनिया युरिया में तबदील हो जाता है और इसी रूप में संग्रहित होता है. इसके उत्सर्जन के दौरान पानी की बहुत कम मात्रा का उपयोग होता है. इसके अलावा किडनी का कार्य करने के लिए नयी व्यवस्थाओ की जरूरत रहती है. संक्षेप में कहे तो अगर पानी में रहनेवाले सजीव को जमीन पर जाना है तो उन्हे सबसे पहले अपने ारीर में तुरंत किडनी सिस्टम पैदा कर लेनी होगी.

5. वसन तंत्रः मछलियां अपनी जिल्स के द्वारा जो पानी पसार करती है उसमें मिले हुए ऑक्सिजन को लेकर "सांस" लेती है. पानी के बाहर वे कुछ मिनिटो से ज्यादा जिंदा नहीं रह सकती. जमीन पर टिकने के लिए उन्हे अचानक एक परफैक्ट फेफडे की व्यवस्था कर लेनी पडेगी.

यह सब नाट्यात्मक देहधार्मिक बदलाव एक ही सजीव में एक ही वक्त अचानक हो यह निश्चित रूप से असंभव है.

अध्याय 6

पक्षी और स्तनपायी प्राणियों का काल्पनिक क्रमिक–विकास

क्रमिक–विकास के सिद्धांत के मुताबिक जीवन का प्रारंभ और उदय समुद्र में हुआ था और बाद में जलस्थलचर प्राणियों द्वारा उन्हें ज़मीन पर लाया गया। यह इवोल्युशनरी दृश्यलेख सूचित करता है कि जलस्थलचर में से सरीसृप का उदभव हुआ जो सिर्फ ज़मीन पर रहते हैं। यहां भी इन दोंनो वर्ग के प्राणियों की संरचनाओं में बहुत बड़े भेद होने के कारण यह दृश्य असंभव दिखता है। उदाहरण के तौर पर जलस्थलचर के अंडे की रचना ऐसी की गई है कि वह पानी में विकसित हो सकता है। जलस्थलचर रचना ऐसी की गई है कि वह जमीन में विकसित हो सकता है। जबकि एम्निओटिक अंडा पंक्तियों में क्रमिक–विकास होने का कोई सवाल ही नहीं ऊठता क्योंकि एक दोषहीन और पूर्ण डिज़ाइन वाले अंडे के बगैर इस जाति का टिकना संभव नहीं है।

इसके अलावा जलस्थलचर को सरीसृप के साथ जोड़नेवाली कड़ी के रूप में किसी भी मध्यवर्ती स्वरूप के सबूत नहीं मिले हैं।

इवोल्युशनरी जीवाश्म–वैज्ञानिक और पभठवंशी जीवाश्म–वैज्ञानिक के विद्वान रोबर्ट एल कैरोल को स्वीकार करना पड़ा था कि "शुरूआती सरीसृप जलस्थलचर से बहुत अलग थे और उनके पूर्वज को अभी तक ढूंढ पाने में सफलता नहीं मिली है।"44

इतना होने के बावजूद इवोल्युशनिस्ट के लिए दुर्भाग्य का अभी भी अंत नहीं हुआ। इन सजीवों को अभी भी उड़ान भरवाने की समस्या सुलझानी बाकी है। इवोल्युशनिस्ट मानते हैं कि पक्षियों का उदभव किसी न किसी प्रकार जरूर हुआ होगा इसलिए वे यह दावा करते हैं कि पक्षियों का रूपांतरण सरीसृप में से हुआ था। हालांकि, जमीन पर बसे हुए प्राणियों से बिल्कुल अलग संरचना वाले पक्षियों के किसी भी सुनिश्चित मैकेनिज़म को क्रमिक–विकास के ज़रिए समझाया नहीं जा सकता है। सबसे पहले तो पक्षियों का एक अपवादिक और विशिष्ट लक्षण माने जाने वाले पंख इवोल्युशनिस्ट के लिए एक बहुत बड़ा संकट बने हुए हैं। एक तुर्क इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक एनजिन कोरुर पँख के क्रमिक–विकास को असंभव बताते हुए यह कबूल करते हैं :

आँखो और पँख का एक सामान्य लक्षण यह है कि वे अगर पूर्ण विकसित हो तो ही अपना कार्य कर सकते हैं। दूसरे शब्दों में कहे तो आधी विकसित आँख कुछ देख नहीं सकती या आधा बना हुआ पँखवाला पक्षी उड़ नहीं सकता। यह अंग किस तरह से अस्तित्व में आये ये आज भी प्रकृति का रहस्य है जिसे उजागर करने की ज़रूरत है।45

क्रमिक और लगातार अस्तव्यस्त म्युटेशन्स के फ़लस्वरूप पँख की परफैक्ट संरचना किस तरह अस्तित्व में आई यह प्रश्न का जवाब आज तक मिला नहीं है। सरीसृपों के अग्र बाहु उसके जीन्स में ऊलटफेर (म्युटेशन) के परिणामस्वरूप किस तरह से परफैक्ट काम कर रहे पँखो में बदले होंगे यह समझाने का कोई रास्ता नहीं है।

इसके अलावा मात्र पँख होने से ही जमीन पर रहने वाले सजीव उड़ नहीं सकते। पक्षी उड़ने के लिए जिस संरचनात्मक मेकेनिज़म (प्रक्रिया) का उपयोग करते हैं वह धरती पर रहने वाले सजीवों के पास नहीं है। जैसे कि पक्षियों की हड्डियां जमीन पर रहने वाले प्राणियों के मुकाबले वज़न में बहुत हल्की होती हैं। उनके फ़ेफडे अलग प्रकार से काम करते हैं। उनके मांसपेशीय और कंकाल तन्त्र में बहुत फर्क होता है और उनके पास विशिष्ट हृदय–रक्तसंचार तन्त्र होता है। यह विशेषताएं सिर्फ पँख ही नहीं बल्कि उड़ान को ध्यान में रखते हुए पक्षियों के लिए अतिआवश्यक है। इन सब व्यवस्था का अस्तित्व एक ही समय और एक ही साथ होना चाहिए; एक के बाद एक लक्षण "एकत्रित" होकर यह व्यवस्था पैदा नहीं हो सकती थी। यही कारण है कि जमीन पर रहने वाले सजीवों का एरियल (वायु में विचरण करने वाले सजीवों) में क्रमिक–विकास हुआ होगा ऐसा दावा करने वाला सिद्धांत पूर्ण रूप से गलत है।

यह सब बातें मन में एक और प्रश्न खडा करती है: अगर हम यह असंभव दिखनेवाली कहानी को सच मान भी ले तो इस कहानी को समर्थन देने के लिए इवोल्युशनिस्ट्स क्यों" अर्धविकसित पँख" या "एक–पँखवाले" जीवाश्म ढूंढने में नाकाम रहे हैं?

पक्षीयों के लिए खास फेफडे

पक्षीयों की रीर रचना सरीसृपो से बहुत अलग है जिन्हे उनके कथित पूर्वज माने जाते है. जमीन पर रहनेवाले प्राणीयो की तुलना में पक्षी के फेफडा बिलकुल अलग तरीके से काम करता है. जमीन पर रहनेवाले प्राणी हवा के एक ही वाहिका में से सांसे लेते है और छोडते है. पक्षीयो में जब हवा आगे से फेफडे में प्रवेश करती है और पीठ से बाहर निकलती है. पक्षीयो को उडान के दौरान भारी मात्रा में ऑक्सिजन की जरूरत होती है इसलिए अल्लाह ने पक्षीयो के लिए यह खास व्यवस्था बनाई है. ऐसी संरचना किसी सरीसृप के फेफडे में से उत्पन्न हुई होगी यह असंभव है.

पक्षीयों के पिच्छः एक एसी रचना जिसे समझाने में क्रम विकास विफल होता है

पक्षी का क्रम विकास सरीसृपो में से हुआ एसा दावा करनेवाली क्रम विकास की थीअरि इन दोनो सजीव वर्गो के बीच जो भारी फर्क है उन्हे समझाने में नाकाम रहती है. कंकाल तंत्र, फेफडे और गर्म खून के लिए चयापचय की व्यवस्था – ये सब ऐसे पहलु है जो पक्षीयों को सरीसृप से बहुत अलग कर देता है. इसके अलावा पक्षीयों के पिच्छ एक एसा लक्षण है जो खास रूप से पक्षीयों के लिए ही है और इससे पक्षी तथा सरीसृप के बीच का फर्क और भी बढ जाता है.

सरीसृपो के ारीर पर छिलको का आवरण होता हैए जब कि पक्षीयों के ारीर पर पिच्छ का आवरण होता है. चूं कि इवोल्युशनिस्टस सरीसृपो को पक्षी के पूर्वज मानते है इसलिए वे यह दावा करने के लिए बाध्य है कि पक्षी के पिच्छ सरीसृपो के छिलको में से क्रम विकास के जरिए उत्पन्न होते है. हालांकि, छिलके और पिच्छ में कोई समानता नहीं है.

कनेक्टिकट युनिवर्सिटी से फिज़ियोलजि और न्युरोबायोलोजि के प्रोफेसर ए एच ब्रश इवोल्युशनिस्ट होने के बा. वजूद इस हकीकत का स्वीकार करते हैः "जीन की संरचना और संगठन से लेकर विकास, संरचना–विकास, और उत्तक के संगठन तक सभी पहलुओ में पिच्छ और छिलको में बहुत फर्क है."1 इसके अलावा, प्रोफेसर ब्रश पक्षीयों के पिच्छ में प्रोटीन की संरचना की जांच करते है और दलील करते है कि "यह पृ ठवंशीओ में एक अनोखा लक्षण है". 2

जब पक्षीयो के पिच्छ की सविस्तर जांच होती है तब यह देखा जाता है कि वे हजारो छोटे प्रतानो के बने होते है जो हूक्स के जरिए एकदूसरे के साथ जुडे होते है. यह अनोखी डिज़ाइन सर्वोत्तम एरोडायनेमिक प्रदर्शन में परिणामी होती है.

पक्षीयो के पिच्छ सरीसृप के छिलको में से उत्पन्न हुए है यह साबित करने के लिए कोई जीवाश्म का सबूत नहीं मिलता है. इससे विपरित, "पिच्छ जीवावशे ाो में अचानक दिखते है जो पक्षीयो को अलग करन. ेवाला एक 'सुस्प ट रूप से अनोखा' लक्षण है एसा प्रोफेसर ब्रश कहते है.3 इसके अलावाए सरीसृपो में बाह्यत्वचा की एसी कोई सं. रचना पायी गई नहीं है जो पक्षी के पिच्छ के लिए उदगम का संकेत देता हो.4

1996 में जीवाश्मविज्ञानीओ ने सीनोसोरोप्टेरिक्स नामक पिच्छवाले तथाकथित डायनासोर के जीवाश्म के बारे में ाोरगुल मचा दिया. हालांकि, 1997 में यह देखने को मिला कि यह जीवाश्म को पक्षीयों से कुछ लेनादेना नहीं था और वे पिच्छ आज के पक्षीयों के नहीं थे.5

दूसरी ओर, जब हम गौर से पक्षीयों के पिच्छ का अवलोकन करते है तब हमे बहुत जटिल रचना देखने को मिलती है जो क्रम विकास की किसी प्रक्रिया से समझायी नहीं जा सकती है. मशहूर पक्षीविद एलन फेडुक्किया कहते है कि "उनके सभी लक्षण में ऐरोडायनेमिक कार्यप्रणाली होती है. वे अत्यंत हलके वजन के होते है और लिफ़्ट करने की क्षमता है जो कम गति के वक्त बढती है और वे अपनी पहले की स्थिति में बहुत आसानी से लौट सकते है". फेडुक्किया आगे कहते है, "मैं यह समझ नहीं सकता कि उड्डयन के लिए बहेतरीन रचनावाला अंग ाुरुआत में किसी और जरूरत के लिए अन्य अंग में से किस तरह से उत्पन्न हुआ होगा".6

पिच्छ की रचना ने चार्ल्स डार्विन को भी उनके बारे में सोचने के लिए मजबूर किया था. उन्ही के ाब्दो में कहे तो, मोरपिच्छ के बहेतरीन सौंदर्य ने उन्हे "हैरान" कर दिया था. ऐज़ा ग्रे को 3 अप्रैल, 1860 को लिखे एक पत्र में उन्होने लिखा था, "मुझे अच्छी तरह वो समय याद है जब आँख के विचार ने मुझे ठण्डा कर दिया था लेकिन फरियाद के इस चरण से मैं गुज़र चुका हैकृ. " और आगे वे लिखते हैः "कृ.और अब संरचना का छोटा सा विवरण मुझे बहुत अस्वस्थ बना देता है. मोर की पूँछ में जब भी में पिच्छ देखता हूं तो मैं हैरान हो जाता हूं! " 7

1. ए एच ब्रश, "ऑन द ऑरिजिन ऑफ फीधर्सः. जर्नल ऑफ इवोल्युशनरी बायोलोजि, वॉल्युम 9, 1996, पृ.132
2. ए एच ब्रश, "ऑन द ऑरिजिन ऑफ फीधर्स, पृ.131
3. इबिड.
4. इबिड.
5. "प्लकिंग द फीधर्ड डायनोसोर", साइंस, वॉल्युम 278ए 14 नवम्बर 1997ए पृ. 1229
6. डग्लास पामर, "लर्निंग टि फ्लाय" (रिव्यू ऑफ द ऑरिज़िन ऑफ एंड इवोल्युशन ऑफ बर्ड्ज – एलन फ़ेडुक्किया, येल युनिवर्सिटी प्रेसए 1996), न्यू साइंटिस्ट, वॉल्युम 153, मार्च 1 1997, पृ.44
7. नॉर्मन मैकबेथए डार्विन रिटायर्डः एन अपील टु रिज़न, बोस्टन, गैम्बिट, 1971, पृ.101

अन्य कथित मध्यवर्ती स्वरूप : आर्किओप्टेरिक्स

अपनी प्रतिक्रिया में इवोल्युशनिस्टस एक ही प्राणी का नाम लेते हैं। यह आर्किओप्टेरिक्स नामक पक्षी का जीवाश्म है जो बहुत कम संख्या में मौजूद मध्यवर्ती स्वरूपों में से सब से ज्यादा परिचित स्वरूप है जिसका इवोल्युशनिस्ट्स आज भी समर्थन करते हैं। इवोल्युशनिस्ट्स के मुताबिक आज के पक्षियों का तथाकथित पूर्वज आर्किओप्टेरिक्स 15 करोड़ साल पहले पृथ्वी पर रहते थे। थीअरि यह कहती है कि वेलोसीरेप्टर्स या ड्रोमेसोर्स जैसे कुछ छोटे कद के डायनोसॉर्स पँख पाकर और बाद में उड़ान शुरू करके उत्पन्न हुए। इस प्रकार आर्किओप्टेरिक्स को एक मध्यवर्ती स्वरूप माना जाता है जो अपने डायनासोर पूर्वज से पैदा हुए और उन्होंने पहली बार उड़ना शुरू किया।

हालांकि, आर्किओप्टेरिक्स जीवाश्मों का हाल ही में हुआ अध्ययन सूचित करता है कि यह प्राणी मध्यवर्ती स्वरूप बिल्कुल नहीं है लेकिन पक्षियों की नष्ट हुई जाति है जिनके आज के पक्षियों से जो भेद है उनका कोई खास महत्त्व नहीं है।

आज से कुछ ही साल पहले इवोल्युशनिस्ट्स में एक धारणा लोकप्रिय थी कि आर्किओप्टेरिक्स एक "अर्ध–पक्षी" है जो ठीक से उड़ नहीं सकता है। इस प्राणी में उरोस्थि (स्टेरनम, छाती की हड्डी) के अभाव को इस पक्षी की ठीक से उड़ने की असक्षमता का सबूत माना जाता था। (स्टेरनम, सीने के नीचे पाई जाने वाली वह हड्डी है, जिसके साथ उड़ान में मदद करने वाली माँसपेशियाँ जुड़ी होती हैं। हमारे आज के समय में यह हड्डी सभी उड़नेवाले और न उड़नेवाले पक्षियों में और चमगादड़ों में भी पाई जाती हैं। चमगादड़ अलग वर्ग का उड़नेवाला स्तनपायी सजीव है।)

हालांकि, 1992 में मिले सातवें आर्किओप्टेरिक्स जीवाश्म ने इवोल्युशनिस्ट्स को भारी आश्चर्य से चकाचौंध कर दिया। इसका कारण यह कि इस जीवाश्म में उरोस्थि भी पाया गया था जो लम्बे समय से इवोल्युशनिस्ट्स के मुताबिक गुमशुदा माना जाता था। इस जीवाश्म का नैचर मैगेज़िन में इस प्रकार से वर्णन किया गया है :

हाल ही में मिले आर्किओप्टेरिक्स के सातवें नमूने में अंशतः आयाताकार (रैक्टेन्गल) स्टेरनम मिला है जिस के बारे में लम्बे समय से संदेह व्यक्त किया जाया था लेकिन उसकी मौजूदगी का लिखित प्रमाण कभी भी दिया गया नहीं था. यह खोज़ उड़ने के लिए इस पक्षी के मज़बूत स्नायुओं की उपस्थिति की पुष्टि करती है।46

इस खोज़ ने उन दावों के मुख्य आधार को अयोग्य करार दिया कि आर्किओप्टेरिक्स एक अर्ध पक्षी था जो ठीक तरह से उड़ नहीं सकता था।

इसके अलावा इस पक्षी के पंखों की संरचना एक बहुत महत्त्वपूर्ण सबूत साबित हुई जिसने इस बात की पुष्टि की कि आर्किओप्टेरिक्स सही मायने में एक उड़नेवाला पक्षी था। आर्किओप्टेरिक्स के पंखों की विषम संरचना आज के अन्य पक्षियों से अलग नहीं है और यह सूचित करती है कि वह बहुत अच्छी तरह से उड़ सकते थे। प्रतिष्ठित जीवाश्म–वैज्ञानिक कार्ल ओ डुनबार कहते हैं, "अपने पंखों की वजह से आर्किओप्टेरिक्स को स्पष्ट रूप से पक्षी के वर्ग में वर्गीकृत करना चाहिए।"47

आर्किओप्टेरिक्स के पंखों की संरचना द्वारा उजागर हुई अन्य हकीकत उसके गर्म रक्त का उपापचयी तंत्री था। जैसा कि पहले चर्चा हो चुकी है कि, सरीसृप और डायनासोर्स ठंडे खूनवाले प्राणी हैं जिनके शरीर की गरमी उनकी दैहिक प्रक्रियाओं के ज़रिए नहीं बल्कि उनके पर्यावरण के तापमान के साथ कम या ज्यादा होती रहती है। पक्षियों के शरीर पर पंखों का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य शरीर के तापमान को एक समान बनाये रखना है। आओिप्टेरिक्स के पंख थे, यह हकीकत दर्शाती है कि वह वास्तव में गर्म खूनवाला पक्षी था और उसे अपने शरीर की गरमी का नियमन करने की ज़रूरत होती थी। यह मामला डायनासोर की संरचना से विपरीत है।

इवोल्युशनिस्टस के मुताबिक वेलोसिरेप्टर्स या ड्रोमेओसोर्स जैसे कुछ छोटे डायनासोर्स पँख प्राप्त करके और उसके बाद ऊडना ुरू करके उत्पन्न हुए थे. इस तरह आर्किओप्टेरिक्स को एक मध्यवर्ती स्वरूप माना जाता है जो अपने डायनासोर पूर्वजो में से पैदा हुए और उन्होने पहली बार ऊडना ुरू किया. यह काल्पनिक पूँछ के बारे में लगभग सभी इवोल्युशनिस्ट प्रकाशनो में पढने को मिलता है.

इवोल्युशनिस्टस की अटकलबाज़ियाँ : आर्किओप्टेरिक्स के दांत और नाखुन (पंजों के)

आर्किओप्टेरिक्स एक मध्यवर्ती स्वरूप था यह दावा करते वक्त इवोल्युशनिस्ट जीव–वैज्ञानिक जिन दो महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर आधार रखते हैं वह उसके पंख पर नाखुनों और उसके दांत के बारे में है।

यह सच है कि आर्किओप्टेरिक्स के पँख पर नाखुन थे और मुँह में दांत थे लेकिन इन लक्षणों का मतलब ये नहीं है कि इस प्राणी का सरीसृपों से कोई रिश्ता था। इसके अलावा आज के पक्षियों की दो जातियां टाउराको और होटजिन के भी नाखुन हैं जिससे वह डाली को अच्छी तरह से पकड़ सकते हैं। यह प्राणी संपूर्ण रूप से पक्षी है और उनमें सरीसृपों के कोई लक्षण नहीं है। यही कारण है कि सिर्फ पंख पर नाखुन होने के कारण आर्किओप्टेरिक्स एक मध्यवर्ती स्वरूप है ऐसा दावा करना निराधार है।

आर्किओप्टेरिक्स की चोंच में जो दांत हैं वह भी यह नहीं दिखाते कि यह एक मध्यवर्ती रूप है। यह दांत सरीसृप के लक्षण दिखाते हैं ऐसा कहकर इवोल्युशनिस्ट्स जानबूझकर चालबाजी करते हैं क्योंकि दांत सरीसृप का कोई विशेष लक्षण नहीं है। आज कुछ सरीसृपों के दांत हैं जबकि कुछ सरीसृपों के दांत नहीं हैं। इसके अलावा, आर्किओप्टेरिक्स पक्षी वर्ग की एक ही जाति नहीं है जिसके दांत हैं। यह सच है कि आज के समय में दांत वाले पक्षियों का अस्तित्व नहीं है। लेकिन जब हम जीवाश्मों की ओर देखते हैं तब हमें पता लगता है कि आर्किओप्टेरिक्स और उसके बाद के समय के दौरान और अभी कुछ ही समय पहले एक विशिष्ट पक्षी के वंश का अस्तित्व था, जिन्हे "दांतवाले पक्षी" के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दा यह है कि आर्किओप्टेरिक्स और दांतवाले अन्य पक्षियों के दांत की संरचना उनके कथित पूर्वजों यानि कि डायना. सोर से बिलकुल अलग है। मशहूर पक्षीविद एल डी मार्टिन, जे डी स्टीवार्ड और के एन व्हेटस्टोन नें यह अवलोकन किया कि आर्किओप्टेरिक्स और अन्य मिलते–जुलते पक्षियों के दांत की ऊपरी सतह सपाट है और उनके मूल बड़े हैं। जबकि इनका कथित पूर्वज माना जाने वाला थेरोपोड डायनासोर के दांत आरी की तरह बाहर निकले हुए है और उनके मूल संकुचित हैं।48

इन संशोधको ने आर्किओप्टेरिक्स और उनके कथित पूर्वज डायनासोर के कलाईयों की हड्डीयों की भी तुलना की और उनमें कोई समानता देखने को नहीं मिली।49

एस तारसीतानो, एम के हेक्ट और ए डी वॉकर जैसे शरीर रचनाशास्त्रियों द्वारा किये गये अध्ययन में यह देखने को मिला है कि आर्किओप्टेरिक्स और डायनासोर के बीच ज़ॉन ओस्ट्रोम और अन्य लोगों ने जो कुछ समानता देखी है वह वास्तव में भ्रांत व्याख्या है।50

यह सब खोजें सूचित करती हैं कि आर्किओप्टेरिक्स एक मध्यवर्ती कड़ी नहीं बल्कि सिर्फ एक पक्षी है जो उस वर्ग में वर्गीकृत होते हैं जिसे "दांतवाले पक्षी" का वर्ग कहा जा सकता है।

आर्किओप्टेरिक्स और अन्य पक्षीयों के जीवाश्म

पक्षियों के क्रमिक–विकास से जुड़े हुए अपने दृश्यलेख में इवोल्युशनिस्ट्स कई दशकों से आर्किओप्टेरिक्स को सबसे बड़े सबूत के रूप में पेश करते आ रहे हैं लेकिन हाल में मिले कुछ जीवाश्म इस दृश्यलेख को अन्य तरह से अयोग्य करार देते हैं।

चाइनीज़ इन्स्टिट्युट ऑफ वर्टीब्रेट पैलिओन्टोलज़ि के दो जीवाश्म–वैज्ञानिक लियानहाइ हाऊ और ज़ोंघे ज़ोऊ ने 1995 में पक्षी का एक नया जीवाश्म खोजा और उसे कन्फ्युशियसोरनिस नाम दिया। यह जीवाश्म लगभग आर्किओप्टेरिक्स जितनी उम्र का ही है (लगभग 14 करोड़ साल) लेकिन उसके मुँह में दांत नहीं है. इसके अलावा उसकी चोंच और पंख आज के पक्षियों जैसे ही है। कन्फ्युशियसोरनिस के कंकाल की संरचना आज के पक्षियों जैसी है लेकिन आर्किओप्टेरिक्स की तरह उसके पँख पर नाखुन भी हैं। पक्षियों के लिए विशिष्ट माने जाने वाली अन्य संरचना "पायगोस्टाइल" (जो पूँछ के पंख को सहारा देती है) भी कन्फ्युशियसोरनिस में देखी गई थी। संक्षिप्त में, आर्किओप्टेरिक्स जितनी ही उम्र वाले यह जीवाश्म, जिसे पहले सर्वप्रथम पैदा होने वाले पक्षी माने जाते थे और उन्हें आधे सरीसृप दिखाने वाले पक्षी के रूप में स्वीकृत किया गया था आज पाए जाने वाले पक्षियों से बिल्कुल मिलता जुलता है। आर्किओप्टेरिक्स की सब पक्षियों का प्रा. चीनतम पूर्वज होने का दावा कर रही इवोल्युशनिस्ट धारणाओं को इस हकीकत ने अयोग्य करार दिया है।

चीन में खुदाई से मिले एक अन्य जीवाश्म ने तो ओर भी बड़ी उलझन पैदा की। नवम्बर 1996 में लिआओनिनगोरनीस नामक 13 करोड़ साल पुराने पक्षी के अस्तित्व की घोषणा साइंस में एल हाऊ, एल डी मार्टिन और एलन फ़ेडुस्सिया द्वारा की गई थी। लिआओनिनगोरनीस के उरोस्थि थे जिसमें उड़ने के लिए मददगार माँसपेशियाँ जुड़े हुए थे – वो ही रचना जो आज के पक्षियों में पाई जाती है। अन्य पहलुओं में भी इस पक्षी को समकालीन पक्षियों से अलग देखना नामुमकिन था।

कोन्फ्युशियसोर्निस नामक पक्षी की उम्र आर्किओप्टेरिक्स जितनी ही ह

आर्किओप्टेरिक्स एक पूर्ण विकसित पक्षी के लक्षण दिखाता है:

उसके पिच्छ दिखाते है कि वह ऊडने के लिए सक्षम गर्म खूनवाला प्राणी था.

उसकी हड्डीयां खोखली है जो आज के पक्षीयो में देखने को मिलती है.

उसके दांत एसा कोई सबूत नहीं दिखाते है कि वे सरीसृप में से उत्पन्न हुए होंगे. भूतकाल में भी दांतवाले पक्षीयों का अस्तित्व था.

आज भी पक्षी की एसी जातियां देखने को मिलती है जिनके पँख पर नखर होते है.

अभी हाल ही में मिले आर्किओप्टेरिक्स के सातवें जीवाश्म में उरोस्थि पाया गया था. इस हड्डी की मौजूदगी दिखाती है कि आज के समय के पक्षीयों की तरह उस पक्षी के ारीर में भी ऊडान के लिए मज़बूत स्नायु थे.

एकमात्र भेद यह था कि उसके मुँह में दांत थे। इस खोज़ ने दिखाया कि दांत वाले पक्षियों की संरचना आदिकालीन नहीं थी जैसाकि इवोल्युशनिस्ट्स कथित रूप से कह रहे हैं।52 डिस्कवर के एक लेख में यह उल्लेख किया गया था : "पक्षी कब आये? यह जीवाश्म सूचित करता है कि वे डायनासोर में से नहीं आये थे।"53

आर्किओप्टेरिक्स के बारे में इवोल्युशनिस्टस के दावों का खण्डन करनेवाला अन्य जीवाश्म इओआलुलेविस था। इओआलुलेविस के पँख की संरचना (जो उम्र में आर्किओप्टेरिक्स से 2.5 से 3 करोड़ साल छोटा है) भी आज के धीमी गति से उड़ान भरने वाले पक्षियों में पाई गई थी। इससे यह साबित हुआ कि 12 करोड़ साल पहले आकाश में उड़ने वाले ऐसे पक्षी थे जो आज के पक्षियों से बिल्कुल अलग नहीं थे।54

यह तथ्य एक बार और यही सूचित करता है कि न ही आर्किओप्टेरिक्स या उसके जैसे अन्य प्राचीन पक्षी मध्यवर्ती स्वरूप में थे। जीवाश्म यह नहीं दर्शाते करते हैं कि पक्षियों की विभिन्न प्रजातियां एक–दूसरे में से पैदा हुईं। इसके विपरीत जीवाश्म रिकॉर्ड साबित करता है कि आज के पक्षी और आर्किओप्टेरिक्स जैसे कुछ प्राचीन पक्षी वास्तव में एक ही समय में साथ रहते थे। इनमें से आर्किओप्टेरिक्स और कन्फ्युशियसोरनिस जैसे पक्षियों की कुछ जातियाँ आज नष्ट हो चुकी हैं और केवल कुछ ही जातियाँ जिनका पहले अस्तित्व था तब से लेकर आज तक ज़िंदा रह पाई हैं।

संक्षिप्त में, आर्किओप्टेरिक्स के कई लक्षण सूचित करते हैं कि यह प्राणी मध्यवर्ती स्वरूप नहीं था। आर्किओप्टेरिक्स की समग्र शरीररचना अवरोध का संकेत देती है, क्रमिक–विकास का नहीं। जीवाश्म–वैज्ञानिक रॉबर्ट कैरोल को यह स्वीकार करना पड़ा था :

आर्किओप्टेरिक्स के उड़ने के पंखों की ज्यामिति आज के आधुनिक पक्षियों से मिलती ज़ुलती है जबकि नहीं उड़ने वाले पक्षियों के पास सुडौल बनावट के पंख हैं। पंख पर जिस प्रकार से परों की व्यवस्था की गई है वह भी आधुनिक पक्षियों की श्रेणी में आता है .... वान टाइनी और बर्जर के मुताबिक आर्किओप्टेरिक्स के पँख का सापेक्ष कद और आकार विकिरिय पक्षी (घरेलू पौल्ट्री), कबूतर, कठ–फ़ोडवा और ज्यादातर पासेराइन पक्षियों जैसा है जो सीमित वनस्पति में विचरण करते हैं .... उड़ने के लिए पंख कम से कम 15 करोड़ सालों से स्थिर अवस्था में हैं।55

दूसरी ओर, "टेम्पोरल पैरेडोक्स" (कालिक विरोधाभास) उन हकीकतों में से एक है, जो आर्किओप्टेरिक्स के बारे में इवोल्युशनिस्ट्स के आरोपों को तगड़ा झटका देती है। अपनी किताब आइकन्स ऑफ इवोल्युशन में जोनाथन वैल्स टिप्पणी करते हैं कि आर्किओप्टेरिक्स को इवोल्युशन के सिद्धांत के "आइकन" में रूपांतरित किया गया है जबकि सबूत साफ़ साफ़ यह दिखाते हैं कि यह प्राणी पक्षियों के प्राचीन पूर्वज नहीं हैं। वैल्स के मुताबिक इसके कई संकेतो में से एक यह है कि आर्किओप्टेरिक्स के कथित पूर्वज माने जानेवाले थेरोपोड डायनासोर वास्तव में आर्किओप्टेरिक्स से उम्र में छोटे हैं।

दो पैरवाले सरीसृप जो ज़मीन पर दौड़ सकते हैं और अन्य लक्षण रखते हैं, उनसे आर्किओप्टेरिक्स के पूर्वज होने की अपेक्षा रखी जाती है। जो बाद में पृथ्वी पर आये।56

पक्षी–डायनासोर के बीच में काल्पनिक कड़ी

आर्किओप्टेरिक्स को मध्यवर्ती स्वरूप में पेश करने का प्रयास कर रहे इवोल्युशनिस्ट्स का दावा यह है कि पक्षी डायनासोर में से पैदा हुए हैं। हालांकि, दुनिया में सबसे मशहूर पक्षीविदों में से एक नॉर्थ कैरोलिना युनिवर्सिटी के एलन फ़ेडुस्सिया इस सिद्धांतका विरोध करते हैं कि पक्षियों का सम्बन्ध डायनोसोर से है। वे खुद एक इवोल्युशनिस्ट है फिर भी वे यह आश्चर्यजनक बयान देते हैं। सरीसृप–पक्षी क्रम विकास के बारे में फ़ेडुस्सिया कुछ इस प्रकार की टिप्पणी करते हैं :

मैंने पक्षियों की खोपड़ियों का 25 सालों से अभ्यास किया है और मैं उनमें (पक्षी और सरीसृप में) कोई भी समानता नहीं देखता हूं। मुझे सचमुच ऐसी कोई समानता नहीं दिखती है .... अगर पक्षियों के पूर्वज डायनोसोर हैं, तो यह 20वीं सदी के जीवाश्मविज्ञान के लिए सबसे बड़ी शर्मिन्दगी की बात होगी।57

कैंसास युनिवर्सिटी के भूतपूर्व पक्षी–विशेषज्ञ लैरी मार्टिन भी डायनासोर में से पक्षियों के उद्‌भव के सिद्धांत का विरोध करते हैं। इस विषय में क्रमिक–विकास जिस विरोधाभास में आ खड़ा होता है उसके बारे में चर्चा करते हुए वे कहते हैं :

सच कहुं तो, अगर मुझे पक्षियों के डायनोसोर में से हुए उद्‌भव के सिद्धांत को समर्थन देना होता तो उस विषय में हर बार बात करते वक्त मैं शर्मिन्दा होता।58

सिर्फ और सिर्फ आर्किओप्टेरिक्स के आधार पर खडे किये गये हुए "पक्षियों के क्रमिक–विकास" का दृश्यलेख इवोल्युशनिस्ट्स के पूर्वग्रहों और आकांक्षी विचारधारा के अलावा और कुछ नहीं है।

प्रॉफेसर एलन फेडुक्किया

मक्खी का उदगम क्या है?

डायनासोर्स पक्षीयो में रूपांतरित हुए थे एसा दावा करके इवोल्युशनिस्टस अपनी दलील का यह कहकर समर्थन करते है कि जिन डायनासोर्स ने मक्खीयों का शिकार करने के लिए अपने अगले पैर फडफडाये थे "उन्हे पँख आये और वे ऊडने लगे" जैसा की इस तस्वीर में दिखता है. किसी भी वैज्ञानिक आधार बगैर और मात्र कल्पना पर आधारित यह थीअरि मात्र एक सरल तार्किक विरोधाभास पर भार डालती हैः ऊडने की क्रिया का उदगम समझाने के लिए इवोल्युशनिस्टस द्वारा दिया गया उदाहरण याने मक्खी के पास पहले से ऊडने की क्षमता है. मनु य अपनी आँखे सैकंड में 10 बार खोल या बंद नहीं कर सकता है लेकिन एक साधारण मक्खी अपने पँख सैकंड में 500 बार फडफडा सकता है. इसके अलावा वह अपने दोनो पँख एकसाथ हिलाता है. पँख फडफडाने की क्रिया में सहज भी असंगतता से मक्खी अपना सन्तुलन गँवा देगी लेकिन एसा कभी भी नहीं होता है.

इवोल्युशनिस्टस को पहले यह समझाना चाहिए कि मक्खी ने ऊडने की यह बहेतरीन क्षमता कैसे प्राप्त की? इसके बदले वे काल्पनिक द्रश्यलेख खडा करते है और समझाते है कि सरीसृप जैसे जटिल प्राणी किस तरह ऊडना सीखे थे.

घरेलु मक्खी जैसा परफैक्ट सृजन भी क्रम विकास के दावे को अयोग्य ठहराता है. अंग्रेज जीवविज्ञानी रॉबिन वूटोन ने "द मिकैनिकल डिज़ाइन ऑफ फ्लाय विंग्स" ाि ाकिवाले लेख में यह लिखाः

जंतुओं की पँख की कार्यपद्धत्ति के बारे में हम जितना ज्यादा समझने का प्रयास करते हैए उतनी ही उनकी डिज़ाइन सूक्ष्म और सुंदर नज़र आती है. इसकी संरचना परंपरागत तरीके से डिज़ाइन की गई है जिस में कम से कम तोड–मरोड होता है; इसकी व्यवस्था इस प्रकार से की गई है जिस से उसके घटक भाग सुयोग्य तरीके से गतिविधि कर सके. जंतु के दोनो पँख एक ही भाग में जुडे होते है जिसमें लचीले गुणधर्म की व्यापक रैन्जवाले घटक होते है जो योग्य बलों के प्रतिभावस्वरूप योग्य विरूपण दे सके और हवा का श्रे ठ संभवित उपयोग कर सके उस तरह से जुडे होते है. आज भी तकनीक की द्रि ट से उनका मुकाबला कर पाये ऐसी चीज़ नहीं है.1

दूसरी ओर, एक भी एसा जीवाश्म नहीं है जो मक्खीयों के काल्पनिक क्रम विकास का सबूत दे सके. प्रति ि ठत प्राणीविज्ञानी पीयरे ग्रासे ने ऐसे ही मतलब से यह कहा था, "जंतुओ के उदभव के बारे में हम अब भी अनजान है." 2

रॉबिन जे वूट्टोन, "द मिकैनिकल डिज़ाइन ऑफ इन्सेक्ट विंग्स", साइंटिफिक अमेरिकनए वॉल्युम 263, नवम्बर 1990, पृ.120

पीयरे पी ग्रासे, इवोल्युशन ऑफ लिविंग ऑर्गेनिज़्म्स, न्यू यॉर्क, ऐकेडमिक प्रेस, 1977, पृ.30

इवोल्युशनिस्ट द्रश्यलेख में से एक उदाहरणः मक्खी पकडने का प्रयास करते वक्त पँख विकसित करनेवाले डायनासोर्स!

स्तनपायीओं की उत्पत्ति

े ूम ींअम `जंजमक इमवितमए जीम जीमवतल व मिअवसनजपवद चतवचवेमे जींज `वउम पउंहपदंतल बतमंजनतमे जींज बंउम वनज व जीम `मं जनतदमक पदजव तमचजपसमेए `दक जींज इपतके मअवसअमक तिवउ तमचजपसमेण ।बबवतकपदह जव जीम `उम `बमदंतपवए तमचजपसमे `तम जीम `दबमेजवते दवज वदसल व इपतके इनज `सेव व उंउउंसेण भ्वूमअमतए जीमतम `तम हतमंज कपममितमदबमे इम. जूममद जीमेम जूव बसेंमेण डंउउंसे `तम ूंतउ.इसववकमक `दपउंसे ;जीपे उमंदे जीमल बंद हमदमतंजम जीमपत वूद ीमंज `दक उंपदजंपद पज `ज `जमंकल समअमसद्धए जीमल हपअम सपअम इपतजीए जीमल `नबासम जीमपत लवनदहए `दक जीमपत इवकपमे `तम बवअमतमक पद नित वत ींपतण त्मचजपसमेए वद जीम वजीमत ींदकए `तम बवसक.इसववकमक ;पण्मण्ए जीमल बंददवज हमदमतंजम ीमंजए `दक जीमपत इवकल जमउचमतंजनतम बींदहमे `बबवतकपदह जव जीम मगजमतदंस जमउचमतंजनतमद्धए जीमल संल महहेए जीमल कव दवज `नबासम जीमपत लवनदहए `दक जीमपत इवकपमे `तम बवअमतमक पद `बंसमेण

व्दम मगंउचसम व जीम `जतनबजनतंस इंततपमते इमजूममद तमचजपसमे `दक उंउउंसे पे जीमपत रूं `जतनबजनतमण डंउउंस रूं बवद. `पेज व विदसल वदम उंदकपइनसंत इवदम बवदजंपदपदह जीम जममजीण् प्द तमचजपसमेए जीमतम `तम जीतमम सपजजसम इवदमे वद इवजी `पकमे व जीम उंदकपइसमण ।दवजीमत इंेपब कपममितमदबम पे जींज `सस उंउउंसे ींअम जीतमम इवदमे पद जीमपत उपककसम मंत ;ींउउमतए `दअपसए `दक `जपततनचद्धण त्मचजपसमे ींअम इनज `पदहसम इवदम पद जीम उपककसम मंतण म्अवसनजपवदपेजे बसंपउ जींज जीम तमचजपसम रूं `दक उपककसम मंत हतंकनंससल मअवसअमक पदजव जीम उंउउंस रूं `दक मंतण जैम ुनमेजपवद व ीवू `द मंत ूपजी `पदहसम इवदम मअवसअमक पदजव वदम ूपजी जीतमम इवदमेए `दक ीवू जीम `मदेम व ीमंतपदह ।मचज वद निदबजपवदपदह पद जीम उमंदजपउम बंद दमअमत इम मगचसंपदमकण छवज `नतचतपेपदहसलए दवज वदम `पदहसम विपस सपदापदह तमचजपसमे `दक उंउ. उंसे ीं इममद विनदकण जैपे पे ूील मअवसनजपवदपेज `बपमदबम ूतपजमत त्वहमत स्मूपद `ू वितबमक जव `लए ष्जीम जतंदेपजपवद जव जीम पितेज उंउउंसए ूपबी चतवइंइसल ींचचमदमक पद रनेज वदम वतए `ज उवेजए जूव सपदमंहमेए पे `जपसस `द मदपहउंण्[59]

सबसे ज्यादा लोकप्रिय इवोल्युशनरी विद्वानों में से एक और नीओ–डार्विनिस्ट सिद्धांत के प्रवर्तक ज्योर्ज गेलॉर्ड सिम्पसन इवोल्युशनिस्ट्स को उलझन में डालने वाली इस मुसीबत के बारे में यह कहते हैं :

पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति के इतिहास को सबसे बड़ी उलझन में डालने वाला प्रसंग मैसोज़ोइक (सरीसृपों का युग) में से स्तनपायीं के युग में परिवर्तन का है। यह कुछ ऐसी बात हुई कि मंच पर अचानक परदा डाला गया हो और सभी मुख्य भूमिका बड़ी संख्या में और चौंका देने वाली विविधता में मौजूद सरीसृपों के हवाले की गई हो (खास तौर से डायनासोर) और फिर पर्दे को फिर से हटाने पर जबकि सैटिंग ज्यों की त्यों है लेकिन सब भूमिकायें बदल जाये – ऐसी भूमिका जिस में डायनासोर फिर से दिखाई नहीं देते और अन्य सरीसृप अनावश्यक हो और सभी मुख्य भूमिकायें स्तनपायीं द्वारा की जाये जिनका नाटक पर प्रारंभिक अंक में कोई संकेत नहीं दिया गया था।

इसके अलावा जब स्तनपायीं अचानक प्रकट हुए तब वे प्रारंभ से एक–दूसरे से बहुत अलग थे। चमगादड़, घोड़ें, चूहें और व्हेल जैसे असमान प्राणी सब स्तनपायीं हैं और वे सब एक ही भूवैज्ञानिक काल के दौरान पैदा हुए। कल्पना के आकाश को चाहे कितना भी चौड़ा किया जाये इन प्राणीयों के बीच में क्रमिक–विकास के सम्बन्ध का मेल बिठाना असंभव है। इवोल्युशनिस्ट प्राणीशास्त्री आर. ऐरिक लोम्बार्ड प्रमुख जर्नल इवोल्युशन में छपे अपने लेख में इस मुद्दे पर ज़ोर देते हैं।

स्तनपायीं जाति या वंश का जातिवत्त बनाने में उपयोगी विशिष्ट सूचना की खोज़ करने वाले निराश होंगे।[61]

यह सब दर्शाता है कि सभी सजीव पृथ्वी पर क्रमिक–विकास की प्रक्रिया के बगैर अचानक और पूर्ण विकसित रूप में पैदा हुए थे। यह इस हकीकत का ठोस सबूत है कि उनका सृजन किया गया था। हालांकि, इवोल्युशनिस्ट्स इस हकीकत का खुलासा देने का प्रयास करते हैं कि सभी सजीव एक खास क्रम में अस्तित्व में आये जो इवोल्युशन का क्रम दिखाता है। हालांकि सजीव जिस क्रम में पैदा हुए वो "सृजन का क्रम" है क्योंकि क्रम विकास की प्रक्रिया के बारे में कुछ कहना संभव नहीं है। सर्वश्रेष्ठ और परिपूर्ण सृजन के साथ समुद्र और उसके बाद जमीन को सजीवों से भर दिया गया था और आखिर में मनुष्य को बनाया गया।

चमगादड

इवोल्युशनिस्टस यह बात सामने रखते है कि स्तनपायीओं की सभी जातियां एक समान पूर्वज में से उत्पन्न हुई. हालांकि, भालू, व्हैल, चूहे और चमगादडो जैसे विविध स्तनपायीओ की प्रजातियो के बीच में बहुत बडा फर्क है. यह सब जातियों के पास विशि ट व्यवस्था है. ऊदाहरण के तौर पर चमगादडो के पास बहुत ही संवेदनशील सॉनार सिस्टम होती है जिस से वे अंधेरे में अपना रास्ता ढूंढ सकते है. आधुनिक टैकनोलजि जिसका सिर्फ अनुकरण कर सकती है ऐसी जटिल व्यवस्था एक संयोग के परिणामस्वरूप उत्पन्न नहीं हो सकती है. जीवाश्म का रिकॉर्ड भी यही सूचित करता है कि चमगादड अचानक उनकी वर्तमान अवस्था के साथ अचानक पैदा हुए और वे "क्रम विकास" की किसी भी प्रक्रिया से गुज़रे नहीं है.
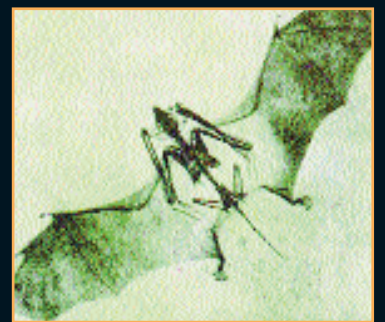
5 करोड साल पुराने चमगादड का जीवाश्मः यह आधुनिक चमगादड की संरचना से बिलकुल अलग नहीं है. (साइंस, वॉल्युम.154)

घोडे के क्रम विकास की गलत धारणा

अभी कुछ ही समय पहले कथित रूप से घोडे के क्रम विकास को दिखानेवाली काल्पनिक श्रृंखला को क्रम विकास की थीअरि के मुख्य जीवाश्म सबूत के रूप में पेश किया जाता था. हालांकि, आज खुद कई इवोल्युशनिस्टस खुलकर स्वीकार करते है कि घोडे के क्रम विकास का द्रश्यलेख झूठा है. 1980 में शिकागो में फिल्ड म्युज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री में आयोजित चार दिन के परिसंवाद में क्रम विकास की थीअरि से जुडी हुई समस्याओ पर चर्चा करने के लिए 150 इवोल्युशनिस्टस मौजूद थे. इस बैठक को संबोधित करते हुए इवोल्युशनिस्ट बोयस रेन्सबर्गर ने इस बात पर ध्यान दिया कि घोडे के क्रम विकास के द्रश्यलेख का जीवाश्म रिकॉर्ड में कोई आधार नहीं है और घोडे के क्रमशः क्रम विकास का खुलासा दे सके ऐसी कोई प्रक्रिया ध्यान में नहीं आई है:

घोडे के क्रम विकास के इस लोकप्रिय उदाहरण में 5 करोड सालो पहले जीवित चार अंगूठेवाले लौंकडी के कद के प्राणी से लेकर आज के एक अंगूठेवाले बडे घोडे तक जो बदलाव हुए है उसकी बात की जाती है. लेकिन यह गलत साबित हो चुकी है. क्रमशः बदलाव के बदले हर मध्यवर्ती जातियो के जीवाश्म संपूर्ण विकसित स्वरूप में आये और बाद में वे न ट हुए. मध्यवर्ती स्वरूपो के बारे में कुछ पता नहीं चला है. 1

"घोडे के क्रम विकास" के डायाग्राम्स के बारे में डॉ.नाइल्स एलड्रेज ने यह कहा:

जीवन के इतिहास का रूख वास्तव में क्या है इसके बारे में कई कहानियां है जिसमें से कुछ अन्य से ज्यादा मनघडंत है. आज भी जिसका हवाला दिया जाता है वह मशहूर उदाहरण घोडे के क्रम विकास का है जो ाायद पचास साल पहले बनाया गया था. सभी किताबो में इसे सत्य के रूप में पेश किया जा रहा है. अब मुझे लगता है कि यह दुःखद है खास तौर पे जब इस प्रकार की कहानियां कहनेवाले लोग ाायद इस के काल्पनिक पहलु से परिचित हो.2

फिर घोडे के क्रम विकास के द्रश्यलेख के लिए कौन सा आधार है? भारत, दक्षिण आफ्रिका, उत्तर अमरीका और युरोप में व्यापक रूप से अलग अलग काल खण्डो में रहनेवाली विभिन्न जातियों के जीवाश्म को एक क्रम में संजोकर बनाये गये झूठे चार्ट द्वारा और इवोल्युशनिस्टस की विशाल कल्पनाशक्ति द्वारा इस द्रश्यलेख को बनाया गया था. घोडे के क्रम विकास के 20 से भी ज्यादा चार्ट (जो एकदूसरे से बिल. कुल अलग है) विविध संशोधको द्वारा पेश किये गये है. इस तरह यह स्प ट होता है कि इन परिवार वृक्षो के बारे में इवोल्युशनिस्टस एक आम सहमति पर पहुँच नहीं पाये है. इन व्यवस्थाओ के बारे में एक ही सामान्य लक्षण वो मान्यता है कि कुत्ते जितना कदवाले 'इओहीप्पस' नामक प्राणी घोडे (इक्युअस) का पूर्वज था जो 5.5 करोड सालो पहले इओसीन काल में जीवित था. लेकिन इओहीप्पस से इक्युअस तक यह कथित क्रम विकास की रेखा में बिलकुल सातत्य नहीं है.

अपनी किताब द ग्रैट इवोल्युशन मिस्टरी में इवोल्युशनिस्ट विज्ञान लेखक गॉर्डन आर टैलर इस सत्य का स्वीकार करते है:

डार्विनिज़म की सब से गंभीर कमजोरी यह है कि जीवाश्मविज्ञानी क्रम विकास के बडे बदलाव दिखलानेवाले प्राणीओ के वंश या जातियो की विश्वासोत्पादक श्रृंखला ढूंढने में नाकामियाब हुए हैकृ. घोडे को एकमात्र संपूर्ण उदाहरण के रूप में हमेशा पेश किया जाता है. लेकिन हकीकत यह है कि इओहीप्पस से इक्युअस तक की जो रेखा है वह अनियमित है. कद में लगातार बढौतरी को दिखाने के लिए यह उदाहरण पेश किया जाता है लेकिन सत्य यह है कि कुछ सजीव इओहीप्पस से छोटे थे, बडे नहीं थे. विभिन्न स्त्रोत में से नमूनो को विश्वासोत्पादक दिखनेवाली श्रृंखला के रूप में इकट्ठा किया जा सकता है लेकिन ऐसा कोई सबूत नहीं है कि उनके समय में वे सचमुच इसी क्रम में ही पैदा हुए थे.3

यह सब हकीकते एक ठौस सबूत देती है कि डार्विनिज़म के सब से मजबूत सबूतो के टुकडो के रूप में पेश किये जा रहे घोडे के क्रम विकास के चार्ट एक मनघडंत कहानी के अलावा और कुछ भी नहीं है.

बोयस रेन्सबर्गर, ह्युस्टन क्रोनिकल, नवम्बर 5, 1980. पृ.15

नाइल्स एल्ड्रेग, जिसका ल्युथर डी सुंडरलैंड, सान्टी, कैलिफोर्निया, मास्टर बूक्स, 1988, पृ.78 द्वारा डार्विन्स एनिग्मा में उद्द्रुत किया गया था.

गोर्डन रेट्ट्रे टेलर, द ग्रैट इवोल्युशन मिस्टरी, एबेकस, स्फीयर बूक्स, लंदन, 1984, पृ. 230

म्युज़ियम में प्रदर्शनी में रखी गई यह घोडे की श्रृंखला में विभिन्न प्राणी है जो विविध समय में और विविध भूस्तरीय स्थलो पर अस्तित्व में थे. यहां एक सुरेख श्रृंखला का संकेत देने के लिए पक्षपाती द्रि टकोण से उन्हे अनियमित क्रम में संजोया गया है. अश्वीय "क्रम विकास" का कोई द्रश्यलेख जीवाश्म रिकॉर्ड में देखने को नहीं मिलता है.

<u>अध्याय 7</u>

इवोल्युशनिस्टस द्वारा जीवाश्मों का पक्षपाती, भ्रमक व्याख्या (इन्टरप्रिटेशन)

मानव के क्रमिक–विकास की गलत मान्यता के बारे में विस्तार से चर्चा करने से पहले हमें उस प्रोपेगेन्डा (प्रचार) की पद्धति की चर्चा करने की आवश्यकता है जिसकी वजह से सामान्य जनता यह मानती है कि भूतकाल में कभी अर्ध–मनुष्य और अर्ध–वानर प्राणियों का अस्तित्व था। इस प्रोपेगेन्डा पद्धति में जीवाश्मों के संदर्भ में बनाये गये "रिकन्स्ट्रक्शन्स" (पुनः निर्माण) का उपयोग किया गया था। पुनः निर्माण एक ही हड्डी पर आधारित सजीव का मॉडल बनाने या कोई चित्र बनाने जैसा ही है। कभी–कभी तो खुदाई से मिले हड्डी के सिर्फ एक टुकड़े पर से सजीव का मॉडल बनाया जाता है। अखबार, मैगेज़िन और फिल्मों में जो एप–मैन (वानर मानुष्य) हम देखते हैं ये सब रिकन्स्ट्रक्शन्स हैं।

जीवाश्म टुकडों में बंटे हुए हैं और अपूर्ण होने की वजह से उन पर आधारित कोई भी अनुमान का मिथ्या होने की संभावना रहती है। असल में इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा बनाये गये हुए और जीवाश्मों पर आधारित रिकन्स्ट्रक्शन्स (तस्वीरें या मॉडल) क्रमिक–विकास की धारणा को योग्य साबित करने के लिए सोच समझकर बनाये गये हैं। हार्वर्ड के प्रमुख जीवाश्म–वैज्ञानिक डैविड आर पीलबीम इस हकीकत पर ज़ोर देते हैं और कहते हैं : "कम से कम जीवाश्म विज्ञान में आँकड़े इतने अपर्याप्त हैं कि सभी व्याख्याओं और खुलासों पर सिद्धांत ही हावी रहता है। वास्तविक आँकड़ों के बदले सिद्धांत ने भूतकाल में हमारी वर्तमान विचारधाराओं को प्रदर्शित किया है।"62 लोग आंखों देखी सूचना से बहुत प्रभावित होते हैं इसलिए यह रिकंस्ट्रक्शंस इवोल्युशनिस्टों के विचारों को सही ठहराते हैं जिसका उद्देश्य लोगों को इस बात का कायल करना होता है कि यह रिकंस्ट्रक्टेड प्राणी का भूतकाल में सचमुच अस्तित्व था।

यहां हमें एक खास मुद्दे पर प्रकाश डालना होगा :

एक ही खोपडी पर आधारित तीन अलग रिकन्स्ट्रक्शन्स

इवोल्युशनिस्टस ऐसी "हास्यास्पद कहानियां" ढूंढते है कि वे एक ही खोपडी को अलग अलग चहेरो से जोडते है. ऊदाहरण के तौर पर, ऑस्ट्रेलोपिथेसस रोबस्टस (झिनजानथ्रोपस) नामक जीवाश्म के लिए बनाये गये तीन अलग रिकन्स्ट्रक्टेड चित्र ऐसे धोखे का मशहूर द्र टांत है. उपर से नीचेः मौरिस विलसन का चित्रांकनय सन्डे टाइम्स की 5 अप्रैल, 1964 के संस्करण में एक चित्रांकन; नैशनल ज्योग्रोफिक की सप्टेम्बर, 1960, के संस्करण में एन पार्कर का चित्रांकन.

हड्डियों के अवशेषों पर आधारित रिकन्स्ट्रक्शन्स प्राणी के सबसे सामान्य लक्षण ही उजागर कर सकते हैं क्योंकि किसी भी प्राणी का विशिष्ट रूपात्मक लक्षण उनके नरम ऊतक हैं जो मृत्यु के बाद तेज़ी से नष्ट हो जाते हैं। इसलिए नरम ऊतक की व्याख्या के बारे में अटकलों की वज़ह से रिकन्स्ट्रक्टेड तस्वीरें या मॉडल मात्र उन्हे बनानेवाले आदमी की कल्पनाशक्ति पर संपूर्ण रूप से निर्भर रहते हैं। हार्वर्ड युनिवर्सिटी के अरनेस्ट ए हूटन इस परिस्थिति को इस तरह समझाते हैं।

> नरम भागों का वापस लाना और भी ज्यादा मुश्किल काम है। होठ, आँखे, कान और नाक का अग्र भाग उनके नीचे के हड्डियों वाले भागों के लिए कोई सुराग नहीं छोड़ते हैं। इस तरह से आप नीएन्डरथलोइड की खोपड़ी पर चिम्पांजी के लक्षणों का मॉडल बना सकते हैं या किसी फिलोसोफ़र की आकृति बना सकते हैं। मनुष्यों के प्राचीन प्रकार को कथित रूप से वापस लाने की प्रवृत्तियों का कुछ खास वैज्ञानिक महत्त्व नहीं है और यह जनता को गुमराह करने की कोशिश है .... इसलिए ऐसे रिकन्स्ट्रक्शन्स में आप विश्वास न रखें।63

वास्तव में इवोल्युशनिस्टस ऐसी "निरर्थक कहानियाँ" ढूंढ निकालते हैं जो वे एक ही खोपड़ी के अलग–अलग चहेरे पर आरोपित कर सकते हैं। जैसेकि ऑस्ट्रेलोपिथेकस रोबस्टस (जीन्जानथ्रोपस) नामक जीवाश्म की बनाई गई तीन अलग–अलग रिकन्स्ट्रक्टेड तस्वीरें एसी धोखाधड़ी का प्रचलित उदाहरण है।

जीवाश्म की पक्षपाती व्याख्या और कई काल्पनिक रिकन्स्ट्रक्शन्स की सरेआम जालसाज़ी – यह संकेत देती है कि इवोल्युशनिस्ट्स ने बार–बार युक्ति–प्रयुक्तियों का सहारा लिया है। हालांकि, इवोल्युशन के इतिहास में जो जानबूझ कर धोखाधड़ी हुई है उसकी तुलना में यह बहुत मामूली दिखाई पड़ती है।

एक दूसरे से संपूर्ण अलग जावा मैन के दो चित्र इस बात का बहुत अच्छा उदाहरण है कि इवोल्युशनिस्टस किस मनघडंत तरीके से जीवाश्म का प्रतिपादन करते है.

बायेंः मौरिस विल्सन का चित्र (फ्रोम एप टु एडमः द सर्च फॉर द एनसेस्ट्री ऑफ मैनए हर्बर्ट वेन्ड)

दाये: स्टीवन स्टैनली का चित्र (ह्युमन ऑरिजिन्स)

अध्याय 8

क्रमिक–विकास में ज़ालसाजी

"एप–मैन" की छवि को समर्थन देने के लिए कोई ठोस जीवाश्म का सबूत मौजूद नहीं है। जबकि मीडिया और इवोल्युशनिस्ट शैक्षणिक गुटों द्वारा "एप–मैन" छवि का लगातार प्रचार किया जा रहा है। अपने हाथों में तूलिका के साथ इवोल्युशनिस्टस काल्पनिक प्राणियों को बनाते हैं। फिर भी हकीकत यह है कि यह काल्पनिक चित्र किसी भी जीवाश्म के अवशेषों से मेल नहीं खाते। यह हकीकत उनके लिए बड़ी समस्या खड़ी करती है। इस समस्या को हल करने के लिए अपनाये गये। दिलचस्प तरीकों में से एक है जो जीवाश्म वे ढूंढ़ नहीं पाते उसे "पैदा करना"। विज्ञान के इतिहास में जो सबसे बड़ा कलंक हो सकता है वह पीलटडाऊन मैन है जो इस पद्धति का खास उदाहरण है।

पील्टडाऊन मैनः ओरांग–ऊटान का जबडा और मानव खोपड़ी!

सन् 1912 में मशहूर डॉक्टर और ऐमटर (अव्यवसायी) जीवाश्म–वैज्ञानिक चार्ल्स डॉसन यह दावे के साथ सामने आये की उन्होंने इंग्लैंड के पील्टडाऊन के एक गड्ढे में जबडे की हड्डी और कपाल का एक हिस्सा पाया है। जबडे की हड्डी एप जैसी है फिर भी दांत और खोपड़ी मनुष्य जैसी है। इन नमूनों को "पील्टडाऊन मैन" का नाम दिया गया था। कथित रूप से 5 लाख साल पुराने माने जानेवाले यह नमूने कई म्युज़ियम में मानव क्रमिक–विकास के संपूर्ण सबूत के रूप में पेश किये गये। 40 साल से ज्यादा समय तक "पील्टडाऊन मैन" पर कई वैज्ञानिक लेख लिखे गये, कई चित्र बनाये गये और खुलासे किये गये और इस जीवाश्म को मानव क्रमिक–विकास के महत्त्वपूर्ण सबूत के रूप में पेश किया गया था। इस विषय पर लिखी गई डॉक्टरल थीसिस की संख्या 500 से कम नहीं थी।64 1921 में ब्रिटिश म्युज़ियम की भ्रमण करते वक्त विख्यात अमेरिकन जीवाश्म–वैज्ञानिक हेन्री फैरफील्ड ऑसबोर्न ने कहा था, "हमें यह बात बारबार याद दिलानी होगी कि प्रकृति विरोधाभासों से भरी हुई है" और उन्होंने पील्टडाऊन को "मनुष्य के प्रागैतिहास के लिए उत्कृष्ट महत्त्व की खोज़" घोषित किया' ।65

सन् 1949 में ब्रिटिश म्युज़ियम के जीवाश्मविज्ञान विभाग के कैनेथ ऑकलीने जीवाश्मों की उम्र जानने के लिए नये परीक्षण "फ्लोरिन टेस्टिंग" का उपयोग किया। पील्टडाऊन मैन के जीवाश्म पर इस टेस्ट का परीक्षण किया गया। परिणाम चौंकाने वाला था। परीक्षण के दौरान यह मालूम हुआ कि पील्टडाऊन मैन के जबड़े की हड्डी में फ्लोरिन बिल्कुल नहीं था। इससे यह मालूम हुआ कि इस जीवाश्म को कुछ सालों पहले ही दफन किया गया था। फ्लोरिन की बहुत कम मात्रा वाली खोपड़ी दिखायी, जिससे मालूम हुआ कि वह कुछ हजार सालों से ज्यादा पुरानी नहीं थी।

यह निर्धारित किया गया कि जबड़े की हड्डी में मौजूद दांत ओरांगूटान के थे और उन्हें कृत्रिम तरीके से पुराने बनाये गये थे और जीवाश्म के साथ मिले "आदिकालीन" हथियार नकली थे। जिन्हें इस्पात के औज़ारों से तेज़ बनाया गया था।66 जोसेफ वैनर द्वारा पूरे किये गये विस्तृत विश्लेषण में इस धोखाधड़ी का 1953 में जनता के सामने पर्दाफाश किया गया। यह खोपड़ी 500 साल की उम्र के आदमी की थी और जबड़े की हड्डी हाल ही में मरे हुए एप (वानर) की थी। दांत को विशिष्ट प्रकार से रखा गया था और जबड़े में जोड़ा गया था और दाढ़ की सतह को घिसा गया था जिससे वह आदमी जैसा लग सके। फिर इन सब टुकडों को पुराना दिखाने के लिए पोटेशियम डायक्रोमेट लगाया गया था। जब इन्हें ऐसिड में डुबाया गया तब यह दाग दूर होने शुरू हो गये। इस धोखाधड़ी का पर्दाफाश करने वाली टीम के सदस्य सर विलफ्रेड ले ग्रोस क्लार्क इस परिस्थिति पर अपना आश्चर्य छुपा नहीं पाये और उन्होंने कहा :

"बनावटी घिसाई के सबूत तुरंत आँखो के सामने क्यों स्पष्ट हुए। यह इतना साफ–साफ था कि ऐसा पूछने को मन होता है कि – पहले किसी ने इस बात पर गौर क्यों नहीं किया?"67 इस घटना के परिणामस्वरूप, "पिल्टडाऊन मैन" को बहुत जल्दी से ब्रिटिश म्युज़ियम से दूर किया गया जहां उसे 40 सालों से ज्यादा समय तक रखा गया था।

होक्स की कहानी

1

जीवाश्म की खुदाई चार्ल्स डार्विन ने की है और सर आर्थर स्मिथ वूडवर्ड को दिये गये ह

2

मशहूर खोपडी को बनाने के लिए टुकडो का रिकन्स्ट्रक्शन किया गया है.
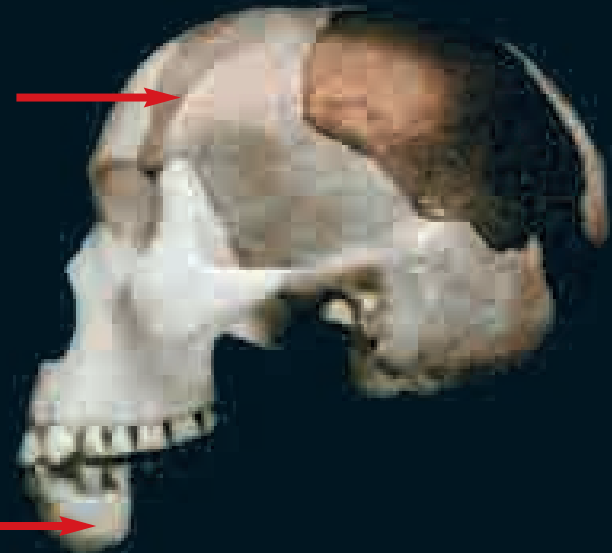
3

रिकन्सट्रक्टेड खोपडी पर आधारित, विविध चित्र और शिल्प बनाये जा चुके है, अनगिनत लेख और टिप्पणीयां लिखी गई है. मूल खोपडी को ब्रिटिश म्युज़ियम में प्रदर्शित किया गया है.

4

इसकी खोज के 40 साल बाद, पिल्टडाउन जीवाश्म को संशोधको के समूह ने इसे होक्स करार दिया है.

नेब्रास्का मैन : एक सूअर का दांत

उपर दिया गया चित्र एक ही दांत के आधार पर बनाया गया था और 24 जुलाईए 1922 को इलुस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़ मैगज़िन में प्रकट हुआ था. हालांकि, जब यह बात सामने आई कि यह दांत ना तो मनु य का था ना एप का था किंतु सूअर की न ट हुई जाति का था तब इवोल्युशनिस्टस अत्यंत निराश हुए थे.
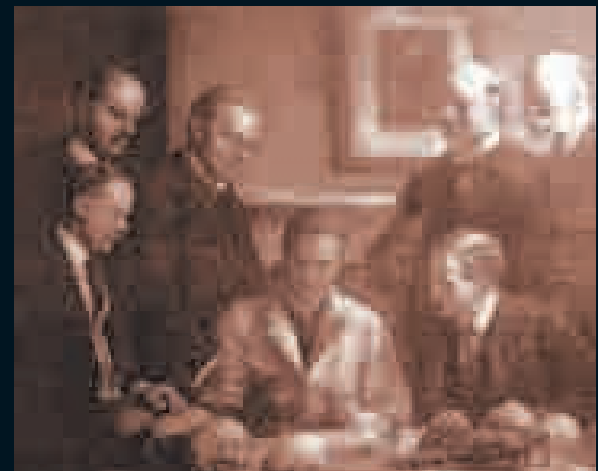
सन् 1922 में अमेरिकन म्युज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्टरी के निर्देशक हेन्री फैयरफील्ड ऑसबोर्न ने घोषणा की कि उन्होंने स्नेक ब्रूक के नज़दीक पश्चिमी नेब्रास्का में प्लीओसीन काल की जीवाश्म दाढ़ खोजी है। यह दांत कथित रूप से मनुष्य और एप (वानर) के दांत के साथ मिलता–जुलता था। इस जीवाश्म के विषय में विशद वैज्ञानिक वाद–विवाद शुरू हुआ जिसमें कुछ लोगों ने इसको पीथेकेनथ्रोपस इरेक्टस से जुड़ा हुआ दांत बताया जबकि अन्य ने दावा किया की वह मनुष्यों के करीब था। नेब्रास्का मैन को तुरंत हेस्पेरोपीथेकस हेरोल्डकूकी जैसा "वैज्ञानिक नाम" दिया गया। कई प्रशासनों ने ऑसबोर्न को अपना समर्थन दिया। इस एक दांत के आधार पर नेब्रास्का मैन का सिर और शरीर के रिकन्स्ट्रक्शन्स बनाये गये। इसके अलावा नेब्रास्का मैन को उसकी पत्नी और बच्चों के साथ कुदरती सैटिंग में खड़े एक परिवार के रूप में चित्रित किया गया। यह पूरा दृश्य सिर्फ एक दांत में से बनाया गया था। इवोल्युशनिस्ट गुटों ने इस "भूत मानव" में इतना विश्वास व्यक्त किया कि जब विलियम ब्रायन नामक शोधकर्ता ने एक दांत पर आधारित इन पूर्वग्रहयुक्त निष्कर्ष का विरोध किया तब उनकी भारी आलोचना की गई।

सन् 1927 में इस कंकाल के अन्य भाग भी मिले। इन नये ढूंढ़े गये भागों के मुताबिक दांत ना तो मनुष्य का था और न ही एप का था। बाद में यह बात सामने आई की यह दांत प्रोस्थेन्नोप्स नामक जंगली अमेरिकन सूअर की नष्ट हो चुकी जाति का था। 'साइंस' पत्रिका में प्रकाशित हुए लेख में विलियम ग्रेगरी ने सत्य की घोषणा की, "हेस्पेरोपीथेकस : स्पष्ट रूप से एप भी नहीं और मनुष्य भी नहीं"।68 इसके बाद इवोल्युशनरी साहित्य में से हेस्पेरोपीथेकस हेरोल्डकूकी और उसके "परिवार" के सभी चित्र हटा दिये गये।

ओटा बेन्गा : पिंज़रे में एक अफ्रिकन

मनुष्य की उत्पत्ति एप (वानर) जैसे सजीवों से हुई, इस दावे के साथ अपनी किताब द डिसेन्ट ऑफ़ मैन में डार्विन एक कदम और आगे बढ़े और अपने दावे के समर्थन के लिए जीवाश्म की खोज़ करने लगे। हालांकि, कुछ इवोल्युशनिस्ट्स मानते थे कि "अर्ध–मानव अर्ध–वानर" जैसे प्राणी सिर्फ जीवाश्म रिकॉर्ड में ही नहीं लेकिन दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जीवित मिलने चाहिए थे। 20वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों में "जीवित मध्यवर्ती कड़ियों" के लिए जो खोज शुरू हुई उसके फलस्वरूप दुर्भाग्यपूर्ण घटनाएं घटीं। इनमें से सबसे क्रूर घटनाओं में से एक ओटा बेन्गा नामक एक पिग्मी की कहानी थी।

एक इवोल्युशनिस्ट शोधकर्ता ने 1904 में कोंगो में ओटा बेन्गा को बन्दी बनाया। उसकी अपनी भाषा में इस नाम का अर्थ "मित्र" होता था। ओटा की एक पत्नी और दो बच्चों का परिवार था। एक जानवर की तरह जंज़ीरों से बांधा गया और पिंज़रे में अमरीका लाया गया जहां इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिकों ने उसे सैन्ट लुइस विश्व मेले में अन्य वानरों की जातियों के साथ जनता के समक्ष खड़ा किया और "आदमी से जुड़ी हुई सबसे नज़दीकी कड़ी" के रूप में उसका परिचय दिया। दो साल बाद, वे उसे न्यूयोर्क में ब्रोन्क्स चिड़ियाखाने में ले गये और वहां उन्होंने उसे कुछ चिम्पांज़ी, दिनाह नामक गोर्रिला और दोहुंग नामक ओरांगुटांग के साथ "मनुष्य के प्राचीन पूर्वज़" नाम के तहत प्रदर्शित किया। चिड़ियाखाने के इवोल्युशनिस्ट निर्देशक डॉ. विलियम टी होर्नाडे ने अपने चिड़ियाखाने में इस "मध्यवर्ती स्वरूप" की मौजूदगी से गर्व महसूस किया और उस पर लम्बे भाषण दिये और पिंज़रे में बन्द ओटा बेन्गा के साथ एक आम जानवरों जैसा अमानुषी व्यवहार किया। अपने साथ जो वर्ताव हुआ उसका सदमा न सह पाने पर ओटा बेन्गा ने आखिर आत्महत्या कर ली।69

पील्टडाऊन मैन, नेब्रास्का मैन, ओटा बेन्गा...... यह सब कौभांड हमें बताते है कि अपने सिद्धांत को साबित करने के लिए इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक किसी भी प्रकार के अवैज्ञानिक तरीकों को आजमाने से गुरेज़ नहीं रखते। इस बिंदु को मन में रखते हुए जब हम "मानव के क्रमिक–विकास" की मिथ्या के अन्य तथाकथित सबूतों को देखते हैं तब हम ऐसी ही परिस्थिति से मुकाबिल होते हैं। यहाँ एक तरफ कल्पित कथा है और दूसरी तरफ स्वयंसेवकों की एक फौज है, जो इस कथा को सत्य साबित करने के लिए कुछ भी करने को तैयार है।
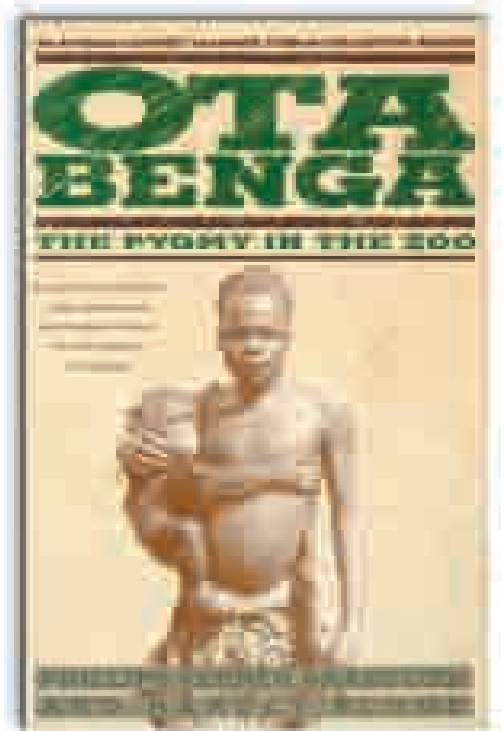
अध्याय 9

मानव के क्रमिक–विकास का दृश्यलेख

तो फिर इस कहानी के लिये इवोल्युशनिस्ट्स हमारे सामने क्या आधार रखते हैं?

यह आधार विपुल मात्रा में मौजूद जीवाश्म है जिन पर इवोल्युशनिस्टस काल्पनिक व्याख्याएं बाँधने को सक्षम है। पूरे इतिहास में एप (वानर) की 6000 से ज्यादा जातियां अस्तित्व में रही हैं और उनमें से ज्यादातर जातियाँ लुप्त हो चुकी हैं। आज एप की सिर्फ 120 जातियां पृथ्वी पर रहती हैं। यह लगभग 6000 एप जातियां, जिनमें से ज्यादातर लुप्त हो चुकी हैं वो आज भी इवोल्युशनिस्ट्स के लिए एक सोने की खदान बनी हुई है।

अपने उद्देश्य की अनुकूलता के मुताबिक इवोल्युशनिस्ट्स ने कुछ खोपड़ियों को छोटे से शुरू करते हुए बड़े आकार के क्रम में लगाकर और उनमें कुछ नष्ट हो चुकी मानव जातों की खोपड़ियों के बीच में तितर–बितर करके मानव क्रमिक–विकास का दृश्यलेख लिखा है। इस दृश्यलेख के मुताबिक मनुष्य और आज के एप (वानरों) के पूर्वज एक ही हैं। यह प्राणी समय के चलते विकसित हुए और उनमें से कुछ आज के एप्स बने जब कि क्रमिक–विकास की दूसरी शाखा से आज के मनुष्य में रूपांतरित हो गये।

हालांकि, सभी जीवाश्म–वैज्ञानिक, शारीरिक और जैविक खोजों ने दिखाया है कि क्रमिक–विकास का यह दावा अन्य दावों जितना ही काल्पनिक और अयोग्य है। जालसाज़ी, तोड़–मरोड़ के तथ्यों को पेश करना और गुमराह करने वाले चित्र और टिप्पणियों के अलावा कोई मज़बूत या वास्तविक सबूत सामने नहीं रखा गया है, जिससे यह साबित हो कि मनुष्य और एप (वानर) के बीच में कोई सम्बन्ध है।

जीवाश्म रिकॉर्ड हमें यह सूचित करता है कि पूरे इतिहास के दौरान मनुष्य, मनुष्य ही रहे हैं और एप्स हमेशा एप्स ही रहे हैं। कुछ जीवाश्म जिनके बारे में इवोल्युशनिस्ट्स मनुष्य के पूर्वज होने का दावा कर रहे हैं वे उन मानव जातियों के हैं जिनका लगभग 10000 सालों पहले अस्तित्व था और बाद में नष्ट हो गईं। इसके अलावा, आज पाए जाने वाले कई मानव समुदायों के लोगों की शारीरिक बनावट और लक्षण उन नष्ट हुई मानव जातियों जैसा ही है जिन के बारे में इवोल्युशनिस्ट्स मनुष्य के पूर्वज होने का दावा कर रहे हैं। यह सब इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि इतिहास के किसी भी काल में मनुष्य क्रमकि–विकास की प्रक्रिया से विकसित नहीं हुआ है।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि एप्स और मनुष्यों के बीच अनगिनत शारीरिक विभिन्नताएं हैं और उनमें से कोई भी क्रमिक–विकास की प्रक्रिया के ज़रिए अस्तित्व में नहीं आये हैं। "बायपेडालिटी" इनमें से एक है। जिसकी विस्तृत चर्चा हम बाद में करेंगे वह बायपेडालिटी मनुष्य की एक विशेषता है और वह सबसे महत्त्वपूर्ण लक्षणों में से एक है जो मनुष्य को अन्य प्राणियों से अलग करता है।

मनुष्य का काल्पनिक परिवार वृक्ष

डार्विनिस्ट दावा यह कहता है कि आज का मनुष्य एप जैसे कोई प्राणी में से पैदा हुआ है। अंदाजन 40 से 50 लाख साल पहले शुरू हुई इस कथित इवोल्युशनरी प्रक्रिया के दौरान आज के मनुष्य और उसके पूर्वजों के बीच कुछ "मध्यवर्ती स्वरूपों" का अस्तित्व था ऐसा दावा किया जा रहा है। इस संपूर्ण काल्पनिक दृश्यलेख के मुताबिक निम्नलिखित चार बुनियादी "कैटेगरी" (श्रेणी) दी गई हैं।

1. ऑस्ट्रेलोपिथेसिन्स (ऑस्ट्रेलोपिथेकस वंश से जुड़े हुए विभिन्न स्वरूपों में से कोई भी एक)
2. होमो हेबिलिस
3. होमो इरेक्टस
4. होमो सेपियन्स

मनुष्य के कथित एप–समान पूर्वज जिनसे जुड़े हुए हैं उस वंश को इवोल्युशनिस्ट्स "ऑस्ट्रेलोपिथेकस" कहते हैं जिसका अर्थ है

“दक्षिणी एप”। ऑस्ट्रेलोपिथेकस (जो लुप्त हो चुके प्राचीन प्रकार के एप के अलावा और कुछ भी नहीं है) विभिन्न स्वरूपों में पाये जाते हैं। उनमें से कुछ बहुत बड़े कद के और मज़बूत हैं जबकि अन्य छोटे और नाज़ुक हैं।

इवोल्युशनिस्ट मानव के क्रमिक–विकास के आगामी चरण को होमो (मतलब : “मनुष्य”) वंश के रूप में वर्गीकृत करते हैं। इवोल्युशनिस्ट दावे के मुताबिक होमो श्रेणी में जीवित वस्तुएं ऑस्ट्रेलोपिथेकस से ज्यादा विकसित है और आज के मनुष्य से ज्यादा अलग नहीं है। हमारे समय का मनुष्य, मतलब होमो सेपियन्स जाति होमो वंश के क्रमिक–विकास के सबसे नवीन चरण पर पैदा हुआ है, ऐसा माना जाता है।

मीडिया में समय–समय पर दिखने वाले और इवोल्युशनिस्ट प्रकाशन तथा पाठ्यपुस्तकों में मिलने वाले जीवाश्म जैसे कि ”जावा मैन”, ”पेकिन मैन”, और ”ल्युसी” ऊपर दिये गये चार समूहों में से किसी एक में सम्मिलित किये गये हैं। हर समूह अपनी–अपनी लाक्षणिकता के अनुसार जातियां और ऊप–जातियों में वर्गीकृत होता है।

अतीत के मध्यवर्ती स्वरूप जैसे कि रेमापिथेसस के बारे में यह प्रस्ताव रखा गया था कि इसे मानव वृक्ष में से हटा दिया जब यह पता चला कि वे महज़ एक सामान्य एप्स थे।70

”ऑस्ट्रेलोपिथेसिन्स झ होमो हेबिलिस झ होमो इरेक्टस झ होमो सेपियन्स” – इस प्रकार से श्रृंखला में कड़ियों की रूपरेखा प्रस्तुत करके इवोल्युशनिस्ट्स यह संकेत देते हैं कि इन प्रकारों में से हर प्रकार अगले प्रकार का पूर्वज है। हालांकि, जीवाश्म–वैज्ञानिकों द्वारा हाल ही में मिले जांच परिणामों ने दिखाया है कि ऑस्ट्रेलोपिथेसिन्स, होमो हेबिलिस, और होमो इरेक्टस एक ही समय के दौरान दुनिया के विभिन्न भागों में जीते थे। इसके अलावा होमो इरेक्टस के रूप में वर्गीकृत किये गये उनमें से कुछ मनुष्य कुछ सालों पहले जीवित थे। “जावा का नया होमो इरेक्टस। दक्षिणपूर्व एशिया में होमो सेपियन्स का संभवनीय समकालीन” – साइंस जर्नल में इस शीर्षक से छपे लेख में इस बात को प्रस्तुत किया गया था कि जावा में मिले होमो इरेक्ट्स जीवाश्म की “औसतन उम्र 27ं 2 से लेकर 53.3ं 4 हजार साल पहले” थी और “यह इस संभावना को जन्म देता है कि दक्षिणपूर्व एशिया में शारीरिक रूप से आधुनिक मानव (होमो सेपियन्स) और होमो इरेक्ट्स का जीवनकाल एक समान था।”71

इसके अलावा होमो सेपियन्स नीएन्डरथेलेन्सीस और होमो सेपियन्स (आज का मनुष्य) भी स्पष्ट रूप से एक ही समय अस्तित्व में थे। यह परिस्थिति साफ–साफ उस दावे का खण्डन करती है कि एक प्राणी दूसरे का पूर्वज है।

मूल रूप से सभी जाँच परिणाम और वैज्ञानिक शोध यह बताते हैं कि जीवाश्म रिकॉर्ड क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का संकेत नहीं देता है, जो इवोल्युशनिस्टों की धारणाओं से विपरीत है। इवोल्युशनिस्ट जिन्हें मनुष्यों के पूर्वज मानने का दावा करते हैं वह जीवाश्म असल में विभिन्न मनुष्य जातियों से या एप की जातियों से जुड़े हुए हैं।

तो फिर कौन–से जीवाश्म मनुष्य के हैं और कौन–से एप्स के हैं? इनमें से किसी भी जीवाश्म को मध्यवर्ती स्वरूप मानना कभी भी संभव है? जवाब ढूंढने के लिए हमें हर कैटेगरी (वर्ग) पर नज़र डालनी होगी।

प्रेरणा की चिनगारी बनी एक ही जबडे की हड्डी

प्रथम रामापिथेसस जीवाश्म मिलाः गायब जबडा दो भागो का बना है (दायीं ओर). इवोल्युशनिस्टस ने सिर्फ एक ही जबडी के हड्डीयों के आधार पर रामापिथेसस, उसके परिवार और वे जो वातावरण में जीते थे उसका चित्र बनाने की हिंमत की. जब यह पता चला कि एक ही जबडी की हड्डीयो के आधार पर जिसका बनाया गया था वह वास्तव में एक मामूली एप था तब रामापिथेसस को काल्पनिक मानव परिवार वृक्ष में से चुपके से हटा लिया गया. (डेविड पीलबीम, “ह्युमन्स लूज़ एन अर्ली एन्सेस्टर,” साइंस, अप्रैल 1982, पृ.6–7)

ओस्ट्रेलोपिथेसिस एफ्रेन्सिस बायीं ओर दो चित्रांकनो में दिखाई देता है. नीचे दी गई तस्वीर ओस्ट्रेलोपिथेसस बोइसेई की है. यह अटकलबाजी बिल. कुल काल्पनिक है. ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स असल में एप की न टप्राय जाति है.

ऑस्ट्रेलोपिथेकस : एप की एक जाति

प्रथम कैटेगरी ऑस्ट्रेलोपिथेकस वंश की है जिसका अर्थ है "दक्षिणी एप" जिसका उल्लेख पहले हो चुका है। यह माना जाता है कि यह प्राणी अफ्रीका में 40 लाख वर्ष पूर्व प्रकट हुआ था और 10 लाख साल तक जीवित रहे। एस्ट्रेलोपिथेसाइन्स में कई जातियाँ हैं। इवोल्युशनिस्ट्स यह धारणा करते हैं कि सबसे पुरानी ऑस्ट्रेलोपिथेकस जाति ऑस्ट्रेलोपिथेकस एफेरेन्सीस है। उसके बाद रेफ्रिकेनस फिर रोबस्ट्स आता है जिसकी तुलनात्मक रूप से ज्यादा बड़ी हड्डियाँ हैं। ऑस्ट्रेलोपिथेकस बोइसेइ को कुछ शोधकर्ता अलग जाति के रूप में स्वीकारते हैं और अन्य शोधकर्ता उसे ऑस्ट्रेलोपिथेकस रोबस्ट्स की उपजाति के रूप में स्वीकारते हैं।

सभी ऑस्ट्रेलोपिथेकस जातियां नष्ट हो गये एप्स हैं जो आज के एप्स से मिलते–जुलते हैं। उनके कपाल का कद हमारे समय के चिम्पांजी जितना या उनसे कम है। उनके हाथ और पैर में बाहर की तरफ निकलने वाले भाग है जिनका उपयोग वे आज के चिम्पांज़ी के तरह पेड़ पर चड़ने के लिए करते थे और उनके पैर डालियों को ठीक तरह से पकड़ने के लिए काम आते हैं। वे लंबाई में कम हैं ख्अधिकत्तम 130 से.मी. (51 इंच), और आज के चिम्पांझी की तरह नर ऑस्ट्रेलोपिथेकस मादा से बड़े हैं। उनकी खोपड़ियों का विभाग, उनकी आँखों की नजदीकियां, उनकी तेज़ दाढ़, उनके जबड़े की संरचना, उनके लम्बे हाथ और उनके छोटे कद के पैर – ये सब इन बातो का सबूत है कि यह प्राणीं आज के एप से बिल्कुल अलग नहीं थे।

हालांकि, इवोल्युशनिस्ट्स यह दावा करते हैं कि ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स की शरीररचना एप जैसी है फिर भी वे मनुष्यों की तरह सीधे चलते थे।

यह दावा कि ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स सीधे चलते थे वह मत है जिसका रिचर्ड लीकी और डॉनाल्ड सी. जोहानसन जैसे जीवाश्म–वैज्ञानिक समर्थन करते रहें। फिर भी ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स के कंकाल की संरचना पर विशद शोध करने वाले कई वैज्ञानिकों ने इस दलील की अयोग्यता को सिद्ध किया है। विभिन्न ऑस्ट्रेलोपिथेसिंस नमूनों पर इंग्लेंड और अमरीका के दो विश्वविख्यात शरीरशास्त्री लॉर्ड सोली जुकरमान और प्रॉफेसर चार्ल्स ओक्सनार्ड द्वारा किये गये शोधों से यह पता चला है कि यह प्राणी मनुष्य की तरह सीधे नहीं चलते थे। ब्रिटिश सरकार द्वारा मिले अनुदान की वज़ह से 15 सालों तक इन जीवाश्मों की हड्डियों का अध्ययन करने के बाद लॉर्ड जुकरमैन और उनके विशेषज्ञों की टीम इस निष्कर्ष पर पहुँची कि ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स सिर्फ सामान्य एप वंश के थे और वह सचमुच बाइपेडल (द्विपाद) नहीं थे। जुकरमान, हालांकि खुद में एक इवोल्युशनिस्ट हैं।72 इसी तरह इस विषय पर अपने शोध के कारण मशहूर हुए अन्य इवोल्युशनिस्ट चार्ल्स ई ऑक्सनार्ड ने भी ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स की संरचना को आज के ओरांगऊटान के समान बताया।73

संक्षिप्त में कहें तो ऑस्ट्रेलोपिथेकस मनुष्य से जोड़नेवाली कोई कड़ी नहीं है और वह केवल लुप्त हो चुकी एप की एक जाति है।

ऑस्ट्रेलोपिथेकस मनुष्य का पूर्वज नहीं माना जा सकता है यह हकीकत भी इवोल्युशनिस्ट सूत्रों द्वारा स्वीकार की गई है। मशहूर फ्रैंच मैगेज़िन साइंस एट वी ने अपने मई 1999 के अंक में इसको अपनी कवर स्टोरी का विषय बनाया था। "अँड्यू ल्युसी" (अलविदा ल्युसी) शीर्षक के तहत प्रकाशित यह स्टोरी ऑस्ट्रेलोपिथेकस एफेरेन्सीस के प्रसिद्ध जीवाश्म नमूने ल्युसी से सम्बन्धित थी और उसमें ऑस्ट्रेलोपिथेकस को मानव परिवार के वृक्ष से हटाये जाने की जरूरत पर बल दिया गया था। नये ऑस्ट्रेलोपिथेकस (कोड नम्बर सैन्ट ˘.573) की खोज़ पर आधारित इस लेख में कहा गया कि :

नया सिद्धांत यह बताता है कि ऑस्ट्रेलोपिथेकस वंश मानव जाति का मूल नहीं है .....सैन्ट˘.573 की जांच करने के लिए अधिकृत एकमात्र महिला जिन परिणामों पर आई है वह मनुष्य के पूर्वजों के बारे में सामान्य सिद्धांतों से अलग है : यह होमिनिड परिवार वृक्ष को नष्ट करता है। मनुष्य के पूर्वज माने जाने वाले बड़े प्रायमेट इस परिवार वृक्ष के समीकरण से हटाये गये हैं ...... ऑस्ट्रेलोपिथेकस और होमो (मानव) जातियां एक ही डाल पर दिखाई नहीं देती हैं। मनुष्य से सीधे सम्बन्ध रखने वाले पूर्वज की खोज़ होनी अभी बाकी है।

ऑस्ट्रेलोपिथेसस एफ्रेन्सीसः एक न ट हुआ एप

ऑस्ट्रेलोपिथेसस

उपर दिखाई गई खोपडी ऑस्ट्रेलोपिथेसस एफ्रेन्सीस ाे 444.2 जीवाश्म की है और नीचे समकालीन एप की खोपडी दिखती है. इनमें स्प ट रूप से दिखनेवाली समानता इस बात की पुि ट करती है कि ऑस्ट्रेलोपिथेसस एफ्रेन्सीस कोई भी "मानव–समान" लक्षणो के बगैर एप की सामान्य जातियां है.
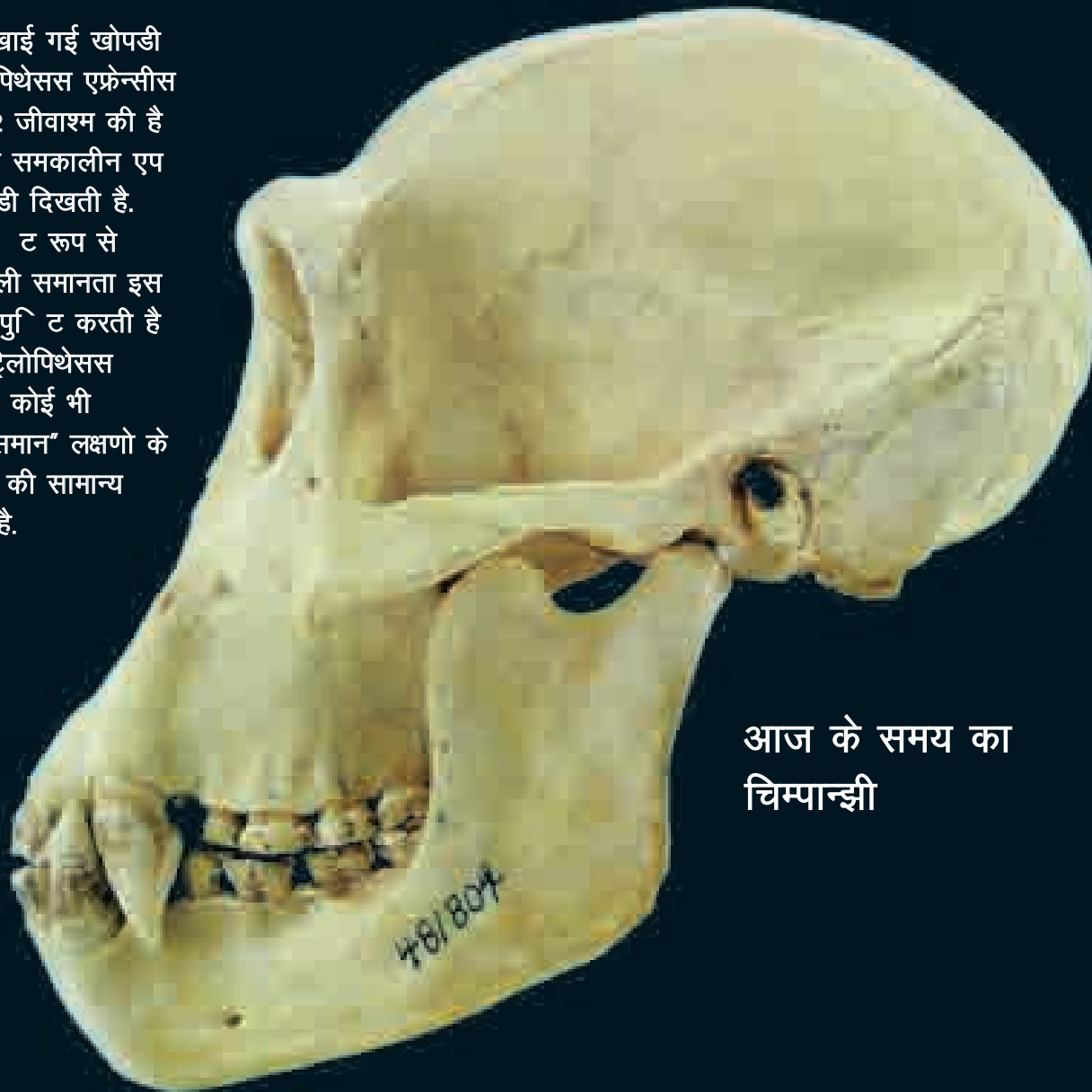
आज के समय का चिम्पान्झी

ऑस्ट्रेलोपिथेसस एफ्रेन्सीसः एक न ट हुआ एप

इथियोपिया, हदर में मिला प्रथम जीवाश्म जो ऑस्ट्रेलोपिथेसस एफ्रेन्सीस जाति से कथित रूप से जुडा हुआ माना जाता हैः ।ऱ 288.1 या “ल्युसी”. काफ़ी लम्बे समय तक, इवोल्युशनिस्टसने यह साबित करने के लिए संघ र्ा किया कि ल्युसी सीधे खडे हुए चल सकती थी; लेकिन ताज़ा संशोधन ने निश्चित रूप से यह स्थापित किया है कि यह प्राणी झुकी हुई चालवाला एक मामूली एप था.

नीचे दिखनेवाला ऑस्ट्रेलोपिथेसस एफ्रेन्सीस ।ऱ 333.105 जीवाश्म इस जाति के नन्हे सभ्य का है. यही कारण है कि उसकी खोपडी पर अभी भी बहिःसरण नहीं दिखता है.

(इसाबेल बाऊर्डिअल, "अँड्यू ल्युसीम," साइंस एट वी, मई 1999, नं. 980, पृ.52–62.)
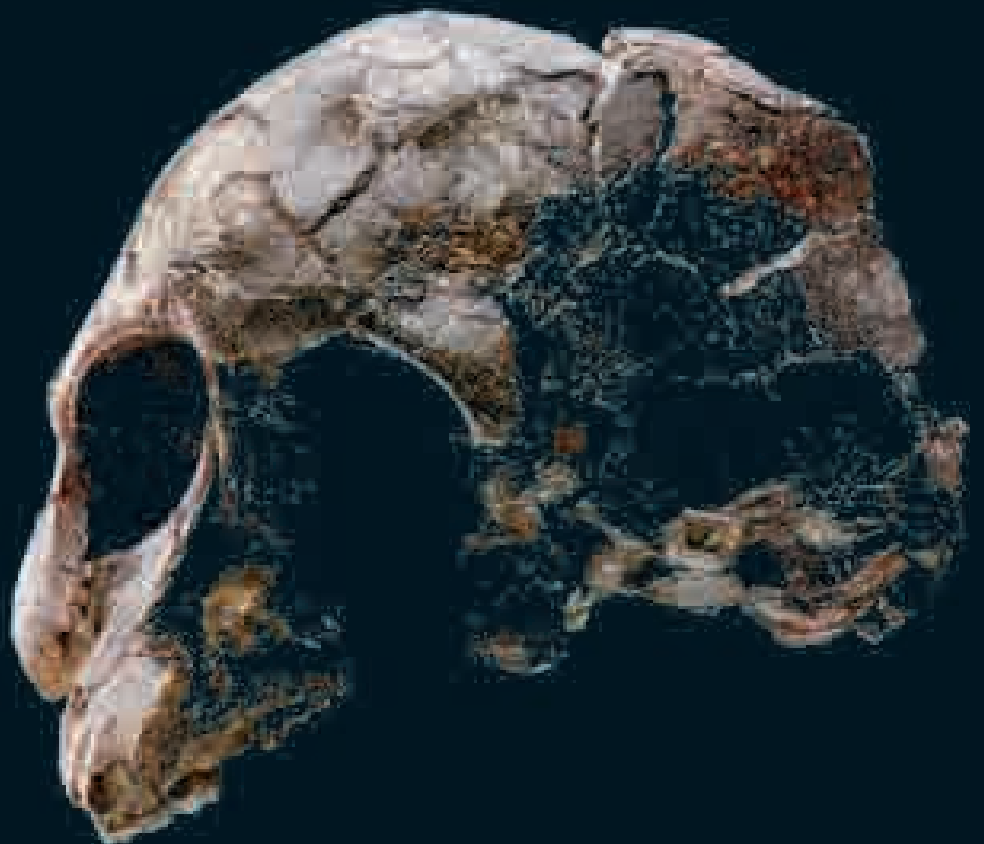
होमो हेबिलिस : मनुष्य के रूप में पेश किया गया एप

ऑस्ट्रेलोपिथेसाइंस और चिम्पांज़ी के कंकाल और कपाल की संरचनाओं के बीच में बड़ी समानता और इस प्राणी के सीधे चलने के इस दावे से इन्कार ने इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिकों के लिए बड़ी मुश्किल पैदा कर दी है। कारण यह है कि काल्पनिक क्रमिक–विकास की स्कीम के मुताबिक होमो इरेक्टस ऑस्ट्रेलोपिथेकस के बाद में आते हैं। जैसा कि होमो ("मनुष्य") वंश के नाम का अर्थ होता है। होमो इरेक्ट्स मनुष्य की जाति है और उसका कंकाल सीधा है। उसके कपाल का कद ऑस्ट्रेलोपिथेकस के कपाल से दुगुना है। चिम्पांज़ी समान एप ऑस्ट्रेलोपिथेकस में से होमो इरेक्ट्स (जिसका कंकाल आज के मनुष्य से अलग नहीं है) में प्रत्यक्ष परिवर्तन (ट्रांज़िशन) की इवोल्युशनिस्ट सिद्धांत के ज़रिए भी संभव होने का कोई सवाल ही नहीं उठता। इसलिए "कड़ियां" याने "मध्यवर्ती स्वरूपों" की जरूरत रहती है। होमो हेबिलिस की धारणा इसी जरूरत से पैदा हुई है।

होमो हेबिलिस का वर्गीकरण 1960 के दशक में "जीवाश्म के शिकारी" के परिवार लीकिज़ द्वारा पेश किया गया था। लीकिज़ के मुता. बिक यह नयी जाति (जो उन्होंने होमो हेबिलिस के रूप में वर्गीकृत की थी) के कपाल का कद कुछ ज्यादा था, वे सीधे चल सकते थे और उनमें पत्थर और लकड़ी के उपकरणों का इस्तेमाल करने की क्षमता थी। इसलिए यह मनुष्य का पूर्वज हो सकता था।

सन् 1980 के दशक के अंतिम वर्षों में खुदाई से पाये गये इसी जाति के नये जीवाश्म इस मत को संपूर्ण रूप से बदलने वाले थे। बर्नार्ड वुड और सी लोरिंग ब्रेस जैसे कुछ शोधकर्ताओं ने, जिनके परिणाम नये जीवाश्मों पर आधारित थे कहा कि होमो हेबिलिस (जिसका अर्थ होता है "निपुण मनुष्य" याने औज़ार का उपयोग करने की क्षमता रखने वाला मनुष्य) को ऑस्ट्रेलोपिथेकस हेबिलिस या "निपुण दक्षिणी एप" के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिए क्योंकि होमो हेबिलिस के कई लक्षण ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन एप्स से मिलते–जुलते हैं। ऑस्ट्रेलोपिथेकस की तरह उनके लम्बे हाथ थे, छोटे पैर थे और कंकाल की संरचना एप जैसी है। उसकी उंगलियां और अंगूठे पेड़ पर चढ़ने के लिए अनुकूल थे। उनका जबड़ा आज के एप्स से बहुत मिलता–जुलता था। संक्षिप्त में होमो हेबिलिस (जिसे कुछ इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा विविध जाति के रूप में पेश किया गया था) वास्तव में अन्य तमाम ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स जैसे एप की प्रजाति थी।

वुड और ब्रेस के बाद के सालों तक किये गये शोध से यह बात सामने आई है कि होमो हेबिलिस सचमुच ऑस्ट्रेलोपिथेकस से अलग नहीं थे। टीम व्हाईट द्वारा ढूंढ़ी गई खोपड़ी और कंकाल जीवाश्म ळ62 ने दिखाया कि इस जाति में कपाल का कद छोटा था और हाथ लम्बे और पैर छोटे थे जिससे उन्हें पेड़ों पर चढ़ने में सहायता मिलती थी जैसा कि आज के एप करते हैं।

1994 में अमेरिकन जीवाश्म–वैज्ञानिक होली स्मिथ द्वारा किये गये विस्तृत विश्लेषण ने यह दर्शाया कि होमो हेबिलिस वास्तव में होमो (दूसरे शब्दों में कहें तो "मनुष्य") नहीं थे बल्कि स्पष्ट रूप से "एप" थे। ऑस्ट्रेलोपिथेकस, होमो हेबिलिस, होमो इरेक्टस और होमो नीएन्डरथेलेन्सीस के दांत के बारे में अपने विश्लेषण की बात करते हुए स्मिथ ने ये कहा :

इस मापदण्ड पर खरे उतरने वाले नमूनों के लिए जीवाश्म के विश्लेषण को सीमित रखते हुए छरहरे ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स और होमो हेबिलिस के दांत के विकास का पैटर्न (बनावट) आफ्रिकन एप्स के साथ ही वर्गीकरण किया जाता है। होमो इरेक्ट्स और नीएन्डरथल के दांत के विकास की पैटर्न को मनुष्यों के साथ वर्गीकृत किया जाता है।74

उसी साल शरीररचना के विशेषज्ञ फ्रेड स्पूर, बर्नार्ड वूड और फ्रान्स झोनेवेल्ड एक बिल्कुल अलग पद्धत्ति से कुछ ऐसे ही निष्कर्ष पर पहुँचे। यह पद्धत्ति मनुष्यों और एप्स के अंदरूनी कान में अर्ध गोलाकार कैनाल के तुलनात्मक विश्लेषण पर आधारित है जिसकी वज़ह से सन्तुलन बना हुआ है। स्पूर, वूड और झोनेवेल्ड ने यह निष्कर्ष निकाला :

जीवाश्म होमिनिड में आधुनिक मानव की बनावट का प्रदर्शन करने वाली सबसे पहली जाति होमो इरेक्ट्स है। इससे विपरित, दक्षिणी आफ्रिका में पाये गये अर्धगोलाकार परिमाण के कपाल का सम्बन्ध ऑस्ट्रेलोपिथेकस से है और पेरेथ्रोपस वर्तमान के बड़े एप्स से मिलते–जुलते हैं।75

स्पूर, वुड और ज़ेनेवेल्ड ने ैजू 53 नामक होमो हेबिलिस नमूने का भी अध्ययन किया और पाया कि ैजू 53 ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स की तुलना में बायपेडल पर कम आधारित है। इस तरह उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि "ैजू 53 ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स और होमो इरेक्ट्स में दिखने वाली आकृतियों के बीच में असंभव मध्यवर्ती स्वरूप का प्रतिनिधित्व करते हैं।"

इस शोध ने दो महत्त्वपूर्ण परिणाम दिये :

1. होमो हेबिलिस नाम से पहचाने गये जीवाश्म वास्तव में होमो (याने मनुष्य) नहीं पर ऑस्ट्रेलोपिथेकस (याने एप्स) वंश के हैं।

2. होमो हेबिलिस और ऑस्ट्रेलोपिथेकस दोनो ऐसे प्राणी थे जो आगे झुककर चलते थे। मतलब यह है कि उनका कंकाल एप का था। मनुष्य के साथ उनका कोई भी सम्बन्ध नहीं है।

होमो हेबिलिसः एप की एक ओर न ट हुई जाति

लम्बे समय तकए इवोल्युशनिस्टस ने यह दलील की कि वे जिन्हे होमो हेबि. लिस प्राणी कहते थे वह प्राणी सीधा चल सकता था. उन्होने सोचा कि उन्हे एप से लेकर मनु य तक फैलनेवाली एक कडी मिल गई है. फिर भी 1986 में टीम व्हाईट द्वारा खोदे गये और ठ 62 नाम जिन्हे दिया गया वह नये हा. `मो हेबिलिस जीवाश्म इस दलील को गलत साबित करते है. यह जीवाश्म के टुकडे दिखाते है कि होमो हेबिलिस के लम्बे हाथ और छोटे पैर बिलकुल समकालीन एप्स जैसे ही है. इस जीवाश्म ने उस दलील का खण्डन किया कि होमो हेबिलिस एक द्विपाद है जो सीधा चल सकता है. असल में होमो हेबिलिस एप की अन्य जाति के अलावा और कुछ भी नहीं है.

दायीं ओर दिखनेवाला "ठ 7 होमो हेबिलिस" एक जीवाश्म है जो होमो हेबिलिस जाति के जबडे के लक्षणो को अच्छी तरह से व्याख्यायित करते है. उसकी दाढ का कद छोटा है. जबडे का आकार चौकोर है. इन सब गुण से यह प्राणी आज के एप्स जैसा ही दिखता है. दूसरे ाब्दो में कहे तो होमो हेबि. लिस का जबडा इस बात की पुि ट करता है कि वह असल में एक एप है.

होमो रुडोल्फ़ेन्सीस : गलत तरीके से जुड़ा हुआ चेहरा

होमो रुडोल्फेन्सीस 1972 में खुदाई करके निकाले गयें कुछ जीवाश्म के टुकड़ों को दिया गया नामकरण है। इस जीवाश्म द्वारा संभावित रूप से जिनका प्रतिनिधित्व होता था वह जाति को होमो रुडोल्फेन्सीस नाम दिया गया क्योंकि यह जीवाश्म के टुकड़े केन्या में रुडोल्फ सरोवर के पास मिले थे। ज्यादातर जीवाश्म–वैज्ञानिक यह स्वीकार करते हैं कि यह जीवाश्म विशिष्ट जाति के नहीं हैं बल्कि हा. `मो रुडोल्फेन्सीस कहा जाने वाला प्राणी वास्तव में होमो हेबिलिस से अलग नहीं है।

जीवाश्म की खुदाई करने वाले रिचर्ड लीकी ने झछड.म्त 1470श्श नामक खोपड़ी को जीवाश्म–वैज्ञानिक के इतिहास में महानतम खोज़ के रूप में पेश किया जो उनके मुताबिक 28 लाख साल पुरानी थी। लीकी के मुताबिक ऑस्ट्रेलोपिथेकस के जैसे छोटे कपाल वाला और आज के मनुष्यों जैसा चहेरे वाला यह प्राणी ऑस्ट्रेलोपिथेकस और मनुष्यो के बीच की एक लापता कड़ी थी। फिर भी थोड़े ही समय में यह मालूम हुआ कि वैज्ञानिक जर्नल्स और लोकप्रिय साइंस मैगेज़िन के मुखपृष्ठों पर बार–बार दिखने वाली झछड.म्त 1470 खोपड़ी का मनुष्य जैसा चेहरा खोपड़ी के टुकड़ों को गलत ढ़ंग से जोड़कर बनाया गया था जोकि जानबूझ कर किया गया हो। मनुष्य के चहेरे की रचना के बारे में अध्ययन करने वाले प्रॉफेसर टिम ब्रोमेज़ ने 1992 में कम्प्यूटर सिम्युलेशन्स की मदद से इस हकीकत पर प्रकाश डाला :

जब ख्झछड.म्त 1470, को पहली बार रिकन्स्ट्रक्ट (पुनर्निर्माण) किया तब चेहरा लगभग सीधी स्थिति में कपाल में (आधुनिक मनुष्य के सपाट चेहरों जैसा है) फिट किया गया था। लेकिन शरीर रचना के सम्बन्धों के हाल में हुए अध्ययन दिखाते है कि चहेरे को अच्छी तरह से बाहर निकालकर ऑस्ट्रेलोपिथेकस के चेहरों के बदले एप जैसा स्वरूप दिया गया होगा।76

इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक जे ई क्रोनिन इस मुद्दे पर कहते है :

....उसका मज़बूती से बनाया गया चहेरा, सपाट नाक–वर्त्स क्लाइवस (जो ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन के चहेरों की याद दिलाते हैं), कपाल की कम महत्तम चौड़ाई (कनपटी पे), मज़बूत वानीय गण्डिका और बड़े चर्वणक (जैसा कि शेष बचे मूल संकेत देते हैं) यह सब आदिकालीन लक्षण है जो ऑस्ट्रेलोपिथेकस आफ्रिकेनस समूह के सदस्यों के साथ नमूनों को जोड़ते हैं।77

मिशिगन युनिवर्सिटी के सी लोरिंग ब्रैस भी इसी निष्कर्ष पर पहुंचे। उन विश्लेषणों के नतीजों में जो उन्होंने खोपड़ी 1470 के जबड़े और दांत की संरचना पर किये उसके परिणामस्वरूप उन्होंने यह रिपोर्ट दी कि "तालु के आधार और चर्वणक मूलों से यह पता चलता है कि म्त 1470 ने ऑस्ट्रेलोपिथेकस के संपूर्ण चहेरे और दंतावलि को सुरक्षित रखा है।"78

जोन होपकिन्स विश्वविद्यालय के प्रोफेसर ऐलन वाकर, जिन्होंने झडद्र.म्त 1470 पर गहन शोध काग्र किया है, कहते हैं कि इस प्राणी को होमो वर्ग या मानव प्रजाति के सदस्य के रूप में वर्गीकरण नहीं करना चाहिये बल्कि आस्ट्रेलोपिथिकस वर्ग में रखना चाहिए।

संक्षिप्त में, होमो हेबिलिस या होमो रूडोल्फेंसिस, जिन्हें ऑस्ट्रेलोपिथेसिंस और होमो इरेक्ट्स की मध्यवर्ती कड़िया बना कर पेश किया जाता है, का वर्गीकरण पूर्ण रूप से कल्पना पर आधारित है। आज कई शोधकर्त्ताओं ने इस बात की पुष्टि कर दी है कि यह प्राणी ऑस्ट्रेलोपिसिकस वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। उनके सभी शारीरिक लक्षण इस बात को उजागर करते हैं कि वह ऐप की प्रजातियाँ हैं।

इस तथ्य को दो इवोल्यूशनिस्ट वैज्ञानिक बर्नाड वुड और मार्क कोलार्ड ने भी स्थापित किया। इस सम्बन्ध में उनका शोध कार्य 1999 में 'साइंस' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। वुड और कोलार्ड ने बताया कि होमो हेबिलिस और होमो रूडोलफेन्सिस (कपाल 1470) के वंश काल्पनिक हैं और यह कि वह जीवाश्म जिनका सम्बन्ध इन वर्गों से बताया जाता है, उन्हें ऑसट्रलोपिथेकस वर्ग से जोड़ना चाहिए :

"अभी हाल ही में, जीवाश्मों के नमूनों को होमो में सम्मिलित कर लिया गया है, जिसकी बुनियाद है उनके मस्तिष्क का पूर्ण आकार, उनकी अनुमानिक भाषा क्षमता, हाथों के कार्य करने और उनकी पत्थर के औज़ार बनाने की क्षमता।"

.... सिर्फ अपवादों के साथ, वंश या वर्गों की परिभाषा या उनका मनुष्य के क्रमिक–विकास में उनका उपयोग और होमो का सीमा निर्धारण, को ऐसे समझा गया है जैसे उनसे कोई त्रुटि नहीं है।

लेकिन नवीन आंकड़े, उपलब्ध प्रमाणों की नई व्याख्याएं और जीवाश्म–विज्ञान से सम्बन्धित रिकार्ड का सीमित होना, मौजूदा वर्गों को होमो से जोड़ने के वर्तमान मापदण्ड को अयोग्य घोषित करता है।

...... व्यावहारिक तौर पर होमो नाईन प्रजातियों को चार मापदण्डों में से एक या एक या एक से अधिक बुनियादों पर होमो से जोड़ा जाता है। .... हालांकि, अब यह बिल्कुल स्पष्ट है कि इनमें से कोई भी मापदण्ड संतोषजनक नहीं है। सेरेब्रल रूबीकन्स (मस्तिष्क से सम्बन्धित रूबीकन) की स्थिति संदिग्ध है क्योंकि सम्पूर्ण मस्तिष्क की क्षमता का जीव–वैज्ञानिक महत्त्व है। इसी तरह से, इस बात के भी प्रबल प्रमाण हैं कि भाषा की क्षमता का अनुमान सिर्फ मस्तिष्क की बनावट से नहीं लगाया जा सकता है। और यह कि भाषा–सम्बन्धि मस्तिष्क के भागों का ठीक तरह से निर्धारण नहीं हो पाया है, जैसा कि पूर्व अध्ययनों से पता चलता है ....

.... दूसरे शब्दों में, इन्हें होमो हेमिलिस और होमो रूडोलफेंसिस में रखा गया है, जबकि 'होमो' एक अच्छा वर्ग नहीं है। इसलिए, होमो हेबिलिस और होमो रूलोल्फेंसिस (या होमो हेबिलिस सेन्सूलाटों (उनके लिये जो "प्रारंभिक होमो" के उपवर्ग के वर्गीकरण को नहीं मानते हैं) को "होमो" वर्ग से हटा देना चाहिए।

इनकी वर्गीकरण का एक स्पष्ट मुतबादिल, बिना किसी कठिनाई के, यह हो सकता है कि इन दोनों वंशों को, मौजूदा मानव सम्बन्धित वर्ग में स्थान्तरित किया जा सकता है। लेकिन हम यह अनुमोदन करते हैं कि होमो हेबिटिस और रूलोल्फेंसिस दोनों का

अंदरूनी कान के विश्ले   ाण का परिणाम एप से मनु   य का कोई मध्यवर्ती स्वरूप नहीं था
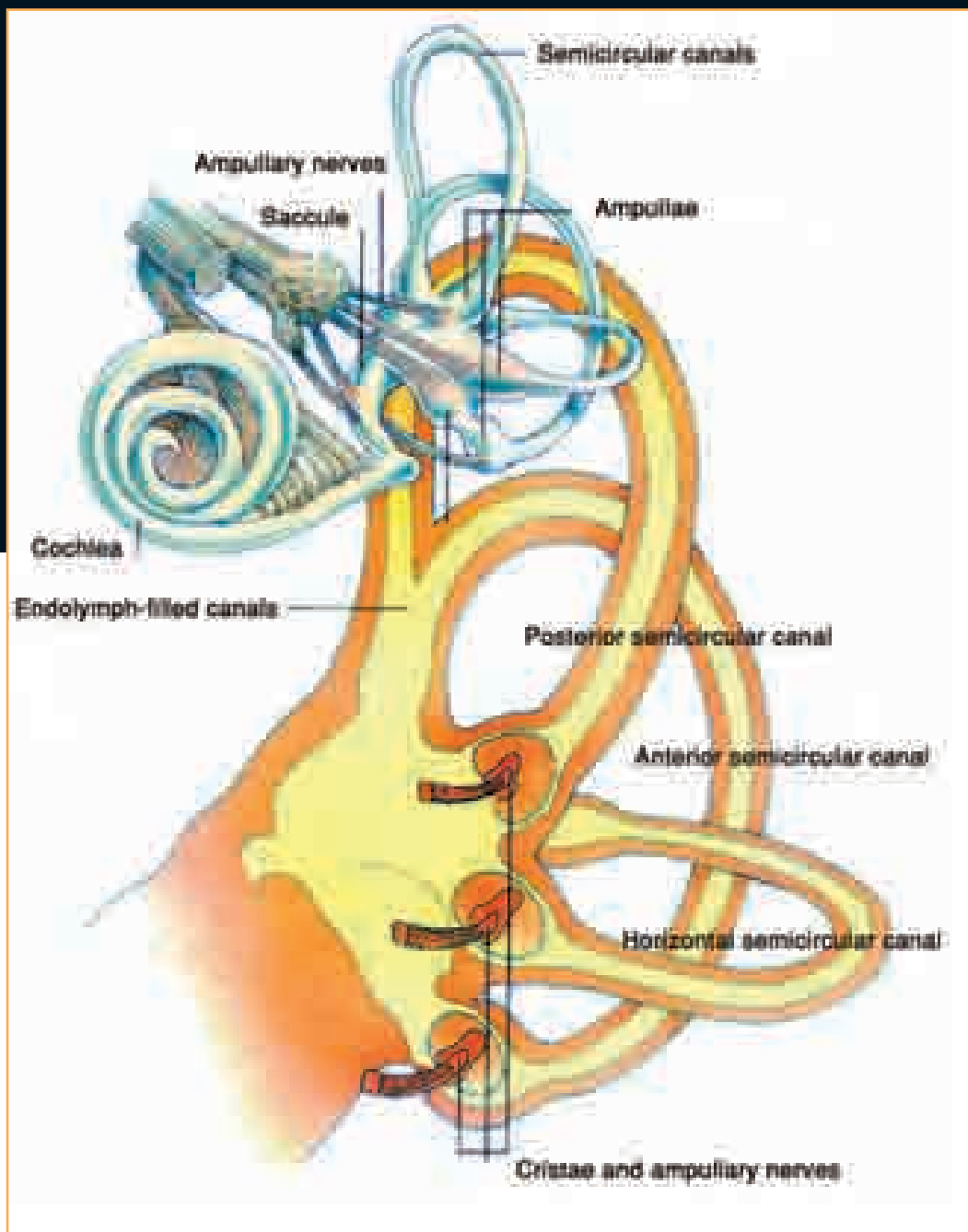
मनु   य और एप्स दोनो में अंदरूनी कान में दिखनेवाली अर्ध–गोलीय कैनाल्स का तुलनात्मक विश्ले   ाण दिखाता है कि जिन्हे मनु   य के पूर्वज के रूप में लम्बे समय तक चित्रित किया जाता रहा वे असल में मामूली एप्स थे. ऑस्ट्रेलोपिथेसस और होमो हेबिलिस जाति के अंदरूनी कान में एप की कैनाल थी, जब कि होमो इरेक्टस में यह कैनाल मनु   य की थी.

आस्ट्रेलोपिथेकस वर्ग में स्थानान्तरण कर दिया जाये।80

अ

वुड और कोलार्ड का निष्कर्ष हमारे इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है : "आदिकालीन मनुष्यों के पूर्वज" का इतिहास में अस्तित्व नहीं है। जो कथित रूप से ऐसे प्राणी माने जाते हैं वह वास्तव में एप्स हैं जिन्हे ऑस्ट्रेलोपिथेकस वंश में रखा जाना चाहिए था। जीवाश्म रिकॉर्ड यह दिखाता है कि यह लुप्त हो चुके एप्स और जीवाश्म रिकॉर्ड में अचानक प्रकट होने वाली होमो याने मनुष्य जाति के बीच क्रमिक–विकास की कोई कड़ी नहीं है।

होमो इरेक्टस और उसके बाद : मानव जाति

इवोल्युशनिस्टस द्वारा प्रस्तावित काल्पनिक स्कीम के मुताबिक होमो वंश का आंतरिक क्रमिक–विकास इस प्रकार है : पहले होमो इरेक्टस, उसके बाद कथित "प्राचीन" होमो सेपियन्स और नीएन्डरथाल मैन (होमो सेपियन्स नीएन्डरथेलेन्सीस) और आखिर में क्रो–मेग्नन मैन (होमो सेपियन्स सेपियन्स)। हालांकि यह सब वर्गीकरण वास्तव में मानव परिवार में सिर्फ रूपान्तरण और अनोखी जातियां है. उनके बीच का भेद ईन्युइट (उत्तरीय कैनेडा और ग्रीनलेंड और अलास्का के कुछ हिस्सो में रहनेवाले मूल निवासी) या आफ्रिकन या पिग्मी और युरोपियन के बीच के भेद से ज्यादा नहीं है।

सबसे पहले हम होमो इरेक्टस की जाँच करते हैं जिन्हें सबसे ज्यादा आदिकालीन मानव जाति के रूप में गिना जाता है। उनका नाम ही सूचित करता है कि "होमो इरेक्टस" का मतलब है "वह मनुष्य जो सीधा चलता है।" इस "सीधेपन" की योग्यता शामिल करके इवोल्युशनिस्ट्स को इन जीवाश्मों को उस से पहले के जीवाश्मों से अलग करना पड़ा क्योंकि सभी प्राप्त होमो इरेक्ट्स जीवाश्म में जो सीधापन नज़र आता है जो किसी भी ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स या कथित होमो हेबिलिस नमूनो में नहीं पाये जाते हैं। आज के मनुष्य और होमो इरेक्टस के कपाल कंकाल में कोई फर्क़ नहीं है।

इवोल्युशनिस्टों द्वारा होमो इरेक्टस की व्याख्या में "आदिकालीन" शब्द इस्तेमाल करने का मुख्य कारण उनके कपाल की क्षमता

(900–1100 सीसी) (जो आज के मनुष्य के औसतन क्षमता से कम है) और उसकी बाहर की तरफ़ आती मोटी भौंह हैं। हालांकि, दुनिया में आज भी ऐसे कई लोग रहते है जिनके कपाल की क्षमता होमो इरेक्टस जितना ही है (जैसे कि पिग्मी) और अन्य जातियों में बाहर की तरफ आती हुई भौंह देखने को मिलती है (जैसेकि ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की)।इस बात पर इत्तिफाक है कि कपाल की क्षमता में अंतर बुद्धिमता या क्षमताओं के अंतर को सूचित नहीं करता है। बुद्धिमता कपाल की क्षमता पर नहीं बल्कि दिमाग के आंतरिक गठन पर निर्भर करती है।81

होमो इरेक्टस को पूरी दुनिया में मशहूर बनाने वाले जीवाश्म एशिया के पेकिंग मैन और जावा मैन के हैं। हालांकि, सही समय पर यह मालूम चल गया था कि यह दो जीवाश्म विश्वसनीय नहीं हैं। पेकिंग मैन उस प्लास्टर के तत्व से बना है जिसके मूल अवशेष लापता हैं और जावा मैन खोपड़ी के टुकड़े और श्रोणि–प्रदेश की हड्डी को "जोड़कर" बनाया गया है जो खोपड़ी के टुकड़े से कई मीटर की दूरी पर मिला था और इससे ऐसे कोई संकेत नहीं मिलते कि ये हड्डियां किसी एक ही प्राणी की हो सकती है। यही कारण है कि अफ्रिका में मिले होमो इरेक्टस जीवाश्म को इतना ज्यादा महत्त्व मिला है। (यह भी ध्यान में रखना चाहिए की होमो इरेक्टस माने जाने वाले कुछ जीवाश्म कुछ इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा "होमो एरगेस्टर" नामक दूसरी जाति के तहत समाविष्ट किये गये थे। इस मुद्दे पर विद्वानों में मतभेद है। हम इन सभी जीवाश्म को होमो इरेक्टस वर्गीकरण के तहत ही मानेंगे)।

अफ्रिका में मिले होमो इरेक्टस नमूनो में से सबसे म ाहूर "नारीकोटोम होमो इरेक्टस" अथवा "तुर्काना बॉय" है जो केन्या में तुर्काना सरोवर के पास मिला था। इस बात की पुष्टि की गई है कि यह जीवा म 12 साल के एक लड़के का था जिसकी ऊंचाई कि ाोरावस्था में 1.83 मीटर होगी। जीवा म के कंकाल की सीधी रचना समकालीन मनुष्य से अलग नहीं है। अमेरिकी जीवा म–वैज्ञानिक एलन वॉकर ने कहा कि उस इस बात पर उन्हें संदेह है कि "एक सामान्य पैथोलोज़िस्ट जीवा म के कंकाल और आधुनिक मनुष्य के बीच का भेद बता सकता हैं"।82 खोपड़ी के बारे में वॉकर ने लिखा की उस खोपड़ी को देखने उन्हें पर हंसी आई क्योंकि "वह ज्यादातर नीएन्डरथल जैसी दिखती थी।"83 आगामी अध्याय में हम देखेंगे कि नीएन्डरथल मानव जाति है। इसलिए होमो इरेक्टस भी एक मानव जाति है।

रिचर्ड लीकी जैसे इवोल्युशनिस्ट् भी कहते हैं कि होमो इरेक्ट्स और समकालीन मनुष्य के बीच एक जातीय अन्तर के अलावा और कुछ भी नहीं है :

> खोपड़ी के आकार में, चहेरे और भंवों के उभार में, ऐसी कई बातें हैं जिससे आपको यह फर्क दिखाई देंगें। हम आज आधुनिक मनुष्यों की भौगोलिक जातियों के बीच में जो फर्क देखते हैं यह वैसा ही फर्क है। जब आबादीयां एक–दूसरे से बहुत अंतराल के लिए अलग रहती है तब ऐसे जैविक फर्क दिखाई देते हैं।84

कनेक्टीकट युनिवर्सिटी के प्रोफेसर विलियम लाफ़लीन ने ईनूईट्स और एल्युट द्वीप पर रहने वाले लोगों की शरीररचना की विशद छानबीन की और उन्होंने गौर किया की यह लोग होमो इरेक्टस से असाधारण रूप से मिलते–जुलते थे। लाफ़लीन जिस निष्कर्ष पर पहुंचे वह यह था कि यह सभी विशिष्ट प्रजातियां वास्तव में होमो सेपियन्स (आज के मानव) की विभिन्न प्रजातियां थीं।

> जब हम दो समूह के व्यापक अंतर के बारे में सोचते हैं जैसे ऐस्किमो और बुशमेन जिन्हें होमो सेपियन्स एक ही प्रजाति से सम्बन्ध रखने वाला माना जाता है, तो इस निष्कर्ष पर आना ठीक लगता है कि सिनान्थ्रोपस (इरेक्ट्स का नमूना) इन्हीं विभिन्न प्रजातियों में से एक है।85

700 हजार साल पुराने समुद्री जीव

THIS WEEK

Ancient mariners

Early humans were much smarter than we suspected

"आदिकालीन मनु य हमारी अपेक्षा से अधिक बुद्धिमान हैकृ."

14 मार्च, 1998 को न्यू साइंटिस्ट में छपी खबर हमे यह कहती है कि इवोल्युशनिस्टस द्वारा जिन्हे होमो इरेक्टस कहा गया वे मनु य 700 हजार साल पहले जहाज़रानी से परिचित थे. पात्र बनाने के लिए पर्याप्त ज्ञान और टैकनोलजि से सज्ज और दरियाई यातायात का उपयोग करनेवाले इन मनु यो को "आदिकालीन" नहीं कहा जा सकता है.

होमो इरेक्टसः एक असल मनु य जाति

होमो इरेक्टस का अर्थ होता है "सीधा चलनेवाला मनु य". इस जाति में   ाामिल किये गये सभी जीवाश्म एक विशि ट मनु य जाति के है. ज्यादातर होमो इरेक्टस जीवाश्म में कोई समान लक्षण न होने की वज़ह से अपनी खोपडीओं के आधार पर इन मनु यो की व्याख्या देना मुश्किल है. यही कारण है कि विभिन्न संशोधको ने विविध वर्गीकरण और नामकरण दिये है. उपर बायीं ओर एक खोपडी दिखती है जो आफ्रिका में कूबी फोरा में 1975 में मिली थी जो सामान्यतः होमो इरेक्टस की व्याख्या दे सकती है. उपर दायीं ओर होमो अरगास्टर झछड.म्ञ 3733 नामक खोपडी है जिसके बारे में कई संशय है.

इन सब विभिन्न होमो इरेक्टस जीवाश्म की कपालीय क्षमता 900 से 1100 सीसी के बीच है. यह आंकडे समकालीन मनु य की कपालीय क्षमता की सीमा के अंदर ही है.
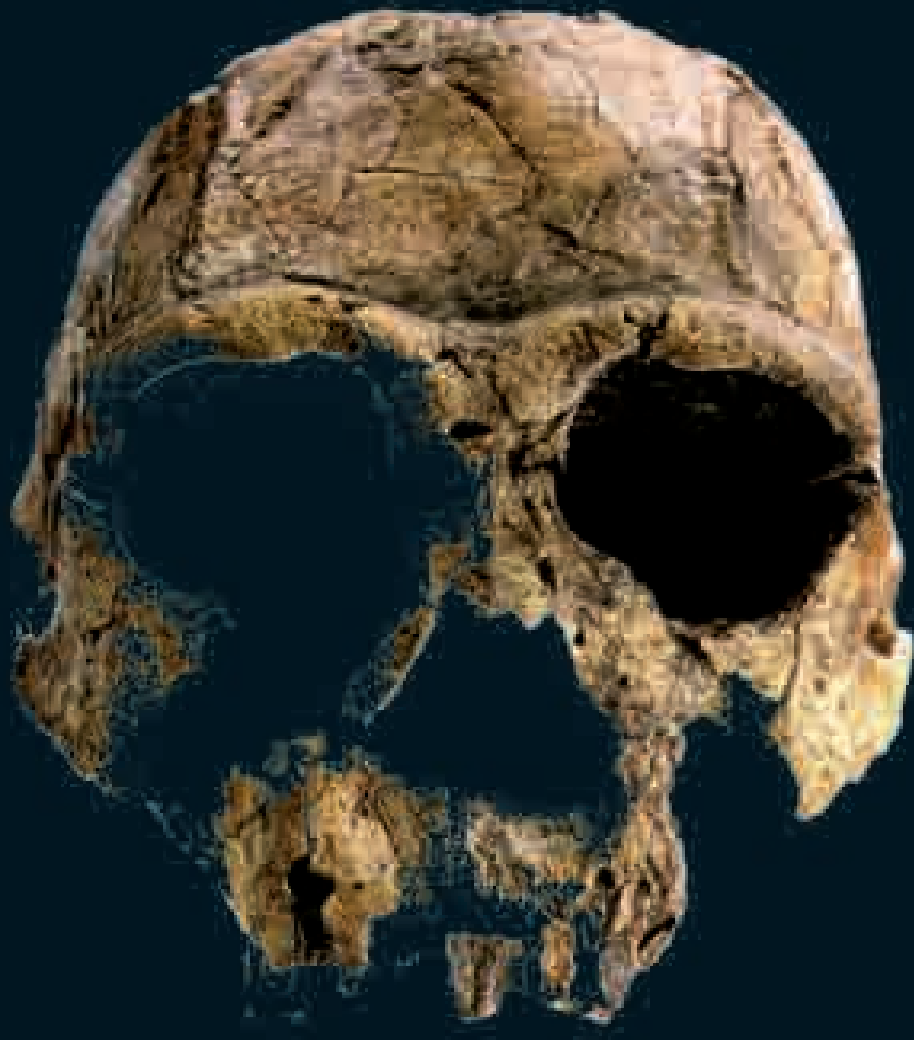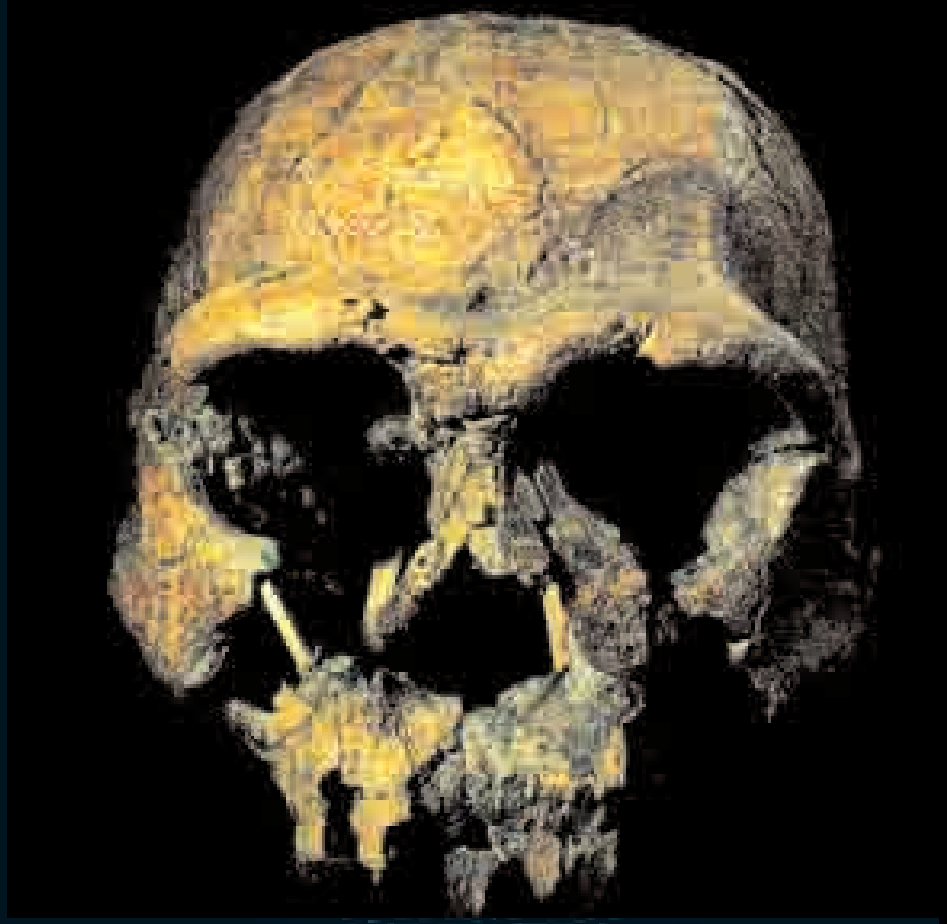
बायीं ओर झछडॅ.ज 15000 या तुर्काना बालक की खोपडी   ाायद सब से प्राचीन है और आज तक मिला सब से संपूर्ण मनु य जीवाश्म है. 16 लाख साल पुराने माने जान. `वाले इस जीवाश्म पर हुआ संशोधन दिखाता है कि यह एक 12 साल के बच्चे का है जो अगर वयस्क हुआ होता तो लगभग 1.80 मीटर ऊंचा होता. यह जीवाश्म नीएन्डरथाल जाति से बहुत नजदीक है जो मनु य के क्रम विकास की झूठी कहानी को अयोग्य करार देनेवाला एक असाधारण सबूत है.

इवोल्युशनिस्ट डॉनाल्ड ज़ोन्सन इस जीवाश्म का कुछ इस प्रकार ब्यौरा देते हैः 'वह ऊंचा और पतला था. उसके   ारीर का आकार और उसके हाथ पैर का अनुपात हाल के इक्वेटोर आफ्रिकन जैसे ही थे. उसके हाथ–पैर के कद आज के   वेत उत्तर अमेरिकी वयस्को जितना है.' (डॉनाल्ड सी जोहानसन – एम ए एडी, ल्युसीः द बीगीनिंग्स ऑफ ह्युमनकाइन्ड, न्यू यॉर्कः सिमोन –   ुस्टर, 1981)

अब यह वैज्ञानिक समुदाय में चर्चित तथ्य है कि होमो इरेक्टस एक फ़ुज़ूल वर्ग है और होमो इरेक्टस वर्ग में वर्गीकृत किये गये जीवाश्म वास्तव में होमो सेपियन्स से इतने अलग नहीं हैं कि उन्हें एक अलग जाति मानने की जरूरत पड़े। अमेरिकन साइनटिस्ट में इस मुद्दे पर हुई चर्चा और 2000 में इस विषय पर हुए सम्मेलन के परिणाम का सार यह था :

सेन्केनबर्ग सम्मेलन में ज्यादातर हिस्सेदार, मिशिगन युनिवर्सिटी के मिलफोर्ड वोल्पोफ और केनबैरा युनिवर्सिटी के एलन थॉर्न द्वारा शुरू किये गये होमो इरेक्टस के अलग वर्गीय या श्रेणी पर हुए गरमा–गरम वाद–विवाद में ही डूब गये। उन्होंने जोर–शोर से यह दलील दी कि एक प्रजाति के रूप में होमो इरेक्टस की कोई योग्यता नहीं है और उसे इस दरजे में से उखाड़ फेंकना चाहिए। 20 लाख साल पहले से आज तक होमो वंश के सभी सदस्य अत्यंत परिवर्तनीय, व्यापक रूप से फैली हुई जाति होमो सेपियन्स से जुड़े हुए थे और इनमें कोई कुदरती अंतराल या उपविभाजन नहीं है। इस सम्मेलन का विषय होमो इरेक्टस का अस्तित्व नहीं है।86

ऊपर उल्लेखित थेसिस (कथन) के बचावों में वैज्ञानिक जिस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं उसका सार यह है कि "होमो इरेक्टस होमो सेपियन्स से अलग नहीं है किंतु होमो सेपियन्स के अंदर ही मौजूद एक जाति है"।

दूसरी ओर, मनुष्य जाति होमो इरेक्ट्स और "मानव क्रमिक–विकास" द्रश्यलेख (ऑस्ट्रेलोपिथेकस, होमो हेबिलिस, और होमो रुडोल्फेन्सीस) में होमो इरेक्ट्स से पहले पैदा हुए एप्स के बीच में बहुत बड़ा अन्तराल है। इसका अर्थ यह है कि जीवाश्म रिकॉर्ड में पहला मनुष्य अचानक और किसी भी पूर्व इवोल्युशनरी इतिहास के बिना उत्पन्न हुआ। यह स्पष्ट रूप से सूचित करता है कि उनका सृजन हुआ है।

फिर भी इस हकीकत को स्वीकार करना इवोल्युशनिस्टों की मतान्ध फिलोसोफी और विचारधारा के संपूर्ण खिलाफ है। फलस्वरूप, वे होमो इरेक्ट्स (एक वास्तविक मानव जाति) को अर्ध–एप प्राणी के रूप में प्रस्तुत करने के प्रयास करते हैं। उनके होमो इरेक्ट्स रिकन्स्ट्रक्शन्स में वे हटधर्मी से वानरी लक्षण के चित्र बनातें हैं। दूसरी ओर, वह ऐसे ही तरीकों से वे ऑस्ट्रेलोपिथेकस या होमो हेबिलिस जैसे एप्स को मानव का रूप देते हैं। इस प्रकार वे एप्स और मनुष्यों को "करीब" लाने की कोशिश करके यह दो विशिष्ट जीवित वर्गों के बीच के अन्तराल को मिटाना चाहते हैं।

गलत

नीएन्डरथल

नीएन्डरथल ऐसे मनुष्य हैं जो 100,000 सालों पहले युरोप में अचानक प्रकट हुए और 35,000 साल पहले लेकिन तेज़ी से अद्रश्य हो गये या अन्य जातियों के साथ मिलने से अपनी पहचान गँवा बैठे। आज के मनुष्य से वे एक ही पहलु से अलग हैं और वो यह कि उनके कंकाल ज्यादा मज़बूत हैं और उनके कपाल का कद ज़रा बड़ा है।

नीएन्डरथल मानव की एक प्रजाति थी, आज लगभग हर कोई इस हकीकत को स्वीकार करता है। इवोल्युशनिस्ट्स ने उन्हे "आदिकालीन प्रजाति" के रूप में पेश करने के लिए काफ़ी श्रम किया, किंतु यह सब निष्कर्ष सूचित करते हैं कि वे आज गलियों में चल रहे "मज़बूत" आदमी से बिल्कुल अलग नहीं थे। इस विषय पर एक प्रमुख विद्वान और न्यू मैक्सिको युनिवर्सिटी के जीवाश्म–वैज्ञानिक एरिक ट्रीनकौस लिखते हैं :

आधुनिक मनुष्य के कंकाल के साथ नीएन्डरथल के कंकाल अवशेषों की विस्तृत तुलना दर्शाती है कि नीएन्डरथल की शरीर रचना में ऐसा कुछ नहीं है कि जो निर्णायक रूप से यह सूचित करे कि उसकी चलने की, हाथ के काम लेने की, बुद्धि की या भाषा की क्षमता आज के मनुष्यों से निम्न थी।87

गलत मुखौटेः आज के मनु य से अलग न होने के बा. वजूद इवोल्युशनिस्टस नीएन्डरथाल को एप–समान ही दिखाते है.

नीएन्डरथाल्स: मजबूत लोग

बायीं ओर होमो सेपियन्स नीएन्डरथेलेन्सीस, अमुड 1 खोपडी देखने को मिलती है जो इज़रायल में मिली थी. नीएन्डरथाल मैन सामान्यतः मज़बूत किंतु छोटे कद के माने जाते है. हालांकिए यह अंदाज रखा जाता है कि यह जीवाश्म जिस व्यक्ति का था वह 1.80 मीटर ऊंचा था. 1740 सीसी की उसकी कपालीय क्षमता आज तक की सबसे ज्यादा है. इन सब के कारण यह जीवाश्म उन सबूतो के महत्वपूर्ण टुकडे है जो उन दावो का खण्डन करते है कि नीएन्डरथाल्स आदिकालीन जातियां थी.

कई समकालीन शोधकर्ता नीएन्डरथल को समकालीन मनुष्य की उपजाति मानते हैं और उसे "होमो सेपियन्स नीएन्डरटेलेन्सीस" कहते हैं। जाँच परिणाम यह गवाही देते हैं कि नीएन्डरथल अपने मृतकों को दफनाते थे। संगीत के वाद्य बजाते थे और उसी समय के दौरान जी रहे होमो सेपियन्स सेपियन्स के साथ उन्हें सांस्कृतिक लगाव था। स्पष्ट रूप से कहें तो नीएन्डरथल एक "मज़बूत" मानव जाति थी जो समय के चलते अदृश्य हो गई।.

प्राचीन होमो सेपियन्स काल्पनिक इवोल्युशनरी योजना में समकालीन मनुष्य के पहले का कदम है। हकीकत में इवोल्युशनिस्टों के पास इन जीवाश्म के बारे में कुछ कहने जैसा नहीं है क्योंकि उनमें और आज के मनुष्यों में बहुत कम भेद है। कुछ शोधकर्ता यह भी कहते है कि इस जाति के प्रतिनिधि आज भी जीवित है और वे ऑस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की तरफ इशारा करते हैं। प्राचीन होमो सेपियन्स की तरह ऑस्ट्रेलियन मूल निवासियों की भी बाहर की तरफ आती मोटी भौंह है और अंदर की तरफ झुकी हुई अधोहनु संरचना है और कम क्षमता वाला छोटा कपाल है।

इवोल्युशनिस्ट साहित्य में होमो हेइल्डरबर्गेन्सीस के रूप में चित्रित किया गया समूह वास्तव में प्राचीन होमो सेपियन्स के जैसा ही है। एक ही मनुष्य जाति के प्रकार की व्याख्या देने के लिए दो अलग–अलग शब्दों का प्रयोग क्यों किया जाता है उसका कारण यह है कि इवोल्युशनिस्ट्स के बीच में मतभेद है। होमो हेइल्डरबर्गेन्सीस वर्गीकरण के तहत शामिल किये गये सभी जीवाश्म सूचित करते हैं कि शरीर रचना में आज के युरोपियनों से बहुत मिलते–जुलते लोग 500,000 और 740,000 साल पहले प्रथम इंग्लेंड और बाद में स्पैन में रहते थे।

यह अनुमान लगाया जाता है कि क्रो–मेग्नन 30,000 साल पहले अस्तित्व में थे। उसका कपाल गुम्बज के आकार का था और चौड़ी ललाट थी। उसका 1600 सीसी क्षमता का कपाल समकालीन मनुष्य के औसतन क्षमता से ज्यादा है। उसकी खोपड़ी में बाहर की तरफ आती भौंह का उभार है और बाहर की तरफ उभरी हुई पीठ की हड्डी है जो नीएन्डरथल और होमो इरेक्टस दोनो के लक्षण हैं।

क्रो–मेग्नन को युरोपियन जाति माना जाता है फिर भी क्रो–मेग्नन के कपाल की संरचना और क्षमता आज आफ्रिका और उष्णकटिबंध में पाई जाने वाली कुछ जातियों जैसा लग रहा है। इस समानता को आधार बनाते हुए यह अंदाजा लगाया जा रहा है कि क्रो–मेग्नन एक प्राचीन आफ्रिकन जाति थी। कुछ अन्य जीवाश्मविज्ञान सम्बन्धित निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि क्रो–मेग्नन और नीएन्डरथल प्रजातियां एक–दूसरे के साथ मिल गईं और आज के समय की प्रजातियों के अस्तित्व की नींव रखी।

परिणामस्वरूप, इनमें से कोई भी मनुष्य "आदिकालीन प्रजातियां" नहीं थीं। वे अलग–अलग मनुष्य थे जो प्राचीन समय में अस्तित्व में थे और या तो वे अन्य प्रजातियों के साथ मिल गये या वह विलुप्त हो गये और इतिहास में से अद्रश्य हो गयें।

अपने पूर्वजों जैसी समान युग में जी रही प्रजातियां

अब तक हमने जो छानबीन की है उससे एक स्पष्ट चित्र उभरता है : "मानव के क्रमिक–विकास" का द्रश्यलेख एक संपूर्ण कल्पना है। अगर परिवार वृक्ष को सत्य का प्रतिनिधित्व करना है तो एप से मनुष्य तक क्रमशः क्रमिक–विकास होना चाहिए और इस प्रक्रिया के जीवाश्म मिलने चाहिए। वास्तव में एप्स और मनुष्यों के बीच में बहुत बड़ा अन्तर है। कंकाल की संरचना, कपाल की क्षमता और सीधा चलना अथवा आगे झुकना जैसी विशेषताएं मनुष्यों को एप्स से अलग करती हैं। (हम पहले भी उल्लेख कर चुके हैं कि 1994 में अंदरूनी कान पर हुए शोध के आधार पर ऑस्ट्रेलोपिथेकस और होमो हेबिलिस को बतौर एप्स पुनः वर्गीकृत किया गया था जब कि होमो इरेक्ट्स को बतौर मनुष्य पुनः वर्गीकृत किया गया था।)

इन विभिन्न जातियों के बीच परिवार–वृक्ष जैसा सम्बन्ध नहीं हो सकता उस हकीकत को साबित करने वाला अन्य महत्त्वपूर्ण खोज यह है कि दूसरों के पूर्वज के स्वरूप में पेश की गई प्रजातियां वास्तव में साथ–साथ जीती थीं। अगर इवोल्युशनिस्ट जैसा दावा करते हैं उस प्रकार ऑस्ट्रेलोपिथेकस होमो हेबिलिस में बदल गये और होमो हेबिलिस आगे चलकर होमो इरेक्टस में बदल गये थे, तो फिर जिस काल में उनका अस्तित्व था वह काल एक के बाद एक होना चाहिए था। हालांकि, जीवाश्म रिकॉर्ड में ऐसा कोई कालानुक्रमिक क्रम देखने को नहीं मिलता है।

इवोल्युशनिस्ट के अनुमान के मुताबिक ऑस्ट्रेलोपिथेकस 40 लाख सालों से 10 लाख सालों पहले अस्तित्व में थे। दूसरी ओर, होमो हेबिलिस के रूप में वर्गीकृत किये गये प्राणी 17 से 19 लाख सालों पहले अस्तित्व में थे ऐसा माना जाता है। जिसे होमो हेबिलिस से ज्यादा "आधुनिक" माना जाता है। वह होमो रुडोल्फ़ेन्सीस 25 से 28 लाख सालों पुराने माने जाते हैं। मतलब होमो रुडोल्फ़ेन्सीस होमो हेबिलिस से 10 लाख साल ज्यादा बड़े हैं और उन्हें कथित रूप से होमो हेबिलिस के "पूर्वज" माने जा रहा हैं। दूसरी ओर, होमो इरेक्ट्स का युग 16 से 18 लाख साल पहले का है जिसका अर्थ यह है कि होमो इरेक्ट्स अपने कथित पूर्वज होमो हेबिलिस के जीवनकाल के दौरान ही पृथ्वी पर उत्पन्न हुए।

"पूर्व अफ्रिका में छोटे ऑस्ट्रेलोपिथेकस लोगों के अस्तित्व के सबूत मिले है जो पहले होमो हेबिलिस और बाद में होमो इरेक्ट्स के समकालीन थे।"88 तंजानिया के ओल्डुवाई गोर्ज विस्तार में बेड ll लेयर में लुईस लीकी को ऑस्ट्रेलोपिथेकस, होमो हेबिलिस और होमो इरेक्ट्स के जीवाश्म एक–दूसरे के लगभग करीब पड़े हुए मिले हैं।89

निश्चित रूप से ऐसा कोई परिवार वृक्ष नहीं है। हार्वर्ड युनिवर्सिटी के जीवाश्म–वैज्ञानिक और अपने आप में खुद एक इवोल्युशनिस्ट स्टीफन जे गाऊल्ड ने क्रमिक–विकास के सामने खड़ी हुई इस चुनौती का इस प्रकार खुलासा दिया :

अगर तीन सहअस्तित्व वाले मनुष्य वंश (ऑस्ट्रेलोपिथेकस अफ्रिकेनस, मज़बूत ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स और होमो हेबिलिस) है और उनमें

26,000 साल पुरानी सूईः

एक दिलचश्प जीवाश्म जो दिखाता है कि नीएन्डरथाल के पास कपडो के बारे में ज्ञान थाः यह सूई 26,000 साल पुरानी है. (डी.जो. हानसन, बी एडगर, फ्रोम ल्युसी तो लैन्वेज, पृ.99)

से किसी के भी बीच स्पष्ट विभाजन नहीं है तो हमारी सीड़ी का क्या हुआ है? इसके अलावा इन तीनों में से कोई भी पृथ्वी पर अपने जीवनकाल के दौरान इवोल्युशनरी परिवर्तन नहीं दर्शाते हैं।90

जब हम होमो इरेक्ट्स से होमो सेपियन्स पर जाते है तब हम एक–बार फिर देखते हैं कि इनमें ऐसा कोई परिवार वृक्ष नहीं है जिसके बारे में कुछ कहा जा सके। होमो इरेक्ट्स और प्राचीन होमो सेपियन्स 27000 सालों तक जीते रहे और इस बात का प्रमाण मिलता है कि वह हमारे समय से 10000 साल पहले भी अस्तित्व में थे। ऑस्ट्रेलिया के को स्वैम्प में 13000 साल पुराने होमो इरेक्ट्स की खोपड़ी मिली है। जावा के द्वीप पर होमो इरेक्ट्स के अवशेष मिले थे जो 27000 साल पुराने हैं।91

होमो सेपियन्स का गुप्त इतिहास

क्रमिक–विकास के सिद्धांत के काल्पनिक परिवार वृक्ष के आधार को व्यर्थ कर देने वाली सबसे दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण हकीकत समकालीन मनुष्य का अनपेक्षित रूप से प्राचीन इतिहास है। जीवाश्मविज्ञान के निष्कर्ष यह दर्शाते हैं कि बिल्कुल हमारे जैसे दिखने वाले होमो सेपियन्स लोग 10 लाख सालों पहले अस्तित्व में थे।

इस विषय पर प्रथम खोज सामने लाने वाले मशहूर इवोल्युशनिस्ट और जीवाश्म–वैज्ञानिक लुईस लीकी थे। 1932 में केन्या के विक्टोरिया सरोवर के पास केनजेरा विस्तार में लीकी को कई जीवाश्म मिले जो मिडल प्लाइस्टोसीन से सम्बन्ध रखते थे, वे आज के मनुष्य से अलग नहीं थे। हालांकि, मिडल प्लाइस्टोसीन समय दस लाख साल पहले का था।92 इन खोज़ों ने क्रमिक–विकास के परिवार वृक्ष की बुनियाद को हिला दिया जिसकी वजह से कुछ इवोल्युशनिस्ट्स जीववैज्ञानिकों ने इसे नकार दिया। फिर भी लीकी ने हमेशा यही तर्क लड़ाया कि उनके अनुमान सही थे।

इस विवाद को लोग भूलने की तैयारी में थे कि 1995 में स्पैन में मिले जीवाश्म से पता चला कि होमो सेपियन्स का इतिहास उससे भी कई सालों पुराना है जितना कि हम समझते हैं। मैड्रिड युनिवर्सिटी के तीन स्पैनिश जीवाश्म–वैज्ञानिकों ने स्पैन के अटापुएर्का विस्तार में ग्रेन डोलिना नामक गुफ़ा में से इस जीवाश्म को खोद निकाला था। जीवाश्म से 11 साल के लड़के के चहेरे की पुष्टि हुई जो बिल्कुल आज के समकालीन मनुष्य जैसा दिखाई देता था। फिर भी इस लड़के को मरे हुए 800,000 साल गुज़र चुके थे। अपने दिसम्बर 1997 के अंक में डिस्कवर मैगेज़िन ने इस कहानी को विस्तृत कवरेज दिया।

इस जीवाश्म ने इस खुदाई की अगुवाई करनेवाले जुआन लुइस अरसुआगा फेरेरास की द्रढ़ धारणा को भी डगमगा दिया। फेरेरास ने कहा :

हमे इस खुदाई में से कुछ महाकाय, कुछ प्रफुल्लित करने वाली, कुछ आदिकालीन चीज़ की अपेक्षा थी। 800,000 साल पुराने लड़के का जीवाश्म मिलने की हमारी अपेक्षा तुर्काना बॉय जैसी थी। और हमें जो मिला वो एक संपूर्ण आधुनिक चहेरा था .... यह खोज़ मुझे चमत्कारिक लगती है – यह सब एसी चीज़ें हैं जो आपको हिला देती हैं। जिसकी आशा न हो वो मिलना। .... जीवाश्म मिलना भी अनपेक्षित था और यह ठीक है। लेकिन सबसे चमत्कारिक बात तो वर्तमान की चीज़ को भूतकाल में ढूंढना है। यह तो ऐसा हुआ कि जैसे ग्रेन डोलिना में कोई टैप–रिकॉर्डर मिला हो। यह बहुत आश्चर्यजनक है। हम लोअर प्लाइस्टोसीन में कैसेट्स और टैप–रिकॉर्डर की आशा नहीं रखते हैं। हमने जब इसे देखा तो हमें बहुत आश्चर्य हुआ।93

इस जीवाश्म ने इस हकीकत को उजागर किया कि होमो सेपियन्स का इतिहास 800,000 साल पुराना है। प्रारंभिक आघात में से बाहर आने के बाद जीवाश्म को खोजनेवाले इवोल्युशनिस्ट्स ने यह निर्णय लिया कि यह जीवाश्म कोई अलग प्रजाति का था क्योंकि क्रमिक–विकास के परिवार वृक्ष के मुताबिक 800,000 साल पहले होमो सेपियन्स का अस्तित्व नहीं था। इसलिए उन्होने "होमो एन्टेसेसर"

इवोल्युशनिस्ट साहित्य में सब से लोकप्रिय माने जानेवाली पत्रिकाओं में से एक डिस्कवर मैगज़िन ने अपने पृ ठ पर 800 हजार साल पुराने मानव चहेरे को इस इवोल्युशनिस्ट प्रश्न के साथ रखा था 'क्या यह हमारे भूतकाल का चहेरा है?"

नामक काल्पनिक प्रजातियों को बनाया और इस वर्गीकरण में एटापुएर्का खोपड़ी को शामिल किया।

इस विवाद को लोग भूलने की तैयारी में थे कि 1995 में स्पैन में मिले जीवाश्म से पता चला कि होमो सेपियन्स का इतिहास उससे भी कई सालों पुराना है जितना कि हम समझते हैं। मैड्रिड युनिवर्सिटी के तीन स्पैनिश जीवाश्म–वैज्ञानिकों ने स्पैन के अटापुएर्का विस्तार में ग्रेन डोलिना नामक गुफ़ा में से इस जीवाश्म को खोद निकाला था। जीवाश्म से 11 साल के लड़के के चहेरे की पुष्टि हुई जो बिल्कुल आज के समकालीन मनुष्य जैसा दिखाई देता था। फिर भी इस लड़के को मरे हुए 800,000 साल गुज़र चुके थे। अपने दिसम्बर 1997 के अंक में डिस्कवर मैगेज़िन ने इस कहानी को विस्तृत कवरेज दिया।

इस जीवाश्म ने इस खुदाई की अगुवाई करनेवाले जुआन लुइस अरसुआगा फेरेरास की द्रढ़ धारणा को भी डगमगा दिया। फेरेरास ने कहा :

हमे इस खुदाई में से कुछ महाकाय, कुछ प्रफुल्लित करने वाली, कुछ आदिकालीन चीज़ की अपेक्षा थी। 800,000 साल पुराने लड़के का जीवाश्म मिलने की हमारी अपेक्षा तुर्काना बॉय जैसी थी। और हमें जो मिला वो एक संपूर्ण आधुनिक चहेरा था .... यह खोज़ मुझे चमत्कारिक लगती है – यह सब एसी चीज़ें हैं जो आपको हिला देती हैं। जिसकी आशा न हो वो मिलना। .... जीवाश्म मिलना भी अनपेक्षित था और यह ठीक है। लेकिन सबसे चमत्कारिक बात तो वर्तमान की चीज़ को भूतकाल में ढूंढना है। यह तो ऐसा हुआ कि जैसे ग्रेन डोलिना में कोई टैप–रिकॉर्डर मिला हो। यह बहुत आश्चर्यजनक है। हम लोअर प्लाइस्टोसीन में कैसेट्स और टैप–रिकॉर्डर की आशा नहीं रखते हैं। हमने जब इसे देखा तो हमें बहुत आश्चर्य हुआ।93

इस जीवाश्म ने इस हकीकत को उजागर किया कि होमो सेपियन्स का इतिहास 800,000 साल पुराना है। प्रारंभिक आघात में से बाहर आने के बाद जीवाश्म को खोजनेवाले इवोल्युशनिस्ट्स ने यह निर्णय लिया कि यह जीवाश्म कोई अलग प्रजाति का था क्योंकि क्रमिक–विकास के परिवार वृक्ष के मुताबिक 800,000 साल पहले होमो सेपियन्स का अस्तित्व नहीं था। इसलिए उन्होने "होमो एन्टेसेसर" नामक काल्पनिक प्रजातियों को बनाया और इस वर्गीकरण में एटापुएर्का खोपड़ी को शामिल किया।

17 लाख वर्ष पुरानी एक झोंपड़ी

होमो सेपियन्स 800,000 सालों से भी पुराने है इस हकीकत को साबित करने वाली कई खोजें सामने आईं हैं। उनमें से एक 1970 के दशक के प्रारंभिक सालों में ओल्डुवाइ गोर्ज में लुईस लीकी की एक खोज़ है। यहां बेड ᴾᴾ लेयर में लीकी ने खोज़ा कि ऑस्ट्रेलोपिथेकस, होमो हेबिलिस, और होमो इरेक्टस जातियों का एक ही समय के सहअस्तित्व था। इससे भी दिलचरूप एक संरचना है जो लीकी ने इसी लेयर में पायीं। यहां उन्हें पत्थर की झोपड़ी के अवशेष मिले। इस प्रसंग का असाधारण पहलू यह था कि यह निर्माण (जिसका अफ्रिका के कुछ हिस्सों में आज भी उपयोग होता है) कैवल होमो सेपियन्स द्वारा किया गया हो सकता है। इसलिए लीकी की खोज के मुताबिक ऑस्ट्रेलोपिथेकस, होमो हेबिलिस, होमो इरेक्ट्स और आज के मनुष्य का करीब 17 लाख सालों पहले सहअस्तित्व होगा।94 समकालीन मनुष्य ऑस्ट्रेलोपिथेकस जैसी एप–समान जातियों में से उत्पन्न हुए होंगे ऐसा दावा करने वाली क्रमिक–विकास के सिद्धांत को यह खोज़ बेशक नाकाम बना देती है।

आज के मनुष्य के पदचिह्न, 36 लाख साल पुराने

कुछ अन्य खोज़ें सुराग सामने रखती हैं कि आज जी रहे आदमी की उत्पत्ति 17 लाख साल पहले हुई थी। इनमें से एक महत्त्वपूर्ण खोज़ है लेटोली, तनज़ानिया में 1977 में मैरी लीकी द्वारा खोज़े गये पदचिह्न हैं। यह पदचिह्न उन लेयर में मिले थे जो 36 साल पुराने हैं और उससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह पदचिह्न समकालीन मनुष्य के पदचिह्न से अलग नहीं है।

मैरी लीकी को मिले पदचिह्न की बाद में डॉनाल्ड जोहानसन और टीम व्हाईट जैसे कई मशहूर जीवाश्म–वैज्ञानिकों द्वारा छानबीन की गई। परिणाम वही थे। व्हाईट ने इसके बारे में लिखा :

इस बारे में कोई गलती न करें......... वे आधुनिक मनुष्य के पदचिह्न जैसे हैं। अगर आज कैलिफॉर्निया के समुद्र तट की रेत में ऐसा कोई पदचिह्न छोड़ दिया गया हो और किसी चार साले के बच्चे से इसके बारे में पूछा जाये तो वह तुरंत कहेगा कि कोई इस रेत पर से गुज़रा है। ना तो वह बच्चा या आप समुद्र तट पर मौजूद ऐसे कई पदचिह्नों को देखकर कुछ कह नहीं पायेंगे।95

17 लाख साल पुरानी झोंपडी मिलने से पूरा वैज्ञानिक समुदाय हैरान रह गया. यह आज के कुछ आफ्रिकन्स द्वारा इस्तेमाल की जानेवाली झोंपडीयो जैसी दिखती है.

लेटोली पदचिह्न आज के मनु यो के है. हालांकि, वे लाखो साल पुराने थे.

23 लाख साल पुराना मानव जबडा

इवोल्युशनिस्टस द्वारा बनाये गये काल्पनिक परिवार वृक्ष की अयोग्यता दिखानेवाला अन्य उदाहरणः 23 लाख साल की उम्र वाला मानव (होमो सेपियन्स) जबडा. ।ण्ण् 666.1 कॉड से जाना जाता यह जबडा हदर, इथियोपिया में मिला था.

इवोल्युशनिस्ट इसे "एक बहुत चौंकानेवाली खोज़" कहकर उस पर ढांकपिछौडा करते है"कृ.(डी जो. हानसन, ब्लेक एडगर, फ्रोम ल्युसी टु लैन्वेज, पृ.169)

पदचिह्नों की छानबीन करने के बाद नॉर्थ कैरोलिना युनिवर्सिटी के लुईस रोबिन्स की यह टिप्पणी थी

पैर के निशानों से बनी मेहराब उठी हुई है–मेरे मुकाबले में एक छोटे व्यक्ति की मेहराब ज्यादा ऊंची है। अंगूठा बड़ा है और दूसरी उंगलियां उसके साथ पंक्तिबद्ध है.....पैर के उंगलियां जमीन को मानव की उंगलियों की तरह पकड़ रही हैं। तुम्हें यह दूसरे प्राणियों में देखने को नहीं मिलेगा।96

पदचिह्नों के रूपात्मक स्वरूप की छानबीन में यह बार–बार देखने को मिला है कि इन्हें मनुष्य (आज के मनुष्य होमो सेपियन्स) के पदचिह्न मानने के अलावा और कोई रास्ता नहीं है। पदचिह्नों की जांच करने वाले अन्य शोधकर्ता रसेल टुटल ने यह लिखा :

किसी छोटे नंगे पैर वाले होमो सेपियन्स ने इस पदचिह्न को बनाया हो ऐसा हो सकता है......। खुली आँखों से दिखने वाले सभी रूपात्मक लक्षणों में पदचिह्न छोड़ जाने वाले लोगों के पैरों को आधुनिक मनुष्य के पैर से अलग करना नामुमकिन है।97

पदचिह्नों की निष्पक्ष छानबीन में उनके सही मालिकों का पता चला है। वास्तव में इनमें से 20 जीवाश्म पदचिह्न हमारे समय के 10 साल के लड़के के हैं और 27 पदचिह्न उससे भी छोटे लड़के के हैं। वे सचमुच हमारे जैसे ही लोग थे।

इस परिस्थिति की वज़ह से कई सालों तक लेटोली पदचिह्न चर्चा और वाद–विवाद के केन्द्र बने रहे। इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिकों ने इसका स्पष्टीकरण पेश करने के जोर शोर से प्रयास किए क्योंकि उनके लिए इस हकीकत का स्वीकार करना कि समकालीन मनुष्य 36 लाख सालों पहले पृथ्वी पर चलता था, मुश्किल था। सन् 1990 के दशक के दौरान यह "स्पष्टीकरण" सामने आया : इवोल्युशनिस्ट्स ने निर्णय लिया कि यह पदचिह्न ऑस्ट्रेलोपिथेकस द्वारा ही छोड़े जाने चाहिए क्योंकि उसने सिद्धांत के मुताबिक 36 लाख साल पहले होमो जाति का अस्तित्व असंभव होना चाहिए। हालांकि, सन् 1990 में रसेल एच टटल ने अपने एक लेख में यह बात करी :

संक्षेप में, लेटोली साइट ळ पर 35 लाख साल पुराने पदचिह्नों की विशेषता आज के नंगपैरा वाले आधुनिक मनुष्य से मिलती–जुलती है। उनके कोई भी लक्षण यह सूचित नहीं करते हैं कि लेटोली होमिनिड हम से कम अच्छे द्विपाद है। अगर ळ पदचिह्न बहुत पुराने नहीं होते तो हम यह तुरंत मान लेते कि हमारे वंश होमो के किसी सदस्य ने यह बनाये होंगे। किस्सा चाहे जो भी हो, लेटोली पदचिह्न ऑस्ट्रेलोपिथेकस अफेरेन्सीस द्वारा बनाये गये थे इस कमजोर धारणा को हमें मन में से निकाल देना चाहिए।98

संक्षिप्त में कहें तो 36 लाख साल पुराने माने जाने वाले यह पदचिह्न ऑस्ट्रेलोपिथेकस के नहीं हो सकते। यह पदचिह्न ऑस्ट्रेलोपिथेकस जाति के सदस्यों द्वारा छोड़े गये थे ऐसा मानने का कारण सिर्फ यह है कि यह 36 लाख वर्ष पुरानी ज्वालामुखी चट्टान की परत में मिले हैं। इतने सालों पहले शायद मनुष्यों का अस्तित्व नहीं हो सकता इसी धारणा के बलबूते पर इन चिह्न के लिए ऑस्ट्रेलोपिथेकस को श्रेय दिया जाता है।

लेटोली पदचिह्नों की ये व्याख्या एक महत्त्वपूर्ण सत्य को दर्शाता है। इवोल्युशनिस्ट्स अपने सिद्धांत को वैज्ञानिक शोधों के आधार पर नहीं बल्कि उसके दायरे के बाहर जाकर समर्थन देते हैं। यहां हमारे पास एक ऐसा सिद्धांत है जिस पर कई नये परिणामों ने अनेक बार संदेह खड़े किये हैं लेकिन फिर भी इस सिद्धांत को समर्थन देते रहने के लिए नयी खोजों को नजरअंदाज किया जाता है।

संक्षिप्त में कहें तो क्रमिक–विकास का सिद्धांत विज्ञान नहीं है बल्कि एक मतान्ध विचारधारा है जिसको आधुनिक विज्ञान के होते हुए भी जीवित रखा गया है।

क्रमिक–विकास का द्विपदीय (बायपेडालिज़म) गतिरोध

अभी तक हमने जो जीवाश्म रिकॉर्ड देखे हैं इसके अलावा भी मनुष्य और एप्स वानरों की शरीर रचना में जो विशाल अन्तर है वो भी मानव क्रम विकास की धारणा को गलत साबित करता है। इस अंतराल की आपूर्ति करना मुमकिन नहीं है। इनमें से एक मुद्दा

मनुष्य और वानर के चलने के ढ़ंग से जुड़ा हुआ है।

मनुष्य अपने दो पैरों पर सीधे चलते हैं। चलने की यह रीत बहुत विशिष्ट है और अन्य स्तनपायियों में देखने को नहीं मिलती है। कुछ अन्य प्राणी जब अपने दो पिछले पैरों पर खड़े होने की कोशिश करते हैं तब उनके पास इसके लिए बहुत सीमित क्षमता होती है। भालू और वानर जैसे प्राणी जब किसी भोजन के स्रोत तक पहुँचना चाहते हैं तब इस ढंग से चलते हैं लेकिन यह बहुत कम समय के लिए होता है। सामान्य रूप से उनके कंकाल आगे की ओर झुकते हैं और वे अपने चारों पैर पर चलते है।

तो क्या बायपेडालिज़म एप्स वानरों की चार पैरों पर चलने के ढ़ंग से विकसित हुआ, जैसा कि इवोल्युशनिस्ट्स दावा करते हैं?

बेशक नहीं। शोध यह दिखाता है कि दो पैरों से चलने की क्षमता में क्रमिक–विकास कभी देखा नहीं गया है और यह संभव भी नहीं है। वास्तव में दो पैरों पर चलना क्रम–विकास के द्वारा प्राप्त किया हुआ एक लाभकारी पहलू नहीं है। बंदर जिस प्रकार से कूदते हैं वह मनुष्य के कदमों से ज्यादा सरल, तेज़ और कार्यकुशल है। ज़मीन पर उतरने के सिवा मनुष्य चिम्पांज़ी की तरह एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूद नहीं सकते और ना हीं वे चीते की तरह 125 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकते हैं। इससे विपरीत, मनुष्य दो पैरों पर चलने की वज़ह से ज़मीन पर कम गति से चलता है। यही कारण है कि मनुष्य प्रकृति में ऐसी प्रजाती है जिस पर गति और स्व–सुरक्षा के लिहाज़ से सबसे ज्यादा ख़तरा मंडराया हुआ है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत के तर्क के अनुसार वानर इसलिए पैदा नहीं होने चाहिए थे कि वे मनुष्य की तरह दो पैर पर चल सके। वास्तव में मनुष्य का क्रमिक–विकास चार पैरों पर चलने के लिए हुआ होना चाहिए था.।

क्रमिक–विकास के दावे के सामने अन्य गतिरोध यह है कि बायपेडालिज़म डार्विनिज़म के "क्रमशः विकास" के मोडल से मेल नहीं खाता है। क्रमिक–विकास के आधार समान यह मोडल को सच साबित होने के लिए जरूरी है कि बायपेडालिज़म और क्वोड्रापेडालिज़म (चार पैर पर चलना) के बीच "मिश्रित" कदम होने चाहिए। हालांकि, इंगलिश जीवाश्म–वैज्ञानिक रोबिन क्रोम्पटन ने 1996 में किये अपने कम्प्युटराइज़्ड शोध से दिखाया कि ऐसे "मिश्रित" कदम संभव नहीं हैं। क्रोम्पटन इस निष्कर्ष पर पहुँचे : प्राणी या तो सीधा या फिर चारों पैर पर चल सकता है।99 इन दोनों के बीच का कदम संभव नहीं है क्योंकि उससे ज्यादा ऊर्जा खर्च होगी। यही कारण है कि अर्ध–बायपेडल प्राणी का अस्तित्व नहीं हो सकता है।

मनुष्य और एप के बीच इतना बड़ा अन्तर सिर्फ बायपेडालिज़म तक सीमित नहीं है। कई ऐसे मुद्दे हैं जो समझाये नहीं गये हैं, जैसे कि दिमागी क्षमता, बोलने की क्षमता आदि। इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक एलेइन मॉर्गन यह स्वीकार करते हैं :

मनुष्यों के विषय में चार सब से बड़े रहस्य यह हैं :

1) वे दो पैरो पर क्यों चलते हैं?

2) उन्होंने अपने शरीर के मोटे बाल क्यों गंवा दिये हैं?

3) उन्होने ऐसा बडा दिमाग क्यों विकसित किया हैं?

4) उन्होंने बोलाना क्यों सीखा?

इन प्रश्नों के परम्परागत जवाब यह हैं :

1) 'हमें अभी तक मालूम नहीं हुआ है';

2) 'हमें अभी तक मालूम नहीं हुआ है';

3) 'हमें अभी तक मालूम नहीं हुआ है';

4) 'हमें अभी तक मालूम नहीं हुआ है'।

इन जवाबों की निरसता के बदले बिना उपरोक्त प्रश्नों की लिस्ट को और लम्बा किया जा सकता है।100

ताजा संशोधन दिखाता है कि चतु पाद चाल (चार पैरो से चलना) झुके हुए एप के कंकाल के लिए अनुकूल हो तब उसका द्विपाद और सीधी चालवाले मानव कंकाल में क्रम विकास होना असंभव है.

क्रमिक–विकास : एक अवैज्ञानिक श्रृद्धा

लॉर्ड सोली जुकरमैन ब्रिटेन के बहुत ही मशहूर और गणमान्य वैज्ञानिकों में से एक हैं। सालों तक उन्होंने जीवाश्म रिकॉर्ड का अध्ययन किया है और कई विस्तृत छानबीन की है। विज्ञान में उनके प्रयासों के लिए उन्हें अभिजात वर्ग तक तरक्की दी गई है। जुकरमैन एक इवोल्युशनिस्ट है। इसलिए क्रमिक–विकास पर उनकी टिप्पणियों को पूर्वाग्रह या अज्ञान पर आधारित माना जा सकता। मानव–क्रमिक विकास द्रश्यलेख में शामिल जीवाश्मों पर सालों के शोध के बाद वह इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि परिवार वृक्ष की जो बात सामने रखी गई है उसमें कुछ भी सत्य नहीं है।

जुकरमैन ने "विज्ञान के वर्णक्रम" की एक दिलचस्प धारणा को पेश किया जिसमें उन्होंने उन सभी चीज़ों को शामिल किया, जिन्हें वह वैज्ञानिक और अवैज्ञानिक समझते हैं। जुकरमैन के वर्णक्रम के मुताबिक रसायनशास्त्र और भौतिकशास्त्र ठोस आँकड़ा–क्षेत्र पर आधारित है और वे सबसे ज्यादा वैज्ञानिक है। उसके बाद जीवविज्ञान और फिर सामाज़िक–विज्ञान का क्रम

आता है। वर्णक्रम के अंतिम छोर पर (जिसे सबसे अवैज्ञानिक हिस्सा कहा जाता है) "इन्द्रियों से परे प्रत्यक्षज्ञान" (एक्स्ट्रा सेन्सरी परसेप्शन), टेलिपथी, सिक्स्थ सैन्स की धारणा, और आखिर में "मानव के क्रमिक–विकास" का स्थान है। ज़ुकरमैन इस तर्क को इस तरह से समझाते हैं

अब हम उसके बाद धारणा पर आधारित जीव विज्ञान के उन क्षेत्रों की ओर जाते हैं, जैसे इन्द्रियों से परे प्रत्यक्षज्ञान या मनुष्य के जीवाश्म इतिहास की व्याख्या जहां श्रद्धालुओं के लिए कुछ भी संभव हो सकता है – और जहां उत्साही समर्थक कभी–कभी एक ही समय पर कई विरोधाभासी चीज़ों में मानता है।101

मनुष्य की उत्पत्ति के बारे में एक महत्त्वपूर्ण प्रकाशन डिस्कवरिंग आर्कियोलोजी के संपादक रॉबर्ट लोके इस जर्नल में लिखते हैं, "मानव पूर्वज़ों की खोज़ प्रकाश से ज्यादा गर्मी देती है", मशहूर इवोल्युशनिस्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक टिम व्हाईट का हवाला देते हुए उन्होंने कहा :

"वे सभी सवाल जिनके हम उत्तर नहीं दे पाये हैं।" उनसे हम सब निराश हुए हैं।102

लोके का लेख मानव की उत्पत्ति के सम्बन्ध में क्रमिक–विकास के सिद्धांत में गतिरोध और इस विषय पर किये गये भ्रमक प्रचार की आधारहीनता पर समीक्षा है :

शायद मानव की उत्पत्ति का विषय विज्ञान में सबसे विवादास्पद है। सर्वोत्कृष्ट जीवाश्म–वैज्ञानिक मानव परिवार वृक्ष की सब से बुनियादी रूपरेखा पर भी असहमत होते हैं। बहुत धूमधाम के बीच नयी शाखाओं का विकास होता है और नये जीवाश्म की खोज़ के साथ वह सूखकर मर जाती हैं।103

मशहूर जर्नल नैचर के संपादक हेन्री गी ने हाल ही में इस हकीकत को स्वीकार किया था। सन् 1999 में छपी अपनी किताब इन सर्च ऑफ डीप टाइम में गी स्पष्ट करते हैं कि "करीब 100 और 50 लाख साल पहले के – सजीवों की हज़ारों पीढ़ियों पहले मानव क्रमिक–विकास के सभी सबूत एक छोटे बक्से में इकट्ठे किये जा सकते हैं।" वे इस निष्कर्ष पर आते हैं कि मनुष्य के उदगम और विकास की परंपरागत सिद्धांत "एक पूर्णतः आविष्कार है जिसे मनुष्य के पूर्वाग्रहों के अनुरूप बनाने के लिए बनाया गया है" और वे आगे लिखते है :

जीवाश्म की कतार में खड़ा होना और फिर यह दावा करना की वह किसी वंश का प्रतिनिधित्व करते हैं एक वैज्ञानिक धारणा नहीं है जिसको परखा जा सके बल्कि, यह दावा वही मान्यता रखता है, जैसी कि सोते वक्त सुनी जाने वाली कहनी जो शायद मनो. रंजन करने वाली और नसीहत देने वाली तो हो सकती है लेकिन वैज्ञानिक नहीं हो सकतीं।104

फिर क्या कारण है जो इस मतान्ध विचारधारा के बारे में वैज्ञानिको को इतना दुराग्रही बनाता है? जिसके कारण उन्हें अनगिनत विरोधाभासों को मानना पड़ रहा है और उन्हें जो सबूत मिलते हैं उसे खारिज़ करना पड़ता है फिर भी वे अपनी सिद्धांत को ज़िंदा रखने के लिए क्यों इतने जोरशोर से प्रयास कर रहे हैं?

इसका एक ही जवाब वह यह कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत का त्याग करने पर उन्हें जिस चुनौती का सामना करना पड़ेगा उसका उन्हें डर लगता है। इस सिद्धांत का त्याग करने पर जिस हकीकत का उन्हें सामना करना पड़ेगा वो यह है कि ईश्वर ने मनुष्य का सृजन किया है। हालांकि, उनके मन में जो पूर्वधारणा है और जिस भौतिकवादी फिलोसोफी को वह मानते हैं इसको ध्यान में रखते हुए सृजन इवोल्युशनिस्टों के लिए अस्वीकार्य है।

यही कारण है कि वे अपने आप के साथ और दुनिया के साथ छल कर रहे है और इसके लिए वे मीडिया का इस्तेमाल करते हैं और उनके साथ सहयोग रखकर चलते हैं। अगर वे जरूरी जीवाश्म नहीं ढूंढ सकते हैं तो वे काल्पनिक तस्वीरों या काल्पनिक मोडल्स के स्वरूप में इसे "बना लेते" हैं और यह छाप छोड़ने की कोशिश करते हैं कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत को समर्थन देने वाले जीवाश्म का सचमुच अस्तित्व है। भौतिकवादी विचारधारा को मानने वाले मास मीडिया का हिस्सा भी लोगो को मूर्ख बनाने की कोशिश में जुटा हुआ है और लोगों के अजाग्रत मन में क्रमिक–विकास की कहानी थोपने की कोशिश करते हैं।

वे चाहे कितने भी प्रयास करे सत्य सामने है : मनुष्य क्रमिक–विकास की प्रक्रिया द्वारा नहीं बल्कि अल्लाह के द्वारा सृजनन की प्रक्रिया इस दुनिया में अस्तित्व में आया है। इसलिए मनुष्य अल्लाह के प्रति जवाबदेह है।

मानव क्रम विकास की गलत धारणा किसी भी वैज्ञानिक नि क ि पर आधारित नहीं है. क्रम विकास को सही ठहराने के लिए जो भी पेश किया जाता है वह इवोल्युशनिस्टस की काल्पनिक विचारधारा के अलावा और कोई महत्व नहीं रखता है.

अध्याय 10

क्रमिक–विकास का आण्विक (मॉलेक्युलर) गतिरोध

इस किताब के पिछले अध्यायों में हमने बताया कि किस तरह से जीवाश्म रिकॉर्ड क्रमिक–विकास के सिद्धांत को अयोग्य करार देता है। असल में हमें उनमें से किसी भी जीवाश्म के बारे में लम्बा ब्यौरा देने की जरूरत नहीं थी क्योंकि जीवाश्म के सबूतों के बारे में दावा करने से पहले ही क्रमिक–विकास का सिद्धांत ढेर हो जाता है। इस सिद्धांत को आरंभ से ही अर्थहीन बना देने वाला विषय है किस प्रकार से जीवन पृथ्वी पर सर्वप्रथम पैदा हुआ।

इस सवाल का जवाब देते वक्त क्रमिक–विकास का सिद्धांत दावा करता है कि संयोग से पैदा हुई कोशिका के साथ पृथ्वी पर जीवन की शुरूआत हुई। इस द्रश्यलेख के मुताबिक चार अरब साल पहले विभिन्न निर्जीव रासायनिक संयोजन आदिकालीन वातावरण में एक प्रक्रिया से गुज़रे जिसमें बिज़ली और वातावरण के दाब की असर से प्रथम कोशिका का सृजन हुआ।

सबसे पहले तो यह दावा अवैज्ञानिक कि निर्जीव पदार्थ एक साथ मिलकर जीवन बनाते हैं इसकी किसी भी प्रयोग या अवलोकन ने पुष्टि नहीं की है। जीवन सिर्फ जीवन में से उत्पन्न होता है। हर जीवित कोशिका का सृजन अन्य कोशिका की प्रतिलिपि में से होता है। दुनिया में कोई भी आदमी निर्जीव पदार्थों को मिलाकर जीवित कोशिका बनाने में सफल नहीं हो पाया है। अत्याधुनिक प्रयोगशालाओं में भी यह कारनामा नहीं किया जा सका है।

क्रमिक–विकास का सिद्धांत यह दावा करता है कि पृथ्वी की आदिकालीन परिस्थितिओं के तहत जीवित कोशिका संयोग से पैदा हुई। असल में मनुष्य की बुद्धिमता, ज्ञान और टैकनोलज़ी के श्रेष्ठतम संयोजन से भी ऐसी कोशिका बनाना नामुमकिन है। आने वाले पृष्ठों पर हम यह छानबीन करेंगे कि यह दावा क्यों विज्ञान और तर्क के सबसे मूल सिद्धांतों के खिलाफ है।

"संयोग से पैदा हुई" कोशिका की कहानी

अगर कोई ये मानता है कि जीवित कोशिका संयोग से अस्तित्व में आ सकती है तो ऐसे लोगों को एक ऐसी ही कहानी में मानने से रोका नहीं जा सकता जिसके बारे में हम आगे बात करने वाले हैं। यह एक शहर की कहानी है :

एक दिन बंज़र ज़मीन पर चट्टानों में दबा हुआ मिट्टी का एक ढ़ेला बारिश होने के बाद भीग जाता है। सूर्य के उदय के बाद यह भीगा ढ़ेला सूख जाता है और ठोस बन जाता है और फिर ठोस प्रतिरोधी स्वरूप धारण करता है। इसके बाद यह चट्टानों को (जो दोमट मिट्टी का काम भी देता है) किसी प्रकार टुकडों में टूटती जाती है और एक स्वच्छ, सुरेख और मज़बूत ईंट सामने आती है। यह ईंट एक ऐसी ही दूसरी ईंट के निर्माण के लिए सालों तक समान प्राकृतिक परिस्थितियों का इंतज़ार करती है। यह प्रक्रिया होती रहती है यहां तक कि लाखों ईंटों का निर्माण होता रहता है। हालांकि, यह संयोग की बात है कि पहले बनी हुई किसी भी ईंट को हानि नहीं पहुँचती है। हजारों सालों तक तूफ़ान, बारिश, हवा, सूर्यप्रकाश और सख्त ठण्ड का सामना करते रहने पर भी यह ईंटें टूटती नहीं है या घसीटी नहीं जाती है बल्कि वह उसी जगह पर अटल निश्चय के साथ अन्य ईंटों के निर्माण का इंतजार करते हुए पड़ी रहती है।

जब ईंटों की संख्या पर्याप्त हो जाती है तब हवा, तूफ़ान या चक्रवात जैसी प्राकृतिक परिस्थितियों के असर से अंधाधुंध खींची चली जाती है और एक–दूसरे के ऊपर होकर एक इमारत खड़ी करती है। इस दौरान एक सही समय पर "प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत" सीमेंट या मिट्टी का मिश्रण बनता है और ईंटों के बीच आकर उन्हें एक–दूसरे के साथ मज़बूत गठजोड़ बनाने में मदद करता है। इस प्रक्रिया के दौरान जमीन के नीचे लोहे की कच्ची धातु "प्राकृतिक परिस्थितियों" के तहत आकार लेती है और उस इमारत की नींव रखती है जो कि ईंटो की मदद से बनना है। इस प्रक्रिया के अंत में सभी जरूरी चीज़ें, बढ़ईगिरी और इन्स्टोलेशन के साथ एक संपूर्ण इमारत उठ खड़ी होती है।

एक दिन बंजर जमीन पर पथ्थरो के बीच में दबे हुए मिट्टी के टुकडे बारिश के बाद गीले हुए. सूरज का उदय होने के बाद गीली मिट्टी सूखी होती है और सख्तए अवरोधक स्वरूप अखत्यार करती है. इसके बाद यह पथ्थरो को (जो दोमट मिट्टी का भी काम देते है) किसी प्रकार से चकनाचूर करके उसके टुकडे किये जाते है और स्वच्छ, अच्छे आक. ारवाली मजबूत ईंट बनती है. यह ईंट कई सालो तक प्राकृतिक परिस्थितियों के आधीन अपने जैसी दूसरी ईंटो के निर्माण का इंतजार करती है. हालांकि, संयोगवश पहले बन चुकी एक भी ईंट को हानि नहीं पहुँचती है.

जब ईंटो की संख्या पर्याप्त हो जाती है तब हवाए तूफ़ान या टोर्नेडो जैसी प्राकृतिक परिस्थितियों की असर से रैन्डमली खींची चली जाती है और वे तिरछे तथा एकदूसरे की उपर हो जाती है. इस दौरान एक परफैक्ट टाईमिंग के साथ प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत सिमैन्ट या मिट्टी का मिश्रण बनता है और ईंटो के बीच आकर उन्हे एकदूसरे के साथ मज़बूत गठजोड बनाने में मदद करता है. इस प्रक्रिया के अंत में सभी जरूरी चीज़े, बढईगिरी और इन्स्टोलेशन के साथ एक संपूर्ण इमारत ऊठ खडी होती है. जीवन संयोगवश अस्तित्व में आया एसा दावा करनेवाली क्रम विकास की थीअरि हमारी यह कहानी से कुछ ज्यादा वाहियात नहीं है क्यूं कि दूरसंचार, यातायात और प्रबंधन की सारी व्यवस्थाओवाली इमारत की तुलना में एक कोशिका बहुत जटिल होती है.
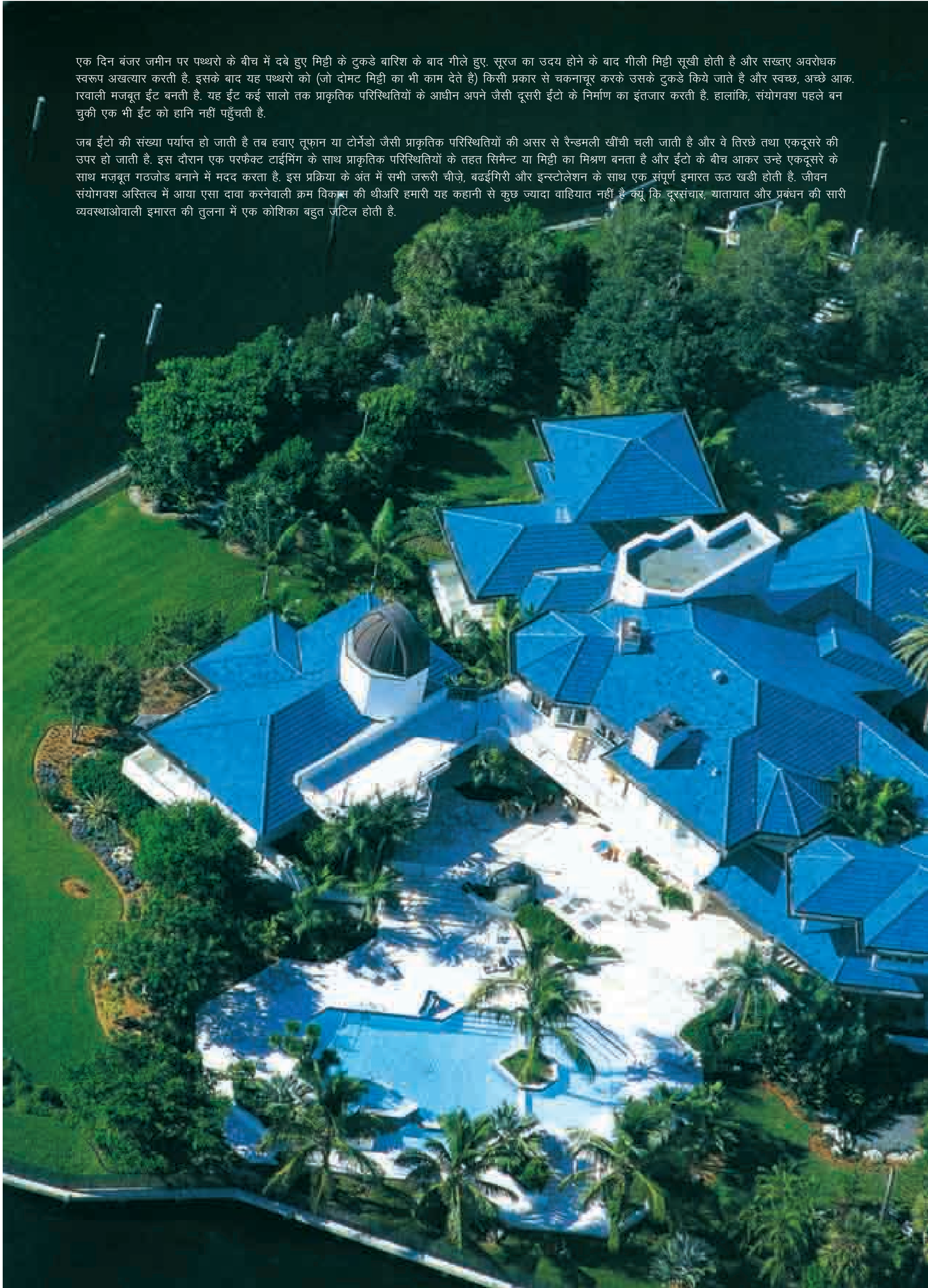
सचमुच इमारत सिर्फ नींव, ईंटें और सीमेंट से ही नहीं बनता है। तो फिर जो चीज़ें नहीं हैं उसको कैसे जुटाया जाये? जवाब सरल है : इमारत के निर्माण के लिए जरूरी सभी चीज़ें पृथ्वी में मौजूद है जिस पर यह इमारत खड़ी की जाती है। काँच बनाने के लिए सिलिकॉन, इलैक्ट्रिक तार बनाने के लिए ताँबा, थंभे, पाईप बनाने के लिए लोहा – सब कुछ ज़मीन के नीचे विपुल मात्रा में मौजूद है। इन्हें आकार लेने के लिए और इन चीज़ों को इमारत के अंदर रखने के लिए सिर्फ "प्राकृतिक परिस्थितियों" के कौशल्य की ज़रूरत होती है। लहराती पवन, वर्षा और भूकंप की मदद से सभी इन्स्टोलेशन्स (प्रतिष्ठापन), बढ़ईगिरी से सम्बन्धित सामान और सहायक सामन ईंटों के साथ रखा जाता है। सब कुछ बड़े अच्छे ढ़ंग से हुआ है। ईंटों की व्यवस्था इस तरह हुई है कि जिस से खिड़कियों के बीच जरूरी जगह बनाई गई है। जैसाकि उन्हें पहले से मालूम हो कि प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत एक दिन काँच जैसी कोई चीज़ का प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत निर्माण होगा जो खिडकी में बिठाने के लिए काम आयेगी। इसके अलावा पानी, बिजली और हीटिंग के लिए भी खाली जगह छोड़ी गई है। जिसका निर्माण भी बाद में संयोग से होना है। सब कुछ इतना ठीक–ठाक हुआ है कि "संयोग" और "प्राकृतिक परिस्थितियों" से एक दोषहीन संरचना तैयार होती है।

अब तक जो ब्यौरा दिया गया है उसको पढ़कर अगर आप इस कहानी में अपनी मान्यता को टिका पाये है तो फिर शहर की अन्य इमारतें, पौंधे, हाइवे, फूटपाथ, उपनिर्माण, दूरसंचार और यातायात की व्यवस्थाएं किस तरह अस्तित्व में आई यह तय करने में आप को कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। अगर आप के पास तकनीकी ज्ञान है और आप इस विषय से सुपरिचित हैं तो आप कई खंडो में एक अत्यंत "वैज्ञानिक" किताब भी लिख सकते हैं और "गटर की व्यवस्था के क्रमिक–विकास और आज की संरचना के साथ उसकी संगतता" के बारे में आपका अपना सिद्धांत भी प्रस्तुत कर सकते हैं"। आपके चतुर अध्ययनों की बदौलत आपको शैक्षणिक पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जा सकता है और मानवता के स्वभाव पर प्रकाश डालने के लिए आप खुद को जीनियस भी मान सकते हैं।

जीवन एक संयोग से अस्तित्व में आया ऐसा दावा करने वाला क्रमिक–विकास का सिद्धांत हमारी उपरोक्त कहानी से कम हास्यास्पद नहीं है क्योंकि सारे ऑपरेशनल सिस्टम और दूरसंचार, यातायात और व्यवस्था के साथ एक कोशिका किसी शहर से कम जटिल नहीं।

कोशिका में विद्यमान चमत्कार और क्रमिक–विकास का अंत

डार्विन के समय में जीवित कोशिका की जटिल संरचना के बारे में लोग अनजान थे और उस समय जीवन को महज़ "संयोग और प्राकृतिक परिस्थितियों" पर आरोपित करना लोगों को विश्वास में लाना इवोल्युशनिस्ट्स के लिए काफ़ी था।

20वीं सदी की तकनीक ने जीवन के अतिसूक्ष्म कण में झांककर देखा है और यह उजागर किया है कि मानवजात ने आज तक कोशिका सी जटिल व्यवस्था कभी भी नहीं देखी है। आज हम जानते हैं कि कोशिका में ऊर्जा के केन्द्र सरीखे पावर स्टेशन होते

हैं जो कोशिका के उपयोग के लिए ऊर्जा पैदा करते हैं, जीवन के लिए जरूरी किण्वक और होर्मोन का उत्पादन करने वाली फैक्टरीयां भी होती हैं। एक डाटा बैंक होती है जहां निर्माण होने वाले सभी उत्पादनों की जानकारी का संग्रह होता है। कच्ची सामग्री और उत्पादनों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने के लिए यातायात की जटिल व्यवस्था और पाइपलाइन होती है। बाहरी कच्ची सामग्री को उपयोगी भाग में तब्दील करने के लिए विकसित प्रयोगशालाएं और रिफाइनरी (शुद्ध करने वाली मशीनें) हैं और अंदर दाखिल होने वाले तथा बाहर जाने वाले पदार्थों के नियमन के लिए कोशिका में विशिष्ट झिल्ली होती है। यह सब अविश्वसनीय तरीके से जटिल व्यवस्था का सिर्फ छोटा–सा हिस्सा है।

इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक डबल्यु एच थोर्प यह स्वीकार करते हैं कि "सबसे सरल प्रकार की कोशिका का ऐसा 'मैकेनिज़म' (कार्य करने की प्रक्रिया) होता है जो आज तक सोची गई किसी जटिल मशीन से भी ज्यादा जटिल है।"105

कोशिका इतनी जटिल है कि आज की सबसे उच्चतम स्तर की तकनीक से भी इसका निर्माण नहीं किया जा सकता है। कृत्रिम को. शिका बनाने का प्रयास कभी सफल नहीं हो पाया है। ऐसा करने के सभी प्रयास विफ़ल हुए हैं।

क्रमिक–विकास का सिद्धांत यह दावा करता है कि यह व्यवस्था (जो मनुष्य अपनी सारी बुद्धिमता, ज्ञान और टैकनोलोज़ि की सहायता से नहीं बना सकते) आदिकालीन पृथ्वी की परिस्थितियों के तहत "संयोग" से पैदा हुई है। अन्य उदाहरण को देखें तो संयोग से कोशिका पैदा करने की संभावना किसी छापाखाने में विस्फोट के बाद कोई किताब की आदर्श कॉपी बनने की संभावना के बराबर है।

अंग्रेज़ गणितज्ञ और खगोलविद सर फ्रेड होयल ने नैचर मैगेज़िन में नवम्बर 12, 1981 में छपे एक इन्टरव्यू में इसी प्रकार की तुलना की थी। खुद एक इवोल्युशनिस्ट होने के बावजूद होयल ने कहा कि जीवन के उच्च स्वरूप का इस प्रकार से पैदा होने का संयोग की उस संयोग से तुलना की जा सकती है जैसे कि किसी गुदड़ी बाज़ार में आंधी तूफ़ान के आने से वहां पड़े पुर्जे एक साथ मिलकर बोइंग 747 विमान को बना दे।106 इसका अर्थ यह है कि कोशिका किसी संयोग से बनी हो यह संभव नहीं है और इसलिए उसका निश्चित रूप से "सृजन" ही किया गया है।

कोशिका किस तरह उत्पन्न हुई इसकी व्याख्या क्रमिक–विकास का सिद्धांत नहीं कर सकता उसका एक कारण कोशिका की "असरल. ीकृत जटिलता" है। जीवित कोशिका कई छोटे–छोटे अंगों के सामंजस्यपूर्ण समन्वय से खुद का संचालन करती है। इनमें से अगर एक भी अंग काम करना बंद कर दे तो कोशिका जीवित नहीं रह सकती है। कोशिका को अपने विकास के लिए प्राकृतिक चयन या म्युटेशन जैसे अजाग्रत प्रक्रिया के लिए इंतज़ार करने का अवसर नहीं मिलता है। इस तरह पृथ्वी पर प्रथम कोशिका एक संपूर्ण कोशिका थी जिसमें सभी जरूरी अंग और कार्य मौजूद थे और इसका सचमुच यही अर्थ है कि इस कोशिका का सृजन ही हुआ होना चाहिए।

प्रोटीन संयोग को चुनौती देते हैं

कोशिका ही के लिए नहीं क्रमिक–विकास का सिद्धांत कोशिका के निर्माण की मूल माने जाने वाले प्रोटीन के बारे में भी कुछ ठोस कहने में नाकाम रहती है। कोशिका का निर्माण करने वाले हज़ारों जटिल प्रोटीन अणुओं में से सिर्फ एक प्रोटीन अणु का भी प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत निर्माण होना असंभव है।

प्रोटीन वे भीमकाय अणु होते हैं जो "एमिनो ऐसिड" नामक छोटी–छोटी इकाई के बने होते हैं जो एक विशिष्ट क्रम में निश्चित मात्रा और संरचना में पाए जाते हैं। यह इकाइयाँ जीवित प्रोटीन के निर्माण की आधार हैं। सबसे सरल प्रोटीन 50 एमिनो ऐसिड से बना हुआ है लेकिन कुछ ऐसे प्रोटीन भी है जो हज़ारो एमिनो ऐसिड के बने हुए हैं।

कोशिका की जटिलता
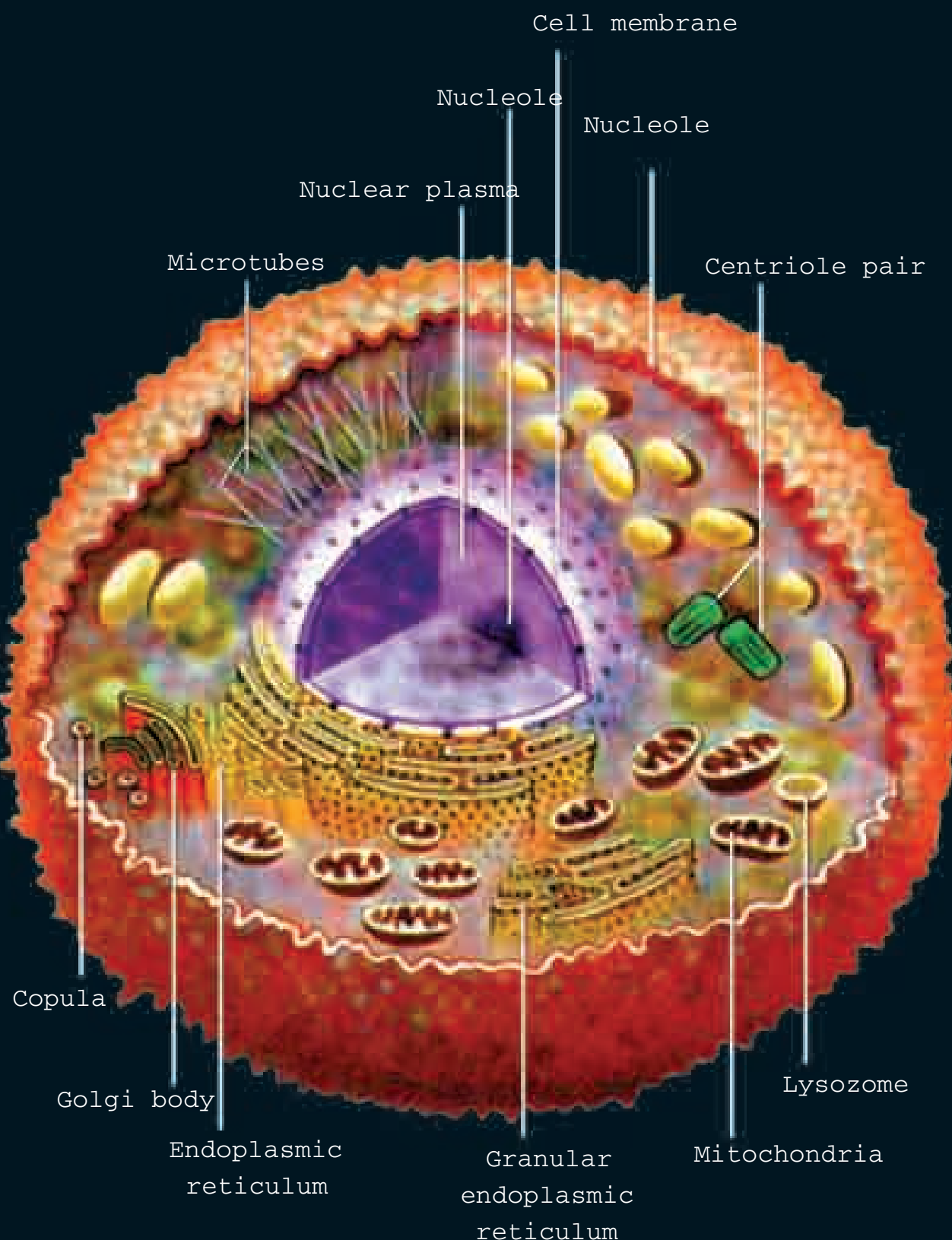
कोशिका सबसे जटिल और सबसे ज्यादा बारीकी से बनाई गई व्यवस्था है जो मनु य ने ओर कहीं भी देखी नहीं है. जीवविज्ञान के प्रोफेसर माइकल डेन्टन अपनी किताब इवोल्युशनः अ थीअरि इन क्राइसीस में इस जटिलता को उदाहरण के साथ समझाते है:

"मॉलेक्युलर बायोलोजि द्वारा जिस पर प्रकाश डाला गया है वह जीवन की वास्तविकता को समझने के लिए हमे कोशिका को लाखो गुनी बडी करके देखनी पडेगी जिससे उसका व्यास बीस किलोमीटर हो जाये और लंदन या न्यू यॉर्क जैसे बडे ाहर को ाामिल कर सके उतने बडे हवाईजहाज जैसी दिखे. इसके बाद हम अतुल्य जटिलतावाला और अनुकूली रचनावाला एक पदार्थ देखेंगे. कोशिका की सतह पर हम लाखो छिद्र पायेंगे जो विशाल अवकाशी जहाज के पॉर्ट हॉल्स जैसे दिखेंगे और पदार्थो के अविरत प्रवाह को अंदर आने देने के लिए और बाहर निकालने के लिए लगातार खुलता और बंद होता रहेगा. अगर हम इन में से किसी एक छिद्र में प्रवेश करे तो हम अपने आप को एक सुप्रीम टैकनोलजि और विस्मयकारक जटिलता के विश्व में पायेंगेकृ. (एसी जटिलता) जो हमारी सृजनात्मक क्षमताओ के दायरे के बाहर हैकृ.एक एसी वास्तविकता जो संयोग की धारणा से विपरीत है और जो मनु य की बुद्धिमता से पैदा हुई हर एक चीज़ को टक्कर मारती हैकृ."

इवोल्युशनिस्टस के अपराध–स्वीकरण

जीवन के उदगम के मुद्दे पर क्रम विकास को सब से ज्यादा गतिरोध का सामना करना पडता है. कारण यह है कि ऑर्गेनिक अणु इतने जटिल है कि उनका निर्माण किसी संयोगवश हुआ होगा एसा खुलासा देना मुमकिन नहीं है और किसी संयोग से अपने आप प्रकट होना ऑर्गेनिक कोशिका के लिए नामुमकिन है.

20वीं सदी की दूसरी तिमाही में इवोल्युशनिस्टस का सामना जीवन के उदभव के प्रश्न से हुआ. आण्विक क्रम विकास की थीअरि में अग्रणी सत्ताधीश माने जानेवाले रशियन इवोल्युशनिस्ट ऐलेक्झांडर आई ऑपेरिन ने 1936 में छपी अपनी किताब द ऑरिजिन ऑफ लाइफ में यह लिखा हैः

दुर्भाग्य से कोशिका का उदभव एक एसा प्रश्न बना रहता है जो असल में क्रम विकास की पूरी थीअरि का सब से अस्प   ट मुद्दा है.1

कोशिका एक संयोग से पैदा हुई हो सकती है यह साबित करने के लिए ओपेरिन से लेकर कई इवोल्युशनिस्टस ने अनगिनत प्रयोग किये है, संशोधन किया है और कई अवलोकन किये है. हालांकि, ऐसे हर प्रयास ने कोशिका की जटिल रचना को ही उजागर किया है और इवोल्युशनिस्टस की धारणाओ का और भी खण्डन किया है. जोहानेस गुटेनबर्ग युनिवर्सिटी में इन्स्टिट्युट ऑफ बायोकैमिस्ट्री के प्रोफेसर क्लॉस डोस कहते हैः

रासायणिक और आण्विक क्रम विकास के क्षेत्र में जीवन के उदभव पर 30 साल से ज्यादा समय तक किये गये प्रयोगो ने पृथ्वी पर जीवन के उदभव की समस्या का हल देने के बदले इस समस्या के व्याप को ओर भी बढावा दिया है. फिलहाल तो इस क्षेत्र में सभी चर्चाओं और सैद्धांतिक थीअरि का अंत किसी गतिरोध में या अज्ञान के स्वीकार में आता है.2

सान डिएगो स्क्रिप्स इन्स्टिट्युट के जीओकैमिस्ट जेफ्री बेडा का निम्नलिखित नि. वेदन इस गतिरोध के बारे में इवोल्युशनिस्टस की लाचारी को स्प   ट करता हैः

आज जब हम बीसवी सदी के अंत में है तब हमारे सामने बडा पेचीदा सवाल खडा है को बीसवीं सदी के प्रारंभ में भी वैसा ही थाः पृथ्वी पर जीवन का उदगम कैसे हुआ?3

ऐलेक्झान्डर ओपेरिनः
"कृ.कोशिका का उदभव आज भी एक प्रश्न हैकृ.
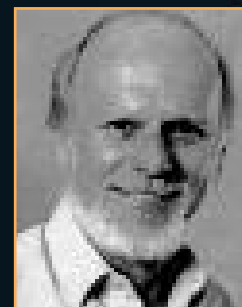
जेफ्री बेडाः
"कृ.सबसे बडा अनसुलझा प्रश्नकृ.ः जीवन का पृथ्वी पर उदभव कैसे हुआ?"

ऐलेक्झान्डर आई ओपेरिन, ऑरिजिन ऑफ लाइफ, (1936) न्यू यॉर्कः डोवर प्रकाशन, 1953 (पुनःमुद्रण), पृ.196.

क्लॉस डोसए "द ऑरिजिन ऑफ लाइफः मॉर क्वेश्चन्स धेन आन्सर्स" ए इन्टरडिसिप्लीनरी साइंस रिव्यूज़, वॉल्युम 13, नं, 4, 1988, पृ.348

जेफ्री बेडा, अर्थ, फरवरी 1998, पृ.40

महत्व का बिन्दु यह है कि प्रोटीन की संरचना में एक भी एमिनो ऐसिड की अनुपस्थिति, योग या प्रतिस्थापन पूरे प्रोटीन को अणुओं का व्यर्थ ढ़ेर बना देता है। हर एमिनो ऐसिड सही स्थिति में होने चाहिए और सही क्रम में होने चाहिए। जीवन संयोग से पैदा हुआ ऐसा दावा करने वाला क्रमिक–विकास का सिद्धांत इस क्रम के बारे में बहुत लाचार हैं क्योंकि यह घटना इतनी विस्मयकारक है कि उसे संजोग से समझाना मुमकिन नहीं है। (इसके अलावा यह सिद्धांत प्रोटीन के आकस्मिक निर्माण के दावे को भी सही नहीं ठहरा सकता जिसकी चर्चा हम बाद में करेंगे।)

प्रोटीन की बंधारणीय संरचना का संयोग से पैदा होना असंभव है, इस वास्तविकता को संभावना की सरल गिनती से भी देखा जा सकता है जिसे कोई भी समझ सकता है।

उदाहरण के तौर पर एक औसत आकार का प्रोटीन अणु 288 एमिनो ऐसिड से बनता है। जिसमें अलग–अलग प्रकार के एमिनो ऐसिड होते हैं जिन्हें विभिन्न तरीकों से 10300 बार संजोया जा सकता है। (खगोलशास्त्र के हिसाब से वह बहुत बड़ी संख्या है जो 1 के बाद 30 शून्य लगाने से बनती है।) इन सब संभावित क्रम में से सिर्फ एक ही क्रम इच्छित प्रोटीन अणु का निर्माण करता है। बाकी जो बचते हैं वे एमिनो ऐसिड की श्रृंखला है जो या तो पूरी तरह से निरर्थक है या सजीवों के लिए संभवतः हानिकर है।

दूसरे शब्दों में कहें तो सिर्फ एक प्रोटीन अणु के निर्माण की संभावना 10300 में से 1 की है। यह "1" के पैदा होने की संभावना व्यवहारिक द्रष्टि से शून्य है। (व्यवहार में 1050 में से 1 के होने की संभावना को "शून्य संभावना" माना जाता है")।

इसके अलावा 288 एमिनो ऐसिड वाला प्रोटीन अणु हजारों एमिनो ऐसिड के बने महाकाय प्रोटीन अणु की तुलना में सरल दिखता है। जब हम संभावना इस गिनती को महाकाय प्रोटीन अणुओं पर लागू करते हैं तब हम देखते हैं कि "असंभव" जैसा शब्द भी इस सच्ची स्थिति का विवरण देने में अपर्याप्त मालूम होता है।

जीवन के क्रमिक–विकास की योजना में हम जब एक कदम आगे बढते है तब हम यह देखते है कि एक प्रोटीन अणु का अपने आप में कोई महत्त्व नहीं है। सूक्ष्मातिसूक्ष्म बैक्टेरिया में जिसकी गिनती होती है वह मायकोप्लाज़्मा होमिनिस भ्39 के शरीर में 600 "प्रकार" के प्रोटीन होते हैं। यहां हम संभावना की ऊपर की गई गिनती को 600 बार विभिन्न प्रकार के प्रोटीन पर लागू करेंगें। गिनती का परिणाम असम्भवता की धारणा को भी कंगाल बना देता है।

क्रमिक–विकास के सिद्धांत को अभी तक एक वैज्ञानिक व्याख्या मानने वाले जब यह लाइन पढ़ेंगे तो लोग शायद संदेह व्यक्त करेंगे कि यह सब संख्या को बढ़ा चढ़ाकर पेश किया गया है और ये आंकड़े सत्य बयान नहीं करते हैं। यह एक निश्चित और ठोस सत्य है। कोई भी इवोल्युशनिस्ट इन आंकडों के खिलाफ विरोध प्रकट नहीं कर सकता है। वे स्वीकार करते हैं कि एक प्रोटीन अणु संयोगवश निर्माण की संभावना "कोई बंदर एक भी भूल के बिना टाइपराइटर की मदद से मानवजाति का इतिहास लिखने बैठा हो" के बराबर है।107 हालांकि सृजन की व्याख्या को स्वीकार करने के बदले वे इस असंभवनीय घटना का बचाव करते रहते हैं।

असल में कई इवोल्युशनिस्टों ने इस परिस्थिति को स्वीकार किया है। जैसे कि प्रमुख इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक हेरोल्ड एफ ब्लम कहते हैं कि "पोलीपेप्टाईट का सबसे छोटे, आकार वाले प्रोटीन की मात्रा भी स्वतः निर्माण की सभी संभावनाओं से परे है।"108

इवोल्युशनिस्ट्स दावा करते हैं कि आण्विक क्रम विकास समय के बहुत लंबे अन्तराल में हुआ और इससे जो असंभव था वो संभव बना। फिर भी यह अन्तराल चाहे कितना लंबा हो प्रोटीन अणु को संयोग से बनाना एमिनो ऐसिड के लिए संभव नहीं है। अमेरिकन भूवैज्ञानिक विलियम स्टॉक्स अपनी किताब एसेन्शियल्स ऑफ अर्थ हिस्ट्री में इस हकीकत का स्वीकार करते हैं। वे लिखते हैं की संभावना इतनी कम है कि "ज़रूरी एमिनो ऐसिड के सांद्र जलीय विलेयन (सॉल्युशन) की चादरों से आवृत अरबों ग्रहो पर अरबों सालों तक यह संभावना पैदा नहीं होगी।"109

तो इन सबका आखिर क्या मतलब है? रसायनशास्त्र के प्राध्यापक पेरी रीव्स इस प्रश्न का जवाब देते हैं :

जब कोई यह छानबीन कराता है कि एक वाष्प का उत्सर्जन करने वाले आदिकालीन तालाब में एमिनो ऐसिड के सरल अंधाधुंध (रैन्डम) संयोजन के फलस्वरूप बड़ी मात्रा में संभावित संरचनाएँ पैदा हो सकती हैं तो यह मानना सचमुच उलझन में डाल देता है कि जीवन इस प्रकार पैदा हुआ होगा। ऐसे काम के लिए मास्टर प्लान वाले महान बिल्डर की जरूरत पड़ेगी ये विचार अधिक विश्वसनीय रहेगा।110

अगर इनमें से किसी एक प्रोटीन का संयोगवश निर्माण असंभव है तो फिर उनमें से दस लाख प्रोटीन एक–दूसरे के साथ मिलकर एक संपूर्ण कोशिका बनाये यह अरबो गुना "ज्यादा असंभव" है। इसके अलावा एक कोशिका सिर्फ प्रोटीन के ढेर की बनी रहे यह संभव नहीं है। प्रोटीन के अलावा कोशिका में न्युक्लिक ऐसिड, कार्बोहाइड्रेट, लिपिड, विटामिन और इलेक्ट्रोलाइटस जैसे कई अन्य रसायन सं. रचना और कार्य के हिसाब से सही मात्रा में, सन्तुलन और डिज़ाइन के साथ संजोये हुए होते हैं। इनमें से सभी तत्व विविध कोशिका की अंदरूनी संरचना में बिल्डिंग ब्लॉक या सह–अणु की तरह कार्य करते हैं।

न्यूयोर्क युनिवर्सिटी में रसायनशास्त्र के प्राध्यापक और डीएनए विशेषज्ञ रॉबर्ट शापीरो ने एक ही बेक्टेरियम में मिलनेवाले 2000 प्रकार के प्रोटीन की संयोगवश रचना की संभावना की गिनती की (एक मानव कोशिका में 200,000 विभिन्न प्रकार के प्रोटीन होते हैं)। जो संख्या मिली वह 1040000 में से 1 थी।111 (यह 1 के बाद 40,000 शून्य रखने के बाद मिलने वाली अविश्वसनीय संख्या है)।

युनिवर्सिटी कोलेज़ कार्डिफ़, वैल्स से एप्लाइड मैथेमेटिक्स और खगोलशास्त्र के प्राध्यापक चन्द्रा विक्रमासिंघे कहते हैं :

निर्जीव पदार्थ में से जीवन का अनायास निर्माण की संभावना 1 के बाद 40,000 शून्य रखने पर जो संख्या मिलती है उतनी है। यह डार्विन और क्रमिक–विकास के पूरे सिद्धांत को दफन करने लिए काफी है। इस ग्रह पर या अन्य किसी भी ग्रह पर कोई आदिक.
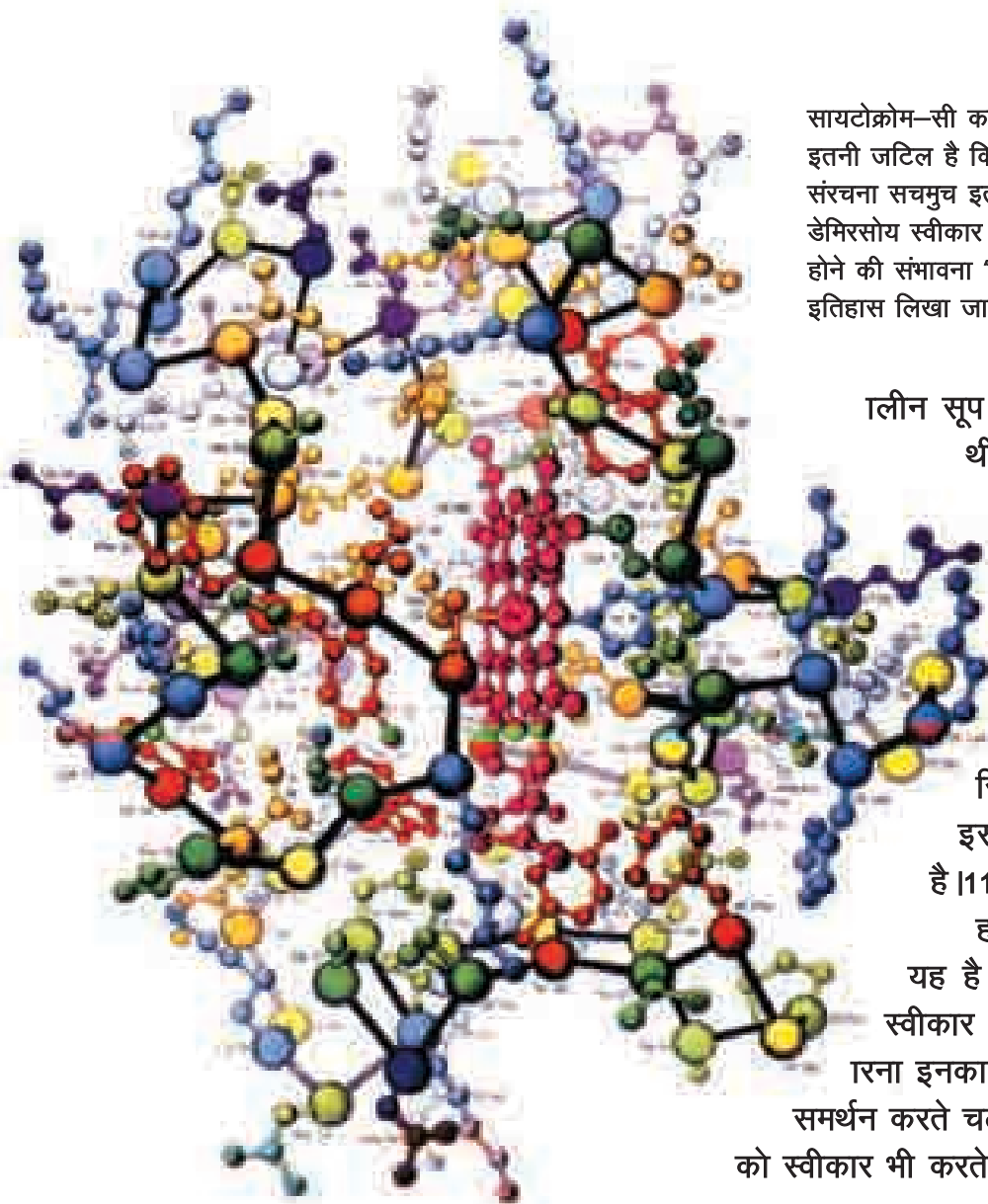
सायटोक्रोम–सी का सिर्फ एक ही प्रोटीन अणु (उपर बायें) की रासायणिक संरचना इतनी जटिल है कि संयोग के उदाहरण से उसे समझाया नहीं जाया सकता – यह संरचना सचमुच इतनी जटिल है कि तुर्की के इवोल्युशनिस्ट जीवविज्ञानी प्रोफेसर अली डेमिरसोय स्वीकार करते है कि सायटोक्रोम–सी की एक श्रृंखला का संयोग से पैदा होने की संभावना "किसी बंदर द्वारा एक भी भूल बिना टाइपराइटर पर मानवता के इतिहास लिखा जाने की संभावना जितना नामुमकिन है."

ालीन सूप नहीं था और अगर जीवन की शुरूआत रैन्डम नहीं हुई थी तो फिर वे किसी उद्देश्यपूर्ण बुद्धिमता की पैदाइश ही होने चाहिए।112

सर फ्रेड होयल यह असंभावित संख्या पर टिप्पणी करते हैं :

निःसंदेह, यह सिद्धांत (कि जीवन की स्थापना किसी बुद्धि द्वारा की गई है।) अपने आप में इतना प्रत्यक्ष है कि इस बात पर आश्चर्य होता है कि इसे स्वयंसिद्ध सिद्धांत के तौर पर व्यापक स्वीकृति क्यों नहीं मिली है। इसका कोई वैज्ञानिक नहीं बल्कि मनोवैज्ञानिक कारण है।113

होयल का यहां "मनोवैज्ञानिक" शब्द के उपयोग का कारण यह है कि इवोल्युशनिस्टों के द्वारा सृजन की वास्तविकता को स्वीकार न करने की हठधर्मता है। अल्लाह के अस्तित्व को नक. ारना इनका मुख्य उद्देश्य है। इसी कारण से वे अतार्किक सिद्धांत का समर्थन करते चले जा रहे है और जबकि वह इस सिद्धांत के असंभव होने को स्वीकार भी करते हैं।

बायें हाथवाले प्रोटीन

अब हम इस बात पर विस्तार से गौर करते हैं कि प्रोटीन के निर्माण के बारे में क्रमिक–विकास का दृश्यलेख क्यों असंभव लगता है।

सही एमिनो ऐसिड का सही क्रम भी सक्रिय प्रोटीन अणु के निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं है। इन जरूरतों के अलावा कोशिका में उपस्थित 20 विभिन्न प्रकार के एमिनो ऐसिड में से सभी ऐसिड बायें हाथ वाले (लेफ्ट–हैन्डेड) होने चाहिए। सारे जैविक अणुओं में दो प्रकार के अमीनो ऐसिड पाए जाते हैं जिन्हें बांये हाथ वाले (लेफ्ट हेन्डेड) और दाएं हाथ वाले (राइट हेन्डेड) कहा जाता है। उनके बीच पाया जाने वाला अंतर उनकी आयामिय बनावट के बीच आइने में दिखने वाली तस्वीर जैसी समानता है जैसे कि दांए और बांए हाथ में समानता होती है।

इन दो प्रकार में से कोई भी एक एमिनो ऐसिड अन्य के साथ आसानी से जुड़ सकता है। लेकिन शोध से उजागर हुई एक आश्चर्यजनक हकीकत यह है कि इस ग्रह पर सरलतम सजीव से लेकर सबसे जटिल रचना वाले पौधे और प्राणियों में जो प्रोटीन मौजूद होते है वे लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो एसिड के बने होते हैं। अगर प्रोटीन की संरचना में एक भी राइट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड जुड़ जाता है तो वह प्रोटीन अयोग्य हो जाता है। कई सिलसिलेवार प्रयोगों से पता चला है कि राइट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड के प्रभाव में डाले गये बैक्टेरिया का तत्काल नाश हो गया। कुछ मामलों में टूटे हुए भागों में से उन्होने उपयोगी लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड पैदा किये।

एक पल के लिए हम मान लेते है कि इवोल्युशनिस्ट जैसा दावा करते हैं उसी प्रकार जीवन संयोग से अस्तित्व में आया। इस किस्से में संयोग से पैदा हुए राइट–हैन्डेड और लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड प्राकृतिक तौर में समान मात्रा में मौजूद होने चाहिए। इसलिए सभी सजीवों के बंधारण में राइट–हैन्डेड और लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड होने चाहिए क्योंकि रासायनिक तौर पर दोनों प्रकार के एमिनो ऐसिड एक–दूसरे के साथ जुड़ पाये यह संभव है। हालांकि, जैसा कि हम जानते हैं, वास्तविक दुनिया में सभी सजीवों में मौजूद प्रोटीन सिर्फ लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड के ही बने हैं।

सभी एमिनो ऐसिड में से प्रोटीन किस तरह लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड का चयन कर सकते हैं और एक भी राइट–हैन्डेड एमिनो एसिड इसमें शामिल नहीं होता यह सवाल इवोल्युशनिस्ट्स को आज भी उलझन में डालता है। ऐसा विशिष्ट और जाग्रत चयन क्रमिक–विकास की थीअरि के मार्ग में सबसे बड़े गतिरोध में से एक है।

इसके अलावा प्रोटीन की यह विशेषता "संयोग" से जुड़ी हुई समस्या का सामना कर रहे इवोल्युशनिस्ट्स की समस्या को और भी बढ़ाते हैं। "अर्थपूर्ण" प्रोटीन के निर्माण के लिए एमिनो ऐसिड विशिष्ट संख्या और क्रम में उपस्थित हो और सही तीन आयामी डिज़ाइन से उनका संयोजन हो यही पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा यह सब एमिनो ऐसिड लेफ्ट–हैन्डेड होना जरूरी है। उनमें से एक भी एमिनो ऐसिड राइट–हैन्डेड नहीं होना चाहिए। फिर भी ऐसी कोई प्राकृतिक चयन की व्यवस्था नहीं है जो यह जान सके कि इस क्रम में राइट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड को शामिल किया गया है और उसे श्रृंखला में से हटाना ही पडेगा। यह स्थिति एक बार फिर से संयोग और चान्स की

संभावना को दूर कर देती है।

क्रमिक–विकास का स्पष्टवादी समर्थक ब्रिटानिका साइंस एनसायक्लोपीडिया कहता है कि पृथ्वी के सभी सजीवों के एमिनो ऐसिड और प्रोटीन जैसे जटिल पोलिमर के बिल्डिंग ब्लॉक में सबमें एक समान लेफ्ट–हैन्डेड अमीनो ऐसिड पाए जाते हैं। यह आगे कहता है कि यह तो ऐसी बात हुई कि एक सिक्के को लाखों बार उछाला जाये और हर बार चित्त ही देखने को मिले। यही ऐनसाइक्लोपीडिया कहता है कि अणु लेफ्ट–हैन्डेड या राइट–हैन्डेड कैसे बनता है यह समझना असंभव है और यह चयन पृथ्वी पर जीवन की उत्पत्ति से जुड़ा हुआ है।114

लाखों बार उछाले जाने पर भी सिक्का चित ही दिखाये तो फिर इस घटना को संयोग से जोड़कर देखना ज्यादा तार्किक है या फिर इसमें किसी जाग्रत हस्तक्षेप का हाथ है यह मानना तार्किक है? जवाब स्पष्ट है। चाहे यह कितना ही स्पष्ट हो, इवोल्युशनिस्ट्स आज भी संयोग की शरण लेते है क्योंकि वे "जाग्रत हस्तक्षेप" का अस्तित्व स्वीकार करना नहीं चाहते।

एमिनो ऐसिड की लेफ्ट–हैन्डेडनेस जैसी परिस्थिति न्युक्लिओटाइड में भी देखने को मिलती है जो न्युक्लिक ऐसिड, डीएनए और आरएनए के सबसे छोटी इकाई है। प्रोटीन की संरचना में सिर्फ लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड का चयन होता है तो इससे विपरीत न्युक्लिक ऐसिड में उनके न्युक्लिओटाइड घटक के चयनित स्वरूप हमेशा राइट–हैन्डेड होते हैं। यह एक अन्य हकीकत है जो संयोग से कभी समझाई नहीं जा सकती।

जिस संभावनाओं की हमने जाँच की है उससे निःसंदेह यह साबित हो चुका है कि जीवन के उदगम को संयोग के सिद्धांत से समझाया नहीं जा सकता है। अगर हम सिर्फ लेफ्ट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड में से चयन किये गये 400 एमिनो ऐसिड वाले औसत आकार के प्रोटीन की संभावना की गिनती करने का प्रयास करें तो हमे 2400 में से या 10120 में से 1 की संभावना मिलती है। सिर्फ तुलना के लिए यह याद करना ठीक होगा कि ब्रह्मांड में इलेक्ट्रोन की संख्या 1079 होने का अनुमान है जो विशाल संख्या होने के बावजूद बहुत छोटा आंकड़ा है। यह एमिनो ऐसिड द्वारा जरूरी श्रृंखला और सक्रिय स्वरूप बनाने की संभावना बहुत बड़ी संख्या देगी। अगर हम इन संभावनाओं को जोड़ें और अगर हम और भी ज्यादा ऊंची संख्या तथा प्रोटीन के प्रकार की संभावना खोज़ने का प्रयास करें तो गिनतियां कल्पना से परे हो जाती हैं।

सही बॉन्ड अत्यावश्यक है

प्रोटीन अणु के सम्बन्ध में अब तक हमने प्रोटीन के एक अणु के विकास के सम्बन्ध में जो चुनौतियाँ देखी हैं जिनसे क्रमिक–विकास का सिद्धांत जूझ रहा है वे यहीं तक सीमित नहीं हैं। एमिनो ऐसिड को सही संख्या और क्रम में और जरूरी तीन आयामी संरचनाओं में संजोना ही काफ़ी नहीं है। प्रोटीन की रचना के लिए यह भी जरूरी है कि एक से ज्यादा हाथ वाले एमिनो ऐसिड के अणु सिर्फ विशिष्ट प्रकार से ही एक–दूसरे से जुड़ सकते हैं। ऐसे बन्धन को "पेप्टाइड बॉन्ड" कहते हैं। एमिनो ऐसिड एक–दूसरे से विभिन्न बॉन्ड बना सकते हैं; लेकिन प्रोटीन सिर्फ और सिर्फ उन्हीं एमिनो ऐसिड के बन सकते है जो "पेप्टाइड" बॉन्ड से जुडते हैं।

एक तुलना से यह स्थिति स्पष्ट होगी। मान लो की एक कार के सभी पूर्जे संपूर्ण हैं और उन्हें सही तरह से जोड़ा गया है। कमी सिर्फ यही है कि एक पहिये को नट और बॉल्ट से नहीं बल्कि तार के टुकड़े से फिट किया गया है जिसका केन्द्र ज़मीन के सम्मुख है। इस कार का इंजन कितना भी शक्तिशाली हो या उसकी तकनीक कितनी भी जटिल हो लेकिन यह कार थोड़ी–सी भी दूरी तय नहीं कर पायेगी। पहली नज़र में देखें तो सब कुछ ऊपर–ऊपर से ठीक–ठाक मालूम होता है लेकिन एक पहिये को गलत ढ़ंग से जोड़ने के कारण पूरी कार अर्थहीन हो जाती है। इसी प्रकार प्रोटीन के अणु में एक एमिनो ऐसिड का दूसरे एमिनो ऐसिड से पेप्टाइड के अलावा अन्य बॉन्ड से जुड़ने पर पूरा अणु अर्थहीन हो जाता है।

शोध से पता चलता है कि रैन्डम (अंधाधुंध) जुड़नेवाले एमिनो ऐसिड पेप्टाइड बॉन्ड से सिर्फ 50ः बार ही जुड़ते हैं और बाकी के समय में वह बॉन्ड जो प्रोटीन में नहीं होते, पैदा होते हैं। ठीक से कार्य करने के लिए प्रोटीन बनाने वाला हर एमिनो ऐसिड दूसरे एमिनो ऐसिड से केवल पेप्टाइड बॉन्ड से ही जुड़ना चाहिए। उसी तरह से जैसे यह बॉन्ड सिर्फ हैंडेड होना चाहिए। ऐसा होने की संभावना हर प्रोटीन के लेफ्ट–हैन्डेड होने की संभावना के बराबर ही है. मतलब, जब हम 400 एमिनो ऐसिड के बने प्रोटीन को ध्यान में लेते है तब अपने आप में सभी एमिनो
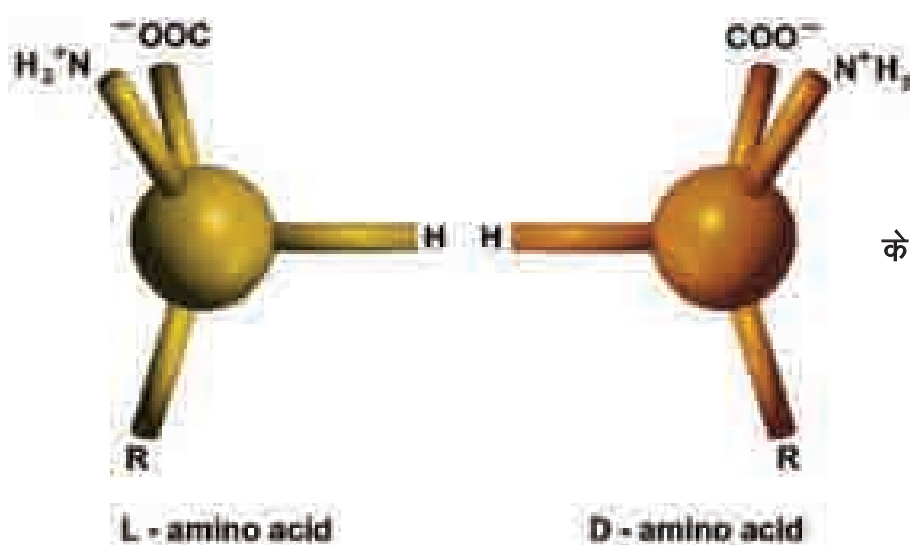
प्रकृति में "लैफ्ट–हेन्डेड" और "राइट–हेन्डेड" ऐसे दो प्रकार के एमिनो ऐसिड होते है. उनमें जो फर्क है वह उनके त्रिपरिमाणीय संरचना की मिरर–सिमैट्री में है जो किसी व्यक्ति के दाये और बाये हाथो के समान है.

ऐसिड के पेप्टाइड बॉन्ड से जुडने की संभावना 2399 में से 1 की है।

शून्य संभावना

500 एमिनो ऐसिड के बने एक प्रोटीन अणु के निर्माण की संभावना 1 के बाद 950 शून्य लगाने के बाद जो संख्या बनती है उसमें से "1" की है। यह संख्या मानव बुद्धि के लिए कल्पना से परे है। यह सिर्फ कागज पर गिनी गई संभावना है। व्यवहारिक रूप से बात करें तो यह वास्तव में होने की सम्भावना शून्य है। जैसा की हमने देखा कि गणित में 1050 के सामने 1 की संभावना है आंकड़ों के अनुसार "0" सम्भावना मानी जाती है।

"10950 के सामने 1" की संभावना इस व्याख्या के दायरे से काफ़ी बाहर है। 500 एमिनो ऐसिड के बने प्रोटीन अणु के निर्माण की असंभावना जब इस हद तक पहुँचती है तो असंभावना के उच्च स्तर के साथ हम बुद्धि की सीमितता को और धकेलते हुए आगे बढ़ सकते हैं। अत्यावश्यक प्रोटीन माने जाने वाले "हीमोग्लोबिन" अणु में 574 एमिनो ऐसिड होते हैं जो ऊपर उल्लिखित प्रोटीन बनाने वाले एमिनो ऐसिड की संख्या से ज्यादा हैं। अब इस बात को ध्यान में रखें : आपके शरीर में अरबों लाल रक्त कोशिकाओं में से सिर्फ एक ही कोशिका में हीमोग्लोबिन के 280,000,000 अणु होते हैं।

प्रोटीन का निर्माण करनेवाले एमिनो ऐसिड के अणु एकदूसरे से सिर्फ "पेप्टाइड बॉन्ड" से जुडे होने चाहिए जो प्रकृति में देखने को मिलते विविध प्रकार के बॉन्ड में से एक है. पेप्टाइड बॉन्ड के बगैर एमिनो ऐसिड की श्रृंखला निरर्थक हो जायेगी और कोई भी प्रोटीन नहीं बनेगा.

पृथ्वी की कल्पित आयु एक "ट्रायल और एरर" पद्धत्ति द्वारा एक भी प्रोटीन अणु का निर्माण होने देने के लिए पर्याप्त नहीं है तो फिर एक लाल रक्त कोशिका तो बहुत दूर की बात है। अगर हम यह मान भी लें कि प्रोटीन का एक अणु बनाने के लिए पृथ्वी के निर्माण के समय से आज तक बिल्कुल समय गँवाये बगैर "ट्रायल और एरर" पद्धत्ति से एमिनो एसिड संयोजित हुए हैं और विघटित हुए हैं तो 10950 की संभावना के साथ जो समय लगेगा वह पृथ्वी की अनुमानित आयु से अत्याधिक बढ़ जायेगा।

इस चर्चा का उपसंहार यह है कि एक प्रोटीन अणु के निर्माण की बात हो तब भी क्रमिक–विकास का सिद्धांत असंभावना की अथाह गहराई में गिर जाता है।

क्या प्रकृति में ट्रायल और एरर मैकेनिज़म है?

आखिर हम संभावना की गिनतियों (जिसके उदाहरण हम देख चुके हैं) के बुनियादी तर्क के सम्बन्ध में बहुत महत्त्वपूर्ण बिन्दु के साथ एक निष्कर्ष निकाल सकते हैं। जैसेकि हमने बताया कि ऊपर की गई संभावना की गिनती खगोलीय स्तर तक पहुँची है और इन अनियमित घटना खगोलीय संख्याएं हल होने के कोई आसार नहीं हैं। हालांकि, यहां पर इवोल्युशनिस्ट एक और भी महत्त्वपूर्ण और अनिष्टकारक हकीकत का सामना कर रहे हैं। वो यह है कि खगोलिय विषमता के बावजूद प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत ट्रॉयल और एरर का कोई काल शुरू भी नहीं हो सकता क्यूं कि प्रोटीन जिससे पैदा हो सके ऐसी कोई ट्रॉयल और एरर की व्यवस्था कुदरत में नहीं है।

500 एमिनो ऐसिड वाले प्रोटीन अणु के निर्माण की संभावना को दर्शाने के लिए हमने जो गिनतियां दीं वह सिर्फ आदर्श ट्रॉयल–एंड–एरर वातावरण के लिए ही उपयुक्त है जिसका वास्तविक जीवन में अस्तित्व नहीं है। इसका अर्थ यह है कि उपयोगी प्रोटीन पाने की संभावना 10950 चान्स में से सिर्फ 1 तभी होती है जब हम यह मानते हैं कि एक काल्पनिक मैकेनिज़म का अस्तित्व है जिसमें अद्रश्य हाथ

ून्य संभावना

उपयोगी प्रोटीन के निर्माण की तीन बुनियादी   र्तें हैं:
पहली र्तः प्रोटीन श्रृंखला में सभी एमिनो ऐसिड सही प्रकार के हो और सही क्रम में हो
दूसरी र्तः श्रृंखला में सभी एमिनो ऐसिड लैफ्ट–हेन्डेड होने चाहिए
तीसरी र्तः सभी एमिनो ऐसिड "पेप्टाइड बॉन्ड" के जरिए एकदूसरे के साथ जुडे.

प्रोटीन संयोगवश बनना हो तो यह सभी   र्ते एकसाथ पूरी होनी चाहिए. प्रोटीन के संयोगवश निर्माण की संभावना इन सभी   र्ते पूरी होने की संभावना के गुणन बराबर है.

उदाहरण के तौर पर, 500 एमिनो ऐसिड के बने एक मामूली अणु के लिए:
1. सभी एमिनो ऐसिड सही क्रम में हो इसकी संभावना:
प्रोटीन के बंधारण में 20 प्रकार के एमिनो ऐसिड का उपयोग होता है. इसके मुताबिक:
– इन 20 प्रकारो में से प्रत्येक एमिनो ऐसिड का चयन सही हो इसकी संभावना त्र1/20
– यह सभी 500 एमिनो ऐसिड का सही ढंग से चयन हो इसकी संभावना

त्र $1/20^{500}$ त्र $1/10^{650}$
त्र10^{650} में 1 चान्स

2. एमिनो ऐसिड लैफ्ट–हेन्डेड हो इसकी संभावना:
– सिर्फ एक ही एमिनो ऐसिड लैफ्ट–हेन्डेड हो इसकी संभावना त्र 1/2
यह सभी एमिनो ऐसिड एक ही वक्त लैफ़्ट–हेन्डेड हो इसकी संभावना
त्र $1/2^{500}$ त्र $1/10^{150}$
त्र 10^{150} में 1 चान्स

3. एमिनो ऐसिड "पेप्टाइड बॉन्ड" से जुडे इसकी संभावना:
एमिनो ऐसिड एकदूसरे के साथ विविध प्रकार के रासायणिक बॉन्ड से जुड सकते है. अगर उपयोगी प्रोटीन का निर्माण होना हो तो श्रृंखला में सभी एमिनो ऐसिड 'पेप्टाइड बॉन्ड' नामक विशे ा रासायणिक बॉन्ड से ही जुडे होने चाहिए. यह गिनती की गई है कि एमिनो ऐसिड अन्य रासायणिक बॉन्ड से नही लेकिन पेप्टाइड बॉन्ड से जुडे इसकी संभावना 50: है. इसके सम्बन्ध में:

– दो एमिनो ऐसिड 'पेप्टाइड बॉन्ड' से जुडे इसकी संभावना त्र 1/2
–सभी 500 एमिनो ऐसिड पेप्टाइड बॉन्ड से जुडे इसकी संभावना त्र $1/2^{499}$ त्र $1/10^{150}$
त्र 10^{150} में 1 चान्स

कुल संभावना **त्र $1/10^{650}$ $1/10^{150}$ $1/10^{150}$ त्र $1/10^{950}$**

त्र 10^{950} में 1 चान्स

रखने के लिए उसे अपने प्राकृतिक आवास से अलग करना होगा और बहुत खास परिस्थितियों के तहत उसकी रक्षा करनी होगी। वरना पृथ्वी पर प्राकृतिक परिस्थितियों के प्रभाव में वह या तो विघटित हो जायेगा या अन्य ऐसिड, ऐमिनो ऐसिड या रासायनिक संयोजनो से जुड़कर अपने विशिष्ट गुणों को गँवा बैठेगा और एक संपूर्ण रूप से अलग तथा अर्थहीन पदार्थ में परिवर्तित हो जायेगा।

जीवन की उत्पत्ति के बारे में क्रमिक–विकास का व्यर्थ कोलाहल

"सजीव सबसे पहले किस तरह से पैदा हुआ" यह प्रश्न क्रमिक–विकासवादियों के लिए इतना बड़ा गतिरोध बना हुआ है कि वे इस विषय को छूने की भी कोशिश नहीं करते है।" "पानी में कुछ रैन्डम (इत्तेफाकी) घटनाएं घटीं और प्रथम सजीव इसी तरह से पैदा हुआ" ऐसा कह कर वे इस प्रश्न को टालने की कोशिश करते हैं। वे ऐसे विघ्न में फंस गये हैं जिसमें से निकलने का कोई मार्ग उन्हे दिखाई नहीं देता। क्रमिक–विकास की जीवाश्म विज्ञान सम्बन्धित दलीलों के बावजूद इस विषय में अपनी दलीलों का समर्थन करने के लिए तोड़मरोड़ और गलत धारणाओं को प्रस्तुत करने के लिए उनके पास कोई जीवाश्म मौजूद नहीं हैं। इसलिए प्रारंभ से ही क्रमिक–विकास के सिद्धांत को नकारा जा सकता है।

इसके अलावा एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु है जो हमें ध्यान में रखना चाहिए : अगर क्रमिक–विकास के सिद्धांत में एक भी कदम गलत साबित होता है तो पूरे सिद्धांत को बिल्कुल गलत और अयोग्य मानना पर्याप्त है। जैसे कि, प्रोटीन का इत्तफ़ाक से निर्माण करना असंभव है ऐसा साबित करने पर क्रमिक–विकास के आगामी चरणों के बारे में सभी दावे भी गलत सिद्ध हो जाते हैं। इसके बाद मानव और एप की कुछ खोपडियां लेकर उनके बारे में धारणायें बांधते रहना अर्थहीन हो जाता है।

निर्जीव पदार्थ में से जिंदा सजीव किस तरह से अस्तित्व में आये यह वो मुद्दा था जिस पर काफ़ी लम्बे समय तक क्रमिक–विक. ासवादी की बात करना भी नहीं चाहते थे। हालांकि, लगातार टाले गये प्रश्न का जवाब देने का समय आया और 20वीं सदी के दूसरे तिमाही में प्रयोगों के सिलसिले से इस सुलगते सवाल को शांत करने के प्रयास किये गये।

मुख्य सवाल था : पृथ्वी पर आदिकालीन वातावरण में पहली जीवित कोशिका किस तरह से पैदा हुई हो सकती है? दूसरे शब्दों में कहें तो इवोल्युशनिस्ट्स इसके लिए किस प्रकार का स्पष्टीकरण पेश कर सकते हैं?

इस प्रश्न का उत्तर प्रयोगों द्वारा खोज़ने का प्रयास शुरू हुआ। इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक और संशोधनकर्त्ताओं ने प्रयोगशालाओं में प्रयोग किये जिनकी दिशा इन प्रश्नों के जवाब ढूंढ़ने की ओर थी लेकिन इससे कोई खास दिलचस्पी पैदा नहीं हुई। जीवन की उत्पत्ति के बारे में सबसे प्रतिष्ठित अध्ययन मिलर एक्सपरिमेंट है जो 1953 में अमेरिकी शोधकर्त्ता स्टैनली मिलर ने किया था। (शिकागो युनिवर्सिटी में मिलर के मार्गदर्शक हैरोल्ड युरी के योगदान की वज़ह से यह प्रयोग "युरी–मिलर" एक्सपरिमेंट के नाम से भी जाना जाता है।)

यह प्रयोग इवोल्युशनिस्टस के लिए एकमात्र प्राण है जिससे वे कथित रूप से "आण्विक क्रमिक–विकास धारणा" को साबित कर सकते हैं; वे इसे जीवन की नींव डालने वाली कथित क्रमिक–विकास की प्रक्रिया के प्रथम चरण के रूप में पेश करते हैं। इस प्रयोग को आज आधी सदी से भी ज्यादा समय गुज़र चुका है और बड़े–बड़े तकनीकी आविष्कार हुए हैं फिर भी किसी ने भी इस विषय में ज्यादा प्रगति नहीं की है। बावजूद इसके किताबों में मिलर के प्रयोग को आज भी सजीवों की सबसे पुरानी पीढ़ी के क्रमिक–विकास की व्याख्या के तौर पर पढ़ाया जाता है। ऐसे अध्ययन उनकी धारणा को समर्थन देने के बजाए इसका विरोध करते हैं, इस हकीकत से अनभिज्ञ इवोल्युशनिस्ट शोधकर्त्ता ऐसे प्रयोग करने से बचते हैं –

मिलर का प्रयोग

स्टैनली मिलर का उद्देश्य अपने प्रयोग से यह दिखाना था कि प्रोटीन के बिल्डींग ब्लॉक माने जाने वाले एमिनो ऐसिड अरबों साल पहले जीवनहीन पृथ्वी पर "संयोग" से पैदा हुए हो सकते हैं।

अपने प्रयोग में मिलर ने ऐमोनिया, मिथैनम हाइड्रोज़न और पानी की वाष्प का बना एक वायु का मिश्रण लिया जो उसकी धारणा के मुताबिक शायद आदिकालीन पृथ्वी पर अस्तित्व में था (यह बात बाद में अवास्तविक सिद्ध हुई)। प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत गैसें एक–दूसरे से प्रक्रिया नहीं करतीं इसलिए इन गैसों के बीच प्रतिक्रिया पैदा करने के लिए उसने मिश्रण में ऊर्जा को शामिल किया। आदिकालीन वातावरण में बिज़ली के माध्यम से इस ऊर्जा का संचार हुआ होना चाहिए यह मानकर मिलर ने विद्युत प्रवाह का उपयोग किया।

मिलर ने एक हफ्ते के लिए इस गैसीय मिश्रण को 100 ह तापमान पर गरम किया और उसमें विद्युत प्रवाह जारी किया। एक हफ्ते के बाद पात्र के निचले भाग में पैदा हुए रसायनों का मिलर ने विश्लेषण किया और अवलोकन किया कि 20 में से तीन एमिनो एसिड जो प्रोटीन के बुनियादी घटक होते हैं, का संश्लेषण हुआ था।

इस प्रयोग ने इवोल्युशनिस्ट्स लोगों में बड़ा रोमांच पैदा किया और उसका प्रचार एक अद्भुत सफ़लता के रूप में किया गया। इसके अलावा, हर्ष की मदहोशी की स्थिति में कई प्रकाशकों ने ऐसे टाइटल छापे : "मिलर ने जीवन बनाया"। हालांकि, मिलर ने जिसका संश्लेषण किया था वे सिर्फ कुछ "निर्जीव" अणु थे।

इस प्रयोग से उत्साहित इवोल्युशनिस्ट्स ने तुरंत नये दृश्यलेख पैदा किये। एमिनो ऐसिड के विकास के बाद आने वाले संभावित चरणों के बारे में जल्दबाज़ी में नयीं धारणायें बनाई गईं। संभवतः एमिनो ऐसिड ने बाद में संयोग से सही क्रम में इकट्ठे होकर प्रोटीन का निर्माण किया था। संयोग से पैदा हुए कुछ प्रोटीन ने अपने आपको कोशिका के झिल्ली में ढ़ाला। जो "किसी प्रकार से" अस्तित्व में आई और आदिकालीन कोशिका बनाई। उसके बाद कोशिकाएं कुछ समय बाद पास आईं और बहुकोशिकीय सजीव बनायें। हालांकि,

मिलर का प्रयोग और कुछ नहीं किंतु एक ढ़ोंग था और कई पहलुओं में यह प्रयोग झूठा साबित हो चुका है।

मिलर का प्रयोग एक ढोंग के अलावा कुछ नहीं था

मिलर का प्रयोग यह दिखाने के लिए था कि एमिनो ऐसिड आदिकालीन पृथ्वी जैसी परिस्थितिओं में अपने आप पैदा हो सकते है लेकिन कई मुद्दे ऐसे है जो इस प्रयोग की असंगतताओं को उजागर करते हैं :

1. "कॉल्ड ट्रेप" नामक मैकेनिज़म का इस्तेमाल करके मिलर ने एमिनो ऐसिड के पैदा होने के बाद उन्हें तुरंत उस पर्यावरण से अलग कर दिया। अगर उसने ऐसा न किया होता तो एमिनो ऐसिड जिस वातावरण और जिन परिस्थितियों में पैदा हुए थे उन्हीं परिस्थितियों और वातावरण की वज़ह से इन अणुओं का तुरंत नाश हुआ हो जाता।

निःसंदेह अलग करने के लिए इस प्रकार की जाग्रत व्यवस्था (मैकेनिज़म) का आदिकालीन पृथ्वी पर अस्तित्व नहीं था। ऐसे मैकेनिज़म के बगैर अगर एक भी एमिनो ऐसिड पाया गया होता तो भी उसका तत्काल विनाश हो गया होता। रसायनविद रिचर्ड ब्लीस ने इस अवलोकन के साथ इस विरोधाभास की पुष्टि की : "असल में इस ट्रेप के बगैर ऊर्जा स्त्रोत ने रासायनिक उत्पादन को नष्ट कर दिया होता।"115

और अपने पहले के प्रयोगों में कॉल्ड ट्रेप के बिना इन्हीं पदार्थों का उपयोग करके मिलर एक भी एमिनो ऐसिड का अणु नहीं बना पाये थे।

2. मिलर ने अपने प्रयोग में जो आदिकालीन वातावरण पैदा करने का प्रयास किया वह वास्तविक नहीं है। 1980 के दशक के सालों में वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हुए कि मिथैन और ऐमोनिया के बदले इस कृत्रिम वातावरण में नाइट्रोज़न और कार्बन डायोक्साइड का इस्तेमाल किया जाना चाहिए था। लम्बे समय की चुप्पी के बाद मिलर ने खुद भी यह कबूल किया कि अपने प्रयोग में उसने जिस वातावरण का उपयोग किया था वह वास्तविक नहीं था।116

तो फिर मिलर ने क्यों इन गैस के उपयोग पर जोर दिया? जवाब सरल है : ऐमोनिया के बगैर किसी भी एमिनो ऐसिड का संश्लेषण करना नामुमकिन था। डिस्कवर मैगज़िन में प्रकट हुए लेख में केविन मेक कीन इसके बारे में बात करते हैं :

मिथैन और ऐमोनिया के मिश्रण के साथ मिलर और युरी ने पृथ्वी पर मौजूद प्राचीन वातावरण का अनुकरण किया। उनके मुताबिक पृथ्वी पर धातु, पत्थर और बर्फ़ का सही एकरूप मिश्रण था। हालांकि, हाल ही में हुए अध्ययनों से यह पता चला है कि उस वक्त पृथ्वी बहुत गरम थी और वह पिघले हुए नीकल और लोहे से बनी थी। इसलिए, उस समय का रासायनिक वातावरण ज्यादातर नाइट्रोजन (छ2), कार्बन डायोक्साइड (ब्2) और पानी की वाष्प (भ्2व) का बना था। हालांकि यह सब पदार्थ ऑर्गेनिक अणु के निर्माण के लिए यह मिथैन और ऐमोनिया जितने योग्य नहीं हैं।117

अमेरिकी वैज्ञानिक जे पी फेरिस और सी टी चेन ने कार्बन डायोक्साइड, हाइड्रोजन, नाइट्रोजन और पानी की वाष्प वाले वातावरण के साथ मिलर के प्रयोग का पुनरावर्तन किया और वे एक भी एमिनो ऐसिड अणु प्राप्त नहीं कर सके।118

3. मिलर के प्रयोग को अयोग्य साबित करने वाला अन्य महत्त्वपूर्ण मुद्दा यह है कि जिस वक्त एमिनो ऐसिड का निर्माण हुआ उस वक्त के वातावरण में इतना ऑक्सिज़न था जो सभी एमिनो ऐसिड को नष्ट करने के लिए काफ़ी था। मिलर द्वारा नजरअंदाज़ की गई यह हकीकत को ऑक्सिडाइज़्ड लोहे और यूरेनियम के अवशेषों ने उजागर किया जो

3.5 अरब साल पुरानी चट्टानों में मिले थे।119

कुछ अन्य खोजें भी मिली हैं जो बताती हैं कि उस वक्त वातावरण में ऑक्सिजन की जो मात्रा थी वो इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा किये गये दावों से बहुत अधिक थी। अध्ययन यह भी बताता है कि उस समय पृथ्वी जिन पराबैंगनी विकिरण की असर के तहत थी वे इवोल्युशनिस्ट्स के अंदाज से 10000 गुना ज्यादा थी। इन तेज़ विकिरणों ने अनिवार्य रूप से पानी की वाष्प और कार्बन डायोक्साइड का वातावरण में विघटन करके ऑक्सिज़न को मुक्त किया होगा।

यह स्थिति मिलर के प्रयोग को संपूर्ण रूप से नकारती है जिसमें ऑक्सिज़न को बिल्कुल ध्यान में नहीं लिया गया था। अगर इस प्रयोग में ऑक्सिज़न का इस्तेमाल हुआ होता तो मिथैन, कार्बन डायोक्साइड और पानी, ऐमोनिया, नाइट्रोजन और पानी में विघटित हुए होते। दूसरी ओर, जहां ऑक्सिजन नहीं था ऐसे वातावरण में ऑज़ोन का स्तर भी नहीं होगा। इसलिए एमिनो ऐसिड का तुरंत नाश हो गया होता क्योंकि ओज़ोन के स्तर बिना वे तेज़ पारबैंगनी विकिरणों की असर में आते। दूसरे शब्दों में कहें तो आदिकालीन दुनिया में ऑक्सिजन के साथ या उसके बिना एमिनो ऐसिड के लिए वातावरण घातक सिद्ध हुआ होता।

4. मिलर के प्रयोग के अंत में कई ऑर्गेनिक ऐसिड का निर्माण हुआ था जिनके गुणधर्म सजीवों की संरचना और कार्य के लिए हा. निकारक है। अगर एमिनो एसिड को अलग नहीं किया गया होता और इन रसायनों के साथ उसी वातावरण में उन्हें छोड़ दिया गया होता तो रासायनिक प्रक्रियाओं के जरिए उनका विनाश और दूसरे संयोजनो में उनके रूपांतरण पर रोक नहीं लगाई जा सकती थी।

इसके अलावा प्रयोग के अंत में बड़ी तादात में राइट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड उत्पन्न हुए थे।120 इन एमिनो ऐसिड के अस्तित्व ने सिद्धांत को अपने ही सम्बन्ध में नकार दिया है क्योंकि राइट–हैन्डेड एमिनो ऐसिड सजीवों के संयोजन में कार्य नहीं कर सकते। उपसंहार यह है कि मिलर के प्रयोग में जिन संयोगों में एमिनो ऐसिड का निर्माण हुआ था वह जीवन के लिए अनुकूल नहीं थे। असल में इस माध्यम ने एक अम्लीय (ऐसिडिक) मिश्रण का रूप लिया और प्राप्त हुए उपयोगी अणु का नाश किया और उन्हें ऑक्सिडाइज़ किया।

ताजा इवोल्युशनिस्ट स्त्रोतो में मिलर के प्रयोग पर विवाद है
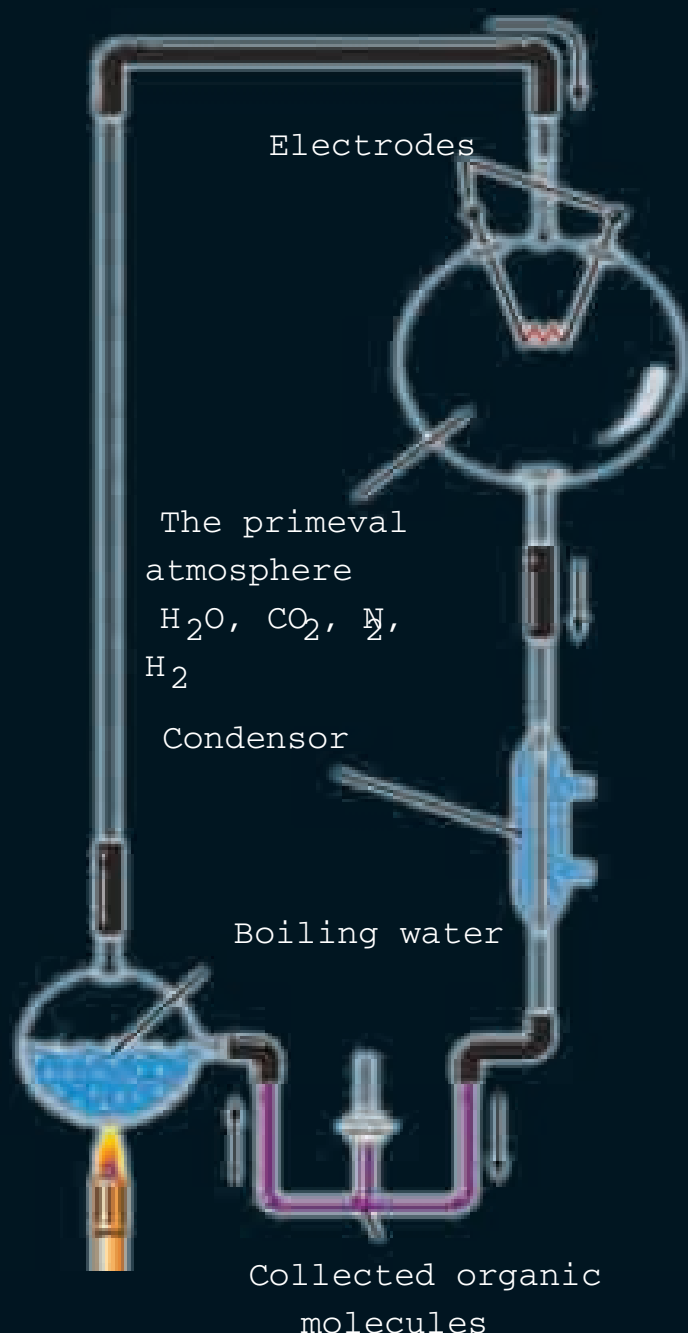
आज खुद इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक भी मिलर के प्रयोग को कोई महत्व नहीं देते है. मशहूर इवोल्युशनिस्ट साइंस जर्नल अर्थ के 1998 के अंक में 'लाइफ्स क्रुसिबल' ी र्षिकवाले लेख में यह निवेदन छपे थे:

भूविज्ञानी अब मानते है कि आदिकालीन वातावरण विशे ातः सिर्फ कार्बन डायोक्साइड और नाइट्रोजन का बना था. यह वो वायु है जो 1953 के प्रयोग में इस्तेमाल किये गये वायुओ से कम प्रतिक्रियाशील है. और अगर मिलर के कथित वातावरण का अगर अस्तित्व होता भी तो जरूरी रासायणिक बदलावो द्वारा एमिनो ऐसिड को प्रोटीन जैसे ज्यादा जटिल संयोजनो या पॉलिमर में बदलने के लिए आप एमिनो ऐसिड जैसे सरल अणु कहां से लायेंगेघ खुद मिलर इस मुद्दे पर हार मानते हुए निराशा से कहते है, "यह एक बडी चुनौती है. आप पॉलिमर्स कैसे बनायेंगे? यह आसान नहीं है."1

जैसा कि हमने आगे देखा है, आज खुद मिलर कबूल करते है कि उनका प्रयोग जीवन के उदभव का कोई खुलासा नहीं दे पाता है. इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिको ने पहले इस प्रयोग का स्वागत किया था वह यही दिखाता है कि क्रम विकास की थीअरि कितनी समस्याओ से झूझ रही है.

नेशनल ज्यॉग्रोफिक के मार्च 1998 के अंक में 'पृथ्वी पर जीवन का उदगम' ी र्षिकवाले लेख में यह टिप्पणी की गई थी:

कई वैज्ञानिको को अब संदेह है कि आदिकालीन वातावरण मिलर की धारणा से अलग था. वे मानते थे कि यह वातावरण हाइड्रोजनए मिथैन और ऐमोनिया के बदले कार्बन डायोक्साइड और नाइट्रोजन का बना था. यह रसायणशास्त्रीओ के लिए बुरी खबर है. जब वे कार्बन डायोक्साइड और नाइट्रोजन के मिश्रण में चिनगारी भडकाने की कोशिश करते है तो उन्हे बहुत नगण्य मात्रा में ऑर्गेनिक अणु मिलते है जो पानी से भरे स्विमिंग पूल में खुराकी रंग की एक बुंद मिलाने बराबर है. इतने फीके सूप में से जीवन का उदभव हुआ होगा यह कल्पना करना विज्ञानीओ के लिए मुश्किल है. 2

संक्षेप में, ना ही मिलर का प्रयोग ना ही उसके बाद किया गया कोई प्रयोग पृथ्वी पर जीवन के उदभव को समझा पाता है. अब तक किया गया संशोधन यही दिखाता है कि जीवन संयोग से पैदा होना नामुमकिन है और इस तरह से यह जीवन के सृजन की हकीकत की पुि ट होती है.

1.अर्थ, "लाइफ्स क्रुसिबल", फरवरी 1998, पृ.34
2.नेशनल ज्योग्रोफिक, "द राइज़ ऑफ लाइफ ऑन अर्थ", मार्च 1998, पृ.68

यह सब तथ्य एक ठोस सत्य को दर्शाता है : मिलर का प्रयोग इस दावे को प्रमाणित करने में असमर्थ है कि जीवन पृथ्वी की आदिकालीन परिस्थितियों का बीच संयोग से पैदा हुआ। पूरा प्रयोग एमिनो ऐसिड के संश्लेषण के लिए किये गये आयोजित और नियंत्रित प्रयोग के अलावा और कुछ नहीं हो सकता है। प्रयोग में इस्तेमाल की गई गैसों की मात्राा और प्रकार एमिनो ऐसिड के निर्माण में अनुकूल हो, ऐसा चयन जानबूझकर किया गया था। इस सिस्टम को दी गई ऊर्जा बहुत ज्यादा भी नहीं थी और बहुत कम भी नहीं थी बल्कि आवश्यक प्रतिक्रिया उत्पन्न हो सके इस प्रकार से उसकी मात्रा तय की गई थी। प्रायोगिक उपकरण को अलग किया गया था जिससे एमिनो ऐसिड के निर्माण में रुकावट डालने वाले हानिकारक, विनाशक या अन्य किसी प्रकार के तत्वों का रिसाव न हो सके। आदिकालीन पृथ्वी पर जिन तत्वों की मौजूदगी की संभावना है और जिनकी वज़ह से रासायनिक प्रक्रिया का रुख बदल सकता था, वैसा कोई भी तत्व, खनिज या संयोजन को प्रयोग में शामिल नहीं किया गया था। ऑक्सिडेशन के कारण एमिनो ऐसिड के निर्माण में बाधा डालने की क्षमता वाला ऑक्सिज़न इन विनाशक तत्वो में से एक ही तत्व है। प्रयोगशाला की ऐसी आदर्श परिस्थितियों में उत्पन्न हुए एमिनो ऐसिड के लिए भी "कोल्ड ट्रेप" मैकेनिज़म के बिना टिक पाना और उसके विनाश को रो. कना असंभव था।

असल में अपने प्रयोग से मिलर ने क्रमिक–विकास के उस दावे को ढ़ेर कर दिया कि "जीवन अजाग्रत संयोगो के परिणामस्वरूप पैदा हुआ"। इसका कारण यह है कि अगर प्रयोग कुछ साबित भी करता है तो वो यह कि एमिनो ऐसिड केवल प्रयोगशाला के नियंत्रित वातावरण में ही बनाये जा सकते हैं जहां सभी परिस्थितियां जाग्रत हस्तक्षेप के साथ विशिष्ट प्रकार से रची गई होती हैं। मतलब, जीवन बनाने वाली शक्ति अजाग्रत संयोग से नहीं किंतु जाग्रत सृजन से जुड़ी होती है।

इस स्पष्ट सत्य को इवोल्युशनिस्ट्स स्वीकार नहीं करते क्योंकि वे हठधर्मता के साथ अपने पूर्वाग्रहों से चिपके हुए हैं जो बिल्कुल अवैज्ञानिक है। दिलचस्प बात यह है कि अपने विद्यार्थी स्टैनली मिलर के साथ मिलर प्रयोग का आयोजन करने वाले हैरोल्ड युरी ने इस विषय पर यह स्वीकार किया :

हम सभी लोग जो जीवन की उत्पत्ति का अध्ययन करते हैं, महसूस करते हैं कि है कि हम इस विषय के अंदर जितना ज्यादा झांकने की कोशिश करते हैं उतना ज्यादा हमें महसूस होता है कि यह विषय बहुत पेचीदा है। श्रृद्धा के रूप में हम मानते हैं कि इस ग्रह पर जीवन का उद्भव निर्जीव पदार्थ में से हुआ। ऐसा हो सकता है यह मानना हमारे लिए मुश्किल है क्योंकि यह बहुत जटिल है।

आदिकालीन पृथ्वी का वातावरण और प्रोटीन

अपनी सभी असंगतताओ के बावजूद एमिनो ऐसिड के उद्भव के प्रश्न पर इवोल्युशनिस्ट स्रोत मिलर के प्रयोग का संदर्भ देते हैं और जानबूझ कर गलत व्याख्या करके धोखा देने की कोशिश करते हैं। इस अयोग्य प्रयोग के प्रभाव में लोगों को लाकर यह बताना चाहते हैं कि इस अयोग्य प्रयोग के द्वारा यह मुद्दा बहुत पहले हल किया जा चुका है, वे क्रमिक–विकास की अमान्यता को छुपाना चाहते हैं।

हालांकि, जीवन के उदभव के दूसरे चरण को समझाने की कोशिश में इवोल्युशनिस्टस एमिनो ऐसिड के निर्माण से भी बड़ी समस्या का सामना करते हैं। यह समस्या है जीवन के बिल्डींग ब्लॉक माने जाने वाले प्रोटीन के उद्भव की, जो एक–दूसरे के साथ खास क्रम में जुड़ने वाले सैकड़ों प्रकार के एमिनो ऐसिड के बने हैं।

प्रोटीन प्राकृतिक परिस्थितिओं के तहत संयोग से पैदा हुए थे ऐसा दावा करना उस दावे से भी ज्यादा अवास्तविक और अतार्किक है कि एमिनो ऐसिड संयोग से पैदा हुए थे। इससे पहले के पन्नों पर हमने संभावना की गिनतिओं के साथ प्रोटीन के निर्माण के लिए सही क्रम में एमिनो ऐसिड के संयोग से जुड़ने की गणितीय असंभावना को देखा था। अब हम आदिकालीन पृथ्वी की परिस्थितियों के तहत रासायनिक रूप से प्रोटीन के निर्माण की संभावना की जांच करेंगे।

प्रोटीन संश्लेषण पानी में संभव नहीं है

जैसा कि हमने पहले देखा, प्रोटीन के निर्माण के लिए संयोजित होते समय एमिनो ऐसिड "पेप्टाइड बॉन्ड" नामक विशिष्ट बॉन्ड एक–दूसरे के साथ बनाते हैं। इस पेप्टाइड बॉन्ड के निर्माण के समय पानी का अणु मुक्त होता है।

यह तथ्य कि आदिकालीन जीवन पानी में उत्पन्न हुआ इस इवोल्युशनिस्ट की व्याख्या का निश्चित रूप से खण्डन करती है, क्योंकि रसायनशास्त्र में "ल चटेलियर सिद्धांत" के मुताबिक पानी को मुक्त करने वाली प्रक्रिया (कन्डेंसेशन, घनीकरण प्रक्रिया) सजल वातावरण में नहीं हो सकती हैं। ऐसी प्रक्रिया सजल वातावरण में होने की संभावना (चान्स) सभी रासायनिक प्रक्रियाओं में से "सब से कम संभावनावाली" प्रक्रिया मानी जाती है।

जहां जीवन के प्रारंभ होने का और एमिनो ऐसिड की उत्पत्ति का दावा किया जाता है वह समुद्र एमिनो ऐसिड के लिए प्रोटीन निर्माण का अनुकूल माध्यम नहीं है। दूसरी ओर, अपने मन को बदलना और जीवन का उद्भव जमीन पर हुआ यह दावा करना इवोल्युशनिस्ट्स के लिए अतार्किक होगा क्योंकि समुद्र और महासागर ही ऐसा वातावरण उपलब्ध करा सकते हैं जहां एमिनो ऐसिड की पराबैंगनी विकिरणों से रक्षा की जा सकें। जमीन पर पराबैंगनी विकिरण उन्हें नष्ट कर देंगे। ल चटेलियर सिद्धांत समुद्र में जीवन के उद्भव के दावे का आस्वीकार करता है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत को दुविधा में डालने वाली यह एक और बात है।

एक और भीषण प्रयास : फॉक्स का प्रयोग

उपर्युक्त दुविधा से खड़ी हुई चुनौती का सामना करने के लिए इवोल्युशनिस्ट्स ने इस "पानी की समस्या" (जो निश्चित रूप से उनकी थीअरि का खण्डन करती है) पर आधारित अवास्तविक द्रश्यलेख ढूंढ़ निकालने की कोशिशें शुरू की। सिडनी फॉक्स इनमें से बहुत मशहूर शोधकर्ता थे। फॉक्स ने इस समस्या का हल ढूंढने के लिए निम्नलिखित सिद्धांत को आगे बढ़ाया। उनके मुताबिक आदिक. ालीन समुद्र में निर्माण के बाद तुरंत प्रथम एमिनो ऐसिड को ज्वालामुखी के पास कुछ खड़ी चट्टान तक लाया गया होगा। तापमान क्वथनांक (बोइलिंग प्वाइंट) से ज्यादा होने पर चट्टान पर उपस्थित एमिनो ऐसिड समेत इस मिश्रण में उपस्थित पानी का वाष्पीकरण होना चाहिए। इस तरह जो "एमिनो ऐसिड" सूखे होंगे उन्हें जुड़कर प्रोटीन का निर्माण किया होना चाहिए।

हालांकि, इस "जटिल" स्पष्टीकरण को इसी क्षेत्र के कई लोग स्वीकार नहीं करते हैं। एमिनो ऐसिड इतने ऊंचे तापमान को सह नहीं सकते। अनुसंधान ने इस बात की पुष्टि की है कि ऊंचे तापमान पर एमिनो ऐसिड तुरंत नष्ट हो जाते हैं।

लेकिन फॉक्स ने हार नहीं मानी। उसने प्रयोगशाला में "बहुत ही विशिष्ट परिस्थितियों के तहत" एमिनो ऐसिड को सूखे वातावरण में गरम करके शुद्ध एमिनो ऐसिड संयोजित किये। एमिनो ऐसिड का संयोजन हुआ लेकिन प्रोटीन के अणु प्राप्त नहीं हो सके। आखिर में उन्हें एमिनो ऐसिड की सरल और अव्यवस्थित छल्ले मिले जो एक–दूसरे के साथ निरंकुश तरीके से जुड़ी हुई थी और यह छल्ले किसी भी जीवित प्रोटीन के साथ समानता नहीं रखती थी। इसके अलावा अगर फॉक्स ने एमिनो ऐसिड को स्थिर तापमान पर रखा होता तो यह निरर्थक लूप्स का भी विघटन हो गया होता।122

प्रयोग को निरस्त करने वाला अन्य बिंदु यह था कि मिलर के प्रयोग के आखिर में जो निरर्थक उत्पादक मिले थे उसका फॉक्स ने उपयोग नहीं किया था। इसके बदले उसने सजीवों से लिये शुद्ध एमिनो ऐसिड का इस्तेमाल किया। इस प्रयोग को मिलर के प्रयोग को जारी रखने वाले प्रयोग के रूप में माना जाता था। इसलिए मिलर के प्रयोग में जो परिणाम मिले थे वहीं से इसकी शुरूआत होनी चाहिए थी। फिर भी ना तो फॉक्स ना ही किसी अन्य शोधकर्ता ने मिलर द्वारा बनाये किये गये निरर्थक एमिनो ऐसिड का उपयोग किया।123

इवोल्युशनिस्ट्स सूत्रों नें फॉक्स के प्रयोग का स्वागत नहीं किया क्योंकि यह स्पष्ट था कि उसने जो एमिनो ऐसिड की निरर्थक श्रृंखला पाई थी (जिसे उसने "प्रोटीनोइड" नाम दिया) वे प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत पैदा नहीं हो सकती थी। प्रोटीन के उदभव की समस्या सुलझ नहीं पायी। लोकप्रिय विज्ञान मैगज़िन केमिकल इंजिनियरिंग न्यूज़ में 1970 में छपे एक लेख में फॉक्स के प्रयोग का इस प्रकार वर्णन किया गया था :

उपर के चित्र में दिखाई गई आदिकालीन पृथ्वी पर जीवन का उदभव एक साथ हुआ होगा ऐसी कल्पना इवोल्युशनिस्टस के सब से गंभीर झूठो में से एक है. मिलर के प्रयोग जैसे अन्य प्रयोगो के जरिए उन्होने यह दावे साबित करने का प्रयास किया. फिर भी उन्हे हार झेलनी पडीः 1970 के दशक में मिले परिणामो ने यह साबित किया कि वे जिस आदिकालीन वातावरण की बात करते है वह जीवन पनपने लिए बिलकुल योग्य नहीं था.

पृथ्वी के आदिकालीन चरणों में जिन परिस्थितियों का बिल्कुल अस्तित्व नहीं था ऐसी परिस्थितियों के तहत बहुत ही विशिष्ट हीटींग तकनीकों का उपयोग करके सिडनी फॉक्स और अन्य शोधकर्ता "प्रोटीनोइड" के आकार में एमिनो ऐसिड को जोड़ने में कामयाब रहे। इसके अलावा यह अणु सजीवों में पाए जाने वाले नियमित प्रोटीन जैसे बिल्कुल नहीं हैं। वे मात्र निरर्थक और अनियमित रासायनिक दाग हैं। अगर ऐसे अणु आदि काल में पैदा हुए होते तो भी इनका निश्चित रूप से नाश हुआ होता।124

सचमुच, फॉक्स को जो प्रोटीनोइड मिले वे वास्तविक प्रोटीन की संरचना और कार्य दोनों से संपूर्ण रूप से अलग थे। प्रोटीन और प्रोटीनोइड के बीच का फर्क एक हाई–टेक मशीन और एक कच्चे लोहे के ढ़ेर के बीच फर्क जैसा है।

इसके अलावा इस एमिनो ऐसिड की श्रृंखलायें भी आदिकालीन वातावरण में जिंदा रह सकती थी। इसकी भी कोई संभावना नहीं है। पारबैंगनी प्रकाश और अन्य अस्थायी प्राकृतिक परिस्थितियों के द्वारा हानिकर और विनाशक असरों से ये प्रोटीनोइड का विघटन हो गया होता। ल चटेलियर सिद्धांत के मुताबिक पानी के अंदर एमिनो ऐसिड का निर्माण होना असंभव है जहां पारबैंगनी किरण उन तक पहुँच नहीं पायेंगे। इन तथ्यों को सामन रखते हुए वैज्ञानिकों ने इस विचार का समर्थन छोड़ दिया कि प्रोटीनोइड जीवन का आधार है।

चमत्कारिक अणु : डीएनए

अब तक हमारी छानबीन में यह देखने को मिला है कि आण्विक स्तर पर क्रमिक–विकास का सिद्धांत गहरे संकट में फसा हुआ है। एमिनो ऐसिड के निर्माण पर इवोयुशनिस्ट्स ने बिल्कुल प्रकाश नहीं डाला है। दूसरी ओर, प्रोटीन का निर्माण एक और रहस्य बना हुआ है।

फिर भी समस्या सिर्फ एमिनो ऐसिड या प्रोटीन तक ही सीमित नहीं है : यह तो अभी सिर्फ शुरूआत है। इनके अलावा कोशिका की अत्यंत जटिल संरचना है जिसने इवोल्युशनिस्ट्स को एक और दुविधा में डाल दिया है। इसका कारण यह है कि कोशिका सिर्फ एमिनो ऐसिड की संरचना वाले प्रोटीन का ढ़ेर ही नहीं किंतु सबसे जटिल व्यवस्था है जिसे मनुष्य ने आज तक नहीं देखा है।

कोशिका की संरचना के आधार माने जाने वाले अणु के अस्तित्व का सुसंगत स्पष्टीकरण देने में क्रमिक–विकास का सिद्धांत अब भी मुश्किलों का सामना कर रहा है। यही नहीं, जीनेटिक्स का विकास और न्युक्लिक ऐसिड (डीएनए और आरएनए) की खोज़ों ने इस सिद्धांत के लिए नयी मुश्किलें खड़ी कर दी हैं। 1953 में जैम्स वॉटसन और फ्रान्सिस क्रीक ने डीएनए की आश्चर्यजनक रूप से अत्यंत जटिल सं. रचना का अपनी किताबां में उद्घाटित करके जीवविज्ञान में एक नये युग की शुरूआत की।

हमारे शरीर की सभी 100 ट्रिलियन कोशिकाओं के केन्द्र में पाये जाने वाला डीएनए नामक अणु में मानव शरीर के निर्माण की संपूर्ण ब्ल्यूप्रिन्ट (प्रतिलिपी) मौजूद होती है। शारीरिक बनावट से लेकर आंतरिक अंगो की संरचना तक व्यक्ति के सभी लक्षणों की जानकारी डीएनए के चार विशेष आधार की श्रृंखला में रिकॉर्ड हुई होती है। (यह चार आधार या बेस से डीएनए जैसा महाकाय अणु बनता है। अपने नामों के प्रथम अक्षरों के मुताबिक यह बेस ए, टी, जी और सी नाम से जाने जाते हैं। लोगो में संरचना के जो अंतर होते हैं वे इन अक्षरों की श्रृंखला की विविधता पर आधारित होते हैं। यह चार अक्षरों की बनी एक प्रकार की डाटा–बैंक है।

डीएनए में इन अक्षरों की क्रमिक व्यवस्था मनुष्य की संरचना में बहुत छोटी छोटी चीज़े तय करती है।

ऊंचाई, आंख, बाल और त्वचा का रंग जैसे लक्षण के अलावा एक कोशिका में मौजूद डीएनए में 206 हड्डियाँ, 500 मांसपेशियाँ, 100 अरब न्युरोन्स, दिमाग के न्युरोन्स के बीच में 1000 ट्रिलियन कनैक्शन्स, 97000 किलोमीटर लंबी शिराएं और मानव शरीर के 100 ट्रिलियन कोशिकाओं की डिज़ाइन होती है। डीएनए में कोडेड (संकेतों में मौजूद) जानकारी अगर हम लिखना चाहते हैं तो हमें एक महाकाय पुस्तकालय बनाना पड़ेगा जिसमें 500 पन्नोंवाली किताब के 900 खंड समा सके। ऐसे महाकाय पुस्तकालय में समाई हुई जानकारी कोशिका के केन्द्र में उपस्थित डीएनए के अणु में होती है। कोशिका का केन्द्र खुद एक मिलीमीटर के 100वें हिस्से के बराबर लम्बी कोशिका से भी काफी छोटे आकार का होता है।

डीएनए क्यों संयोग से अस्तित्व में नहीं आ सकता है?

इस बिंदु पर यह बहुत महत्त्वपूर्ण विवरण है जो ध्यान आकर्षित करता है। जीन बनाने वाले न्युक्लिओटाइड की श्रृंखला में अगर कोई त्रुटि है तो यह जीन किसी काम का नहीं रहेगा। मानव शरीर में 30000 जीन्स हैं यह ध्यान में रखते हुए यह स्पष्ट होता है कि यह जीन बनाने वाले लाखों न्युक्लिओटाइड सही श्रृंखला में संयोग से कैसे उत्पन्न हो सकते हैं? इवोल्युशनिस्ट जीववैज्ञानी फ्रैंक सेलिसबरी इस असंभावना पर इस प्रकार टिप्पणी करते हैं :

एक सामान्य प्रोटीन लगभग 300 एमिनो ऐसिड का समावेश कर सकता है। इसका नियंत्रण करने वाले डीएनए जीन की श्रृंखला में लगभग 1000 न्युक्लिओटाइड होंगे। डीएनए की श्रृंखला में चार प्रकार के न्युक्लिओटाइड होने की वजह से 1000 कडीयों वाली एक श्रृंखला 41,000 अलग–अलग रूपों में उत्पन्न हो सकती है। थोड़े बीजगणित (लोगेरिधम) का उपयोग करके यह देख सकते हैं कि 41000 त्र 10600। दस को दस से 600 बार गुणन करने पर यह जवाब मिलता है : 1 के पीछे 600 शून्य। यह आंकड़ा हमारी बुद्धिमता के दायरे से बिल्कुल बाहर है।125

41000 का आंकड़ा 10600 के बराबर है। इसका मतलब है 1 के बाद 600 शून्य। 1 के बाद अगर 12 शून्य हों तो उसे ट्रिलियन कहा जाता है। 1 के बाद 600 शून्य हो तो यह आंकडा कल्पना के बाहर की बात है। न्युक्लिओटाइड का संयोग से एकत्रित होना और आरएनए और डीएनए का निर्माण करना इस असंभावना को फ्रैंच वैज्ञानिक पॉल ओगर इस प्रकार से प्रदर्शित करते हैं :

रासायनिक प्रक्रिया द्वारा न्युक्लिओटाइड जैसे अणुओं का संयोग से निर्माण होने की जो संभावना है इसको हमें दो चरणों में बांटना

अपने प्रयोग में फॉक्स ने 'प्रोटीनोइड' नामक पदार्थ का निर्माण किया. प्रोटीनोइड एमिनो ऐसिड के रैन्डमली ईकट्ठे हुए संयोजन थे. सजीवो के प्रोटीन से विपरित यह प्रोटीनोइड बेकार और निि क्रय रसायण थे.
यहां प्रोटीनोइड कणो की ईलेक्ट्रोन माइक्रोस्कोप में अवलोकित की गई छवि दिखाई गई है.

होगा : 1) न्युक्लिओटाइड का एक के बाद एक निर्माण (जो संभव है) और 2) बहुत विशिष्ट क्रम में इनका संयोजन। दूसरा जो चरण है वह बिल्कुल असंभव है।126

कई सालों तक फ्रांसिस क्रिक आण्विक क्रमिक–विकास के सिद्धांत से सहमत रहे लेकिन आखिर में उन्हें भी यह स्वीकार करना पड़ा कि इतना जटिल अणु क्रमिक–विकास की प्रक्रिया के परिणामस्वरूप महज़ एक संयोग से अनायास अस्तित्व में नहीं आ सकता है :

एक सच्चा मनुष्य, जो मानव जाति को अब तक प्राप्त समस्त ज्ञान से सुसज्जित है, सिर्फ यही कह सकता है, कि जीवन का उदगम इस क्षण तो लगभग एक चमत्कार ही मालूम होता है।127

तुर्की इवोल्युशनिस्ट प्राध्यापक अली डेमिरसोय इस मामले में यह स्वीकार करने को विवश हो गये :

असल में प्रोटीन और न्युक्लिक ऐसिड (डीएनए–आरएनए) के निर्माण की संभावना हमारे अंदाज के दायरे से बाहर की संभावना है। इसके अलावा किसी विशिष्ट प्रोटीन की श्रृंखला का संयोग से पैदा होने की संभावना इतनी कम है कि उसे खगोलीय अगम्य परिस्थिति कहा जा सकता है।128

यहां एक बहुत दिलचस्प विरोधाभास उठ खड़ा होता है : डीएनए सिर्फ विशेष प्रोटीन (इंजाइम) की मदद से ही अपनी प्रतिलिपि

निर्जीव पदार्थ जीवन का निर्माण नहीं कर सकते

निर्जीव पदार्थ अपने आप संगठित हो सकते है और जटिल संरचनावाले सजीव को पैदा कर सकते है ऐसे दावे को साबित करने के लिए किये गये मिलर एक्सपरिमेन्ट और फॉक्स एक्सपरिमेन्ट जैसे कई इवोल्युशनिस्ट प्रयोग बनाये गये है. यह एक सरासर अवैज्ञानिक धारणा है: हर अवलोकन और प्रयोग ने निर्विवाद यह सिद्ध किया है कि पदार्थ में ऐसी कोई क्षमता नहीं होती है. मशहूर अंग्रेज अवकाशविज्ञानी और गणितज्ञ सर फ्रेड होयल इस बात पर ध्यान देते है कि किसी सहेतुक दखल के बिना पदार्थ अपने आप जीवन का निर्माण नहीं कर सकता है:

अगर ऑर्गेनिक सिस्टम को जीवन की ओर खींचनेवाले पदार्थे के कुछ बुनियादी सिद्धांत है तो प्रयोगशाला में उसका अस्तित्व दिखाना संभव होना चाहिए. उदाहरण के तौर पर आदिकालीन सूप को पेश करने के लिए कोई व्यक्ति स्विमिंग बाथ दिखा सकती है. आपको जो पसंद आये वह अजैविक प्रकृति के रसायणों से इस बाथ को भर दे. उस पर आप की पसंद के किसी भी वायु को पम्प करे या उसके अंदर से इस वायु को पसार करे और आपके मनचाहे किसी भी प्रकार के विकिरणो से इसे चमकायें. इस प्रयोग को एक साल तक चलने दे और इस बाथ में उन 2000 किण्वो (जीवित कोशिका द्वारा बननेवाला प्रोटीन) में से कितने किण्व इस बाथ में देखने को मिलते है यह देखे. मैं आप को इस प्रश्न का जवाब देकर आप को प्रयोग करने की तकलीफ और खर्च से बचाऊंगा. एमिनो ऐसिड और अन्य सरल ऑर्गेनिक रसायणो के बने कोलतारी कीचड के अलावा आप को कुछ देखने को नहीं मिलेगा.1

इवोल्युशनिस्ट जीवविज्ञानी ऐन्ड्रयु स्कॉट यही हकीकत का स्वीकार करते है:

कुछ पदार्थ ले और उसे हिलाते हुए गरम करे और इंतजार करे. यह जीनेसिस का आधुनिक संस्करण है. बाकी का काम गुरुत्वाक र्ण, विद्युतचुंबकत्व और मजबूत तथा कमजोर न्युक्लियर बलो जैसे 'बुनियादी' बलो ने पूरा किया होगा ऐसा माना जाता है. लेकिन इस कहानी का कितना हिस्सा द्रढता से स्थापित है और कितना हिस्सा आशास्पद अटकलो का बना है? असल में लगभग सभी महत्वपूर्ण कदम पर रासायणिक पुरोगामी से लेकर प्रथम स्वीकृत कोशिका तक मैकेनिज़म जो है वह या तो विवाद या संपूर्ण सम्भ्रम का वि ाय है.2

1. फ्रेड होयल, द ईन्टेलिज़न्ट युनिवर्स, न्यू यॉर्क, होल्ट, रिनेहार्ड – विंस्टन, 1983, पृ.256
2. ऐन्ड्रयु स्कॉट, "अपडेट ऑन जीनेसिस", न्यू साइंटिस्ट, वॉल्युम 106, 2 मई, 1986, पृ.30

बना सकते हैं जबकि इन प्रोटीन का संश्लेषण सिर्फ डीएनए में सांकेतिक रूप में छुपी हुई जानकारी से ही हो सकता है। एक–दूसरे पर निर्भर होने की वज़ह से प्रतिलिपि बनाते समय या तो इन दोनों का एक ही समय पर अस्तित्व होना चाहिए या उन दोंनो में से एक का किसी अन्य से पहले "सृजन" हुआ होना चाहिए। अमेरिकी माइक्रोबायोलोजिस्ट होमर जैकबसन यह टिप्पणी करते हैं :

(जीवन के प्रारंभ में) योजनाओं को तैयार करने के लिए, विद्यमान वातावरण में ऊर्जा और अंगों के निष्कर्षण के लिये, विकास की श्रृंखला के लिए आदेशों को एक साथ सभी के विकास में प्राभाविक रूप व्यवहार में लाने के लिये, निर्देशों को एक साथ उस क्षण उपस्थित होना चाहिए था। इतनी सारी घटनाओं का संयोजन अविश्वसनीय रूप से संयोगवश नहीं होता दिखाई देता। इसे अक्सर खुदाई हस्तक्षेप से सम्बन्धित बताया जाता है।129

डीएनए से जाने जानेवाले और हमारे ारीर में 100 ट्रिलियन कोशिकाओ में से हर कोशिका की नाभि में पाया जानेवाला अणु मानव ारीर के निर्माण की संपूर्ण ब्ल्युप्रिन्ट होती है. व्यक्ति के ाारीरिक देखाव से लेकर उसके अंदरूनी अंग की संरचना तक सभी लक्षणो की जानकारी डीएनए में संग्रहित होती है.

ऊपर दिया गया उद्धरण के द्वारा वॉटसन और क्रीक डीएनए की संरचना की खोज़ के दो साल बाद लिखा गया था। लेकिन विज्ञान में सभी तरह की उन्नति के बावजूद इवोल्युशनिस्ट्स के लिए यह समस्या सुलझी नहीं है। दो जर्मन वैज्ञानिक जंकर और श्रेरर ने बताया कि रासायनिक क्रमिक–विकास में यह हर अणु के संश्लेषण के लिए विशिष्ट परिस्थितियों की जरूरत पड़ती है और इन पदार्थों (जिन्हें सैद्धांतिक रूप से अलग प्रकार से बनाया जाता है) के संयोजन की संभावना शून्य है :

अब तक हमारी जानकारी में ऐसा कोई प्रयोग नहीं है जिससे हम रासायनिक क्रमिक–विकास के लिए जरूरी सभी अणुओं को प्राप्त कर सके। इसलिए, अत्यंत योग्य परिस्थितियों के अंतर्गत विभिन्न स्थानों पर विभिन्न अणु बनाना और बाद में उन्हें हाइड्रोलिसिस और फोटोलिसिस जैसे हानिकर तत्त्वों से उन्हें बचाकर प्रतिक्रिया के लिए अन्य जगह पर ले जाना जरूरी है।130

संक्षिप्त में, क्रमिक–विकास के सिद्धांत कथित रूप से आण्विक स्तर पर घटने वाले किसी भी इवोल्युशनरी चरणों को साबित करने में नाकाम रहता है। ऐसे प्रश्न के जवाब मिलने के बजाय विज्ञान की प्रगति इन प्रश्नों को और भी अधिक जटिल और विकट बना देती है।

दिलचस्प बात यह है कि ज्यादातर इवोल्युशनिस्ट्स इस मुद्दे में और ऐसी दूसरी परिकथाओं को संपूर्ण रूप से अवैज्ञानिक होने पर भी मानते हैं जैसे की वह सत्य पर आधारित थी। इवोल्युशनिस्ट्स ने सृजन के सत्य को अस्वीकार करने के लिए अपने सामने शर्त रखी है। इसलिए सृजन की हकीकत को असंभव मानने के अलावा उनके पास और कोई विकल्प नहीं है। ऑस्ट्रेलिया के मशहूर जीववैज्ञानिक माइकल डेन्टन अपनी किताब इवोल्युशन : अ थीअरि इन क्राइसीस में इस विषय की चर्चा इस तरह करते हैं :

संदेहवादी के सामने यह प्रस्ताव रखना कि उच्च सजीव प्राणी को जनेटिक प्रोग्राम में, जिसमें हजार मिलियन जानकारी के टुकड़े हैं और किताबों वाले किसी छोटे पुस्तकालय में मौजूद अक्षरों की श्रृंखला के बराबर विचारधारात्मक ढ़ांचे को यहाँ प्राथमिकता दी जाती है। जिसमें सांकेतिक रूप में मौजूद हजारों पेचीदा प्रक्रियाएं हैं जो अरबों कोशिकाओं का विकास और निर्देशन एक सजीव प्राणी के रूप में करती है। इस जैनेटिक योजना का संयोजन 'संयोग' से हुआ है, यह बात बुद्धि का अपमान है। लेकिन डार्विनवादी इस विचार को किसी भी प्रकार के संदेह बिना स्वीकार लेता है। विचारधारात्मक ढ़ांचे को यहां प्राथमिकता दी जाती है।131

इवोल्युशनिस्ट्स का एक और विफल प्रयास : "आरएनए वर्ल्ड"

सन् 1970 के दशक में हुई खोज के मुताबिक कि पृथ्वी के आदिकालीन वातावरण में विद्यमान वायुओं के मिश्रण ने एमिनो ऐसिड के संश्लेषण को असंभव बना दिया होगा, वह आण्विक क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए बहुत बड़ा झटका था। इसके बाद इवोल्युशनिस्ट्स को इस हकीकत का सामना करना पड़ा कि स्टैनली मिलर, सिडनी फॉक्स, सिरील पोन्नामपेरुमा और अन्य द्वारा किये गये "आदिकालीन वातावरण के प्रयोग" अयोग्य थे. इसी कारण से इवोल्युशनिस्टस ने 1980 के दशक में नये प्रयास शुरू किये। इसके परिणामस्वरूप "आरएनए
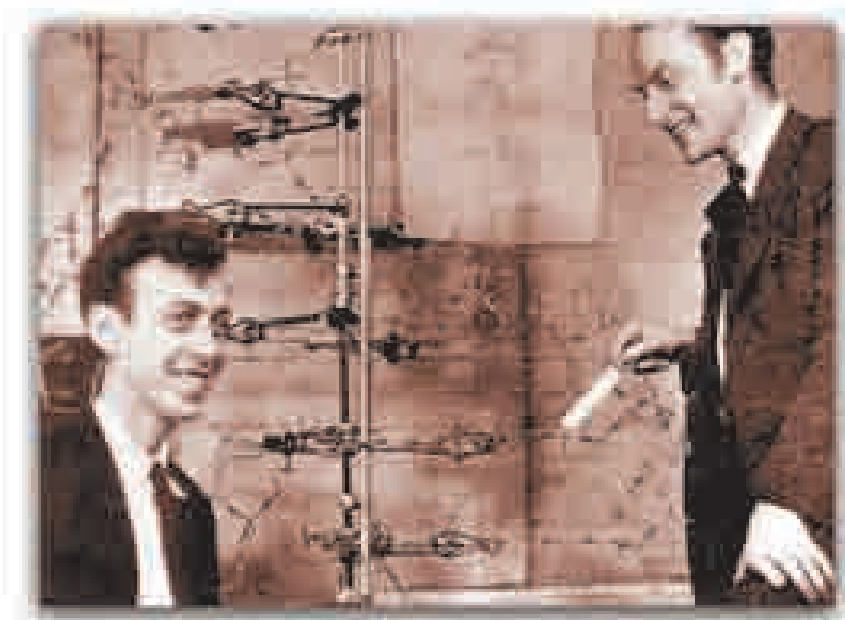
डीएनए अणु के स्टीक मॉडल के साथ वॉटसन और क्रीक

वर्ल्ड" की धारणा सामने रखी गई। इसमें यह बात पेश की गई कि प्रोटीन की जानकारी का संग्रह करने वाले आरएनए अणु प्रोटीन से पहले अस्तित्व में आये थे।

सन् 1986 में हार्वर्ड के वैज्ञानिक वॉल्टर गिल्बर्ट ने एक दृश्यलेख पेश किया जो थोमस चेक द्वारा की गई "राईबोज़ोम्स" की खोज पर आधारित था। इसके मुताबिक अपने आप की प्रतिलिपि बनाने में सक्षम आरएनए के अणु किसी प्रकार अकस्मात् से पैदा हुए। इसके बाद बाहरी प्रभावों से सक्रिय हुए आरएनए अणु ने प्रोटीन बनाना शुरू किया। इसके बाद दूसरे अणु में इस जानकारी का संग्रह करना जरूरी हुआ और किसी प्रकार से इस काम को करने के लिए डीएनए अणु का उदभव हुआ।

यह दृश्यलेख हर चरण में असंभावनाओं की श्रृंखला का बना हुआ है और बिल्कुल विश्वसनीय नहीं है। जीवन की उत्पत्ति की व्याख्या करने में यह बहुत दूर है और जिसने सिर्फ समस्या को और बड़ा कर दिया है और कई नये सवाल खडे किये है जिनके जवाब देना मुमकिन नहीं :

1. आरएनए का निर्माण करनेवाले एक भी न्युक्लिओटाइड का इत्तेफ़ाक से निर्माण हुआ होगा यह स्वीकार करना असंभव है। यह कैसे संभव है कि यह काल्पनिक न्युक्लिओटाइड एक विशिष्ट क्रम में इकट्ठे होकर आरएनए का निर्माण करे। आरएनए का इत्तेफ़ाक से निर्माण होने की असंभावना का इवोल्युशनिस्ट्स जॉन होर्गान स्वीकार करते हैं;

शोधकर्ता जैसे–जैसे आरएनए–वर्ल्ड का बारीकी से अध्ययन करते हैं वैसे–वैसे समस्या बढ़ती जाती है। आरएनए का प्रारंभ में उद्‌भव कैसे हुआ? प्रयोगशाला में भी श्रेष्ठ परिस्थिती उत्पन्न करने पर भी आरएनए और उसके घटक का संश्लेषण किया जाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी है।132

2. अगर हम मान भी लें कि इनका निर्माण संयोग से हुआ है तो भी एक ही न्युक्लिओटाइड के बने आरएनए ने किस तरह खुद को रेप्लिकेट (प्रतिलिपि) करने का निर्णय लिया होगा? और किस प्रक्रिया से आरएनए ने अपना रेप्लिकेशन किया होगा? इस सैल्फ–रेप्लिकेशन (स्वयं की प्रतिलिपि बनाना) के वक्त जिन न्युक्लिओटाइड की जरूरत होती है वह उसने कहां मिले होंगे? इवोल्युशनिस्ट माइक्रोबायोलोजिस्ट गेराल्ड जोयस और लेस्ली और जेल अपनी किताब इन द आरएनए वर्ल्ड में इस स्थिति की चर्चा करते हैं :

इस चर्चा .... ने एक पूतले के बने आदमी पर ध्यान केन्द्रित किया है : रैन्डम पोलिन्युक्लिओटाइड के सूप में से नये सिरे से पैदा हुए आरएनए अणु के सैल्फ–रेप्लिकेशन (स्वयं की प्रतिलिपी बनाने) की धारणा हमारी प्रोबायोटिक कैमिस्ट्री (वह रसायनिक विज्ञान जो जीवित प्राणी के अस्तित्व में आने से पूर्व कि प्रक्रिया अध्ययन करता है।) वर्तमान समझ के परिप्रेक्ष्य में अवास्तविक तो है ही लेकिन वह आरएनए की उत्प्रेरक क्षमता में सहज विश्वास को क्षति पहुँचायेगा।133

3. अगर हम मान भी लें कि आदिकालीन संसार में सैल्फ–रेप्लिकेटिंग आरएनए हो और आरएनए को उपयोग में लिये जाने वाले हर प्रकार के अनगिनत एमिनो ऐसिड प्राप्य थे और यह सब असंभावनायें किसी प्रकार से घटित हुईं तो भी इस परिस्थिति में एक भी प्रोटीन का निर्माण नहीं हो सकता है क्योंकि आरएनए में सिर्फ प्रोटीन की संरचना से जुड़ी जानकारी ही शामिल होती है। दूसरी ओर, एमिनो ऐसिड कच्चा माल है। फिर भी प्रोटीन के निर्माण के लिए कोई मैकेनिज़म (व्यवस्था) नहीं है। प्रोटीन के निर्माण के लिए आरएनए के अस्तित्व को पर्याप्त मान लेना ऐसी आधारहीन बात है जैसे कि कोई कार अपने आपको पुर्जे जोड़ ले अगर पुर्जों के एक ढेर पर कार बनाने का नक्शा फेंक दिया जाए। नक्शे में जो सूचनायें हैं उसके मुताबिक फैक्टरी और कार्यकर्ता पुर्जों को जोड़ें तभी कार बनती है। सिर्फ नक्शे से कार अपने आप नहीं बन जाती। इसी प्रकार आरएनए में जो ब्ल्यूप्रिंट है वह अन्य कोशिकीय घटक की सहायता के बिना अपने आप प्रोटीन नहीं बना सकती है। कोशिकीय घटक जब आरएनए में संग्रहित सूचना का पालन करेंगे तब ही यह काम हो पायेगा।

सन् 1970 के दशक में हुई खोज के मुताबिक कि पृथ्वी के आदिकालीन वातावरण में विद्यमान वायुओं के मिश्रण ने एमिनो ऐसिड के संश्लेषण को असंभव बना दिया होगा, वह आण्विक क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए बहुत बड़ा झटका था। इसके बाद इवोल्युशनिस्ट्स को इस हकीकत का सामना करना पड़ा कि स्टैनली मिलर, सिडनी फॉक्स, सिरील पोन्नामपेरुमा और अन्य द्वारा किये गये "आदिकालीन वातावरण के प्रयोग" अयोग्य थे. इसी कारण से इवोल्युशनिस्टस ने 1980 के दशक में नये प्रयास शुरू किये। इसके परिणामस्वरूप "आरएनए वर्ल्ड" की धारणा सामने रखी गई। इसमें यह बात पेश की गई कि प्रोटीन की जानक. ारी का संग्रह करने वाले आरएनए अणु प्रोटीन से पहले अस्तित्व में आये थे।
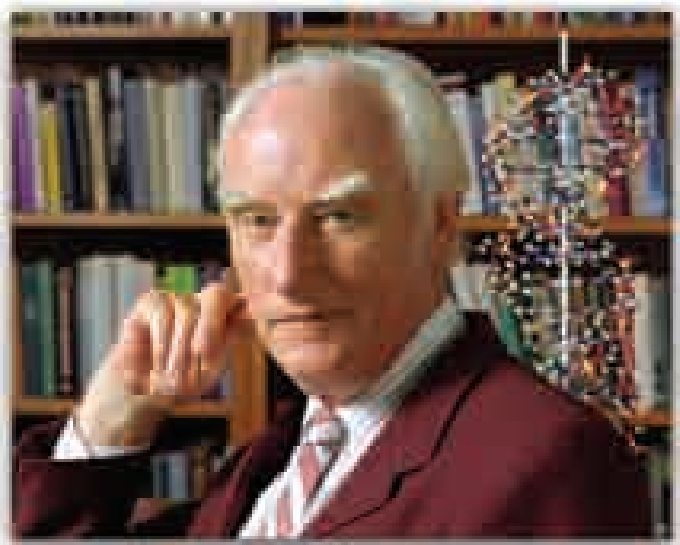
प्रोफेसर फ्रांसिस क्रीकः "जीवन का उदभव लगभग एक चमत्कार जैसा दिखता है."

सन् 1986 में हार्वर्ड के वैज्ञानिक वॉल्टर गिल्बर्ट ने एक दृश्यलेख पेश किया जो थोमस चेक द्वारा की गई "राईबोज़ोम्स" की खोज पर आधारित था। इसके मुताबिक अपने आप की प्रतिलिपि बनाने में सक्षम आरएनए के अणु किसी प्रकार अकस्मात् से पैदा हुए। इसके बाद बाहरी प्रभावों से सक्रिय हुए आरएनए अणु ने प्रोटीन बनाना शुरू किया। इसके बाद दूसरे अणु में इस जानकारी का संग्रह करना जरूरी हुआ और किसी प्रकार से इस काम को करने के लिए डीएनए अणु का उदभव हुआ।

यह दृश्यलेख हर चरण में असंभावनाओं की श्रृंखला का बना हुआ है और बिल्कुल विश्वसनीय नहीं है। जीवन की उत्पत्ति की व्याख्या करने में यह बहुत दूर है और जिसने सिर्फ समस्या को और बड़ा कर दिया है और कई नये सवाल खडे किये है जिनके जवाब देना मुमकिन नहीं :

1. आरएनए का निर्माण करनेवाले एक भी न्युक्लिओटाइड का इत्तेफ़ाक से निर्माण हुआ होगा यह स्वीकार करना असंभव है। यह कैसे संभव है कि यह काल्पनिक न्युक्लिओटाइड एक विशिष्ट क्रम में इकट्ठे होकर आरएनए का निर्माण करे। आरएनए का इत्तेफ़ाक से निर्माण होने की असंभावना का इवोल्युशनिस्ट्स जॉन होर्गान स्वीकार करते हैं;

शोधकर्ता जैसे–जैसे आरएनए–वर्ल्ड का बारीकी से अध्ययन करते हैं वैसे–वैसे समस्या बढ़ती जाती है। आरएनए का प्रारंभ में उद्भव कैसे हुआ? प्रयोगशाला में भी श्रेष्ठ परिस्थिती उत्पन्न करने पर भी आरएनए और उसके घटक का संश्लेषण किया जाना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन भी है।132

2. अगर हम मान भी लें कि इनका निर्माण संयोग से हुआ है तो भी एक ही न्युक्लिओटाइड के बने आरएनए ने किस तरह खुद को रेप्लिकेट (प्रतिलिपि) करने का निर्णय लिया होगा? और किस प्रक्रिया से आरएनए ने अपना रेप्लिकेशन किया होगा? इस सैल्फ–रेप्लिकेशन (स्वयं की प्रतिलिपि बनाना) के वक्त जिन न्युक्लिओटाइड की जरूरत होती है वह उसने कहां मिले होंगे? इवोल्युशनिस्ट माइक्रोबायोलोजिस्ट गेराल्ड जोयस और लेस्ली और जेल अपनी किताब इन द आरएनए वर्ल्ड में इस स्थिति की चर्चा करते हैं :

इस चर्चा .... ने एक पूतले के बने आदमी पर ध्यान केन्द्रित किया है : रैन्डम पोलिन्युक्लिओटाइड के सूप में से नये सिरे से पैदा हुए आरएनए अणु के सैल्फ–रेप्लिकेशन (स्वयं की प्रतिलिपी बनाने) की धारणा हमारी प्रोबायोटिक कैमिस्ट्री (वह रसायनिक विज्ञान जो जीवित प्राणी के अस्तित्व में आने से पूर्व कि प्रक्रिया अध्ययन करता है।) वर्तमान समझ के परिप्रेक्ष्य में अवास्तविक तो है ही लेकिन वह आरएनए की उत्प्रेरक क्षमता में सहज विश्वास को क्षति पहुँचायेगा।133

3. अगर हम मान भी लें कि आदिकालीन संसार में सैल्फ–रेप्लिकेटिंग आरएनए हो और आरएनए को उपयोग में लिये जाने वाले हर प्रकार के अनगिनत एमिनो ऐसिड प्राप्य थे और यह सब असंभावनायें किसी प्रकार से घटित हुईं तो भी इस परिस्थिति में एक भी प्रोटीन का निर्माण नहीं हो सकता है क्योंकि आरएनए में सिर्फ प्रोटीन की संरचना से जुड़ी जानकारी ही शामिल होती है। दूसरी ओर, एमिनो ऐसिड कच्चा माल है। फिर भी प्रोटीन के निर्माण के लिए कोई मैकेनिज़म (व्यवस्था) नहीं है। प्रोटीन के निर्माण के लिए आरएनए के अस्तित्व को पर्याप्त मान लेना ऐसी आधारहीन बात है जैसे कि कोई कार अपने आपको पुर्जें जोड़ ले अगर पुर्जों के एक ढेर पर कार बनाने का नक्शा फेंक दिया जाए। नक्शे में जो सूचनायें हैं उसके मुताबिक फैक्टरी और कार्यकर्ता पुर्जों को जोड़ें तभी कार बनती है। सिर्फ नक्शे से कार अपने आप नहीं बन जाती। इसी प्रकार आरएनए में जो ब्ल्यूप्रिंट है वह अन्य को. शिकीय घटक की सहायता के बिना अपने आप प्रोटीन नहीं बना सकती है। कोशिकीय घटक जब आरएनए में संग्रहित सूचना का पालन करेंगे तब ही यह काम हो पायेगा।

कई (ऐन्जाइम) किण्वो की सहायता के साथ और कोशिका में होने वाली अत्यंत जटिल प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप प्रोटीन रा. इबोज़ोम की फैक्टरी में पैदा होते हैं। राइबोज़ोम कोशिका की एक अंदरूनी जटिल संरचना है, जो प्रोटीन की बनी होती है। यह हकीकत हमें एक और अयोग्य धारणा की ओर ले जाती है कि इसी समय राइबोज़ोम भी संयोग से अस्तित्व में आये होने चाहिए। नोबल पुरस्कार विजेता और क्रमिक–विकास तथा नास्तिकवाद के मज़बूत समर्थक जेक्स मोनोड ने भी इस संबंध में कहा है कि सिर्फ न्युक्लिक ऐसिड में मौजूद सूचना के आधार पर प्रोटीन संश्लेषण नहीं होता है :

नक्शे के संकेतों को अगर ट्रांसलेशन (व्यवहार) में न लाया जाये तो वह निरर्थक है। आधुनिक कोशिका की ट्रान्सलेटिंग मशीनरी (नक्शे को व्यवहार में लाने वाली घटक और प्रक्रिया) कम से कम 50 माक्रोमोलेक्युलर घटकों की बनी है जो अपने आप में डीएनए

में कोडेड है : ट्रान्सलेशन के सहायक उत्पादन के बिना इस कॉड का ट्रान्सलेशन नहीं हो सकता है। यह ओम्ने विवम एक्स ओवो (याने सभी प्रकार का जीवन अंडे में से आया है) जैसे लेटिन वाक्य का आधुनिक स्वरूप है। यह चक्कर कब और कैसे खत्म हुआ? यह कल्पना करना बहुत मुश्किल है।134

आदिकालीन विश्व में एक आरएनए श्रृंखला ने किस प्रकार से ऐसा निर्णय लिया होगा और 50 विशिष्ट कणों का काम खुद करके उसने प्रोटीन के निर्माण के लिए कौन–सी विधि का उपयोग किया होगा? इवोल्युशनिस्ट्स के पास इन सवालों के कोई जवाब नहीं है। स्टैनली मिलर और फ्रांसिस क्रीक के सहयोगियों में से एक और सेन डियेगो में कैलिफोर्निया युनिवर्सिटी के डॉ. लेस्ली ऑर्जेल “आरएनए वर्ल्ड के जरिए जीवन के उद्भव” की संभावना के लिए “द्रश्यलेख” शब्द का प्रयोग करते हैं। अक्तूबर 1994 में अमेरिकन साइनटिस्ट में प्रकाशित अपने लेख में ऑर्जेल ने कहा है कि इसके लिए आरएनए के पास कौन से गुणधर्म रहे होंगे और यह कितना असंभव होगा :

अगर प्रिबायोटिक (जीवों के उत्पन्न होने से पूर्व) आरएनए के पास दो गुणधर्म होते (जो आज देखने को नहीं मिलते) तो यह द्रश्यलेख शायद आकार ले सकता था : प्रोटीन की सहायता के बिना अपने आप को रेप्लिकेट करने की क्षमता और प्रोटीन संश्लेषण के हर कदम पर उत्प्रेरक करने की क्षमता।135

अब तक यह स्पष्ट हो चुका है कि आर. एन. ए जैसे अणु में से इन दो जटिल और अत्यंत आवश्यक प्रक्रिया होने की आशा रखना सिर्फ इवोल्युशनिस्ट के द्रष्टिकोण से और उनकी कल्पनाशक्ति की मदद से ही संभव है। दूसरी ओर, ठोस वैज्ञानिक वास्तविकताएं स्पष्ट करती हैं कि आर. एन. ए. वर्ल्ड (जो जीवन के संयोगवश हुए निर्माण को समझाने के लिए एक नया मॉडल है) की धारणा भी एक असंभव कहानी ळें

टैक्सास युनिवर्सिटी के बायोकैमिस्ट गॉर्डन सी मिल्स और सान फ्रांसिस्को स्टेट युनिवर्सिटी के मोलेक्युलर बायोलोजिस्ट डीन केन्योन अपने लेख “द आरएनए वर्ल्डः अ क्रिटीक” में आरएनए वर्ल्ड के द्रश्यलेख की त्रुटियों की जांच करते है और एक संक्षिप्त निष्कर्ष पर पहुँचते हैं : ”आर. एन. ए. एक चमत्कारिक अणु है। आरएनए वर्ल्ड की धारणा दूसरा विषय है। इस विषय को स्थापित या सक्षम समझने का हमें कोई कारण नहीं दिखता है।”’136

विज्ञान लेखक ब्रिग क्लाइस का 2001 में छपा लेख यह बताता है कि इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिक इस मुद्दे पर बहुत अडे हुए है लेकिन अभी तक मिले परिणामों ने यह दिखाया है कि यह सब प्रयास नाकाम गये है।

आर. एन. ए. वर्ल्ड में शोधकार्य एक मध्यम स्तर का उद्योग है। इस शोध ने बताया है कि पृथ्वी पर प्रारंभ से अब तक में निर्जीव पदार्थों में से संयोगवश जीवित कोशिकाओं का उद्भव होना कितना मुश्किल है। यह प्रमाण विज्ञान के लिए एक अमूल्य योगदान है। भविष्य में होने वाले शोध भी मूल्यवान सिद्ध होंगे। लेकिन इस बात पर अड़े रहना कि जीवन निर्जीव रसायनों में से अपने
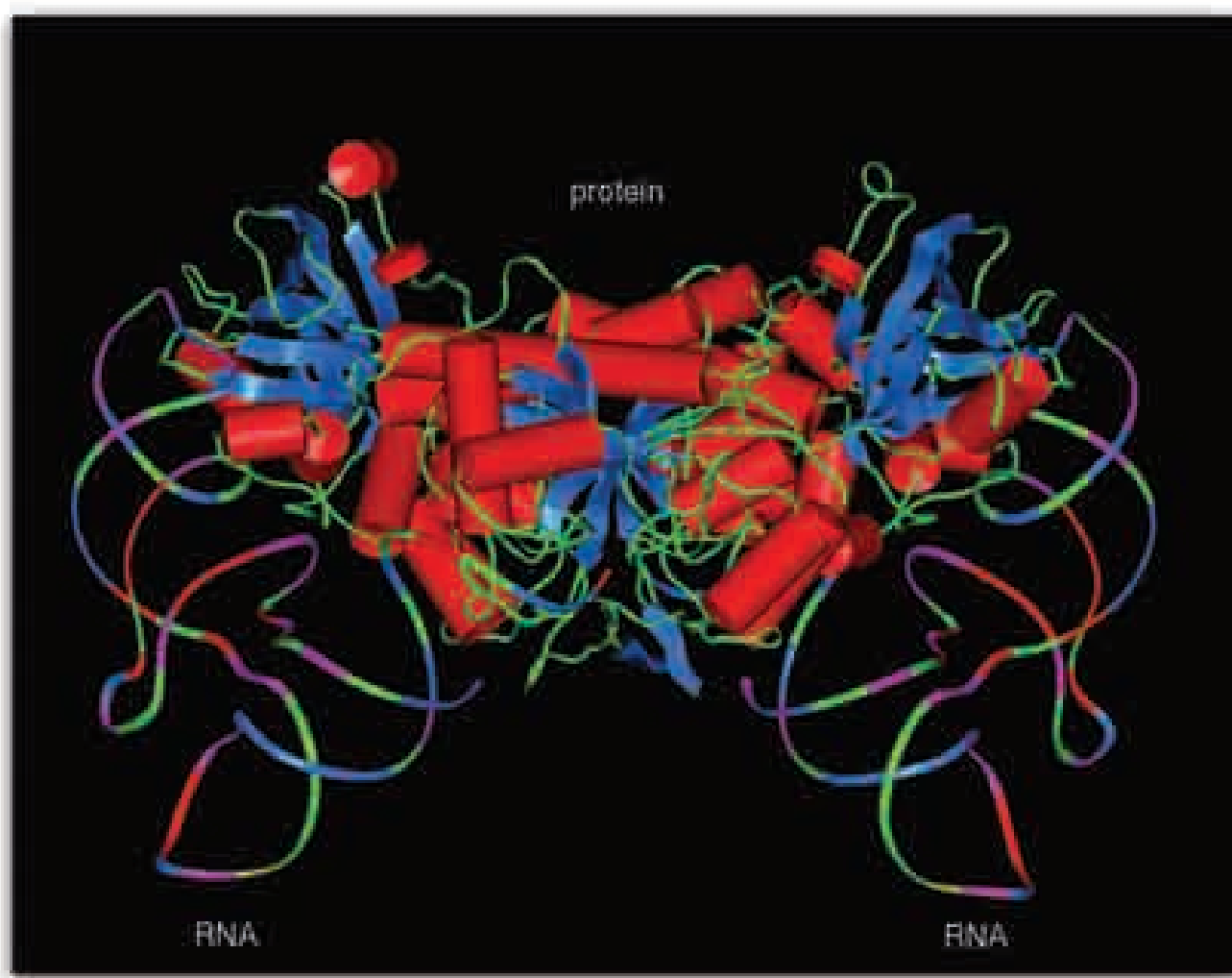
इवोल्युशनिस्ट के अपराध–स्वीकरण

संभावना की गिनती यह स्प ट करती है कि प्रोटीन और न्युक्लिक ऐसिड (आरएनए और डीएनए) किसी संयोग से एकदूसरे से कभी भी स्वतंत्र रूप से पैदा नहीं हुए हो सकते है. फिर भी इवोल्युशनिस्टस को और भी बडी चुनौती का सामना करना पड रहा है और वो यह कि अगर जीवन को अस्तित्व में लाना है तो इन सब जटिल अणुओ का एकसाथ सहअस्तित्व में होना आवश्यक है.

इस आवश्यकता के कारण क्रम विकास की थीअरि के पास घुटने टेकने के अलावा कोई विकल्प नहीं है. यह वो मुद्दा है जिस के कारण कई अग्रणी इवोल्युशनिस्टस को अपराध–स्वीकरण करना पडता है. उदाहरण के तौर पर मशहूर इवोल्युशनिस्ट और सान डियेगो युनिवर्सिटी कैलिफोर्निया में स्टेनली मिलर और फ्रांसिस क्रीक के नजदीकी सहयोगी डॉ.लेस्ली ओर्जेल कहते है:

जिनकी संरचना अत्यंत जटिल है वैसे प्रोटीन और न्युक्लिक ऐसिड एक ही समय एक ही स्थल पर पैदा हुए यह बिलकुल संभव नहीं है. फिर भी एक के बगैर दूसरे का अस्तित्व होना नामुमकिन लगता है. पहली नजर में किसी व्यक्ति को यह नि क र्ा निकालना पडेगा कि रासायणिक रूप से जीवन का उदभव कभी नहीं हो सकता है.1

Dr. Leslie Orgel: "... life could never, in have originated by chemical means."

अन्य वैज्ञानिक भी यही हकीकत का स्वीकार करते है:

कैटालिटिक प्रोटीन या किण्वो की मदद बिना डीएनए अपना काम नहीं कर सकता है. संक्षेप में प्रोटीन डीएनए के बिना नहीं बन सकते है और डीएनए भी प्रोटीन के बिना नहीं बन सकता है.2

जीनेटिक कोड अपनी ट्रान्सलेशन (रिबोज़ोम्स और आरएनए अणु) के मैकेनिज़म के साथ किस तरह पैदा हुआ होगा? एक क्षण के लिए हमे जवाब ढूंढने के बदले खुद को आश्चर्य और विस्मय के साथ ही संतु ट करना होगा.3

न्यू यॉर्क टाइम्स के विज्ञान पत्रकार निकोलस वेड ने 2000 में छपे एक लेख में यह टिप्पणी की:

पृथ्वी पर जीवन के उदगम के बारे में सब कुछ एक रहस्य बना हुआ है और हमे यह देखने को मिलता है कि जितना ज्यादा जानने की कोशिश करते है उतनी ज्यादा ऊलझन बढती जाती है.4

1. लेस्ली ई ओर्जेल, "द ऑरिजिन ऑफ लाइफ ऑन अर्थ", साइंटिफिक अमेरिकन, वॉल्युम 271, अक्तूबर 1994, पृ.78
2. जॉन हॉर्गन, "इन द बिगिनींग", साइंटिफिक अमेरिकन, वॉल्युम 264, फरवरी 1991, पृ.119
3. डग्लास आर होफस्टाटर, गॉडल, ईशर, बाकः एन एटर्नल गॉल्डन ब्रेइड, न्यू यॉक, विन्टेज बूक्स, 1980, पृ. 548
4. निकोलस वेड, "लाइफ्स ऑरिजिन्स गेट मर्कियर एंड मेसियर", द न्यू यॉर्क टाइम्स, 13 जूनए 200, पृ. व1.व2

आप पैदा हुआ होगा यह अचम्भे में डालने वाली बात है। यह बात हमें मध्यकालीन रसायन शास्त्रीयों की याद दिलाती है जिन्होंने सीसे को सोना बनाने के अविरत प्रयास किये।137

जीवन महज़ अणुओं के ढ़ेर के अलावा भी कुछ है

अब तक हमने यह परखा कि जीवन का संयोग से निर्माण होना कितना असंभव है। चलो एक बार फिर से इन असंभावनाओं को नजर. अंदाज करते हैं। यह मान लेते हैं कि आदिकालीन संसार जैसी परिस्थितियों जैसे सबसे अयोग्य और सबसे अनियंत्रित वातावरण में प्रोटीन अणु का निर्माण हुआ था। सिर्फ एक ही प्रोटीन का निर्माण पर्याप्त नहीं होगा; इस प्रोटीन को किसी भी प्रकार की क्षति पहुंचे बिना हजारों

या शायद लाखों साल तक इस अनियंत्रित वातावरण में धीरज से इंतजार करना होगा कि उसके पास किसी ऐसे अणु का जन्म बिल्कुल ऐसी ही अनियंत्रित परिस्थितियों के तहत संयोगवश हो। इसी सैटिंग में लाखों की संख्या में सही और आवश्यक प्रोटीन एक–दूसरे के पास ही "संयोगवश" पैदा हो इसके लिए भी इंतज़ार करना पड़ा होगा। पहले जिसका निर्माण हुआ है उन्हें दूसरे अणु के निर्माण होने तक पराबैंगनी किरणों और अन्य हानिकारक प्रभावों से अपनी रक्षा करके सालों तक इंतजार करना पड़ा होगा। इसके बाद एक ही जगह पर पर्याप्त संख्या में पैदा हुए प्रोटीन को अर्थपूर्ण संयोजन बनाने के लिए एक–साथ आना होगा और कोशिका की अंदरूनी संरचना बनानी होगी। कोई बाहरी पदार्थ, हानिकर अणु या अर्थहीन प्रोटीन की श्रृंखला का इसमें हस्तक्षेप नहीं होना चाहिए। बाद में अगर को. शिका की यह संरचनायें अत्यंत सामंजस्यपूर्ण और सहयोग के साथ पास आती भी है तो उन्हें अपने पास में पड़े सभी जरूरी किण्व (ऐन्जाईस) लेने चाहिए और झिल्ली के साथ अपने आप को ढ़ंकना चाहिए और उसका अंदरूनी हिस्सा ऐसे विशिष्ट तरह पदार्थ से भरना चाहिए जो उनके लिए आदर्श वातावरण तैयार कर सके। अब, अगर यह सब "अत्यंत असंभव" घटनायें संयोगवश बनती भी है तो यह आण्विक ढेर जीवन प्राप्त कर सकेगा?

जवाब है ना, क्योंकि शोध से पता चला है कि जीवन के लिए जरूरी सभी पदार्थ का ईकठ्ठा होना ही जीवन के प्रारंभ के लिए पर्याप्त नहीं है। अगर जीवन के लिए आवश्यक सभी प्रोटीन को ईकठ्ठा करके एक टैस्ट ट्युब में रखा जाये तो यह प्रयास जीवित कोशिका के निर्माण में फलीभूत नहीं होगा। इस विषय पर किये गये सभी प्रयोग असफल रहे हैं। सभी अवलोकन और प्रयोग यही सूचित करते हैं कि जीवन सिर्फ जीवन से ही उत्पन्न हो सकता है। जीवन निर्जीव चीज़ो में से पैदा हुआ यह दावा (दूसरे शब्द में कहें तो एबायोजेनिसिस) एक मनघडंत कहानी है जो सिर्फ इवोल्युशनिस्टस के सपनों में ही सच साबित होती है और हर प्रयोग तथा अवलोकन के परिणामों से यह असंगत है।

इसलिए पृथ्वी पर प्रथम जीवन अन्य जीवन में से ही उत्पन्न हुआ होना चाहिए। यह अल्लाह के विशेष नाम "हय्य" (जीवन का मालिक) का प्रतिबिंब है। सिर्फ उसी की इच्छा से जीवन शुरू हो सकता है, चल सकता है और पूरा हो सकता है। जीवन का आरंभ कैसे हुआ यही नहीं किंतु जीवन के लिए आवश्यक पदार्थ किस तरह बने और इकठ्ठे हुए यह बात भी क्रमिक–विकास का सिद्धांत समझा नहीं सकती है। चन्द्रा विक्रमासिंघे, एक वैज्ञानिक, जिन्हें अपने पूरे जीवन के दौरान यह कहा गया है कि जीवन संयोगवश घटी हुई घटनाओं से पैदा हुआ है, उन्हें जिस वास्तविकता का सामना करना पड़ा उसका ब्यौरा वह इस तरह देते हैं :

एक वैज्ञानिक के रूप में मेरी प्रारम्भिक शिक्षा से ही यह मानने के लिए मेरा जोरदार ब्रैनवॉशिंग किया गया था कि किसी भी प्रकार के उद्देश्यपूर्ण सृजन से विज्ञान सुसंगत नहीं है। इस धारणा को बहुत दुःख के साथ छूटना था। उस क्षण खुदा में आस्था रखने वाले तर्क को नष्ट करने में मैं कोई भी तार्किक दलील ढूंढ़ नहीं पाया। हम मुक्त मन से चलते थे; अब हमें महसूस होता है कि जीवन के उद्भव के लिए एकमात्र तार्किक जवाब सृजन है – और यह संयोग पर आधारित फिलिंग (अंधाधुंध प्रक्रिया) नहीं।138
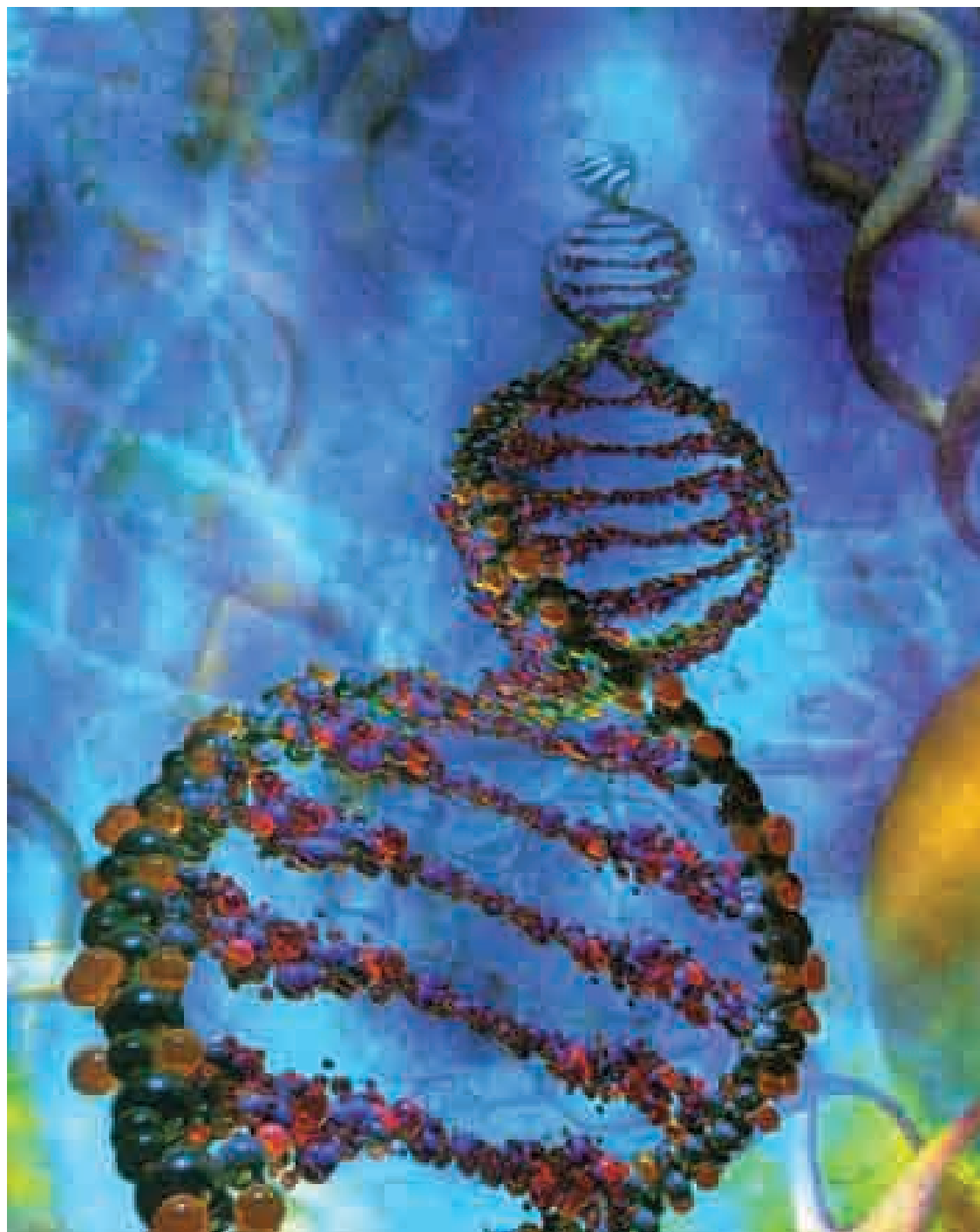
ऊ   मागतिशास्त्र (थर्मोडायनेमिक्स) क्रम विकास को झूठा सिद्ध करता ह

जिसे भौतिकशास्त्र के बुनियादी नियमो में गिना जाता है वह ऊ   मागतिशास्त्र का दूसरा नियम कहता है कि सामान्य परिस्थितियों के तहत अपने भरोसे पे छोड दी गई सभी प्रणाली तितरबितर हो जाती है, अव्यवस्थित हो जाती है और वह जितना समय पसार करती है उसके प्रमाण में भ्र   ट हो जाती है. सजीव या निर्जीव कोई भी चीज बिगडने लगती है, सडने लगती है उसका विघटन होता है और अंत में नाश होता है. एक या दूसरे किसी भी प्रकार से सभी सजीव इसी अंत को पायेंगे और नियम के मुताबिक यह प्रक्रिया को रोका नहीं जा सकता है.

यह हम सबने देखा है. उदाहरण के तौर पर अगर आप किसी कार को रेगिस्तान में ले जाये और वहीं छोड दे तो कुछ साल बाद आप जब वापिस लौटेंगे तब आप यही अपेक्षा रखेंगे कि यह कार इतनी अच्छी स्थिति में नहीं होगी जितनी पहले थी. इससे विपरित आप देखेंगे कि उसके पहिये सपाट हो गये है, उसकी खिडकी तूटी हुई है, उसकी चेसिस पर जंग आ गया है और उसके इंजिन ने काम करना बंद कर दिया है. सजीवो के साथ भी यही प्रक्रिया होती है.

ऊ   मागतिशास्त्र का दूसरा नियम यह साधन है जिसके जरिए इस प्राकृतिक प्रक्रिया को भौतिक समीकरण और गिनतीयों से व्याख्यायित किया जाता है.

भौतिकशास्त्र का यह मशहूर नियम "ऐन्ट्रोपी के नियम" से भी जाना जाता है. भौतिकशास्त्र में ऐन्ट्रोपी किसी प्रणाली की अव्यवस्था का माप है. प्रणाली जैसे जैसे व्यवस्थित, संगठित और आयोजित स्थिति में से अव्यवस्थित, असंगठित और अनायोजित स्थिति की तरफ गति करती है वैसे वैसे उसकी ऐन्ट्रोपी में बढौतरी होती है. प्रणाली में जितनी अव्यवस्था है उतनी ऐन्ट्रोपी बढती है. ऐन्ट्रोपी का नियम यह है कि पूरा ब्रह्मांड एक अव्यवस्थित, अनायोजित और असंगठित स्थिति की ओर प्रयाण कर रहा है.

ऊ   मागतिशास्त्र के दूसरे नियम या ऐन्ट्रोपी के नियम की सत्यार्थता को प्रायोगिक और सैद्धांतिक रूप से स्थापित किया जा चुका है. सभी अग्रणी वैज्ञानिक इस बात पर सहमत है कि आनेवाले भवि   य के लिए ऐन्ट्रोपी का नियम एक प्रमुख प्रतिमान बना रहेगा. हमारे समय के सबसे महानतम विज्ञानी आल्बर्ट आइनस्टाइन ने इसे 'विज्ञान की सभी   ााखाओं का प्रमुख नियम बताया है'. सर आर्थर ऐडिंग्टन ने भी इस नियम को 'पूरे ब्रह्मांड का सर्वोत्तम अभौतिक नियम' कहा है.1

क्रम विकास की थीअरि भौतिकशास्त्र के इस बुनियादी नियम की अवहेलना करती है. क्रम विकास जिस मेकेनिज़म को पेश करता है वह दूसरे नियम के संपूर्ण खिलाफ है. क्रम विकास की थीअरि यह कहती है कि अव्यवस्थित, असंगठित और निर्जीव परमाणु और अणु स्वयंभू एकसाथ एक सुव्यवस्थित क्रम में आये और उन्होने प्रोटीन, डीएनए और आरएनए जैसे अत्यंत जटिल अणु बनाये जिसके बाद और ज्यादा जटिल सं. रचनाओ के साथ लाखो विभिन्न जातियां क्रमशः अस्तित्व में आई. क्रम विकास की थीअरि के मुताबिक ज्यादा सुयोजित, ज्यादा व्यवस्थित, ज्यादा जटिल और ज्यादा संगठित सं. रचनायें देनेवाली यह प्रक्रिया प्राकृतिक परिस्थितियों के तहत अपने आप अस्तित्व में आई. ऐन्ट्रोपी का नियम यह स्प   ट करता है कि यह तथाकथित प्राकृतिक प्रक्रिया भौतिकशास्त्र के नियमों के बिलकुल खिलाफ है.

इवोल्युशनिस्ट विज्ञानी भी इस हकीकत जे वाकिफ है. जे एच रश कहते है:

क्रम विकास की जटिल प्रक्रिया में जीवन थर्मोडायनेमिक्स के दूसरे नियम में जताये गये रूख से असाधारण विरोधाभास दिखाता है.2

इवोल्युशनिस्ट लेखक रोजर लेविन साइंस में एक लेख में क्रम विकास की राह में रौडा बने थर्मोडायनेमिक गतिरोध को प्रदर्शित करता है:

जीवविज्ञानी जिस समस्या का सामना कर रहे है वह थर्मोडायनेमिक्स के दूसरे नियम और क्रम विकास की प्रक्रिया के बीच दिख रहा स्प   ट विरोधाभास है. प्रणालीयों को समय

के साथ सडना चाहिए और ज्यादा नहीं बलके कम व्यवस्था दिखानी चाहिए.3

क्रम विकास की थीअरि के अन्य समर्थक ज्योर्ज स्ट्रावरोपोलोस जीवन के स्वयंभू निर्माण की थर्मोडायनेमिक असंभावना और प्राकृतिक नियमो द्वारा सजीवो के जटिल मेके. निज़म का अस्तित्व समझा पाने की असंभावना को मशहूर इवोल्युशनिस्ट जर्नल अमेरिकन साइंटिस्ट में प्रदर्शित करते हैः

फिर भी सामान्य परिस्थितियों के तहत कोई जटिल ऑर्गेनिक अणु कभी भी स्वयंभू पैदा नहीं हो सकता बलके दूसरे नियम के अनुसार उसका विघटन होगा. यह अणु जितना जटिल है, उतना अस्थायी होगा और निश्चित रूप से कम या ज्यादा समय में उसका विघटन होगा. उलझन में डालनेवाली या सहेतुक उलझन पैदा करनेवाली भा ा के प्रयोग के बावजूद प्रकाश संश्ले ाण और जीवन की सभी प्रक्रिया और खुद जीवन को थर्मोडायनेमिक्स या अन्य कोई सटीक विज्ञान के जरिए आज भी समझी नहीं जा सकती है.4

जैसा की हमने देखा है, थर्मोडायनेमिक्स का दूसरा नियम विज्ञान और तर्कशास्त्र दोनो के दृ टकोण से क्रम विकास के द्रश्यलेख के लिए बहुत बडा गतिरोध बना हुआ है. इस गति. रोध को हटाने के लिए कोई वैज्ञानिक या सातत्यपूर्ण खुलासा देने में नाकाम इवोल्युशनिस्टस यह गतिरोध सिर्फ उनके सपनो और कल्पनाओं में ही दूर कर सकते है. ऊदाहरण के तौर पर मशहूर इवोल्युशनिस्ट जेरेमी रिफकिन अपनी उस मान्यता को ध्यान में लेते है कि क्रम विकास भौतिक विज्ञान के इस नियम को 'जादुई ताकत' से पछाड देता हैः

ऐन्ट्रोपी का नियम कहता है कि क्रम विकास इस पृथ्वी ग्रह पर जीवन के लिए जरूरी समग्र ऊर्जा का नाश करता है. लेकिन क्रम विकास की हमारी विभावना इससे बिलकुल खिलाफ है. हम मानते है कि क्रम विकास किसी प्रकार से पृथ्वी पर समग्र मूल्य और व्यवस्था पैदा करता है.5

यह ाब्द अच्छी तरह संकेत देते है कि क्रम विकास एक वैज्ञानिक धारणा नहीं किंतु एक मतान्ध मान्यता है.

"खुली प्रणाली" की अटकल

क्रम विकास के कुछ प्रस्तावक उस दलील का सहारा लेते है जिसके मुताबिक थर्मोडायनेमिक्स का दूसरा नियम सिर्फ "बंद प्रणालीयों" के लिए ही सच साबित होता है और "खुली प्रणालीयां" इस नियम के दायरे से बाहर है.

"खुल्ली प्रणाली" थर्मोडायनेमिक व्यवस्था है जिसमें ऊर्जा और पदार्थ अंदर और बाहर बहते है. इवोल्युशनिस्टस यह दावा करते है कि यह दुनिया एक खुली प्रणाली हैः जो सूर्य में से बह रही ऊर्जा के प्रभाव तले है और ऐन्ट्रोपी का नियम समग्र दुनिया को लागु नहीं होता और अव्यवस्थित, सरल और निर्जीव संरचनाओ में से व्यवस्थित, जटिल सजीव का निर्माण हो सकता है.

हालांकि, यहां एक सुस्प ट विकार देखने को मिलता है. अगर किसी प्रणाली में ऊर्जा का प्रवेश होता हो तो वह इस सिस्टम को सुव्यवस्थित बनाने के लिए काफ़ी नहीं है. इस ऊर्जा को कार्यान्वित करने के लिए चौकस मेकेनिज़म की जरूरत होती है. उदाहरण के तौर पर एक कार को पेट्रोल में संग्रहित ऊर्जा को काम पे लगाने के लिए इंजिन, ट्रान्समिशन सिस्टम और सम्बन्धित कंट्रोल मेकेनिज़म की जरूरत होती है. जीवन के किस्से में भी यही बात लागु होती है. यह सच है कि जीवन सूर्य में से ऊर्जा खींचता है. हालांकि, सजीवो में मौजूद अत्यंत जटिल ऊर्जा रूपांतरण व्यवस्था द्वारा सौर ऊर्जा को सिर्फ रासायणिक ऊर्जा में तबदील किया जा सकता है (जैसे पौधो में प्रकाश संश्ले ाण और मानवो व प्राणीयों का पाचन तंत्र). ऐसी ऊर्जा रूपांतरण सिस्टम के बगैर कोई सजीव जिंदा नहीं रह सकता है. ऊर्जा रूपांतरण व्यवस्था के बिना सूर्य और कुछ नहीं किंतु एक विनाशक ऊर्जा का स्रोत है जो भस्म करता है, झुलसा देता है या पिघला देता है.

इसी तरह की ऊर्जा रूपांतरण व्यवस्था के बिना जो थर्मोडायनेमिक सिस्टम होती है वह क्रम विकास के लिए लाभदायी नहीं है चाहे वह खुली हो या बंद हो. आदिकालीन पृथ्वी की परिस्थितियो के तहत प्रकृति में ऐसी जटिल और जाग्रत मेकेनिज़म का अस्तिव हो सकता है एसा दावा कोई नहीं करता है. सचमुच इवोल्युशनिस्टस को जो मूल समस्या सताती है वो यह है कि आधुनिक टैकनोलजि भी जिसका अनुकरण करने में सक्षम नहीं है वैसी प्रकाश संश्ले ाण जैसी जटिल ऊर्जा रूपांतरण मेकेनिज़म अपने आप किस तरह अस्तित्व में आई होगी.

दुनिया में सौर ऊर्जा अन्तर्वाह (इनफ्लक्स) अपने आप यह व्यवस्था स्थापित करने में अक्षम होगा. इसके अलावा, तापमान में चाहे कितनी भी बढौतरी हो, एमिनो ऐसिड क्रमिक श्रृंखलाओ में बॉन्ड बनाने से परहेज़ रखते है. खुद ऊर्जा अपने आप एमिनो ऐसिड को प्रोटीन के बहुत ज्यादा जटिल अणु बनाने में या कोशिका की जटिल और सुगठित अंदरूनी सं. रचना में से प्रोटीन बनाने के लिए प्रेरित नहीं कर सकती है.

सभी स्तरो पर इस संगठन का वास्तविक और आवश्यक स्रोत क्षतिरहित सृजन है.

“पदार्थ के स्व संगठन” की गलत धारणा

थर्मोडायनेमिक्स का दूसरा नियम क्रम विकास को असंभव बना देता है यह हकीकत से अच्छी तरह वाकिफ़ कुछ इवोल्युशनिस्टस वैज्ञानिको ने इन दोनो के बीच का विरोधाभास सुलझाने के प्रयास किये है जिस से वे यह दावा कर सके कि क्रम विकास संभव है. हमेशा की तरह यह प्रयास भी यही दिखाता है कि क्रम विकास की थीअरि एक बडे गतिरोध में फंसी हुई है जिसमें से छूटना असंभव है.

थर्मोडायनेमिक्स और क्रम विकास का एकदूसरे के साथ मेल बिठाने के अपने प्रयासो से बैल्जियम के विज्ञानी इल्या प्रिगो. जिन मशहूर हुए है. कैओस (अव्यवस्था) थीअरि से ुरू करके प्रिगोजिन ने कई धारणायें पेश की जिस में अव्यवश्ता में से व्यवस्था का निर्माण होता है. उन्होने यह दलील की कि कुछ खुल्ली प्रणाली बाहरी ऊर्जा के इनफ्लक्स के कारण ऐन्ट्रोपी में कमी दिखा सकती है और बाहर की ओर आन. ेवाली ‘व्यवस्था’ (ऑर्डरिंग) इस बात का सबूत है कि “पदार्थ खुद को संगठित कर सकता है.” प्रिगोजिन की यह दलील के बाद आज तक इवोल्युशनिस्टस और भौतिकवादीयों में “पदार्थ के स्व–संगठन” की विभावना बहुत लोकप्रिय हुई है. वह एसा वर्ताव करते है जैसा कि उन्हे जीवन की जटिलता का भौतिकवादी उदगम और जीवन के उदभव की समस्या का भौतिकवादी ऊपाय हाथ लग गया हो.

लेकिन गौर से देखने से यह पता चलता है कि यह दलील संपूर्ण अव्यावहारिक है और वास्तव में एक मनघडंत विचार है. इसके अलावा उसमें एक सीधा छल ामिल है. दो विशि ट विभावना – “व्यवस्थित” और “संगठित” – को जानबुझकर उलझा दिया गया है. 6

एक उदाहरण से हम यह स्थिति को स्प ट कर सकते है. समुद्रतट पर एक संपूर्ण समतल बीच की कल्पना कीजिए. जब हवा की भारी लहर बीच से टकराती है तब रेत के छोटे और बडे टीले रेत की सतह पर उभार बनाते है.

यह ‘ऑर्डरिंग’ (व्यवस्था) की प्रक्रिया हैः समुद्रतट एक खुली प्रणाली है और ऊर्जा का प्रवाह (तरंग) जो उसमें प्रवेश करता है वह रेत पर सरल पैटर्नस बना सकता है जो संपूर्ण रूप से नियमित है. थर्मोडायनेमिक्स के द्रि टकोण से देखे तो वह यहां एक व्यवस्था बना सकता है जो पहले कभी भी नहीं थी. लेकिन हमे यह स्प ट करना चाहिए कि वही तरंग बीच पर किल्ला नहीं बना सकती है. अगर हम वहां किल्ला देखे तो निश्चित रूप से मानना पडेगा कि किसी ने इसका निर्माण किया होगा क्यूं कि किल्ला एक “संगठित” प्रणाली है. दूसरे ाब्दो में कहे तो उसकी स्प ट रचना और जानकारी होती है. उसका सभी हिस्सा सुनियोजित तरीके से किसी जाग्रत तत्व ने बनाया है.

रेत और किल्ले में फर्क यह है कि रेत एक संगठित जटिलता है जब किल्ले में सिर्फ एक व्यवस्था है जो सरल पुनरावृत्ति द्वारा बनाई गई है. पुनरावृत्ति द्वारा बनी हुई व्यवस्था कुछ इस प्रकार की है जैसे टाइपराइटर कीबॉर्ड के अक्षर ’’ पर कोई पदार्थ गिरा हो (दूसरे ाब्दो में कहे तो ऊर्जा का प्रवाह प्रणाली में प्रवेश कर रहा हो) और वह सो बार ’’ लिख दे. लेकिन इस प्रकार दोहराये गये क्रम में ’’ की श्रृंखला में कोई जानकारी छिपी नहीं है और ना ही कोई जटिलता है. सही जानकारीयुक्त अक्षरो की जटिल श्रृंखला लिखने के लिए (दूसरे ाब्दो में कहे तो एक अर्थपूर्ण श्रेणी, अनुच्छेद या किताब लिखनी हो तो) बुद्धि की मौजूदगी होना आवश्यक है.

धूल से भरे कमरे में जब हवा का झोंका आता है तब भी यही होता है. जब हवा का झोंका आता है तब समान स्तरो में फैली हुई धूल कमरे के एक कोने में ईकठ्ठी हो सकती है. थर्मोडायनेमिक द्रि टकोण से पहले से अस्तित्व में होनेवाली परिस्थिति से यह ज्यादा व्यवस्थित है लेकिन धूल के कण कमरे की फर्श पर संगठित रूप से किसी का चित्र नहीं बना सकते है.

इसका अर्थ यह है कि जटिल और संगठित व्यवस्था कभी भी प्राकृतिक प्रक्रियाओ के परिणाम स्वरूप पैदा नहीं हो सकती है. क्रम के सरल ऊदाहरण समय समय पर देखने को मिलते है लेकिन यह एक हद से ज्यादा दूर नहीं जा सकते है.

लेकिन प्राकृतिक प्रक्रियाओ के फलस्वरूप पैदा होनेवाली इस स्वयंभू व्यवस्था को इवोल्युशनिस्टस क्रम विकास का सबसे महत्वपूर्ण सबूत मानते है और ऐसे किस्सो को ‘स्व–संगठन’ के उदाहरण के रूप में पेश करते है. इन विभावनाओ की ऊलझन के परिणाम स्वरूप वे यह बात सामने रखते है कि प्रकृति और रासायणिक प्रक्रियाओं में होनेवाली घटनाओ में से जीवित व्यवस्था अपना खुद का मेल बिठा सकती है. प्रिगोज़िन और उसके अनुयायीओ द्वारा इस्तेमाल की गई

पद्धत्तिओ और अभ्यास इस धोखेबाज तर्क पर आधारित है.

अपनी किताब द मिस्टरी ऑफ लाइफ्स ऑरिजिन में अमे. रिकी वैज्ञानिक चार्ल्स बी थैक्सटनए वॉल्टर एल ब्रेडली और रोजर एल ओल्सेन इस हकीकर को इस प्रकार समझाते हैः

कृ.सभी किस्से में प्रवाही में अणुओ की रैन्डम गतिविधि स्वयंभू तरीके से अत्यंत व्यवस्थित वर्तन द्वारा बदल जाती है. प्रिगोजिन, आइजन और अन्य लोग ने सूचित किया है कि इसी प्रकार का स्व–संगठन ऑर्गेनिक कैमिस्ट्री में अन्तर्भूत हो सकता है और सजीवो के लिए जरूरी अत्यंत जटिल माक्रोमोलेक्युल्स के लिए जिम्मेवार हो सकते है. लेकिन यह अनुरूपताओं का जीवन के उदगम के प्रश्न के साथ बहुत कम सम्बन्ध होता है. सब से बडा कारण यह है कि वे व्यवस्था और जटिलता के बीच भेद दिखाने में नाकाम होते हैकृ.नियमितता या व्यवस्था जीवित तंत्र के लिए जरूरी भारी प्रमाण में जानकारी संग्रहित करने के लिए काम नहीं आ सकती है. व्यवस्थित संरचना के बदले एक अत्यंत अनियमित लेकिन चौकस संरचना की जरूरत पडती है. यह हमारे सामने पेश की जा रही अनुरूपता में एक बहुत बडी त्रुटि है. इन सिस्टम के जरिए ऊर्जा के प्रवाह से जो स्वयंभू व्यवस्था बनती है उसका अनियतकालिक जानकारी और डीएनए तथा प्रोटीन जैसे तेज़ माक्रोमोलेक्युल बनाने के लिए जरूरी कार्य के साथ कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है.7

असल में खुद प्रिगोजिन ने यह स्वीकार किया है कि आण्विक स्तर के लिए उन्होने जो थीअरि बनाई है वह सजीवो को लागु नहीं होती है – जैसे एक जीवित को. शिकाः

जैविक व्यवस्था की समस्या में आण्विक क्रिया से लेकर को. शिका के सुपरमोलेक्युलर ऑर्डर तक के पारगमन ाामिल है. इस समस्या का हल ढूंढना बहुत दूर की बात है.8

तो फिर जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है ऐसे "पदार्थ के स्व–संगठन" जैसे द्रश्यलेख में इवोल्युशनिस्ट अभी भी क्यूं मानते है? सजीवो में जो स्प ट रूप से दिखाई देता है ऐसी बुद्धिमानी और आयोजन को खारिज करने के लिए वे इतने कृतनिश्चयी क्यूं है? जवाब यह है कि भौतिकवाद में उनकी मतान्ध आस्था है और वे यह मानते है कि पदार्थ में कुछ ऐसी रहस्यमय ताकत है जो जीवन का सृजन कर सकती है. न्यू यॉर्क युनिवर्सिटी में से रसायणशास्त्र के प्रोफेसर और डीएनए विशे ाज्ञ रॉबर्ट ाापिरो "पदार्थ के स्व–संगठन" के बारे में इवोल्युशनिस्टस की यह मान्यता और उसके हार्द में छुपा भौतिकवादी मत को इस प्रकार से समझाते हैः

सरल प्राकृतिक रसायण से लेकर प्रथम असरकारक रैप्लिकेटर के बीच की जो भेदरेखा है वहां हमे ले जानेवाले अन्य इवोल्युशनरी सिद्धांत की जरूरत है. इस सिद्धांत को अभी तक विस्तार से बताया नहीं गया है या उसका प्रदर्शन नहीं किया गया है लेकिन इसकी अपेक्षा है और रासायणिक क्रम विकास और पदार्थ के स्व–संगठन जैसे कुछ नाम उसे मिले है. डायालेक्टिकल भौतिकवाद की फिलोसोफी में सिद्धांत के अस्तित्व पर ध्यान नहीं दिया जाता है जैसा कि ऐलेक्झांडर ओपेरिन द्वारा जीवन के उदभव को लागु किया गया है.9

यह सब परिस्थिति स्प ट रूप से दिखाती है कि क्रम विकास एक मतान्ध विचारधारा है जो अनुभवसिद्ध विज्ञान के खिलाफ है और सजीवो का उदभव सिर्फ अलौकिक ाक्ति की दखल से ही समझाया जा सकता है. यह अलौकिक ाक्ति अल्लाह का सृजन है जिसने ाून्य में से समग्र ब्रह्मांड को बनाया है. विज्ञान ने यह साबित किया है कि जहां तक थर्मोडायनेमिक्स का सवाल है, क्रम विकास असंभव है और जीवन के अस्तित्व का सृजन के सिवा और कोई खुलासा नहीं है.

1 जेरेमी रिफकीन, ऐन्ट्रोपीः अ न्यू वर्ल्ड व्यू, न्यू यॉर्क, वाइकिंग प्रेस, 1980, पृ.6

2 जे एच रश, द डॉन ऑफ लाइफ, न्यू यॉर्क, सिग्नेट, 1962, पृ.35

3 रॉजर लेविन, "अ डाउनवर्ड स्लॉप टु ग्रेटर डायवर्सिटी", साइंस, वॉल्युम.217, 24.9.1982, पृ.1239

4 ज्योर्ज पी स्ट्रावरोपोलस, "द फ्रन्टियर्स एंड लिमिटस ऑफ साइंस' ए अमे. रिकन साइंटिस्ट, वॉल्युम. 65, नवम्बर–दिसंबर 1977, पृ.674

5 जेरेमी रिफकीन, ऐन्ट्रोपीः अ न्यू वर्ल्ड व्यू, पृ.55

6 ज्यादा जानकारी के लिए देखेः स्टीफन सी मेयर, "द ऑरिजिन ऑफ लाइफ एंड द डैथ ऑफ मटीरिआलिज़म", द इंटरकोलेजिएट रिव्यू, 32, नं.2, स्प्रिंग 1996

7 चार्ल्स बी थैक्सटन, वॉल्टर एल ब्रेडली – रॉजर एल ऑल्सेन, द मिस्टरी ऑफ लाइफ्स ऑरिजिनः रिऐसेसिंग करंट थीअरिज़, 4. संस्करण, डलास, 1992, अध्याय 9, पृ.134

8 इल्या प्रिगोजिन, इसाबेल स्टेनजर्स, ऑर्डर आऊट ऑफ कैओस, न्यू यॉर्क, बेन्टम बूक्स, 1984, पृ.175

9 रॉबर्ट ाापिरो, ऑरिजिन्सः अ स्केप्टिक्स गाइड टु द क्रिएशन ऑफ लाइफ ऑन अर्थ, समिट बूक्स, न्यू यॉर्कः 1986, पृ.207

अध्याय 11

कोई भी डिजाईन (योजना या रूप रेखा) संयोग से नहीं बनती

इसके पहले के अध्याय में हमने यह निरीक्षण किया कि जीवन का आकस्मिक निर्माण कितना असंभव है। चलो एक बार फिर से एक क्षण के लिए इन असंभावनाओं को नजरअंदाज करते हैं। मान लेते हैं कि आज से लाखों साल पहले एक कोशिका का जन्म हुआ जिसने जीवन के लिए जरूरी सभी चीजे पाई थी और वह संपूर्ण रूप से "अस्तित्व में आया"। यहां पर एकबार फिर क्रमिक–विकास की थीअरि ढ़ेर हो जाती है। अगर यह कोशिका चंद क्षणों के लिए भी अस्तित्व में थी तो बाद में वो मर गई होगी और मौत के बाद कुछ बचा नहीं होगा और सब कुछ वहीं लौट गया होगा जहां से वह शुरू हुआ था। यह इसलिए कि जीनेटिक सूचना के अभाव से यह प्रथम जीवित कोशिका पुनरुत्पादन करने के लिए और नयी पीढ़ी का आरंभ करने के लिए सक्षम नहीं होती। इसके मृत्यु के साथ जीवन का अंत हो गया होता।

जीनेटिक सिस्टम सिर्फ डी. एन. ए. का ही बना नहीं होता है। इस वातावरण में कुछ और चीज़ों का भी अस्तित्व होना जरूरी है, जैसे : डी. एन. ए. पर मौजूद कॉड (संकेत) को पढ़ने के लिए इंजाइम (किण्व), इन कॉड को पढ़ने के बाद दूत आर. एन. ए. का निर्माण जरूरी है। एक राइबोज़ोम जिसके साथ इस कॉड के मुताबिक आर. एन. ए. जुड़ेगा, आर. एन. ए. का स्तांतरण जिससे ऐमिनो ऐसिड को निर्माण कार्य के उपयोग में लेने के लिए राईबोजोम्स तक लाया जाता है, और अनगिनत मध्यवर्ती प्रक्रियाओं को कार्यान्वित करने के लिए अत्यंत जटिल किण्व हालांकि ऐसे वातावरण का अस्तित्व कहीं नही हो सकता मगर कोशिका जैसे सम्पूर्ण अलग–थलग और नियंत्रित वातावरण में जहां सभी आवश्यक कच्चे माल और ऊर्जा स्रोत का अस्तित्व है।

परिणामस्वरूप, जैविक पदार्थ खुद का पुनरुत्पादन तभी कर सकते हैं जब वे पूर्ण विकसित कोशिका के रूप में अस्तित्व में हो जिसमें सभी अंदरूनी संरचनाएं मौजूद हों और ऐसा योग्य वातावरण हो जहां वो जीवित रह सकें, पदार्थों का आदान–प्रदान हो सकें और अपने आस–पास के वातावरण में से ऊर्जा ग्रहण कर सकें। इसका अर्थ यह है कि पृथ्वी पर प्रथम कोशिका का निर्माण आश्चर्यजनक रूप से जटिल संरचना के साथ "अचानक" हुआ था।

इसलिए, अगर जटिल संरचना अचानक अस्तित्व में आई तो फिर इसका क्या मतलब है? एक उदाहरण के साथ इस सवाल को पूछते हैं। मान लीजिए कि जटिलता के हिसाब से कोशिका एक हाईटैक कार जैसी है। (असल में कोशिका विश्व की किसी भी आधुनिक कार से ज्यादा जटिल और विकसित है।) अगर आप घने जंगल की गहराइयों में पैदल चले जा रहे हों और पेड़ों के बीच आप एक ब्रांड–न्यू कार पड़ी हुई देखते हैं तो आप क्या सोचेंगे? क्या आप यह कल्पना करेंगे कि जंगल में मौजूद विभिन्न तत्वों ने लाखों सालों की प्रक्रिया से गुजरकर और संयोग से एक–साथ इकट्ठा हुए और ऐसे वाहन का निर्माण किया? कार में मौजूद सभी पुर्जे लोहे, ताँबा, रबर जैसी तत्वों (जिनको बनाने के लिए कच्ची सामग्री पृथ्वी पर मिलती है) से बने हैं लेकिन इस हकीकत से आप क्या यह सोचेंगे कि इन सभी पदार्थों का "संयोग" से संश्लेषण हुआ और बाद में वे पास आयें और ऐसी कार का निर्माण किया?

इस बात में कोई संदेह नहीं कि विवेकपूर्ण बुद्धिवाला कोई भी व्यक्ति यह महसूस करेगा कि यह कार एक बुद्धियुक्त डिज़ाइन की पैदाइश है – दूसरे शब्दों में कहें तो एक फैक्टरी की पैदाइश है और उसे इस बात का आश्चर्य होगा कि यह कार जंगल के मध्य में क्या कर रही है? संपूर्ण विकसित स्वरूप में एक जटिल संरचना का अचानक उद्भव होना दर्शाता है कि यह किसी बुद्धिमान कारक का काम है। कोशिका जैसी जटिल व्यवस्था का सृजन निःसंदेह सर्वोत्तम इच्छा और बुद्धिमानी से किया गया था। दूसरे शब्दों में कहें तो यह अल्लाह के द्वारा सृजन से अस्तित्व में आई।

महज़ एक संयोग से परफैक्ट डिज़ाइन बन सकती है ऐसा मानना तर्क और बुद्धि के दायरे से बाहर है। फिर भी जीवन के उद्भव

के बारे में क्रमिक–विकास के सिद्धांत द्वारा पेश की गई व्याख्या इसी प्रकार की है। इस मुद्दे पर जोरशोर से बोलने वाले एक विद्वान फ्रैंच ऐकेडमी ऑफ साइंसीज़ के पूर्व प्रमुख और मशहूर फ्रैंच प्राणीशास्त्री पियरे–पॉल ग्रासे है। हालांकि ग्रासे एक भौतिकवादी हैं वे फिर भी स्वीकार करते हैं कि डार्विनवादी सिद्धांत जीवन को समझाने में असमर्थ है और वे "संयोग" के तर्क के बारे में एक मुद्दा सामने रखते है जो डार्विनिज़्म का मुख्य आधार है:

प्राणियों और पौधों को अपनी जरूरतें पूरी करने का अवसर देने वाला म्युटेशन्स के समयोचित प्रकटन पर विश्वास करना मुश्किल है। फिर भी डार्विनियन थीअरि और भी ज्यादा मांगती है : एक पौधे, एक प्राणी के अस्तिव के लिए हजारो और हजारों सौभाग्यशाली, योग्य घटनायें होना जरूरी है।

इस प्रकार, चमत्कार एक नियम बन जायेगा : अनंत संभावनाओं वाले प्रसंग होने में नाकाम नहीं होंगे......। दिन में सपने देखने के सामने कोई कानून नहीं है, लेकिन विज्ञान में इन दिन के सपनों शामिल नहीं होना चाहिए।139

इवोल्युशनिस्ट्स के लिए "संयोग" की धारणा का क्या अर्थ होता है, इसका सार ग्रास देते हैं :

"संयोग" एक तरह से खुदा बन जाता है, जिसका नास्तिकता के आवरण के अंतर्गत नाम नहीं दिया जाता लेकिन उसकी गुपचुप पूजा की जाती है।"140

तार्किक विफलता के कारण इवोल्युशनिस्ट्स संयोग की धारणा की पूजा करते हैं। कुर्रान में कहा गया है कि जो लोग अल्लाह के अलावा किसी दूसरे की पूजा करते हैं उनमें समझ नहीं है :

उनके पास हृदय है वे उनसे समझते नहीं हैं, उनके पास आँखें हैं वे उनसे देखते नहीं हैं, और उनके पास कान हैं वे उनसे सुनते नहीं हैं। वे पशुओं जैसे हैं–बल्कि ये उनसे भी ज्यादा भटके हुए हैं। यह लोग हैं जो अचेतावस्था में पड़े हुए हैं। (सुरत अल–अराफ : 179)

डार्विनियन फॉर्म्युला!

अब तक हमने जो तकनीकी प्रमाण देखे हैं इनके अलावा एक बार फिर से हम इन उदाहरणों में देखेंगे कि इवोल्युशनिस्ट्स के मन में कैसी अंधीश्रद्धा है। यह उदाहरण इतना सरल है कि बच्चें भी इन्हें आसानी से समझ सकते हैं।

क्रमिक–विकास का सिद्धांत यह दावा करता है कि जीवन का उद्भव संयोग से हुआ था। इस दावें के अनुसार निर्जीव और अजाग्रत परमाणु कोशिका बनाने के लिए इकट्ठे हुए और किसी प्रकार से उन्होंने मनुष्य समेत अन्य सजीव बनाये। अब हम इस बारे में विचार करते हैं। जब हम जीवन के मूल घटक माने जाने वाले कार्बन, फॉस्फारस, नाइट्रोजन और पॉटेशियम जैसे तत्वों को एक साथ ईकट्ठा करें तब सिर्फ एक ढ़ेर ही बनता है। वो चाहे कैसी भी प्रक्रिया से गुज़रे, परमाणु का बना यह ढेर एक भी जीवित चीज़ को नहीं बना सकता है। अगर आप चाहें तो इस विषय पर हम एक "प्रयोग" करते हैं और उस चीज का निरीक्षण डार्विनवादियों की ओर से करते हैं। जिसे डार्विनवादी बड़ी धूम के साथ "डार्विनियन फॉर्मूला" का नाम देते हैं।

बड़े–बड़े बैरल्स में इवोल्युशनिस्ट्स फॉस्फरस, नाइट्रोजन, कार्बन, ऑक्सिजन, लोह और मैग्नेशियम जैसे सजीवो की रचना में उपयोगी विपुल मात्रा में मौजूद पदार्थों को रखने दिया जाये। इसके अलावा, इन बैरल्स में उन्हें ऐसा कोई भी पदार्थ डालने दिया जाये जो सामान्य परिस्थितियों के तहत अस्तित्व में नहीं होता लेकिन वे इसे जरूरी मानते हैं। इस मिश्रण में वे जितने चाहे उतने एमिनो ऐसिड डालने दे जिनकी प्राकृतिक परिस्थितियों में पैदा होने की कोई गुंजाइश नहीं है। वे चाहे इतने प्रोटीन इसमें डाले जिसके निर्माण की संभावना 10950 के सामने 1 की है। वे जितनी चाहे इतनी गर्मी और नमीं के असर के नीचे इस मिश्रण को रखें। वो जैसे चाहें वैसे तकनीकी रूप से पूर्ण विकसित साधनों की मदद से इस मिश्रण को हिलाएं। इन बैरल्स के सामने वे सबसे अग्रिम पंक्तियों के मशहूर वैज्ञानिकों को बिठाने की अनुमति दें। इन विशेषज्ञों को बारी–बारी से अरबों सालों तक इन बैरल्स के सामने इंतजार करने दें। सजीव की उत्पत्ति के लिए वो जो भी जरूरी समझें ऐसी किसी भी प्रकार की परिस्थितियों का इस्तेमाल करने की उन्हें छूट दी जाए। वो जो चाहे कुछ भी करें, वे इन बैरल्स में से सजीव नहीं बना सकते। वे इलेक्ट्रॉनिक माइक्रोस्कोप के नीचे अपनी कोशिका का अवलोकन कर रहे प्रोफ़ेसर को भी नहीं बना सकते। वे जिराफ़, शेर, मधुमक्खी, पीतचटकी, घोड़े, डॉल्फिन, गुलाब, ऑर्चिड, लिली, कार्नेशन, केला, खजूर, टमाटर, खरबूजा, अंजीर, ऑलिव, अंगूर, पीच, मोर, रंगबिरंगी तितलियां या इन जैसे लाखों सजीव नहीं बना सकते। सचमुच वे इनमें से किसी सजीव की एक कोशिका भी नहीं बना सकते। संक्षेप में कहें तो चेतनाहीन परमाणु एक–दूसरे के पास आकर कोशिका नहीं बना सकते हैं। वे अपने आप कोई नया निर्णय नहीं ले सकते और इस कोशिका का दो हिस्सो में विभाजन नहीं कर सकते और जो पहले इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप का आविष्कार करते हैं और बाद में उस माइक्रोस्कोप में खुद की कोशिका की संरचना का अभ्यास करते है ऐसे प्रॉफेसर्स भी नहीं बना सकते हैं। अल्लाह के सर्वोत्कृष्ट सृजन के साथ ही पदार्थ को जीवन मिल सकता है।

लेकिन इससे बिल्कुल उल्टा दावा करने वाला क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक संपूर्ण झूठ है जो तर्क के खिलाफ है। उपर्युक्त उदाहरण को देखने से इवोल्युशनिस्ट्स के दावों पर सिर्फ थोड़ा विचार करने से सच का पता चल जायेगा।

ऑक्सिजन
नाइट्रोजन
एमिनो ऐसिड
कार्बन
फॉस्फरस
लिपिड
Ca
र्20
ब्2

इवोल्युशनिस्टस मानते है कि चान्स अपने आप में एक सृजनात्मक बल है. उन्हे एक बहुत बडा बैरल लेने दे और जीवित कोशिका बनाने के लिए वे जो भी पदार्थ जरूरी समझे उसे इस बैरल में रखने दे. उसके बाद उन्हे यह बैरल को गर्म करने दे, ठंडा होने दे या इसमें से बिजली पसार करने दे. उन्हे बैरल में क्या हो रहा है इसका ध्यान रखने दे और यह काम लाखो या अरबो सालो तक भीवि पीढीयो को सौंपने दे. हर क्षण उन्हे बैरल पर लगातार नजर बनाये रखने दे और कुछ भी चान्स पर छोडने दे. जीवित तत्व के निर्माण के लिए जरूरी कोई भी परिस्थिति का उन्हे इस्तेमाल करने दे.

इस बैरल में वे एक भी कोशिका नहीं बना पायेंगे. वे घोडा, तितली, फूल, बत्तक, चैरी या नींबू का पेड, उल्लु या चींटी कुछ भी नहीं बना पायेंगे. वे चाहे कुछ भी करे, वे ऐसे वैज्ञानिक नहीं बना पायेंगे जो खुद की कोशिकाओं का माइक्रोस्कोप में अवलोकन करे या ऐसे मनुभय नहीं बना पायेंगे जो सोचते है, कारण देते है, निर्णय लेते है, आनंद कर सकते है और रोमांच का अनुभव कर सकते है.

आँख और कान में निहित तकनीक

क्रमिक–विकास का सिद्धांत जिसका जवाब देने में विफल होता है ऐसा ही एक अन्य विषय आँख और कान की इन्द्रियगोचर शक्तियां हैं।

आँख के विषय में बात करने से पहले "हम कैसे देखते हैं" इस प्रश्न का संक्षिप्त जवाब देखते हैं। पदार्थ में से आ रहे प्रकाश के किरण आँख की रेटिना के विपरीत गिरते हैं। यहां प्रकाश की यह किरण कोशिका द्वारा इलेक्ट्रिक सिग्नल में तबदील होती है और वे दिमाग के पीछे एक छोटी जगह पर पहुँचते हैं जिसे द्रष्टि का केन्द्र कहा जाता है। सिलसिलेवार प्रक्रिया के बाद यह इलेक्ट्रिक सिग्नल्स दिमाग के केन्द्र में एक छवि की तरह परखे जाते हैं। इस तकनीकी पृष्ठभूमि के साथ हम कुछ विचार करते हैं।

दिमाग का अंदरूनी हिस्सा सख्त होता है और वहां अंधेर होता है। इसका मतलब यह कि दिमाग जहां पर होता है वहां प्रकाश नहीं पहुँचता है। द्रष्टि केन्द्र माने जाने वाली जगह में अंधेरा होता है जहां कोई भी प्रकाश कभी नहीं पहुँच सकता है। आपने शायद कभी भी न देखा हो यह इतने अंधेरे वाला स्थल है। हालांकि, इस अत्यंत अंधेरे वाली जगह में हम प्रकाशमान दुनिया देखते हैं।

आँख में बनी छवि इतनी तेज़ और विशिष्ट होती है कि 20वीं सदी की टैकनोलजि़ भी ऐसा परिणाम प्राप्त नहीं कर सकती। उदाहरण के तौर पर आप जिस किताब को पढ़ रहे हैं उसे देखें और किताब को पकड़ने वाले आपके हाथ देखें। उसके बाद अपना सिर ऊंचा कीजिए और अपने आसपास देखें। किसी भी जगह आपने इस प्रकार की तेज़ साफ और सुस्पष्ट छवि देखी है? दुनिया के सबसे महानतम टीवी उत्पादकों द्वारा बनाये गये टैलिविज़न स्क्रीन भी आपको इतनी साफ छवि नहीं दे सकता। यह 3क (त्रिपरिमाणिय), रंगीन और अत्यंत साफ छवि है। 100 सालों से भी ज्यादा समय से हजारों इंजीनियर ऐसी तेज़ छवि पाने की कोशिश कर रहे हैं। फैक्टरियाँ, बड़ी–बड़ी इमारतें खड़ी की गई, बहुत कुछ शोध हुआ है और कई योजनायें और डिज़ाइन इस उद्देश्य के लिए बनाये गये हैं। पहले आप टीवी स्क्रीन को देखें और बाद में उस किताब के सामने जो आपके हाथ में है। आप महसूस करेंगे कि इन दोनों की शार्पनेस (साफपन) में बहुत बड़ा फर्क है। इसके अलावा टीवी स्क्रीन आपको 2क (द्वि–परिमाणिय) छवि दिखाता है जबकि आप की आंख आपको 3क (त्रि–परिमाणिय) छवि दिखाती है जिसमें गहराई होती है। जब आप ध्यान से देखेंगे तो पायेंगे कि टेलिविज़न में धुँधलापन है। क्या आपकी आंख में कोई धुँधलापन है? बिल्कुल नहीं –

कई सालों तक, हजारों इंजिनियरो नें त्रि–परिमाणिय टीवी बनाकर आँख के जैसी द्रश्य गुणवत्ता तक पहुँचने के प्रयास किये हैं। उन्होंने त्रि–परिमाणिय टेलिविज़न सिस्टम बनाये हैं फिर भी खास चश्मे पहने बगैर उसे देखना मुमकिन नहीं है; इसके अलावा यह मात्र कृत्रिम त्रि–परिमाणिय व्यवस्था है। पृष्ठभूमि ज्यादा धुँधली होती है और अग्रभूमि कागज़ के सैटिंग जैसा दिखाई पडता है। आँख के जैसा तीखा और सुस्पष्ट विज़न पैदा करना कभी भी संभव नहीं हो सका है। कैमरा और टेलिविज़न दोनों में इमेज़ क्वॉलिटी कम होती है।

इवोल्युशनिस्ट्स दावा करते हैं कि ऐसी तेज और बिल्कुल साफ छवि बनाने वाली मैकेनिज़म (आंख) "संयोग" से पैदा हुआ है। अब अगर कोई आप से कहे कि आपके कमरे में जो टीवी है वह इत्तेफ़ाक के फलस्वरूप बना, या उसके सभी परमाणु संयोग से साथ आये और द्रश्य दिखानेवाले इस साधन को बनाया तो आप क्या मानेंगे? हजारों लोग जो काम नहीं कर सकते वह परमाणु कैसे कर सकते हैं?

करीब एक सदी तक हजारों इंजिनियर सबसे आधुनिक टैकनॉलोजिकल साधनों का उपयोग करके हाई–टैक प्रयोगशालायें और बड़े–बड़े औद्योगिक परिसरों में शोध कर रहे हैं और वे सब इससे ज्यादा कुछ नहीं कर पाये हैं।

आँख से हलकी गुणवत्तावाली छवि पैदा करने वाला साधन अगर संयोग से पैदा नहीं हुआ है तो यह बहुत साफ बात है कि आँख और आँख द्वारा देखी गई तस्वीर संयोग से पैदा नहीं हो सकती है। इसके लिए टीवी से ज्यादा विस्तृत और चमत्कारिक योजना और सृजन की आवश्यकता होती है। इतनी तेज़ और विशिष्ट छवि की योजना और सृजन अल्लाह से जुड़ा हुआ है, जिसके पास सभी चीज़ों को बनाने की शक्ति है।

यही बात कान पर भी लागू होती है। बाहरी कान ऑरिकल द्वारा सभी उपस्थित आवाज़ को पकड़ता है और उन्हें मध्य कान की तरफ निर्देशित करता है; मध्य कान आवाज के कम्पनों को और तेज़ बनाकर प्रसारित करता है; अंदरूनी कान इन दोलनों को सरल इलेक्ट्रिक सिग्नल में परिवर्तित करके दिमाग को भेजता है। बिल्कुल आँख की तरह, सुनने की क्रिया दिमाग में सुनने के केन्द्र में पूरी होती है।

आँख में जो स्थिति है वह कान के लिए भी सच है। इसका अर्थ है कि दिमाग जिस तरह प्रकाश से जुड़ा हुआ होता है उसी तरह ध्वनि से भी जुड़ा हुआ होता है। वह कोई आवाज़ को अंदर आने नहीं देता है। इसलिए बाहर चाहे कितना आवाज़ हो, दिमाग का अंदरूनी हिस्सा हमेशा शांत होता है। फिर भी सब से सूक्ष्म ध्वनि की पहचान दिमाग में होती है। आपके दिमाग में आप ऑर्केस्ट्रा की ध्वनि को सुन सकते हैं और भीड़वाले इलाके में सभी आवाज़ें सुन सकते हैं। हालांकि, अगर उस क्षण किसी खास साधन से आप के दिमाग में ध्वनि का स्तर नापा जाये तो आपको पता चलेगा कि वहां सम्पूर्ण शांति है।

एक बार फिर से कान और दिमाग में मौजूद उच्च्य गुणवत्तावाली सर्वोत्तम टैकनोलॉज़ि की तुलना मनुष्य द्वारा बनाई गई टैकनोलॉज़ि से करते हैं। साफ छवि की तरह यहां पर मूल ध्वनि के समान ध्वनि पैदा करने के लिए कई दशकों तक प्रयास होते रहे हैं। इन प्रयासों के परिणामस्वरूप हमें साउन्ड रिकॉर्डर, हाई–फिडेलिटी सिस्टम और आवाज़ को परखने वाले सिस्टम मिले हैं। इन सब टैकनालॉजि और हजारों इंजिनियर और विशेषज्ञ सालों तक कठिन प्रयास करते रहे हैं फिर भी कोई ऐसी ध्वनि नहीं मिली है जिसका तीखापन और स्पष्टता कान द्वारा सुनी गयी आवाज़ जैसी हो। संगीत उद्योग में बड़ी–बड़ी कंपनियों द्वारा बनाई गई हाईफाई सिस्टम के बारे में सोचिये। इन

आँख और कान में मौजूद टैकनोलजि

जब हम आँख और कान को कैमेरा और साउन्ड रिकॉर्डर की तुलना करते है तब हम देखते है कि आँख और कान इन टैकनोलोजिकल चीज़ो से भी ज्यादा जटिल, सक्रिय और सर्वोत्तम है.
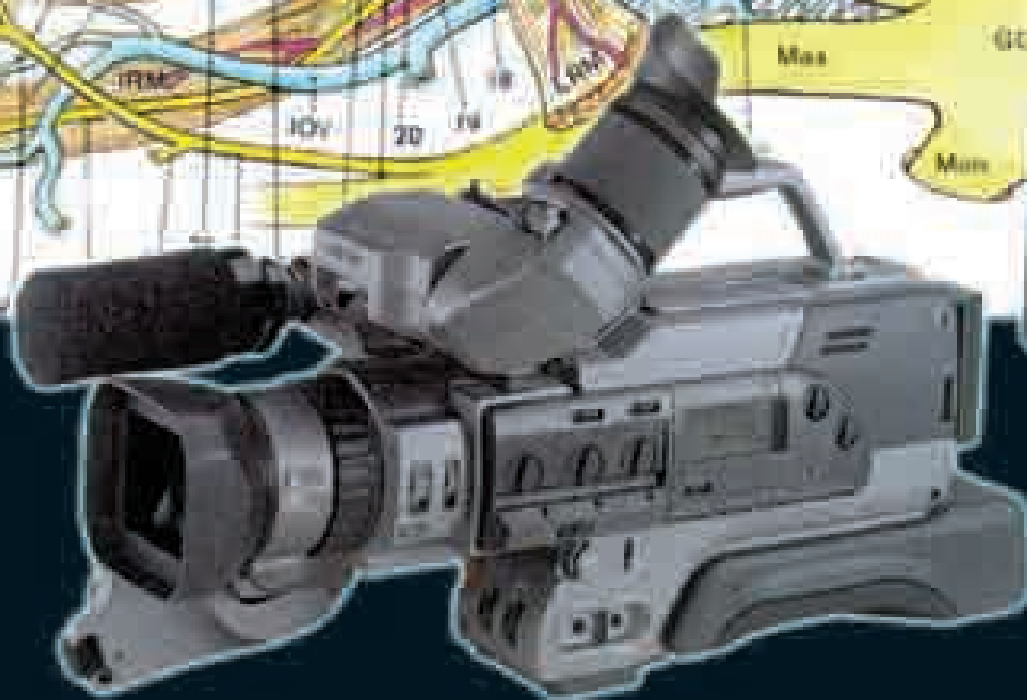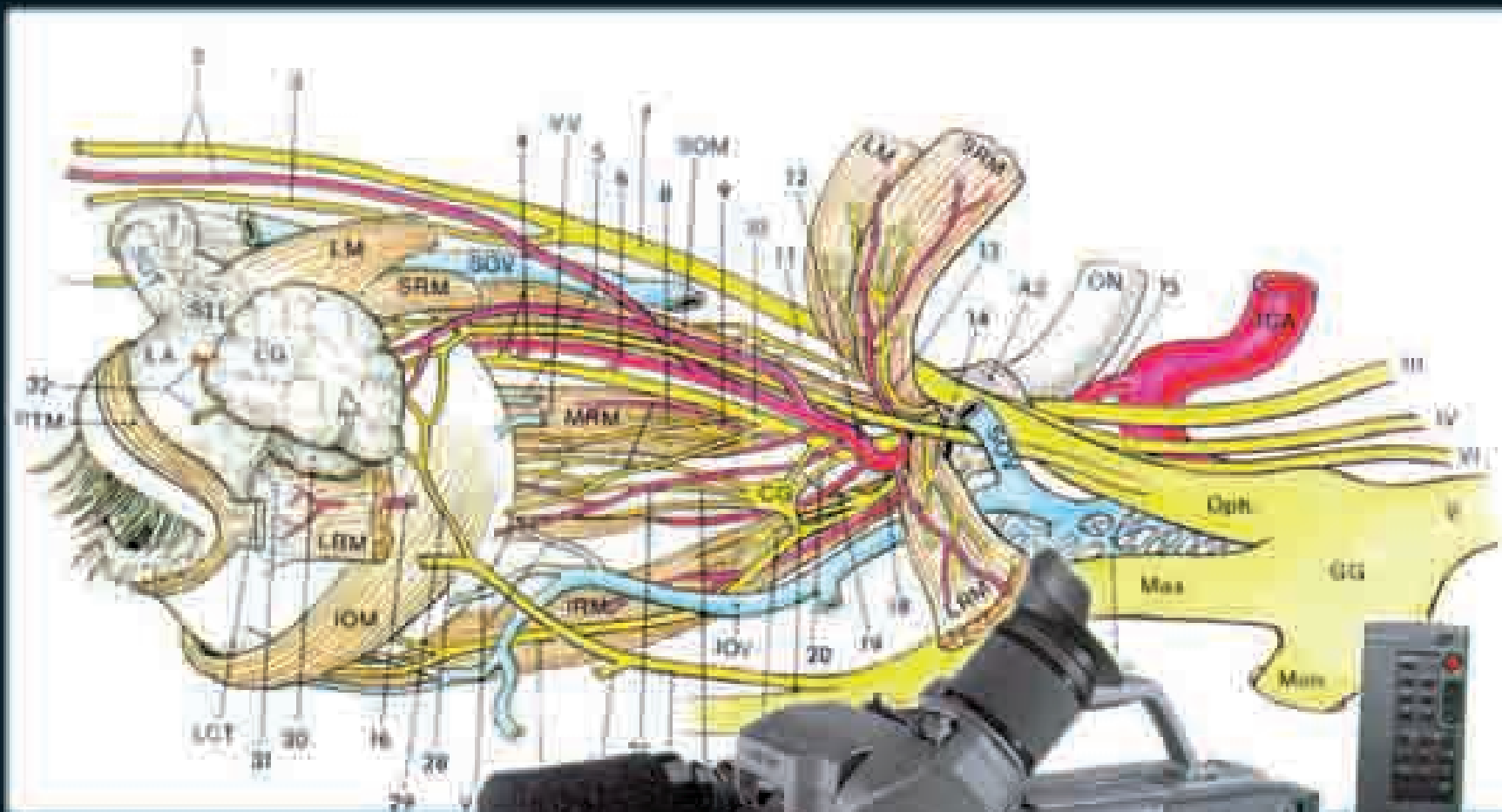
साधनों में जब आवाज़ की रिकॉर्डिंग की जाती है तब कुछ ध्वनि रिकार्ड होने से रह जाती है और जब आप हाईफाई सिस्टम शुरू करते हैं तब संगीत शुरू होने से पहले आप सिसकारी सुनते हैं। हालांकि, मानव शरीर की टैकनोलॉज़ि से पैदा होने वाली आवाज़े अत्यंत तेज़ और सुस्पष्ट है। हाईफ़ाई सिस्टम की तरह मनुष्य का कान कभी भी फुस्काट के साथ आवाज को परख नहीं सकता है; वह आवाज़ को उसी तरह पहचान सकता है, जैसी वह सुनाई देती है। मानव के सृजन से लेकर आज तक यही सुनने की रीत रही है।

संक्षिप्त में, मनुष्य द्वारा पैदा की गई टैकनोलॉज़ि से हमारे शरीर की टैकनोलॉज़ि कई गुना ज्यादा सर्वोत्तम है क्योंकि मनुष्य अपनी बरसों की एकत्रित की गई जानकारी, अनुभव और मौके का उपयोग करते हैं। कोई ऐसा नहीं कहेगा कि हाईफाई सिस्टम या कैमेरा किसी संयोग के कारण अस्तित्व में आये। तो फिर हम कैसे यह दावा कर सकते हैं कि इससे भी ज्यादा श्रेष्ठ टैक्नोलॉजि जो मनुष्य के शरीर में मौजूद हैं वे क्रमिक–विकास नामक संयोगों के सिलसिले से अस्तित्व में आई? यह साफ है कि आँख, कान और मानव शरीर के सभी अंग बहुत ही श्रेष्ठ सृजन का परिणाम है। यह अल्लाह के अनोखे और अद्वितीय सृजन, उसके ज्ञान और उसकी दूरदृष्टि के संकेत हैं।

हमने यहां देखने की और सुनने की इन्द्रियों के उदाहरण दिये हैं इसका कारण है कि सृजन के इतने स्पष्ट सबूत को इवोल्युशनिस्ट्स समझने में असक्षम हैं। अगर आप एक दिन किसी इवोल्युशनिस्ट से पूछेंगे कि संयोग के परिणामस्वरूप यह अदभुत संरचना और टैकनोलॉज़ि आँख और कान में किस तरह संभव हुई तो आप देखेंगे कि वह आपको कोई तार्किक या ठीक जवाब नहीं दे पायेगा। 3 अप्रैल 1860 में ऐसा ग्रे को लिखे पत्र में खुद डार्विन ने यह लिखा कि "आँख के विचार ने उन्हें ठंडा कर दिया है" और उन्होंने सजीवों के अदभुत सृजन के आगे इवोल्युशनिस्ट्स की मायूसी को स्वीकार किया।141

क्रमिक–विकास का सिद्धांत दुनिया में सबसे प्रबल सम्मोहन है

इस पूरी किताब में यह समझाया गया है कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत के पास कोई वैज्ञानिक सबूत नहीं है और इससे विपरित जीवाश्मविज्ञान, माइक्रोबायोलोज़ी और शरीररचना शास्त्र जैसी विज्ञान की शाखाओं से मिले प्रमाणों ने इस सिद्धांत को झूठा साबित किया है। इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि क्रमिक–विकास वैज्ञानिक खोज़े और तर्क के साथ सुसंगत नहीं हैं।

यह स्पष्ट करने की जरूरत है कि किसी भी विचारधारा के पूर्वाग्रह और प्रभाव से मुक्त और सिर्फ अपनी बुद्धि और तर्क से चलने वाला कोई भी व्यक्ति स्पष्ट रूप से यह समझ सकता कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत जो ऐसे अंधविश्वासी समाज की याद दिलाता है जो विज्ञान और संस्कृति के ज्ञान से खाली है। बिल्कुल असंभव है।

जैसा कि पीछे बताया गया है, क्रमिक–विकास के सिद्धांत को मानने वाले लोग सोचते हैं कि बहुत बड़े हौज़ में कुछ परमाणु और अणु डाल देने से विचारशील प्रॉफेसर, युनिवर्सिटी के विद्यार्थी, आइनस्टाइन और गैलिलियो जैसे वैज्ञानिक, हम्फ्री बॉगार्ट, फ्रांक सिनात्रा और पावारोट्टी जैसे कलाकार, हिरन, नींबू के पेड़ और फूल पैदा किये जा सकते हैं। इसके अलावा इस आधारहीन बात को मानने वाले वैज्ञानिक और प्रॉफेसर शिक्षित लोग हैं। इसलिए क्रमिक–विकास के सिद्धांत को "इतिहास में सबसे प्रबल सम्मोहन" मानना लाज़मी है। इससे पहले किसी भी अन्य मान्यता और विचार ने लोगों की तर्क शक्ति पर इस तरह से कब्जा नहीं जमाया है और उन्हें बुद्धिमानी से और तर्क से सोचने की इजाजत देने और सत्य को लोगों से छुपाए रखने जैसा अंधा नहीं बनाया। मिसरियों द्वारा सूर्य के देवता की पूजा, आफ्रिका के कुछ हिस्सों में टोटेम की पूजा, सबा के लोगों द्वारा सूर्य की पूजा, पैगम्बर इब्राहीम के समुदाय द्वारा अपने हाथों से बनायी गई मूर्तियों की पूजा या पैगम्बर मूसा के लोगों द्वारा सोने के बछड़े की पूजा से भी खराब और अकल्पनीय अंधापन है यह।

असल में इस परिस्थिति के विद्यमान होने का कारण तर्क और बुद्धि का अभाव है जिसका अल्लाह कुर्रान में संकेत देता है। वे कई आयातों में यह स्पष्ट करता है कि कुछ लोगों के दिमाग बंद हो जायेंगे और वे सत्य देखने के लिए शक्तिहीन हो जायेंगे। इनमें से कुछ आयातें इस प्रकार हैं :

जो लोग ईमान (श्रद्धा) नहीं रखते हैं, उन्हें आप चेतावनी दें या न दें कोई फर्क नहीं पड़ता। वे नहीं मानेंगे। अल्लाह ने उनके दिलों और कानों को बंद कर दिया है और उनकी आँखे अंधी हो चुकी है। और उनके लिये बड़ी यातना है। (सूरत अल–बकराः 6–7)

....उनके पास दिल है वे उनसे समझते नहीं, और उनके पास आंखें हैं वे उनसे देखते नहीं, और उनके पास कान हैं वे उनसे सुनते नहीं। वे पशुओं की तरह हैं – बल्कि ये उनसे भी ज्यादा बेराह है। यही लोग हैं जो अचेतावस्था में पड़े हुए हैं। (सुरत अल–आराफः 179)

और यदि हम इन पर आकाश का कोई दरवाजा खोल दें और यह दिन–दहाड़े उसमें चढ़ने लगे फिर भी यह यही कहेंगे : हमारी आंखें धोखा खा रही हैं – बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है। (सुरत अल–हिज्रः 14–15)

क्रमिक–विकास के इस सम्मोहन से कितना विशाल समुदाय प्रभावित हुआ है, उन्हें सत्य से दूर रख रहा है और 150 सालों तक यह सम्मोहन टूट नहीं सका है – इस सबका शब्दों में ब्यौरा देना नामुमकिन है। अगर एक या दो लोग आधारहीन और मूर्ख दावों

जिस प्रकार मगरमच्छो की पूजा करनेवाले लोगो की मान्यताएं आज विचित्र और अविश्वसनीय लगती है इसी प्रकार से डार्विनिस्ट लोगो की मान्यताएं भी विलक्षण है. डार्विनिस्ट चान्स और निर्जीव, अजाग्रत परमाणुओ को सृजनात्मक बल मानते है और यह कोई धर्म हो इस तरह से इस मान्यता को समर्पित है.

और असंभव द्रश्यलेखों को मानते हों तो इसे समझा जा सकता है। हालांकि, दुनिया में सभी लोग यह मान रहे हैं कि अचेत और निर्जीव परमाणु अचानक पास आने को तय करते हैं और ऐसे ब्रह्मांड की रचना करते हैं जो संगठन, अनुशासन, तर्क और जाग्रता के पूर्ण तंत्र के साथ काम करता हैं, पृथ्वी नाम के ग्रह का निर्माण करते हैं जहां जीवन के लिए अनुकूल सभी लक्षण मौजूद हैं और अनगिनत जटिल संरचना के साथ कई सजीव यहां जी रहे हैं – इस मान्यता में दुनिया के अरबों लोग मानते हैं जिसके लिए 'जादू' या चमत्कार शब्द ही उचित है।

असल में, कुर्रान में पैगम्बर मूसा और फिरऔन की घटना के सम्बन्ध में अल्लाह हमें बताता है कि नास्तिकवादी फिलोसोफी का समर्थन करने वाले कुछ लोग वास्तव में अन्य लोगों को जादू से प्रभावित करते हैं। जब फिरऔन को सच्चे धर्म के बारे में बताया गया तो उसने पैगम्बर मूसा को अपने जादुगरों से मिलने को कहा। जब पैगम्बर मूसा उनसे मिले तो उसने जादूगरों को पहले अपनी क्षमताओं का प्रदर्शन करने को कहा। जैसा कि आयत हमें बताती हैं :

उसने कहा, "आप फेंके"। और जब उन्होंने फेंका तो उन्होंने लोगो की आँखो पर सम्मोहन किया और उन्हें उनसे डरने के लिए मज़बूर किया। उन्होंने बहुत ही बड़ा जादू दिखाया। (सूरत अल–अरााफ : 116)

जैसाकि हमने देखा, फिरऔन के जादुगर पैगम्बर मूसा और उनके मानने वालों के अलावा सभी को मूर्ख बनाने में सक्षम थे। हालांकि, पैगम्बर मूसा द्वारा पेश किये गये सबूत (निशानी) ने इस सम्मोहन को तोड़ा या "उन्होंने जो धोखा किया उसको निगल गये" जैसा कि आयत कहती है।

और हमने मूसा की तरफ 'वह्य' की अपनी लाठ (धरती पर) डाल दो। फिर क्या था वह उस रचे हुए स्वांग को निगलने लगी। इस तरह सच्चाई साबित हो गई और जो कुछ वे करते थे मिथ्या हो कर रहा। इस तरह वे परास्त हुये और उल्टे अपमानित हो गये। (सुरत अल–आराफ : 117–119)

जैसाकि हम इस आयात में देख सकते हैं, अन्य लोगों को सम्मोहन में डालने वाले इन लोगों ने जो किया वो केवल एक भ्रम था ऐसा पता चलने पर वे अपनी सारी विश्वसनीयता गँवा बैठे। वर्तमान में भी ऐसे ही सम्मोहन के प्रभाव में जो लोग है और वैज्ञानिक छल के नाम पर हास्यास्पद दावों को मानते हैं और अपनी पूरी जिंदगी इसका समर्थन देने में बिता देते हैं। वे भी जब सच सामने आयेंगे तब शरमिंदा होंगे और यह सम्मोहन टूट जायेगा। नास्तिकवादी प्रॉफेसर और कुछ 60 सालों तक क्रमिक–विकास के समर्थक रहे माल्कम मुगरिज को भी बाद में सत्य का ज्ञान हुआ और उन्होंने कबूल किया कि वे इस मानसिक दृष्टिकोण से चिंतित है :

मुझे अब विश्वास हो गया है कि जिस हद तक क्रमिक–विकास के सिद्धांत को लागू किया जा रहा है वह भविष्य में इतिहास की किताबों में एक बड़ा चुटकुला बनकर रह जायेगा। भावी पीढ़ियों को आश्चर्य होगा कि इतनी हल्की और संदिग्ध धारणा में लोगों ने इतने सालों तक अटल विश्वास कैसे रखा।142

भविष्य बहुत दूर नहीं है : इससे विपरित, लोग बहुत जल्द यह देख पायेंगे कि "चान्स" (संयोग) कोई खुदा नहीं है और वे क्रमिक–विकास के सिद्धांत को दुनिया में प्रवर्तमान सबसे घिनौने झूठ और सबसे खतरनाक सम्मोहन के रूप में देखेंगे। पूरी दुनिया के कई लोगों की आंखों से यह सम्मोहन अब हटने लगा है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत का असली चहेरा देखने वाले कई लोगों को आश्चर्य हो रहा है कि वे इस सिद्धांत के मायाजाल में कैसे फ़स गये।

अध्याय 12

इवोल्युशनिस्ट्स के दावे क्यों अयोग्य हैं?

पिछले अध्यायों में हमने जीवाश्म से मिले प्रमाणों और मोलेक्युलर बायोलॉजि़ के द्रष्टिकोण से क्रमिक–विकास के सिद्धांत की अयोग्यता को देखा। इस अध्याय में हम कई बायोलोजिकल घटनाओं और धारणाओं को देखेंगे जिन्हें इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा सैद्धांतिक प्रमाण के रूप में देखा जाता है। यह मुद्दे बहुत महत्त्वपूर्ण हैं जो दिखाते हैं कि क्रमिक–विकास को समर्थन देने वाली कोई वैज्ञानिक खोज नहीं और इसके बदले हमें यह देखने को मिलेगा इवोल्युशनिस्ट्स ने किस हद तक तोड़–मरोड़ और आँखों में धूल झोंकने के प्रयास किये हैं।

वेरिएशन (भिन्नता) और प्रजातियां

जीनेटिक्स में प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द वेरिएशन का अर्थ है ऐसा जिनेटिक (जीन्स से सम्बन्धित) प्रसंग जो व्यक्तिओं या चेतना रखने वाले समूहों या प्रजातियों में एक–दूसरे से अलग लक्षण विकसित करने के लिए प्रेरित करता है। मिसाल के तौर पर पृथ्वी पर सभी लोगो के पास मूलतः एक ही प्रकार की जनेटिक सूचना होती है, फिर भी कुछ लोगों की आँखे तिरछी होती हैं, किसी के बाल लाल होते है, कुछ लोगों के नाक लम्बे होते हैं और कुछ छोटे कद के होते हैं – यह सब जीनेटिक सूचना में भिन्नता की क्षमता किस हद तक इस बात पर आधारित है कि हो सकती है।

इवोल्युशनिस्ट्स जातियों में दिखाई देने वाले वेरिएशन (भिन्नता) को सिद्धांत के प्रमाण के रूप में पेश करते हैं।

हालांकि, वेरिएशन क्रमिक–विकास का प्रमाण नहीं है क्योंकि वेरिएशन पहले से विद्यमान जीनेटिक सूचना के अलग–अलग संयोजनों के परिणाम हैं और वे जीनेटिक जीन्स से सम्बन्धित जानकारी में कोई नये लक्षण शामिल नहीं करते हैं। हालांकि, क्रमिक–विकास के सिद्धांत के महत्त्व के लिये मुद्दा यह है कि बिल्कुल नयी जातियों के निर्माण के लिए बिल्कुल नयी जानकारी कहाँ से आई होंगी?

वेरिएशन्स हमेशा जनेटिक सूचना की सीमा में ही होते हैं। जनेटिक्स विज्ञान में इस सीमा को "जीन पूल" कहा जाता है। प्रजातियों के जीन पूल में मौजूद सभी लक्षण वेरिएशन के कारण विभिन्न तरीकों से प्रकाश में आ सकते हैं। उदाहरण के तौर पर वेरिएशन के परिणामस्वरूप जिन विभिन्नताओं में लम्बी पूंछ या छोटे पैर है वे सरीसृप की विशिष्ट प्रकार की जाति में दिख सकते हैं क्योंकि छोटे और लम्बे पैरोंवाले ऐसे दोनों स्वरूपों की जानकारी है जातियों के जीन पूल में अस्तित्व में हो सकती हैं। हालांकि, वेरिएशन की वजह से सरीसृपो में पँख या पिच्छ जोड़कर या उनकी उपापचय की क्रिया बदलकर उन्हें पक्षियों में रूपांतरित नहीं किया जा सकता है। ऐसे परिवर्तन के लिए सजीव की जनेटिक सूचनाओं को बढ़ाने की जरूरत पड़ती है, जो वेरिएशन से संभव नहीं है।

डार्विन ने जब यह सिद्धांत बनाया था तब वो इस सच्चाई से परिचित नहीं थे। उन्होंने सोचा कि वेरिएशन की कोई सीमा नहीं है। 1844 में लिखे एक लेख में उन्होंने कहा : "ज्यादातर लेखक यह मानते हैं कि प्रकृति में वेरिएशन की एक सीमा विद्यमान है। फिर भी मुझे ऐसा कोई भी तथ्य नहीं मिला जिसके आधार पर इस मान्यता को रचा गया है"।143 द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ में उन्होंने अपने सिद्धांत के सबसे महत्त्वपूर्ण प्रमाण के रूप में वेरिएशन के विविध उदाहरणों का उल्लेख किया है।

उदाहरण के तौर पर, डार्विन के मुताबिक, पशु संवर्धन कराने वाले जो ज्यादा दूध देने वाली प्रजातियों के पशुओं को पैदा कराने के लिए विविध पशुओं के बीच संभोग करवाते हैं वे आखिर उन्हें एक जाति में से दूसरी जातियों में परिवर्तित करते हैं। द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ में से निम्नलिखित वाक्य में "अनलिमिटेड वेरिएशन" की डार्विन की धारणा अच्छी तरह देखी जा सकती है :

जातियों में दिखनेवाले परिवर्तन का अर्थ क्रम विकास नहीं है

द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ में डार्विन ने दो अलग विभावनाओ को ऊलझा दिया थाः जातियो में दिखनेवाले परिवर्तन और बिलकुल नयी जाति का उदभव. ऊदाहरण के तौर पर डार्विन ने कुत्तो की विभिन्न नस्लों में विविधता देखी और कल्पना की कि इनमें से कुछ परिवर्तन एक दिन अलग जातियो में तबदील होंगे. आज भी इवोल्युशनिस्टस जातियों में देखे जानेवाले परिवर्तनो को 'क्रम विकास' के रूप में पेश करने पर अडे हुए है.

हालांकि, जातियों में देखे जानेवाले परिवर्तन क्रम विकास नहीं है यह एक वैज्ञानिक हकीकत है. ऊदाहरण के तौर पर कुत्तो की कितनी भी नस्लों का अस्तित्व हो यह हंमेशा एक ही जाति रहेगी. एक विशि ट जाति में से अन्य जाति तक कोई पारगमन आकार नहीं लेगा.

मुझे लगता है की भविष्य में प्राकृतिक चयन द्वारा भालूओं की ऐसी जातियां अस्तित्व में आयेंगी जो अपनी आदतों में जलचर जैसी होंगी, उनके मुँह बड़े आकार के होंगे, और यहाँ तक कि वे व्हैल जैसा महाकाय होगा।144

डार्विन का इतना अस्वाभाविक उदाहरण देने का कारण उन दिनों में विज्ञान का आदिकालीन ज्ञान था और उस समय विज्ञान इतना विकसित नहीं हुआ था। उसके बाद 20वीं सदी में विज्ञान ने सजीवों पर किये गये प्रयोगों के आधार पर "जनेटिक स्टेबिलिटी" (जनेटिक होमिओस्टेसिस : देहधार्मिक प्रक्रियाओं द्वारा जीनेटिक सन्तुलन बनाये रखने की प्रक्रिया) का सिद्धांत दिया। यह सिद्धांत कहता है कि पशुओं की विविध जातियों में संभोग के जरिये नये वेरिएशन पैदा करने के सभी प्रयास अनिर्णायक साबित हुए हैं इसलिए सजीवों की विभिन्न प्रजातियों में कई कठिन बाधाएं हैं। इसका यह मतलब है कि डार्विन ने जिस तरह धारणा रखी थी उसके मुताबिक मवेशीयों के विभिन्न वेरिएशन्स में संभोग करवा के मवेशियों को विविध प्रजातियों में रूपांतरित करना बिल्कुल असंभव है।

अपनी किताब डार्विन रीटायर्ड में डार्विनिज़िम को अस्वीकार करने वाले नॉर्मन मैकबेथ कहते हैं :

समस्या का मूल यह है कि क्या सचमुच सजीव असीमित रूप से विविधता दिखाते हैं....... प्रजातियां स्थिर दिखती हैं। हमने सभी निराश पशु संवर्धकों के बारे में सुना हैं जिन्होंने सिर्फ यह देखने के लिए अपना काम जारी रखा है कि क्या प्राणी या पौधे का जहां से प्रारंभ हुआ है वहां लौटते हैं या नहीं। दो या तीन सदियों तक भारी प्रयासों के बावजूद नीला गुलाब या काला ट्युलिप पैदा करना कभी भी संभव नहीं हो पाया है।145

विश्व के सबसे सक्षम ब्रीडर (संवर्धक) माने जाने वाले ल्युथर बरबैंक ने इस हकीकत को उजागर किया जब उन्होंने कहा कि, "संभावित विकास की सीमाएं हैं और यह सीमाएं एक नियम का अनुसरण करती हैं।"146 डैनिश वैज्ञानिक डबल्यु एल जोहानसन न इस मुद्दे का समापन इस प्रकार किया :

डार्विन और वॉलेस ने जिन वेरिएशन पर बल दिया था वे कुछ हद से ज्यादा आगे नहीं बढ़ सकते हैं। ऐसी विभिन्नता में "अ. निश्चित भिन्नता" (इन्डेफिनिट डिपार्चर) का रहस्य नहीं छिपा हो सकता है।147

व्हैल भालू में से उत्पन्न हुई वह गलत धारणा है

द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ में डार्विन ने यह बात पर जोर दिया है कि व्हैल की उत्पत्ति उन भालूओ में से हुई जो तैरने की कोशिश करते थे! डार्विन ने गलती से यह धारणा की कि किसी जाति में परिवर्तन की संभावनाएं अमर्याद है. 20वीं सदी के विज्ञान ने दिखाया है कि क्रम विकास का यह द्रश्यलेख काल्पनिक है.
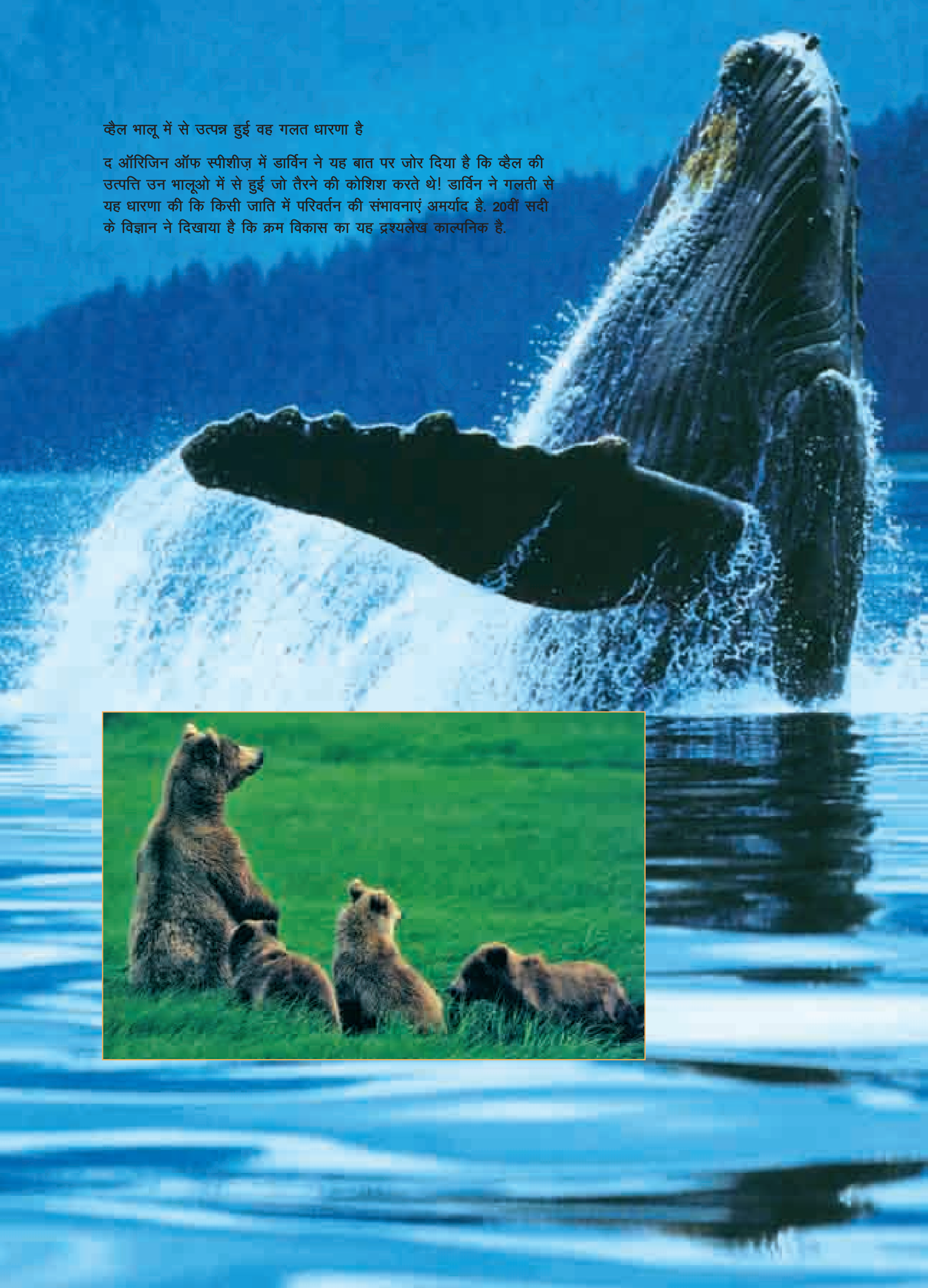
इसी तरह से डार्विन ने गेलापेगोस द्वीपसमूहों पर जो फिंच चीड़िया देखी थी वे वेरिएशन का अन्य उदाहरण है जो "क्रमिक–विकास" का प्रमाण नहीं है। वर्तमान समय में हुए अवलोकनों ने दिखाया है कि डार्विन के सिद्धांत ने जो पूर्वधारणा बांध ली थी उस तरह से फिंच चीड़िया असीमित वेरिएशन से नहीं गुजरती है। इसके अलावा डार्विन यह मानते थे कि फिंच चीड़ियों के विविध प्रकार 14 विशिष्ट प्रजातियों का प्रतिनिधित्व करते थे। वास्तव में इन चीड़ियों ने एक–दूसरे के साथ संभोग किया था जिसका अर्थ यह है कि यह वेरिएशन एक ही प्रजाति के थे। वैज्ञानिक अवलोकन दिखाता है कि फिंच चीड़ियों की चोंच (जिसे सभी इवोल्युशनिस्ट सूत्रों में एक मिथ्या का रूप दे दिया गया है) असल में "वेरिएशन" का उदाहरण है; इसलिए, वे क्रमिक–विकास के सिद्धांत का प्रमाण नहीं देती है। उदाहरण के तौर पर डार्विनवादी क्रमिक–विकास के सबूत के लिए फिंच चीड़ियों की विविधताओं का अवलोकन करने के लिए गेलापेगोस द्वीपसमूहों पर कई साल गुज़ारने वाले पीटर और रोज़मेरी ग्रांट ने यह निष्कर्ष निकाला कि नये लक्षणों के उद्‌भव को अंजाम देने वाला "क्रमिक–विकास" यहां कभी भी नहीं होता।148

ऐन्टिबायोटिक प्रतिरोध और डी. डी. टी. प्रतिरक्षा क्रमिक–विकास के सबूत नहीं हैं

अपने सिद्धांत के सबूत के रूप में इवोल्युशनिस्ट्स जिन जैविक धारणाओं को पेश करने का प्रयास करते हैं उनमें से एक ऐन्टिबायोटिक के प्रति बैक्टेरिया का प्रतिरोध है। कई इवोल्युशनिस्ट्स सूत्र इस ऐन्टिबायोटिक प्रतिरोध को "लाभदायक म्युटेशन्स द्वारा सजीवों के विकास का उदाहरण" दिखाते हैं। डी. डी. टी. जैसी कीटनाशक दवाईयों के सामने प्रतिरक्षा बनाने वाले कीटों के लिए भी ऐसा ही दावा किया जाता है।

हालांकि, इस विषय में भी इवोल्युशनिस्ट्स गलती करते हैं।

ऐन्टिबायोटिक्स "घातक अणु" है जो अन्य सूक्ष्म जीवों से लड़ने के लिए सूक्ष्म जीवों द्वारा पैदा किये जाते हैं। प्रथम ऐन्टिबायोटिक पेनिसिलिन का आविष्कार ऐलेक्ज़ांडर फ्लेमिंग ने 1928 में किया था। फ्लेमिंग ने महसूस किया कि फफूँदी में से एक ऐसा अणु बना था जिसने स्टैफिलोकोकस बैक्टेरिया को मार डाला था और यह आविष्कार आयुर्विज्ञान (मेडिसिन) जगत में एक निर्णायक घड़ी साबित हुई। सूक्ष्म सजीवों में पाये गये ऐन्टिबायोटिक्स बैक्टेरिया के विरुद्ध प्रयुक्त किये गये और परिणाम सफल रहे थे।

बहुत जल्द कुछ नया खोजा गया। कुछ समय बाद बैक्टेरिया ने ऐन्टिबायोटिक्स के सामने प्रतिरक्षा विकसित की। इसका मैकेनिज़्म कुछ इस प्रकार से काम करता है : ऐन्टिबायोटिक्स की असर में आनेवाले बैक्टेरिया की बडी तादात का नाश होता है, लेकिन जिन पर ऐन्टिबायोटिक की असर नहीं होती ऐसे अन्य कुछ बैक्टेरिया खुद को रेप्लिकेट (प्रतिलिपी) करते हैं और पूरा समूह खड़ा कर लेते हैं। इस तरह बैक्टेरिया की पूरी आबादी ऐन्टिबायोटिक्स से प्रतिरक्षित हो जाती है।

इवोल्युशनिस्ट्स इसे "परिस्थितियों से अनुकूल होकर बैक्टेरिया का क्रमिक–विकास" के रूप में पेश करने का प्रयास करते हैं।

हालांकि, यह उथला स्पष्टिकरण सत्य से बहुत दूर है। इस विषय में गहराई से शोध करने वाले एक इज़राइली वैज्ञानिक ली स्पेटनर है जो 1997 में छपी अपनी किताब नॉट बाय चान्स के लिए भी जाने जाते हैं। स्पेटनर कहते हैं कि बैक्टेरिया में प्रतिरक्षा दो अलग–अलग मैकेनिज़्म से आती है, लेकिन उनमें से कोई भी क्रमिक–विकास के सिद्धांत का प्रमाण नहीं देती है। यह दो मैकेनिज़्म इस प्रकार हैं :

1) बैक्टेरिया में मौजूद प्रतिरोधक जीन्स की स्थानांतरण

2) म्युटेशन के कारण जेनेटिक डाटा गँवाने के परिणामस्वरूप प्रतिरोध का निर्माण

2001 में छपे अपने लेख में प्रोफेसर स्पेटनर प्रथम मैकेनिज़्म को समझाते हैं :

कुछ सूक्ष्म जीवों में ऐसे जीन्स होते हैं जो इन ऐन्टिबायोटिक्स को प्रतिरोधक क्षमता देते हैं। यह प्रतिरोध ऐन्टिबायोटिक अणु का विघटन करना या उन्हें कोशिका में से बाहर निकालने का काम कर सकता है। ऐसे जीन्सवाले जीव इन जीन्सों को अन्य बैक्टेरिया को भी दे सकते हैं जिससे वे बैक्टेरिया भी प्रतिरोधी बन जाते हैं। प्रतिरोध की शक्ति देने का मैकेनिज़्म एक ही ऐन्टिबायोटिक से सम्बन्धित होता है फिर भी ज्यादातर पैथोज़ेनिक बैक्टेरिया कई जीन्स के सैट एकत्रित करने में सफल हो जाते हैं जिससे उन्हें तरह–तरह के ऐन्टिबायोटिक्स के प्रति प्रतिरोध मिला है।149

इसके बाद स्पेटनर कहते है कि यह "क्रमिक–विकास का सबूत" नहीं है :

इस तरह से बैक्टिरिया का ऐन्टिबायोटिक के सामने प्रतिरोध पाना क्रमिक–विकास के लिए जरूरी म्युटेशन्स का असली उदाहरण नहीं बन सकता है। सिद्धांत की मंशा के मुताबिक जीनेटिक बदलाव के लिए बेक्टेरियम के जीनोम में जानकारी शामिल करने के अलावा बायोकोज़ोम में नयी जानकारी डालनी भी अत्यावश्यक है। जीन्स के अनुप्रस्थ (हॉरिझोंटल) ट्रान्सफर से सिर्फ कुछ प्रजातियों में पहले से मौजूद जीन्स का ही प्रसार होता है।150

इसलिए, यहां हम किसी क्रमिक–विकास की बात नहीं कर सकते यहां कोई नई जीनेटिक जानकारी पैदा नहीं हुई है : बैक्टीरिया के बीच उस जनेटिक सूचना का आदान–प्रदान होता है। जिसका पहले से अस्तित्व है।

दूसरे प्रकार की प्रतिरक्षा जो म्युटेशन के परिणामस्वरूप आती है वह भी क्रमिक–विकास का उदाहरण नहीं है। स्पेटनर लिखते हैं :

........सूक्ष्म जीव कभी–कभी एक न्युक्लिओटाइड के रैन्डम प्रतिस्थापन के जरिए ऐन्टिबायोटिक के सामने प्रतिरोध हासिल कर सकता है। सन् 1994 में सेलमॉन वोक्समेन और आल्बर्टशाटज़ द्वारा खोजी गई स्ट्रेप्टोमाइसीन एक ऐन्टिबायोटिक है जिसके सामने बैक्टेरिया इसी प्रकार प्रतिरोध पा सकते हैं। लेकिन इस प्रक्रिया में वे जिस तरह म्युटेशन से गुज़रते हैं वो स्ट्रेप्टोमाइसीन की मौजूदगी में सूक्ष्म जीवों के लिए लाभदायी होने के बावजूद वह नीओ डार्विनियन सिद्धांत द्वारा जरूरी म्युटेशन के लिए उदाहरण नहीं बन सकता है। स्ट्रेप्टोमाइसीन के प्रति प्रतिरोध देनेवाले म्युटेशन का प्रकार राईबोज़ोम में देखा जा सकता है और वह ऐन्टिबायोटिक अणु के साथ उसकी मॉलेक्युलर जोड़ी का विघटन कर सकता है। सूक्ष्म–जीव के राईबोज़ोम की सतह पर इस बदलाव से स्ट्रेप्टोमाइसीन अणु उसके साथ जुड़ नहीं सकता और अपना ऐन्टिबायोटिक कार्य नहीं कर सकता। यह विघटन विशिष्टता और इस तरह सूचना का लुप्त होना है। मुख्य बिन्दु यह है कि क्रमिक–विकास इस प्रकार के म्युटेशन से हांसल नहीं किया जा सकता है फिर चाहे उनकी संख्या कितनी भी हो। जो सिर्फ विशिष्टता का विघटन करते हैं ऐसे म्युटेशन्स द्वारा क्रमिक–विकास का निर्माण नहीं हो सकता।151

संक्षिप्त में कहें तो, बैक्टेरियम के राईबोज़ोम पर अतिक्रमण करने वाला म्युटेशन उस बैक्टेरियम को स्ट्रेप्टोमायसीन के सामने प्रतिरोधी बनाता है। इसका कारण यह है कि म्युटेशन द्वारा राईबोज़ोम का "विघटन" होता है। मतलब, कोई नयी जीनेटिक जानकारी बैक्टेरियम में शामिल नहीं होती है। इससे विपरीत राइबोज़ोम की संरचना विघटित हो जाती है याने बैक्टेरियम "निष्क्रिय" हो जाते हैं। (इसके अलावा यह भी पता चला है कि म्युटेटेड बैक्टेरियम भी सामान्य बैक्टेरियम से कम सक्रिय होता है)। यह "अक्षमता" ऐन्टिबायोटिक को राइबोज़ोम के साथ जुड़ने से रोकती है और "ऐन्टिबायोटिक प्रति. रोध" का विकास होता है।

आखिर में "जीनेटिक जानकारी विकसित करनेवाले" म्युटेशन का कोई भी उदाहरण नहीं है।

डी. डी. टी. और अन्य कीटनाशक दवाईयों के सामने कीट जो इम्युनिटी (प्रतिरक्षा) विकसित करते हैं उसके लिए भी यह स्थिति सच्ची है। इनमें से ज्यादातर उदाहरणों में पहले से विद्‌यमान इम्युनिटी जीन्स का उपयोग किया जाता है। इवोल्युशनिस्ट बायोलोजिस्ट फ्रांसिस्को अयाला इस हकीकत को स्वीकार करते हैं और कहते हैं कि, "विभिन्न प्रकार के कीटनाशकों के सामने प्रतिरोध के लिए जरूरी जीनेटिक वेरियन्ट इन कीटनाशकों के प्रभाव में आने वाली कीटों की हर आबादी में मौजूद थे।"152 म्युटेशन्स द्वारा समझाये गये कुछ अन्य उदाहरण (जैसे ऊपर उल्लेखित राइबोज़ोम म्युटेशन) ऐसी घटनायें हैं जो जंतुओं में "जीनेटिक जानक. ारी की कमी" पैदा करती हैं।

इस प्रसंग में यह दावा नहीं किया जा सकता कि बैक्टेरिया और जंतुओं में, प्रतिरक्षा की जो व्यवस्था है वह क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए सबूत हो सकते। इसका कारण यह है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत इस प्रमाण पर आधारित है कि सजीवों का विकास म्युटेशन द्वारा होता है। हालांकि, स्पेटनर बताते हैं कि ना तो ऐन्टिबायोटिक प्रतिरक्षा ना ही अन्य कोई बायोलोजिकल घटना म्यूटेशन के ऐसे उदाहरण का संकेत देती है :

मेक्रोइवोल्युशन के लिए जरूरी म्युटेशन का अवलोकन कभी भी नहीं किया गया है। नीओ–डार्विनियन थीअरि के लिए आवश्यक म्युटेशन के प्रतिनिधित्व करने वाले और आण्विक स्तर पर जांचे गये ऐसे कोई भी रैन्डम म्युटेशन्स

ऐन्टिबायोटिक्स के प्रति बैक्टेरिया के प्रतिरोध को इवोल्युशनिस्टस क्रम विकास का सबूत मानते है लेकिन वे गलत तरीके से यह करते है.

ने कोई भी जानकारी को शामिल नहीं किया है। मेरे सामने खड़ा होने वाला प्रश्न यह है कि : क्या जिन म्युटेशन्स का अवलोकन किया गया है। ये वही हैं जो यह सिद्धांत अपने समर्थन के लिए चाहता है? जवाब है : ना!153

अवशेषांगो का झूठ

लंबे समय तक "अवशेषांगो" की धारणा इवोल्युशनिस्ट्स के साहित्य में क्रमिक–विकास के "सबूत" के रूप में बारबार दिखाई देती रही। बाद में जब यह अयोग्य साबित हुआ तब उसे चुपचाप से दरकिनार कर दिया गया। लेकिन कुछ इवोल्युशनिस्ट्स आज भी इसे मानते हैं और समय–समय पर कोई न कोई इन "अवशेषांगो" को क्रमिक–विकास के महत्त्वपूर्ण सबूत के तौर पर आगे बढ़ाने की को. शिश करता रहेगा।

"अवशेषांगो" की धारणा सर्वप्रथम एक सदी पहले पेश की गई थी। इवोल्युशनिस्ट्स के मुताबिक कुछ प्राणीयों के शरीर के अंदर कुछ निष्क्रिय अंगो का अस्तित्व था। यह पूर्वज से विरासत में मिला था और उनके उपयोग के अभाव के कारण वे अवशेष बने थे।

यह पूरी धारणा अवैज्ञानिक है और संपूर्ण तौर पर अपर्याप्त ज्ञान पर आधारित है। यह "निष्क्रिय अंग" वास्तव में वो अंग थे जिनका "कार्य अभी भी खोजा नहीं गया है"। इसका श्रेष्ठ संकेत इवोल्युशनिस्ट्स की अवशेषांगो की लंबी सूचि में क्रमशः लेकिन महत्त्वपूर्ण कमी है। एस आर स्केडिंग जो खुद एक इवोल्युशनिस्ट है उन्होंने 'इवोल्युशनरी थीअरि' जर्नल में प्रकाशित हुए अपने लेख "क्या अवशेषी अंग क्रमिक–विकास का सबूत दे सकते हैं?" में इस हकीकत के साथ सहमति दिखाई थी :

निरर्थक संरचनाओं की पहचान स्पष्ट रूप से करना संभव नहीं है इसलिए जो दलीलें दी गईं वह वैज्ञानिक रूप से योग्य नहीं है इसलिए मैं इस निष्कर्ष पर आता हूं कि "अवशेषांग" क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए कोई महत्त्वपूर्ण सबूत नहीं देते हैं।154

1895 में जर्मन शरीर रचना विशेषज्ञ आर वीडेरशीम द्वारा अवशेषांगो की बनाई गई सूचि में करीब 100 अंग शामिल थे जिसमें उण्डुकपुच्छ और अनुत्रिक भी शामिल थे। विज्ञान ने जैसे–जैसे प्रगति की, यह पता चला कि वीडेरशीम की सूचि में जो भी अंग शामिल थे उनके महत्त्वपूर्ण कार्य हैं। उदाहरण के लिये यह खोजा गया कि जो "अवशेषांग" होना चाहिए था वह उण्डुकपुच्छ (अपेंडिक्स) असल में लिम्फोइड अंग है जो शरीर में संक्रमण से रक्षा करता है। सन् 1997 में इस हकीकत को स्पष्ट किया गया, "अन्य शारीरिक अंग और उत्तक – थायमस, यकृत, तिल्ली, उण्डुकपुच्छ, बॉन मेरो और गले में टोन्सिल जैसे लिम्फेटीक उत्तक और छोटे आंत्र में पेयर्स पेच जैसे छोटे संग्रह यह भी लिम्फेटीक तंत्र का भाग है। वे भी संक्रमण के विरुद्ध लड़ने में शरीर की मदद करते हैं।"155

यह भी खोजा गया था कि अवशेषांग की उसी सूचि में शामिल किये जाने वाले टॉन्सिल की गले को संक्रमण से बचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। यह भी पता चला कि पृष्ठदंड के निचले छौर पर अनुत्रिक श्रोणि प्रदेश के आसपास हड्डीयों को सहारा देता है और वह कुछ छोटी मांसपेशियों के लिए अभिसरण बिंदु है और इस कारण अनुत्रिक के बिना आराम से बैठना संभव नहीं होगा। इसके बाद आने वाले वर्षों में यह महसूस किया कि टी कोशिकाओं को सक्रिय करके थायमस ने मानवशरीर में रोगप्रतिरक्षा सिस्टम की शुरूआत की, कुछ महत्त्वपूर्ण हॉर्मोन के स्त्राव के लिए पिनिअल ग्लैन्ड उत्तरदायी है, नवजात शिशुओं और बच्चों में स्थायी विकास देने के लिए थाइराइड ग्रंथि असरकारक है और कई हॉर्मोन ग्रंथिओं के सही कार्य का नियंत्रण पिट्यूटरी ग्रंथि करती है। इन सभी को किसी समय "अवशेषांग" माना जाता था। आखिर में आँख में अर्ध–चंद्र जैसी परत जिसे डार्विन ने अवशेषांग माना था लेकिन असल में वह नेत्रगोलक की शुद्धि और लुब्रिकेटिंग (चिकनाई) के लिए जरूरी है।

अवशेषांग के बारे में इवोल्युशनिस्ट के दावे में एक महत्त्वपूर्ण तार्किक त्रुटि थी। जैसाकि हमने देखा है, यह वो दावा था कि सजीवो में अवशेषांग उनके पूर्वजों द्वारा विरासत में पाये गये थे। हालांकि, इनमें से कुछ कथित अवशेषांग उन जातियों में नहीं पाये जाते जो कथित रूप से मनुष्यों की पूर्वज मानी जाती है! मनुष्य के पूर्वज माने जाने वाली कुछ एप जातियों में उण्डुकपुच्छ नहीं होता। अवशेषांग की थीअरि को चुनौती देने वाले मशहूर जीववैज्ञानिक एच इनोक ने इस तार्किक कमी को इस तरह से प्रदर्शित किया है :

एप्स के शरीर में उण्डुकपुच्छ होता है जब कि उनके कम करीबी रिश्तेदार लोअर एप्स में उण्डुकपुच्छ नहीं होता है; लेकिन ओपा. `सम जैसे नीची कक्षा के स्तनपायीओं में भी यह उपस्थित है। इवोल्युशनिस्ट्स इसके लिए क्या खुलासा देंगे?156

सरल शब्दों में कहें तो इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा पेश किये गये अवशेषांग के दृश्यलेख में कई गंभीर तार्किक त्रुटियां हैं और वैज्ञानिक रूप से यह झूठा साबित हुआ है। मनुष्य के शरीर को विरासत में मिला हो ऐसा कोई भी अवशेषांग नहीं है क्योंकि मनुष्य की उत्पत्ति संयोगवश अन्य प्राणी में से नहीं हुई बल्कि वे आज के जैसे, संपूर्ण और दोषहीन स्वरूप में उसी तरह बनाये गये थे।

अवशे ांगो के सभी उदाहरण गलत साबित हो चुके है. जैसे आँख में अर्धगोलाकार तह जिसका ऑरिजिन्स में अवशे ांग की संरचना के रूप में उल्लेख किया गया है लेकिन हमारे समय में यह संपूर्ण कार्यांवित था एसा दिखाया गया था. डार्विन के समय में इसका कार्य अनजाना था. यह अंग आँख को चिकनापन देता है.
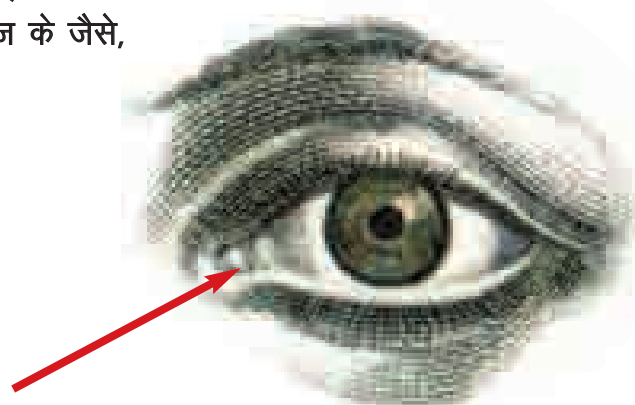
गरुड, चमगादड और जंतु सभी के पँख होते है. फिर भी उनके पास समान अंग है इससे यह साबित नहीं होता है कि वे समान पूर्वज में से उत्पन्न हुए.

समधर्मिता (हा. `मोलोजी) की मिथ्या

विभिन्न जातियों के बीच संरचना की समानताओं को जीवविज्ञान में "होमोलोजी" कहा जाता है। इवोल्युशनिस्ट्स इन समानताओं को क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए प्रमाण के रूप में पेश करने कि कोशिशें करते हैं।

डार्विन ने सोचा कि समान अंगो वाले प्राणियों का एक दूसरे के साथ क्रमिक–विकास से कुछ सम्बन्ध था और यह सब एक समान पूर्वज से विरासत में मिले होंगे। इस धारणा के मुताबिक कबूतर और गरुड़ दोनों के पंख होते हैं इसलिए कबूतर, गरुड़ और पँखों वाले सभी पक्षी एक सामान्य पूर्वज में से उत्पन्न हुए होने चाहिए।

होमोलोजी एक भ्रमक दलील है जिसे मात्र शारीरिक समानता के आधार पर सबूत के रूप में पेश किया गया है। डार्विन के समय से आज तक एक भी ठोस अनुसंधान के द्वारा इस दलील की सत्यता सिद्ध नहीं की जा सकी है। दुनिया में कोई भी वैज्ञानिक समधर्मिता वाले पक्षियों के काल्पनिक सामान्य पूर्वज के जीवाश्मों के साथ सामने आया नहीं है। इसके अलावा निम्नलिखित बिन्दु यह स्पष्ट करते हैं कि होमोलोजी कभी भी यह सबूत नहीं देती है कि क्रमिक–विकास कभी भी हुआ होगा।

1 .एकदूसरे से बिल्कुल अलग जातियों और वंश के कई प्राणीयों में समधर्मी अंग देखने को मिलते हैं लेकिन इन प्राणियों के बीच क्रमिक–विकास के सम्बन्ध का कोई भी मेल बिठाने में इवोल्युशनिस्ट नाकाम रहे हैं।

2 .मधर्मी अंगो वाले प्राणीयों के जीनेटिक कॉड एक–दूसरे से बिल्कुल अलग हैं।

3 विविध प्राणीयों में समधर्मी अंगो का भ्रूणिय विकास बिल्कुल अलग है।

4. अब हम इन सब बिन्दुओं का एक–एक करके निरीक्षण करते हैं।

बिल्कुल अलग दिखने वाली प्रजातियों में समान अंग

विभिन्न समूहों के बीच कई समधर्मी अंग पाये जाते हैं और इन समूहों के प्राणियों के बीच इवोल्युशनिस्ट्स किसी भी प्रकार के क्रमिक–विकास का नाता जोड़ नहीं पाये हैं। पँख एक उदाहरण हैं। पक्षियों के अलावा हम चमगादड़ो पर पँख देखते हैं जो स्तनपायी हैं। इसके अलावा कुछ जंतुओं के पंख होते हैं और कुछ डायनासोर के भी पंख थे जो आज नष्ट हो चुके हैं। यह चार अलग समूहों के प्राणियों के बीच इवोल्युशनिस्ट्स क्रमिक–विकास या नजदीकी रिश्ता स्थापित नहीं करते हैं।

एक अन्य चौंकाने वाला उदाहरण है विविध प्राणियों की आंखो में दिखने वाली आश्चर्यजनक समानता और मिलती जुलती संरचना। जैसे ऑक्टोपस और मनुष्य दो अत्यंत अलग–अलग प्रकार की जातियां हैं और उनके बीच क्रमिक–विकास के किसी भी सम्बन्ध को पेश नहीं किया गया है फिर भी संरचना और कार्य के हिसाब से दोनों की आंखें लगभग समान हैं। इन दोनों का कोई समान पूर्वज होगा ऐसा कहकर आंखों की समानता समझाने की चेष्टा किसी भी इवोल्युशनिस्ट्स ने नहीं की है। यह और इसके जैसे कई उदाहरण दर्शाते हैं कि समानता के आधार पर इवोल्युशनिस्ट्स का दावा बिल्कुल अवैज्ञानिक है।

असल में समान अंग का होना इवोल्युशनिस्ट्स के लिए बड़ा संकट पैदा करता है। होमोलॉजी को एक गतिरोध से रूप में स्वीकार करते हुए यह अपने कथन में इस संबंध में बात करते हैं कि अत्यंत रूप से अलग दिखने वाले प्राणियों की आंखें इतनी समान कैसे हुईं :

आंख जैसा जटिल अंग भी बार–बार सामने आता है; जैसे स्क्विड, रीड वाले और संधिपाद प्राणियों में यह देखने को मिलता है। ऐसे प्राणियों के एक ही बार में उद्‌भव के लिए अटकलें करना ठीक नहीं है और आधुनिक सिन्थेटिक सिद्धांत के मुताबिक उन्हें

हॉमोलोजी का खण्डन करनेवाले जुडवा स्तनपायी

उत्तर अमरिकी भेडिये की खोपडी
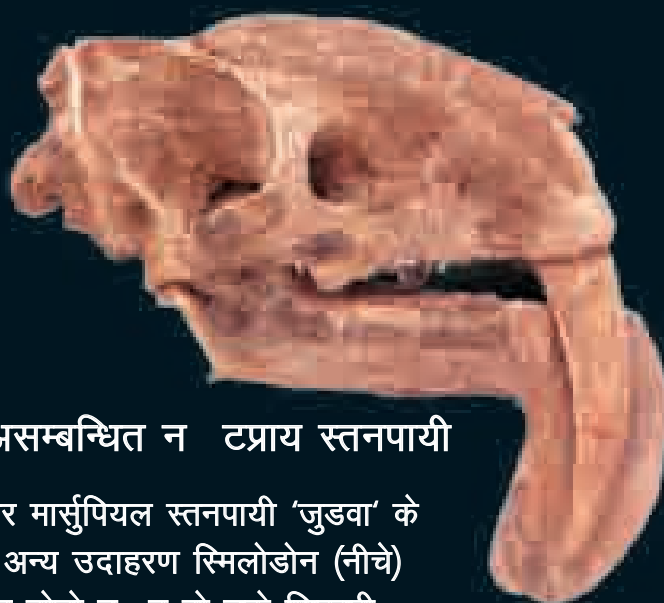
विशाल दांत के साथ दो असम्बन्धित न टप्राय स्तनपायी

बीजाण्डासनवाले (प्लेसेन्टल) और मार्सुपियल स्तनपायी 'जुडवा' के बीच में असाधारण समानता का अन्य उदाहरण स्मिलोडोन (नीचे) और थायलेकोस्मिलस (उपर) इन दोनो न ट हो चुके शिकारी प्राणीयों के अग्र दांत बहुत विशाल थे. जिस के बीच क्रम विकास कोई सम्बन्ध स्थापित किया नहीं जा सकता वैस यह दो स्तनपायी प्राणीयों की खोपडी और दांत की संरचना में बहुत बडा फर्क है जो उस होमोलोजिकल द्रि टकोण को खारिज करता है कि समान सं. रचनाए क्रम विकास के पक्ष में देखने को मिलता सबूत है.

तास्मानियन भेडिये की खोपडी

तास्मानियन भेडिया और उत्तर अमरिका में उसका प्रतिपक्ष

मार्सुपियल और प्लेसेन्टाल स्तनपायीओ के बीच "जुडवा" जाति की मौजूदगी होमोलोजी के दावे को बहुत बडा झटका देती है. ऊदाहरण के तौर परए मार्सुपियल तास्मानियन भेडिया (उपर) और उत्तर अमरिका में पाया जानेवाला प्लेसेन्टाल भेडिया असाधारण रूप से एकदूसरे से मिलतेजुलते है. उपर यह दो अत्यंत समान दिखनेवाले प्राणीयो की खोपडीयां दिखती है. इन दोनो प्राणीयो के बीच "क्रम विकास का कोई सम्बन्ध" स्थापित नहीं किया जा सकता है. इन दोनो के बीच में इतनी गहरी समानता होमोलोजी के दावे को संपूर्ण गलत करार देती है.

संरचना की द्रि ट से देखे तो मनु यो और ऑक्टोपस की आँखे बहुत ही समान है. हालांकि, दोनो जातियो के समान अंग है इसका अर्थ यह नहीं के वे एक समान पूर्वज में से पैदा हुए. समान पूर्वज को सामने रखकर ऑक्टोपस और मनु य के बीच आँख की संरचना की समानता का खुलासा तो इवोल्युशनिस्टस भी नहीं देते है.

बार–बार पैदा करने के विचार से मेरा सिर घूमने लगता है।157

अपने समान शारीरिक बनावट के बा. वजूद ऐसे कई प्राणी हैं जो क्रमिक–विकास के सम्बन्ध में कोई भी दावा करने की गुंजाइश नहीं देते हैं। स्तनपायियों के दो बड़े वर्ग प्लेसेन्टाल और मार्सुपियल इसके उदाहरण हैं। जब स्तनपायी प्रथम बार उत्पन्न हुए तब यह विशिष्टता सामने आई ऐसा इवोल्युशनिस्ट्स मानते हैं और हर समूह का अपना खुद का क्रमिक–विकास का इतिहास था जो दूसरे से स्वतंत्र था। लेकिन यह दिलचस्प बात है कि प्लेसेन्टाल और मार्सुपियल प्राणियों में "जोड़ियाँ" होती हैं जो लगभग समान है। अमेरिकन जीववैज्ञानिक डीन केन्योन और पर्सिवल डेविस ने यह टिप्पणी की :

डार्विनियन सिद्धांत के मुताबिक भेडियें, बिल्ली, गिलहरी, सूअर, चूहे यह सब दो बार उत्पन्न हुए : एक बार प्लेसेन्टाल स्तनपायियों मे और दूसरी बार संपूर्ण स्वतंत्रता से मार्सुपियल प्राणियों मे उत्पन्न हुए। यह एक आश्चर्यजनक दावा है कि म्युटेशन और प्राकृतिक चयन की रैन्डम (संयोग पर आधारित), अनिर्देशित प्रक्रिया ने व्यापक रूप से अलग सजीवों में कई बार समान लक्षण उत्पन्न किये हैं।158

इवोल्युशनिस्ट जीववैज्ञानिक जिन्हें "होमोलोजी" के उदाहरण के रूप में स्वीकार नहीं कर सकते वे असाधारण समानतायें और समान अंग यह दर्शाते हैं कि समान पूर्वज में से क्रमिक–विकास से ऐसा हुआ होगा इसके लिए कोई भी सबूत नहीं है। तब सजीवों में समान सं. रचना की वैज्ञानिक व्याख्या क्या हो सकती है? डार्विन की क्रमिक–विकास की थीअरि का विज्ञान जगत में अपना दबदबा कायम करने से पहले इस प्रश्न का जवाब दिया जा चुका था। समान संरचनाओं के अनुसार सजीवों का वर्गीकरण करने वाले कार्ल लिनारेस और रिचर्ड ओवेन जैसे वैज्ञानिकों ने इन संरचनाओं को "समान" सृजन के उदाहरण माने हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो समान अंग (या आज के समय में समान जीन्स) समान उद्देश्य को पूरा करने के लिए बनाये गये थे इसलिए नहीं कि वे समान पूर्वज में से संयोग से पैदा हुए थे।

होमोलोजी का जीनेटिक और भ्रूणिय गतिरोध

होमोलोजी" के बारे में इवोल्युशनिस्ट्स के दावे को गंभीरता से लेने के संबंध में, विविध प्राणियों में समान अंगो को भी उनके जैसे ही डी. एन. ए. कॉड से (सूचना) कॉडेड होना चाहिए। हालांकि, ऐसा देखने को नहीं मिलता। समान अंग सामान्य तौर पर विविध डी. एन. ए. कॉड से निर्धारित होते हैं। इसके अलावा विविध प्राणियों के डी. एन. ए. में समान जीनेटिक कोड संपूर्ण अलग अंगों से सम्बन्धित होते हैं।

बायोकैमिस्ट्री के ऑस्ट्रेलियाई प्रोफेसर अपनी किताब 'इवोल्युशनः अ थीअरि इन क्राइसीस' में माइकल डेन्टन होमोलोजी की इवोल्युशनिस्ट व्याख्या का ब्यौरा देते हैं, "समान संरचनायें कई बार असमान जीनेटिक संरचनाओं से निर्धारित होती हैं और होमोलोजी की धारणा को भ्रूणशास्त्र तक खींच लाना मुमकिन नहीं है।"159

इस विषय का मशहूर उदाहरण चतुर्पाद का "पांच अंको वाले कंकाल की संरचना" है जिसका उल्लेख क्रमिक–विकास से जुड़ी सभी किताबों में होता है। जमीन पर रहने वाले रीड वाले जीवों के अग्र और पश्चबाहु पर पांच डिजिट होते हैं। इसकी बनावट हमेशा पांच डिजिट जैसी नहीं होती है फिर भी अपनी हड्डियों की संरचना के कारण वे सभी पेन्टाडेक्टिल गिने जाते हैं। मेंढ़क, छिपकली, गिलहरी या बंदर के अग्र और पश्च बाहु की संरचना समान है। चमगादड़ और पक्षियों की हड्डियों की संरचना भी इस बुनियादी डिज़ाइन के अनुरूप है।

इवोल्युशनिस्ट्स यह दावा करते हैं कि सभी सजीव एक समान पूर्वज में से आये हैं और उन्होंने इसके सबूत के रूप में पेन्टाडेक्टिल अवयव का उदाहरण दिया है। 20वीं सदी में जीवविज्ञान के लगभग सभी बुनियादी सूत्रों में इस दावे का उल्लेख किया गया था। 1980 में जीनेटिक अनुसंधानों ने इस क्रमिक–विकास के दावे का खण्डन किया। बाद में यह मालूम हुआ कि विभिन्न प्राणियों के पेन्टाडेक्टिल अवयव संपूर्ण रूप से अलग जीन्स से नियंत्रित किये जाते हैं। इवोल्युशनिस्ट जीववैज्ञानिक विलियम फिक्स पेन्टाडेक्टिलिज़्म के बारे में इवोल्युशनिस्ट धारणा के धराशायी होने का ब्यौरा इस प्रकार देते हैं :

क्रमिक–विकास पर आधारित पुरानी किताबों में होमोलोजी के विचार पर बहुत ज़ोर दिया गया है और विभिन्न प्राणियों के अवयवों के कंकाल के बीच स्पष्ट समानताओं की ओर संकेत किया गया है। इस प्रकार से 'पेन्टाडेक्टिल' अवयव की पैटर्न मनुष्य के बाहु में, पक्षी के पंख में, और व्हैल के मीनपक्ष में पायी जाती है और उनके समान उदगम का संकेत देने के लिए इस मान्यता को कायम रखा जाता है। अगर यह विभिन्न संरचनायें समान जीन युग्मों (जो म्युटेशन्स के जरिए समय समय पर अलग–अलग स्वरूप पा गये और पर्यावरणीय चुनाव ने उन पर प्रक्रिया की हो) द्वारा प्रसारित की गई हो तो इस सिद्धांत को तार्किक माना जा सकता है। दुर्भाग्य से ऐसा देखने को मिलता नहीं है। आज यह माना जाता है कि समान अंग विभिन्न जातियों में संपूर्ण अलग जीन संयोजनों द्वारा उत्पन्न किये जाते हैं। समान पूर्वज में से समान जीन्स पहुँचने की होमोलोजी की धारणा ढ़ेर हो चुकी है...... ।160

अन्य बिन्दु यह है कि होमोलोजी के बारे में इवोल्युशनरी धारणा को गंभीरता से लेने के लिए समान संरचनाओं के भ्रूणिय विकास का समय (दूसरे शब्दों में कहें तो अंडे में या माता की कोख में विकास के चरण) समांतर होने चाहिए, जबकि असल में समान संरचनाओं के लिए भ्रूणिय काल सभी सजीवों में एक–दूसरे से अलग होते हैं।

इस चर्चा का उपसंहार यह है कि जीनेटिक और भ्रूणिय शोध ने साबित किया है कि डार्विन द्वारा जिसे "समान पूर्वज में से सजीवों की उत्पत्ति का सबूत" माना गया है उस होमोलोजी की धारणा को सबूत के तौर पर बिल्कुल नहीं माना जा सकता है। इस द्रष्टि कोण से हम यह कह सकते हैं कि विज्ञान ने डार्विनिस्ट धारणा को बार–बार गलत साबित किया है।

प्रोफेसर माइकल डैन्टनः "क्रम विकास की थीअरि गहरे संकट में है"

आण्विक समानता (मॉलेक्युलर होमोलोजी) के दावे की अयोग्यता

क्रमिक–विकास के सबूत के रूप में इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा होमोलोजी को आगे बढ़ाने के प्रयास सिर्फ रूपात्मक ही नहीं बल्कि आण्विक स्तर पर भी अयोग्य हैं। इवोल्युशनिस्ट्स कहते हैं कि विविध सजीवों के डीएनए कॉड

या उससे जुड़े प्रोटीन की संरचनायें समान हैं और यह समानता इस बात का सबूत है कि यह सजीव समान पूर्वजों से पैदा हुए हैं या एक–दूसरे में से उप्तन्न हुए हैं।

हालांकि, सच यह है कि आण्विक तुलना के परिणाम क्रमिक–विकास के सिद्धांत के पक्ष में बिल्कुल नहीं है। जो एक–दूसरे से बहुत समान दिखते हैं और जिनके बीच कोई नजदीकी रिश्ता होने का आभास होता है वैसे प्राणियों में बहुत बड़े आण्विक भेद होते हैं। उदाहरण के तौर पर श्वसन के लिए आवश्यक प्रोटीन्स में से एक सायटोक्रोम–सी एक ही वर्ग के सजीवों में अलग–अलग प्रकार का होता है। इस विषय में किये गये शोध के मुताबिक सरीसृपों की दो जातियों के बीच जो भेद है वह एक पक्षी और मछली के बीच या एक मछली और स्तनपायीं के बीच के भेद से भी बड़ा है। अन्य अध्ययनों में यह देखने को मिला है कि कुछ पक्षियों के बीच में आण्विक भेद पक्षीयों और स्तनपायियों के बीच के भेद से ज्यादा है। यह भी खोजा गया है कि एक समान दिखने वाले बैक्टेरिया के बीच जो आण्विक भेद है स्तनपायियों और उभयचरों या जंतुओं के बीच के भेद से ज्यादा मालूम होता है।161 हीमोग्लोबिन, मायोग्लोबिन, हॉर्मोन और जीन्स में समान तुलनायें की गई हैं और ऐसे ही निष्कर्ष निकाले गये हैं।162

इन अनुसंधानों को मोलेक्युलर बायोलोजि से जोड़ते हुए डॉ. माइकल डेन्टन टिप्पणी करते हैं :

आण्विक स्तर पर हर वर्ग अनोखा और अलग है, और मध्यवर्ती सजीव के साथ उसकी कोई कड़ी नहीं है। जिन मध्यवर्ती स्वरूपों की इवोल्युशनरी बायोलोजी को बहुत लंबे समय से तलाश थी उन भ्रमक मध्यवर्ती स्वरूपों को देने में जीवाश्म की तरह अणु भी नाकाम हुए हैं........। आण्विक स्तर पर, कोई भी सजीव उसके रिश्तेदार की तुलना में "पूर्वज" या "आदिकालीन" या "आधुनिक" नहीं है........। इसमें कोई संदेह नहीं है कि अगर यह आण्विक सबूत एक सदी पहले प्राप्त हो गया होता तो ऑर्गेनिक क्रमिक–विकास के विचार को कभी भी स्वीकृति नहीं मिल पाती।163

"जीवन का वृक्ष" ढेर हो रहा है

1990 के दशक में सजीवों के जीनेटिक कॉड (सूचना) में हो रहे शोध की वजह से क्रमिक–विकास के सिद्धांत की दुविधा और भी बढ़ गई। पहले के प्रयोगों में प्रोटीन श्रृंखला की तुलना की गई। इन प्रयोगों में राईबोज़ोमल आर. एन. ए. (आर–आर.एन.ए.) की श्रृंखलाओं की तुलना की गई। इन अनुसंधानों से इवोल्युशनिस्ट वैज्ञानिकों ने "क्रमिक–विकास के वृक्ष" को खड़ा करना चाहा। हालांकि, परिणामों ने उन्हें निराश किया। सन् 1999 में फ्रेंच जीववैज्ञानिक हर्वे फीलिप और पैट्रिक फोरटेरे द्वारा लिखे गये एक लेख के मुताबिक, "जितनी ज्यादा श्रृंखला प्राप्त हुई, परिणाम यह मिला कि ज्यादातर प्रोटीन एक–दूसरे के और आर–आर. एन. ए. वृक्ष के विरोधी पाये गये।"164

आर–आर. एन. ए. तुलनाओं के अलावा सजीवों के जीन्स में डी. एन. ए. कॉड की भी तुलना की गई लेकिन परिणाम क्रमिक–विकास द्वारा जिसकी पूर्वधारणा की गई थी उस "जीवन के वृक्ष" के विपरीत थी। सन् 1999 में प्रकाशित एक लेख में मोलेक्युलर जीववैज्ञानिक जैस ए लेक, रवि जैन और मारिया सी रिवेरा ने इसका विस्तृत वर्णन किया।

"वैज्ञानिकों ने विविध सजीवों में से विविध प्रकार के जीन्स का विश्लेषण करना शुरू किया और उन्हें यह देखने को मिला कि एक–दूसरे से उनका रिश्ता आर–आर. एन. ए. या जीन्स की किसी भी तुलना में क्रमिक–विकास के सिद्धांत को समर्थन में नहीं मिल पाया ह। इलिनोइस युनिवर्सिटी के अत्यंत मशहूर और गणमान्य जीववैज्ञानिक कार्ल वॉस यह स्वीकार करते हैं कि मॉलेक्युलर शोधों के बाद "फायलोजनी" (जातियों का क्रमिक–विकास और उनमें देखी जाने वाली विविधता) की धारणा ने अपना अर्थ इस प्रकार खो दिया है :

आज तक उत्पन्न हुई कई विशिष्ट गुण वाली प्रोटीन फायलोजनी (वर्ग) में से एक भी नियिमित सजीवों से सम्बन्धित फायलोजनी पैदा नहीं हुई है। अपने मूल से लेकर अंदर की शाखायें और विविध समूहों से लेकर आदिकालीन समूहों की बनावट तक में विश्वव्यापी वृक्ष में फायलोजीनेटिक असंगततायें देखने को मिलती हैं।"166

इस हकीकत को आण्विक तुलनाओं के परिणाम क्रमिक–विकास के सिद्धांत के पक्ष में नहीं है बल्कि इससे विपरीत है "क्या यह समय जीवन के वृक्ष को उखाड़ फेंकने का है?" शीर्षक वाले लेख में स्वीकार किया गया जो 1999 में 'साइंस' में छपा था। ऐलिजाबेथ पेन्नीसी द्वारा लिखे गये इस लेख में यह कहा गया है कि "जीवन के वृक्ष" पर प्रकाश डालने के लिए डार्विनिस्ट जीववैज्ञानिकों द्वारा किये गये जैनेटिक विश्लेषण और तुलनाओं ने असल में प्रत्यक्ष रूप से विरुद्ध परिणाम दिये हैं और इससे मालूम होत है कि "नया डाटा क्रमिक–विकास के चित्र पर कीचड़ उछालता है।"

एक साल पहले, एक दर्जन से भी ज्यादा सूक्ष्म जीवों में से नये श्रृंखलाबद्ध जीनोम्स पर नजर रख रहे जीववैज्ञानिकों ने सोचा कि डाटा शायद जीवन के आदिकालीन इतिहास की रूपरेखा का समर्थन दे सकता है। लेकिन जो उन्होंने देखा उससे वे हैरान रह गये। उस वक्त प्रापत जीनोम की तुलना ने इस तस्वीर को साफ नहीं किया कि सजीवों के बड़ें समूह किस तरह से उत्पन्न हुए बल्कि उन्हें दुविधा में डाल दिया। और अब नयी आठ माइक्रोबियल श्रृंखला के कारण परिस्थिति और भी बिगड़ गई है..... कई इवोल्युशनरी जीववैज्ञानिकों ने यह सोचा था कि वे जीवों के तीन जगतों के प्रारंभ का थोड़ा–सा संकेत पा सकेंगे ...... जब संपूर्ण डी. एन. ए. श्रृंखला ने अन्य प्रकार के जीन्स की तुलना करने का मार्ग खोल दिया तो शोधकर्ताओं ने आशा जताई कि वे इस वृक्ष में मात्रा विवरण भरेंगे।

लेकिन "सत्य से कुछ भी दूर नहीं हो सकता", मेरीलेंड के रोकविल में द इंस्टिट्यूट फॉर जीनोमिक रिसर्च (टी. आइ. जी. आर) के प्रमुख क्लैर फ्रेसर ऐसा कहते हैं। इसके बदले इन तुलनाओं ने जीवन के वृक्ष की कई आवृत्तियां दी हैं और आर–आर. एन. ए. वृक्ष से अलग है और एक–दूसरे से उनका टकराव भी चलता है.......... ।167

संक्षिप्त में कहें तो मोलेक्युलर जीवविज्ञान जैसे–जैसे प्रगति करता है, होमोलोली की धारणा आधार खोती चली जा रही है। प्रोटीन्स, आर–आर. एन. ए. और जीन्स की तुलनायें दर्शाती हैं कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत के मुताबिक कथित रूप से नजदीकी रिश्तेदार हैं। वे वास्तव में एक–दूसरे से बिल्कुल अलग हैं। सन् 1996 में प्रोटीन की 88 श्रृंखलाओं के प्रयोग से हुए अध्ययन में ससों का समूह चूहों के बदले वानरों के साथ बनाया गया था। 1998 में प्राणियों की 19 जातियों में से 13 जीन्स के विश्लेषण के जलसाही को मेरुदण्ड वाले प्राणियों के साथ रख दिया, और 1998 में 12 प्रोटीन पर आधारित एक अन्य अध्ययन ने गायों को घोड़े के बदले व्हेल के करीब खड़ा कर दिया। मॉलेक्यूलर जीववैज्ञानिक जॉनाथन वेल्स 2000 में इस परिस्थिति का सार इस तरह से पेश करते हैं।

विविध अणुओं पर आधारित पेड़ों से असंगतता और कुछ मॉलेक्यूलर विश्लेषण में से पैदा होने वाले विचित्र वृक्ष की वजह से अब मॉलेक्यूलर फायलोजनी (वर्गीकरण) को गहरे संकट में ला कर खड़ा कर दिया है।168

"मॉलेक्यूलर फायलोजनि" एक गहरे संकट का सामना कर रही है–इसका अर्थ यह है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत भी संकट का समाना कर रहा है। (फायलोजनी उन विविध सजीवों में दिखाई देने वाली तथाकथित "पारिवारिक रिश्ते" के बारे में बात करती है और वह क्रमिक–विकास का सिद्धांत का काल्पनिक आधार है। एक बार फिर से विज्ञान इस धारणा का छेदन करता हैं कि सजीव एक–दूसरे में से पैदा हुए और यह दिखाता है कि सभी सजीवों के समूह अलग–अलग बनाये गये थे।

भ्रूणिय पुनरावव्रन की गलत धारणा

जिसे "रिकेपिटयुलेशन थिअरि" (पुरावर्तन का सिद्धांत) कहा जाता है उसे वैज्ञानिक साहित्य से बहुत पहले हटा दिया गया है लेकिन कुछ इवोल्युशनिस्ट प्रकाशन इसे एक वैज्ञानिक हकीकत के रूप में पेश करते हैं। "रिकेपिटयुलेशन" शब्द "ऑन्टूजनी रिकेपिटयुलेट्स फायलोजनी" उक्ति का संक्षिप्त रूप है जिसे 19वीं सदी के अंत में इवोल्युशनिस्ट जीववैज्ञानिक अरनेस्ट हेकल द्वारा पेश किया गया था।

हेकल का सिद्धांत यह परिकल्पना करता है कि जीवित भ्रूण उस क्रमिक–विकास की प्रक्रिया का अनुभव फिर से करते हैं जिनमें से उनके तथाकथित पूर्वज भी गुजरे थे। हेकल ने अपनी थीअरि में कहा है कि माता के भ्रूण में उसके विकास के दौरान मानव भ्रूण ने प्रथम मछली के लक्षण दिखाये और बाद में सरीसृप के और आखिर में मनुष्य के लक्षण दिखाये।

तब से लेकर आज तक यह साबित किया गया है कि यह सिद्धांत पूर्ण रूप से बकवास है। अब यह अच्छी तरह से स्थापित है कि मानव भ्रूण के प्रथम चरणों में दिखाई देने वाले कथित रूप से 'गिल्स' असल में मध्य–कान कैनालम पैराथाइरोइड और थायमस के प्रारंभिक चरण हैं। वह भ्रूण का हिस्सा जिसकी "अंडे के योक के पाउच" के साथ तुलना की गई थी, एक ऐसा पाउच है जो नवजात शिशुओं के लिए खून पैदा करता है। हेकल और उनके समर्थकों द्वारा जिस हिस्से को "पूंछ" माना गया था वह वास्तव में मेरुदण्ड था जो पूंछ से इसलिए मिलता–जुलता है कि वह पैरों के आकार लेने से पहले आकार लेता है। वैज्ञानिक जगत् में यह सार्वत्रिक यप से स्वीकार्य सत्य है और खुद इवोल्युशनिट्स भी इसको स्वीकार करते हैं। नीओ–डार्विनिज़म के प्रवर्तकों में से एक ज्योर्ज गेलोर्ड सिम्पसन लिखते हैं :

हेकल ने क्रमिक–विकास के सिद्धांत का गलत हवाला दिया था। अब यह दृढ़ता से स्थापित हो चुकी हकीकत है कि ऑन्टोजनी फायलोजनी को दोहराती नहीं है।169

'अमेरिकन सायन्टिस्ट' में छपे एक लेख में यह पढ़ते हैं कि :

बायोजेनेटिक नियम मुर्दे जैसा है। यह 1950 के दशक में जीवविज्ञान की किताबों में से आखिरकार हटा दिया गया था। गंभीर सैद्धांतिक शोध के विषय के रूप में यह 1920 तक लुप्त हो चुका था..... ।170

"रिकेपिटयुलेशन" का अन्य दिलचस्प पहलु अरनेस्ट

कई पहलुओ में हेकल डार्विन से भी ज्यादा उत्साही इवोल्युशनिस्ट थे. यही कारण है कि वैज्ञानिक डाटा को तोडमरोड करने में और धोखादडी करने में उन्हे कोई हिचकिचाहट नहीं हुई.

हेकल खुद था जिसने अपनी थिअरि को आगे करने के लिए झूठे चित्र बनाये। हेकल की धोकाधड़ी यह दिखाने के लिए थी कि मछली और मानव भ्रूण एक–दूसरे से मिलते–जुलते हैं। जब हेकल की चोरी पकड़ी गयी तब हेकल ने यह खुलासा दिया कि दूसरे इवोल्युशिनिस्ट्स ने भी ऐसे अपराध किये हैं :

इस धोखाधड़ी को स्वीकार करने के बाद मैं अपने को पूर्ण रूप से नष्ट और अपराधी मानने पर मजबूर हो गया होता अगर मुझे इस बात की सांत्वना नहीं होती कि जुर्म के इस कटघरे में मेरे दोनों तरफ सैंकड़ों में से कुछ मुजरिम और भी हैं। जिनमें से कुछ विश्वसनीय अवलोकनकार और सबसे प्रतिष्ठित जीववैज्ञानिक हैं। जीवविज्ञान की श्रेष्ठ किताबों और जर्नलों में शामिल किये गये ज्यादातर डायग्राम और चित्र पर "धोखाधड़ी" का मामला दर्ज हो सकता है क्योंकि वे सब गलत, थोड़े या ज्यादा मनघड़ंत और बनावटी हैं।171
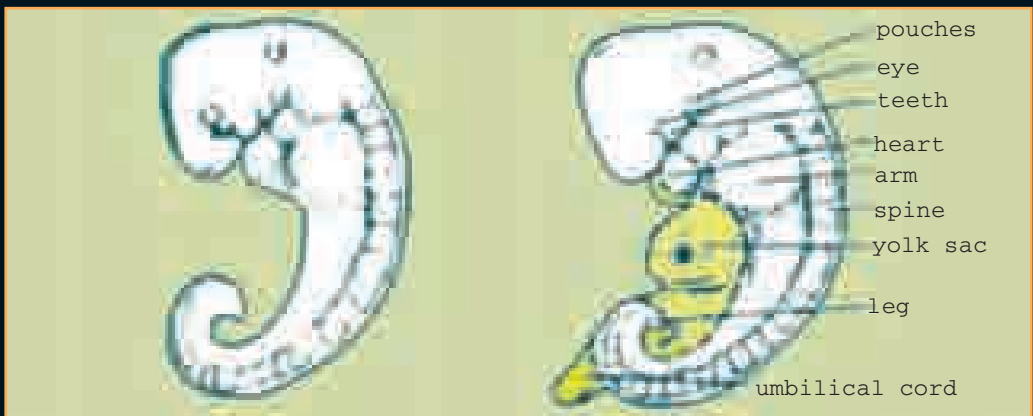
वास्तव में "कई ऐसे मुजरिम हैं जिनमें विश्वसनीय अवलोकनकार और सबसे प्रतिष्ठित जीववैज्ञानिक हैं।" जिनका अध्ययन पूर्वाग्रहयुक्त निष्कर्ष, तोड़मरोड़ और धोखे से भरपूर है। इसका कारण यह है कि उन सबने अपने आप को क्रमिक–विकास के सिद्धांत को विजयी बनाने के लिए दिमाग को पूर्वाग्रहयुक्त कर रखा है बावजूद इसके कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत को समर्थन देने वाला कोई भी सबूत नहीं मिला है।

हेकल के झूठे चित्र

मनु य और मछली के भ्रूण में 'समानता' दिखाने के लिए हेकल ने यह गलत चित्र बनाये थे. उनके स्कैच की तुलना विश्वसनीय मानव भ्रूण के साथ करते हुए आप देख सकते है कि उन्होने जानबुझकर सही अंगो का बडा हिस्सा छोड दिया है. (फ्रांसिस हिचिंग, द नेक ऑफ जिराफः व्हेर डार्विन वेन्ट रॉन्ग, पृ.205)

अध्याय 13

क्रमिक–विकास का सिद्धांत : एक भौतिकवादी जिम्मेदारी

इस पूरी किताब में हमने जिन जानकारियों का निरीक्षण किया है उन्होंने हमें दिखाया है कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है और इससे विपरीत, इवोल्युशनिस्ट्स के दावों और वैज्ञानिक हकीकतों के बीच टकराव देखने को मिलता है। दूसरे शब्दों में कहें तो क्रमिक–विकास को जिंदा रखने वाला बल विज्ञान नहीं है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत को कुछ "वैज्ञानिकों" ने बाकी रखा है लेकिन उसके पीछे एक और कारक काम कर रहा है।

यह अन्य कारक भौतिकवादी फिलोसोफी है

भौतिकवादी फिलोसोफी दुनिया में सबसे पुरानी फिलोसोफी में से है और पदार्थ के अस्तित्व को उसका बुनियादी सिद्धांत मानती हैं। इस दृष्टिकोण के मुताबिक पदार्थ का अस्तित्व हमेशा से रहा है और जो भी चीज का अस्तित्व है वह पदार्थ से बनी है। इससे सृष्टिकर्ता में श्रद्धा रखना असंभव हो जाता है क्योंकि अगर पदार्थ का हमेशा से अस्तित्व रहा है और सब कुछ पदार्थ का बना है तो फिर इसका सृजन करने वाले किसी भी सृष्टिकर्ता का अस्तित्व नहीं रहेगा। इसलिए ईश्वर में श्रद्धा रखने वाली धार्मिक मान्यता से भौतिकवाद विपरीत है।

इसलिए ये प्रश्न खड़ा होता है कि भौतिकवादी दृष्टिकोण सच है या नहीं? यह विचारधारा सही है या नहीं इस परखने की एक विधि है वैज्ञानिक पद्धत्तियों के उपयोग के जरिए इसके दावों की जाँच करना। उदाहरण के तौर पर, 10वीं सदी का कोई फिलोसफर यह दावा कर सकता था कि चंद्रमा की सतह पर एक दिव्य वृक्ष था और सभी सजीव किसी फल की तरह इस बड़े वृक्ष की डालियों पर पैदा हुए और फिर पृथ्वी पर गिरे। कुछ लोगों को यह फिलोसोफी शायद आकर्षक लगी होगी और वे उसे मानने लगे होंगे। लेकिन 20वीं सदी में जब आदमी ने चंद्रमा पर चलने की क्षमता प्राप्त कर ली है तब ऐसी मान्यता को गंभीरता से मानने की कोई जरूरत नहीं है। ऐसे वृक्ष का अस्तित्व है या नहीं ये वैज्ञानिक तरीकों से तय किया जा सकता है, यानी अवलोकन और प्रयोगों से।

इसलिए वैज्ञानिक विधियों से हम भौतिकवादी दावे की छानबीन कर सकते हैं कि क्या पदार्थ का अस्तित्व अनंत काल से रहा है और सृष्टिकर्ता के बिना पदार्थ क्या अपने आप को खुद संगठित कर सकता है और जीवन की शुरुआत कर सकत है? जब हम यह जांच करते हैं तब हम देखते हैं कि भौतिकवाद ढेर हो चुका है इस विचार को कि पदार्थ का अस्तित्व समय के प्रारंभ से था, बिग बैंग थिअरि ने उखाड़ के फेंक दिया है जो यह बताती है कि ब्रह्मांड का सृजन शून्य में से हुआ था। पदार्थ ने अपने आप को संगठित किया और जीवन बनाया यह वही दावा है जिसे हम "क्रमिक–विकास की थिअरि" कहते हैं। इस किताब में इसी थिअरि की जांच की जा रही है और उसे ढेर होते दिखाया गया है। हालंकि अगर कोई भौतिकवाद को मानने के लिए प्रतिबद्ध है और किसी भी चीज से ज्यादा भक्तिभाव भौतिकवाद की फिलोसाफी के लिए दिखाता है तो वह दूसरी तरह से सोचेगा। अगर वह पहले भौतिकवादी है और बाद में वैज्ञानिक है तो वह जब देखेगा कि विज्ञान क्रमिक–विकास को गलत साबित कर रहा है तब भी वह भौतिकवाद का त्याग नहीं करेगा। इससे विपरीत वह क्रमिक–विकास को समर्थन देने का प्रयास करके भौतिकवाद का बचाव करने की कोशिश करेगा चाहे कुछ भी हो जाये। क्रमिक–विकास के सिद्धांत का समर्थन कर रहे इवोल्युशनिस्ट्स की आज यही दुर्दशा है।

दिलचस्प बात यह है कि इवोल्युशनिस्टस भी समय–समय पर इस हकीकत को स्वीकार करते रहे हैं। मशहूर जेनेटिक वैज्ञानिक और क्रमिक–विकास के प्रबल समर्थक हार्वर्ड युनिवर्सिटी के रिचर्ड सी लेवोनटिन स्वीकार करते हैं कि वे "पहले भौतिकवादी हैं और बाद में वैज्ञानिक हैं" :

ऐसा नहीं है कि विज्ञान की पद्धतियां और संस्थान हमें इस विश्व की भौतिकवाद व्याख्या के स्वीकार करने के लिए विवश करते हैं, इससे विपरीत भौतिकवादी कारणों से हमारा प्राथमिक लगाव हमें विवश करता है कि हम ऐसे छानबीन के साधन और धारणाओं के सैट पैदा करें जो भौतिकवादी व्याख्या करते हैं चाहे वे कितने ही अंतर्दृष्टि के विपरीत हो। इसके अलावा भौतिकवाद

के संपूर्ण होने की वजह से हम दरवाजे में 'सृजन' दिव्य पांव को अंदर नहीं आने देने सकते।172

लेंवोंटिन यहां जो शब्द "प्राथमिकत" का उपयोग कर रहे हैं वह महत्त्वपूर्ण हैं। यह फिलोसोफिकल शब्द एक ऐसी पूर्वधारणा से सम्बन्धित है जो किसी प्रयोगिक ज्ञान पर आधारित नहीं है। विचार एक "प्राथमिकता" है, जब हम उसे सच्चा मन लेते हैं और अगर उसे समर्थन देने के लिए कोई भी जानकारी प्राप्त न हो फिर भी हम उसे सच्चा मान लेते हैं। इवोल्युशनिस्ट लेवोंटिन साफ तौर से कहते हैं कि इवोल्युशनिस्टस के लिए भौतिकवाद एक "प्राथमिकता" है जो विज्ञान को इस पूर्वकल्पना से अनुकूल होने के लिए विवश करते हैं। चूंकि भौतिकवाद में सृष्टिकर्ता के अस्तित्व को नकार देना जरूरी है इसलिए उनके पास एक ही रास्ता बचा है और वह है क्रमिक–विकास के सिद्धांत को अपना लेना। वैज्ञानिक तथ्य क्रमिक–विकास के सिद्धांत को झूठा साबित करते हैं। इससे इन वैज्ञानिकों को कई फर्क नहीं पड़ता है क्योंकि उन्होंने इस "प्राथमिकता" को सच के रूप में स्वीकार कर लिया है।

इस पूर्वाग्रहयुक्त बर्ताव से इवोल्युशनिस्ट्स यह मानने लगते हैं कि "अजाग्रत पदार्थ ने खुद का गठन किया", जो मात्रा विज्ञान ही नहीं बल्कि तर्क के भी खिलाफ है। न्यूयोर्क युनिवर्सिटी के रसायनशास्त्र के प्रोफेसर और डी. एन. ए. विशेषज्ञ रॉबर्ट शापिरो इवोल्युशनिस्ट्स की यह मान्यता और उसकी नींव में मौजूद भौतिकवादी मत को इस तरह समझाते हैं :

सरल प्राकृतिक रसायनों के मिश्रण से लेकर प्रथम असरकारक रेप्लिकेटर (प्रतिलिपि बनाना) तक जो अंतराल है वहां तक ले जाने के लिए एक और क्रमिक विकास के सिद्धांत की जरूरत पड़ती है। इस सिद्धांत को अभी तक सविस्तार समझाया या प्रदर्शित नहीं किया गया है। लेकिन इसकी अपेक्षा है और इसे रासायनिक क्रमिक–विकास और पदार्थ का स्व–संगठन जैसे नाम दिये गये है। जैसाकि एलेक्जांडर आ. `पेरिन द्वारा जीवन की उत्पत्ति के सिद्धांत का उपयोग किया गया है। डायालेक्टिकल भौतिकवाद की फिलोसाफी में इस सिद्धांत के अस्तित्व को सत्य मान लिया गया है।173

पश्चिमी मीडिया और जानेमाने तथा "मशहूर" साइंस मैगेजिनों में हम जिन्हें बार–बार पढ़ते रहते हैं उस क्रमिक–विकास का प्रचार सैद्धांतिक आवश्यकताओं का परिणाम है क्रमिक–विकास को अनिवार्य माना जा रहा है इसलिए विज्ञान के मानकों को निर्धारित करने वाले संघटनों द्वारा इसे पवित्र गाय में परिवर्तित कर दिया गया है।

कुछ वैज्ञानिक अपने आप को ऐसी स्थिति में पाते हैं जिसमें वे इस कल्पनातीत सिद्धांत का समर्थन करने के लिए विवश हो जाते हैं या वे कम से कम इस सिद्धांत के खिलाफ एक भी शब्द बोलने से गुरेज करते हैं ताकि उनकी प्रतिष्ठा बरकरार रह सके। पश्चिमी देशों में शिक्षा. विदों को प्रोफेसरशिप पाने और बरकरार रखने के लिए कुछ खास जर्नलों में अपने लेख प्रकाशित करवाने पड़ते हैं। जीवविज्ञान से सम्बन्धित सभी पत्रिकाओं पर इवोल्युशनिस्ट्स का कब्जा होता है और वे इन पत्रिकाओं में किसी भी गैर इवोल्युशनिस्ट्स के लेख को छपने नहीं देते हैं। इसलिए जीववैज्ञानिकों को इस सिद्धांत के दायरे में रहकर ही शोध करना पड़ता है। वे भी प्रचलित व्यवस्था के भाग होते हैं जो क्रमिक–विकास को सैद्धांतिक जरूरत बताते हैं और इसलिए हम इस किताब में जिन "असंभव संयोगों" की छानबीन कर रहे हैं उनका वे मतान्धता से समर्थन करते हैं।

भौतिकवादी दोषस्वीकृति

भौतिकवादी समझ कितनी कट्टर हो सकती है इसका अच्छा उदाहरण प्रमुख इवोल्युशनिस्ट और जर्मन जीववैज्ञानिक होइमर वॉन डीटफर्थ है। डीटफर्थ जीवन के सबसे जटिल संयोजन का उदाहरण देते हैं और उसके बाद यह संयोग से पैदा हो सकता है या नही इसके बारे में वे यह कहते हैं : सिर्फ संयोग से पैदा हुआ सामंजस्य क्या वास्तव में संभव है? यह पूरे जैविक क्रमिक–विकास का बुनियादी प्रश्न है। इस प्रश्न का जवाब यह देना "हां, यह संभव है" प्रकृति के आधुनिक विज्ञान में श्रृद्धा को सच्चा साबित करने जैसा है। आलोचनात्मक ढंग से कहें तो हम कह सकते हैं कि प्रकृति के आधुनिक विज्ञान को स्वीकार करने वाले के पास "हां" कहने के अलावा और कोई विकल्प नहीं है क्योंकि उसका उद्देश्य उन तरीकों से प्राकृतिक घटना को समझाने का प्रयास करना है जिनसे वह आसानी से समझ में आ सके जो अलौकिक हस्तक्षेप का सहारा लिये बगैर प्रकृति के नियमों में से निष्कर्ष निकालने का प्रयास करते हैं। हालांकि, यहां सब कुछ प्रकृति के नियमों द्वारा समझना, यानी संयोगों से समझाना, वो संकेत है कि कहीं और जाने के लिए उसके पास जगह नहीं है। क्योंकि संयोगों को मानने के अलावा और वह कर भी क्या सकता है?174

जैसा कि डीटफर्थ कहते हैं, भौतिकवादी वैज्ञानिक दृष्टिकोण "अलौकिक दखल" यानी सृजन का इन्कार करके जीवन को समझाता है। एक बार इस सिद्धांत को अपना लिया तो सबसे असंभव दृश्यलेख को आसानी से स्वीकार कर लिया जाता है। लगभग सभी इवोल्युशनिस्ट साहित्य में इस मतान्ध मानसिकता के उदाहरण ढूंढ़ना आसान है – जैसा कि हमने पिछले अध्याय में उल्लेख किया है डेमिरसोय के मुताबिक जीवन के लिए आवश्यक प्रोटीन माने जानेवाले सायटोक्रोम–सी के संयोगवश निर्माण की संभावना इतनी असंभव है जितना कि कोई बंदर एक भी भूल किये बगैर टाइपराइटर पर मानवजाति का इतिहास लिखने बैठा हो।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि ऐसी संभावना का स्वीकार करना असल में तर्क और बुद्धि के बुनियादी सिद्धांतों को नकारना है। एक पन्ने पर सही तरह से लिखा गया अक्षर भी यह स्पष्ट कर देता है कि वह किसी व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। अगर कोई विश्व इतिहास की कोई किताब देखता है तो यह और साफ हो जाता है कि यह किताब किसी लेखक ने लिखी है। तर्क और बुद्धि को मानने वाला कोई भी व्यक्ति इस बात से सहमत नहीं होगी कि इतनी बड़ी किताब में जो अक्षर छपे हैं वे "संयोग" से साथ इकट्ठा हुए हैं।

डार्विनिज़म और भौतिकवाद

विज्ञान डार्विन की थीअरि का स्प ट खण्डन करता है फिर भी इस थीअरि का बचाव किया जा रहा है इसका एकमात्र कारण इस थीअरि और भौतिकवाद के बीच का नजदीकी रिश्ता है. डार्विन ने प्राकृतिक विज्ञान को भौतिकवादी फिलोसोफी लागु की और इस फिलोसोफी की वकालत करनेवालो में मार्क्सवादी सब से आगे है जो चाहे कुछ भी हो जाये डार्विनिज़म का समर्थन किये जा रहे है.

क्रम विकास की थीअरि के सब से मशहूर समकालीन चैम्पियन्स में से एक जीवविज्ञानी डग्लास फुतुयामा ने लिखा था: 'मार्क्स की भौतिकवाद की थीअरि के साथ डार्विन की क्रम विकास की थीअरि मेकेनिज़म और भौतिकवाद के मंच पर एक महत्वपूर्ण तख्ता था.' क्रम विकास की थीअरि उसके समर्थको के लिए क्यूं इतनी महत्वपूर्ण है इसका यह स्प ट स्वीकार है.1

एक अन्य मशहूर इवोल्युशनिस्ट जीवाश्मविज्ञानी स्टीफन जे गाउल्ड ने कहा था, "डार्विन ने प्रकृति के अपने प्रतिपादन में लगातार भौतिकवाद की फिलोसोफी को लागु किया था".2 लेनिन के साथ रशियन साम्यवादी क्रांति के पीछे जिनका दिमाग था उनमें से एक लिओन त्रोत्स्की ने यह टिप्पणी की थी: "ऑर्गेनिक पदार्थ के संपूर्ण क्षेत्र में डार्विन की खोज डायालेक्टिक का सब से बडा विजय था. "3 हालांकि, विज्ञान ने यह दिखाया है कि डार्विनिजम भौतिकवाद का विजय नहीं था लेकिन इस फिलोसोफी के पतन का संकेत था.

डग्लास फुतुयामा, इवोल्युशनरी बायोलोजि, दूसरा संस्करण, सुन्दरलैन्ड, एमए: सिनोअर, 1986, पृ.3
एलन वूड और टेड ग्रांट, "मार्क्सिज़म एंड डार्विनिज़म", रिज़न इन रिवोल्ट: मार्क्सिज़म एंड मॉर्डन साइंस, लंदन, 1993
एलन वूड और टेड ग्रांट, "मार्क्सिज़म एंड डार्विनिज़म", लंदन, 1993
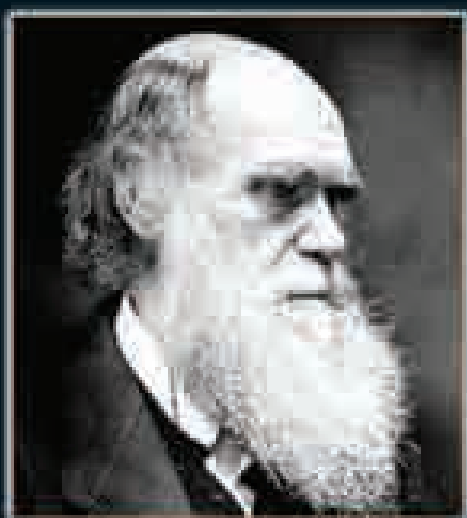
डार्विन
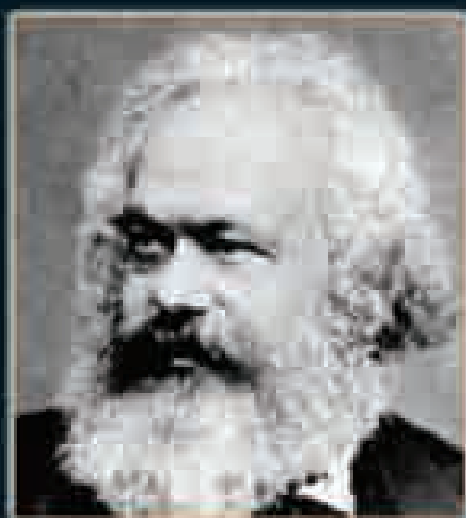
माक्स

त्रोत्स्की

हालांकि, "इवोल्युशिनिस्ट वैज्ञानिक" प्रोफेसर अली डेमिरसोय इस प्रकार के अतार्किक प्रस्ताव को स्वीकार करते हैं :

सारांश में, सायटोक्रोम–सी श्रृंखला के निर्माण की संभावना शून्य जितनी है। मतलब, अगर जीवन को किसी श्रृंखला की जरूरत है तो यह कहा जा सकता है कि इनकी संभावना पूरे ब्रह्मांड में एक बार पूरी होगी। वरना हमारी व्याख्या के दायरे से बाहर कुछ आलौकिक शक्तियों ने इसके निर्माण में काम किया होगा। यहां दूसरे विकल्प का स्वीकार करना वैज्ञानिक उद्देश्य के लिए योग्य नहीं है। इसलिए हमें प्रथम धारणा की ओर देखना होगा।176

"अलौकिक शक्तियों का स्वीकार न करने के लिए" (दूसरे शब्दों में कहें तो सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का इन्कार करने के लिए) डेमिसरोय लिखते हैं कि वे असंभव को पसंद करते हैं। यह स्पष्ट है कि इस दृष्टिकोण का विज्ञान से कोई सम्बन्ध नहीं है। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है कि जब डेमिसरोय किसी अन्य विषय का उल्लेख करते हैं (कोशिका में माईट्रोकोन्ड्रिआ का उद्‌भव) तब वे मुक्त मन से संयोग को व्याख्या के रूप में स्वीकार करते हैं। बावजूद इसके की वह "वैज्ञानिक विचार के खिलाफ है"।

समस्या का मूल यह है कि माइट्रोकॉन्ड्रिया ने यह लक्षण कैसे पाया क्योंकि अगर एक भी व्यक्ति इस लक्षण को संयोग से प्राप्त करना चाहे तो इसके लिए अत्यधिक संभावनाओं की जरूरत रहती है जो हमारी समझ के दायरे से बाहर है .... हर कदम पर श्वसन और उत्प्रेरक (केटालिस्ट) का कार्य देने वाले किण्व इस मैकेनिज़म का केंद्र है। कोशिका में इन किण्व की श्रृंखला मौजूद होनी चाहिए वरना कोशिका अर्थहीन हो जाती है। यहां, जैविक धारणा के खिलाफ होने के बावजूद ज्यादा मतान्ध व्याख्या या अटकलों को टालने के लिए हमें यह स्वीकार करना पड़ता है कि कोशिका के ऑक्सिजन से समपर्क में आने से पूर्व सभी श्वसन किण्वों का कोशिका में संपूर्ण अस्तित्व था।177

ऐसी उद्घोषणाओं से जो निष्कर्ष निकालना है वो यह है कि क्रमिक–विकास कोई वैज्ञानिक आधार पर बना सिद्धांत नहीं है। इससे विपरीत, इस थिअरि के स्वरूप और सार का नियंत्रण भौतिकवादी फिलोसोफी की जरूरतों के अनुरूप किया गया था। इसके बाद ठोस वैज्ञानिक हकीकतों के बावजूद वह एक मान्यता या मत में बदल गया। एकबार फिर हम इवोल्युशनिस्ट साहित्य में स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि इन सब प्रयासों का एक "उद्देश्य" है – और यह उद्देश्य इस मान्यता को रोकता है कि सभी सजीवों का सृजन किया गया था चाहे इसके लिए उसे कोई भी कीमत चुकानी पड़े।

इवोल्युशनिस्ट इस उद्देश्य को "वैज्ञानिक" बताते हैं। हालांकि, वे जिसका हवाला देते हैं वह विज्ञान नहीं बल्कि भौतिकवादी फिलोसोफी है। भौतिकवाद संपूर्ण रूप से पदार्थ के "अलावा" किसी भी चीज (या कुछ भी अलौकिक) के अस्तित्व को नकार देता है। विज्ञान खुद इस प्रकार के मत को स्वीकार करने के लिए बाध्य नहीं है। विज्ञान का अर्थ है प्रकृति का अन्वेषण करना और अपने शोधों से निष्कर्ष निकालना। अगर यह शोध इस निष्कर्ष पर ले जाते हैं कि प्रकृति का सृजन किया गया है तो विज्ञान को इसे स्वीकार करना पड़ेगा। 19वीं सदी के दकयानूसी भौतिकवादी मत से चिमटे न रहते हुए असंभव दृश्यलेख का समर्थन न करना एक सच्चे वैज्ञानिक का फर्ज है।

भौतिकवादी, सच्चा और झूठा धर्म

अब तक से संशोधनों से आपने जाना कि भौतिकवादी फिलोसोफी के लिये समर्पित गिरोहों ने विज्ञान को कितना अव्यवस्थित करने के प्रयत्न किये, किस तरह से क्रमिक–विकासवादियों की मनघड़ंत कहानियों की खातिर लोगों को धोखा दिया और सत्य पर किस तरह से पर्दा डाला है। हालांकि, हमें यह भी मानना पड़ेगा कि इन भौतिकवादी गुटों ने एक अच्छी 'सेवा' भी की है, चाहे उनका उद्देश्य कुछ और रहा हो। उन्होंने इस सेवा के द्वारा, उन आधारहीन और बुद्धिहीनता पर आधारित पारंपरिक विचार, जिन्हें इस्लाम का नाम दे दिया गया है, के झूठ को उजागर कर दिया है। हालांकि इसके द्वारा वह झूठ और नास्तिकवादी विचारधाराओं का समर्थन करना चाहते थे।

भौतिकवादी–नास्तिक गुटों के अपराधों ने उस झूठे धर्म को उजागर कर दिया जिसका कुरआन अैर इस्लाम से कोई सम्बंध नहीं है। यह झूठा धर्म, जो बिदअत, अंधविश्वास और बेकार की बातों पर आधारित है, के पास देने के लिये नियमित तर्क नहीं हैं। इस तरह से उन कपटी गुटों का भी भांडा फूट गया जो इस्लाम के नाम से काम करते हैं और इस झूठे धर्म की अनियमित्ताओं और आधारहीनता का बचाव करते हैं, और किसी विश्वसनीय प्रमाण पर भरोसा नहीं करते।

इस तरह से भौतिकवादी इस पारम्परिक और मतान्ध मानसिकता के अंधेरे का अनुभव करवाने में लोगों की सहायता कर सकते हैं और उन्हें धर्म कि सही स्रोत यानी कुरऑन की तरफ पलटने और उसका अनुसरण करने के लिए उत्तेजित कर सकते हैं। हालांकि वे बिना सोचे समझे अल्लाह के आदेश कि पालना और उसके धर्म की सेवा कर रहे हैं। इसके अलावा, वे उस मानसिकता को भी उजागर करते हैं। जो अल्लाह के नाम पर झूठा धर्म गढ़ती है और इस्लाम के नाम पर उसे पेश करती है और इस तरह से वे इस पक्षपातपूर्ण और हटधर्मी तंत्र को भी कमजोर करते हैं जिसने समाज के एक हिस्से का खतरे में डाल रखा है।

अतः इच्छा–अनिच्छा और अपने भाग्य की होनी से यह लोग अल्लाह के वादे को पूरा करते हैं। यह वह वादा है जिसके मुताबिक अल्लाह ताअला अपने धर्म की रक्षा अधर्मियों को आपस में टकरा देने से करेगा। कुरऑन में अल्लाह के इस नियम को इस तरह बताया गया है "(अगर अल्लाह) मनुष्यों में से एक गिरोह को दूसरे गिरोह द्वारा हटाता न रहता तो धरती की व्यवस्था बिगड़ जाती – परन्तु अल्लाह संसार वालों के लिए बड़ा अनुग्रह वाला है।" (सूरत अल–बक़रा : 251)

इस बिंदु पर पहुंच कर हमें यह आवश्यक मालूम होता है इवोल्युशनिस्ट भौतिकवादी विचारधारा के वकीलों के लिए द्वार खुले रखे। हो सकता है कि इन लोगों ने प्रारंभ में ईमानदारी से सत्य की तलाश आरंभ की हो, लेकिन ये सत्य धर्म से इसलिए दूर हो गये क्योंकि इनके सामने अर्थहीन और पैगम्बर (सलल्लाहो अलैहि वसलम) के नाम से गढ़ी गई झूठी बातें, तथा बिदअती और अर्धामिक कहानियां इन्हें बचपन से सुनाई गई हों, इसलिए इन्हें स्वयं सत्य को पाने का अवसर नहीं मिला। हो सकता है कि उन्हें इस्लाम का ज्ञान उन किताबों से मिला हो जो कि विरोधियों द्वारा लिखी गई थीं। जिन्होंने इस्लाम की तुलना झूठ और असत्य से की जो कुरआन में मौजूद नही हैं। इस्लाम का सार और हकीकत उससे बिल्कुल अलग है जो उन्हें पढ़ाया गया है। इसलिए हम उन्हें यह परामर्श देते हैं कि वे जितनी जल्दी हो सके अल्लाह की किताब को खुले मस्तिष्क और हृदय तथा पूर्वाग्रह से मुक्त होकर पढ़ें और सही धर्म उसके सच्चे स्रोत से सीखें। अगर उन्हें किसी प्रकार की सहायता की आवश्यकता हो, तो वे इस किताब के लेखक हारून यह्या, की दूसरी किताबें देख सकते हैं जो कुरऑन की मौलिक धारणाओं पर लिखी गई हैं।

भौतिकवाद का वैज्ञानिक मौत

19वीं सदी का भौतिकवाद ने यह सूचित किया कि ब्रह्मांड का अस्तित्व अनंतकाल से था, उसका सृजन नहीं किया गया था और पदार्थ की पारस्परिक क्रियाओ के संदर्भ में ऑर्गेनिक विश्व को समझाया जा सकता है. हालांकि, 20वीं सदी के खोजो ने इन धारणाओ को संपूर्ण अयोग्य ठहरा दिया है.

ब्रह्मांड का अस्तित्व अनंत समय से था यह धारणा का उस खोज ने छेद उडा दिया कि ब्रह्मांड का उदभव 'बिग बैंग' नामक प्रचंड विस्फोट से हुआ था जो आज से 15 अरब सालो पहले हुआ था. बिग बैंग दिखाता है कि ब्रह्मांड में सभी भौतिक पदार्थ ून्य में से अस्तित्व में आये: दूसरे ाब्द में कहे तो उनका सृजन हुआ था. भौतिकवाद के वकालत करने में सबसे प्रमुख लोगो में से एक नास्तिकवादी फिलोसोफर एन्थनी फ्ल्यु कुछ इस प्रकार से स्वीकार करते है:

आत्मा के लिए अपराध–स्वीकरण अच्छा है. इसलिए मैं यह कबूल करके ाुरूआत करूंगा कि समकालीन कोस्मोलोजिकल सहमति (बिग बैंग) की वजह से स्ट्रेटॉनिशियन नास्तिकवादी को ार्मसार होना चाहिए. क्यूं कि कोस्मोलोजिस्टस एक वैज्ञानिक सबूत पेश कर रहे है कि ब्रह्मांड का भी एक आरंभ बिंदु था.1

बिग बैंग यह भी दिखाता है कि हर चरण पर किसी नियंत्रित सृजन ने ब्रह्मांड को आकार दिया था. बिग बैंग के बाद जो व्यवस्था खडी हुई इससे यह स्प ट होता है. बिग बैंग किसी भी अनियंत्रित विस्फोट से हो नहीं सकता उतना परफैक्ट था. मशहूर फिज़िशियन पॉल डैविस इस परिस्थिति को समझाते है:

ब्रह्मांड की आज की जो संरचना है वह बहुत सोच समझकर बनाई गई है इस छवि को मन में बनने से रोकना कठिन है. प्रकृतिने अपने मूलभूत अचलांको को जो सांख्यिक मूल्य दिये है उनका चमत्कारिक पुनरावर्तन कोस्मिक डिज़ाइन के तत्व के लिए सबसे महत्वपूर्ण सबूत बना रहना चाहिए.2

यही वास्तविकता खगोलशास्त्र के अमरिकी प्रोफेसर ज्योर्ज ग्रीनस्टैन को यह कहने को प्रेरित करती है:

अगर हम सभी सबूतो का सर्वेक्षण करे तो यही विचार आता है कि इसमें किसी अलौकिक माध्यम ाामिल होना ही चाहिए.3

इस प्रकार से, जीवन को सिर्फ पदार्थ की पारस्परिक क्रिया के द्रि टकोण से ही समझाया जा सकता है यह भौतिकवादी धारणा भी विज्ञान की खोजो के बाद ढेर हो जाती है. सभी सजीवो के जीवन को निर्धारित स्वरूप देनेवाली जीनेटिक जानकारी किसी ाुद्ध भौतिक माध्यम से कभी भी नहीं समझाया जा सकता है. क्रम विकास की थीअरि के अग्रणी समर्थको में से एक ज्योर्ज सी विलियम्स 1995 में छपे अपने लेख में इस हकीकत का स्वीकार करते है:

इवोल्युशनिस्ट जीवविज्ञानी यह महसूस करने में विफल हुए है कि वे दो अतुलनीय प्रभाव–क्षेत्रो के साथ काम करते है: एक है जानकारी और दूसरा पदार्थ का क्षेत्र हैकृ.जीन एक जानकारी का पैकेज़ है, वह कोई पदार्थ नहीं हैकृ.यह वर्णनकार पदार्थ और जानकारी को अस्तित्व के दो अलग प्रभाव क्षेत्र बनाते है जिसकी उनकी अपनी द्रि ट से अलग चर्चा होनी जरूरी है.4

यह परिस्थिति उस सर्वशक्तिमान और अलौकिक बुद्धिमानी के अस्तित्व का सबूत है जिसकी बदौलत जीनेटिक जानकारी का अस्तिव होता है. पदार्थ के लिए अपने आप में जानकारी पैदा करना असंभव है. जर्मन फेडरल इन्स्टिट्युट ऑफ फिज़िक्स एंड टैकनोलज़ि के निर्देशक प्रोफेसर गीट्ट यह टिप्पणी करते है:

सभी अनुभव यह सूचित करते है कि अपनी मुक्त ईच्छाशक्ति, ज्ञान, समझदारी और सृजनात्मकता से सोचनेवाले की जरूरत पडती है. जिसके कारण पदार्थ में जानकारी अपने आप पैदा हो ऐसा प्रकृति का नियम या ऐसी कोई प्रक्रिया या ऐसे प्रसंगो के कोई सिलसिले के बारे में कोई जानकारी नहीं है.5

यह सब वैज्ञानिक हकीकत यह सूचित करती है कि जिसके पास बाह्य ाक्ति और ज्ञान है वह अल्लाह ब्रह्मांड और सभी जीवित चीज़ो का सृजन करते है. हमारी समय के सबसे गणमान्य फिलोसोफरो में से एक आर्थर कोज़लर भौतिकवाद के लिए कहते है: "भौतिकवाद कोई वैज्ञानिक विचारधारा होने का दावा नहीं कर सकती है"6

हेन्री मार्गेनु, रोय ए वर्गीस, कॉस्मोस, बायोस, थीओस, ला साले आईएलः ऑपन कॉर्ट पब्लिशिंग, 1992, पृ.241
पॉल डेविस, गॉड एंड द न्यू फिज़िक्स, न्यू यॉर्कः सिमोन एंड ाुस्टर, 1983, पृ.189
ह्युग रोस, द क्रिएटर एंड द कॉस्मोस, कोलोराडो स्प्रिन्ग्स, कोः नाव–प्रेस, 1993, पृ.114–15
ज्योर्ज सी विलियम्सए द थर्ड कल्चरः बियॉन्ड द साइंटिफिक रिवोल्युशन, न्यू यॉर्क, सिमोन एंड ाुस्टर, 1995, पृ.42–43
वर्नर गिट, इन द बिगिनिंग वॉज़ इन्फर्मेशन, सीएलवी, बीलेफेल्ड, जर्मनी, पृ.107, 141
आर्थर कोज़लर, जेनसः अ समिंग अप, न्यू यॉर्क, विन्टेज बूक्स, 1978, पृ.250

अध्याय 14

मीडिया : क्रमिक–विकास के सिद्धांत के लिए एक ऑक्सिजन का आवरण

अब तक हमने जो छानबीन की है उसमें जो देखने को मिला है वह यह है कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत कोई वैज्ञानिक आधार पर टिका हुआ नहीं है। हालांकि संसार के अधिकतर लोग इस हकीकत से अनभिज्ञ है और वे मानते हैं कि क्रमिक–विकास एक वैज्ञानिक सत्य है। इस छल का सबसे बड़ा कारण मीडिया द्वारा क्रमिक–विकास के बारे में चलाया जा रहा व्यवस्थित इनडॉक्ट्रिनेशन और प्रचार–प्रसार है।

जब हम पश्चिमी मीडिया की ओर ध्यान से देखते हैं तो हम क्रमिक–विकास के सिद्धांत से जुड़ी काफी खबरें देखने को मिलती हैं। मीडिया संगठन, जाने माने और प्रतिष्ठित पत्रिकाएं समय–समय पर इस विषय को चर्चा का केंद्र बनाते रहते हैं। जब उनके अभिगम को परखा जाये तो लोगों के मन पर यह छाप पड़ती है कि यह थीअरि बिल्कुल साबित हो चुकी हकीकत है और इसमें चर्चा के लिए कोई गुंजाइश नहीं है।

इस प्रकार के समाचार पढ़ने वाले सामान्य लोग सहजता से मान लेते हैं कि क्रमिक–विकास का सिद्धांत गणित के नियम जैसी हकीकत है। मुख्य धारा के मीडिया में छपने वाले इस प्रकार के समाचारों को स्थानीय मीडिया भी जगह देता है। वे बड़े फॉन्ट में हैडलाइन छापते हैं : "टाइम मैगेजिन के मुताबिक, जीवाश्म की श्रृंख्ला में बड़े अंतराल को पूरा करने वाला नया जीवाश्म मिला है", या "नेचर यह सूचित करता है कि वैज्ञानिकों ने क्रमिक–विकास के सिद्धांत के आखरी प्रकाश डाला है।" क्रमिक–विकास की आखिरी गुमशुदा कड़ी के मिलने" का मतलब कुछ भी नहीं होता है। क्योंकि क्रमिक–विकास के बारे में एक भी बात सिद्ध नहीं हुई है।

प्रमाण के रूप में पेश किया गया विषय–वस्तु सब झूठा होता है। जिसका ब्यौरा हमने पिछले अध्यायों में दे दिया है। मीडिया के अलावा, वैज्ञानिक स्रोत, एनसायक्लोपीडिया और जीवविज्ञान की किताबों पर भी यही बात लागू होती है।

संक्षेप में, मीडिया और शैक्षणिक सूत्र दोनों विधर्मी शक्तियों के प्रभाव में है और वह संपूर्ण इवोल्युशनिस्ट विचार को पकड़े हुए हैं और समाज पर भी यह विचार थोपते हैं। वर्षों से ऐसा होता आ रहा है और आज यह इतना असरकारक हो चुका है कि क्रमिक–विकास अब एक ऐसे विचार के रूप में परिवर्तित हो गया है जिसका कभी भी इन्कार नहीं किया जा सकता है। क्रमिक–विकास के इन्कार को विज्ञान के खिलाफ और बुनियादी वास्तविकताओं के अपमान के रूप में देखा जाता है। यही कारण है कि 1950 के दशक से लेकर आज तक जबकि इस थीअरि में कई त्रुटियां पाई गई हैं और खुद इवोल्यूशनिस्टस ने इनको स्वीकार किया है फिर भी वैज्ञानिक सूत्रों में या मीडिया में क्रमिक–विकास की आलोचना को ढूंढ़ना नामुमकिन है।

पश्चिम में जीवविज्ञान और प्रकृति के विषय में सबसे "प्रतिष्ठित" प्रकाशन माने जाने वाले 'साइंटिफिक अमेरिकन', 'नेचर', 'फोकस', 'डिस्कवर', 'साइंस' और 'नेशनल ज्योग्राफिक' ने क्रमिक–विकास के सिद्धांत की थीअरि को एक आफेशियल (आधिकारिक) विचारधारा के रूप में अपनाया है और इसे एक स्थापित हकीकत के रूप में पेश करने की कोशिश करते हैं।

लिपटे हुए झूठ

मीडिया के कार्यक्रम के द्वारा "ब्रेइन–वॉशिंग" के लाभ से इवोल्युशनिस्ट्स बहुत बड़ा फायदा उठाते हैं। कई लोग क्रमिक–विकास को किसी पूर्वाग्रह के बिना इतनी आसानी से मान लेते हैं कि वे "कैसे" और "क्यूं" पूछने की आवश्यकता भी महसूस नहीं करते हैं। इसका अर्थ यह है कि इवोल्युशनिस्ट्स अपने झूठ को आकर्षक पैकेज में पेश करते हैं।

इवोल्युशनिस्ट प्रचार

क्रम विकास के प्रचार की आगेवानी का जिसने ठेका ले रखा है वैसे लोकप्रिय विज्ञान मैगज़िन लोगो को क्रम विकास की थीअरि का स्वीकार करने के लिए प्रेरित करने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है.

उदाहरण के तौर पर, सबसे ज्यादा "वैज्ञानिक" इवोल्युशनिस्ट्स किताबें में "पानी से जमीन तक पारगमन (ट्रान्जिशन)" (जो क्रमिक–विकास की घटना में सबसे ज्यादा संदिग्ध घटना है) को हास्यास्पद सरलता के साथ "समझाया" जाता है। क्रमिक–विकास के मुताबिक, जीवन की शुरुआत पानी में हुई और जिनका सबसे पहले विकास हुआ वे प्राणी मछलियां थीं। सिद्धांत के मुताबिक कुछ ऐसा कारण था (ज्यादातर समय सूखे को इसका कारण माना जाता था) कि इन मछलियों ने अपने आप को जमीन पर फेंकना शुरु किया और जिन मछलियों ने जमीन पर रहने का इरादा किया उनके शरीर में मीनपक्ष के बदले पैर और गिल्स के बदले फेफड़े विकसित हो

इवोल्युशनिस्टस की "व्हैल ऑफ अ टेल"

क्रम विकास की बहुत ही कौतुकभरी कहानियों में से एक है 'व्हैल का क्रम विकास' जो दुनिया में सब से ज्यादा वैज्ञानिक और गम्भीर प्रकाशनो में गिने जानेवाले नेशनल ज्योग्रोफिक मैगज़िन मे छपी थी:

व्हैल के इतने प्रभुत्ववाले कद की गाथा 6 करोड सालो पहले गुरू हुई जब पानी या सुरक्षित जगह की तलाश में बालोवाले और चार पैरवाले कुछ स्तनपायी प्राणी पानी में ऊतरे. उनके पीछे के पैर अद्रश्य हुए और आगे के पैर मीनपक्ष में तबदील हुए और बालो की जगह चरबी का मुलायम ब्लैन्किट बनाए नासाछिद्र सिर के उपर चले गये, पूँछ चौडी होकर फ़ाल में बदल गई और तरणशील पानी की दुनिया में उनका शरीर महाकाय हो गया.1

इस कहानी के लिअ एक भी वैज्ञानिक आधार न होने की हकीकत के अलावा भी ऐसी घटना प्रकृति के सिद्धांतो के खिलाफ है. नेशनल ज्योग्रोफिक में छपी यह कहानी इस बात के लिए नोंधनीय है कि उपर से गम्भीर दिखनेवाले इवोल्युशनिस्ट प्रकाशनो में किस हद तक ऐसी मनघडंत कहानियां छप सकती है.

1. विक्टर बी शेफर, "एक्सप्लोरिंग द लाइव्ज़ ऑफ व्हैल्स", नेशनल ज्योग्रोफिक, वॉल्युम. 50, दिसंबर 1976, पृ.752

गये।

यह "परागमन" किस तरह से हासिल हुआ? हम जानते हैं कि मछली पानी के बाहर कुछ मिनटों से ज्यादा जिंदा नहीं रह सकती है। अगर हम मान लें कि कथित रूप से सूखा आया और मछली को जमीन की ओर चलना पड़ा तो फिर मछली को क्या हुआ होगा? इसका प्रतिभाव साफ है।

पानी से बाहर आने वाली सभी मछलियां एक के बाद एक कुछ मिनटों में मर जायेंगी। अगर यह प्रक्रिया लाखों वर्षों के समयकाल के लिए चलती है तो भी जवाब वही रहेगा : मछलियां एक के बाद एक मर जायेंगी। इसका कारण यह है कि एक संपूर्ण फेफड़े जैसा जटिल अंग "अकस्मात" से (मतलब म्युटेशन से) अस्तित्व में नहीं आ सकती हैं; जबकि दूसरी ओर आधा फेफड़ा बिल्कुल उपयोगी नहीं है।

लेकिन इवोल्युशनिस्ट्स यही बात सामने रखते हैं। "पानी से जमीन तक ट्रान्सफर" (परागमन) "जमीन से हवा में ट्रांसफर" और ऐसी कई कथित छलांगों को इन अतार्किक शब्दों में "समझाया" जा सकता है। आंख और कान जैसे सचमुच जटिल अंगों के निर्माण के बारे में इवोल्युशनिस्ट्स कुछ भी न कहने को पसंद करते हैं।

"विज्ञान" के पैकेज के साथ गली में घूम रहे आदमी को प्रभावित करना आसान है। पानी से जमीन तक ट्रांसफर को दिखाते काल्पनिक चित्र आप बनाइए, पानी में रहने वाले प्राणी, जमीन पर अपने "पूर्वज" और "ट्रान्ज़िशनल मध्यवर्ती स्वरूप" (जो एक काल्पनिक प्राणी हैं) इन सभी के लिए आप लैटिन शब्द ढूंढ़ निकाले और एक अलंकृत झूठ गढ़े : "युस्थेनोप्टेरोन पहले रिपीटीस्टिअन क्रोसोप्टेरजियरन में तब्दील हुए और क्रमिक–विकास की लम्बी प्रक्रिया में वे इशथाईयोस्टेगा में तब्दील हुए"। अगर मोटे चश्मे और सफेद कोट पहने हुए वैज्ञानिक के मुंह में आप शब्द भर दें तो आप कई लोगों को मनवाने में सफल होंगे क्योंकि क्रमिक–विकास का प्रचार करने के लिए समर्पित मीडिया बहुत बड़े उत्साह के साथ यह समाचार दुनिया कों देंगे।

अध्याय 15

उपसंहार : क्रमिक–विकास एक धोखा है

क्रमिक–विकास को अयोग्य साबित करने वाले अन्य कई प्रमाण और वैज्ञानिक नियम हैं लेकिन इस किताब में हम इनमें से कुछ ही की चर्चा कर पाये हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण सत्य उजागर करने के लिए यह भी प्रर्याप्त है : इसे विज्ञान के वेश में छुपाया जाता है फिर भी क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक छल के अलावा और कुछ नहीं है : एक ऐसा छल जिसे भौतिकवादी फिलोसोफी के लाभ के लिए ही समर्थन दिया जा रहा है। एक ऐसा छल जो विज्ञान नहीं लेकिन ब्रैनवोशिंग, मता आरोपण, प्रचार के गपगोले और छल पर आधारित है।

अब तक हमने जिन हकीकतो को ध्यान में लिया है उसका सार इस प्रकार दे सकते हैं :

क्रमिक–विकास का सिद्धांत ढेर हो चुका है

क्रमिक–विकास का सिद्धांत एक ऐसा सिद्धांत है जो अपने प्रथम कदम पर ही ध्वस्त हो जाता है। कारण यह है कि इवोल्युशनिस्ट्स एक भी प्रोटीन के निर्माण को नहीं समझा पाते हैं। जीवन के आकस्मिक निर्माण की संभावना के लिए भौतिकशास्त्र और रसायनशास्त्र के नियम भी कोई खुलासा नहीं देते हैं।

संयोग से एक भी प्रोटीन का अणु अस्तित्व में नहीं आ सकता है? तो क्या आप मान सकते हैं कि कैसे लाखों प्रोटीन सजीव की को. शिका का निर्माण करने के लिए ईकट्ठे हुए और फिर अरबों कोशिका बनीं और सजीवों को बनाने के लिए उनका संयोग से मिलन हुआ; और इसमें से उन्होंने मछली बनाई; और फिर जमीन पर वह मछली रहने के लिए आई और वे सरीसृप, पक्षियों में रूपांतरित हुए और इसी प्रकार से पृथ्वी पर लाखों विभिन्न प्रजातियां पैदा हुईं?

अगर यह तार्किक नहीं भी लगता है तब भी इवोल्युशनिस्ट्स इस मिथक में आस्था रखते हैं। हालांकि, यह सिर्फ एक मान्यता है – या एक गलत आस्था है – क्योंकि इस कहानी को सच साबित करने के लिए उनके पास कोई सबूत नहीं हैं। उन्होंने कभी भी आधी–मछली/आधा–सरीसृप या आधा–सरीसृप/आधा–पक्षी जैसा एक भी मध्यवर्ती स्वरूप नहीं पेश किया है। वे यह भी साबित नहीं कर पाये हैं कि प्रोटीन या प्रोटीन का बना एक एमिनो ऐसिड अणु आदिकालीन पृथ्वी की परिस्थितियों के तहत बना होगा या नहीं अपनी आधुनिक साधनों से सुसज्ज प्रयोगशालाओं में भी वे ऐसा करने में सफल नहीं हो पाये हैं। इसके विपरित अपने सारे प्रयासों के बावजूद इवोल्युशनिस्ट्स ने खुद यह दिखाया है कि पृथ्वी पर क्रमिक–विकास की कोई प्रक्रिया नहीं हुई है और न ही किसी भी समय में हो सकती थी।

भविष्य में भी क्रमिक–विकास की सत्यार्थता की जांच नहीं हो सकती

इस दृश्य को देखते हुए, इवोल्युशनिस्ट्स अपने आपको यही सांत्वना दे सकते हैं कि सपने देखते रहने से किसी समय विज्ञान खुद इस समस्या को सुलझा लेगा। हालांकि, कितने भी साल गुजर जायें, इस बात का सवाल ही खड़ा नहीं होता है। ऐसे बेबुनियाद और आधारहीन दावों की जांच विज्ञान को नहीं करनी चाहिए। इससे विपरित, विज्ञान जैसे–जैसे प्रगति के शिखर पर जाता है, इवोल्युशनिस्ट्स के दावों की हास्यास्पदता सामने आती है।

अब तक तो ऐसा ही हुआ है। सजीवों की कोशिकाओं की संरचना और कार्य के बारे में जैसे–जैसे नयी–नयी खोज़ें सामने आती रही, यह स्पष्ट होता जा रहा है कि कोशिका कोई सरल, रैन्डम तरीके से नहीं बनी हैं जैसाकि डार्विन के समय का आदिकालीन जीवविज्ञान मानता था।

परिस्थिति इतनी साफ है कि सृजन की हकीकत का इन्कार करना, जीवन के उद्‌भव को असंभव संयोगों के साथ जोड़ना और बचकाना जिद्द के साथ इन दावों का बचाव करना यह सब कुछ समय बाद एक बड़ी शर्मिन्दगी की बात बन सकती है। क्रमिक–विकास के सिद्धांत का सच्चा चेहरा जैसे–जैसे साफ होता जा रहा है और लोगों को सत्य जानने को मिल रहा है, उससे ये लगता है कि क्रमिक–विकास के अन्धे कट्टरवादी वकील अपना चहेरा दिखाने को काबिल नहीं रहेंगे।

क्रमिक–विकास के सामने सब से बड़ा गतिरोध : आत्मा

दुनिया में ऐसी कई प्रजातियाँ हैं जो एक–दूसरे से मिलती–जुलती है। जैसे कई सजीव ऐसे हो सकते हैं जो घोड़े या बिल्ली जैसे दिखते है और कई कीट भी एक समान दिख सकते हैं। इन समानताओं से किसी को आश्चर्य नहीं होता है।

मनुष्य और एप में ऊपरी तौर पर दिखाई देने वाली समानता किसी तरह से बहुत ज्यादा ध्यान आकर्षित करती है। यह दिलचस्पी कभी–कभी तो इतनी हद तक जाती है कि कुछ लोग क्रमिक–विकास की गलत धारणा में मानने लगते हैं। असल में मनुष्य और एप में दिखने वाली समानता का कोई महत्त्व नहीं है। राइनोसेरोस बीटल और गेंडे में भी कुछ ऊपरी समानता है लेकिन इनमें से एक जंतु है और दूसरा स्तनपायी है इसलिए उनकी समानता के आधार पर उनके बीच क्रमिक–विकास की कोई कड़ी स्थापित करने का प्रयास करना हास्यास्पद होगा।

इस ऊपरी समानता के अलावा एप्स किसी दूसरे प्राणी से ज्यादा मनुष्य के समान है ऐसा नहीं कहा जा सकता है। असल में अगर बुद्धिमता का स्तर देखा जाये तो ज्यामिति के आधार पर अद्‌भुत मधुकोश बनाने वाली मधुमख्खी या किसी इंजिनियरिंग के चमत्कार से जाले बुनने वाली मकड़ी को भी मनुष्य से नजदीक गिना जा सकता है। कुछ पहलुओं में वे मनुष्य से भी श्रेष्ठ है।

बाहरी समानता को छोड़कर मनुष्य और एप के बीच में बहुत बड़ा भेद है। एप एक प्राणी है और अगर उसकी जाग्रतता का स्तर देखें तो उसे घोड़े या कुत्ते से अलग नहीं देखा जा सकता है। फिर भी मनुष्य एक जाग्रत, मजबूत ईच्छाशक्ति वाला प्राणी है जो सोच सकता है, बातें कर सकता है, समझ सकता है और निर्णय ले सकता है। यह सब उस आत्मा के कार्य हैं जो मनुष्य के पास है। आत्मा एक सबसे बड़ा और महत्त्वपूर्ण भेद है जो मनुष्य और अन्य प्राणियों के बीच बड़ा अंतर खड़ा कर देता है। कोई भी शारीरिक समानता मनुष्य और अन्य प्राणियों के बीच की इस भेदरेखा की आपूर्ति नहीं कर सकती है। प्रकृति में मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जिसके पास आत्मा है।

अल्लाह अपनी स्वेच्छा से सृजन करता है

जिस दृश्यलेख की कल्पना इवोल्युशनिस्ट्स ने की है अगर वह सत्य होता तो क्या उससे कोई फर्क पड़ता? बिल्कुल नहीं। इसका कारण यह है कि क्रमिक–विकास के सिद्धांत द्वारा आगे बढ़ा हुआ हर चरण जो संयोग पर आधारित है वह सिर्फ चमत्कार के परिणाम स्वरूप ही जन्म ले सकता है। अगर जीवन ऐसे एक के बाद एक चरणों के जरिए क्रमशः अस्तित्व में आया होता तो भी हरेक प्रगतिशील चरण जाग्रत ईच्छाशक्ति के फलस्वरूप ही आकार लेता। यह चरण संयोग से पैदा हुए होते यह बात संभव नहीं है।

अगर प्रोटीन का अणु आदिकालीन परिस्थितियों के तहत पैदा हुआ है तो फिर यह भी याद रखना चाहिए कि जीवविज्ञान और रसायनशास्त्र के नियमों से यह साबित किया जा चुका है कि ऐसा किसी संयोग से नहीं हो सकता है। लेकिन इस अणु का निर्माण वास्तव में हुआ था यह बात सामने रखनी हो तो फिर एक ही विकल्प रह जाता है और वह यह कि सृष्टिकर्ता की मरजी से उसका सृजन हुआ होना चाहिए। इवोल्युशनिस्ट्स द्वारा सामने रखी गई पूरी धारणा पर यही बात लागू होती है। उदाहरण के तौर पर मछली पानी से जमीन पर आई और सरीसृप में तब्दील हो गई इस बात को साबित करने के लिए जीवाश्मविज्ञान का कोई सबूत नहीं मिला है और ना ही भौतिक, रासायनिक, जैविक या तार्किक समर्थन मिला है। लेकिन अगर किसी को यही मानना है कि मछली जमीन पर उछलकर आई और सरीसृप में बदल गई तो फिर यह दावा करने वाले व्यक्ति को यह भी मानना होगा कि सृष्टिकर्ता का भी इस विश्व में अस्तित्व है जो अपनी इच्छा के अनुसार किसी भी चीज़ का सृजन करने में सक्षम है। ऐसे चमत्कार के लिए कोई भी खुलासा देना यह स्व–विरोधाभासी है और तर्क के सिद्धांतों का उल्लंघन है।

हकीकत स्पष्ट और साफ–साफ हमारे सामने है। जीवन के सभी स्वरूप एक परफैक्ट डिज़ाइन और सर्वोत्कृष्ट सृजन का परिणाम है। यह हमें सृष्टिकर्ता, अनंत शक्ति, ज्ञान और बुद्धिमता के मालिक के अस्तित्व का ठोस सबूत देता है।

सृष्टिकर्ता अल्लाह है जो आकाश और पृथ्वी और उनके बीच की सभी चीज़ों का मालिक है।

क्रम विकास की थीअरि का पतनः सृजन की हकीकत

हाल में वेग पकडनेवाला क्रम विकास का प्रचार रा ट्रीय मान्यताओ और नैरिक मूल्यो के लिए एक गम्भीर जोखिम है. इस हकीकत से परिचित साइंस रिसर्च फाउन्डेशन ने इस मुद्दे के वैज्ञानिक सत्य के बारे में तुर्कीश लोगो को परिचित करवाने का जिम्मा ऊठाया है.

प्रथम सम्मेलन – इस्तंबुल

साइंस रिसर्च फाउन्डेशन (एसआरएफ) द्वारा आयोजित आंतररा ट्रीय सम्मेलनो की श्रेणी में प्रथम सम्मेलन 1998 में आयोजित हुआ. "द कलैप्स ऑफ द थीअरि ऑफ इवोल्युशनः द फैक्ट ऑफ क्रिएशन" (क्रम विकास की थीअरि का पतनः सृजन की हकीकत) ी क के साथ यह सम्मेलन 4 अप्रैल, 1998 को इस्तंबुल में आयोजित हुआ था. बडी सफलता पानेवाले इस सम्मेलन में दुनियाभर के मान्याताप्राप्त विशे ाज्ञ हाजिर थे और तुर्की में पहली बार क्रम विकास की थीअरि के सामने वैज्ञानिक द्रि टकोण से प्रश्न ऊठाने और उसका खण्डन करने का मंच मिला. लोगो का अच्छा खासा ध्यान बटौरनेवाले इस सम्मेलन में तुर्कीश समाज के सभी वर्गो के लोगो ने शिरकत की. जिन्हे इस सम्मेलन के कक्ष में जगह नहीं मिली उन्होने बाहर लगाये हुए क्लॉज़्ड सर्किट टैलिविज़न सिस्टम के जरिए इस परि ाद का जीवंत प्रसारण देखा.

सम्मेलन में तुर्की और दुनियाभर के मशहूर वक्ता ामिल थे. एसआरएफ के सदस्यो के प्रवचनो में क्रम विकास की थीअरि में छिपे नापाक सैद्धांतिक हेतुओ को उजागर किया गया. इन प्रवचनो के बाद एसआरएफ द्वारा तैयार की गई दस्तावेजी विडीयो फिल्म प्रस्तुत की गई.

अमरिका में इन्स्टिट्युट ऑफ क्रिएशन रिसर्च के दो मशहूर वैज्ञानिक डॉ. डाउन गिश और डॉ. केनेथ कमिंग बायोकैमिस्ट्री और जीवाश्मविज्ञान के सत्ताधीश है. उन्होने ठौस सबूत पेश कर साबित किया कि क्रम विकास की थीअरि बिलकुल प्रमाणभूत नहीं है. सम्मेलन के दौरान तुर्की के सबसे गणमान्य वैज्ञानिको में से एक डॉ सेवेट बबुना ने स्लाइड ो के जरिए मानव के सृजन के हर चरण में छिपे चमत्कारो पर प्रकाश डाला जिसने क्रम विकास की 'सांयोगिक धारणा' को जड से हिलाकर रख दिया.

दूसरा सम्मेलन – इस्तंबुल

इसी श्रेणी का दूसरा आंतररा ट्रीय सम्मेलन पहले सम्मेलन के तीन महिने बाद 5 जुलाई, 1998 को फिर से इस्तंबुल में सेमल रेसिट कॉन्फरंस हॉल में आयोजित हुआ. छह अमरिकी और एक तुर्कीश वक्ताओने अपने प्रवचन में कहा कि किस तरह आधुनिक विज्ञान डार्विनिज़म को गलत ठहराता है. हजार लोगो की बैठक क्षमतावाले सेमल रेसिट कॉन्फरंस हॉल आतुर श्रोताओ के प्रेक्षकगण से भर गया था.

इस सम्मेलन में वक्ताओ और उनके वि ायो का संक्षेप सार नीचे दिया गया हैः

प्रोफेसर माइकल पी गिरुआर्डः "क्या जीवन संयोगो और इत्तेफ़ाको से पैदा होना संभव है" ी कवाले अपने प्रवचन में दक्षिणी लुइज़ियाना युनिवर्सिटी से जीवविज्ञान के प्रोफेसर माइकल गिरुआर्ड ने विभिन्न उदाहरणो के जरिए प्रोटीन की जटिलताए जीवन के मूलभूत एकम के बारे में समझाया और यह नि क ा निकाला कि सिर्फ एक निपुण डिज़ाइन के परिणामस्वरूप ही इनका अस्तित्व हो सकता है.

डॉ. ऐडवर्ड बाउड्रोक्सः "द डिज़ाइन इन कैमिस्ट्री" ी कवाले अपने भा ण में न्यू ऑर्लिआन्स युनिवर्सिटी के रसायणशास्त्र के प्रोफेसर ऐडवर्ड बाउड्रोक्स ने यह गौर किया कि जीवन को अस्तित्व में लाने के लिए कुछ रासायणिक तत्वो को सहेतुक संजोया गया होना चाहिए.

प्रोफेसर कार्ल फ्लायरमैन्सः अमरिका के मशहूर वैज्ञानिक और इन्डियाना युनिवर्सिटी में माइक्रोबायोलोजि के प्रोफेसर और अमरिकी सुरक्षा विभाग के सहकार से "बैक्टेरिया द्वारा रासायणिक कचरे के न्युट्रलाईज़ेशन" पर संशोधन करनेवाले कार्ल फ्लायरमैन्स ने माइक्रोबायोलोजिकल स्तर पर इवोल्युशनिस्ट दावो का खण्डन किया.

प्रोफेसर एडिप केहाः बायोकैमिस्ट्री के प्रोफेसर एडिप केहा इस सम्मेलन में तुर्की की तरफ से एकमात्र वैज्ञानिक थे. उन्होने कोशिका की मूलभूत जानकारी को पेश किया और सबूत के जरिए इस बात पर जोर दिया कि कैवल परफैक्ट सृजन के जरिए ही कोशिका अस्तित्व में आ सकती है.

प्रोफेसर डेविड मेन्टनः वॉशिंग्टन युनिवर्सिटी में ारीररचना के प्रोफेसर डेविड मेन्टन ने बहुत दिलचश्प कम्प्यूटर डिसप्लै के जरिए अपने भा ण में पक्षीयों के पिच्छ और

सरीसृप के छिलको की ारीररचना के बीच के भेद का गौर किया.
प्रोफेसर डाउन गिशः मशहूर इवोल्युशनिस्ट प्रोफेसर गिश ने "द ऑरिजिन ऑफ मैन" ाी र्षक के साथ अपने भा ाण में एप्स में से मानवो के क्रम विकास की धारणा का खण्डन किया.
आईसीआर के प्रमुख और प्रोफेसर जॉन मोरिसः इन्स्टिट्युट फॉर क्रिएशन रिसर्च के प्रमुख और मशहूर भूविज्ञानी प्रोफेसर मोरिस ने क्रम विकास के पीछे छिपे सैद्धांतिक और फिलोसोफिकल प्रतिबद्धता पर प्रवचन दिया. उन्होने आगे समझाया कि यह थीअरि एक मतान्ध विचारधारा में तबदील हो गई है और उसके समर्थक धार्मिक जुनून के साथ डार्विनिज़म में मानते है.
इन सब भा ाणो को सुनकर श्रोतागण इस हकीकत से वाकिफ हुए कि क्रम विकास एक मतान्ध मान्यता है जिसका सभी पहलुओ में विज्ञान खण्डन करता है. इसके अलावा, साइंस रिसर्च फाउन्डेशन द्वारा आयोजित और सीआरआर कॉन्फरंस हॉल की लॉबी में प्रदर्शित की गई पोस्टर प्रदर्शनी (जिसका ाी र्षक था "क्रम विकास की थीअरि का पतनः सृजन की हकीकत") ने लोगो का अच्छा खासा ध्यान आकर्ि ात किया. इस प्रदर्शनी में 35 पॉस्टर थे जिसमें सभी पोस्टर में क्रम विकास के मूल दावे या सृजन की हकीकत पर प्रकाश डाला गया था.

तीसरा सम्मेलन – अंकारा

प्रोफेसर ऐडवर्ड बाउड्रोक्सः
"हम जिस दुनिया में रहते है और उसके प्राकृतिक नियम है वह हम मनु ायो के लाभ के लिए सृ िटकर्ता द्वारा बहुत ही बारीकीओ से बनाये गये है."

प्रोफेसर डेविड मेन्टनः
"पिछले 30 सालो से मैं सजीवो की ारीररचनाओ के लक्षणो की छानबिन कर रहा हूं. मैंने जो देखा है यह हंमेशा अल्लाह के सृजन का सबूत रहा है."

प्रोफेसर कार्ल फ्लायरमैन्सः
"आधुनिक बायोकैमिस्ट्री यह साबित करती है कि सजीवो को चमत्कारिक रूप से डिज़ाइन किया गया था और यह हकीकत ही यह साबित करने के लिए पर्याप्त है कि सृ िटकर्ता का अस्तित्व है."

इस श्रेणी का तीसरा आंतरा ट्रीय सम्मेलन अंकारा में ोरेटोन होटल में 12 जुलाई. 1998 को आयोजित हुआ था. सम्मेलन में हिस्सा लेनेवाले तीन अमरिकी और एक तुर्क वक्ताओने सुस्प ट और ठौस सबूत पेश किया कि डार्विनिज़म को आधुनिक विज्ञान अयोग्य करार देता है.
अंकार की ोरेटोन होटल में कॉन्फरंस हॉल की बैठक क्षमता हजार लोगो की थी लेकिन इस सम्मेलन में शिरकत करनेवाले लोगो की संख्या 2500 का आंकडा पार कर गई. जिन्हे अंदर जगह नहीं मिल पाई उनके लिए हॉल के बाहर स्क्रीन लगाये गये थे. कॉन्फरंस हॉल के पास ही आयोजित पोस्टर प्रदर्शनी (जिसका ाी र्षक था "क्रम विकास की थीअरि का पतनः सृजन की हकीकत") ने भी लोगो का ध्यान आकर्ि ात किया. सम्मेलन के अंत में वक्ताओ का लोगो ने तालीओ से स्वागत किया जिससे यह बात साबित हुई कि क्रम विकास के धोखे और सृजन की हकीकत के बारे में वैज्ञानिक हकीकतो पर कोई प्रकाश डाले इसका लोगो को कितनी बेसब्री से इंतजार था.
इन आंतरा ट्रीय सम्मेलनो की सफलता के बाद साइंस रिसर्च फाउन्डेशन ने पूरे तुर्की में इस प्रकार के सम्मेलनो का आयोजन करना ाुरू किया. अगस्त 1998 से 2005 के अंत के दौरान तुर्की के 72 ाहरो और 150 जिल्लो में 2800 सम्मेलन आयोजित किये गये थे.एसआरएफ तुर्की के विविध हिस्सो में अभी भी इन सम्मेलनो का आयोजन करता है. एसआरएफ ने इंग्लंड, हौलेंड, ब्रुनेई, मलेशिया, इंडोनेशिया, सिंगापोर, अज़रबैजान, ऑस्ट्रेलिया, अमरिका और कनाडा में भी ऐसे सम्मेलनो का आयोजन किया है.
प्रोफेसर डुआन गिशः
"जीवाश्म का रिकॉर्ड क्रम विकास की थीअरि का खण्डन करता है और यह दिखाता है कि जातिया पृथ्वी पर संपूर्ण विकसित स्वरूप में और अच्छी रचना के साथ अस्तित्व में आई. यह इस बात का ठौस सबूत है कि इनका सृजन अल्लाह द्वारा किया गया था."
क्रम विकास के मशहूर विशे ाज्ञ डॉ. डुआन गिश तुर्किश संसद के सदस्य डॉ. नेवज़ात यालसिन्टास से अपने एसआरएफ प्लाक का स्वीकार करते हुए.

अध्याय 16

सृजन की सच्चाई

किताब के पिछले भागों में हमने क्रमिक–विकास की जांच की थी जो यह दावा करती है कि जीवन का सृजन नहीं हुआ है और यह कि यह सिद्धांत एक धोखा है जो वैज्ञानिक तथ्यों से बिल्कुल खिलाफ है। हमने देखा कि जीवाश्म–विज्ञान, बायोकैमिस्ट्री और शरीर रचना जैसी कुछ शाखाओं द्वारा आधुनिक विज्ञान ने किस तरह एक सुस्पष्ट हकीकत को उजागर किया है। यह हकीकत है कि अल्लाह सभी सजीवों का सृजन करता है। वास्तव में इस हकीकत को ध्यान में लेने के लिए हमें बायोकैमिस्ट्री या भूस्तरीय खुदाईयों के जटिल परिणामों की ओर नजर करने की जरूरत नहीं है। अगर हम किसी भी सजीव का अवलोकन करें तो उसमें हमे असाधारण बुद्धिमता के संकेत दिखाई देते हैं। किसी जंतु या समुद्र की गहराईयों में रहने वाली मछली के शरीर में जो महान टैकनोलॉजि या रचना है वो मनुष्यों द्वारा कभी भी हासिल नहीं की गई है। कुछ सजीवों के पास दिमाग भी नहीं है लेकिन वे इतने जटिल कार्य करते हैं जो खुद मनुष्य के बस की बात नहीं है। यह महान् बुद्धिमानी, रचना और योजना जो सारी प्रकृति में दिखाई देती है यह सर्वश्रेष्ठ सृष्टिकर्ता के अस्तित्व का प्रमाण है। यह सृष्टिकर्ता का सारी प्रकृति पर आधिपत्य है और यह सृष्टिकर्ता और कोई नहीं लेकिन अल्लाह है। अल्लाह ने सभी सजीवों को असाधारण लक्षण दिये हैं और मनुष्य को अपने अस्तित्व और ताकत के प्रमाण के समान संकेत दिखाये हैं।

आने वाले पन्नों में हम प्रकृति में सृष्टिकर्ता की मौजूदगी के अनगिनत प्रमाणों में से कुछ का अभ्यास करेंगे।

.

मधुमक्खी और मधुकोश का वास्तुशिल्पीय चमत्कार

मधुमक्खी अपनी जरूरत से ज्यादा शहद पैदा करती है और मधुकोश में उनका संग्रह करती है। मधुकोश की षटकोणीय संरचना से हम सब परिचित हैं। क्या आपने कभी यह सोचा है कि मधुमक्खी षटकोणीय मधुकोश क्यों बनाती है और अष्टकोणीय या पंचकोणीय संरचना क्यों नहीं बनाती है?

इस प्रश्न का जवाब ढूंढने की कोशिश करने वाले गणितशास्त्री एक दिलचस्प निष्कर्ष पर पहुँचे : "किसी भी क्षेत्रफल का अधिकतम उपयोग करने के लिए षटकोण ज्यामिति का सबसे सुयोग्य स्वरूप है।" षटकोणीय सैल के निर्माण के लिए कम से कम मात्रा में मोम की जरूरत होती है जब कि वह अधिकतम मात्रा में शहद का संग्रह करता है। इसलिए मधुमक्खी सबसे सुयोग्य स्वरूप का इस्तेमाल करती है। मधुकोश के निर्माण की पद्धत्ति भी बहुत आश्चर्यजनक है : मधुमक्खी दो–तीन अलग–अलग जगहों पर छत्ताधानी के निर्माण की शुरूआत करती है और दो–तीन रेशे से एक साथ मधुकोश को बुनती है। अलग–अलग जगहों पर से शुरूआत करने के बावजूद भारी तादात में मधुमख्खी समान षाटकोण बनाती है और फिर इन्हें एक–साथ जोड़कर और मध्यस्थान को

जोड़कर मधुकोश को बुनती है। षटकोण के जँक्शन (सन्धि बिन्दुओं) केंद्रों को इतनी खूबी से जोड़ा जाता है कि वे एक के बाद एक जोड़े गये होंगे ऐसा कोई संकेत देखने को नहीं मिलता है। इस अदभुत प्रदर्शन के बाद हमे उस सर्वोत्तम शक्ति के अस्तित्व को स्वीकार करना पड़ेगा जिसने इन प्राणियों को ऐसा करने का आदेश दिया है। इवोल्युशनिस्ट्स इस सिद्धि के लिए सिर्फ "इन्स्टिन्क्ट" (मूल प्रवृत्ति) की धारणा से समझाना चाहते हैं और उसे मधुमक्खी का सहज लक्षण के रूप में पेश करना चाहते हैं। हालांकि अगर सचमुच कोई सहज वृत्ति इसके पीछे काम कर रही है और अगर यह सभी मधुमक्खियों पर शासन कर रही है और हर मधुमक्खी को एक–दूसरे के साथ सामंजस्य से काम करना होगा ऐसा आदेश देती है तो इसका मतलब यह है कि कोई उन्नत बुद्धि है जो इन सभी छोटे प्राणियों पर शासन करती है।

इसे और स्पष्ट ढ़ंग से कहा जाय तो, इन छोटे प्राणियों का सृजनकर्ता अल्लाह है जो उन्हें जो काम करने के लिए "प्रेरित" करता है। चौदह सदियाँ पहले कुरआन में इस हकीकत को इस तरह बयान किया गया था :

और देखो तुम्हारे रब ने मधुमक्खी पर 'वह्म' कर दी कि पहाड़ों में और पेड़ों में और (मनुष्य) जहां आवास बताता है, घर बना। फिर हर प्रकार के फल–फूलों का रस चूस और अपने रब के (ठहराए हुए) मार्गों पर आज्ञापालन करते हुए चल। उसके पेट से एक पेय निकलता है जिसके रंग भिन्न होते हैं, जिसमें लोगों के लिए शिक्षा है। निस्संदेह इसमें सोच विचार करने वाले लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है। (सुरत अन–नाहलः 68–69)

अदभुत शिल्पी : दीमक

जमीन पर दीमक द्वारा खड़े किये गये घोंसले को देखने पर किसी भी व्यक्ति को आश्चर्य हुए बगैर नहीं रहता है। इसका कारण यह है कि दीमक का घोंसला शिल्पकला का एक आश्चर्य माना जाता है जो 5–6 मीटर तक की ऊंचाई का होता है। इस घोंसले में दीमक की जरूरतों को पूरा करने के लिए सभी आधुनिक सुविधायें होती हैं। दीमक अपने शरीर की संरचना की वजह से कभी सूर्यप्रकाश में बाहर नहीं आती है। घोंसले में हवादारी की व्यवस्था, नहर, लार्वा रूम, गलियारों, फफूँद के उत्पादन के लिए खास प्रबन्ध, सुरक्षित निकास, ठंडे और गरम तापमान के लिए कमरे जैसी चकाचौंध करने वाली सुविधायें होती हैं। इससे भी आश्चर्य की बात यह है कि इन सबका निर्माण करने वाली दीमक खुद अन्धी होती है।

इस हकीकत के बावजूद जब हम दीमक और उसके घोंसले के कद की तुलना करते हैं तो हम देखते हैं कि अपने से 300 गुना ज्यादा निर्माण का प्रोजेक्ट दीमक सफलतापूर्वक संभाल लेती है।

दीमक का एक और आश्चर्यजनक लक्षण भी है : अगर हम दीमक के घोंसले को उसके निर्माण के प्रथम चरण में दो हिस्सो में बांटे और कुछ क्षणों बाद उसे फिर से जोड़ें तो हमे यह देखने को मिलेगा कि आने–जाने के सभी रास्ते, कैनाल और मार्ग एक–दूसरे से किसी न किसी बिंदु पर मिलते हैं। दीमक अपना काम जारी रखती है जैसे कि वे एक–दूसरे से कभी अलग न हों और एक ही जगह पर रहने का उन्हें आदेश दिया गया हो।
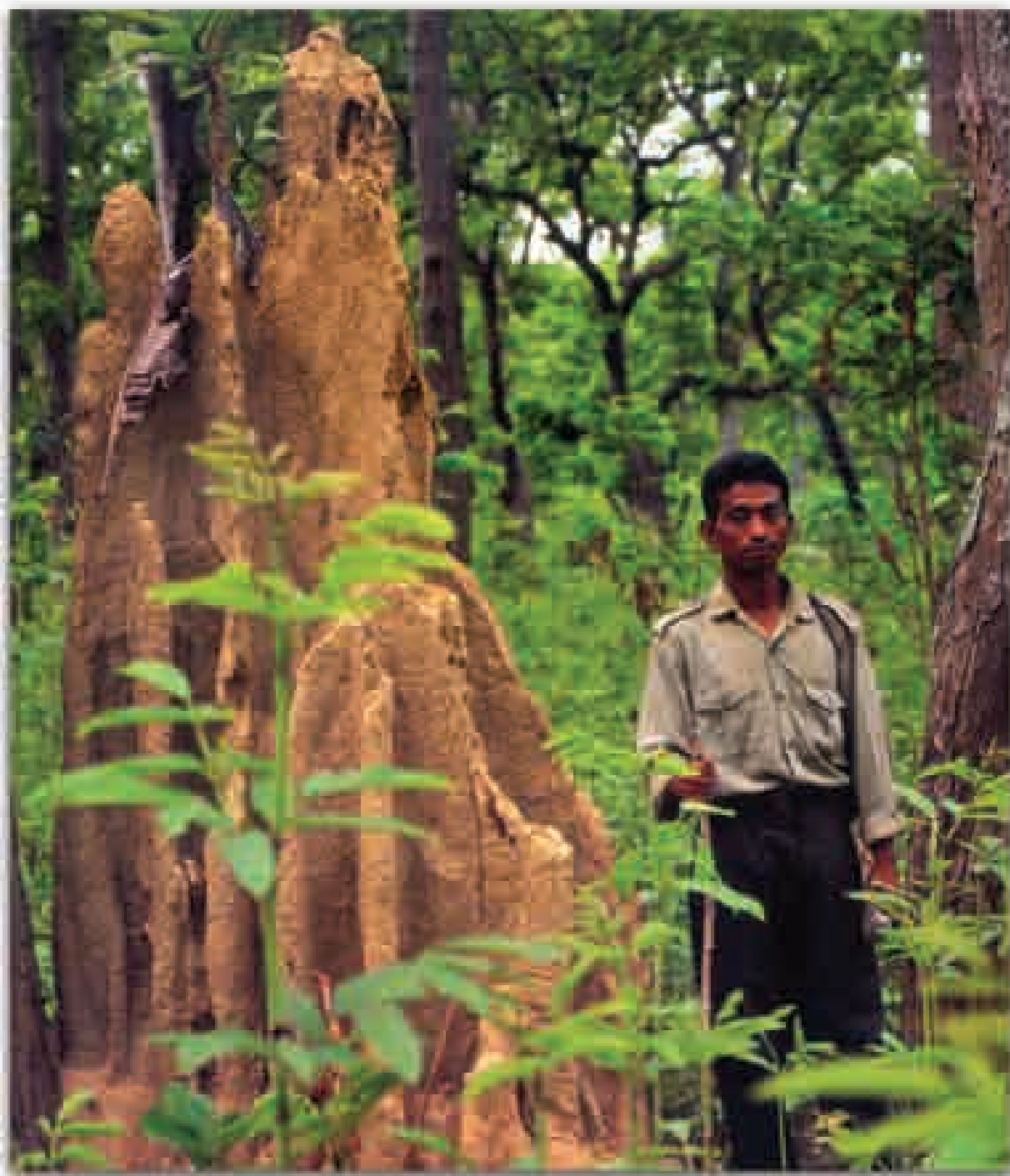
कठ–फोड़वा

हम सब जानते हैं कि कठ–फोड़वे पेड़ों के तने पर चोंच मारकर अपना घोंसला बनाते हैं। एक मुद्दा जो लोगों के ध्यान में नहीं आता वो यह कि कठ–फोड़वे अपने सिर के साथ इतनी मजबूती से खुदाई करते हैं तो भी उन्हे कभी ब्रैन हेमरेज़ क्यों नहीं होता है। कठ–फोड़वा जो करता है वह किसी मनुष्य द्वारा अपने सिर से दीवार में कील गाड़ने के बराबर है। अगर कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो उसके दिमाग पर स्ट्रॉक का हमला होगा और बाद में उसको हेमरेज़ हो जायेगा। लेकिन कठ–फोड़वा 2.10 से 2.69 मिनिट के बीच पेड़ के तने पर 38–43 बार टकठका सकता है और उसे कुछ नहीं होता क्योंकि कठ–फोड़वे के सिर की संरचना इस काम को मद्द. ॅनजर रखते हुए बनाई गई है। कठ–फोड़वे की खोपड़ी में "सस्पेन्सन" सिस्टम होता है जो स्ट्रॉक के बल को सोख लेता है और इस जोखिम को कम कर देता है। उसकी खोपड़ी में हड्डियों के बीच खास मृदु उत्तक है।179

चमगादड़ो की सॉनार सिस्टम

चमगादड घोर अंधकार में भी किसी परेशानी के बिना उड़ सकते हैं और इसके लिए उनके पास बहुत दिलचस्प मार्गनिर्देशन (ने. विगेशन) सिस्टम होता है। हम इसे "सोनार सिस्टम" कहते हैं – एक ऐसा सिस्टम जिससे आसपास के पदार्थों के आकार ध्वनि तरंगों के गूंज के मुताबिक तय किये जाते हैं।

एक जवान आदमी प्रति सैकंड 20,000 कम्पन की आवृत्ति की आवाज़ को नहीं सुन सकता है। खास प्रकार की 'सॉनार सिस्टम' से सुसज्जित चमगादड़ प्रति सैकंड 50,000 से 200,000 के बीच की कम्पन संख्या की आवृत्ति वाली आवाज़ का इस्तेमाल कर सकता है। वह प्रति सैकंड 20 या 30 बार सभी दिशाओं में इन आवाज़ को भेजता है। आवाज का आघात इतना शक्तिशाली होता है कि चमगादड़ अपने मार्ग में किसी पदार्थ का अस्तित्व को समझने के अलावा तेजी से उड़ रहे अपने शिकार की जगह भी जान लेता है।180

व्हैल

सभी जीवित प्राणियों एवं स्तनपायियों को नियमित रूप से सांस लेने की जरूरत होती है। समुद्री स्तनपायी व्हैल के श्वसन तंथा श्वसन प्रणाली ने इस प्रश्न का हल दिया गया है जो जमीन पर रहने वाले कई प्राणियों के श्वसन तंत्र के मुकाबले ज्यादा सक्षम है। व्हैल एक समय पर एक ही बार इस्तेमाल की गई 90 प्रतिशत हवा छोड़ती है। इस प्रकार, उन्हें सिर्फ लम्बे अंतराल पर सांस लेने की जरूरत होती है। इसके अलावा व्हैल के शरीर में "मायोग्लोबिन" नामक अत्यंत गाढ़ा पदार्थ होता है जो उन्हें उनकी मांसपेशियों में ऑक्सिजन के संग्रह में मदद करता है। इस सिस्टम की मदद से फिनबेक व्हैल बगैर सांस लिये 500 मीटर गहराई में और 40 मिनिट तक लगातार तैर सकती है।181 दूसरी ओर जमीन पर रहने वाले स्तनपायियों के विपरित व्हैल के नासाछिद्र उसकी पीठ पर होते है जिससे वह आसानी से सांस ले सके।

नेट (मच्छर जैसा कीट) की रचना और प्रकृति

हम नेट को हमेशा उड़ने वाला जीव मानते हैं। असल में नेट अपने विकास के चरण पानी में बीताता है और उसकी आवश्यकताओं के अनुसार अपवादरूप "डिज़ाइन" के जरिए वह पानी की गहराई में से बाहर आता है।

अपने शिकार का स्थल पता करने के लिए नेट खास सैन्सिंग सिस्टम के साथ उड़ना शुरू करता है। इस सिस्टम के साथ वह एक ऐसे लड़ाकू विमान जैसा बन जाता है जिसमें गरमी, वायु, नमी और गंध को परखने के लिए डिटैक्टर है। "तापमान के साथ अनुरूपता" के द्वारा भी इसके पास देखने की क्षमता है जो उसे घने अंधकार में भी अपने शिकार को ढूंढ़ने में मदद करता है।

नेट की "खून चूसने" की तकनीक एक अत्यंत जटिल संरचना से आती है। अपनी छह ब्लेडवाली कटिंग सिस्टम के साथ नेट त्वचा को आरी की तरह काटता है। जब कटाई की प्रक्रिया जारी होती है तब घांव पर स्त्रावित किया गया स्त्राव उत्तक को सुन्न कर देता है और आदमी को पता भी नहीं चलता है कि कोई उसका खून चूस रहा है। यह स्त्राव खून को जमने से भी रोकता है और मच्छर को खून चूसने की क्रिया जारी रखने में मदद करता है।

अगर इनमें से कोई भी तत्व उपस्थित नहीं हो तो नेट खून पर जिंदा रह नहीं पायेगा और उसकी पीढ़ियां आगे नहीं बढेंगी। अपनी अपवादरूप रचना के कारण यह जीव भी सृष्टिकर्ता की रचना का उदाहरण है। कुर्रान में मच्छर को अल्लाह के अस्तित्व का संकेत देने वाले प्राणी के रूप में पेश किया गया है :

अल्लाह इस बात से लज्जित नहीं होता कि वह कोई उपमा दे चाहे वो मच्छर की हो या उससे भी किसी तुच्छ चीज़ की। जो लोग ईमान लाए हैं वह जानते हैं कि यही सच है और उनके रब की ओर से; और जिन्होंने 'क्रुफ' किया वह कहते हैं कि ऐसी उपमा देने से अल्लाह का अभिप्राय क्या है? अल्लाह इस चीज से बहुतों को पथभ्रष्ट करता है और इससे बहुतों को मार्ग दिखाता है और इससे पथभ्रष्ट वह केवल उन्हीं लोगों को करता है जो अवज्ञाकारी होते हैं। (सुरत अल–बकारा : 26)

तीव्र दृष्टि वाले शिकारी पक्षी

शिकारी पक्षीयों की तेज़ आँखे होती हैं जिससे वे अपने शिकार पर हमला करते वक्त सुयोग्य अंतर बना सकते हैं। उनकी मोटी आँखों में अधिक मात्रा में दृष्टि कोशिकायें होती हैं जिससे उनमें उत्तम रूप से देखने की शक्ति होती है। शिकारी पक्षी की आँख में दस लाख से भी ज्यादा दृष्टि सम्बन्धित कोशिकायें होती हैं।

हजारों मीटर की ऊंचाई पर उड़ने वाले गरुड़ के पास इतनी तेज़ नज़रें होती हैं कि वे इस दूरी से पृथ्वी को सूक्ष्मता से देख सकते हैं। लडाकू विमान जिस तरह अपने लक्ष्यांको हजारों मीटर की दूरी से पहचान लेते हैं उसी तरह गरुड़ अपने शिकार को देख लेते हैं और पृथ्वी पर होने वाली सूक्ष्मतम गतिविधि को परख लेते हैं। गरुड़ की आँख में दृष्टि का कोण 300 डिग्री होता है और वह किसी भी छवि को छह से आठ गुनी बड़ी करके देख सकता है। जमीन से 4500 मीटर की ऊंचाई पर उड़ने पर गरुड 30,000 हैक्टर के विस्तार को पढ़ सकते हैं। 1500 मीटर की ऊंचाई पर वे आसानी से घास में छिपे खरगोश को देख लेते हैं। यह स्पष्ट है कि गरुड़ की आँख की यह असाधारण संरचना इस प्राणी के लिए खास बनाई गई है।

किसी ठोस सहसंबध्दता के बगैर प्रत्यक्ष ज्ञान को यथार्थ के रूप में मानने की भूल करना वास्तव में बहुत आसान है। अनेक बार हम सपनों में इस भ्रम से दोचार होते हैं जहां हम घटनाओं का अनुभव करते हैं, लोगों, पदार्थों और प्रतिवेश का अनुभव करते हैं जो बिल्कुल वास्तविक प्रतीत होते हैं। लेकिन वे सभी मात्र बोध होते हैं। इन सपनों और "वास्तविक विश्व" में कोई अंतर नहीं है, दोनों तरह के बोधों का अनुभव मस्तिष्क में होता है।

शीतनिद्रा की खूबी वाले प्राणी

वातावरण में ठंड के कारण तापमान में जो गिरावट आती है उतनी ही गिरावट शरीर के तापमान में होने पर भी शीतनिष्क्रिय (हाइबरनेटिंग) प्राणी जिंदा रह सकते हैं। वे इस प्रकार का करिश्मा कैसे कर पाते हैं?

स्तनपायी गर्म खूनवाले होते हैं। इसका अर्थ है कि सामान्य परिस्थितियों के तहत उनके शरीर का तापमान हमेशा स्थायी रहता है क्योंकि उनके शरीर में प्राकृतिक थर्मोस्टेट होता है जो उनके तापमान का नियमन करता है। हालांकि, शीतनिष्क्रियता के दौरान छोटे स्तनपायीयों के शरीर की सामान्य गर्मी का पारा (जैसे शरीर के 40 डिग्री सामान्य तापमान वाली गिलहरी) हिमांक से थोड़ा कम तक गिर जाता है जैसे कि उसे किसी चाबी से सैट किया गया हो। शरीर का उपापचयी प्रक्रिया के दर में भारी मात्रा में कमी आ जाती है। प्राणी बहुत धीरे–से सांस लेता है और उसकी धड़कनें प्रति मिनिट 300 से गिरकर 7–10 हो जाती है। उसके शरीर की सामान्य हलचल बंद हो जाती है और उसके मस्तिष्क की इलेक्ट्रिकल गतिविधि लगभग महसूस न होने की हद तक कम हो जाती है।

गतिहीन पड़े रहने पर एक खतरा यह है कि बहुत ठंडे तापमान में शरीर के ऊत्तक ठिठुर जाते हैं और बर्फ के स्फटिक द्वारा उनके टूटने की संभावना रहती है। लेकिन विशिष्ट लक्षणों से सुसज्जित होने के कारण शीतनिष्क्रिय प्राणी को इस जोखिम के सामने रक्षण मिलता है। शीतनिष्क्रिय प्राणियों के शरीर के तरल पदार्थ बड़े आण्विक आकार वाले रासायनिक पदार्थों द्वारा सुरक्षित रखे जाते है। इस तरह उनका हिमांक बिन्दु कम होता है और किसी भी हानि से उन्हें रक्षण मिलता है।182

इलेक्ट्रिकल मछली

इलेक्ट्रिक ईल और इलेक्ट्रिकरे जैसी विशिष्ट प्रकार की मछलियां उनके शरीर में पैदा होने वाली बिजली से अपने दुश्मनों से खुद का बचाव करती हैं या अपने शिकार को निष्क्रिय कर देते हैं। मनुष्य समेत सभी सजीवों में थोड़ी–बहुत बिजली होती है। हालांकि, मनुष्य इस बिजली को निर्देशित नहीं कर सकता या अपने खुद के लाभ के लिए इसका उपयोग नहीं कर सकता है। अभी हमने जिन मछलियों की बात की उनके शरीर में 500–600 वॉल्ट का इलेक्ट्रिकल करंट होता है और वे यह करंट अपने दुश्मनों के सामने इस्तेमाल कर सकती हैं। इसके अलावा, वे खुद इस बिजली के विपरीत असर का शिकार नहीं होती हैं।

अपनी रक्षा के लिए वे जो ऊर्जा को खर्च करती हैं उसकी आपूर्ति कुछ समय बाद बैटरी को चार्ज करने बराबर होती है और बाद में वे फिर से इस विद्युत शक्ति का प्रयोग करने के लिए तैयार हो जाते हैं। मछली सिर्फ संरक्षण के लिए ही अपने छोटे शरीर में इतनी हाई–वॉल्टेज विद्युत का प्रयोग नहीं करती हैं। गहरे पानी के अन्धकार में अपना रास्ता ढूंढ़ने के अलावा यह विद्युत उन्हें कई पदार्थ देखे बगैर महसूस करने की शक्ति देती है। ठोस पदार्थों से टकराने के बाद यह इलेक्ट्रिकल सिग्नल फिर से पलटते हैं और यह रिफ्लेक्शन मछली को पदार्थ के बारे में जानकारी देते हैं। इस प्रकार से मछली पदार्थ से दूरी और आकार का पता लगा लेती है।

मकडी का धागा

डिनोपीस नामक मकडी के पास शिकार की असाधारण निपुणता होती है. एक स्थायी जाला बुनने और उसमें शिकार के फंसने का इंतजार कर बैठे रहने के वजाय यह मकडी एक छोटा किंतु अत्यंत असाधारण जाला बुनती है जो वह अपने शिकार पर फेंकती है. इसके बाद वह अपने शिकार को इस जाले से मजबूती से जकड लेती है. अंदर फसा जंतु अपने को छुडाने के लिए कुछ नहीं कर सकता है. जाला इतने उत्तम तरीके से बुना गया है कि जंतु छूटने की जितनी कोशिश करता है उतना वह और भी फंस जाता है. अपनी खुराक का संग्रह करने के लिए मकडी अपने शिकार को अतिरिक्त धागो से बांधता है जैसे वह कोई पैकिंग करता हो.

अपनी मेकेनिकल डिज़ाइन और रासायणिक संरचना में इतना परफैक्ट जाला यह मकडी कैसे बुन सकती है? जैसा कि इवोल्युशनिस्टस दावा कर रहे है उस प्रकार संयोग से इस मकडी ने यह निपुणता हांसल की होगी यह धारणा असंभव है. मकडी के पास सीखने की या याद रखने की सुविधा नहीं है और यह चीज़े करने के लिए कोई दिमाग भी नहीं है. यह साफ बात है कि मकडी को उसके बनानेवाले ने यह निपुणता दी है – वो अल्लाह जो सर्वशक्तिमान है.

मकडी के धागे में कई महत्वपूर्ण चमत्कार छिपे है. एक मिलीमीटर के हजारवें भाग से भी कम व्यासवाला यह धागा इतनी ही मोटाईवाले स्टील के तार से पाँच गुना ज्यादा मजबूत है. इस धागे का अन्य लक्षण यह है कि वो वजन में बहुत हल्का है. पूरी दुनिया को घेरने के लिए जितना लंबा धागा चाहिए वह वजन में सिर्फ 320 ग्राम होगा.' औद्योगिक कामो के लिए जिसका खास उत्पादन किया जाता है वह स्टील मनु य द्वारा उत्पादित किये गये सब से मजबूत पदार्थो में से एक है. हालांकि, मकडी अपने रीर में जो धागा बनाती है वह स्टील से कई गुना ज्यादा ताकतवर है. मनु य जब स्टील बनाता है तो अपने सदीयों पुराने ज्ञान और टैकनोलज़ि का उपयोग करता है; तो फिर मकडी अपना धागा बनाते वक्त कौन से ज्ञान या टैकनोलज़ि का इस्तेमाल करती है?

जैसा के हम देख सकते है, मनु य जाति के लिए उपलब्ध सभी टैकनोलोज़िकल और तकनीकी साधन मकडी के कौशल्य के सामने कुछ भी नहीं है.

;'द्व "द स्ट्रक्चर एंड प्रोपर्टीज़ ऑफ स्पाइडर सिल्क", एन्डेवर, जनवरी 1986, वॉल्युम 10, पृ.37–43

प्राणियों को दी गई एक अद्‌भुत योजना : कैमफ्लाज़ (छदमावरण या भेष बदल कर अपने आप को छुपाना)

जिंदा रहने के लिए प्राणियों को जो लक्षण दिये गये है उनमें से एक है खुद को छिपाने की कला – याने "कैमफ्लाज़" दो मुख्य कारणों की वज़ह से प्राणियों को अपने आप को छिपाने की जरूरत पड़ती है : एक तो शिकार के लिए और दूसरा अपने आपको शिक. ारियों से बचाने के लिए। संपूर्ण बुद्धिमानी, निपुणता, सौन्दर्यशास्त्र और सामजंस्य की वजह से कैमफ्लाज़ अन्य सभी रीतों से अलग पड़ता है।

प्राणियों की कैमफ्लाज़ तकनीक सचमुच आश्चर्यजनक है। पेड़ के तने पर या पत्ते के नीचे छिपे हुए जंतु को पहचानना लगभग असंभव हो जाता है।

पौधों के रस को चूसने वाला लीफ लाउज़ कंटक का वेश बनाकर पौधों की टहनियों पर निर्भर रहते हैं। इस पद्धत्ति द्वारा वे पक्षियों को मूर्ख बनाते हैं जो उनके सबसे बड़े दुश्मन हैं। कंटक का रूप लेने से पक्षी इन पौधों पर नहीं आते हैं।

डाल पर छिपी हुई एक छिपकली (उपर बायें), पेड की तह पर छिपा एक पतंगा (उपर दाये), डाल पर बिठा हुआ एक ऊल्लु (नीचे बायें) और पत्तो में गायब हो गये मैन्टिस (नीचे दाये).

कटलफिश (समुद्रफेनी)

समुद्रफेनी की त्वचा के नीचे क्रोमेटोफोर के नाम से जाने जाने वाले लचीले रंग द्रव्यों का कोश होता है। वे पीले, लाल, काले और भूरे रंग के होते हैं। सिग्नल पाने पर कोशिकाओं का विस्तरण होता है और त्वचा में योग्य रंग की छाया का प्रसार होता है। इस तरह से समुद्रफेनी जिस पत्थर पर होती है उसका रंग धारण कर लेती है और एक आदर्श कैमफ्लाज़ का उदाहरण पेश करती है।

यह व्यवस्था इतनी कारगर सिद्ध हुई है कि समुद्रफेनी ज़ेब्रा जैसी जटिल पट्टियां भी बना सकती हैं।184

दृष्टि के लिए विविध व्यवस्थाएं

समुद्र में रहने वाले कई प्राणियों के लिए शिकार और स्वरक्षण के लिए देखना बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। समुद्र में रहने वाले ज्यादातर प्राणी ऐसी आँखो से सुसज्जित होते हैं जो पानी में देखने के लिए अनुकूल होती हैं।

पानी की गहराई जितनी बढ़ती जाती है (विशेषत : 30 मीटर के बाद) उतनी देखने की क्षमता कम होती चली जाती है। हालांकि, इतनी गहराई में रहने वाले प्राणियों की अपनी परिस्थितियों के मुताबिक आँखे होती हैं।

जमीन पर रहने वाले प्राणियों से विपरीत समुद्र में रहने वाले प्राणियों की आँखों में गोलाकार लैन्स होते हैं जो पानी के घनत्त्व की जरूरतों से सुसंगत है। जमीन पर रहने वाले प्राणियों की बड़ी अण्डाकार आँखों की तुलना में यह गोलाकार संरचना गहरे पानी में देखने के लिए ज्यादा अनुकूल है और वो पदार्थों को नजदीक से देख सकते है। जब दूरी से किसी पदार्थ पर ध्यान केन्द्रित किया जाता है तब लैन्स का पूरा सिस्टम आँखो में मौजूद खास ऊत्तक की मदद से पीछे हटता है।

मछलियों की आँखें क्यों गोलाकार हैं इसका अन्य कारण पानी में प्रकाश का अपवर्तन (रिफ्रैक्शन) है। आँखों में जो तरल द्रव्य भरा होता है उसका घनत्व लगभग पानी जितना ही होता है इसलिए जब बाहर बनी छवि का आँखो पर परावर्तन (रिफ्लैक्शन) होता है तब अपवर्तन बिल्कुल नहीं होता है। इसके परिणामस्वरूप, आँख का लैन्स बाहरी पदार्थ की छवि को रैटिना पर फॉकस करता है। मनुष्य की तुलना में मछली पानी में बहुत अच्छी तरह देख सकती है।

ऑक्टोपस जैसे कुछ प्राणियों की आँखें बड़ी होती हैं जिससे पानी की गहराई में कम प्रकाश के सामने उन्हें लाभ मिलता है। 300 मीटर से ज्यादा गहराई में बड़ी आंखों वाली मछली को अपने आसपास के जीवों को देखने के लिए उनकी दमक को पकड़ना जरूरी है। पानी को चीरते हुए नीले रंग के धुँधले प्रकाश के प्रति यह मछली खास प्रकार से संवेदनशील हो यह जरूरी है। यही कारण है कि उनकी रैटिना में विपुल मात्रा में संवेदनशील नीली कोशिकायें मौजूद होती हैं।

इन उदाहरणों से जैसा कि हम समझ सकते हैं कि हर सजीव के पास विशेष प्रकार की आंखें होती हैं जो उनकी विशिष्ट जरूरतों को पूरा करती हैं। यह हकीकत साबित करती है कि वे आज जैसे हैं बिल्कुल उसी प्रकार से उन्हें सृष्टिकर्ता ने बनाया था जिसके पास अनंत बुद्धिमानी, ज्ञान और शक्ति है।

विशेष हिमीकरण की व्यवस्था (फ्रीज़िंग सिस्टम)

फ्रॉज़न मेंढक अपने पास असाधारण जैविक संरचना रखता है। वह जीवन के कोई संकेत नहीं दिखाता है। उसकी धड़कनें, साँसें और रक्त का अभिसरण बिल्कुल स्थगित हो गये होते हैं। जब बर्फ पिघलती है तब यही मेंढ़क सक्रिय स्थिति में लौट आता है जैसे कि अचानक वह लम्बी नींद में से उठा हो।

सामान्यतः हिमीकरण की अवस्था में सजीव पर कई खतरे मंडराते रहते हैं। हालांकि, मेंढ़क को इनमें से किसी जोखिम का सामना नहीं करना पड़ता है। इस स्थिति में उसके शरीर में विपुल मात्रा में ग्लुकॉज़ का पैदा होना उसका मुख्य लक्षण है। मधुमेह के किसी रोगी की तरह इस मेंढ़क के रक्त में शर्करा का स्तर बहुत ऊंचा चला जाता है। कभी–कभी यह स्तर 550 मिलीमोल प्रति लिटर तक पहुँचता है। (यह आँकड़ा सामान्यतः मेंढ़क के लिए 1–5 मिलीमोल प्रति लिटर और मानव शरीर के लिए 4–5 मिलीमोल प्रति लिटर होता है)। ग्लुकोज़ की यह इतनी भारी सान्द्रता सामान्य परिस्थितियो में गंभीर समस्याएं पैदा कर सकती हैं।

फ्रॉज़न मेंढ़क में ग्लुकोज़ की भारी मात्रा पानी को कोशिकाओं से बाहर निकलने नहीं देती है और संकुचन को रोकती है। मेंढ़क की कोशिका की झिल्ली ग्लुकोज़ के आसान प्रवेश के लिए बेहद अनुकूल होती है जिसके कारण ग्लुकोज़ आसानी से कोशिका में पहुँच जाता है। शरीर में ग्लुकोज़ का उच्च स्तर तापमान में गिरावट लाता है और इस मेंढ़क के अंदरूनी शरीर में मौजूद तरल पदार्थ बहुत कम मात्रा को ठण्ड के दौरान बर्फ में तब्दील होते देते हैं। शोध से पता चला है कि ग्लुकोज़ जमी हुई कोशिकाओं को भी खुराक दे सकता है। इस दौरान ग्लुकोज़ शरीर के लिए कुदरती ईंधन के रूप में काम करने के अलावा यूरिया संश्लेषण जैसी उपापचयी की कई क्रियाओं पर रोक

लगाता है जिससे कोशिकाओं के भोजन के स्त्रोत में कमी नहीं आती है। मेंढ़क के शरीर में अचानक ग्लुकोज़ की इतनी भारी मात्रा कहां से आयी? जवाब बहुत दिलचस्प है : इस काम के लिए इस सजीव को बहुत खास सिस्टम से लैस किया गया है। त्वचा पर जैसे ही बर्फ जमती है, मेंढक के यकृत (लीवर) को एक संदेश पहुँचता है जिसके द्वारा यकृत शरीर में संग्रहित ग्लायकोज़न को ग्लुकोज़ में परिवर्तित करता है। यकृत में यह संदेश कैसे पहुंचता है और उसका स्वरूप क्या है इसका पता आज तक नहीं चल पाया है। यह संदेश मिलने के पांच मिनिट बाद रक्त में शर्करा का स्तर बढ़ने लगता है।185

प्राणी को जब आवश्यक हो तब उसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसके उपापचय को पूर्ण रूप से बदलने वाली व्यवस्था सिर्फ सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता की त्रुटिरहित योजना से ही संभव हो सकती है। इतनी आदर्श और जटिल व्यवस्था किसी भी संयोग से पैदा नहीं हो सकती है।

ॲल्बेट्रोस

उड़ने की विधियों" का भिन्न प्रकार से उपयोग करके प्रवासी पक्षी अपनी ऊर्जा के व्यय पर रोक लगाते हैं। ॲल्बेट्रोस भी उड़ने की ऐसी ही एक विधि अपनाते हैं। अपने जीवन का 92: हिस्सा समुद्र पर बिताने वाले इस पक्षी के पँख 3.5 मीटर तक फैलते हैं। आल्बाट्रोस की ऊड़ान का एक महत्त्वपूर्ण लक्षण यह है कि वे अपने पँख को फड़फड़ाये बगैर घंटों तक उड़ सकते हैं। ऐसा करने के लिए वे पवन का उपयोग करके अपने पंख स्थिर अवस्था में रखकर हवा में बहते जाते हैं।

3.5 मीटर के फैलाव वाले पँख को लगातार खुले रखने में भारी मात्रा में ऊर्जा की जरूरत पड़ती है। हालांकि, अल्बेट्रोस घंटों तक इस स्थिति में रह सकते हैं। यह इनकी विशिष्ट शरीर रचना का कमाल है जो उन्हें जन्म के क्षण से ही मिली होती है। उड़ने के दौरान आल्बाट्रोस के पंख बंद हो जाते हैं। इसलिए उन्हें मांसपेशियों का इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं होती है। सिर्फ मांसपेशियों के स्तरों द्वारा उनके पंख को लिफ्ट मिलती है। इससे अपनी उड़ान के दौरान अल्बेट्रोस को बहुत मदद मिलती है। अपने पँख न फड़फड़ाने की वजह से या पंख फैले हुए रखने में ऊर्जा का व्यय नहीं होता है। पंख का यह खास उपयोग करने के कारण आल्बेट्रोस को असीमित ऊर्जा स्त्रोत मिलता है। उदाहरण के तौर पर 1000 किलोमीटर के सफर में 10 किलोग्राम वजन का आल्बाट्रोस अपने शरीर के वजन का सिर्फ 1 प्रतिशत गंवाता है। यह सचमुच बहुत कम व्यय है। अल्बेट्रोस को एक मॉडल के रूप में लेकर और उनके उड़ने की अदभुत तकनीक का इस्तेमाल कर मनुष्य ने ग्लाइडर्स बनाये हैं।186

एक कठिन प्रवासन

पैसिफिक सामन (एक प्रकार की खाने योग्य मछली) का नदी में प्रजनन और अंडे सेने के लिए वापस लौटना उसकी एक असाधारण विशेषता है। अपने जीवन का कुछ हिस्सा समुद्र में बिताने के बाद यह प्राणी प्रजनन के लिए ताजे पानी में लौटते हैं।

गर्मी के दिनों की शुरूआत में अपना सफर शुरू करते वक्त सामना का रंग चमकीला लाल होता है। सफर के अंतिम भाग में यह रंग काला होने लगती है। अपने प्रवासन के प्रारंभ में वे पहले किनारे के पास चली आती है और फिर नदियों में पहुं. चने का प्रयास करती है। अपने जन्मस्थल पर वापस जाने के लिए वे कठिन परिश्रम करते हैं। तूफानी नदियों में कूदकर, पानी की धारा से विरुद्ध दिशा में तैरकर, जलप्रपात और बाँध को पार करते हुए वे उस जगह पहुँचते हैं जहां उन्होंने अण्डे सेने होते हैं। 3500–4000 किलोमीटर लम्बे इस सफर के अंत में मादा सामन के पास अण्डे तैयार होते है जिस तरह नर के पास शुक्राणु मौजूद होते हैं। सेने की जगह पर पहुँचने के बाद मादा सामन 3 से 5 हजार अण्डे देती है जब कि नर उनका फलन करते हैं। इस प्रवासन और अण्डे सेने के काल के फलस्वरूप मछलियों को बहुत हानि पहुँचती है। अण्डे देने वाली मादायें थक जाती हैं; उनके मीनपक्ष आकार में घट जाते हैं और उनकी त्वचा काली हो जाती है। नर मछलियों पर भी यही बात लागु होती है। थोड़े समय में नदियां मरी हुई सामन मछलियों से छलकने लगती हैं। फिर भी सामन की एक और पीढ़ी अण्डे सेने के लिए और वही सफर को पूरा करने के लिए तैयार रहती है।

सामन इतने कठिन सफर को कैसे पूरा करते हैं, अण्डे सेने के बाद वे कैसे समुद्र में पहुँचते हैं और वे अपना रास्ता कैसे ढूंढते हैं – इन सब प्रश्नों के जवाब मिलने बाकी हैं। इसके लिए कई अटकलें की जा चुकी हैं लेकिन इन प्रश्नों का कोई
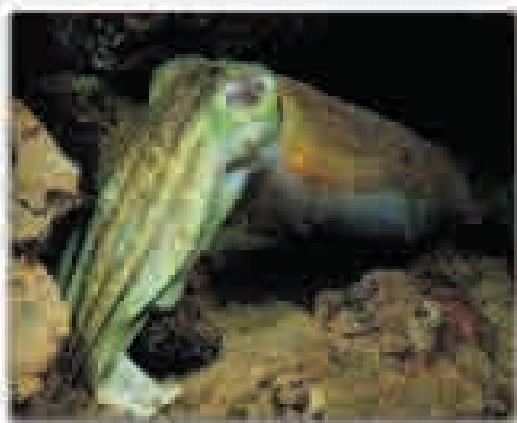
बायें: अपने आप को रेत की सतह से मिलानेवाली कटलफिश. दायें: खतरे का संकेत मिलने पर (जैसे किसी गोताखोर द्वारा दिखे जाने पर) यही मछली चमक. ीला पीला रंग धारण करती है.

उचित जवाब नहीं मिला है। वो कौन–सी शक्ति है जो सामन को एक ऐसी जगह पर वापस लौटने के लिए प्रेरित करती है जिससे वे बिल्कुल परिचित नहीं है? यह स्पष्ट है कि कोई उच्चतम इच्छाशक्ति का इन सब सजीवों पर नियंत्रण है। यह शक्ति अल्लाह है जो सभी दुनियाओ का पालनहार है।

कोआला

गन्धसफ़ेदा के पत्तों में जो तेल होता है वो कई स्तनपायी प्राणियों के लिए ज़हरीला होता है। यह ज़हर गन्धसफ़ेदा के पेड़ द्वारा अपने दुश्मनों के विरुद्ध उपयोग किये जाने वाली रासायनिक संरक्षण व्यवस्था जैसा है। फिर भी एक ऐसा विशिष्ट प्राणी है जो इस व्यवस्था के अनुकूल होकर गन्धसफ़ेदा के ज़हरीले पत्तो पर निर्भर रहकर जीवन व्यतीत करते हैं – इस प्राणी का नाम कोआला है जो एक मार्सुपियल वर्ग का प्राणी है। कोआला अपना घर गन्धसफ़ेदा के पेड़ पर ही बनाते हैं और वे भोजन और पानी भी वहीं से पाते हैं।

अन्य स्तनपायीओं की तरह कोआला पेड़ो में मौजूद सेल्युलोज़ को पचा नहीं सकते हैं। इसके लिए वे सेल्युलोज़ का पाचन करने वाले सूक्ष्म जीवों पर निर्भर होते हैं। यह सूक्ष्म जीव छोटी और बड़ी अंतड़ी के संगम स्थान याने उण्डुक (सीकम) पर भारी तादात में मौजूद होते हैं। उण्डुक आन्त्र व्यवस्था के पिछले भाग का विस्तृत हुआ एक अंग है। उण्डुक कोआला की पाचन व्यवस्था का सबसे दिलचस्प हिस्सा है। यह हिस्सा किण्वन (फर्मेन्टेशन) के चैम्बर की तरह काम करता है जहां सूक्ष्म जीव सेल्युलोज़ का पाचन करते हैं और उतने समय के लिए पत्तों के गुजरने की क्रिया में विलम्ब होता है। इस तरह, कोआला गन्धसफ़ेदा के पत्तों में तेल के ज़हरीले प्रभाव को निष्क्रिय कर सकते हैं।187

एक ही जगह पर रहते हुए शिकार करने की क्षमता

दक्षिण अफ्रिका में पाया जाने वाला सनड्यु पौधा अपने चिपचिपे बालों से जंतुओ को पकड़ लेता है। इस पौधे के पत्ते लम्बे, लाल बालों से भरपूर होते हैं। इन बालों की नोक पर एक द्रव्य का आवरण होता है जिसकी खुश्बू से जंतु आकर्षित होते हैं। इस द्रव्य का एक और लक्षण यह है कि ये बहुत ज़हरीला होता है। सुगन्ध के स्रोत की तरफ का रास्ता पकड़ने वाला कीट इसके ज़हरीले बालों में फंस जाता है। थोड़े समय में पूरा पत्ता बंद हो जाता है और फंसा हुआ कीट कैद हो जाता है और यह पौधा जंतु को पचाकर अपने विकास के लिए आवश्यक प्रोटीन निचोड़ लेता है।188

जिस पौधे में अपनी जगह से हिलने की क्षमता नहीं होती उस पौधे के पास ऐसी असाधारण विशेषता होना किसी विशिष्ट रचना का स्पष्ट संकेत है। अपनी खुद की चेतना से या इच्छा से या किसी संयोग से शिकार करने की ऐसी आदत डालना इस पौधे के लिए असंभव है। इसलिए इस पौधे को ऐसी शक्ति देने वाले सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और शक्ति को नकारना और भी असंभव है।

पक्षी के पिच्छ की रचना

पहली नजर में पक्षी के पिच्छ की संरचना बहुत आसान दिखाई देती है. जब हम उन्हे गौर से देखे तो हमे पिच्छ की बहुत जटिल संरचना का परिचय होता है जो जटिल होने के बावजूद वजन में हलके और साथ–साथ अत्यंत मजबूत और जल–अवरोधक है.

आकाश में उडने के लिए पक्षी का वजन हो सके उतना कम होना चाहिए. इसी जरूरत को पूरा करने के लिए उनके पिच्छ कैराटिन नामक प्रोटीन में से बने होते है. पिच्छ की डंडी की दोनो ओर नसें होती है और हर नस पर लगभग 400 छोटे पिच्छक या हूक्स होते है. हर पिच्छक पर दो एसा करके इन 400 पिच्छक पर कुल 800 और भी छोटे पिच्छक होते है. पक्षी के छोटे पिच्छ पर जुटे हुए इन 800 पिच्छक में से जो अग्र भाग पर मौजूद होते है उन सभी पिच्छक पर 20 अन्य पिच्छक हाज़िर होते है. यह पिच्छक दो पिच्छ को एकदूसरे से इस तरह बांधते है जैसे किसी कपडे के दो टुकडो को एक दूसरे पर रखकर तरुपा गया हो. एक पिच्छ में करीब 30 करोड छोटे पिच्छक होते है. एक पक्षी के सभी पिच्छ में मौजूद कुल पिच्छक की संख्या लगभग 700 अरब होती है.

पक्षी के पिच्छ को एकदूसरे के साथ मजबूती से जोडनेवाले पिच्छक और बकलस की जटिल संरचना का एक महत्वपूर्ण कार्य है. पक्षी जब ऊडते है तब यह पिच्छ उसके ारीर पर से गिरने नहीं चाहिए या अलग नहीं होने चाहिए या घिसने नहीं चाहिए. पिच्छक और बकलस की बनी इस व्यवस्था के कारण पिच्छ पक्षी के ारीर पर इतनी मज़बूती से जुडे हुए होते है कि जोरदार पवन या भारी बारिश या हिमपात से भी यह पिच्छ गिरते नहीं है और उसकी समतल सतह को तोड नहीं सकते है.

इसके अलावा, पक्षी के पेट पर जो पिच्छ होते है वे पँख और पूँछ पर मौजूद पिच्छ से अलग होते है. पूँछ ज्यादा बडे पिच्छ की बनी होती है जिससे वह पतवार और ब्रैक जैसा काम कर सके; पँख के पिच्छ की रचना इस तरह होती है जिस से पक्षी जब पँख फडफडाये तब पँख का फैलाव बढता है और उसे ज्यादा लिफ्ट मिलती है.
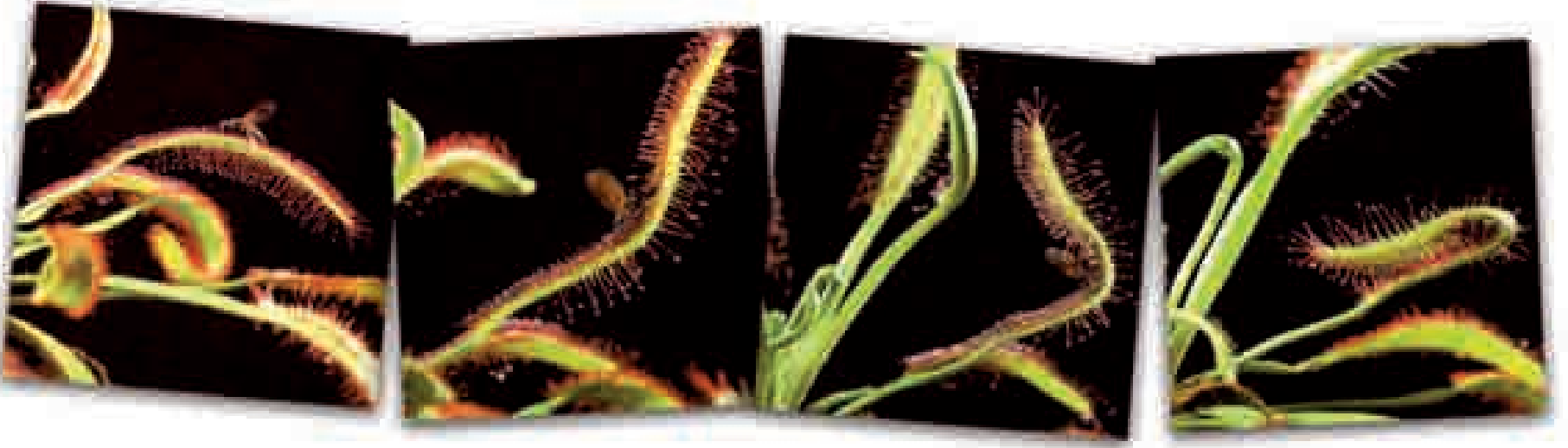
बायें: सनड्यु का खुला हुआ पौधा. दायें; बंद हुआ पौधा

पक्षी के पंख की रचना

पहली नजर में पक्षी के पंख की संरचना बहुत आसान दिखाई देती है। जब हम उन्हें गौर से देखें तो हमे उनकी बहुत जटिल सं. रचना का पता चलता है जो जटिल होने के बावजूद वजन में हलके और साथ–साथ अत्यंत मजबूत और जल–अवरोधक हैं।

आसानी से उड़ने के लिए पक्षी का भार जितना कम हो सके उतना ही अच्छा है। इसी जरूरत को पूरा करने के लिए उनके पंख कैराटिन नामक प्रोटीन में से बने होते हैं। पंख की डंडी के दोनों ओर नसें होती हैं और हर नस पर लगभग 400 छोटे बार्ब (पंख) होते हैं। हर बार्ब पर ऐसे दो–दो यानी 800 बार्ब और भी छोटे बार्ब होते हैं। पक्षी के छोटे बार्ब पर जुटे हुए इन 800 बार्ब में से जो अग्र भाग पर मौजूद होते हैं उन सभी बार्ब पर 20 अन्य बार्ब उपस्थित होते हैं। यह बार्ब दो बार्ब को एक–दूसरे से इस तरह बांधते हैं जैसे किसी कपड़े के दो टुकड़ो को एक–दूसरे पर रखकर तुरुपा गया हो। एक पंख में करीब 30 करोड़ छोटे पंख (बार्ब) होते हैं। एक पक्षी के सभी पंखों में मौजूद कुल बार्ब की संख्या लगभग 700 अरब होती है।

पक्षी के पंखों में बार्ब और बकलस एकदूसरे के साथ बहुत मजबूती से जुड़े हुए होने का कारण यह है कि पक्षी की किसी भी प्रकार की गतिविधि से पंख उसके शरीर से गिरने नहीं चाहिए। बार्ब और बकलस की बनी इस व्यवस्था के कारण पंख पक्षी के शरीर पर इतनी मज़बूती से जुड़े हुए होते हैं कि जोरदार पवन या भारी बारिश या हिमपात से भी यह पंख गिरते नहीं हैं।

इसके अलावा, पक्षी के पेट पर जो पंख होते हैं वे पूंछ पर मौजूद पंख से अलग होते हैं। पूंछ ज्यादा बड़े पंखों की बनी होती है जिससे वह पतवार और ब्रैक (रुकावट) जैसा काम कर सके; परों के पंखों की रचना इस तरह होती है कि पक्षी जब पंख फड़फड़ाये तब पंख का फैलाव बढ़ता है और उसे अधिक ऊपर उठाने वाला बल मिलता है।.

बासिलिस्क (अमरिकी गिरगिट) : पानी पर चलने में निपुण

बहुत कम प्राणी पानी की सतह पर चल पाते हैं। एक ऐसा दुर्लभ उदाहरण है बासिलिस्क, जो मध्य अमेरिका में पाया जाता है। बासिलिस्क के पिछले पैरों की उंगलियों के सभी ओर फ्लैप होते हैं जिसकी वजह से वे पानी को हटाते हुए आगे बढ़ सकते हैं। जब यह प्राणी जमीन पर चलता है तब यह फ्लैप ऊपर लिपट जाते हैं। जब यह प्राणी किसी खतरे का सामना करता है तब वह नदी या सरोवर की सतह पर तेजी से भागना शुरू कर देता है। फिर उसके पिछले पैरों पर मौजूद फ्लैप खुलते हैं और इससे पानी पर दौड़ने के लिए उन्हें ज्यादा सतही क्षेत्र मिलता है।189

बासिलिक की यह अनोखी रचना अल्लाह की रचना के आदर्श और दोषहीन कई संकेतो में से एक है।

बेसिलिक छिपकली उन दुर्लभ प्राणीयो में से एक है जो पानी और हवा के बीच सन्तुलन बनाये हुए चल सकती है.

प्रकाशसंश्लेषण

धरती को जीवन के अनुकूल बनाने में पौधे निःसंदेह बड़ी भूमिक निभाते हैं। वे हमारे लिए हवा साफ करते हैं, पृथ्वी का तापमान समान स्तर पर बनाये रखते हैं और वातावरण में गैसों के अनुपात को संतुलित रखते हैं। हम जो ऑक्सिजन लेते है वह पौधों द्वारा पैदा किया जाता है। हमारे भोजन का आवश्यक हिस्सा भी पौधों से ही मिलता है। पौधों का पौषणिक मूल्य उनकी कोशिका की विशिष्ट रचना में से आता है जिसे उनके और भी कई पहलुओं के लिए श्रेय दिया जाता है।

मनुष्य और प्राणियों की कोशिकाओं की तुलना में पौधों की कोशिका सूर्य ऊर्जा का सीधा उपयोग कर सकती है। वह सूर्य ऊर्जा को रासायनिक ऊर्जा में रूपांतरित करती है और बहुत विशिष्ट प्रणाली से उसे पोषक तत्वों में संग्रहित करती है। इस प्रक्रिया को "प्रक. ाशसंश्लेषण" कहा जाता है। वास्तव में यह प्रक्रिया कार्यान्वन कोशिका के द्वारा नहीं बल्कि 'क्लोरोप्लास' के द्वारा होता है। क्लोरोप्लास कोशिका का वह जैविक पदार्थ होता है। जिससे पौधों को हरा रंग मिलता है। सिर्फ माइक्रोस्कोप से दिखाई देने वाली यह सूक्ष्म हरी संरचना पृथ्वी पर मौजूद अद्वितीय प्रयोगशालायें है जो सूर्य ऊर्जा को ऑर्गेनिक पदार्थ में संग्रहित करने में सक्षम हैं।

पृथ्वी पर पौधों द्वारा पैदा किये जाने वाले पदार्थ की मात्रा प्रति वर्ष 200 अरब टन होती है। यह उत्पादन पृथ्वी पर जीवित सभी चीज़ों के लिए आवश्यक है। अत्यंत जटिल रासायनिक प्रक्रियाओं के जरिए पौधों का यह उत्पादन संभव होता है। क्लोरोप्लास्ट में पाये जाने वाले हजारों "क्लोरोफिल" रंगद्रव्य आश्चर्यजनक तरीके से बहुत ही कम समय में (सैकंड के हजारवें हिस्से जितने कम समय में) प्रकाश के सामने प्रतिक्रिया करते है। यही कारण है कि क्लोरोफिल में होने वाली कई प्रक्रिया का आज तक अवलोकन नहीं किया जा सका है।

सौर ऊर्जा को विद्युत या रासायनिक ऊर्जा में रूपांतरित करना हाल ही में मिली एक तकनीकी उपलब्धि है। यह करने के लिए हाईटैक साधनों का इस्तेमाल किया जाता है। खुली मानव आँख से जिसे नहीं देखा जा सकता वैसी पौधे की कोशिका लाखों करोड़ो सालों से यह काम करती आ रही है।

यह आदर्श तंत्र हमें फिर से सृजन के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है। प्रकाश संश्लेषण एक बहुत ही जटिल प्रक्रिया है जो अल्लाह द्वारा बनाई गई ऐसी व्यवस्था है जिसकी रचना पूरी जागृति के साथ की गई है। पत्तों में अत्यंत सूक्ष्म इकाई में एक बेजोड़ और लाजवाब फैक्टरी दबी हुई है। यह दोषरहित रचना जो कई संकेतो में से एक है हमें बताती है कि सभी संसारों का नियंत्रण करने वाला अल्लाह सभी सजीव वस्तुओं का सृजन करता है।
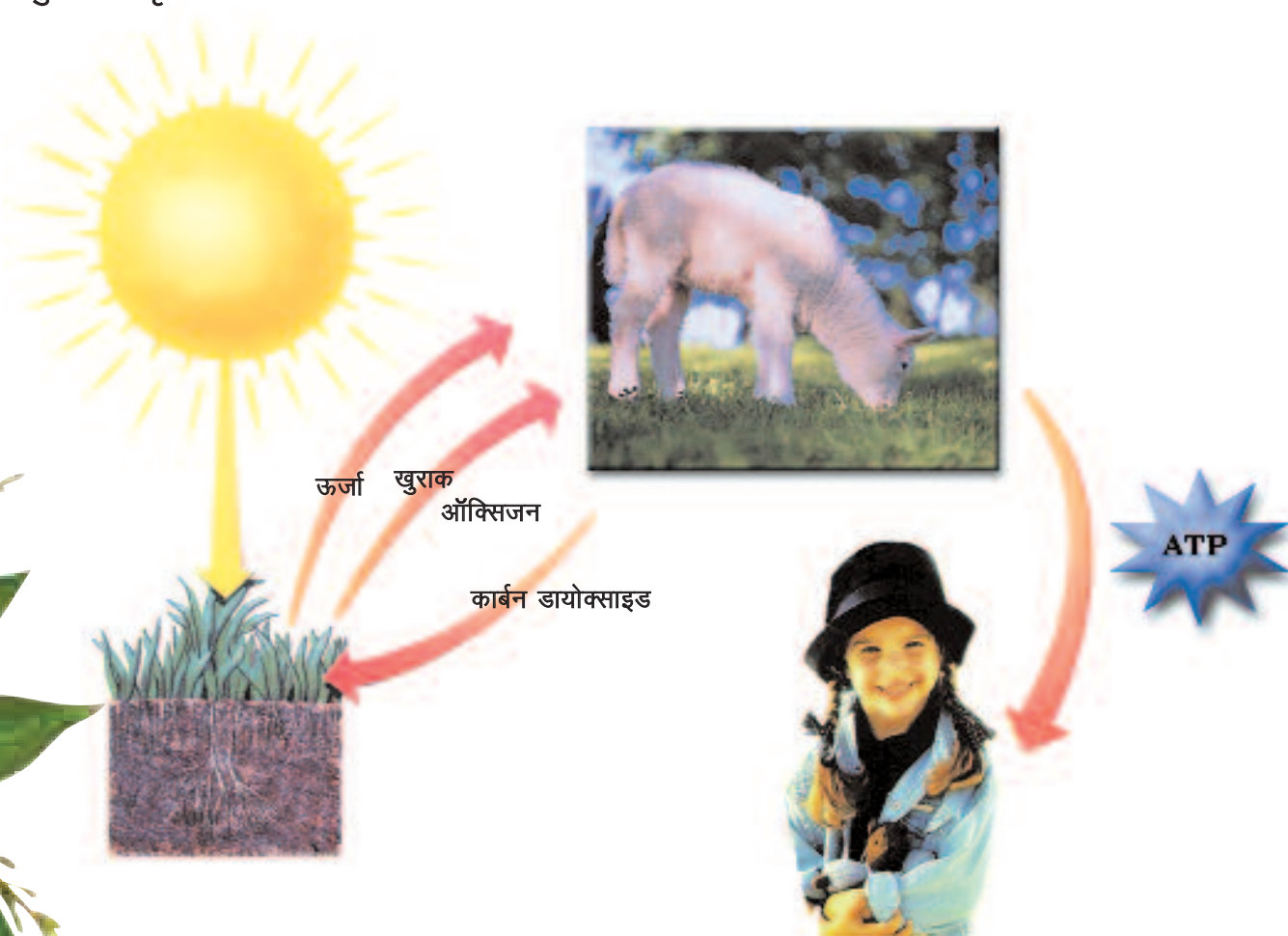
पौधो की सूक्ष्म फैक्टरियों में चमत्कारिक रूपांतरण आकार लेता है.
सूर्य में से ऊर्जा प्राप्त करके वे प्रकाशसंश्ले ाण की क्रिया कर सके जो प्राणीयो और मनु यो की ऊर्जा की जरूरतो की आपूर्ति करती है.

चेतावनी!

जो अध्याय आप अब पढ़ने जा रहे हैं वह जीवन के बारे में एक महत्वपूर्ण रहस्य का उद्घाटन करता है। आपको इसे पूरी तन्मयता और समग्रता से पढ़ना चाहिए क्योंकि यह बाहरी जगत के प्रति आपकी विचारधारा में बुनियादी बदलाव लाने वाला होगा। इस अध्याय का वि ाय कोई विचार बिंदु, एक अलग सोच या कोई पा. रंपरिक दार्शनिक सोच, मात्र नहीं है : यह एक तथ्य जिसे हर किसी को, मानते हुए या नहीं मानते हुए, स्वीकार करना ही होगा और जिसे आज का विज्ञान भी सिध्द कर चुका है।

अध्याय 17

पदार्थ से परे का रहस्य

जो शुद्ध अंतःकरण और विवेक से अपने आस–पास का अवलोकन करते हैं, वे अनुभव करते हैं कि ब्रह्मांड के समस्त पदार्थों – जीवित और जड़ दोनों का अवश्य ही सृजन किया गया होगा। इसलिए प्रश्न यह होता है कि, "इन समस्त पदार्थों का सृष्टिकर्ता कौन है?"

यह स्पष्ट है कि जो सृजन ब्रह्मांड के समस्त रूपों में स्वयं को उद्घाटित करता हो, ब्रह्मांड की कोई अपवृद्धि नहीं हो सकती है। उदाहरण के लिए, किसी कीट ने स्वयं को सृजित नहीं किया होगा, और न ही सौर्य प्रणाली ने स्वयं को सृजित या संगठित किया होगा। ना तो वनस्पति, मानव, बैक्टीरिया, लाल रक्त कण, ना ही तितली ने स्वयं को सृजित किया है। जैसाकि यह पुस्तक हर स्थान पर व्याख्या करती है, कोई भी ऐसी संभावना अकल्पनीय है कि इन सब की उत्पत्ति "संयोग" से हुई है।

इसलिए हम निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं : हर वह पदार्थ, जिन्हें हम देखते हैं, का सृजन किया गया है और उनमें से कोई स्वयं "सृष्टिकर्ता" नहीं हो सकती। हम जिन समस्त पदार्थों को देखते हैं, सृष्टिकर्ता उनसे भिन्न और उनसे श्रेष्ठ होता है, जो हमारी आंखों से ओझल होता है, लेकिन जिसका अस्तित्व और लक्षण उन समस्त पदार्थों में उद्घटित होता है, जिनका वह सृजन करता है।

यह वह स्थिति है, जहां ईश्वर के अस्तित्व को नकारने वाले भटक जाते हैं। उनका हृदय इस प्रकार का हो जाता है कि जब तक वे ईश्वर को स्वयं अपनी आंखों से देख नहीं लें, पूरे ब्रह्मांड में आविर्भावित सृजन की वास्तविकता को छिपाने और यह दावा करने के लिए बाध्य होते हैं कि इसके समस्त जीवों का सृजन नहीं किया गया है। यह करने के लिए, वे मिथ्या का सहारा लेते हैं। जैसा कि पहले इसकी व्याख्या की जा चुकी है, क्रमिक–विकास का सिद्धांत, उनके झूठ और इस उद्देश्य की प्राप्ति के उनके विफल प्रयासों का एक प्रमुख उदाहरण हैं।

ईश्वर को नकारने वालों की मौलिक त्रुटि में ढेर सारे अन्य लोग भी भागीदार बन जाते हैं, जो वास्तव में उसके अस्तित्व को नहीं नकारते, लेकिन उनके पास ईश्वर की ग़लत परिकल्पना है। ऐसे लोग जो समाज के बहुसंख्यक हैं, वे सृजन को नहीं नकारते, लेकिन ईश्वर के बारे में उनकी धारण अंधविश्वासपूर्ण है। अधिकतर की मान्यता है कि ईश्वर बस "आकाश में है।" वे ग़लत परिकल्पना करते हैं कि ईश्वर किसी दूरस्थ ग्रह पर है ओर केवल कभी–कभार ही सांसारिक मामलों में हस्तक्षेप करता है। या शयद वह कभी हस्तक्षेप करता ही नहीं: उसने ब्रह्मांड की सृष्टि की, और हम मानव को अपना भाग्य स्वयं निर्धारित करने के लिए छोड़ दिया है।

फिर भी, दूसरे लोगों ने यह तथ्य सुना है कि ईश्वर "हर जगह है" , जैसा कि कुरआन में बताया गया है, लेकिन वे यह नहीं समझते हैं कि वास्तव में इसका अर्थ क्या है। अंधविश्वास के तले, वे सोचते हैं कि रेडियो तरंगों या एक अदृश्य या किसी अमूर्त वायु की तरह ईश्वर सभी पदार्थों के साथ है (निश्चय ही ईश्वर इन सबसे परे है)।

हालांकि, यह और दूसरी धारणाएं यह स्पष्ट नहीं करतीं कि ईश्वर "कहां" हैं (और शायद ईश्वर को नकारते हैं) और ये सभी धारणएं एक सामान्य ग़लती पर अधारित हैं : वह निराधार पूर्वाग्रह रखते हैं, जो कि उन्हें ईश्वर के बारे में ग़लत विचार रखने के लिए प्रेरित करता है।

क्या है यह पूर्वाग्रह? यह पदार्थ का अस्तित्व और उसकी प्रकृति के बारे में है। अधिकांश लोग यह मानने के लिए बाध्य हैं कि जो भैतिक जगत हम देख रहे हैं, वही अपने आप में वास्तविक सत्य है। आधुनिक विज्ञान, फिर भी, इस तथ्य को खारिज करता है और एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण और ज़बर्दस्त सत्य को उजागर करता है। आगे के पृष्ठों में, हम उस महान वास्तविकता को स्पष्ट करेंगे, जिसकी ओर कुरआन इशारा करता है।

विद्युत संकेतों की दुनिया

दुनिया के बारे में हमारे पास जो सूचना है वह हमारी पांच ज्ञानेंद्रियों द्वारा हमें प्रेषित की गई हैं। इस तरह, दुनिया जिसे हम जानते हैं, वह इस पर आधारित है कि हमारी आंखें क्या देखती हैं, हमारे हाथ क्या महसूस करते हैं, हमारी नाक क्या सूंघती है, हमारी जीभ क्या चखती है, और हमारे कान क्या सुनते हैं। हम कभी यह नहीं मानते कि बाहरी जगत उससे अलग हो सकता है जो हमारी इंद्रियां हमें प्रस्तुत करती हैं, क्योंकि हमने जिस दिन जन्म लिया उस दिन से उन इंद्रियों पर निर्भर हैं।

फिर भी विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में आधुनिक अनुसंधान एक अत्यंत भिन्न समझ की ओर इंगित करता है और हम अपनी इंद्रियों से जिस "बाहरी" विश्व का बोध करते हैं उस पर गंभीर शंका पैदा करता है।

इस नई समझ के लिए आरंभ बिंदु यह है कि जिन तमाम चीजों को हम बाहरी रूप से बोध करते हैं वे हमारे मस्तिष्क में इलेक्ट्रिकल सिग्नल या विद्युत संकेतों से पैदा एक रिस्पांस या अनुक्रिया है। सेब की लाली, लकड़ी की कठोरता – इसके साथ ही, किसी की मां, पिता, परिवार, और हर वह चीज जो हमारे पास है, हमारा घर, नौकरी, और यहां तक कि इस पुस्तक के पन्ने – सब के सब केवल विद्युत संकेतों का समावेश हैं।

इस विषय पर दिवंगत जर्मन जैव–रसायन शास्त्री फ्रेड्रिक वेस्टर ने व्याख्या की है कि विज्ञान किस विचार बिंदु पर पहुंचा है :

कुछ वैज्ञानिकों के वक्तव्य, जिसमें परिकल्पित किया गया था कि मानव एक छवि है, कि अनुभव की गई तमाम पदार्थ अस्थायी और मिथ्या हैं, और यह कि ब्रह्मांड केवल एक प्रतिबिंब है, वर्तमान विज्ञान द्वारा सिद्ध प्रतीत होते हैं।190

इसे स्पष्ट करने के लिए आइए हम पांच इंद्रियों पर विचार करें जो हमें बाहरी जगत की तमाम सूचना देती हैं।

हम कैसे देखते, सुनते, और चखते हैं?

देखने की क्रिया क्रमिक रूप से होती है। पदार्थ से गमन कर प्रकाश (फोटोन) हमारे आंख के अग्र भाग के लेंसों या तालों से गुजरता है, जहां छवि परावर्तित होती है और आंख के पश्च भाग में स्थित रेटिना या दृष्टिपटल पर उलटी हो कर गिरती है। यहां चाक्षुष स्पंदन विद्युत संकेतों में परिवर्तित हो जाते हैं, जो न्यूरोन के माध्यम से मस्तिष्क के पिछले भाग में स्थित एक अत्यंत छोटे बिंदु पर प्रेषित होते हैं जिसे विजन सेंटर या दृष्टि केन्द्र के नाम से जाना जाता है। प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला के बाद इन विद्युत संकेतों का अवबोधन इस मस्तिष्क केन्द्र में एक छवि के रूप में किया जाता है। देखने की क्रिया वास्तव में मस्तिष्क के अग्र भाग में, एक अत्यंत छोटे से बिंदु में कार्यान्वित होती है जो प्रकाश से पूरी तरह दूर गहन अंधकार में होता है।

हालांकि यह प्रक्रिया अधिकाधिक स्पष्ट और ज्ञात है, हम जब दावा करते हैं, "हम देखते हैं," तो हम वास्तव में अपनी आंखों में पहुंच रहे आवेगों के प्रभाव का बोध कर रहे हैं जो विद्युत संकेतों में रुपांतरित होते हैं और हमारे मस्तिष्क में अभिप्रेरित होते हैं। और इसलिए जब हम कहते हैं, "हम देखते हैं," तो हम वास्तव में अपने मस्तिष्क में विद्युत संकेतों का अवलोकन करते हैं।

अपने जीवन में हम जो तमाम छवियां देखते हैं, वे हमारे दृष्टि केन्द्र में बनती हैं जो हमारे मस्तिष्क के आयतन का बस कुछ ही घन सेंटीमीटर होता है। यह किताब जो तुम पढ़ रहे हो, साथ ही साथ जब तुम क्षितीज पर निगाह डालते हो तो जो असीम प्राकृतिक दृश्य तुम्हें दिखता है, दोनों ही इस छोटी–सी जगह में होता है। और जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, कि मस्तिष्क प्रकाश से पूरी तरह कटा होता है। हमारे कपाल के अंदर पूर्ण अंधकार है खुद मस्तिष्क का प्रकाश के साथ कोई संपर्क नहीं है।

एक उदाहरण इस रोचक विरोधाभास को स्पष्ट कर सकता है। मान लो कि हमने एक जलती मोमबत्ती तुम्हारे सामने रख दी। तुम इसके पास बैठ सकते हो और एक दूरी से इसे देख सकते हो। बहरहाल, इस दौरान, तुम्हारा मस्तिष्क मोमबत्ती के मूल प्रकाश के साथ किसी प्रकार के सीधे संपर्क में कभी नहीं होता। यहां तक कि जब तुम मोमबत्ती के प्रकाश का बोध कर रहे होते हो, तुम्हारा मस्तिष्क प्रकाशविहीन होता है। हम सभी अपने घुप्प अंधेरे मस्तिष्क के अंदर एक चमकीली रंग–बिरंगी दुनिया देखते हैं।

आर. एल. ग्रिगोरी देखने के इस चमत्कारी पहलू की व्याख्या करते हैं जिसे हम सभी पूरी तरह स्वीकार करते हैं :

हम सभी देखने से इतने सुपरिचित होते हैं कि यह समझने के लिए हमारी कल्पना को छलांग लगाने की आवश्यकता है कि ऐसी भी समस्याएं है जिन्हें हल करना है। लेकिन इस पर विचार करें। हमें आंखों में अत्यंत छोटी उल्टी विरूपित छवियां दी गई हैं, और हम इर्द–गिर्द के स्थान में अलग–अलग ठोस पदार्थ देखते हैं। दृष्टिपटल पर सिमुलेशन या अनुरूपण के पैटर्न या बनावट से हम पदार्थों की दुनिया का बोध करते हैं, और यह किसी चमत्कार से कम नहीं है।191

देखने की क्रिया क्रमिक रूप से होती है। पदार्थ से गमन कर प्रकाश (फोटोन) हमारे आंख के अग्र भाग के लेंसों या तालों से गुजरता है, जहां छवि परावर्तित होती है और आंख के पश्च भाग में स्थित रेटिना या दृष्टिपटल पर उलटी हो कर गिरती है। यहां चाक्षुष स्पंदन विद्युत संकेतों में परिवर्तित हो जाते हैं, जो न्यूरोन के माध्यम से मस्तिष्क के पिछले भाग में स्थित एक अत्यंत छोटे बिंदु पर प्रेषित होते हैं जिसे विजन सेंटर या दृष्टि केन्द्र के नाम से जाना जाता है। प्रक्रियाओं की एक श्रृंखला के बाद इन विद्युत संकेतों का अवबा. ेधन इस मस्तिष्क केन्द्र में एक छवि के रूप में किया जाता है। देखने की क्रिया वास्तव में मस्तिष्क के अग्र भाग में, एक अत्यंत छोटे से बिंदु में कार्यान्वित होती है जो प्रकाश से पूरी तरह दूर गहन अंधकार में होता है।

किसी वस्तु से आने वाला प्रकाश पुंज रेटिना पर ऊपर उलटा गिरता है। यहां, प्रतिबिंब विद्युत संकेतों में परिवर्तित होता हैं और उसे दिमाग के पीछे स्थित दृि ट केंद्र में भेज दिया जाता है। चूंकि दिमाग रोशनी से अवरूध्द हैं इसलिये रोशनी के लिये दुि ट केंद्र में पहुंचना असंभव है। इसका मतलब है कि हम रोशनी की एक बड़ी दुनिया तथा गहराई एक छोटे से केंद्र में देखते हैं जो रोशनी से अवरूध्द है।

हालांकि यह प्रक्रिया अधिकाधिक स्पष्ट और ज्ञात है, हम जब दावा करते हैं, "हम देखते हैं," तो हम वास्तव में अपनी आंखों में पहुंच रहे आवेगों के प्रभाव का बोध कर रहे हैं जो विद्युत संकेतों में रुपांतरित होते हैं और हमारे मस्तिष्क में अभिप्रेरित होते हैं। और इसलिए जब हम कहते हैं, "हम देखते हैं," तो हम वास्तव में अपने मस्तिष्क में विद्युत संकेतों का अवलोकन करते हैं।

अपने जीवन में हम जो तमाम छवियां देखते हैं, वे हमारे दृष्टि केन्द्र में बनती हैं जो हमारे मस्तिष्क के आयतन का बस कुछ ही घन सेंटीमीटर होता है। यह किताब जो तुम पढ़ रहे हो, साथ ही साथ जब तुम क्षितीज पर निगाह डालते हो तो जो असीम प्राकृतिक दृश्य तुम्हें दिखता है, दोनों ही इस छोटी–सी जगह में होता है। और जैसा कि पहले ही उल्लेख किया जा चुका है, कि मस्तिष्क प्रकाश से पूरी तरह कटा होता है। हमारे कपाल के अंदर पूर्ण अंधकार है खुद मस्तिष्क का प्रकाश के साथ कोई संपर्क नहीं है।

एक उदाहरण इस रोचक विरोधाभास को स्पष्ट कर सकता है। मान लो कि हमने एक जलती मोमबत्ती तुम्हारे सामने रख दी। तुम इसके पास बैठ सकते हो और एक दूरी से इसे देख सकते हो। बहरहाल, इस दौरान, तुम्हारा मस्तिष्क मोमबत्ती के मूल प्रकाश के साथ किसी प्रकार के सीधे संपर्क में कभी नहीं होता। यहां तक कि जब तुम मोमबत्ती के प्रकाश का बोध कर रहे होते हो, तुम्हारा मस्तिष्क प्रकाशविहीन होता है। हम सभी अपने घुप्प अंधेरे मस्तिष्क के अंदर एक चमकीली रंग–बिरंगी दुनिया देखते हैं।

आर. एल. ग्रिगोरी देखने के इस चमत्कारी पहलू की व्याख्या करते हैं जिसे हम सभी पूरी तरह स्वीकार करते हैं :

किसी पदार्थ से आने वाले उद्दीपन को विद्युत संकेतों में परिवर्तित कर दिया जाता है और इससे दिमाग में एक प्रभाव पैदा होता है। जब हम 'देखत' हैं तो हम वास्तव में इन विद्युत संकेतों के प्रभाव को अपने दिमाग में देखते हैं।

हम सभी देखने से इतने सुपरिचित होते हैं कि यह समझने के लिए हमारी कल्पना को छलांग लगाने की आवश्यकता है कि ऐसी भी समस्याएं है जिन्हें हल करना है। लेकिन इस पर विचार करें। हमें आंखों में अत्यंत छोटी उल्टी विरूपित छवियां दी गई हैं, और हम इर्द–गिर्द के स्थान में अलग–अलग ठोस पदार्थ देखते हैं। दृष्टिपटल पर सिमुलेशन या अनुरूपण के पैटर्न या बनावट से हम पदार्थों की दुनिया का बोध करते हैं, और यह किसी चमत्कार से कम नहीं है।191

स्पर्श की हमारी अनुभूति भी इससे कोई भिन्न नहीं है। जब हम किसी पदार्थ को छूते या पकड़ते हैं, वे तमाम सूचना जो उसे पह. चानने में हमारी मदद करती हैं, त्वचा की संवेदनशील तंत्रिका के माध्यम से हमारे मस्तिष्क में प्रेषित हो जाती हैं। स्पर्श की अनुभूति हमारे मस्तिष्क में निर्मित होती है। आम समझ के विपरीत, हम स्पर्श की अनुभूति अपनी उंगलियों के छोरों पर या अपनी त्वचा पर नहीं, बल्कि अपने मस्तिष्क के स्पर्श केन्द्र पर करते हैं। त्वचा से अपने पास आती विद्युत उद्दीपन के मस्तिष्क के आकलन के परिणामस्वरूप, हम कड़ा या मुलायम, गर्म या ठंडा जैसी पदार्थों के संबंध में विभिन्न अनुभूतियां पाते हैं। इन उद्दीपनों से हम पह तमाम नतीजे निकालते हैं जो हमें किसी पदार्थ को पहचानने में मदद करते हैं। इस महत्त्वपूर्ण तथ्य के संदर्भ में दो प्रसिद्ध दार्शनिकों बी. रसेल और एल. जे. जे विटगेंस्टीन के विचारों पर गौर करें : उदाहरण के तौर पर, इस पर कोई सवाल नहीं किया जा सकता और जांच–पड़ताल नहीं की जा सकती कि क्या कोई नींबू सचमुच अस्तित्व में है या नहीं और वह कैसे अस्तित्व में आया। किसी नींबू में मात्र जीभ द्वारा अनुभूति किया जाने वाला स्वाद, नाक द्वारा अनुभूति किया जाने वाला गंध और आंख द्वारा देखा जाने वाला आकार और रंग शामिल है; और इसकी केवल यही विशेषताएं परीक्षण एवं आकलन के अधीन होंगी। विज्ञान कभी भौतिक विश्व को नहीं जान सकता।193

अपने मस्तिष्क से बाहर के भौतिक विश्व तक पहुंचना हमारे लिए असंभव है। हम जिन पदार्थों के साथ संपर्क में हैं, वे सभी वास्तव में दृष्टि, श्रवण और स्पर्श जैसे बोधों का एक संचय है। अपने समूचे जीवन में संवेदी केन्द्रों के आंकड़ों की प्रोसेसिंग या प्रवर्धन कर, हमारा मस्तिष्क हमसे इतर विराजमान पदार्थ के "मूल" से नहीं, बल्कि हमारे मस्तिष्क के भीतर निर्मित उसकी प्रतियों से रुबरु होता है। इस बिंदू पर, हम यह मानने में दिशाभ्रमित होते हैं कि ये प्रतियां हमारे बाहर वास्तविक पदार्थ के उदाहरण हैं।

हमारे मस्तिष्क के भीतर "बाहरी जगत"

इन भौतिक तथ्यों के परिणामस्वरूप, हम निम्नलिखित निर्विवादित निष्कर्ष पर पहुंचते हैं : हम "पदार्थ" के रूप में जिन सभी पदार्थों को देखते, छूते, सुनते और बोध करते हैं, "विश्व" या "ब्रह्मांड" वास्तव में विद्युत संकेत हैं जिनका प्रतिपादन हमारे मस्तिष्क में होता है। हम कभी अपने मस्तिक के बाहर पदार्थ के मूल तक नहीं पहुंच सकते। हम अपने मस्तिष्क में निर्मित बाहरी जगत की किसी छवि को मात्र चखते सुनते और देखते हैं। वास्तव में, सेब खा रहा कोई व्यक्ति वास्तविक फल से नहीं, बल्कि मस्तिष्क में निर्मित उसकी अनुभूति से रुबरु होता है। व्यक्ति जिसे सेब के रूप में पाता है वह वास्तव में फल के आकार, स्वाद, गंध, और संरचना से संबंधित विद्युतीय सू. चनाओं की मस्तिष्क की अनुभूति पर आधारित होती है। अगर ऑप्टिक नर्व या दश्क्तंत्रिका से मस्तिष्क का संबंध अचानक विच्छेद कर दिया जाए, फल की छवि फौरन लुप्त हो जाएगी। नाक के अभिग्राहकों से मस्तिष्क तक जाने वाले ओलफैक्टरी नर्व या घ्राण तंत्रिका का कोई संबंध विच्छेद गंध की अनुभूति को पूरी तरह बाधित कर देगा। साधारण शब्दों में, सेब कुछ और नहीं बस मस्तिष्क में विद्युत संकेतों का प्रतिपादन है।

दूरी की अनुभूति पर विचार कीजिए। तुम्हारे और इस पन्ने के बीच की खाली जगह बस तुम्हारे मस्तिष्क में निर्मित खालीपन की एक अनुभूति है। पदार्थ जो तुम्हारी दृष्टि में दूर प्रतीत होती हैं, वह भी मस्तिष्क में होती हैं। मिसाल के तौर पर, रात में तारों को निहार रहा कोई यह मान बैठता है कि वे लाखों प्रकाश–वर्ष दूर हैं, फिर भी तारे उसके भीतर हैं, उसके दृष्टि केन्द्र में हैं। जब तुम ये लाइनें पढ़ रहे होए तो वास्तव में उस समय तुम कमरे में नहीं जिसमें तुम स्वयं को मान रहे हो; उसके विपरीत कमरा तुम्हारे अंदर है। तुम्हारे शरीर का बोध तुमसे यह सोचवाता है कि तुम अंदर हो। बहरहाल, तुम्हारा शरीर भी तुम्हारे मस्तिष्क के भीतर निर्मित छवियों की एक–सी श्रृंखला है।

यही बात दूसरे बोधों पर भी लागू होता है। मिसाल के तौर पर, जब तुम मानते हो कि तुम पास के कमरे में रखे टेलीविजन की आवाज सुन रहे हो, वास्तव में तुम उन आवाजों को अपने मस्तिष्क के भीतर अनुभव करते हो। जिस शोर के बारे में तुम सोचते हो कि वह कुछ मीटर दूर से आ रहा है और तुम्हारे ठीक पास में बैठे व्यक्ति की बातचीत – दोनों का बोध तुम्हारे मस्तिष्क के श्रवण केन्द्र में हो रहा है जिसका आकार केवल कुछ घन सेंटीमीटर है। अनुभूति के इस केन्द्र के अतिरिक्त, दायें, बायें, आगे या पीछे की कोई अवधारणा नहीं होती। मतलब यह कि आवाज तुम्हारे दायें से, पीछे से, या ऊपर से नहीं आती; ऐसी कोई दिशा नहीं है जिससे आवाज "वास्तव में" आती हो।

इसी प्रकार, तुम जिन गंधों का बोध करते हो, उनमें से कोई किसी दूरी से नहीं आती। तुम समझते हो कि गंध के तुम्हारे केन्द्र में बोध की गई महक बाहरी पदार्थों की है। जिस प्रकार से किसी गुलाब की छवि तुम्हारे दृष्टि केन्द्र में होती है, उसी तरह उसकी महक तुम्हारे घ्राण केन्द्र में स्थित होती है। तुम कभी उस गुलाब की वास्तविक झलक या महक के साथ प्रत्यक्ष संपर्क नहीं कर सकते जो तुम्हारे बाहर अस्तित्व करता है।

हमारे लिए, "बाहरी जगत" एक साथ हमारे मस्तिष्क में पहुंच रहे विद्युत संकेतों का एक संग्रह मात्र है। हमारा मस्तिष्क इन संक.

`तों का प्रवर्धन करता है, और हम अपनी गलत मान्यता को समझे बिना जीते हैं कि ये "बाहरी जगत" में मौजूद पदार्थ के वास्तविक, मूल संस्करण हैं। हम अपनी इंद्रियों के कारण दिशाभ्रमित होते हैं, हम कभी खुद पदार्थ तक नहीं पहुंच सकते।

एक बार फिर, हमारा मस्तिष्क उन संकेतों को प्रतिपादित करता है और उनके साथ अर्थों को आरोपित करता है जिन्हें हम "बाहरी" मानते है। उदाहरण के लिए श्रवण की इंद्री पर विचार करें। वास्तव में, हमारा मस्तिष्क हमारी कान तक पहुंचने वाली ध्वनि तरंगों को सिंफनी के रूप में प्रतिपादित और रूपांतरित करता है। संगीत भी हमारे मस्तिष्क द्वारा – और मस्तिष्क में – निर्मित एक बोध है। इसी प्रकार, जब हम रंगों को देखते हैं, प्रकाश के विभिन्न वेवलेंग्थ ही हमारी ओखों तक पहुंचती है, और हमारा मस्तिष्क इन वेवलेंग्थ को रंगों में रूपांतरित करता है। "बाहरी जगत" में कोई रंग नहीं होता। न तो सेब लाल है, न ही आसमान नीला और न ही पेड़ हरे। वे ऐसे इस तरह के इसलिए हैं कि हम उनका बोध उस तरह करते हैं।

आंख के रेटिना या दृष्टिपटल में हल्के से दोष से भी कलर ब्लाइंडनेस या वर्णांधता हो सकती है। कुछ लोग नीला को हरा के रूप में देखते हैं, दूसरे लाल को नीला समझते हैं। ऐसे भी लोग हैं जो तमाम रंगों को भूरे की विभिन्न रंगत के रूप में देख पाते हैं। इस बिंदू पर, यह ज्यादा महत्व नहीं रखता कि बाहरी पदार्थ रंगीन है या नहीं।

प्रमुख इरिश विचारक जार्ज बर्कले ने भी इस बिंदू को संबोधित किया है:

पहले, ...यह समझा गया कि रंग, आकार, गति, और बाकी बोधगम्य विशेषताएं या घटनाएं दिमाग के बगैर भी अस्तित्व में होती हैं,........ लेकिन, यह दिखाया गया कि इनमें से कोई भी किसी आत्मा (रूह) या चित्त से बाहर संभवतः अस्तित्व में नहीं रह सकती जो उनका बोध करती हैं। इसका अर्थ अब यह हुआ कि पदार्थ के अस्तित्व की कल्पना करने का कोई कारण नहीं है 194

निष्कर्ष के रूप में, हम पदार्थों के कारण रंग नहीं देखते हैं या इस कारण रंग नहीं देखते हैं कि हमारे बाहर उनका कोई भौतिक अस्तित्व है, बल्कि उन विशेषताओं के कारण देखते हैं जो हम पदार्थ पर आरोपित करते हैं, वे हमारे अंदर हैं, न कि "बाहरी जगत" में इस हालत में, कैसे "बाहरी जगत" की सपूंर्ण सूचना रखने का हम दावा कर सकते हैं?

"
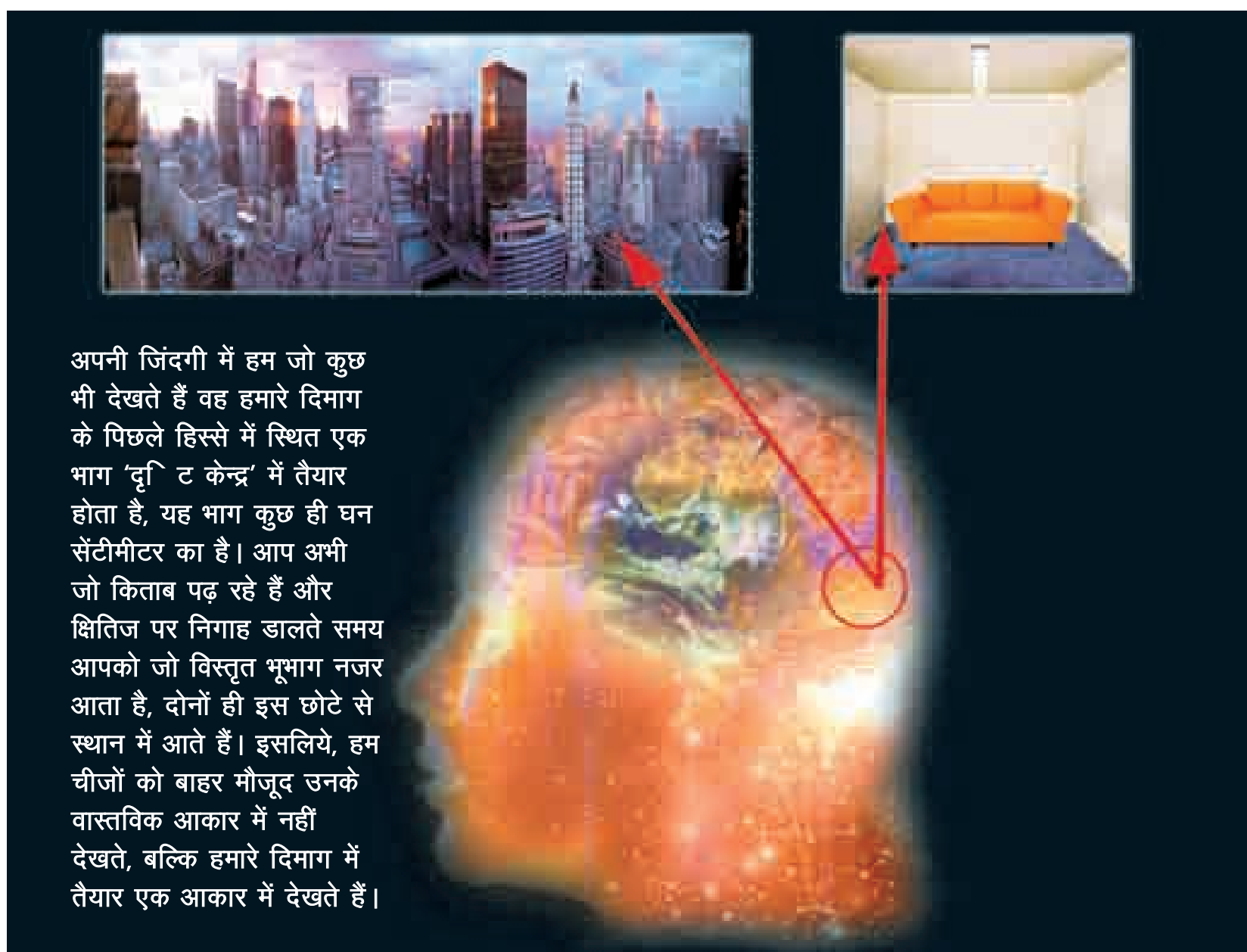
अपनी जिंदगी में हम जो कुछ भी देखते हैं वह हमारे दिमाग के पिछले हिस्से में स्थित एक भाग 'दृि ट केन्द्र' में तैयार होता है, यह भाग कुछ ही घन सेंटीमीटर का है। आप अभी जो किताब पढ़ रहे हैं और क्षितिज पर निगाह डालते समय आपको जो विस्तृत भूभाग नजर आता है, दोनों ही इस छोटे से स्थान में आते हैं। इसलिये, हम चीजों को बाहर मौजूद उनके वास्तविक आकार में नहीं देखते, बल्कि हमारे दिमाग में तैयार एक आकार में देखते हैं।

भौतिकी के नि क ा बताते हैं कि ब्रह्मांड बोध या धारणाओं का एक संग्रह है। आगामी सवाल अमेरिका की प्रति ठत विज्ञान पत्रिका न्यू साइंटिस्ट के 30 जनवरी 1999 के अंक के मुखपृ ट पर प्रकाशित हुआ था : 'वास्तविकता से परे : क्या ब्रह्मांड वास्तव में एक आदिम सूचना की कौतुकी है और पदार्थ महज एक भ्रम है?'

न्यू साइंटिस्ट के 27 अप्रैल 2002 के अक में एक आलेख 'द हौलो यूनिवर्स' ी कि से प्रकाशित हुआ। इसमें कहा गया : 'आपने एक पत्रिका पकड़ रखी है। यह ठोस महसूस होती है; इस दिक् में कुछ तरह का स्वतंत्र अस्तित्व महसूस होता है। इसी तरह आपके आसपास के पदार्थ – संभवतः एक काफी कप, एक कंप्यूटर। ये सभी वास्तविक महसूस होते हैं और वहां हैं। लेकिन यह सब एक भ्रम है। जो ठोस पदार्थ लगते हैं वे महज प्रक्षेपण हैं, हमारे ब्रह्मांड की सीमा पर स्थित किसी बदलते केलिडोस्कोपिक पैटर्न से निकलते हुए।'

मानव जाति की सीमित जानकारी

अब तक जिन तथ्यों का वर्णन किया गया उसका एक निहितार्थ यह है कि वास्तव में बाहरी जगत की मानव जाति की जानक. ारी अत्यंत सीमित है।

सूचना हमारी पांच ज्ञानेंद्रियों तक सीमित हैं, और ऐसा कोई सबूत नहीं है कि उन ज्ञानेंद्रियों के माध्यम से हम विश्व का जो बोध कर रहे हैं वह "वास्तविक" विश्व के समरूप है।

इसलिए, हम जिसका बोध कर रहे हैं यह उससे बहुत भिन्न हो सकती है। उसके अनेक आयाम और अन्य तत्व हो सकते हैं जिनसे हम अनभिज्ञ बने हैं। यहां तक कि हम ब्रह्मांड के एकदम दूसरे छोर पर भी पहुंच जाएं तो हमारी सूचना सीमित बनी रहेगी।

सभी के सृष्टिकर्ता, सर्वशक्तिमान् ईश्वर, के पास तमाम सृष्टियों का पूर्ण और दोषरहित ज्ञान है। ईश्वर द्वारा सृजित सृष्टियों के पास उतनी ही सूचना हो सकती है जितना ईश्वर उसकी अनुमति देता है। यह कुरान में निम्नलिखित रूप में व्याख्यित किया गया है :

ख़ुदा ही वो पाक हस्ती है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं (वह) जिन्दा है (और) सारे जहान का संभालने वाला है उसको न ऊँघ आती है न नींद जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है (गरज सब कुछ) उसी का है। कौन ऐसा है जो बग़ैर उसकी इजाजत के उसके पास किसी की सिफारिश करे जो कुछ उनके सामने मौजूद है (वह) और जो कुछ उनके पीछे (हो चुका) है (ख़ुदा सबको) जानता है और लोग उसके ज्ञान में से किसी चीज़ पर भी अहाता नहीं कर सकते मगर वह जिसे जितना चाहे (सिखा दे) उसकी कुर्सी सब आसमानों और जमीनों को घेरे हुये है और उन दोनों (आसमान व जमीन) की निगरानी उस पर कुछ भी मुश्किल नहीं और वह आलीशन बुजुर्ग मरतबे वाला है (सूरत अल बकरा : 255)

कृत्रिम रूप से गठित "बाहरी जगत"

एकमात्र विश्व जिसे हम जानते हैं जिसे (मस्तिष्क में) योजनाबद्ध बनाया गया, दर्ज किया गया और दिखाया गया है, संक्षेप में हमारे मस्तिष्क के भीतर सृजित एवं उपस्थित है। अपने मस्तिष्क में हम जिय प्रत्यक्ष ज्ञान का अवलोकन करते हैं, कई बार कृत्रिम स्रोत

से भी आ सकते हैं।

हम इसकी व्याख्या एक उदाहरण से कर सकते हैं :

सर्वप्रथम, कल्पना करो कि कृत्रिम उपाय से तुम्हारा मस्तिष्क तुम्हारे शरीर से अलग जीवित रह सकता है। और कल्पना करो कि तमाम प्रकार के विद्युम संकेत पैदा करने में एक कंप्यूटर सक्षम है। वह झलक, ध्वनियां और गंधों को किसी दिए गए वातावरण से संबंधित डेटा या आंकड़ों के विद्युत संकेतों को कृत्रिम रूप से पैदा करता है। अंत में, बिजली के केबल से इस कंप्यूटर के संवेदी केन्द्रों को जोड़ दें और रिकार्ड किए गए संकेतों को मस्तिष्क में प्रेषित करें। इन संकेतों का बोध करते हुए तुम्हारा मस्तिष्क (दूसरे शब्दों में, "तुम") उस वातावरण को देख और अनुभव कर सकोगे जिसका वे प्रतिनिधित्व करते हैं।

यह कंप्यूटर तुम्हारी अपनी छवि से संबंधित विद्युत संकेत भी तुम्हारे मस्तिष्क को भेज सकता है। उदाहरण के लिए, तुम किसी डेस्क पर बैठ कर श्रवण, दृष्टि एवं स्पर्श जैसी तमाम इंद्रियों का अनुभव करते हो अगर हम उनसे संबंधित विद्युत संकेत भेजें तो तुम कल्पना करने लगोगे कि तुम एक अपने दफ्तर में मौजूद एक व्यापारी हो। यह कृत्रिम विश्व उस समय तक टिकेगा जब तक कंप्यूटर उद्दीपन संप्रेषित करना जारी रखेगा। कभी भी तुम्हारे लिए यह समझना संभव नहीं हो सकेगा कि तुम कुछ नहीं बल्कि अपना मस्तिष्क हो। ऐसा इसलिए कि तुम्हें अपने मस्तिष्क में एक विश्व के निर्माण के लिए जो कुछ चाहिए वह संबंधित केन्द्रों को उद्दीपनों की उपलब्धता है। इन उद्दीपनों (और इसी कारण, प्रत्यक्ष ज्ञान) के लिए यह संभव है कि किसी कृत्रिम स्रोत से उनकी उत्पत्ति हो सकती है।

इस दिशा के अनुरूप प्रसिध्द दार्शनिक बर्ट्रैंड रसेल ने लिखा है :

स्पर्श के ज्ञान के मुताबिक जब हम किसी मेज को अपनी उंगलियों से दबाते हैं, आधुनिक भौतिकी के अनुसार, मेज के इलेक्ट्रोन और प्रोटोन की निकटता के चलते हमारी उंगलियों के छोरों के इलेक्ट्रोन और प्रोटोन में विद्युतीय विक्षोभ पैदा होता है। अगर हमारी उंगलियों के छोरों में यही विक्षोभ किसी अन्य माध्यम से पैदा किया जाए, तो, किसी मेज के नहीं होने के बावजूद, हमें अनुभूति होनी चाहिए।195

किसी ठोस सहसंबध्दता के बगैर प्रत्यक्ष ज्ञान को यथार्थ के रूप में मानने की भूल करना वास्तव में बहुत आसान है। अनेक बार हम सपनों में इस भ्रम से दोचार होते हैं जहां हम घटनाओं का अनुभव करते हैं, लोगों, पदार्थों और प्रतिवेश का अनुभव करते हैं जो बिल्कुल वास्तविक प्रतीत होते हैं। लेकिन वे सभी मात्र बोध होते हैं। इन सपनों और "वास्तविक विश्व" में कोई अंतर नहीं है, दोनों तरह के बोधों का अनुभव मस्तिष्क में होता है।

अनुभवकर्ता कौन है?

जिस "बाहरी जगत" के बारे में हम समझते हैं कि हम उसमें विद्यमान हैं, वह निस्संदेह हमारे मस्तिष्क के भीतर सृजित होता है। हालांकि, यहां प्राथमिक महत्व का एक प्रश्न खड़ा होता है : हम जिन तमाम भौतिक पदार्थों को जानते हैं, अगर वे अन्तर्भूत रूप से बोध हैं, तो खुद हमारा मस्तिष्क क्या है? चूंकि हमारा मस्तिष्क हमारी बांह, हमारी टांग, या किसी अन्य पदार्थ की तरह भौतिक विश्व का एक भाग है, इसे भी एक बोध होना चाहिए।

एक उदाहरण इस बिंदू की व्याख्या में सहायता करेगा। कल्पना करें कि हमने अपने मस्तिष्क में एक सपने का अनुभव किया। अपने सपने में हमारे पास एक काल्पनिक शरीर हैं, काल्पनिक बांहें और आंखें, और एक काल्पनिक मस्तिष्क है। अगर, सपने के दौरान, हमसे पूछा गया, "कहां देख रहे हो?" हम जवाब देंगे, "मैं अपने मस्तिष्क में देख रहा हूं।" हालांकि, कोई वास्तविक मस्तिष्क नहीं है जिस पर बात की जाए, बस एक काल्पनिक सिर और एक काल्पनिक मस्तिष्क के साथ एक काल्पनिक शरीर है। सपने की विभिन्न छवियों का दृष्टा काल्पनिक सपना देखने वाला मस्तिष्क नहीं है, बल्कि एक जीव है जो उससे बहुत दूर है।

चूंकि किसी सपने के सेटिंग या दृश्यबंध और उस दृश्यबंध में कोई भौतिक अंतर नहीं होता जिसे हम वास्तविक जीवन कहते हैं, जब "वास्तविक जीवन" में हमसे "कहां देखते हो?" का वही प्रश्न किया जाता है इसका यह उत्तर देना कि "अपने मस्तिष्क में" उतना ही निरर्थक होगा। दोनों ही स्थितियों में, जो एन्टिटी या सत्व (वजूद) देखता और बोध करता है मस्तिष्क नहीं है, जो अंततः तंत्रिका ऊतकों का मात्र एक टुकड़ा है।

अब तक, हमने इसका वर्णन किया कि हम कैसे बाहरी जगत की एक प्रति का अवलोकन अपने मस्तिष्क में करते हैं। इसका एक महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि हम कभी बाहरी जगत को उस रूप में नहीं जान सकते जिस रूप में वह है।

एक दूसरा, और महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि हमारे मस्तिष्क का "आत्म" (सेल्फ) जो इस विश्व का अवलोकन करता है स्वयं मस्तिष्क नहीं हो सकता, जो एक समेकित कंप्यूटर प्रणाली जैसा हैः यह खुद तक पहुंचने वाले आंकड़ों का प्रवर्धन करता है, उन्हें छवियों में रुपांतरित करता है, और उन्हें एक स्क्रीन पर प्रोजेक्ट करता है या डालता है। फिर भी एक कंप्यूटर खुद का अवलोकन नहीं कर सकता और न ही उसे अपने अस्तित्व का ज्ञान होता है।

जब इस बोध या अभिज्ञा की खोज के लिए मस्तिष्क की चीरफाड़ की जाती है, तो उसमें लिपिड और प्रोटीन अणुओं के सिवा कुछ भी नहीं मिलता जो शरीर के अन्य भागों में भी होते हैं। इसका अर्थ है कि यह ऊतक में जिसे हम "अपना मस्तिष्क" कहते हैं, छवियों का अवलोकन और परिभाषित करने के लिए, चेतना के संस्थापन के लिए, या किसी वजूद (सत्व) की उपस्थिति के लिए जिसे हम "हम स्वयं" कहते हैं, कुछ भी नहीं है।

मस्तिष्क में छवियों के बोध के संबंध में लोग जो एक गलती करते हैं, बोधात्मक वैज्ञानिक आर. एल. ग्रीगरी उसकी चर्चा करते हैं

कृत्रिम उत्प्रेरण द्वारा वास्तविक उत्पादक

आभासी वास्तविकता तीन–आयामी प्रस्तुति है, जिसे कंप्यूटर पर विभिन्न उपकरणों की सहायता से जीवंत किया जाता है। ये “वास्तविक विश्व” के उत्प्रेरण अनेक प्रशिक्षण उद्देश्यों से विभिन्न क्षेत्रों में नियोजित किए जाते हैं।

आभासी वास्तविकता की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशे ाता वह तरीका है, जिससे विशे ा उपकरणों का प्रयोग करने वाले व्यक्ति अकसर भूल जाते हैं कि ये छवियाँ वास्तविक नहीं हैं और पूरी तरह से उनके क़ब्ज़े में आ जाते हैं। इस तरह, मूल की तरह वास्तविक और जीवंत दिखाई देने वाला, भौतिक संसार, लोगों की इंद्रियों पर छापा जा सकता है और उनके दिमाग में स्थापित किया जा सकता है। ऐसे कृत्रिम उत्प्रेरण के परिणामस्वरूप, व्यक्ति यह कल्पना कर सकता है कि वह वास्तव में पक्षी को देख और छू रहा है, हालाँकि वह वास्तव में विद्यमान नहीं होता।

:ह कहने का एक प्रलोभन होता है, जिससे हमें अवश्य ही बचना चाहिए, कि आंखें मस्तिष्क में चित्र उत्पन्न करती हैं। यह धारणा मस्तिष्क में चित्र देखने के लिए किसी आंतरिक आंख की आवश्यकता को दर्शाती है–लेकिन इसका चित्र देखने के लिए इसे एक और आंख की आवश्यकता होगी........ और इस तरह आंखों और चित्रों के एक अंतहीन रीग्रेस (समाश्रयण) में यह आवश्यकता चलती रहेगी। यह असंगत है।196

इस समस्या ने पदार्थ के सिवा किसी को यथार्थ नहीं मानने वाले भौतिकवादियों को दुविधा में डाल दिया। आंख के पीछे कौन है जो देखता है? वह क्या है जो देखे गए का बोध करता है और फिर अनुक्रिया करता है?

सुप्रसिद्ध संज्ञानात्मक तंत्रिका वैज्ञानिक (कोमनेटिव न्यूरोसाईटिस्ट) कार्ल प्रीब्राम ने विज्ञान और दर्शन दोनों के लिए प्रासंगिक इस महत्त्वपूर्ण सवाल पर ध्यान केन्द्रित किया है कि अनुभवकर्ता कौन है :

यूनानियों के समय से दार्शनिकों ने मशीन के अंदर "भूत", "आदमी के भीतर आदमी" इत्यादि की अटकलबाजी की है। मैं – मस्तिष्क का उपयोग करने वाला वह वजूद "मैं" सत्व कहां है? किसके पास वास्तविक ज्ञान है?"197

यह किताब जो तुम्हारे हाथ में है, यह कमरा जिसमें तुम हो – संक्षेप में तुम्हारे समक्ष उपस्थित समस्त छवियों का बोध तुम्हारे मस्तिष्क के अंदर होता है। क्या यह अंधा, गूंगा, अचेतन अवयव परमाणु है जो इन छवियों को देखता है? क्यों कुछ परमाणु यह विशेषता ग्रहण कर लेते हैं, जबकि ज्यादातर नहीं कर पाते? क्या हमारे सोचने, समझने, याद करने, हर्षित होने, दुःखी होने, और अन्य कार्य इन समस्त परमाणुओं के अणुओं के बीच रसायनिक प्रतिक्रियाओं पर आधारित है?

इन परमाणुओं में इच्छा ढूंढने का कोई अर्थ नहीं है। स्पष्ट रूप से, वह हस्ती जो देखता है, सुनता है, और अनुभूति करता है, एक अधि–भौतिकवादी अस्तित्व, "जीवित" है जो न तो पदार्थ है और न ही कोई छवि। यह अस्तित्व (ऐनटाईटी) हमारे शरीर की छवि का उपयोग कर अपने समक्ष उपस्थित बोध के साथ अंतःक्रिया करता है।

यह अस्तित्व (वजूद) रूह है।

इन लाइनों को पढ़ रहा बुध्दिमान सत्व परमाणुओं और अणुओं और उनके बीच होने वाली रसायनिक प्रतिक्रियाओं का समुच्चय नहीं है, बल्कि एक रूह है।

वास्तविक अस्तित्व

हम एक बहुत ही उल्लेखनीय प्रश्न से दो–चार होते हैं : जिस विश्व से हम रुबरु हो रहे हैं अगर वह हमारी रूहों के बोध पर आधारित है, तो इन बोधों का स्रोत क्या है?

उत्तर के लिए, आओ इस पर विचार करो कि पदार्थ का बोध हम केवल अपनी कल्पनाओं में करते हैं, लेकिन कभी बाहर उसकी प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कर सकते। चूंकि पदार्थ वास्तव में हमारे लिए एक बोध है, यह ऐसी कोई चीज है जो "निर्मित" है। इसका अर्थ यह हुआ कि इसका अवश्य ही सृजन किया गया होगा। इसके अतिरिक्त यह सृजन अवश्य ही लगातार होना चाहिए। अगर ऐसा नहीं, तो यह बोध तेजी से गुम हो जाएगा और खो जाएगा। इसी प्रकार, एक टेलीविजन चित्र तभी तक रहता है जब तक संकेतों का प्रसारण जारी रहता है।

तो, कौन हमारी रूह का निर्माण करता है जो लगातार तारों को, धरती को, वनस्पति को, लोगों को, हमारे शरीर को, और हर उन पदार्थों को निहारती रहती है जिन्हें हम देखते हैं?

अत्यंत स्पष्ट है? एक परम सृष्टिकर्ता है जिसने समस्त भौतिक ब्रह्मांड का सृजन किया है और जो अविरत रूप से अपना सृजन जारी रखता है। चूंकि यह सृष्टिकर्ता इस तरह के शानदार सृजन का प्रदर्शन करता है, निश्चित रूप से उनके पास अलौकिक सत्ता और शक्ति है।

यह सृष्टिकर्ता खुद को, ब्रह्मांड को और हमारे लिए हमारे अस्तित्व के कारण को अपनी किताब के द्वारा पेश करता है जिसे उसने भेजा है।

यह सृष्टिकर्ता अल्लाह है और उसकी किताब कुरान है।

यह हकीकत कि आसमान और जमीन – यानी ब्रह्मांड है–स्थिर नहीं है। उनकी मौजूदगी सिर्फ अल्लाह के सृजन के चलते संभव हो सकी, और जब वह अपनी सृष्टि का खात्मा कर देगा वे गायब हो जाएंगे। यह बात निम्नलिखित आयत में जाहिर की गई है :

बेशक खुदा ही सारे आसमान और जमीन को अपनी जगह से हट जाने से रोके हुए है और अगर (मान लें कि) ये अपनी जगह से हट जाए तो फिर तो उसके सिवा उन्हें कोई रोक नहीं सकता बेशक वह बहुत सहिष्णुता वाला (और) बड़ा माफ करने वाला है (सूरा फातिरः 41)

यह आयत बता रही है कि अल्लाह की ताकत के अंतर्गत कैसे भौतिक ब्रह्मांड बरकरार है। अल्लाह ने ब्रह्मांड – जमीन, पहाड़, और तमाम जीवित एवं निर्जीव चीजों की रचना की और हर पल अपनी ताकत से इन तमाम चीजों की देखभाल करता है। अल्लाह इस भौतिक ब्रह्मांड में अपना नाम अल–खालिक प्रकट करता है। अल्लाह अल–खालिक है। दूसरे शब्दों में, तमाम ची. जों का सृजक, शून्य से सृजन करने वाला, इससे यह पता चलता है कि हमारे मस्तिष्क से बाहर, अल्लाह द्वारा सृजित अस्तित्वों पर आधारित, एक भौतिक ब्रह्मांड है। हालांकि, चमत्कार और अपनी सृष्टि की श्रेष्ठ प्रकृति की अभिव्यक्ति और अपनी सर्वज्ञता के बतौर, अल्लाह इस भौतिक ब्रह्मांड को एक "माया," "प्रतिबिंब," या "छवि" के रूप में पेश करता है। उसके सृजन की संपूर्णता

के परिणामस्वरूप मानव जाति कभी अपने मस्तिष्क के बाहर की दुनिया तक नहीं पहुंच सकेगी। सिर्फ अल्लाह वास्तविक भौतिक ब्रह्मांड के बारे में जानता है।

उपरोक्त आयत की एक अन्य व्याख्या यह है कि अल्लाह लगातार भौतिक ब्रह्मांड की छवियां बनाए रखता है जिसे लोग देखते हैं। (अल्लाह बेहतर जानता है।) अगर अल्लाह हमारे मस्तिष्क को विश्व की छवि नहीं दिखाना चाहता, हमारे लिए समूचे ब्रह्मांड का अस्तित्व खत्म हो जाएगा, और हम कभी इस तक नहीं पहुंच सकेंगे।

जबकि हम कभी भौतिक ब्रह्मांड के सीधे संपर्क में नहीं आ सकते तो इससे उस सवाल का जवाब मिलता है जो ढ़ेर सारे ला. `गों के दिमाग को मथता रहता है कि "अल्लाह ने कहा है"।

जैसाकि शुरू में उल्लेख किया जा चुका है, बहुत से लोग अल्लाह की ताकत को समझ नहीं पाते और इसलिए, उसके आसमान में कहीं मौजूद होने की कल्पना करते हैं जो दुनियावी मामलों में दखल नहीं देता। (वास्तव में अल्लाह उससे परे है।) यह तर्क इस कल्पना पर आधारित है कि ब्रह्मांड पदार्थ का एक संग्रह है जौर अल्लाह इस भौतिक विश्व से "बाहर" है।

हालांकि, जिस तरह हम कभी भौतिक ब्रह्मांड तक नहीं पहुंच सकते, और न ही हम उसके वास्तविक सार के सम्पूर्ण ज्ञान तक नहीं पहुंच सकते। हम बस जितना जानते हैं वह है सृष्टिकर्ता का अस्तित्व है जिसने तमाम चीजों को बनाया है – दूसरे शब्दों में, अल्लाह को। इस सच्चाई की अभिव्यक्ति करने में इस्लामी विद्वान इमाम रब्बानी ने कहा है कि सिर्फ परम हस्ती अल्लाह ही है; और उसको छोड़कर, बाकी सबका अस्तित्व प्रतिबिंब है।

ऐसा इसलिए कि जिस दुनिया को हम देखते हैं वह पूरी तरह हमारे मस्तिष्क में हैं, बाहरी जगत में इसके समरूप का सीधा अनुभव करना पूरी तरह असंभव है।

ऐसा होने पर, यह कल्पना करना गलत होगा कि अल्लाह किसी भौतिक ब्रह्मांड के "बाहर" है जिसे हम कभी हासिल नहीं कर सकते।

अल्लाह निश्चित रूप से "हर जगह" है और वह सभी को शामिल किए हुए है। कुरआन में इस हकीकत की व्याख्या इस प्रकार की गई है :

.......उसकी कुर्सी सब आसमानों और जमीनों को घेरे हुये है और उन दोनों (आसमान व जमीन) की निगरानी उस पर कुछ भी कठिन नहीं और वह आलीशान बुजुर्ग मरतबा है। (सूरत अल बक़रा : 255)

देखो ये लोग अपने परवरदिगार के रूबरू उपस्थित होने से शक में (पड़े) हैं सुन रखो वह हर चीज पर हावी है। (सूरत फुस्सिलत : 54)

यह हकीकत एक–दूसरी सूरत में इस तरह बयान की गई है कि अल्लाह किसी जगह पर सीमित नहीं है और वह तमाम चीजों का अहाता किए है (घेरे हुए है) :

(क्या) पूरब (क्या) पश्चिम दोनों खुदा ही के हैं, बस जहाँ कहीं किब्ले की तरफ रूख करो वहीं खुदा उपस्थित है निस्संदेह खुदा बड़ी गुंजाइश वाला और खूब वाकिफ (अभिज्ञ) है (सूरत अल बकरा : 115)

भौतिक अस्तित्व वाले अल्लाह को नहीं देख सकते; लेकिन अल्लाह पदार्थ को देख सकता है जिसका उसने उसके तमाम रूपों में सृजन किया है। कुरआन में इस हकीकत को इस तरह बयान किया गया है :

"(लौकिक) निगाहें उसे नहीं पातीं, परन्तु वह निगाहों को पा लेता है। वह अति सूक्ष्मदर्शी और खबर रखने वाला है।" (सूरा अल–अन'आमः 104)

अर्थात्, हम अपनी आंखों से अल्लाह के अस्तित्व की अनुभूति नहीं कर सकते, लेकिन हमारे अंदर और बाहर, हमारी दृष्टि और विचार पूरी तरह अल्लाह के दायरे में है। हम उसकी जानकारी के बगैर एक शब्द भी नहीं बोल सकते, और न ही सांस ले सकते हैं।

अपने जीवन के दौरान, जब हम उन अनुभूतियों से गुजरते हैं जिनकी कल्पना हम "बाहरी जगत" के रूप में करते हैं, तो हमसे सबसे निकट खुद अल्लाह होता है। कुरआन की इस आयत के रहस्य में यह हकीकत छिपी है :

"और बेशक हम ने ही इंसान को पैदा किया और जो खयालात उसके दिल में गुजरते हैं हम उनको जानते हैं और हम तो उसकी शहरग (कंठ की नाड़ी) से भी ज्यादा निकट हैं।" (सूरा काफ : 16)

जब कोई आदमी सोचता है कि उसका शरीर "पदार्थ" से बना हुआ है, तो वह इस महत्वपूर्ण तथ्य को नहीं ग्रहण कर सकता। अगर वह अपने मस्तिष्क को खुद के रूप में मानता है, तो वह यह स्वीकार करेगा कि "बाहरी जगत" करीब 20 से 30 सेंटीमीटर की दूरी पर शुरू होगी। लेकिन जब वह वह समझता है कि समस्त वस्तुएं जिसे वह पदार्थ समझता है, केवल उसके मस्तिष्क की अनुभूति है, तो कोई भी धारणा, जैसे बाहर या भीतर, दूर या निकट अपना अर्थ खो देगी। अल्लाह ने उसको दायरे में ले लिया और अल्लाह उसके बेहद नजदीक है।

अल्लाह इस आयत "(ऐ रसूल) जब मेरे बन्दे मेरा हाल तुमसे पूछे तो (कह दो कि) मै उन के पास ही हूँ ...." (सूरत अल बकरा : 186) से इंसान को बताता है कि वह उसके "बेहद निकट" है। एक दूसरी आयत इसी हकीकत को इस तरह बयान करती है : "निश्चित रूप से तुम्हारा अल्लाह लोगों का अहाता किए हुये है।" (सूरा अल–इस्रा : 60)

आदमी पथभ्रष्ट होता है अगर वह समझता है कि उसके सबसे निकट वह स्वयं है। वास्तव में, अल्लाह हमसे भी ज्यादा हमारे नजदीक है। उसने इस आयत में इस बिंदू की तरफ हमारा ध्यान आकर्षित किया है : "तो क्या जब जान गले तक पहुँचती है और तुम
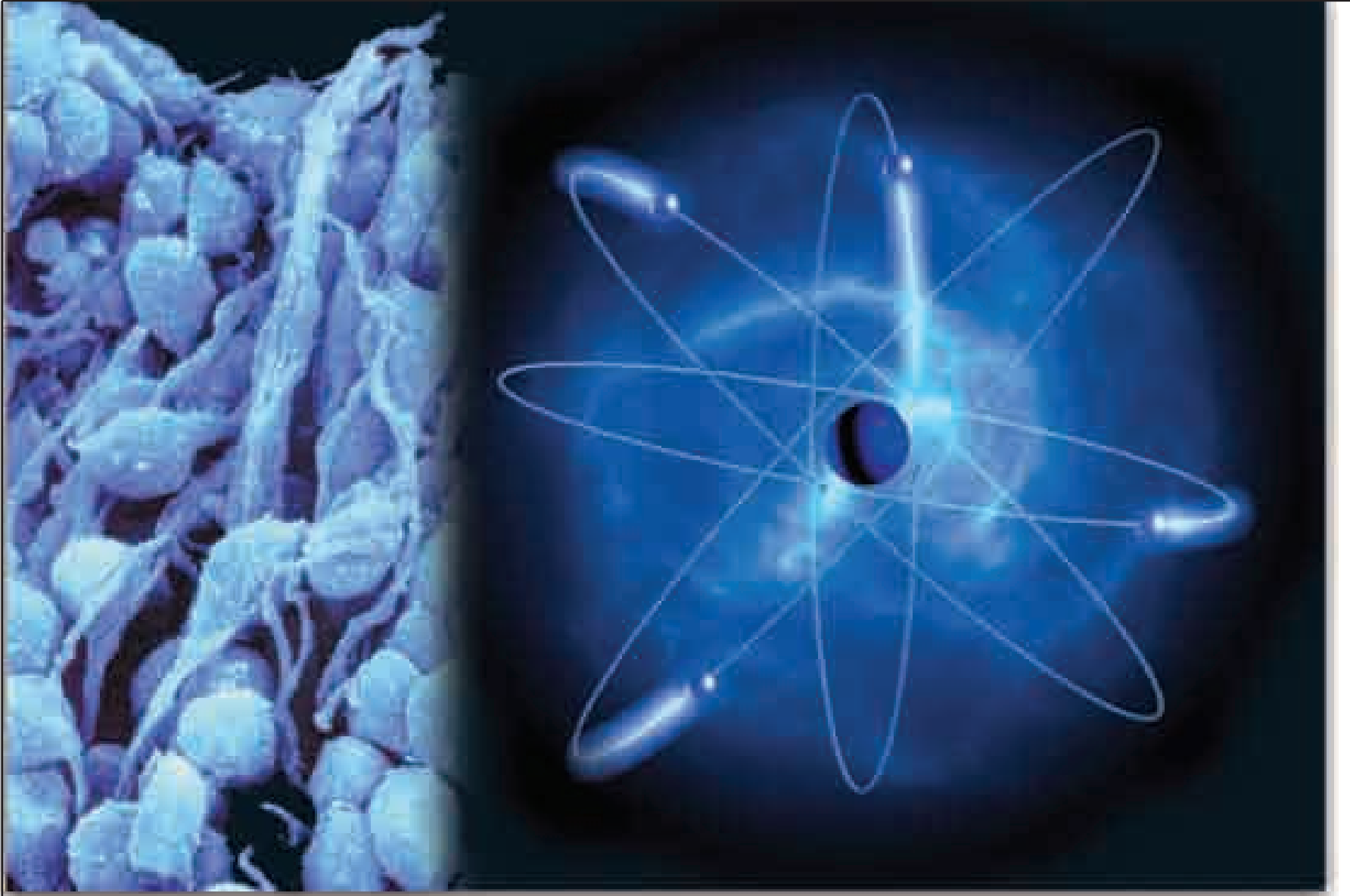
दिमाग़ कोशिकाओं का ढेर है, जो प्रोटीन और वसा अणुओं से बना होता है। यह न्यूरॉन नामक स्नायु कोशिकाओं से बनता है। मांस के इस टुकड़े में छवि के निरीक्षण, चेतना के निर्माण, या उस अस्तित्व के लिए कोई क्ति नहीं होती, जिसे हम 'खुद' कहते हैं। इससे आत्मा का अस्तित्व साफ़ तौर से देखा जा सकता है।

उस वक्त (क़ी हालत) को देखा करते हो और हम इस (मरने वाले) से तुमसे भी ज्यादा निकट होते हैं लेकिन तुमको दिखाई नहीं देता।" (सूरा अल–वाकियाः 83–85) हालांकि, लोग इस असाधारण तथ्य से अनभिज्ञ बने रहते हैं क्योंकि जैसा कि आयत में उजागर किया गया है, वे अपनी आंखों से इसे नहीं देख सकते।

दूसरी तरफ, इस व्यक्ति – जैसा की इमाम रब्बानी फर्माते हैं कि वह कुछ नहीं बस एक प्रतिबिंब अस्तित्व है, के लिए अल्लाह से स्वतंत्र होकर कोई शक्ति रखना असंभव है।

आयत "तुमको और जिसको तुम लोग बनाते हो (सबको) खुदा ही ने पैदा किया है।" (सूरा अस्–सफातः 96) दर्शाती है कि हर चीज जिसका हम अनुभव करते हैं, अल्लाह के नियंत्रण में होती है। कुरआन में, इस सत्य को इस आयत में इस तरह बताया गया है "जब तुमने तीर मारा तो तुमने कुछ नहीं मारा बल्कि खुद खुदा ने तीर मारा।" (सूरा अल–अनफाल : 17) में इस पर जोर दिया गया है कि कोई भी कृत्य अल्लाह ज्ञान से स्वतंत्र नहीं है। चूंकि हम मानव प्रतिबिंब अस्तित्व हैं, अल्लाह ने हम प्रतिबिंब अस्तित्वों को अनुभूति दे रखी है कि हम खुद से कार्य करते हैं। वास्तव में, यह अल्लाह है जिसके उपदेश से कोई भी कार्य कार्यान्वित होता है।

कोई व्यक्ति इस हकीकत को स्वीकार नहीं करना नहीं चाहता है। और वह खुद को अल्लाह से स्वतंत्र समझता रहे; लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।

जो तुम्हारे पास है मूलभूत रूप से भ्रमक है

यह स्पष्ट, वैज्ञानिक, और तार्किक है कि हमारा "बाहरी जगत" के साथ प्रत्यक्ष संपर्क में नहीं हैं, बल्कि उसकी एक प्रति के साथ हैं जिसे अल्लाह हमारी रूह के सामने लगातार पेश कर रहा है।

अगर तुम इस मुद्दे पर ईमानदारी और हिम्मत के साथ गौर करोगे, तो तुम जल्द ही पाओगे कि तुम्हारा घर, तुम्हारे फर्नीचर, तुम्हारी कार, तुम्हारा दफ्तर, जेवरात, तुम्हारा बैंक खाता, वार्डरोब, बीवी, बच्चे, सहयोगी – वास्तव में, हर वह चीज जो तुम्हारे पास है – तुम्हारे मस्तिष्क में वास करती है। तुम्हारे इर्दगिर्द की तमाम चीजें जिन्हें तुम देखते, सुनते या सूंघते हो – संक्षेप में, तुम्हारे पसंदीदा गायक की आवाज, जिस कुर्सी पर तुम बैठे हो उसकी सख्ती, इत्र जिसकी खुशबू तुम पसंद करते हो, सूरज जो तुम्हें गरम करता है, किसी फूल का खूबसूरत रंग, तुम्हारी खिड़की के पास से गुजरती चिड़िया, पानी पर तेजी से गुजरता स्पीडबोट, तुम्हारा हरा–भरा बाग, कंप्यूटर जिसका इस्तेमाल तुम अपने काम के लिए करते हो, दुनिया के आधुनिकतम प्रौद्यो.

यदि कोई उस सब पर गहराई से विचार करे, जो यहाँ कहा गया है, तो उसे पता चलेगा कि यह आश्चर्यजनक, असाधारण स्थिति खुद–ब–खुद होती हैः संसार ऐसा गोला है, जो केवल मानव के परीक्षण के लिए बनाया गया है। अपने समूचे संक्षिप्त जीवन के दौरान, लोगों का बोध के आधार पर परीक्षण होता है, जिसे ख़ास तौर से अलंकृत और आक क के रूप में प्रदर्शित किया जाता है। लेकिन वे कभी भी उन बोधों का सच्चा, मूल स्रोत का अनुभव नहीं कर सकते।

गिकी पर आधारित तुम्हारा हाई–फाई समेत तमाम चीजें जिनकी अपनी पांचों ज्ञानेंद्रियों से अनुभूति करते हो – इस "रेप्लिका वर्ल्ड" (प्रतिकृत जगत) का एक हिस्सा है।

यह हकीकत है, क्योंकि दुनिया का सृजन सिर्फ मनुष्य की परीक्षा के लिए किया गया है। अपनी सीमित जिंदगी में, हमारी परीक्षा बोधों से की जाती है जिनके मूल स्रोत तक हम कभी नहीं पहुंच सकते, जिनको जान–बूझ कर आकर्षक बनाया गया है। इस हकीकत को कुरान में बयान किया गया है :

दुनिया में लोगों को उनकी चाह की चीजें (यानी) बीवियों और बेटों और सोने चांदी के बड़े–बड़े ढ़ेरों और उम्दा घोड़ों, पशुओं और खेती को शोभायमान बना दिया गया है। ये सब सांसारिक जीवन के (कुछ दिन के) फायदे हैं और (हमेशा का) अच्छा ठिकाना तो खुदा ही के पास है। (सूरा आले इमरान : 14)

ढ़ेर सारे लोग संपत्ति, दौलत के अंबार, सोने और चांदी के ढ़ेर, जेवरात, बैंक खातों, क्रेडिट कार्ड, डिजाइनर कपड़े, नए मॉडल की कार – संक्षेप में तमाम तरह की खुशहाली जो उनके पास होती है या जिसे पाने के लिए वह कठिन प्रयास करते हैं, कि लालच के लिए धर्म को छोड़ देते हैं। वे परलोक को भूलकर सिर्फ इस संसार को ही केन्द्रीकरण का विषय बनाते हैं। वे संसार की खूबसूरती और आकर्षण से छले जाते हैं, और नमाज अदा करने, गरीबों–मोहताजों को खैरात देने और इबादत करने में नाकाम रहते हैं जो 'परलोक' में उनको खुशहाली देगी। वे बहाने करते हैं और कहते हैं, "मुझे कई काम करने हैं," "मेरे आदर्श हैं," "मेरी अपनी जिम्मेदारियां हैं," "मेरे पास वक्त नहीं है," "मुझे कई काम पूरे करने हैं," "मैं उन्हें बाद में कर लूंगा।" वे इस दुनिया में खुशहाल बनने की कोशिश में अपनी सारी जिंदगी लगा देते हैं। इस आयत, "ये लोग बस सांसारिक जीवन की बाह्य हालत को जानते हैं और ये लोग परलोक से बिल्कुल लापरवाह हैं।" (सूरा अर–रूम : 7)" में इस भ्रम का उल्लेख किया गया है।

इस अध्याय में जिस सत्य का सामना किया गया है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह तमाम प्रलोभनों और सीमाओं को निरर्थक बना देता है। यह इस तथ्य का साफ तौर पर सत्यापन करता है कि लोग जिन तमाम चीजों को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करते हैं, लालच से जमा की गई दौलत, उनके बच्चे जिन पर उनको घमंड है, उनकी बीवी या शौहर जिसे वह अपने सबसे निकट समझता है, उनके सबसे प्यारे दोस्त, उनके ऊंचे ओहदे, स्कूल जहां उन्होंने अपनी पढ़ाई पूरी की, छुट्टियां जिनका वे आनंद लेते हैं और जो समय उन्होंने बिताए हैं सब बेकार साबित होते हैं।

कुछ लोग अनजाने में बेवकूफी करते हैं जब वे अपनी दौलत और जायदाद की, और अपनी नौकाओं, हेलीकाप्टरों, फैक्टरियों, पूंजी, महलों और जमीनों की डींगें हांकते हैं जैसे कि उनकी अपनी मूल संपत्ति–जायादात के साथ कभी कोई प्रत्यक्ष संपर्क रहा है। वे धनवान जो अपने पोतों पर यहां–वहां जा सकते हैं, अपनी कारों की नुमाइश करते हैं, अपनी दौलत का प्रचार करते फिरते हैं, खुद को दूसरे सभी लोगों से उच्च मानते हैं। एक बार जब वे महसूस कर लेंगे कि वे किसी और चीज की नहीं बल्कि अपने मस्तिष्क की छवियों के बारे में डींगें हांक रहे हैं तो वे खुद को किस हालत में पाएंगे?

अपने अनेक सपनों में, वे वास्तव में स्वयं को गगनचुंबी भवनों, फर्राटेदार कारों, कीमती जेवरों, हरे नोटों की गड्डियां, सोने और चांदी के अंबारों के मालिक के रूप में पाते हैं। अपने सपने में उनके पास ऊंचे ओहदे होते हैं, अपनी फैक्टरियां होती हैं जिनमें हजारों मजदूर काम कर रहे होते हैं, हजारों के ऊपर शासन करने की उनके पास शक्ति होती है, और वे ऐसे कपड़े पहनते हैं जिनकी सब सराहना करते हैं। लेकिन जिस तरह सपने की अपनी जमीन–जायदाद पर डींगें हांकने से अकसर मजाक का निशाना बनना पड़ता है, निश्चित रूप से उन छवियों से जिनसे वह खुद को जोड़ता है उसे उसी तरह मजाक का निशाना बनना पड़ेगा। आखिरकार, वह जो सपने में देखता है, और वह इस दुनिया में जिससे खुद को जोड़ता है दोनों उसके मस्तिष्क की महज छवियां हैं।

इसी तरह, जब लोग सच्चाई को महसूस करते हैं, तो वे सांसारिक मामलों के अपने अनुभवों पर जिस तरह प्रतिक्रिया करते हैं उससे उनको शर्मिंदा होना चाहिए। वे जो आपस में भीषण संघर्ष करते हैं, जो दूसरों के साथ गलत व्यवहार करते हैं, जो उनको गालियां देते हैं ओर पीटते हैं, जो अपने ऊंचे पदों पर जान देते हैं, जो जलते हैं और दिखावा करते हैं, जो अपने आप को दूसरों से ऊपर जताते हैं – सभी लोग शर्म करेंगे जब उन्हें महसूस होगा कि उन्होंने भ्रम के चलते यह सब किया।

चूंकि अल्लाह ने समूचा ब्रह्मांड बनाया और व्यक्तिगत रूप से सभी इंसान पर इसे उजागर किया, इस दुनिया की तमाम जमीन–जायदाद का आखिरी मालिक अकेले अल्लाह है। इस हकीकत को कुरान में उजागर किया गया है :

और जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ जमीन में है (ग़रज़ सब कुछ) खुदा ही का है और खुदा ही सब चीजों को (अपनी) कुदरत से घेरे हुए है (सूरा अन–निसा : 126)

उन चीजों के लगाव के लिये धर्म को दरकिनार करना बड़ी मूर्खता होगी जिनके मूल पदार्थों तक कोई कभी नहीं पहुंच सकता, और इस तरह शाश्वत जीवन खो देता है।

इस बिंदु पर, यह आत्मसात करना महत्त्वपूर्ण है कि जिस सत्य पर हम गौर कर रहे हैं उसका यह मतलब नहीं है कि स्वामित्व की तमाम चीजें, दौलत, बच्चे शौहर या बीवी, पद, हैसियत जिनके लिए लोग कठिन प्रयास करते हैं, जो भविष्य में खत्म हो जाएंगे, और इसलिए ये निरर्थक हैं। बल्कि, यह निश्चित रूप से सामने आता है कि वास्तव में लोगों के पास अपने स्वामित्व वाली किसी चीज के साथ कोई सीधा संपर्क नहीं होता। वे महज छवियों से बनी अनुभूतियां हैं जिन्हें वे अपने मस्तिष्क के अंदर से देखते हैं और जिन्हें अल्लाह उनकी परीक्षा लेने के लिए दिखाता है।

हालांकि कोई इस हकीकत को सीधे स्वीकार करना नहीं चाहे और वह यह मानकर अपने को धोखा देना चाहे कि उसकी सभी जमीन–जायदाद अस्तित्व रखती हैं, उसे अंततः मरना है। जब कयामत में उसे जिलाया जाएगा, तमाम चीजें साफ हो जाएंगी और "निगाह तेज होगी।" (सूरा काफ : 22) उस दिन, वे सभी चीजों को ज्यादा साफ तरीके से देखने के योग्य होगा। अगर उसने अपना जीवन काल्पनिक उद्देश्यों के पीछे भागते हुए व्यतीत किया होगा, तो वह तमन्ना करेगा कि वह यह जीवन कभी नहीं जिया होता, और कहेगा "आह! क्या उसने (मौत ने) मेरा अंत कर दिया! अपनी दौलत से मुझे कोई लाभ नहीं पहुंचा! मेरी शक्ति खत्म हो गई!" (सूरा अल–हाक्का : 27–29) दूसरी तरफ बुद्धिमान आदमी को, जब उसके पास वक्त है, यहां इस धरती पर ब्रह्मांड की इस बड़ी हकीकत को समझने की कोशिश करनी चाहिए। अन्यथा, वह जीवन भर सपनों के पीछे भागता रहेगा और आखिर में उसकी सख्त सजा पाएगा। कुरआन में उन लोगों की आखिरी हालत का बयान इस तरह किया गया है जो सपनों (मरीचिकाओं) के पीछे भागते हैं और अल्लाह को, हमारे सृष्टिकर्ता को, भूल जाते हैं :

और जिन लोगों ने कुफ्र को अपनाया, उनके कर्म (ऐसे हैं) जैसे एक चटियल मैदान का चमकता हुआ बालू कि प्यासा उसको दूर से देखे तो पानी ख्याल करता है यहाँ तक कि जब उसके पास आता है तो उसको कुछ भी नहीं पाता (और प्यास से तड़प कर मर जाता है)। लेकिन खुदा को उसने अपने पास मौजूद पाया तो अल्लाह उसे बदला दे देगा। और अल्लाह तो बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (सूरा अन–नूरः 39)

भौतिकवादियों की तार्किक कमजोरियां

इस अध्याय में प्रारंभ से ही स्पष्ट तौर पर कहा गया है कि पदार्थ परम नहीं है, जैसा कि भौतिकवादी दावा करते हैं, बल्कि वह एक प्रतिबिंब है जिसे अल्लाह शून्य से सृजित करता है और जिसके मूल तक हम कभी नहीं पहुंच सकते। अत्यंत हठधर्मिता से, भौतिकवादी इस स्पष्ट सत्य का प्रतिरोध करते हैं जो उनके दर्शन को नष्ट कर देती है और उसके खंडन के लिए निराधार दावों को आगे लाता हैं।

उदाहरण के लिए, एक कट्टर मार्क्सवादी और भौतिकवादी दर्शन के बीसवीं सदी के बड़े वकीलों में से एक जार्ज पोलिटज़र ने यह साबित करने के लिए "बस की मिसाल" के तौर पर सबसे बड़ा सबूत दिया कि वह पदार्थ के मूल तक पहुंच सकता है। पोलिटजर के अनुसार, आदर्शवादी दार्शनिक भी भाग गए जब उन्होंने देखा कि कोई बस उनको कुचलने वाली है, और यह साबित करता है कि वे पदार्थ की वास्तविकता से रुबरु हैं।198

एक अन्य मशहूर भौतिकवादी, सेमुएल जानसन, को बताया गया कि कोई वास्तविक पदार्थ तक नहीं पहुंच सकता, और उन्होंने यह "साबित" करने के लिए उनमें से एक को ठोकर मारी कि वह पत्थरों के सार से संपर्क कर सकता है।199

इसी तरह का एक उदाहरण फ्रेड्रिक एंजेल्स ने दिया है जो पोलिटज़र के गुरू हैं और जिन्होंने कार्ल माक्र्स के साथ मिल कर द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की स्थापना की है। वह लिखते हैं कि "अगर हम जो केक खाते हैं वह महज अनुभूति है, तो उनसे हमारी भूख नहीं मिटनी चाहिए।"

इसी तरह के उदाहरण मार्क्स, एजेंल्स, लेनिन और अन्य प्रसिद्ध भौतिकवादियों की किताबों में हैं, जिनमें इस तरह के अविवेकपूर्ण वाक्य है, "आप पदार्थ के अस्तित्व को समझते हैं जब आपके चेहरे पर थप्पड़ मारा जाता है।"

भौतिकवादियों के इस तथ्य की व्याख्या कि "हम तत्व में मूल में नहीं पहुंच सकते हैं" उनकी संकुचित समझ का नतीजा है जिसका कारण उनका केवल दृष्टि की ज्ञानेन्द्री पर निर्भर रहना है। वह समझते हैं कि किसी चीज का बोध करना केवल दृष्टि तक सीमित है या सिर्फ स्पर्श करने पर हम सिर्फ पदार्थ के मूल तक पहुंच सकते हैं। बस से किसी आदमी के टक्कर होने पर लोग कहेंगे, "देखो, इसने उसे टक्कर मार दी! इसलिए वह मूल से रुबरु हुआ।" वे यह नहीं समझते कि किसी टक्कर के वक्त की तमाम अनुभूतियां – कठोर धातु, टक्कर का बल, दर्द – वास्तव में मस्तिष्क में निर्मित होता है।

सपने की मिसाल

वास्तविकता यह है कि पांच ज्ञानेन्द्रियों में से जिस किसी को हम आरंभ बिंदू के रूप में लें, हम बाहरी जगत के मूल तक नहीं पहुंच सकते जो हम से बाहर अस्तित्व में होता है। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण यह है कि हम जिस तरह चीजों के अस्तित्व के बारे में कल्पना करते हैं वह वास्तव में हमारे सपनों में नहीं होता। सपनों मे हम बहुत यथार्थवादी घटनाओं का अनुभव कर सकते हैं। हम सीढ़ियों से गिर सकते हैं और टांग तुड़वा सकते हैं, हमारे साथ बड़ी कार दुर्घटना हो सकती है, हम बस के नीचे आकर कुचले जा सकते हैं, और खूब खाकर संतुष्टि का अनुभव कर सकते हैं। आम दिन की घटनाओं की तरह ही उन घटनाओं का अनुभव सपनों में हो सकता है, यह घटनाएं उसी तरह विश्वसनीय और उसी तरह की भावनाओं को जगाने वाली होती है।

बस के नीचे कुचले जाने का सपना देखने वाला कोई आदमी अपनी आंख किसी अस्पताल में खोल सकता है – एक बार फिर सपने में ही – और महसूस कर सकता है कि वह अपंग हो गया है। लेकिन यह सब सपना ही रहेगा। साथ ही, वह किसी कार दुर्घटना में मरने का सपना देख सकता है, कि मौत के फरिश्ते उसकी रूह निकाल रहे हैं, और परलोक की उसका जीवन शुरू हो गया है।

छवियां, आवाजें, सख्ती का एहसास, दर्द, प्रकाश, रंग – उसके मस्तिष्क में अनुभव की जाने वाली घटना से जुड़ी तमाम अनुभूतियां – का बोध बहुत तीव्रता से होता है। वे वास्तविक जीवन जैसे ही असली प्रतीत होते हैं। सपने में वह जो केक खाता है उसे तृप्त करता है, हालांकि यह महज एक अनुभूति होती है, तृप्त होने की भावना भी एक अनुभूति है। हालांकि उस क्षण वह आदमी बिस्तर पर लेटा है। कोई सीढ़ी, कोई यातायात, कोई बस, कोई केक नहीं है, क्योंकि सपना देखने वाला अनुभूतियों और भावनाओं का अनुभव करता है जिनका बाहरी जगत में कोई अस्तित्व नहीं होता। यह तथ्य कि हमारे सपने हमें अभौतिक, बाहरी संबद्धता की घटनाएं दिखाते हैं, साफ तौर पर उजागर करता है कि "वहां बाहर की दुनिया" ऐसी है जिसके वास्तविक सार को हम कभी नहीं जान सकेंगे। हम उस दुनिया की वास्तविक प्रकृति को सर्वशक्तिमान ईश्वर के प्रकटन से ही जान सकते हैं जिसने इसकी संरचना की है।

जो भौतिकवादी दर्शन मानते हैं, खास तौर पर मार्क्सवादी, वे सच्चाई बताए जाने पर नाराज होते हैं। वे मार्क्स, एंजेल्स, या लेनिन के सतही, अज्ञानी तर्कों को दोहराते हैं या फिर भावुक घोषणाएं करते हैं।

हालांकि, उन्हें समझना चाहिए कि वे ये घोषणाएं सपने में भी कर सकते हैं। वे दास कैपिटल पढ़ने का, बैठकों में हिस्सा लेने का, और यहां तक कि धक्कम–मुक्की में शामिल होने के दर्द का सपना देख सकते हैं। जब पूछा जाए – उनके सपने में– तो वे उसी तरह समझेंगे कि वे जो देख रहे हैं वह अंतिम सच है जिस तरह जागते में समझते हैं। लेकिन उन्हें समझना चाहिए कि हर चीज जिसका वह अनुभव करते हैं – चाहे वह सपना में हो या रोजाना की जिंदगी में, उसमें उन्हें सिर्फ अनुभूतियां होती हैं जिनके "वास्तविक" स्रोत तक वह कभी नहीं पहुंच सकते।

किसी साझे स्नायुतंत्र की मिसाल

आओ पोलिटज़र की कार की टक्कर वाले उदारहण पर गौर करें : अगर घायल व्यक्ति की पांच ज्ञानेंद्रियों से उसके मस्तिष्क में जाने वाली स्नायु को किसी अन्य व्यक्ति के – पोलिटज़र के, मिसाल के तौर पर– समांतर जोड़ दिया जाए तो जिस क्षण बस उस व्यक्ति को टक्कर मारेगी, घर में बैठे पोलिटजर को उसका असर महसूस होगा। पोलिटजर को वे तमाम अनुभव होंगे जो दुर्घटना से गुजरने वाले व्यक्ति को होंगे, ठीक उसी तरह से जैसे एक ही टेप रिकार्डर से जुड़े दो भिन्न लाउडस्पीकरों से एक ही गीत बजता। पोलिटजर बस के ब्रेक लगने की आवाज सुनेगा, अपने शरीर पर उसका संघात महसूस करेगा, एक टूटी बांह और बिखरते लहू का दृश्य देखेगा, हड्डियों के टूटने का दर्द महसूस करेगा, उसे आपरेशन थियेटर में प्रवेश करने, चढ़ाए जा रहे प्लास्टर की कठोरता, और ठीक होती बांह की कमजोरी की अनुभूति होगी।

पोलिटज़र की तरह, उस व्यक्ति की स्नायु से जुड़ा हर व्यक्ति शुरू से अंत तक दुर्घटना का अनुभव करेगा। अगर दुर्घटना का शिकार आदमी कोमा में चला जाता है, तो उसी तरह हर कोई चला जाएगा। इसके अलावा, अगर कार दुर्घटना से जुड़ी तमाम अनुभूतियों को

किसी उपकरण में रिकार्ड कर लिया जाए, और किसी आदमी में उसे लगातार प्रेषित की जाए, तो बस उस व्यक्ति को बार बार टक्कर मारती रहेगी।

लेकिन बस के साथ टक्कर खाने वाले दो लोगों में से कौन वास्तविक है? इस सवाल पर, भौतिकवादी दार्शनिकों का कोई सुसंगत जवाब नहीं है। सही जवाब यह है कि उनमें से सभी ने कार दुर्घटना का अनुभव, उसके पूरे विस्तार के साथ, अपने मस्तिष्क में किया।

यह नियम हमारे दूसरे उदाहरणों पर भी लागू होता है। अगर केक खाने के बाद पेट भरे होने का अनुभव करने वाले एंजेल्स की संवेदी स्नायु, किसी दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क से जोड़ दिया जाए, तो जब एंजेल्स केक खाना पूरा कर चुकेगा वह व्यक्ति भी अपना पेट भरा हुआ महसूस करेगा। अगर पत्थर को जोरदार टक्कर मारने के बाद दर्द महसूस करने वाले भौतिकवादी जानसन की स्नायु किसी दूसरे व्यक्ति से जोड़ दी जाए, तो दूसरा व्यक्ति भी महसूस करेगा कि उसने खुद पत्थर पर टक्कर लगाई है और वह वैसा ही दर्द महसूस करेगा।

तो कौन–सा केक या पत्थर वास्तविक है? एक बार फिर भौतिकवादी दर्शन कोई सुसंगत जवाब देने से चूक जाता है। सही, सुसंगत जवाब यह है कि एंजेल्स और दूसरे आदमी दोनों ने अपने मस्तिष्क में केक खाया और तृप्ति पाई, जानसन और दूसरे व्यक्ति दोनों ने पत्थर पर टक्कर मारने का पूरा अनुभव किया – एक बार फिर अपने मस्तिष्क में।

अपने पिछले उदाहरण में, हम एक अदला–बदली कर लेते हैं : बस की टक्कर का शिकार बने व्यक्ति की स्नायु को पोलिटज़र के मस्तिष्क से जोड़ दें, और अपने घर में बैठे पोलिटजर की स्नायु को दुर्घटना का शिकार बने व्यक्ति के मस्तिष्क से जोड़ दें। इस मामले में, पोलिटज़र को लगेगा कि बस ने उसे टक्कर मारी है, लेकिन जो व्यक्ति बस की टक्कर का शिकार बना है, वह कभी इस टक्कर को महसूस नहीं करेगा और उसे लगेगा कि वह पोलिटजर के घर में बैठा है। बिल्कुल यही तर्क केक और पत्थर के उदाहरणों में भी लागू किया जा सकता है।

इन सभी से उजागर होता है कि भौतिकवाद वास्तव में कितने हठधर्मी हैं। इनका दर्शन इस अवधारणा पर आधारित है कि पदार्थ के अतिरिक्त किसी चीज का अस्तित्व नहीं है। हालांकि वास्तविकता यह है कि कोई भी पदार्थ के साथ कभी प्रत्यक्ष संपर्क का अनुभव नहीं कर सकता और न ही यह प्रतिपादित कर सकता है कि सभी चीज इस पर आधारित है। जिस ब्रह्मांड से हमारा संपर्क होता है वह हमारे मस्तिष्क में अनुभूति किया गया ब्रह्मांड है। प्रसिद्ध ब्रिटिश दार्शनिक डेविड ह्यूम ने इस बिंदू पर अपने विचार पेश किए हैं :

अपनी ओर से, जब मैं प्रगाढ़ ढंग से उसमें प्रवेश करता हूं जिसे मैं स्वयं कहता हूं, मैं हमेशा गरमी या ठंडक, रोशनी या छाया, प्यार या नफरत, दर्द या खुशी की कुछ खास अनुभूति या अन्य अनुभूति पर लड़खड़ा जाता हूं। मैं कभी किसी समय बिना किसी अनुभूति के खुद को पकड़ नहीं सकता हूं, और न ही कभी अनुभूति के सिवा किसी अन्य चीज का अवलोकन कर सकता हूं।201

हम कभी इन अनुभूतियों के बाहर विचर नहीं सकते और पदार्थ से उस तरह रुबरु नहीं हो सकते जिस तरह वह "वास्तव" में है। इस तरह, किसी चरम अस्तित्व के रूप में पदार्थ के बारे में किसी दर्शन का निर्माण करना पूरी तरह अविवेकपूर्ण है एक सिद्धांत के रूप में ठीक अपनी शुरूआत से ही भौतिकवाद पूरी तरह निराधार है।

मस्तिष्क में प्रत्यक्ष बोध का निर्माण दर्शन नहीं है, बल्कि वैज्ञानिक सत्य है

भौतिकवादियों का दावा है कि हमने यहां जो कुछ बताया है, वह एक दार्शनिक विचार है। लेकिन स्पष्ट वैज्ञानिक सत्य यह है कि हम "बाह्य" भौतिक जगत के साथ संपर्क नहीं कर सकते, हम मात्र अपने मस्तिष्क में उपस्थित विश्व के साथ संपर्क कर सकते हैं। यह दर्शन का विषय नहीं है। सभी मेडिकल स्कूलों में विस्तृत रूप से यह पढ़ाया जाता है कि मस्तिष्क में किस तरह से प्रतिबिंब और संवे. दनाएं बनती हैं। बीसवीं सदी के विज्ञान, विशेषकर, भौतिकी द्वारा सिद्ध तथ्य स्पष्ट रूप से यह दर्शाया गया है कि हम भौतिक या प्राकृतिक पदार्थ के मूल तक कभी नहीं पहुंच सकते। इसका तात्पर्य यह है कि हर कोई अपने मस्तिष्क में "मॉनीटर" को देख रहा है।

विज्ञान में विश्वास रखने वाले हर किसी को, चाहे वह नास्तिक हो या फिर बौद्ध धर्म को या किसी और धर्म को मानने वाला हो, इस सत्य को स्वीकारना ही होगा। यहां तक कि ईश्वर के अस्तित्व को नकारने वाला भौतिकवादी भी इस वैज्ञानिक सत्य को नकार नहीं सकता।

कार्ल मार्क्स, फ्राइडरिच इंजिल्स, जॉर्ज पुलितज़र और अन्य विद्वान इस प्रकार के सरल और सुस्पष्ट सत्य को कभी नहीं समझ पाये। उनका वैज्ञानिक समझ का स्तर प्रारंभिक और अपर्याप्त था। हमारा उच्च उन्नत विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने इस स्पष्ट सत्य को समझना अधिक आसान बना दिया है। दूसरी ओर इस सत्य को आंशिक रूप से समझते हुए भी और साथ ही यह महसूस करते हुए कि यह उनके दर्शन को किस प्रकार से ध्वस्त करता है, भौतिकवादी भय के मारे अचेत बन जाते हैं।

भौतिकवादियों का भय

कुछ समय तक तुर्की के भौतिकवादी गुटों ने इस किताब में उल्लेखित विषय के सम्बन्ध में कोई खास प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं की, जिससे हमें ऐसा लगा कि हमें हमारे बिन्दु को स्पष्ट करने में कोई कमी रह गई है और यह और अधिक स्पष्टिकरण चाहता है। हालांकि कुछ समय पूर्व, यह स्पष्ट होने लगा कि भौतिकवादी इस विषय की लोकप्रियता को लेकर अपने आपको असुरक्षित महसूस करते हैं और इसके अतिरिक्त, इन सारी बातों को लेकर वे काफी भयभीत भी हैं।

कुछ समय बाद, भौतिकवादियों ने अपने प्रकाशनों, सम्मेलनों और चर्चाओं में अपने भय और चिंता को बड़े पैमाने पर प्रकाशित करना आरंभ कर दिया। उनके आंदोलन, व्यर्थ प्रयास इस बात का प्रमाण है कि वे गंभीर प्रज्ञात्मक संकट से ग्रसित थे। वे अपने

तथाकथित वैज्ञानिक दर्शन पर आधारित क्रमिक–विकासवाद के सिद्धांत की विफलता से पहले से ही चिंतित थे। अब उन्हें एक और बड़ा झटका लगा। वे यह समझने लगे कि पदार्थ के पूर्ण आधिपत्य में वे अपना विश्वास खोते जा रहे थे। यह उनके लिए, डार्विनवाद से भी ज्यादा मुख्य आधार था। उन्होंने घोषणा की कि उनके लिए, यह समस्या एक बड़ा खतरा है और इससे उनका सांस्कृतिक ढांचा पूर्ण रूप से ढह भी सकता है।

एक विद्वान और लेखक, रेनॉन पेकुनलू ने बिलिम वी यूटोप्या (विज्ञान और यूटोप्या) पत्रिका में खुलेआम कहा कि भौतिकवादी समाज कुंठा और भय से पीड़ित है। जबकि यह माना जाता है कि 'बिलिम वी यूटोप्या' भौतिकवाद का समर्थन करती है। बिलिम वी यूटोप्या में प्रक. ाशित लेखों और अपनी चर्चाओं में भी उन्होंने हमारी पुस्तक दी इवैल्यूशन डिसीट को सबसे बड़ा खतरा बताया। डारविनवाद को अमान्य साबित करने वाली इस पुस्तक के अध्यायों से अधिक पेकुनलू को इस अध्याय जिसे अभी आप पढ़ रहे हैं, ने परेशान कर दिया। पेकुनलू ने अपने मुट्ठी भर पाठकों की भर्त्सना की और कहा कि वे आदर्शवाद के मतारोपण द्वारा चलाये जा रहे इस अभियान से प्रभावित न हों। भौतिकवाद में ही अपना विश्वास बनाये रखने को कहा। उन्होंने इसके लिए रूस के रक्तपाती कम्यूनिस्ट क्रांति के नेता व्लादीमीद आई लेनिन का संदर्भ दिया। उन्होंने हर एक को लेनिन की सौ साल पुरानी पुस्तक मटिरियलिज़म ऐन ऐम्पिरियो क्रिटीसिज़म पढ़ने की सलाह दी। पेकुनलू ने बार–बाद लेनिन की सलाह दोहराई कि "इस मामले पर अधिक न सोचे, वरना आप भौतिकवाद के रास्ते से हट जाएंगे और धर्म की ओर आकर्षित होंगे"। उक्त पत्रिका में प्रकाशित अपने लेख में पेकुनलू ने लेनिन की निम्न पंक्तियों का उदाहरण दिया :

एक बार आप अनुभूति द्वारा दी हुई पदार्थपरक वास्तविकता से इंकार करते हैं, तो आप फाइडीज्म (मात्र धर्म में विश्वास रखना) के विरुद्ध हर तरह का हथियार खो चुके होंगे और आप आज्ञेयवाद (यह धारणा की खुदा के बारे में कुछ भी जाना नहीं जा सकता है।) या सापेक्षतावाद (यह धारणा की ज्ञान बोध का कोई भी स्रोत सम्पूर्ण नहीं है जो किसी मूल सत्य तक पहुंचा सके) सापेक्षतावाद में फंस चुके होंगे और फाइडीज्म भी यही चाहता है। सिर्फ एक छोटा–सा छेद पूरे जहाज को डुबा देगा और हमारे सारे माचिस्ट (माचिज्म के अनुयायी, आधुनिक प्रत्यक्षवाद दर्शन) आदर्शवाद में बहक गये, वह भी एक कमज़ोर और संकुचित फाइडिज्म में। वे उस समय नहीं बहके, जब बाह्य विश्व की "अनुभूति" को प्रतिबिंब के रूप में नहीं लिया गया। बल्कि इसे विशेष "घटक" के रूप में लिया गया। यह किसी की भी अनुभूति, किसी का भी मस्तिष्क, किसी की भी आत्मा, किसी की भी इच्छा नहीं हैं।202

ये शब्द इस सत्य को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं कि लेनिन ने खतरे का अनुभव किया और उस खतरे से खुद निकलना चाहा और यह वो अपने "काम्रेड" के दिमाग से भी निकालना चाहते थे। उसी तरह, इससे समकालीन भौतिकवादियों के मन में भी अशांति फैली। लेकिन पेकुनूल और अन्य भौतिकवादियों की चिंता और बढ़ गई। क्योंकि उन्हें यह पता है कि यह सत्य अब तेज़ी से फैल रहा है और इसे सौ साल पूर्व की अपेक्षा अब बेहतर ढ़ंग से व्यक्त किया जा रहा है। पहली बार, इस विषय को वास्तव में अखंडनीय रूप में स्पष्ट किया जा रहा है।

फिर भी, खामोशी से, भौतिकवादी वैज्ञानिकों की एक बड़ी संख्या ने यह सत्य कि, पदार्थ पास कोई भी पहुंच नहीं सकता, के विरुद्ध ओछा तरीका अपना रखा है एक आदमी के सामने जो सबसे दिलचस्प और महत्त्वपूर्ण विषय अगर कोई आ सकता है तो वह यह विषय है। ऐसा बहुत कम संभव है कि यह विषय इन वैज्ञानिकों के सामने से नहीं गुजरा है। लेकिन वे अपने भाषणों और लेखों में जिस तरह का रुख ओर प्रतिक्रियाएं देते हैं, उससे यह प्रतीत होता है कि वास्तव में इनकी समझ कितनी उथली और बनावटी है।

कुछ भौतिकवादियों की प्रतिक्रिया दिखाती है कि भौतिकवाद के प्रति अंधे मोह ने उनके तर्क को प्रेरित किया और उन्हें विषय को समझने से अलग कर दिया। उदाहरण के रूप में अलाएद्दीन सेनेल जैसे एक अकादमिक एवं 'बिलिम वे यूटोपिया' के लेखक रेनन पे. कुनलु – कहते हैं, "डारविनवाद के ध्वंस को भूल जायें, वास्तविक खतरनाक मुद्दा तो यह है" और मांग की, "आप जो कहते है उसे सिध्द करें।" उन्हें यह आभास हो गया था कि उनका अपना दर्शन ही बिना किसी आधार का है। इससे भी रुचिकर यह है कि इस लेखक ने यह खुलासा करने वाली पंक्तियां लिखी कि जिसे वे बड़े खतरे के रूप में देख रहे हैं उसे खुद ही नहीं समझ पाये।

मसलन, एक लेख में सेनेल इस विषय पर विशेष रूप से विचार करते हुए स्वीकार करते हैं कि दिमाग बाहरी जगत को एक छवि के रूप में लेता है। लेकिन उसके बाद वह यह दावा करते हैं कि छवियों को दो श्रेणियों में बांटा जा सकता हैः वे जिनका आपस में भौतिक सहसम्बध होता है और जिनका किसी के साथ नहीं होता है; तथा यह कि हम वास्तव में बाहरी जगत से सम्बध्द छवि के भौतिक सहसम्बध तक पहुंचते हैं। इस दावे के समर्थन में, वे लिखते हैं, "मैं नहीं जानता कि मेरे दिमाग की कल्पनाओं का बाहरी जगत से कोई संबंध है या नहीं, लेकिन यह बात तब लागू होती है जब मैं टेलीफोन पर बात करता हूं। जब मैं टेलीफोन पर बात करता हूं, मैं बात कर रहे शख्स को देख नहीं सकता लेकिन बाद में उससे आमने–सामने होने पर मैं इस बातचीत की पुष्टि कर सकता हूं।203

जब कोई खिड़की के बाहर दृश्य देखता है, तो वह वास्तव में अपने से बाहर किसी छवि को नहीं देखता, अपितु, उस छवि को देखता है, जो उसके दिमाग के दृश्य से संबंधित है।

जो प्रकाश व्यक्ति की आँखों में पहुँचता है वह आँख की को. शिकाओं द्वारा विद्युत सिग्नलों में बदला जाता है और दिमाग के पीछे दृश्य केंद्र में भेजा जाता है। हमारे दिमाग़ के भीतर "चेतना" विद्युत सिग्लन प्राप्त करती है, जो हमारे दिमाग में पहुँचते हैं, और उनका दृश्य के रूप में बोध करते हैं।

इस तरह, उनका मतलब था कि अगर हमें बोध पर संशय हो तो हम उनके मूल पर निगाह डाल वास्तविकता की जांच कर सकते हैं। यह एक स्पष्ट रूप से गलत धारणा है, हालांकि हमारे लिये इस मामले तक पहुंचना असंभव है। हम जो 'बाह्य' है, उस तक पहुंचने के लिये अपने दिमाग से बाहर जा ही नहीं सकते। फोन पर आवाज क्या यथार्थ से कोई सहसंबंध रखती है या नहीं? हम इसकी पुष्टि तो उस व्यक्ति से मिलकर कर सकते हैं जिससे हमने बात की। हालांकि, इस पुष्टि का अनुभव भी दिमाग में ही होगा।

वास्तव में, इन लेखकों ने इन्हीं घटनाओं को अपने सपनों में भी अनुभव किया। उदाहरण के रूप में, सेनेल यह सपना देख सकते हैं कि उन्होंने फोन पर बात की और उसके बाद सम्बन्धित व्यक्ति से इस बातचीत की पुष्टि की। या पेकुनुलू अपने सपने में महसूस कर सकते हैं कि वो गंभीर संकट में हैं और दूसरों को एक सदी पुरानी लेनिन की किताबें पढ़ने की सलाह देते हैं। यह कोई मुद्दा नहीं कि वे क्या करते हैं, ये भौतिकवादी इससे इनकार नहीं कर सकते कि उन्होंने जिन घटनाओं को महसूस किया तथा जिन लोगों से बात की वह उनके बोध से ज्यादा कुछ नहीं था।

ऐसे में दिमागी कल्पनाओं की सहसंबंधता की पुष्टि कौन करेगा? क्या वह प्रतिबिंब अस्तित्व जिनका अवलोकन लोग अपने दृष्टि केन्द्र में करते हैं? भौतिकवादियों के लिये उस "बाह्य" स्रोत का पाना संभव है जो दिमाग से बाहर की बातों की पुष्टि कर सके।

अगर कोई यह मान ले कि सभी बोध दिमाग द्वारा निर्मित होते हैं, लेकिन यह भी माने कि कोई बोध की इस दुनिया से "बाहर" आ सकता है और "वास्तविक" बाहरी जगत से इसकी पुष्टि की है। इससे उस व्यक्ति की सीमित बोधात्मक क्षमता और विकृत तर्कशक्ति ही प्रकट होती है।

हालांकि, यहां उल्लेखित तथ्यों को कोई भी सामान्य बुद्धि एवं विवेक वाला आदमी आसानी से समझ सकता है। हमने जो भी कहा उसके संबंध में, प्रत्येक पूर्वाग्रहरहित व्यक्ति यह समझ जायेगा कि किसी की भी चेतना बाहरी जगत तक नहीं पहुंच सकती, यह संभव नहीं है। फिर भी भौतिकवाद के प्रति अंधा लगाव लोगों की विवेक क्षमता खंडित कर देती है। समकालीन भौतिकवादी अनेक तार्किक गलतियां करते हैं, ठीक अपने संरक्षकों की तरह ही जिन्होंने यह "साबित" करने की कोशिश की कि वे पत्थरों को ठोकर मारते हुए या केक खाते हुए वे पदार्थ के मूल तक पहुंच सकते हैं।

यह दुःखद स्थिति है। समझने की असक्षमता, अर्थात अच्छे विवेक से दुनिया और घटनाओं की व्याख्या करने की अक्षमता अनीश्व. रवादियों की आम विशेषता है। कुरान में अल्लाह विशेष रूप से उन लोगों के लिये कहता है कि वे "यह वह लोग हैं जो समझदारी नहीं रखते" हैं। (सूरा अल माएदा : 58)

इतिहास के सबसे बड़े जाल में फंसे भौतिकवादी

तुर्की में भौतिकवादी गुटों में दहशत का माहौल है। हमने इसके कुछ उदाहरण यहां दे दिए हैं जो दर्शाते हैं कि भौतिकवादी जबरदस्त हार का सामना कर रहे हैं। आधुनिक विज्ञान साबित कर चुका है कि हम पदार्थ के मूल में नहीं पहुंच सकते। और वह इस बात को बेहद सीधे, स्पष्ट और सशक्त तरीके से सामने रखता है। भौतिकवादी देखते हैं कि भौतिक दुनिया जिस पर उनका सारा दर्शन टिका है, एक अवधारणात्मक सीमा से परे है जिसे वे कभी पार नहीं कर सकते। इस तथ्य के सामने, वे कुछ नहीं कर सकते। समूचे मानव इतिहास में, भौतिकवादी विचार का वजूद हमेशा रहा है। अपने में तथा अपने दर्शनशास्त्र में आश्वस्त होते हुए, भौतिकवादियों ने उस अल्लाह के खिलाफ ही विद्रोह कर दिया जिसने उनको बनाया। उन्होंने कहा कि पदार्थ शाश्वत है और इसकी संभावना ही नहीं है कि इनका कोई सृजक हो सकता है। अपने अहंकार में अल्लाह को नकारते हुए वे पदार्थ के ही शरणागत हो गये। जिसके साथ वे हमेशा कहते हैं कि उनका प्रत्यक्ष संबंध है। उन्हें इस दर्शन में इतना विश्वास था कि वे मानते थे कि कोई भी तर्क इसे गलत साबित नहीं कर सकता।

यही वजह है कि पदार्थ की वास्तविक प्रवृत्ति से सम्बन्धित इस किताब के तथ्य इन लोगों के लिये इतने हैरतनाक है। हमने यहां जिसका जिक्र किया वह उनके दर्शनशास्त्र के आधार को ही मिटा देता है और भावी बातचीत के लिये कोई जमीन ही नहीं छोड़ता। पदार्थ, जिसपर उनकी समूची विचार श्रृंखला, उनका जीवन, अहंकार एवं नकारात्मकता टिकी है, अचानक ही मिट जाता है। किसी भी मानव मात्र ने पदार्थ को उस रूप में नहीं देखा है जैसा वह "वास्तव में" है। इसलिये कोई भी दर्शनशास्त्र उस पर आधारित नहीं हो सकता।

अल्लाह की एक विशे ाता नास्तिकों के खिलाफ उसकी योजना भी है। यह इस आयत में कहा गया है; "ये चालाकी कर रहे थे और खुदा भी (उनके ख़िलाफ) तद्बीर (योजना) कर रहा था; और खुदा तो सब तदबीर करने वालों से बेहतर है।" (सूरा आले इमरान : 54)

अल्लाह ने भौतिकवादियों से यह मनवा कर जाल में फांसा कि पदार्थ का परम अस्तित्व है और ऐसा कर, उन्हें इस तरह अपमा. नित किया जैसा पहले कभी देखने को नहीं मिला। भौतिकवादी अपने दर्जे, श्रेणी एवं उस समाज जिससे वे संबद्ध हैं एवं पूरी दुनिया को परम मानते हैं। यही नहीं, इस धारणा पर निर्भर करते हुए वे भगवान के खिलाफ अहंकरी हो गये। ोखीबाज होकर उन्होंने उसके खिलाफ विद्रोह कर दिया और अपनी नास्तिकता में वृद्धि की। ऐसा करके उन्होंने पदार्थ की चरम स्थिति पर विश्वास किया। समझ में कमी के चलते वे यह मानने में विफल रहते हैं कि अल्लाह उनके चारों तरफ है। अल्लाह उस स्थिति की घो ाणा करता है जिसमें भौतिकवादी अपनी बददिमागी की वजह से जाते हैं :

या ये लोग कुछ दाँव चलाना चाहते हैं तो जो लोग काफिर हैं वे खुद अपने दांव में फँसे हैं (सूरा अत–तूर : 42)

यह संभवतः इतिहास की सबसे बड़ी बौध्दिक हार है। अपने ही घमंडी को बढ़ाते हुए भौतिकवादी फंस गये और अल्लाह के खिलाफ युध्द में तगड़ी हार से दो चार होना पड़ा। यह आयत "और हमने हर बस्ती में उनके दूतौं को सरदार बनाया ताकि उनमें मक्कारी किया करें और वह लोग जो कुछ करते हैं अपने ही हक़ में (बुरा) करते हैं और समझते (तक) नहीं " (सूरा अल–अनाम : 124) यह घो ाणा करती है कि हमारे सृ टकर्ता के खिलाफ विद्रोह करने वाले ये लोग कितने नासमझ हैं और किस तरह उनका अंत होगा। एक अन्य आयत में इसी तथ्य को इस तरह पेश किया गया है :

खुदा को और उन लोगों को जो ईमान लाए धोखा देते हैं हालाँकि वह अपने आपको धोखा देते हैं और कुछ ाऊर (चेतना) नहीं रखते हैं (सूरा अल–बक़रा : 9)

जहां भाड्यंत्र करने की कोशिश में नास्तिक लोग इस महत्त्वपूर्ण तथ्य को भूल जाते हैं कि वे जो भी महसूस करते हैं वह वास्तव में उनके दिमाग में महसूस होता है और जो भी भाड्यंत्र वे रचते हैं वे उनके दिमाग में बनते हैं, किसी भी अन्य कार्य की तरह जिसे वे करते हैं। उनकी मूर्खता उन्हें यह भुला देती है कि वे अल्लाह के साथ अकेले हैं और इसलिये अपनी ही धूर्त योजनाओं में फंस गये हैं।

बीते दिनों के नास्तिकों की तरह, आज के नास्तिक भी उस वास्तविकता से दोचार हो रहे हैं जो उनकी धूर्त योजनाओं के आधार को खंड खंड कर देगी। इस आयत "कृकृकृकृकृशैतान का दांव तो बहुत ही बोदा है" (सूरा अन–निसा : 76) के साथ अल्लाह फरमाता है कि ये साजिशें नाकाम होने को बाध्य हैं ईमान वालों को खुशखबरी दी है"कृकृकृ.उनका फरेब तुम्हें कुछ भी नुकसान नहीं पहुचाएगा।" (सूरा आले–इमरानः 120)

एक दूसरी आयत में अल्लाह फरमाता हैः "और जिन लोगों ने कुफ्र को अपनाया उनके कर्म (ऐसे है) जैसे एक चटियल मैदान में चमकता हुआ बालू कि प्यासा उसको दूर से देखें तो पानी ख्याल करता है यहाँ तक कि जब उसके पास आया तो उसको कुछ भी न पाया (और प्यास से तड़प कर मर गया) और उसने (अल्लाह ने) को अपने पास मौजूद पाया तो उसने (अल्लाह) उसका हिसाब (किताब) पूरा–पूरा चुका दिया और खुदा तो बहुत जल्द हिसाब लेने वाला है (सूरा अन–नूर : 39)

भौतिकवाद भी विद्रोहियों के लिये एक मृगतृ ाणा सामने लाता है; जब वे भौतिकतावाद को अंगीकार करते हैं तो पाते हैं कि इसका दर्शनशास्त्र एक भ्रम के सिवा कुछ नहीं है। अल्लाह ने भी उन्हें ऐसी मृगत ाणा से छला और उन्हें इस बहकावे में फंसाया कि पदार्थ ही परम है। सभी विख्यात प्रोफेसर, जीव विज्ञानी, भौतिकविद एवं अन्य सभी पद एवं श्रेणी से सम्बन्धित लोग, इसलिये ठगे गये एवं अपमानित हुए कि उन्होंने पदार्थ को खुदा माना।

उन्होंने पदार्थ को, जिसके मूल में वे नहीं पहुंच सकते, परम मानते हुए अपने दर्शन एवं विचारधारा को उसी पर आधारित कर लिया।

वे तथाकथित “बौद्धिक” विमर्श को अंगीकार करते हुए गंभीर चर्चा में लग गये। उन्हें लगा कि वे ब्रह्मांड के सत्य के बारे में तर्क करने के लिए पर्याप्त बुध्दिमान हैं और इससे भी अधिक अल्लाह की व्याख्या करने को। अल्लाह ने इन लोगों की स्थिति का वर्णन इस तरह किया है :

“ये तदबीर (चालाकी) कर रहे थे और ख़ुदा भी (उनके ख़िलाफ़) तदबीर (योजना) कर रहा था; और ख़ुदा तो सब तदबीर करने वालों से बेहतर है।” (सूरा आले इमरानः 54)

इस संसार में तो कोई किसी इंसानके भाडयंत्रों से भाग सकता है; लेकिन नास्तिकों के खिलाफ अल्लाह की योजना इतनी मजबूत है कि इससे किसी भी तरह नहीं बचा जा सकता। वे चाहे कुछ भी करें या किसी से भी याचना करें अल्लाह के सिवा उनका कोई मद. दगार नहीं होगा। जैसा कि अल्लाह ने कुरान में कहा है :

“वे अल्लाह से बेहतर किसी और को सरपरस्त या मददगार सहायक नहीं पाएंगे।” (सूरा अन–निसा : 173)

भौतिकवादियों को कभी भी इस जाल में फंसने की उम्मीद नहीं थी। इक्कीसवीं सदी के तमाम संसाधन को अपने पास देख कर वे मानने लगे कि उन्हें पहले से अधिक हटधर्मी हो जाना चाहिए जिससे वे अपनी जिद अधिक दृढ़ कर सकते हैं और दूसरों को भी नास्तिकता की तरफ खींच कर ला सकते हैं। नास्तिकों की यह कभी नहीं खत्म होने वाली मानसिकता और उनके अंत को कुरान में इस तरह पेश किया गया है :

और उन लोगों ने एक तदबीर की और हमने भी एक तदबीर की और (हमारी तदबीर की) उनको सूचना भी न हुयी। तो (ऐ रसूल) तुम देखो उनकी तदबीर का क्या (बुरा) परिणाम हुआ कि हमने उनको और सारी क़ौम को न ट कर डाला (सूरत अन–नम्ल : 50–51)

दूसरी तरह से इन आयतों में जो तथ्य पेश किए गए वह इस प्रकार हैः भौतिकवादियों को अब बताया गया कि उनके पास जो कुछ भी है वह उनके दिमाग में है और इस तरह से उनके पास जो कुछ भी है उसे मूल्यहीन कर दिया गया। वे देखते हैं कि उनकी संपत्ति, कारखाने, सोना, धन, बच्चे, पत्नी, दोस्त, पद एवं प्रति ठा और यहां तक कि उनका ारीर – वे सब जिन्हें वे परम मानते हैं – उनके हाथ से निकलता जा रहा है यानी उन्हें न ट कर दिया गया है। वे इस तथ्य का सामना करते है कि पदार्थ नहीं बल्कि अल्लाह परम है।

इस सच्चाई का एहसास निस्संदेह भौतिकवादियों के लिए सबसे खराब चीज है। जिस पदार्थ में वे इतनी नि ठा रखते हैं, उसे एक अभेद्य सीमा से उनसे अलग कर दिया गया और यह उनके अपने ही ाब्दों में इस दुनिया में “मरने से पहले मौत” है।

यह उन्हें अल्लाह के सामने तन्हा कर देता है। इस आयत “(ऐ रसूल) मुझे और उस ाख्स को छोड़ दो जिसे मैने अकेला पैदा किया (सूरा अल–मुदस्सिर : 11)” में अल्लाह ने हमारा ध्यान इस तथ्य की तरफ आकर्ि ात किया है कि, यथार्थ में, हर ाख्स उसकी मौजूदगी में अकेला है। इस हकीकत को कई और आयतों में दोहराया गया है : “और आखिर तुम हमारे पास इसी तरह अकेले आए जिस तरह हमने तुम को पहली बार पैदा किया था और जो (माल व औलाद) हमने तुमको दिया था वह सब अपने पीछे छोड़ आए।” (सूरत अल–अनाम : 94)

और ये सब उसके सामने कयामत के दिन अकेले हाज़िर होंगे (सूरत मरियम : 95)

दूसरे अर्थों में, आयतों में पेश की गई हकीकत यह है कि : वे जिस पदार्थ को अपना खुदा मानते है, अल्लाह की तरफ से ही आये और उसी की तरफ को लौट जायेंगे। वे चाहे या नहीं चाहे, उन्हें खुद को अल्लाह को समर्पित करना है। अब वे फैसले के दिन का इंतजार कर रहे हैं, और चाहे इसे समझने में कितने ही वे अनिच्छुक हों, हरेक का हिसाब होना है।

विषय का महत्त्व

यह बात बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम इस अध्याय में वर्णित पदार्थ से परे के रहस्य को ठीक–ठीक समझ लें। पहाड़, समतल, फूल, इंसान, समुद्र – संक्षेप में हर वह चीज़ जिसे हम देखते हैं और वह सब जिसके बारे में अल्लाह हमें कुरआन में सूचित करता है, जिसका अस्तित्व है और जिसे अल्लाह ने ान्य से सृजित किया और इनका वास्तव में अस्तित्व है। हालांकि, लोग अपनी ज्ञानेन्द्रियों से इन ची. जों की वास्तविक प्रकृति को देख, महसूस या सुन नहीं सकते। वह जो देखते या सुनते हैं वह केवल इनकी एक प्रति है जो उनके दिमाग में प्रकट होती है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है जिसे सभी चिकित्सा विद्यालयों में पढ़ाया जाता है। आप जिस किताब को अब पढ़ रहे हैं उस पर भी यही लागू होता है; आप इसकी वास्तविक प्रकृति को देख या महसूस नहीं कर सकते। मूल किताब से आने वाली रा. ेशनी को आपकी आंखों में कुछ कोशिकाएं विद्युत संकेतों में बदल देती हैं, जिन्हें बाद में आपके दिमाग के पीछे के हिस्से में स्थित दृश्य केंद्र में भेज दिया जाता है। यह वह जगह है जहां किताब का दृश्य सृजित होता है। दूसरे ाब्दों में आप अपनी आंखों से वह किताब नहीं पढ़ रहे हैं जो आपके सामने है; वास्तव में, यह किताब आपके दिमाग के पिछले हिस्से में स्थित दृश्य केंद्र में पैदा हुई है। जो किताब आप अभी पढ़ रहे हैं वह तो आपके दिमाग में “किताब की प्रति” मात्र है। मूल किताब तो अल्लाह ही देखता है।

यद्यपि, यह याद रखा जाना चाहिए कि यह तथ्य कि पदार्थ हमारे दिमाग में बना एक भ्रम है, पदार्थ को ''खारिज'' नहीं करता है, बल्कि हमें पदार्थ की वास्तविक प्रकृति के बारे में सूचना उपलब्ध कराता है : कि कोई व्यक्ति का इसके मूल के साथ संबंध नहीं हो सकता। इससे भी अधिक, बाह्य पदार्थ को केवल हम ही नहीं अन्य अस्तित्व भी देखते हैं। निगरानी के लिए जो फरिश्ते तैनात किए गए हैं वे भी इस दुनिया को देख रहे हैं : जब (वह कोई काम करता हैं तो) दो लिखने वाले (केरामन कातेबीन) जो उसके दाएं और बाएं बैठे हैं लिख लेते हैं।

कोई बात उसकी जबान पर नहीं आती मगर एक निगेहबान उसके पास तैयार रहता है (सूरत काफ : 18)

इससे ज्यादा महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अल्लाह सब चीज देखता है। उसने पूरी बारीकियों के साथ में इस दुनिया की रचना की और वह इसकी तमाम अवस्थाओं को देखता है। जैसा कि वह कुरआन में फरमाया गया है : कृकृ.ख़ुदा से डरते रहो और जान रखो कि जो कुछ तुम करते हो ख़ुदा ज़रुर देखता है। (सूरा अल–बकराः 233)

कहो : (ऐ रसूल) "हमारे तुम्हारे दरम्यिान गवाही के लिये बस ख़ुदा काफी है इसमें ाक नहीं कि वह अपने बन्दों के हाल से खूब वाक़िफ है और उन्हें देखता रहता है। (सूरा अल–इस्राः 96)"

यह नहीं भूला जाना चाहिए अल्लाह हर चीज का हिसाब एक किताब में रखता है जिसे लौह महफूज कहते हैं। हम जिन चीजों को देख नहीं सकते वे भी लौह महफूज में हैं। अल्लाह हर किसी का हिसाब–किताब लौह महफूज में रखता है, इसका खुलासा वे इस आयत में करता हैं :

और बेशक ये (क़ुरआन) असली किताब (लौह महफूज) में (भी जो) मेरे पास है लिखी हुई है (और) यकीनन बड़े रुतबे की (और) हिकमत वाली है (सूरा अज–जख़ूफ : 4)

कृकृकृकृऔर हमारे पास तो एक परिरक्षक किताब है। (सूरा काफः 4)

और आसमान व जमीन में कोई ऐसी बात पोशीदा नहीं जो साफ व रौशन किताब (लौहे महफूज) में (लिखी) मौजूद न हो (सूरा अन–नम्लः 75)

उपसंहार

जिस वि ाय की हमने अब तक व्याख्या की है वह उन कुछ महान सत्यों में से एक है जो आप अपने जीवन में पढ़ते रहेंगे। इससे साबित होता है कि जो कुछ भी हम देखते हैं या जिसे "भौतिक दुनिया" के रूप में परिभा ात करते हैं वह केवल हमारे दिमाग में है और यह कि हम बाहरी जगत में मौजूद पदार्थ के मूल का कभी भी प्रत्यक्ष अनुभव नहीं कर सकते। यह सब अल्लाह के अस्तित्व एवं उसके सृजन को समझने के लिए तथा यह समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि वही एकमात्र परम है।

जो व्यक्ति इसे समझेगा उसे मालूम होगा कि संसार उस तरह की जगह नहीं है जैसा कि अधिकतर लोगों का अनुमान है। यह बाह्य अस्तित्व वाला ऐसा परम स्थान नहीं है जैसा कि वे लोग मानते हैं जो सड़कों पर बिना किसी मकसद के आवारागर्दी करते हैं, ाराबखानों में झगड़ते हैं, ाही कैफों में ान दिखाते हैं, अपनी जायदाद पर इतराते हैं, या वे जो खोखले मकसद पर अपनी जिंदगी कुर्बान कर देते हैं। ऊपर हमने जिन लोगों की चर्चा की है, तमाम ने अपने मस्ति क में इन बोधों का अवलोकन किया है। फिर भी वे इससे अनभिज्ञ हैं। यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण अवधारणा अल्लाह के वजूद को नकारने वाले भौतिकवादी दर्शन को काटती है। यही वजह है कि माक्स, एंजेल्स और लेनिन जैसे भौतिकवादी घबरा गए, गुस्सा गए और अपने अनुयायियों को चेताया कि जब उनसे इस अवधारणा के बारे कहा जाए तो इसपर वे "गौर नहीं करें।" इस तरह के लोग मानसिक रूप से इतने कमजोर होते हैं कि वे इस तथ्य को समझते ही नहीं कि बोध या ज्ञान दिमाग के अंदर बनता है। यह मानते हुए कि अपने दिमाग में वे जो कुछ भी देखते हैं वह "बाहरी जगत" है, वे इसके विपरीत पक्ष के उचित साक्ष्यों को भी समझ नहीं सकते।

यह नासमझी नास्तिकों को अल्लाह द्वारा बख ी गई कम बुद्धि का ही परिणाम है। जैसाकि उसने कुरआन में कहा गया है, नास्तिक "के दिल तो हैं (मगर जानबूझकर) उनसे देखते नहीं और उनके कान भी हैं (मगर) उनसे सुनने का काम ही नहीं लेते, ये लोग गोया जानवर हैं बल्कि उनसे भी कहीं गए गुज़रे (निम्न) है। यही लोग (हक़) से बिल्कुल बेख़बर हैं। (सूरा अल–आराफ : 179) आप इससे परे की खोज अपने व्यक्तिगत चिंतन मनन की ाक्ति का इस्तेमाल करते हुए कर सकते हैं। अपने ध्यान को केंद्रित करें और कोशिश करें कि आप आस–पास की चीजों को किस तरह से देखते हैं और उनके स्पर्श को अनुभव करें। ध्यान से सोचें तो आप महसूस कर सकते हैं कि वह अस्तित्व जो इस वक्त हैं तथा इस समय इस किताब को पढ़ रहा है सिर्फ रूह है और जो "पदार्थ" कही जाने वाली धारणा को आंतरिक स्क्रीन पर देखती हैं। जो भी इसे समझ जाता है वह मानवता के एक बड़े हिस्से को गुमराह करने वाली भौतिक दुनिया की चकाचौंध से दूर हो जाता है और वास्तविक अस्तित्व के दायरे में प्रवेश कर जाता है।

इतिहास में अनेक दार्शनिकों एवं थीसिस्ट ने इस यथार्थ को समझा। हालांकि वहदतुल वुजूद (कण–कण में ईश्वर है) की धारणा यथार्थ की गलत समझ और सभी सृजन के अस्तित्व को नकारने की वजह से हकीकत से भटक गई। लेकिन इस्लामी विद्वान इमाम रब्बानी ने इस वि ाय पर सही पैमाने तय किये। इमाम रब्बानी के अनुसार सभी सत्व अल्लाह के सापेक्ष में "प्रतिबिंब अस्तित्व" हैं।

इमाम रब्बानी, मोहीउद्दीन इब्न अरबी तथा मौलाना कामी आदि इस्लामी विद्वानों ने कुरान के इशारों और उनके तर्कों से इस तथ्य को समझा। पश्चिमी दार्शनिक जार्ज बर्कले ने भी इसी वास्तविकता को दलीलों से आत्मसात किया। इमाम रब्बानी ने अपनी मकतुबात (पत्रों) में लिखा है कि समूचा भौतिक ब्रह्मांड केवल एक "भ्रम एवं बोध है" और एकमात्र परम अल्लाह है।

अल्लाह कृकृकृकृइन अस्तित्वों का तत्वों को जिनको अल्लाह ने ून्य से सृजित किया कृकृकृ.उसने सभी का सृजन अनुभूतियों और भ्रम के दायरे में किया कृकृकृकृ.ब्रह्मांड का अस्तित्व अनुभूतियों और भ्रम के दायरे में है, और यह भौतिक नहीं हैकृकृकृ हकीकत में, बाह्य में कुछ नहीं बल्कि प्रतापी अस्तित्व है, (जो अल्लाह है)।[204]

बहरहाल, इस तथ्य को समझने वालों की संख्या इतिहास में हमेशा ही सीमित रही है। इमाम रब्बानी ने लिखा है कि इस तथ्य को आम जनता को समझाना ायद असहज होगा और अधिकतर लोग इसे आत्मसात नहीं कर पाएंगे।

यद्यपि, जिस युग में हम रह रहे हैं, विज्ञान द्वारा रखे गये साक्ष्यों ने इस तथ्य को अनुभवजन्य बना दिया है। पहली बार, यह तथ्य

बहुत ठोस और साफ तरह से लिखा गया है कि पदार्थ परम नहीं है और इस संबंध में हमारा ज्ञान बहुत ही सीमित है।

इस कारण से 21वीं सदी एक निर्णायक मोड़ होगी जब आम लोग भी दिव्य वास्तविकताओं को समझेंगे और अल्लाह के ारणागत होंगे, जो एकमात्र पूर्ण और परम है। 21वीं सदी में, भौतिकवादी 19वीं सदी के मत को इतिहास के कूड़ेदान में डाला जाएगा, अल्लाह के अस्तित्व एवं सृजन को आत्मसात किया जायेगा; अवकाशहीनता और समयहीनता जैसे तथ्यों को बेहतर ढंग से समझा जायेगा। हमें घेरे सदियों पुराने आवरण, छल और अंधविश्वासों से मानवता मुक्त होगी । किसी भी प्रतिबिंब अस्तित्व के लिये इस अपरिहार्य कार्य को रोकना असंभव होगा।

अध्याय – 18

समय की सापेक्षता और भाग्य की वास्तविकता

अभी तक उल्लेखित सभी चीज़ें यह दर्शाती हैं कि हमारा वास्तविकता की त्रि–आयामी क्षेत्र से कभी भी सीधा संपर्क नहीं रहा है और यह कि हम अपनी पूरी जिंदगी अपने दिमाग़ में ही जीते हैं। इससे विपरीत कहने की स्थिति में बुद्धि और वैज्ञानिक सत्य को छोड़कर अंधविश्वास को स्वीकार करना होगा। हम किसी तरह से बाह्य संसार के मूल से एकदम ही सीधा संपर्क स्थापित नहीं कर सकते हैं।

यह भौतिकवादी मान्यता में अंतर्निहित क्रमिक–विकास के सिद्धांत की प्राथमिक अभिधारणा (कल्पना) का खण्डन करता है– यह मान्यता कि पदार्थ परम तत्व और ाश्वत है। भौतिकवादी विश्वास की दूसरी मान्यता यह है कि समय भी परम तत्व और ाश्वत है – ठीक ऐसा अंधविश्वास जैसाकि पहला है।

समय का बोध

हम जिसे समय कहते हैं, वास्तव में यह एक पद्धति है, जिसके द्वारा एक क्षण की तुलना दूसरे से की जाती है। उदाहरणार्थ, जब एक व्यक्ति किसी पदार्थ पर प्रहार करता है तो उसे एक विशे ा प्रकार की ध्वनि सुनाई देती है। यदि वह उसी पदार्थ पर पांच मिनट के बाद प्रहार करता है, तो उसे दूसरी ध्वनि सुनाई देती है। यह सोचते हुए कि दो ध्वनियों के बीच अंतराल है, वह इस अंतराल को 'समय' कहता है। उस समय तक, जब वह दूसरी ध्वनी को सुनता है, तो उसने जो पहली ध्वनि सुनी थी, वह उसके मस्ति क में एक स्मृति से ज्यादा कुछ नहीं होती; मात्र उसकी कल्पना में सूचना का एक अंश। एक व्यक्ति जिस क्षण में रहता है और जितनी उसकी स्मृति बनी रहती है इसकी तुलना करके समय की अपनी अवधारणा को बनाता है। यदि वह यह तुलना नहीं करे, तो वह दोनों समयों में से किसी एक की भी कोई अवधारणा नहीं कर सकता है।

इसी प्रकार, एक व्यक्ति तुलना करता है जब वह देखता है कि किसी ने दरवाज़े से अंदर प्रवेश किया और वह कमरे के बीच में आराम से कुर्सी पर बैठ जाता है। जितने समय तक यह व्यक्ति कुर्सी पर बैठता है, तो उसके दरवाजा खोलने और कुर्सी तक जाने के क्षण की छवी स्मृति में सूचना के एक भाग के रूप में संचयित हो जाती है। समय की अवधारणा तब तक होती है, जब व्यक्ति कुर्सी पर बैठे हुए व्यक्ति की तुलना मस्ति क में स्मरण की गई सूचनाओं से करता है। संक्षेप में, मस्ति क में एकत्रित सूचना की तुलना के परिणाम के नतीजे में समय की अवधारणा होती है। यदि व्यक्ति के पास कोई स्मृति नहीं हो, तो उसका मस्ति क कोई ऐसी व्याख्या नहीं कर सकता और इस प्रकार वह कभी भी समय की कोई अवधारणा को आकार नहीं दे सकेगा। एक व्यक्ति स्वयं के लिए तीस व र्ा की आयु का निर्धारण केवल इसलिए कर पाता है कि उन तीस व र्ाों से संबंधित सूचनाओं को उसने अपने मस्ति क में एकत्रित कर रखा है। यदि उसकी स्मृति ही नहीं होती, तब वह कोई ऐसी बीती अवधि को सोच नहीं सकता था और केवल जिस अवधि में वह जीवन–यापन कर रहा है उसी एक 'पल' का अनुभव करता रहेगा।

ाश्वतता की वैज्ञानिक व्याख्या

हम विभिन्न वैज्ञानिकों और विद्वानों की व्याख्या का उद्धरण देकर इस वि ाय को स्प ट कर सकते हैं। समय के पीछे जाने के विचार के संबंध में फ्रेकोइस जेकब, प्रसिद्ध बुद्धिजीवी नोबल पुरस्कार विजेता और आनुवंशिकी के महान प्रति ठत प्रोफेसर अपनी पुस्तक 'ली ज्यू डेज़ पॉसिबल' (संभावनाओं का खेल) में कहते हैं :

फिल्मों में समय के पीछे चले जाने को चित्रित किया जाता है। आइए एक ऐसे संसार की कल्पना करें, जिसमें समय पीछे की ओर

चलता है। एक ऐसा संसार जहाँ कॉफी से मलाई स्वतः अलग होकर कप से बाहर आकर मलाई के पास पहुँच जाए; (ऐसा संसार) जिसमें दीवारें प्रकाश किरणें उत्सर्जित करें, बजाए इसके विकिरणन करने के इन्हें प्रकाश स्रोत के द्वारा इकट्ठा किया जाये एक ऐसा संसार, जहाँ एक पत्थर जल से निकलकर व्यक्ति के हाथों में आ जाए जहाँ साथ–साथ लहरें मारती जल की असंख्य बूंदों के विस्मयकारी सहयोग द्वारा उसे फेंका गया हो। तब तक ऐसे विपरीत परिस्थितियों (फीचर) के साथ ऐसे उलटे–समय वाले संसार में हमारा मस्ति क प्रक्रिया करता है और जिस तरह हमारी स्मृति सूचनाओं का संचयन करती है ठीक उसी रूप में बीती अवधियों में कार्य करेगा। ठीक इसी तरह भूत और भवि य के लिए भी सत्य है। यद्यपि संसार हमारे सामने ठीक उसी प्रकार दृ टगोचर होगा, जैसाकि यह वर्तमान में होता है।[205]

लेकिन चूंकि हमारा मस्ति क घटनाओं के क्रम से अभ्यस्त हो चुका है, संसार ऐसा प्रचलित नहीं होता, जैसा ऊपर बताया गया है। हम यह मानते हैं कि समय सदैव आगे की ओर बढ़ता है। यद्यपि यह मस्ति क में पहुंचा हुआ एक निर्णय है – इसलिए पूर्णतया सापेक्ष (रिलेटिव) है। वास्तव में हम कभी नहीं जान सकते हैं कि समय कैसे आगे जाता है या क्या यह आगे जाता भी है अथवा नहीं। यह इसलिए है कि समय परम सत्य नहीं है; केवल बोध का मात्र एक रूप है।

यह कि समय बोध है अल्बर्ट आइन्सटाइन ने अपनी पुस्तक थीअरि ऑफ रिलेटीविटी (सामान्य सापेक्षता के सिद्धांत) में भी साबित किया है। अपनी पुस्तक 'यूनिवर्स एण्ड डा. आईन्सटाईन' में लिंकन बार्नेट लिखते हैं : परम अंतराल के साथ–साथ, आइन्सटाइन ने परम समय की अवधारणा एक नियमित, अपरिवर्तित सर्वत्र समय जो अनंत भूत से अनंत भवि य की ओर प्रवाही है, का खण्डन किया। सापेक्षता के सिद्धांत को अधिकतम गुमनामी ने घेर रखा है, जो समय के ज्ञान को एक बोध मानने की व्यक्ति की अनिच्छा से उत्पन्न हुआ है। जैसे रंगों का ज्ञान केवल एक रूप है। जैसा कि स्थान भौतिक पदार्थ के लिए सिर्फ एक व्यवस्था है, इसी तरीके से समय भी घटनाओं की संभाविता व्यवस्था है। समय की आत्मपरकता (सब्जेक्टीविटी) को आइन्सटाइन ने अपने ाब्दों में बहुत अच्छे से समझाया है। वह कहते हैं किसी व्यक्ति का अनुभव हमें ऐसा प्रतीत होता है कि वह घटनाओं की श्रृंखला में व्यवस्थित हैं। इस श्रृंखला में एक घटना जिसे हम याद रखते हैं 'पूर्व' और 'बाद' की कसौटी के अनुसार व्यवस्थित होती हुई मालूम होती है। इसलिए यहां व्यक्ति के लिए एक 'मैं' – समय या व्यक्तिगत दृ टकोण वाला समय अस्तित्व में रहता है। यह अपने आप में मापे जाने योग्य नहीं है। वास्तव में, मैं घटनाओं के साथ संख्या को इस तरह जोड़ सकता हूं कि पूर्व वाले की तुलना में बाद वाली घटना के साथ बड़ी संख्या जुड़ी हुई है।[206] जैसा कि बार्नेट लिखते हैं कि आईंसटन ने बताया कि समय और अंतराल एक प्रकार का अंर्तज्ञान ;पदजनपजपवदद्ध है जिसको हम अपनी चेतना से उसी तरह बाहर नहीं निकाल सकते जैसे रंग, आकार और माप की हमारी धारणा को। 'सापेक्षता के सिद्धांत' के अनुसार घटनाओं के क्रमिक रूप के अलावा समय का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं है जिसके द्वारा हम इसको नापते हैं।[207]

चूंकि समय में बोध समाहित होता है, यह पूर्णतया बोध का अनुभव करने वाले के ऊपर निर्भर करता है; इसलिए यह सापेक्ष है।

जिस गति से समय चलता है, यह हमारे मापने के संदर्भानुसार भिन्न होती हैं; क्योंकि मानव ारीर में कोई प्राकृतिक घड़ी नहीं है, जो यह दर्शाये कि समय कितनी तेज़ी से गुजरता है। जैसा कि बार्नेट ने लिखा है कि "ठीक उसी तरह से जैसे बिना आंख के रंग कोई चीज़ नहीं है"। इसी तरह एक क्षण अथवा एक घण्टा अथवा एक दिन कुछ भी नहीं है बिना घटना के जो इसे निर्देशित करे।

समय की सापेक्षता सपने में साफ–साफ अनुभव की जाती है। यद्यपि सपने में हमें जो बोध होता है ऐसे लगता है कि घण्टों चला हैं; जब कि वास्तव में यह सब कुछ मिनट और अक्सर कभी–कभी तो कुछ सेकंड ही रहता है।

एक उदाहरण इस बिन्दु को स्प ट कर देगा। यह मान लें कि आप को विशे ा रूप से डिज़ाइन किए गए एक खिड़की वाले कमरे में एक निश्चित अवधि के लिए रखा जाता है। दीवार पर लगी घड़ी आपको गुज़रते हुए समय को बताती है। इस 'समय' के दौरान आप

समय का हमारा वि यीनि ठ बोध एक पल को अन्य पल के साथ तुलना और भेद करने से पैदा होता है। उदाहरण के लिए, हम कल्पना करते हैं कि बीज बोने, उसके फलस्वरूप उगे पौधों से फूलों के खिलने, और उन फूलों को काटे जाने और गुलदस्ते में व्यवस्थित करने के बीच समय का विशि ट अंतर बीतता है – और हम इसे "समय" कहते हैं। लेकिन वास्तविकता में, समय वह बोध है, जो "उस पल में" जो हो रहा है, उसका अंतर उससे पहले हुई विशि ट घटनाओं से करने से पैदा होता है।

समय की सापेक्षता सीधे रूप में सपनों में अनुभव की जाती है। हालाँकि व्यक्ति जो सपने में बोध करता है, वह कई घंटों तक होता लगता है, पर वास्तव में, वह केवल कुछ मिनट ही रहता है, और यहाँ तक कि कुछ सेकंड भी।

कमरे की खिड़की से निश्चित अंतराल पर सूर्य को डूबते और उगते हुए देखते है। कुछ दिनों के बाद कमरे में व्यतीत समय की मात्रा के बारे में पूछे गए प्रश्न पर आप समय–समय पर घड़ी को देखते हुए और सूर्य के डूबने और निकलने की गिनती द्वारा एकत्रित जानकारी के आधार पर उत्तर दे सकेंगे। हालांकि, जिस आदमी ने आपको वहां रखा था कहे कि वहां पर आपने सिर्फ दो दिन बिताए हैं और जो सूर्य आपने खिड़की से देखा, वह कृत्रिम रूप से उत्पन्न किया गया था और कमरे में जो घड़ी थी, वह विशे ा रूप से उत्पन्न की गयी थी की समय को द्रुत रूप में बताने के लिए नियंत्रित थी, तब आपकी गणना ग़लत होगी।

यह उदाहरण नाटकीय दृश्य देता है कि गुज़रते हुए समय के दर के बारे में हमें जो सूचना होती है, वह मात्र संदर्भ पर आधारित होती है, जो कि बोधकर्ता के अनुसार बदलती रहती है।

यह कि समय सापेक्ष है, यह एक वैज्ञानिक तथ्य है और वैज्ञानिक पद्धतिशास्त्र से सिद्ध भी है। आइन्सटाइन का 'सापेक्षता का सिद्धांत' सिद्ध करता है कि समय की गति पदार्थ की गति और गुरुत्वाक ाण केन्द्र से उसकी दूरी के आधार पर परिवर्तित होती है। जैसे ही गति बढ़ती है, समय घट जाता है – दब जाता है– और धीमा होता जाता है, यहां तक कि यह पूर्ण रूप से रुकने के बिंदु पर पहुंच जाये।

आइन्सटाइन ने स्वयं ही एक उदाहरण दिया है। दो जुड़वां व्यक्तियों की कल्पना करें। उनमें से एक पृथ्वी पर रहता है और दूसरा प्रकाश की गति के क़रीब की गति से अंतरिक्ष में चला जाता है। उसकी वापसी पर वह यह पाएगा कि उसका भाई उसकी तुलना में काफ़ी ज़्यादा बूढ़ा हो गया है। इसका कारण यह है कि प्रकाश की गति की तेज़ी से जिस व्यक्ति ने यात्रा की, समय अत्यंत धीमे से उसके पास से गुज़रा। अंतरिक्ष में जाने वाले पिता और उसका बेटा जो पृथ्वी पर रहा, के बारे में क्या ख्याल है? बाहर जाते समय पिता की आयु यदि 27 व ा थी और उसके बेटे की आयु मात्र तीन व ा। जब पिता 30 व ा के बाद पृथ्वी के समय में लौट आता है, तो वह मात्र 30 व ा का होगा, जबकि उसका बेटा 33 व ा का हो जाएगा।

समय की यह सापेक्षता, घड़ी के धीमा हो जोने अथवा तेज़ चलने के कारण नहीं हुई है। बल्कि, यह समस्त भौतिक प्रणाली में कार्यान्वित होने वाले भेददर्शी अंतरालों (पिरियड) का परिणाम है और इतना ही है जितना परमाणुओं के कण हैं। ऐसी स्थापना, जहां समय का विस्तार होता है, व्यक्ति की हृदय की धड़कन, कोशिका की पुनरावृत्ति, और मस्ति क का कार्य करना सभी काफी धीमा हो जाता है। व्यक्ति अपने रोज़ाना के जीवन में लगा रहता है और पूर्णतया समय के धीमा होने के ज्ञान को महसूस नहीं कर पाता है।

कुरआन में सापेक्षता

आधुनिक विज्ञान की खोज से हम जहां पहुंचे हैं, उसका नि क ा है कि – समय परिशुद्ध सत्य नहीं है, जैसे कि भौतिकवादियों द्वारा माना जाता है, लेकिन मात्र एक सापेक्ष बोध। अत्यधिक दिलचस्प बात यह है कि विज्ञान द्वारा 20वीं ताब्दी तक यह सत्य खोजा नहीं गया था, लेकिन इसे कुरआन में 14 ताब्दी पूर्व मानव जाति को प्रदान किया गया था।

समय की सापेक्षता के कुरआन में बहुत से संदर्भ मौजूद हैं :

कुरआन की बहुत सी आयतों में, इस सत्य को देखना संभव है कि घटनाओं, स्थान तथा परिस्थितियों के आधार पर मनोवैज्ञानिक बोध ही समय है। उदाहरण के लिए, व्यक्ति का समस्त जीवन बहुत अल्प अवधि का है, जैसा कि कुरआन में हमें बताया गया है :

जिस दिन खुदा तुम्हें बुलाएगा तो उसकी हम्दो सना (बड़ाई या तारीफ)
करते हुए उसकी आज्ञा का पालन करोगे, और तुम ख़्याल करोगे
कि (इस संसार में) बहुत ही कम ठहरे ! (सुरा अल–इसरा':52)
और खुदा जिस दिन उन लोगों को (अपनी बारगाह में) जमा करेगा
तो गोया ये लोग (समझेंगे कि इस संसार में) बस घड़ी के दिन भर
के एक घण्टे ही ठहरे और आपस में एक दूसरे को
पहचानेंगे। (सूरह यूनुस : 45)

कुछ आयतों में यह बताया गया है कि लोग समय का बोध भिन्नता से करते हैं ओर कुछ लोग तो समय की लंबी अवधि को बहुत अल्प अवधि के रूप में बोध कर सकते हैं। मृत्यु के पश्चात् उनके फैसले के दोरान, लोगों से हुई निम्नलिखित बातचीत इसका बहुत ही अच्छा उदाहरण है:

खुदा पूछेगाः "तुम पृथ्वी पर कितने व ा रहे?" वह कहेंगे,
"हम तो बस पूरा एक दिन या एक दिन से भी कम रहे, किंतु
उनसे पूछिए जो हिसाब रखते हैं।"
खुदा फ़रमाएगा, "बेशक़ तुम (ज़मीन पर) बहुत ही कम ठहरे।
अगर तुम (इस बात को दुनिया में भी) समझे होते।
(सूरह अल मोमिनून : 112–114)

कुछ दूसरी आयतों में यह कहा गया है कि भिन्न–भिन्न स्थानों में समय की गति भी भिन्न–भिन्न होती है:

और (ऐ रसूल स.) तुमसे ये लोग अज़ाब के जल्द लाने को
कहते हैं, लेकिन खुदा तो हरगिज़ अपने वादे के ख़िलाफ
नहीं करेगा। और बेशक़ (क़यामत का) एक दिन अल्लाह के
नज़दीक तुम्हारी गिनती के हिसाब से एक हज़ार बरस के बराबर
है। (सूरह अल हज : 47)
जिसकी तरफ फ़रिश्ते और रूहुलअमीन एक दिन में चढ़ते हैं (यात्रा करते हैं)
जिसका अंदाज़ा (गिनती) तुम्हारे मुताबिक पचास हजार बरस की होगी।
(सूरह अल–मआरिज़ : 4)
आकाश (आसमान) से पृथ्वी तक सभी मामलों का अल्लाह
निर्देशन करता है, फिर यह बंदोबस्त उस दिन
जिसकी मात्रा तुम्हारी गिनती से हज़ार व ा की होगी
उसकी बारगाह में पेश होगा। (सूरह अस–सज्दा : 5)

ये आयतें समय की सापेक्षता की समस्त अभिव्यक्तियों को स्प ट करती हैं। इस सच्चाई की हकीकत 20वीं ताब्दी में विज्ञान के कारण लोगों की समझ में आई, जिसे कुरआन के माध्यम से 1400 व ा पूर्व मानव को बता दिया था। यह इस बात को दर्शाता है कि कुरआन अल्लाह के द्वारा अवतरित की गई पुस्तक है, जिसकी ाक्ति की परिधि मे समस्त ब्रह्मांड (समय और अंतरिक्ष) है।

कुरआन की बहुत–सी अन्य आयतों में किये गये वर्णनों से यह ज्ञात होता है कि समय मात्र बोध है। कुरआनी वाक़ियात में विशे ा रूप से इसके प्रमाण मिलते हैं। उदाहरण के लिए, अल्लाह ने असहाबे कहफ़, ईमान लाने वालों का समूह जिसका वर्णन कुरआन में है, को तीन ताब्दियों तक गहरी नींद में सुलाये रखा। इन लोगों ने सोचा कि ये लोग इसी अवस्था में बहुत कम समय के लिए रहें और यह नहीं बता सके कि कितनी लंबी अवधि तक सोये रहे :

समय एक संकल्पना है, जो पूरी तरह से बोध करने वाले पर निर्भर है। एक व्यक्ति को कुछ समय लंबा प्रतीत होता है, जबकि दूसरे के लिए वह छोटा प्रतीत हो सकता है। यह समझने के लिए कि कौन सही है, हमें घड़ी और कैलेंडर जैसे स्रोत चाहिए। उनके बिना समय का सही निर्णय करना असंभव है।

तब हमने कई बरस तक गुफा में उनके कानों पर (परदे) डाल दिये
(ताकि वे सुन न सकें)। फिर हमने उन्हें उठा दिया ताकि
हम जान सकें कि दो गिरोहों में से गुफा में ठहरने की अवधि
की सर्वोत्तम गिनती कौन कर सकता है। (सूरह अल—कहफः11—12)
और (जिस तरह अपनी कुदरत से उनको सुलाया) उसी तरह
(अपनी कुदरत से) उनको (जगा) उठाया ताकि आपसे में कुछ
पूछताछ करें, उनमें से एक बोला "इस गुफा में तुम कितनी मुद्दत ठहरे?"
वे कहने लगे, "ठहरे क्या बस एक दिन या एक दिन से भी कम"
उसके बाद (एक ही लम्हे में) सभी कहने लगे कि "जितनी देर तुम
गुफा में ठहरे उसे तुम्हारा परवरदिगार ही तुमसे कुछ बेहतर जानता
हैकृकृकृकृ (सूरह अल—कहफ : 19)
निम्न आयत में बताई गई स्थिति इस बात का प्रमाण है कि समय हक़ीक़त में मनोवैज्ञानिक बोध हैः
(ऐ रसूल स.अ.व.) उस (बंदे के मिसाल) पर भी नज़र करो जो ऐसे
एक गांव से गुज़रा जो उजड़ा चुका था और उसकी छतें ढह गईं थीं।
यह देख कर वह बंदा कहने लगा कि "अल्लाह अब इस गांव को
ऐसी वीरानी के बाद कैसे आबाद करेगा"। इस पर खुदा ने उसे
मार डाला और सौ बरस तक मुर्दा रखा, उसे फिर जिला
उठाया (तब) पूछा, "तुम कितनी देर पड़े रहे" उसने कहा "एक दिन
पड़ा रहा या एक दिन से भी कम"। फरमाया, "नहीं तुम सौ
बरस पड़े रहे, अब ज़रा खाने—पीने की चीज़ों को देखो कि वे
बासी तक नहीं हुईं। (अर्थात् समय के प्रभाव से अछूती रही)
और अपने गधे (सवारी) की ओर देखो (कि उसकी
हड्डियों का ढेर पड़ा हुआ है) और यह सब इसलिए किया है ताकि
लोगों के लिए तुम्हें निशानी बनाएं और (अब उस गधे
की) हड्डियों की तरफ नज़र करो कि हम कैसे उनको जोड़जाड़ कर
ढांचा बनाते हैं। फिर उन पर गोश्त चढ़ाते हैं"। जब उसे यह
साफ़—साफ़ दिखाया गया तो वह बेसाख्ता बोल उठा कि "मैं (अब)
पूर्ण विश्वास के साथ जानता हूं कि खुदा हर चीज़ पर क़ादिर है"
(सूरह अल—बक़रा : 259)

उपर्युक्त आयत स्प ट रूप से बताती है कि अल्लाह जिसने समय को पैदा किया है, इसके अछूता है। जबकि दूसरी ओर मनु य अल्लाह के आदेश के अनुसार समय से बंधा हुआ है। जैसा कि आयत में है कि मनु य यह भी जानने में असक्षम हैं कि यह स्वयं कितनी देर तक सोया। ऐसी दशा में, यह कहना कि समय ही ब्रह्म है (जैसा कि भौतिकवादी अपनी विक्षिप्त मानसिकता के कारण मानते हैं) अत्यंत अतार्किक और बुद्धिहीन होगा।

भाग्य/नियति

समय की परिवर्तनशील सापेक्षता अत्यंत महत्त्वपूर्ण वास्तविकता उजागर करती है। समय की अवधि सरसरी तौर से एक खरब व र्ा (एक बिलियन व र्ा) की अवधि हमें अन्य आयाम में मात्र एक सेकंड की महसूस हो सकती है। इसके अतिरिक्त, समय की ऐसी विपुल अवधि, संसार के प्रारंभ होने से इसके समाप्त होने तक एक सेकंड भी न ठहर सके बल्कि अन्य आयाम में मात्र एक क्षण।

यही भाग्य की वास्तविकता का मूल सार है— ऐसी चीज़, जिसे अधिकतम लोग नहीं समझते हैं, विशे ा रूप से भौतिकवादी, जो इसे पूर्णतया अस्वीकृत करते हैं। सभी घटनाओं, चाहे भूत हो अथवा भवि य, अल्लाह को इसका पूर्ण ज्ञान ही भाग्य है। कई लोग, न की सभी, प्रश्न करते हैं कि अल्लाह कैसे पहले से उन घटनाओं का ज्ञान रखता है, जो अभी घटी ही नहीं और यही उन्हें भाग्य की प्रामाणिकता को समझने में असफलता की ओर ले जाती है। यद्यपि घटनाएं, जो अभी नहीं घटी हैं, उनका अनुभव(ज्ञान) मात्र हमें नहीं है। अल्लाह समय और स्थान से नहीं बंधा है — क्योंकि उनका सृजन उसी ने किया है। इसकी दलील यह है कि भूत भवि य और वर्तमान सभी अल्लाह के लिए एक जैसे हैं। अल्लाह के लिए सभी घटनाएं घटकर समाप्त हो चुकी हैं।

'दी यूनिवर्स एंड डॉ आईंसडाईन' में, डॉ. बार्नेट कहते हैं कि सामान्य सापेक्षता का सिद्धांत किस प्रकार इस अंतदृ ट की ओर ले जाता है। उनके अनुसार, ब्रह्मांड महान और अलौकिक बुद्धिमत्ता द्वारा इसके समस्त आधिपत्य के घेरे में हो सकता है। बार्नेट जिसे मेहान और अलौकिक बुद्धिमत्ता कहता है, वह प्रज्ञा और अल्लाह का ज्ञान है, जो समस्त ब्रह्मांड में विराजमान है। जैसे हम बड़ी सरलता से एक ाासक के प्रारंभ, मध्य और समापन को और पूर्ण घटना को एक इकाई के रूप में देखते हैं, इसी प्रकार, अल्लाह हमारे प्रारंभ से अंत तक को एक क्षण की तरह जानता है। लोग घटनाओं को केवल तभी महसूस करते हैं, जब उस भाग्य को जानने के लिए उनका समय आ जाता है, जिसे अल्लाह ने पैदा किया है।

भाग्य को समझने की समाज की विकृति पर विचार करना भी महत्त्वपूर्ण है। यह विकृति दो ा इस अंधविश्वास की मान्यता को प्रस्तुत करता है कि अल्लाह ने प्रत्येक व्यक्ति का भाग्य निर्धारित कर दिया है, लेकिन कभी वह लोग इन भाग्य को बदल सकते हैं।

उदाहरण के रूप में, मौत के दरवाजे से लौटे एक मरीज के बारे में बात करते हुए लोग इस तरह के थोथे बयान देते हैं, "उसने भाग्य

को पराजित कर दिया", हालांकि कोई भी अपनी किस्मत को बदलने में सक्षम नहीं है। जो आदमी मौत के दरवाजे से लौटा, उसकी किस्मत में मरना लिखा ही नहीं था। यह उन लोगों की किस्मत है, वह अपने आप को यह कह कर धोखा न दें कि "मैंने अपने भाग्य को हराया" और इस तरह के विचार को बनाये रखें।

भाग्य अल्लाह का ाश्वत ज्ञान है। और अल्लाह के लिये, जो संपूर्ण समय को एक क्षण की भांति जानता है और जो संपूर्ण समय एवं स्थानों में मौजूद है, सब चीजें अपने भाग्य के मुताबिक तय एवं तैयार हैं।

हम भी उसी से समझते हैं जिसका कुरान में उल्लेख किया गया है कि अल्लाह के लिये समय एक है : कुछ घटनाएं जो हमें भवि य में होती दिखती हैं, कुरान में इस तरह से बताया गया है कि बहुत पहले ही हो चुकी हैं। उदाहरण के रूप में निम्नलिखित आयतें जिनमें यह बताया गया है कि लोगों को पूरा हिसाब अल्लाह को देना होगा, में घटनाओं को इस तरह से बयान करती हैं मानों वे बहुत पहले घटित हो चुकी हों :

और जब (पहली बार) सूर फूंका जाएगा तो जो लोग आसमानों में हैं और जो लोग जमीन में हैं (मौत से) बेहोश होकर गिर पड़ेंगे मगर (हाँ) जिस को खुदा चाहे वह अलबत्ता बच जाएगा) फिर जब दोबारा सूर फूँका जाएगा तो फौरन सब के सब खड़े हो कर देखने लगेंगें और जमीन अपने परवरदिगार के नूर से जगमगा उठेगी और (आमाल की) किताब (लोगों के सामने) रख दी जाएगी और पैगम्बर और गवाह ला हाजिर किए जाएँगे और उनमें इन्साफ के साथ फैसला कर दिया जाएगा और उन पर (ज़र्रा बराबर) ज़ुल्म नहीं किया जाएगा कृकृ.और जिस ाख्स ने जैसा किया हो उसे उसका पूरा पूरा बदला मिल जाएगा, और जो कुछ ये लोग करते हैं वह उससे खूब वाकिफ हैकृकृकृ. और जो लोग काफिर थे उनके झुंड के झुंड जहन्नुम की तरफ हंकाए जाएंगे और यहां तक की जब जहन्नुम के पास पहुंच. ेगें तो उसके दरवाजे खोल दिए जाएगें और उसके दरोगा उनसे पूछेंगे कि क्या पैगम्बर तुम्हारे पास नहीं आए थे जो तुमको तुम्हारे परव. रदिगार की आयतें पढ़कर सुनाते और तुमको इस दिन के पेश आने से डराते वह लोग जवाब देगें कि हाँ (आए तो थे) मगर (हमने न माना) और अजाब का हुक्म काफिरों के बारे में पूरा हो कर रहेगाकृकृकृकृ (तब उनसे) कहा जाएगा कि जहन्नुम के दरवाजों में धँसो और हमेशा इसी में रहो गर्ज तकब्बुर करने वाले का (भी) क्या बुरा ठिकाना है कृकृकृ.और जो लोग अपने परवरदिगार से डरते थे वह गिरोह दर गिरोह बहिश्त की तरफ (एजाज व इकराम से) बुलाए जाएगें यहाँ तक कि जब उसके पास पहुँचेंगे और बहिश्त के दरवाज़े खोल दिये जाएंगें और उसके निगेहबान उन से कहेंगे सलाम अलैकुम तुम अच्छे रहे, तुम बहिश्त में हमेशा के लिए दाखिल हो जाओ (सूरा अज–जुमर : 73)

इस वि ाय पर कुछ और आयतें ये हैं

कि उसके साथ एक (फरिश्ता) हंका लाने वाला होगा और एक (आमाल का) गवाह। (सूरा काफ : 21)

और आकाश फट जाएगा, आर वह उस दिन बिल्कुल कमजोर होगा। (सूरा अल–हाक्का : 16)

और उनके सब्र के बदले (बहिश्त के) बाग़ और रेशम (की पोशाक) अता फरमाएगा। वहाँ वह तख्तों पर तकिए लगाए (बैठे) होंगे न वहाँ (आफताब की) धूप देखेंगे और न शिद्दत की सर्दी (सूरा अल–इंसान : 12–13)

और जहन्नुम देखने वालों के सामने जाहिर कर दी जाएगी (सूरा अन–नाजियात : 36)

तो आज (कयामत में) ईमानदार लोग काफिरों से हँसी करेंगे (सूरा अल–मुतफ्फिफीन : 34)

और गुनहगार लोग (देखकर समझ जाएँगें कि ये इसमें गिराए जाएँगे और उससे बचने की की राह न पाएंगे। (सूरा अल–कहफ : 53)

जैसा कि देखा जा सकता है, हमारी मत्यु के बाद होने वाली घटनाओं (हमारे विचार से) को कुरान में पहले से ही अनुभव किया जा चुका है तथा भूतकाल की घटनाओं के रूप में बताया गया है। अल्लाह उस सापेक्षिक समय के सांचे से नहीं बंधा है जिसमें हम बंद हैं। अल्लाह ने इन चीजों को समय से परे किया है : उसके लिए लोग उन्हें पहले ही कर चुके हैं और ये सभी घटनाएं घटित हो चुकी हैं तथा समाप्त हो चुकी हैं। निम्न आयत में यह कहा गया है कि प्रत्येक घटना, चाहे वह छोटी हो या बड़ी, अल्लाह के ज्ञान में है और एक किताब में दर्ज है :

(और ऐ रसूल) तुम (चाहे) किसी हाल में हो और क़ुरान की कोई सी भी आयत तिलावत करते हो और (लोगों) तुम कोई सा भी अमल कर रहे हो हम (हर वक्त) जब तुम उस काम में मशगूल होते हो तुम को देखते रहते हैं और तुम्हारे परवरदिगार से जर्रा भी कोई चीज़ छुपी नहीं रह सकती न ज़मीन में और न आसमान में और न कोई चीज़ ज़र्रे से छोटी है और न उससे बढ़ी चीज मगर वह रौशन किताब लौहे महफूज में जरूर है (सूरा यूनुस : 61)

भौतिकवादियों की चिंता

इस अध्याय में विचार किये गये तथ्य, पदार्थ के भीतर की सच्चाई, समयहीनता (टाईमलेसनेस) तथा अवकाशहीनता (स्पेसलेसनेस) – वास्तव में पूरी तरह स्प ट है। जैसे कि पहले बताया गया है कि ये कोई दर्शन या सोचने का तरीके भर पर आधारित नहीं है, बल्कि पूरी तरह स्प ट वैज्ञानिक तथ्य है जिनको नकारना असंभव है। इस वि ाय पर, युक्तिसंगत एवं तर्कसंगत साक्ष्य किसी अन्य विकल्प को अंग. ीकार नहीं करते; हमारे लिये, ब्रह्मांड – इस बनाने वाले सभी पदार्थों के साथ तथा इस पर रहने वाले लोगों के साथ – एक भ्रमिक संपूर्णता है, बोधों का एक संग्रह है जिसे हम अपने दिमाग में अनुभव करते हैं तथा जिसकी मूल वास्तविकता से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता।

भौतिकवादियों के लिये इसे समझना कठिन है – उदाहरण के लिये, अगर हम पोलीत्जर की बस के उदाहरण की ओर लौटें। हालांकि पोलीत्जर तकनीकी रूप से जानते हैं कि वे अपने बोध से बाहर नहीं आ सकते, वे इसे कुछ ही मामलों में स्वीकार कर सकते हैं। उनके लिये, दिमाग में घटनाएं बस के दुर्घटनाग्रस्त होने तक ही घटित होती हैं, उसके बाद घटनाएं दिमाग से भाग जाती हैं और एक भौतिक वास्तविकता बन जाती हैं। इस बिंदु पर, तर्कसंगत त्रुटि बहुत स्प ट है; पोलीत्जर ने भी वही गलती की जो भौतिकवादी सैमुएल जानसन ने की थी, जिन्होंने कहा, "मैंने पत्थर को ठोकर मारी, मेरे पैर को चोट लगी, इसलिए इसका अस्तित्व है।" पोलीत्जर भी वास्तव में इसे समझ नहीं सके, बस प्रभाव के बाद लगा झटका महज एक बोध ही था। एक बड़ा कारण कि भौतिकवादी इसे क्यों नहीं समझ सकते वह

यह है कि वह इससे छुपे आशय से डरते हैं जिसका उन्हें सामना करना पड़ेगा। लिंकन बार्नेट हमें उस डर या परेशानी के बारे में बताते हैं जो इस वि ाय के "देखने" मात्र से भौतिकवादी वैज्ञानिकों को होता है :

तमाम वस्तुगत यथार्थ को बोधों के एक छाया–जगत में दार्शनिक को सीमित करने के साथ वैज्ञानिक मनु य की ज्ञानेंद्रियों की अत्यधिक सीमाबध्दता से अवगत हो गया है।[211]

मूल पदार्थ से संबंध कायम नहीं कर सकने तथा समय एक बोध है, संबंधी किसी भी संदर्भ से भौतिकवादी में गहरी चिंता व्याप्त हो जाती है। यह तो वह धारणा है जिसपर वह पूरी तरह से निर्भर है। एक तरह से वह इसे पूजा की मूर्तियों के रूप में लेता है; क्योंकि उसका मानना है कि उसे (भातिकवादी को) समय एवं पदार्थ ने क्रमिक–विकास के माध्यम से बनाया है।

जब उसे यह महसूस होता है कि वह जिस ब्रह्मांड में रह रहा है, इस संसार, अन्य लोगों यहां तक कि अपने   ारीर तथा अन्य भौतिकवादी दार्शनिकों जिनके विचारों से वह प्रभावित है–संक्षेप में किसी के भी मूल तक नहीं पहुंच सकता तो वह भयभीत हो जाता है। वह जिन सब पर निर्भर करता है तथा जिनपर उसका विश्वास टिका है वे अचानक लुप्त हो जाते हैं। वह उस मायूसी को महसूस करता है जो वह आवश्यक रूप से कयामत के दिन महसूस करेगा। जैसा कि इस आयत में कहा गया है :

और उस दिन ख़ुदा के सामने सर झुका देंगे और जो ईजादें (झूठ गढ़ना) दुनिया में किया करते थे उनसे गायब हो जाएंगी (सूरा अन–नहलः 87)

उसके बाद से भौतिकवादी खुद को यह समझाने की कोशिश करता है कि वह वास्तव में बाह्य, मूल पदार्थ के सम्मुख है और उसे साक्ष्य बनाता है। वह दीवार पर मुक्के मारता है, पत्थर को ठोकर मारता है, चिल्लता है। लेकिन वह वास्तविकता से कभी भाग नहीं सकता।

जिस तरह से भौतिकवादी इस सच्चाई को अपने दिमाग से मिटाना चाहते हैं, वे यह भी चाहते हैं कि अन्य लोग इसे भूल जायें। उनको लगता है कि अगर पदार्थ की सच्ची प्रकृति का पता आम लोगों को चल गया तो उनकी खुद के दर्शन के दकयानूसीपन एवं संसार के बारे में उनकी अज्ञानता सबके सामने आ जायेगी। ऐसा कोई आधार नहीं बचेगा जिस पर वे अपने विचारों को युक्तिसंगत बना सकेंगे। यह भय दर्शाता है कि वे यहां उल्लेखित तथ्यों से परेशान क्यों हैं।

अल्लाह हमें ख़बर देता है कि परलोक में नास्तिकों का भय गहरा हो जाएगा। कयामत के दिन उन्हें इस तरह संबोधित किया जाएगा :

और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम उन सबको जमा करेंगे फिर जिन लोगों ने शिर्क किया उनसे पूछेगें कि जिनको तुम (ख़ुदा का)   ारीक ख्याल करते थे कहाँ हैं (सूरा अल–अनामः 22)

परलोक में नास्तिक देखेंगे कि उनकी संपत्ति, बच्चे तथा घनि ठ मित्र उन्हें छोड़ रहे हैं और उनसे गायब हो रहे हैं। वे खुद को दुनिया में अपने मूल के संपर्क में रहते हुए मान रहे थे और अपनी प्रशंसा करके अपने आपको अल्लाह के साथ हिस्सेदार बना रहे थे। अल्लाह ने इस एक आयत में कहा है,

"देखो कैसा ये अपने बारे में झूठ बोलने लगे, और जो कुछ यह गढ़ा करते थे वह सब इनसे गुम हो गया।" (सूरा अल–अनाम : 24)

ईमानवालों को लाभ

पदार्थ पूर्ण नहीं है और समय एक बोध है, ये तथ्य भौतिकवादियों के लिये चेतावनी हैं लेकिन सच्चे ईमानवालों का मामले उनसे विप. रीत है। अल्लाह में विश्वास रखने वाले लोग पदार्थ के पीछे का सच सामने आने पर बेहद खुश होंगे क्योंकि यह सच्चाई सभी सवालों की कुंजी है। इसके साथ ही सभी रहस्य खुल गये हैं और कोई भी उन मुद्दों को आसानी से समझ सकता है जो पहले अबूझ पहेली मालूम होते थे।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, मृत्यु, स्वर्ग, नरक एवं परलोक तथा बदलते आयामों को समझा जायेगा। 'अल्लाह कहां हैं?', 'अल्लाह के पूर्व किसका अस्तित्व था?' 'अल्लाह का सृजन किसने किया?' 'कब्र में जीवन कितने समय बाद समाप्त जो जायेगा।' 'स्वर्ग एवं नरक कहां है?', और 'क्या स्वर्ग एवं नरक अभी अस्तित्व में हैं?' जैसे सवालों का आसानी से जवाब दिया जायेगा। एक बार यह बात समझ में आने पर कि अल्लाह ने इस ब्रह्मांड का सृजन   ून्य से किया, 'कब', और 'कहां' का सवाल कोई मायने नहीं रखेगा, क्योंकि कोई समय एवं स्थान नहीं बचेगा। जब अवकाशहीनता को समझा जायेगा तो यह भी समझ में आ जायेगा कि नरक, स्वर्ग तथा धरती सभी एक ही स्थान में हैं। अगर समयहीनता को समझ लिया जायेगा तो यह भी समझ में आ जायेगा कि सब कुछ एक ही क्षण में घटित होता है : किसी के इंतजार की आवश्यकता नहीं होगी, और समय गुजरेगा नहीं, क्योंकि सबकुछ पहले ही घटित हो चुका है पूरा हो चुका है।

जब रहस्य को समझ लिया जाता है तो ये दुनिया ईमान वालों के लिये स्वर्ग बन जाती है। सभी तरह का चिंताजनक सामान, चिंताएं,   ांकाएं एवं भय समाप्त हो जायेगा। व्यक्ति यह समझ जायेगा कि समूचा ब्रह्मांड एक संप्रभु है, कि उसने ही अपनी मर्जी से समूची भौतिक दुनिया का सृजन किया है, और कि उसकी तरफ लौटना होगा। वह तब खुद को सम्पूर्ण रूप से अल्लाह को समर्पित कर देगा और उसके आज्ञापालन को लग जायेगा। (सूरा आले इमरान : 35)

इस रहस्य को समझना मनु य की संसार में बहुत बड़ी कामयाबी है।

इस रहस्य के साथ ही कुरान में उल्लेखित एक और बहुत महत्त्वपूर्ण वास्तवितकता सामने आती है : यह तथ्य कि ''खुदा उसकी   ाहरग से भी ज्यादा निकट है।'' (सुरा काफ : 16)। जैसा कि सभी जानते हैं कि गल – नाल   ारीर के भीतर होती है। मानव के अंतः स्थल, से अधिक निकट क्या हो सकता है? इस स्थिति को इस तथ्य से आसानी से समझा जा सकता है कि हम अपने दिमाग से बाहर नहीं निकल सकते। इस रहस्य को समझते हुए इस आयत को बेहतर रूप से समझा जा सकता है।

यह एक सीधी–साधी सच्चाई है। इसे अच्छे से स्थापित किया जाना चाहिए कि मानव के लिये अल्लाह के अलावा कोई और सहायक एवं प्रदाता नहीं है। अल्लाह के सिवाय कोई पूर्ण नहीं है; वह एक मात्र पूर्ण है जिससे कोई   ारण मांग सकता है, मदद की याचिका कर सकता हैं, और ईनाम के लिये प्रत्याशा कर सकता है।

हम जिस तरफ भी अपना मुख करते हैं अल्लाह का मुख उस तरफ होता है।

नॉटस

1णक्लिफ, कोनर, "इवोल्युशन वर्सिस क्रिएशनिज़्मः इन डिफेन्स ऑफ साइंटिफिक थिंकिंग', इन्टरनेशनल सोशिआलिस्ट रिव्यू (मंथली मैगज़िन सपलमेन्ट टु द मिलिटन्ट), नवम्बर 1980.

2ण अली डेमीरसोय, कालीटिम वे एवरिम (विरासत और क्रम विकास), अंकारा, मेटेक्सान पब्लिशिंग कं., 1984. पृ.61.

3ण माइकल जे बेहे, डार्विन्स ब्लैक बॉक्स, न्यूयॉर्कः फ्री प्रेस, 1996, पृ.232–233

4ण रिचर्ड डॉकिन्स, द ब्लाइंड वॉचमेकर, लंदनः डबल्यु डबल्यु नॉर्टन, 1986, पृ.159ण

5ण जॉनाथन वैल्स, आइकन्स ऑफ इवोल्युशनः साइंस ऑर मिथ? व्हाय मच ऑफ व्हॉट वी टीच अबाउट इवोल्युशन इज़ रॉग, रेग्नेरी पब्लिशिंग, 2000, पृ.235–236.

6ण डेन ग्रेव्स, साइंस ऑफ फेथः फोर्टी–ऐइट बायोग्राफ़ीस ऑफ हिस्टोरिक साइंटिस्टस एंड देयर क्रिश्चियन फेइथ, ग्रांड रेपिड, एमआई, क्रेगेल रिसॉर्सीस.

7ण साइंस, फिलोसोफी एंड रिलिज़नः अ सिम्पोज़ियम, 1941, अध्याय 13

8ण मैक्स प्लांक, व्हेर इज़ साइंस गोईंग?, एूमइेवचीपंण्बवउध्ंवीवतपेउेध्बपमदबमणीजउसण

9ण एच एस लिप्सन, "अ फिज़िसिस्टस व्यू ऑफ डार्विन्स थीअरि', इवोल्युशन ट्रेन्ड इन प्लान्टस, वॉल्युम 2, नं 1, 1988, पृ.6.

10ण हालांकि डार्विन ने यह दावा किया था कि उनकी थीअरि लैमार्क की थीअरि पर बिल्कुल आधारित नहीं है लेकिन धीरे–धीरे डार्विन ने लैमार्क के दावों पर आधार रखना ुरू किया। विशे ातः द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ का छट्ठा और आखरी संस्करण लैमार्क के 'प्राप्त किये हुए लक्षणों की विरासत' (इनहेरिटन्स ऑफ ऐक्वायर्ड ट्रेइटस) के दृ टांतों से भरपूर है। ज्यादा जानकारी के लिए बैंजामिन फैरिंग्टन, व्हॉट डार्विन रियली सेड, न्यूयॉर्क : ॉकन बुक्स, 1966, पृ. 64 देखें।

11ण माइकल रूज़, "नॉनलिटरालिस्ट ऐन्टीइवोल्युशन', एएएएस सिम्पोज़ियमः 'द न्यू ऐन्टीइवोल्युशनिज़्म," फरवरी 13, 1993, बोस्टन, एमए.

12ण स्टीवन एम स्टैनली, माक्रोइवोल्युशनः पैटर्न एंड प्रोसेस, सान फ्रांसिस्कोः डबल्यु एच फ्रीमान एंड कं. 1979, पृ.35, 159.

13ण कॉलिन पेटरसन, "क्लैडिस्टिक्स', ब्रायन लीक, पीटर फ्रांज़ के साथ इंटरव्यू, मार्च 4, 1982, बीबीसी.

14ण जॉनाथन वैल्स, आइकन्स ऑफ इवोल्युशनः साइंस ऑर मिथ? व्हाय मच ऑफ व्हॉट वी टीच अबाउट इवोल्युशन इज़ रॉग, रेग्नेरी पब्लिशिंग, 2000, पृ. 141–151.

15ण जेरी कोयने, "नॉट ब्लैक एंड व्हाइट', अ रिव्यू ऑफ माइकल माजेरुस मेलेनिज़्मः इवोल्युशन इन एक्शन, नैचर, 396 (1988), पृ.35–36

16ण स्टीफन जे गाउल्ड, "द रिटर्न ऑफ होपफुल मॉन्स्टर्स', नैचुरल हिस्ट्री, वॉल्युम 86, जुलाई–अगस्त 1977, पृ.28।

17ण चार्ल्स डार्विन, ऑरिज़िन ऑफ स्पीशीज़ः अ फैक्सिमीली ऑफ द फर्स्ट ऐडिशन, हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1964, पृ 189।

18ण संदर्भ, पृ. 177।

19ण बी जी रंगानाथन, ऑरिजिन्स?, पेन्सिलवेनियाः द बैनर ऑफ ट्रुथ ट्रस्ट, 1988.

20ण वॉरेन वीवर, "जीनेटिक इफेक्टस ऑफ एटमिक रेडिएशन', साइंस, वोल्युम 123, जून 29, 1956, पृ. 1159।

21ण गॉर्डन आर टेलर, द ग्रेट इवोल्युशन मिस्ट्री, न्यूयॉर्क : हार्पर एण्ड रॉ, 1983, पृ. 48।

22ण माइकल पिटमेन, एडम एंड इवोल्युशन, लंदनः रिवर पब्लिशिंग, 1984, पृ. 70।

23ण चार्ल्स डार्विन, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ः अ फैक्सिमीली ऑफ द फर्स्ट ऐडिशन, हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1964, पृ.179.

24ण चार्ल्स डार्विन, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़, ऑक्सफॉर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, न्यूयॉर्क, 1998, पृ. 140, 141, 227।

25ण डेरेक वी एगर, "द नैचर ऑफ द फॉसिल रिकॉर्डः, प्रोसीडिंग्स ऑफ द ब्रिटिश जीओलोजीकल ऐसोसियेशन, वॉल्युम – 87, 1976, पृ. 133.

26ण मार्क ज़ारनेकी, "द रिवाइवल ऑफ द क्रिएशनिस्ट क्रुसेड', मेकलीन्स, जनवरी 19, 1981, पृ. 56.

27ण आर वेसन, बीयॉन्ड नैचुरल सेलेक्शन, एमआईटी प्रेस, कैम्ब्रिज़, एमए, 1991, पृ. 45

28ण डैविड रोप, "कन्फ्लिक्टस बीटवीन डार्विन एंड पेलिओन्टोलोजी', बुलेटिन, फिल्ड म्युज़ियम ऑफ नैचुरल हिस्ट्री, वॉल्युम 50, जनवरी 1979, पृ. 24.

29ण रिचर्ड मोनेस्टर्स्की, "मिस्टरीज़ ऑफ द ओरिएन्ट', डिस्कवर, अप्रैल 1993, पृ. 40.

30ण रिचर्ड फोर्टे, "द कैम्ब्रायन एक्स्प्लोज़न एक्सप्लोडेड?", साइंस, वॉल्युम 293, नं 5529, 20 जुलाई 2001, पृ. 438–439

31ण पूर्व संदर्भ।

32ण रिचर्ड डॉकिन्स, द ब्लाइंड वॉचमेकर, लंदनः डबल्यु डबल्यु नॉर्टन 1986, पृ. 229.

33ण डग्लास जे फुतुयामा, साइंस ऑन ट्रायल, न्यू यॉर्क : पेन्थन बूक्स, 1983, पृ. 197

34ण चार्ल्स डार्विन, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ः अ फैक्सिमीली ऑफ द फर्स्ट ऐडिशन, हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1964, पृ. 302.

35ण स्टीफन बेंगस्टन, नैचर, वॉल्युम 345, 1990, पृ. 765.

36ण द न्यू एनिमल फायलोजनिः रिलायेबिलिटी एंड इम्प्लिकैशन्स, प्रोसीडिंग्स ऑफ नेशनल ऐकेडमी ऑफ साइंस., 25 अप्रैल 2000, वॉल्युम 97, नं 9, पृ. 4453–4456.

37ण संदर्भ।

38ण गेराल्ड टी टोड्ड, "इवोल्युशन ऑफ द लंग एंड द ऑरिजिन ऑफ बॉनी फिशीज़ः अ कैज़ुयुअल रिलेशनशीप', अमेरिकन ज़ूलोजिस्ट, वॉल्युम 26, नं. 4, 1980, पृ. 757.

39ण आर एल केरोल, वर्टीब्रेट पेलिओन्टोलोजी एंड इवोल्युशन, न्यू यॉर्कः डबल्यु एच फ्रीमान एंड कं. 1988, पृ. 4; रॉबर्ट एल केरोल, पैटर्नस एंड प्रोसेसेज़ ऑड वर्टीब्रेट इवोल्युशन, कैम्ब्रिज़ युनिवर्सिटी प्रेस, 1997, पृ. 296–97

40ण एडविन एच कोल्बर्ट, एम मोलारेस, इवोल्युशन ऑफ द वर्टीब्रेटस, न्यू यॉर्कः जॉन वीली एंड सन्स, 1991, पृ.99.

41ण जीन–जेक्वस हुबलीन, द हेमलिन एन्सायक्लोपीडिया ऑफ प्रिहिस्टोरिक एनिमल्स, न्यूयॉर्कः द हेमलिन पब्लिशिंग ग्रुप लिमिटेड., 1984, पृ.120.

42ण जेक्वस मिल्लोट, "द सिलाकेन्थ", साइंटिफिक अमेरिकन, वॉल्युम 193, दिसंबर 1955, पृ. 39.

43ण बीलीम वे टेकनीक मैगज़िन, नवम्बर 1998, नः 372, पृ. 21.

44ण रॉबर्ट एल केरोल, वर्टीब्रेट पेलिओन्टोलोजी एंड इवोल्युशन, न्यू यॉर्कः डबल्यु एच फ्रीमान एंड कं. 1988, पृ. 198.

45ण एंजिन कोरुर, "गॉज़लेरिन वे केनाटलार्म सीरी" (द मिस्टरी ऑफ द आइज़ एंड द विंग्स), बीलीम वे टेकनिक, नं.203, अक्तूबर 1984, पृ. 25.

46ण नैचर, वॉल्युम 382, अगस्त 1, 1996, पृ. 401.

47ण कार्ल ओ. डुनबार, हिस्टोरीकल जीओलोजि, न्यू यॉर्कः जॉन वीली एंड सन्स, 1961, पृ. 310.

48ण एल डी मार्टिन, जे डी स्टीवर्ट, के एन व्हेटस्टोन, द ऑक, वॉल्युम 98, 1980, पृ. 86.

49ण संदर्भ, पृ. 86; एल डी मार्टिन, "ऑरिजिन ऑफ हायर ग्रुप्स ऑफ टेट्रापोड", इथाका, न्यू यॉर्कः कोमस्टोक पब्लिशिंग एसोसियेशन, 1991, पृ. 485, 540.

50ण एस. टारसीटेनो, एम के हेक्ट, झूओलोजिकल जर्नल ऑफ द लिन्नेएन सॉसायटी, वॉल्युम 69, 1985, पृ. 177, 1980, पृ. 595.

51ण पेट ीपमेन, "बर्डस डु इट कृकृकृकृकृ डिड डायनासोर्स?", न्यू साइंटिस्ट, फरवरी 1, 1997, पृ. 31.

52ण "ऑल्ड बर्ड", डिस्कवर, मार्च 21, 1997।

53ण पूर्व संदर्भ।

54ण पेट ीपमेन, "बर्डस डु इट कृकृकृकृ डिड डायनासोर्स?", पृ. 28.

55ण रॉबर्ट एल. केरोल, पैटर्नस एंड प्रोसेसीज़ ऑड वर्टीब्रेट इवोल्युशन, कैम्ब्रिज़ युनिवर्सिटी प्रेस, 1997, पृ. 280–81.

56ण जॉनाथन वैल्स, आइकन्स ऑफ इवोल्युशन, रेग्नेरी पब्लिशिंग, 2000, पृ. 117.

57ण पेट ीपमेन, "बर्डस डु इट कृकृकृकृ. डिड डायनासोर्स?", पृ. 28.

58ण पूर्व संदर्भ।

59ण रॉजर लेविन, "बॉन्स ऑफ मेम्मल्स, एन्सेस्टर्स फ्लेश्ड आउट", साइंस, वॉल्युम 212, जुन 26, 1981, पृ. 1492.

60ण ज्योर्ज गेलॉर्ड सिम्पसन, लाइफ बिफौर मैन, न्यूयॉर्क : टाइम–लाइफ बूक्स, 1972, पृ. 42।

61ण आर एरिक लॉम्बार्ड, "रिव्यू ऑफ इवोल्युशनरी प्रिन्सिपल्स ऑफ द मेम्मलिअन मिडल इयर, गेराल्ड फ्लीशर", इवोल्युशन, वॉल्युम 33, दिसम्बर 1979, पृ. 1230।

62ण डेविड आर पिलबीम, "रिएरेन्जिन्ग अवर फैमिली ट्री", नैचर, जुन 1978, पृ. 40.

63ण अर्नेस्ट ए हूटन, अप फ्रोम द एप, न्यू यॉर्कः मैकमिलन, 1931, पृ. 332.

64ण माल्कम मगरिज़, द एंड ऑफ क्रिस्चनडम, गांड रेपिड, एर्डमान्स, 1980, पृ. 59.

65ण स्टीफन जे गाउल्ड, "स्मिथ वूडवर्ड फोली", न्यू साइंटिस्ट, फरवरी 5, 1979, पृ. 44.

66ण केनेथ ऑकली, विलियम ले ग्रोस क्लार्क – जे एस," "पील्टडाउन", मेडेन लेराउस, वॉल्युम 10, पृ. 133.

67ण स्टीफन जे गाउल्ड, "स्मिथ वूडवर्ड फोली", न्यू साइंटिस्ट, अप्रैल 5, 1979, पृ. 44.

68ण डबल्यु के ग्रेगरी, "हेस्पेरोपिथेसस एपरन्टली नोट एन एप ऑर नोर अ मैन", साइंस, वॉल्युम 66, दिसम्बर 1927, पृ. 579.

69ण फिलिप्स वर्नर ब्रेडफोर्ड, हार्वी ब्ल्युम, ओटा बेन्गा द पिग्मी इन द झ़ू, न्यू यॉर्कः डेल्टा बूक्स, 1992.

70ण डेविड पीलबीम, "ह्युमन्स लूज़ एन अर्ली एनसेस्टर", साइंस, अप्रैल 1982,

पृ. 6–7.

71ए सी सी स्वीशर ष्ष्, डबल्यु जै रिंक, एस सी एन्टन, एच पी वार्ज़, जी एच कुर्टिस, ए औप्रोजो, विडियास्मोरो, "लैटेस्ट होमो इरेक्टस ऑफ जावाः पॉटेन्शियल कन्टेपरानीटी विथ हॉमो सेपियन्स इन साउथइस्ट एशिया", साइंस, वॉल्युम 274, नं 5294, 13 दिसम्बर 1996 का अंक, पृ.1870–1874; ज्यादा जानकारी के लिए जेफ्री क्लुगर, "नोट सो एक्सटिन्क्ट आफ्टर ऑलः द प्रिमिटिव होमो इरेक्टस मे हेव सर्वाइब्ड लोन्ग इनफ टु कोएग्जिस्ट विथ मॉडर्न ह्युमन्स, टाइम, दिसम्बर 23, 1996.

72ए सोली झुकरमैन, बियोन्ड द आइवरी टावर, न्यू यॉर्कः टोपलिंजर पब्लिकेशन्स, 1970, पृ. 75–94.

73ए चार्ल्स इ. ऑक्सनार्ड, "द प्लेस ऑफ ऑस्ट्रेलोपिथेसाइन्स इन ह्युमन इवोल्युशनः ग्राउन्ड फॉर डाउट", नैचर, वॉल्युम 258, पृ. 389.

74ए होली स्मिथ, अमेरिकन जर्नल ऑफ फिज़िकल एन्थ्रोपोलोजी, वॉल्युम 94, 1994, पृ. 307–325.

75ए फ्रेड स्पूर, बर्नार्ड वूड, फ्रांस झोनेवेल्ड, "इम्प्लिकेशन ऑफ अर्ली होमिनिड लेब्रिन्टाइन मॉर्फोलोजी फोर इवोल्युशन ऑफ ह्युमन बायपेडल लोकोमोशन", नैचर, वॉल्युम 369, जून 23, 1994, पृ. 645–648.

76ए टीम ब्रोमेज, न्यु साइंटिस्ट, वॉल्युम 133, 1992, पृ. 38–41.

77ए जे ई क्रोनिन, एन टी बोआज़, सी बी स्ट्रीन्जर, वाय रेक, "टेम्पो एंड मोड इन होमिनिड इवोल्युशन," नैचर, वॉल्युम 292, 1981, पृ. 113–122.

78ए सी एल ब्रैस, एच नेल्सन, एन कोर्न, एम एल ब्रैस, एटलास ऑफ ह्युमन इवोल्युशन, 2. नी. न्यूयॉर्कः राइनहार्ट एंड विल्सन, 1979.

79ए एलन वॉकर, साइंटिफिक अमेरिकन, वॉल्युम 239 (2), 1978, पृ. 54.

80ए बर्नार्ड वुड, मार्क कॉलार्ड, "द ह्युमन जीनस", साइंस, वॉल्युम 284, नं 5411, 2 अप्रैल 1999, पृ. 65–71.

81ए मार्विन ल्युबेनाउ, बॉन्स ऑफ कन्टेन्शन, ग्रांड रेपिड, बेकर, 1992, पृ. 83.

82ए बोयस रेन्सबर्गर, द वोशिंग्टन पोस्ट, नवम्बर 19, 1984.

83ए संदर्भ

84ए रिचर्ड लीकी, द मेकिंग ऑफ मैनकाइन्ड, लंदनः स्फीयर बूक्स, 1981, पृ. 116.

85ए मार्विन ल्युबेनाउ, बॉन्स ऑफ कन्टेन्शन, ग्रांड रेपिड, बेकर, 1992, पृ. 136.

86ए पेट ीपमैन, "डाउटिंग दमानिसी", अमेरिकन साइंटिस्ट, नवम्बर–दिसम्बर 2000, पृ. 491.

87ए एरिक ट्रिनकोस, "हार्ड टाइम्स एमंग द नीएन्डरथाल्स", नैचुरल हिस्ट्री, वॉल्युम 87, दिसम्बर 1978, पृ. 10; आर एल होलोवे, "द नीएन्डरथाल ब्रैनः व्हॉट वॉज़ प्रिमिटीव", अमेरिकन जर्नल ऑफ फिज़िकल एन्थ्रोपोलोजी सपलीमेन्ट, वॉल्युम 12, 1991, पृ. 94.

88ए एलन वॉकर, साइंस, वॉल्युम 207, 1980, पृ. 1103.

89ए ए जे केल्सो, फिज़िकल एन्थ्रोपोलोजी, प्रथम संस्करण, न्यू यॉर्कः जे बी लिपिनकोट कं, 1970, प .221; एम डी लीकी, ओल्डुवाई गोर्ज, वॉल्युम 3, कैम्ब्रिज़ः कैम्ब्रिज़ युनिवर्सिटी प्रेस, 1971, पृ. 272.

90ए एस जे गाउल्ड, नैचुरल हिस्ट्री, वॉल्युम 85, 1976, पृ. 30.

91ए टाइम, नवम्बर 1996.

92ए एल एस बी लीकी, द ऑरिजिन ऑफ होमो सेपियन्स, सं. एफ बोर्डे, पेरिसः युनेस्को, 1972, पृ. 25–29, एलएसबी लीकी, बाय द एविडन्स, न्यूयॉर्कः हारकॉर्ट ब्रैस जोवानोविच, 1974.

93ए "इज़ धिस द फैस ऑफ अवर पास्ट", डिस्कवर, दिसम्बर 1997, पृ. 97–100.

94ए ए जे केल्सो, फिज़िकल एन्थ्रोपोलोजी, 1970, पृ. 221; एम डी लीकी, ओल्डुवाई गोर्ज, वॉल्युम 3, कैम्ब्रिज़ः कैम्ब्रिज़ युनिवर्सिटी प्रेस, 1971, पृ. 272

95ए डोनाल्ड सी जोहानसन – एम ए एडी, ल्युसीः द बिगीनिंग ऑफ ह्युमनकाइन्ड, न्यू यॉर्कः सिमोन – ुस्टर, 1981, पृ. 250.

96ए साइंस न्यूज़, वॉल्युम 115, 1979, पृ. 196–197.

97ए इआन एन्डरसन, न्यू साइंटिस्ट, वॉल्युम 98, 1983, पृ. 373.

98ए रसेल एच टटल, नैचुरल हिस्ट्री, मार्च 1990, पृ. 61–64.

99ए रुथ हेन्के, "ऑफ्रेक्ट औस डेन बाउमेन', फॉकस, वॉल्युम 39, 1996, पृ. 178

100ए एलेइन मोर्गन, द स्कार्स ऑफ इवोल्युशन, न्यू यॉर्कः ऑक्सफॉर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1994, पृ. 5

101एसोली झुकरमैन, बियोन्ड द आइवरी टावर, न्यू यॉर्कः टोपलाइनर पब्लिकेशन्स, 1970, पृ. 19.

102ए रोबर्ट लोके, "फेमिली फाइट्स', डिस्कवरिंग आर्कियोलोजी, जुलाई/अगस्त 1999, पृ. 36–39.

103ए पूर्व संदर्भ।

104ए हेन्री जी, इन सर्च ऑफ टाइमः बियोन्ड द फोसिल रिकॉर्ड टु अ न्यु हिस्टरी ऑफ लाइफ, न्यू यॉर्क, द फ्री प्रेस, 1999, पृ. 126–127.

105ए डबल्यु आर बर्ड, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ रिविज़िटेड, नेशविलेः थोमस नेल्सन कंपनी., 1991, पृ. 298–299.

106ए "होयल ऑन इवोल्युशन', नैचर, वॉल्युम 294, नवम्बर 12, 1981, पृ. 105.

107ए अली डेमिरसोय, कालीतीम वे एवरिम (विरासत और क्रमिक–विकास), अंकाराः मेटेक्सेन पब्लिशिंग कं., 1984, पृ. 64.

108ए डबल्यु आर बर्ड, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ रिविज़िटेड, नेशविलेः थोमस नेल्सन कं. , 1991, पृ. 304.

109ए संदर्भ, पृ. 305.

110ए जे डी थोमस, इवोल्युशन एंड फेइथ, एबीलिन, टीएक्स, एसीयु प्रेस, 1988, पृ. 81–82.

111ए रोबर्ट ापिरो, ऑरिजिन्सः अ स्केप्टिक्स गाइड टु द क्रिएशन ऑफ लाइफ ऑन अर्थ, न्यूयॉर्क, समिट बूक्स, 1986, पृ. 127.

112ए फ्रेड होयल, चन्द्रा विक्रमासिंघे, इवोल्युशन फ्रोम स्पेस, न्यू यॉर्क, सिमोन – ुस्टर, 1984, पृ. 148.

113ए संदर्भ, पृ. 130.

114ए फाब्बी ब्रिटानिक बिलिम एन्सिक्लोपेडिसी (फाब्बी ब्रिटानिका साइंस एनसायक्लोपिडीया, वॉल्युम 2, नं 22, पृ. 519.

115ए रिचर्ड बी ब्लीस – गेरी ई पार्कर, ऑरिजिन ऑफ लाइफ, कैलिफोर्निआः 1979, पृ. 14.

116ए स्टैनली मिलर, मॉलेक्युलर इवोल्युशन ऑफ लाइफः करंट स्टेटस ऑफ द प्रिबायोटिक सिन्थेसिस ऑफ स्मोल मोलेक्युल्स, 1986, पृ. 7.

117ए केविन मेक कीन, बीलीम वे टेकनिक, नं 189, पृ. 7.

118ए जे पी फेरिस, सीटी चेन, "फोटोकैमिस्ट्री ऑफ मिथैन, नाइट्रोजन एन्ड वॉटर मिक्सचर एज़ अ मॉडल फॉर द एटमोस्फियर ऑफ द प्रिमिटिव अर्थ", जर्नल ऑफ अमेरिकन केमिकल सोसायटी, वॉल्युम 97:11, 1975, पृ. 2964.

119ए "न्यु एविडन्स ऑन इवोल्युशन ऑफ अर्ली एटमोस्फियर एंड लाइफ", बुलेटिन ऑफ द अमेरिकन मीटिओरोलोजिकल सोसायटी, वॉल्युम 63, नवम्बर 1982, पृ. 1328–1330.

120ए रिचर्ड बी ब्लीस – गैरी इ पार्कर, ऑरिजिन ऑफ लाइफ, कैलिफोर्निया, 1979, पृ. 25.

121ए डबल्यु आर बर्ड, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ रिविज़िटेड, नेशविलेः थोमस नेल्सन कं. , 1991. पृ. 325.

122ए रिचर्ड बी ब्लीस – गैरी इ पार्कर, ऑरिजिन ऑफ लाइफ, कैलिफोर्निया, 1979, पृ. 25.

123ए संदर्भ

124ए एस डबल्यु फॉक्स, के हाराडा, जी क्रेम्पटिज़, जी मुलर, "कैमिकल ऑरिजन ऑफ सेल्स", कैमिकल इंजिनियरिंग न्यूज़, जुन 22, 1970, पृ. 80.

125ए फ्रान्क बी सेलिसबरी, "डाउटस अबाउट द मॉर्डन सिन्थेटिक थीअरि ऑफ इवोल्युशन", अमेरिकन बायोलोजि टीचर, सप्टेम्बर 1971, पृ. 336.

126ए पॉल ऑगर, डे ला फिज़िक थीओरिक अ ला बायोलोजि, 1970, पृ. 118.

127ए फ्रांसिस क्रीक, लाइफ़ इटसेल्फः इटस ऑरिज़िन एन्ड नैचर, न्यू यॉर्क, सिमोन – ुस्टर, 1981, पृ. 88.

128ए अली डेमिरसोय, कालीतीम वे एवरिम (विरासत और क्रम विकास), अंकाराः मेटेक्सेन पब्लिशिंग कं., 1984, पृ. 39.

129ए होमर जेकबसन, "इन्फोर्मेशन, रिप्रोडक्शन एन्ड द ऑरिजिन ऑफ लाइफ", अमेरिकन साइंटिस्ट, जनवरी 1955, पृ. 121.

130ए रैनहार्ड जंकर – सीगफ्राइड ेरेर, "एंटस्टेहंग उंड गेशाइश्ते डेर लेबेवेसेन", वेयेल, 1986, पृ. 89.

131ए माइकल डेन्टन, इवोल्युशनः अ थीअरि इन क्राइसीस, लंदनः बुरनेट बूक्स, 1985, पृ. 351.

132ए जॉन होर्गन, "इन द बिगीनिंग", सायनिटिफक अमेरिकन, वॉल्युम 264, फरवरी 1991, पृ. 119.

133ए जी एफ जोयस, एल ई ओर्जेल, "प्रोस्पेक्टस फॉर अन्डरस्टेन्डिंग द ऑरिजिन ऑफ द आरएनए वर्ल्ड", इन द आरएनए वर्ल्ड, न्यू यॉर्कः कॉल्ड स्प्रिंग हार्बर लैबोरेटरी प्रेस, 1993, पृ. 13.

134ए जेक्वस मोनोड, चान्स एंड नेसेसिटी, न्यू यॉर्कः 1971, पृ. 143.

135ए लेस्ली ई ओर्जेल, "द ऑरिजिन ऑफ लाइफ ऑन द अर्थ", साइंटिफिक अमेरिकन, अक्तूबर 1994, वॉल्युम 271, पृ. 78.

136ए गॉर्डन सी मिल्स, डीन केन्योन, "द आरएनए वर्ल्डः अ क्रिटीक", ऑरिजिन्स – डिज़ाइन, 17:1, 1996.

137ए ब्रिग क्लाइस, द आरएनए वर्ल्ड, ीजजचरूध्ध्ूण्चंदेचमतउपंण्वतहध्दूंवतसकणेजउ

138ए चन्द्रा विक्रमासिंघे, इंटरव्यू इन लंदन डेइली एक्सप्रेस, अगस्त 14, 1981.

139ए पीअरे–पी ग्रास, इवोल्युशन ऑफ लिविंग ऑर्गेनिज़म, न्यू यॉर्कः ऐकेडमिक प्रेस,

1977, पृ. 103.

140ण संदर्भ, पृ. 107.

141ण नॉर्मन मैकेबैथ, डार्विन रिटायर्डः एन अपील टु रिज़न, बोस्टनः गैम्बिट, 1971, पृ. 101.

142ण माल्कम मुगरिज, द एंड ऑफ क्रिश्चनडम, ग्रांड रैपिडः इर्डमान्स, 1980, पृ. 43.

143ण लोरेन सी. इसेली, द इमेन्स जर्नी, विंटेज बूक्स, 1958, पृ. 186.

144ण चार्ल्स डार्विन, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ः अ फेक्सीमिली ऑफ द फर्स्ट एडिशन, हार्वर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, 1964, पृ. 184.

145ण नॉर्मन मेकबैथ, डार्विन रिटायर्डः अन अपील टु रिज़न, हार्वर्ड कॉमन प्रेस, न्यूयॉर्कः 1971, पृ. 33.

146ण पूर्व संदर्भ, पृ. 36.

147ण लोरेन इसेली, द इमेन्स जर्नी, विंटैज बूक्स, 1958, पृ. 227.

148ण एच लिस्ले गीब्स और पीटर आर ग्रांट, "ऑसिलेटिंग सैलेक्शन ओन डार्विन्स फिन्चीस', नैचर, 327, 1987, पृ. 513; ज्यादा विस्तृत जानकारी के लिअ कृप्या जॉनाथन वैल्स, आइकन्स ऑफ इवोल्युशन, 2000, पृ. 159–175 देखें।

149ण डॉ. ली स्पेटनर, "ली स्पेटनर/एडवर्ड मैक्स डायलोगः कनटिन्युइंग एन एक्सचेन्ज विथ डॉ. एडवर्ड ई मैक्स", 2001, ीजजचरूध्ध्ूण्जतनमवतपहपदण्वतहध्ेचमजदमत2ण्ंच

150ण पूर्व संदर्भ

151ण पूर्व संदर्भ

152ण फ्रांसिस्को जे अयाला, "द मैकेनिज़्म्स ऑफ इवोल्युशन", साइंटिफिक अमेरिकन, वॉल्युम 239, सेप्टेम्बर 1978, पृ. 64.

153ण डॉ.ली स्पेटनर, "ली स्पेटनर/एडवर्ड मैक्स डायलोगः कनटिन्युइंग एन एक्सचेन्ज विथ डॉ. एडवर्ड ई मैक्स", 2001, ीजजचरूध्ध्ूण्जतनमवतपहपदण्वतहध्ेचमजदमत2ण्ंच

154ण एस आर स्केड्डिंग, "डु वेस्टिजियल ऑर्गन्स प्रोवाइड ऐविडन्स फॉर इवोल्युशन?", इवोल्युशनरी थीअरि, वॉल्युम 5, मई 1981, पृ. 173.

155ण द मेर्क मेन्युअल ऑफ मेडिकल इन्फोर्मेशन, होम एडिशन, न्यू जर्सीः मर्क – कं., इंक्लुज़िव. द मर्क पब्लिशिंग ग्रुप, राहवे, 1997.

156ण एच इनोक, क्रिएशन एंड इवोल्युशन, न्यू यॉर्कः 1966, पृ. 18–19.

157ण फ्रांक सेलिसबरी, "डाउटस अबाउट द मॉर्डन सिन्थेटिक थीअरि ऑफ इवोल्युशन", अमेरिकन बायोलोजि टीचर, सप्टेम्बर 1971, पृ. 338.

158ण डीन केन्योन – पर्सिवल डेविस, ऑफ पान्डाज़ एंड पीपलः द सैन्ट्रल क्वेश्चन ऑफ बायोलोजिकल ऑरिजिन, (डलासः हाऊटन पब्लिशिंग, 1993), पृ. 33.

159ण माइकल डेन्टन, इवोल्युशनः अ थीअरि इन क्राइसीस, लंदनः बुरनेट बूक्स, 1985, पृ. 145.

160ण विलियम फिक्स, द बॉन पेडलर्सः सेलिंग इवोल्युशन (न्यू यॉर्कः मैकमिलन पब्लिशिंग कं., 1984), पृ. 189.

161ण डबल्यु आर बर्ड, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ रिविज़िटेड, थोमस नेल्सन कंपनी., नेश. विलेः 1991, पृ. 35–38.

162ण डबल्यु आर बर्ड, द ऑरिजिन ऑफ स्पीशीज़ रिविज़िटेड, पृ. 98–99, 199–202.

163ण माइकल डेन्टन, इवोल्युशनः अ थीअरि इन क्राइसीस, लंदनः बुरनेट बूक्स, 1985, पृ. 290–91.

164ण हेर्वे फिलिप एंड पैट्रिक फोर्टेरे, "द रूटिंग ऑफ द युनिवर्सल ट्री ऑफ लाइफ इज़ नॉट रिलायेबल", जर्नल ऑफ मॉलेक्युलर इवोल्युशनम, वॉल्युम 49, 1999, पृ. 510

165ण जैम्स लेक, रवि जैन वे मारिया रिवेर, "मिक्स एंड मैच इन द ट्री ऑफ लाइफ', साइंस, वॉल्युम 283, 1999, पृ. 2027

166ण कार्ल वॉज़, "द युनिवर्सल एन्सेस्टर', प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल ऐकेडमी ऑफ सा. इंसीज़, युएसए, 95, (1998), पृ. 6854

167ण संदर्भ

168ण जॉनाथन वैल्स, आइकन्स ऑफ इवोल्युशन, रेग्नेरी पब्लिशिंग, 2000, पृ. 51.

169ण जी जी सिम्पसन, डबल्यु बैक, एन इन्ट्रोडक्शन टु बायोलोजि, न्यूयॉर्क, हारकॉर्ट ब्रैस एंड वर्ल्ड, 1965, पृ. 241.

170ण कीथ एस थोम्पसन, "ऑन्टोजनि एंड फायलोजनि रिकेपिट्युलेटेड", अमेरिकन साइंटिस्ट, वॉल्युम 76, मई/जुन 1988, पृ. 273.

171ण फ्रांसिस हीचिंग, द नेक ऑफ द जिराफः व्हेर डार्विन वेन्ट रॉग, न्यूयॉर्कः टिकनोर एंड फिल्ड, 1982, पृ. 204.

172ण रिचर्ड लेवोंटिन, "द डेमन–होन्टेड वर्ल्ड", द न्यू यॉर्क रिव्यू ऑफ बूक्स, जनवरी 9, 1997, पृ. 28.

173ण रोबर्ट ापिरो, ऑरिजिन्सः अ स्केप्टिक्स गाइड टु द क्रिएशन ऑफ लाइफ ऑन अर्थ, समिट बूक्स, न्यूयॉर्कः 1986, पृ. 207.

174ण होइमर वॉन डिथफुर्ट, इम अन्फांग वॉर डेर वासेरस्टोफ (सिक्रेट नाइट ऑफ द डायनासॉर्स), वॉल्युम 2, पृ. 64.

175ण अली डेमिरसोय, कालीतीम वे एवरिम (विरासत और क्रम विकास), अंकाराः मेटेक्सेन पब्लिशिंग कं., 1984, पृ. 61.

176ण पूर्व संदर्भ, पृ. 61.

177ण पूर्व संदर्भ, पृ. 94.

178ण बीलीम वे टेकनीक, जुलाई 1989, वॉल्युम. 22, नं. 260, पृ. 59.

179ण ग्रझिमेक्स ट्यरलेबेन वॅगेल 3, डोइत्चर टेशेन बुक वर्लाग, ऑक्टोबर 1993, पृ. 92.

180ण डेविड एटनबरो, लाइफ ऑन अर्थः अ नैचुरल हिस्ट्री, कोलिन्स ब्रिटिश ब्रोडकास्टिंग कोर्पोरेशन, जुन 1979, पृ. 236.

181ण डेविड एटनबरो, लाइफ ऑन अर्थः अ नैचुरल हिस्ट्री, कोलिन्स ब्रिटिश ब्रोडकास्टिंग कोर्पोरेशन, जुन 1979, पृ. 240.

182ण गॉर्सेल बीलीम वे टेकनिक एन्सिक्लोपेडिसि, पृ. 185–186

183ण वॉल्टरमेत्ज़नेर, ीजजचरूध्ध्बदेंण्नबतण्मकनध्ड्पवर्धबिनसजलध्डमज्रदमतधीजउस

184ण नेशनल ज्योग्रोफिक, सितंबर 1995, पृ. 98

185ण बीलीम वे टेकनीक, जनवरी 1990, पृ. 10–12

186ण डेविड एटनबरो, लाइफ ऑफ बर्ड़, प्रिंसटन युनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन–न्यू जर्सी, 1998, पृ. 47.

187ण जैम्स एल गाउल्ड, कैरोल ग्रांट गाउल्ड, लाइफ एट द एज़, डबल्यु एच फ्रीमान एंड कंपनी, 1989, पृ. 130–136.

188ण डेविड एटनबरो, द प्राईवेट लाइफ ऑफ प्लांटस, प्रिंसटन युनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंसटन–न्यू जर्सी, 1995, पृ. 81–83.

189ण एन्सायक्लोपीडिया ऑफ रेप्टाइल्स एंड एम्फिबियन्स, ऐकेडमिक प्रेस, हारकोर्ट ब्रैस एंड कंपनी के डिविज़न द्वारा अमरीका में प्रकाशित, पृ. 35.

190ण फ्रेजरिक वेस्टर, डेनकन, जरनेन, वगीर्रसेन, वेगा 1978 पृ. 6

191ण आर. एल. ग्रीगरी, आइ एण्ड ब्रेन, दि साइकोलोजी ऑफ सीइंग, आक्सफर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस इन्क, न्यूयोर्क, 1990 पृ. 9

192ण लिनंकन बारनेट, दी यूनीवर्स एक डा. आईंसटाईन, विलियम, स्लोआन असोसियेट, न्यूयॉर्क, 1948, पृ. 20

193ण ओरहम हेनपसरलियोगलू, डूसूंस तरीही (द हिसट्री ऑफ थोट), ईस्तम्बोल : रमजी बुक स्टोर, 6 ई डी, सितंबर 1995, पृ. 447

194ण वी. आई. लेनिन, मटिरियलिज़म एण्ड ऐम्पिरियो–क्रिटिसिज्म, प्रोगरेस पब्लिशर्स, मॉस्को, 1970, पृ 14

195ण बरट्रेंड रसल, ऐ बी सी आव रिलेटीविटि, जोर्ज रेलन एण्ड अनविलन, लन्दन 1964, पृ. 161–162

196ण आर. एल. ग्रीगरी, आइ एण्ड ब्रेन, दि साइकोलोजी ऑफ सीइंग, आक्सफर्ड यूनीवर्सिटी प्रेस इन्क, न्यूयोर्क, 1990 पृ. 9

197ण केन विलबर, होलोग्राफिक पेरेडिग्म एण्ड अदर पेरोडोक्सेज, पृ. 20

198ण जोर्ज पोलिज़र, प्रिंसिपेस फोंडामेंन्टाक्स डी फिलोसोफी, ऐडिशन सोशियल्स, पेरिस 1934, पृ. 531

199ण ओरहम हेनपसरलियोगलू, डूसूंस तरीही (द हिसट्री ऑफ थोट), ईस्तम्बोल : रमजी बुक स्टोर, 6 ई डी, सितंबर 1995, पृ. 261

200ण जोर्ज पोलिज़र, प्रिंसिपेस फोंडामेंन्टाक्स डी फिलोसोफी, ऐडिशन सोशियल्स, पेरिस 1934, पृ. 65

201ण पाउल डेविज़, तेनरीवेथेनी फिजिक (गोड एण्ड द न्यू फिजिक्स), अनुवादकर्ता मूरत तेमेली, आ एन पब्लिशिंग, ईस्तबोल 1995, पृ. 180.181

202ण रेन्नन पेकुनलू, "अलदतमकिनिस ऐवरिमसिजलेगी", (नान–ईवोल्यूशन ऑफ डिसीट) बिलिम वे यूटोपिया, दिसम्बर 1998 (वी. आई. लेनिन, मटेरियलिज़म एण्ड ऐम्पिरियो–क्रीटिसिज़म, प्रोगरेस पब्लिशर्स, मॉस्को, 1970 पृ. 334–335)

203ण अलाऐतीन सेनेल, "ऐवटिम अलदातमकसी थी? देवरिन अलदातकमसी में? (ईवोल्यूशन डिसीट ऑर डिसीट दी ईफोल) विलिम वे यूटोप्या, दिसम्बर 1998

204ण इमाम रब्बानी हज़ बे मकत्बलारी (लेटर्स ऑफ रब्बानी), वोल्यूम.प्ए लेटर, पृ. 163

205ण फ्रेंकोईस जेकब, ले जेऊ देस पोसीबिल्स, यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन प्रेस, 1982ए पृ. 111

206ण लिंकन बारनेट, दी यूनिवर्स एण्ड डी. आईंसटाईन, विलियम स्लोआन असोसिऐट न्यूयॉर्क, 1948ए पृ. 52.53

207ण संदर्भ, पृ. 17

208ण ईबिड, पृ. 88

209ण पाउल स्ट्रेशर्न, दी विग आइडिया : आईंस्टन एण्ड रिलेटिविटि, ऐरो बुक्स, 1997ए पृ. 59

210ण लिंकन वारनेट, दी यूनिवर्स एण्ड डी. आईंसटन विलियम स्लोआन असोसिऐट, न्यूयॉर्क, 1948 पृ. 84

211ण पूर्व संदर्भ, पृ. 17.18